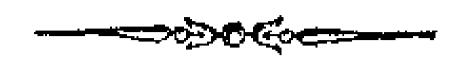
# सृतितस्य

#### प्रथमी भागः।



[तिधितस्वम्+श्राह्यतस्वम्+प्राह्मितस्वम्+प्राथिततस्वम् स्वोतिस्तस्वम्+मसमासतस्वम्+संस्कारतस्वम्] सहामहोपाध्याय श्रीरघुनन्दनभट्टाचार्य-

विरचित:।

विश, खपाधिश्वारिणा प्रक्रितकुनपतिणां श्रीजीवानन्दविद्यासागरेण संस्करः

प्रकाशितय ।

हितीय संस्करणम्।

किकातानगर्याः

"मारायण यन्त्रे"

सुद्धित: ।

X . 2524 1

## प्रधमभागम्य स्वीपवम्।

مسورتني

#### तिवितस्वम् ।

	(		युद्धायाः
प्र <b>कर</b> गम्		***	ŧ
तिशिक्षाक्ष विकाय वस्	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *		2
शिग्रद्धिक मामन्द्र	नुष्य <b>।</b> * - *	***	13.
च्य विद्यप्रतितस्तारा	व्यक्तिकावस्थ		
चय अवस्ति धक्ता	#*4	***	<b>-</b>
चय प्रसिपम्	***	4 • •	<b>₽</b> ₹
चय दिलीया		***	\$ C.
चय स्तोया	# <del>- +</del>	4.44	₹ *
यस महार्थी	444	4 4 8	* *
यद्य प्रथमी	<b> ♥ +</b>	* **	* *
यस यहा	<b>b+</b> +	***	<b>*</b> *
दार महस्र		4++	**
यम विधानसभा		614	\$ £
यदादशी	No. of the	#44	數章
यद्य क्षत्राप्टर्गी	* * *	414	<b>₩</b> £
	<b>*</b> * *	#47	# D
चय ग्रह्मा अञ्चलका		<b>€</b> 2 %	* 5
न्द्रस्य पार्यकार्थः	***	4-4	# #
शह्य श्रेष्ट्र			**
and marked factors.		<b>~</b> ^ *	A C
द्रम भोषाष्ट्रमो	<b>*</b> * **	<b>ል ጥ</b> ቴ	₹ C
क्ष यशाकारको	P	<b>海 1- </b>	<b>*</b> C
च्या सदर्भी	<b>72.9.♥</b>	4	* 2.
ern mielmung	* *	<u> </u>	48
महत्त्व करियः	9.44 ##		<b>€</b> ₹
are excel	ar z €	_	<b>.</b> .
THE PERSON NAMED IN	a A	* *	**
CE STATE OF	y **	<b>4</b> 0 €	* <del>"</del>

<b>₹</b> 3	ध्रपापनम् ।		
प्रकरणम् 🖟		<b>1</b>	पृष्ठायां
श्रय वैध हिंसावितार:	***	<b>.</b>	zo.⊲.
महानवमीपूजाकत्पः	* * *		_
त्रय कुर्विधि:		•••	<b>5</b> 5
श्रय एकादशी		***	E.Y.
तदयं सचेप:	4 4 4-	***	१०४
त्रय दादशी	***	***	₹ 0 ≒
त्रथ वयीदशौ	<b>h+</b> +	** *	११४
भय,चतुर्दशी	* * *	***	११७
<del>-</del>	***	-	१३ १
श्रथ ग्रिवरादिव्रतं	4.6	***	१२४
तद्यं सचेप:	***	***	१२६
शिवराविव्रतप्रयोगः	***	•	१२६
त्रध मद्नचतुर्देशी	***	P4 6	१३३
यय पौर्णमासी	***	***	
भय की जागरक्षत्वं	<b>64 w</b>	- د مه مو ید	0 25 44
थय चतुरङ्ग	***		१३५
षय रविसक्तान्तिः	***		१३७
तद्यं सत्तेषः	***	***	680
श्रय ग्रहणं	***	** *	888
ष्रभावास्यात्राह्यकालः	# # <sub>%</sub> .	** <b>%</b>	१५०
चयाचे दिययोगः	***	***	8 € ⊘
चय युगादा।	·		620
	<del></del>	***	<b>&gt;&gt;</b>
	या दतस्।		
भय व्याहदशाः			t
भथ याहरेवाः	h.,	*** /	<i>e3</i> 9
भयासनं —	***	<b>₩ ₩-₩</b>	१८८
षय दर्भाः	***	* + ·a	२००
यथानुद्रा:	·	* * *	२०१
भय पिग्डविद्यन्नातिः	देश:	***	२०२
पय कुमासन	- <b>F</b>	***	200

.005

पम कुमासन ....

प्रकर्षम्			gelui
भयावा इतं		电电板	عود
षयार्घः	***		इंह•
षय गन्धादिदान	***	***	२१५
ष्य पुरर्व	***	4=4	***
चय घुषाः	***		214
षय दोवाः	***	4++	
भगा च्छा दने	•••	***	
भय यद्योपयोगानि	**•	***	_
षय पाद्रम्य।मं		***	२१७
चय पादाशि	***	***	- ``
भयाग्नोक रचं	***	<b>+ = +</b>	έ∫⊑
पय गुत्रीयदानं	** *	***	22.
यय विश्विमाविश्विद्याचि	***		おお称
चय पश्चिंगनं	***	***	र १८
ष्ट्रधायायायामसम्बद्धाः	444	***	3 % w
चयाम्बद्धादिमाच विकर्षं		<b>™ </b> ₩-	र इंट्
च्य विण्डदाम	g 4 4	<b>p</b> to to	212
यथ को वश्ययक्याह	•	₹₽4	7 9 •
यम पार्वयय प्रतिमागकराज	स्य -	***	772
चय सम्बद्धां विश्वज्ञां भारत		-	2 4 5
च्या प्रतिसागवावधारमञ्जूष	•		* * * *

	स्पापलम् ।		
- ध्यक्षम्			- पृष्ठायां
श्राद्यणाडकानः	***	***	50,14
चय सपिएडोकरणम्		•••	27 ~~ ~~ ~~
ष्य सांवसिक्याहम्	***	***	<b>ર્</b>
चयाभ्युद्धिक त्राहम्	• • •	* * *	<b>₹•</b> ₹
	भाद्भिकतत्त्वम्।		₹ • •
त्रय विगम जोसार्गः	***	444	
अय विषम् को सार्गः अय गोचम्	***		<b>२२०</b>
याचमनविधिः			₹३०
शिखावसे विशेष:	• • • •	***	₹₹२
याचमने उद्कग्रहण्प	*** ****	***	३३४
श्रय दन्तघावनम्	नारपारझाणम्	***	घेर्
श्रथ प्रात:स्नानसस्ये	F4-		<b>₹8</b> ∘
या गण्यात्स्य व्यागम्य	***		<b>₹88</b>
श्रय प्रयमयामाधिकत्य घण विक्रीयकार	म् …	+4+	₹8¥
षय हितीययामाईक्षत सिद्यमविधिः	यम्	***	३४६
क्षाचाचाधः काम <del>२००३</del>	***	• • -	₹8 <b>७</b>
अय दतीयमाया <b>दे</b> क्तर	प्रम् 🕟 🔻		₹8 <b>⊏</b>
श्रय चतुर्ययामाईकत्य	म्	***	•
यथ तर्पणम्	* * *		<b>२५४</b>
श्रय मस्योपासनम्	₽	***	₹%•
खपामनाविधिः	***	***	3 <i>©</i> € 
अथ सवितुर्पस्यानम्			<b>ક્⊂</b> ષ્ઠ
अथ ब्रह्मयन्नः	***	<b>-</b>	∌⊭€
चय देवभूजा	#44	***	₹ <b>८</b> ५
अय गणेगपूजनम्			₹⋷⋹
अय पार्थिव[श्रवसिद्धाः	व्चाविधिः.	***	SoB 🖍
વ્યવ્યુપ;	***	* * *	8 ∘ €
श्रध दीप:	***	***	ध्रु
श्रय नैवेदाम्		***	30
श्रय पश्चमयामाईकत्य	म् । ,,,	***	នវន
विच्हानप्रकारः	614	₹ * 6	४१ट
	<b>.</b>	***	४२३

प्रकरणम्			े पृष्ठायां
त्रयातियभोजननित्यय	ार्डे …		8 <b>२</b> ५
षय गोपासदानम्	***	***	४२८
षय भोजनम्		- 4 +	8 <b>₹</b> £.
प्राणाइतिसुद्रा	,	• • • •	8€8
श्रय ऋतुगुणाः		h # #	85€
त्रथ पड्रसगुणाः		***	४३८
श्रय धातुप्रसृति;	+ + #	7 <b>-</b> +	880
श्रय धान्यादि गुणाः	***	***	880
ष्यय याकगुणाः		•••	888
श्रय लवगगुगाः			४८२
ष्या फलगुणाः		<b>* * *</b>	ะหร
श्रय तोयगुषा:			884
श्रय चौरगुणाः	***	***	88€
घय दिधिगुगाः	* ***		25
भ्रय तक्रगुणाः	***	***	99
चय द्यतगुणाः	***		889
श्रयेच्चादिगुणाः '	***	***	**
श्रय पष्टयामाई क्रत्यम्	***	***	8Åਓ
श्रय राविष्ठात्यम्	***		४६०
ष्यय ग्रयनविधिः		-14	32
षय दारोपगमनविधिः	***	•••	8६१
प्राय	<b>यित्रतस्वम्</b>	t	
भ्रय प्रायिश्वत्तलच्चणम्	4 • •	4++	8 ई ७
चय तन्त्रप्रमङ्गको	***	• • •	27
ष्यय प्रसङ्गः		* *	800
श्रयाद्वहोने कास्येऽपि फलं	4	***	80ई
च्या विकालीय प्रायश्वितात्	_	पुपनाशः	<b>8</b> 0 C
यय चान्द्रायणाटी भोजनप			824
श्रय गुरुप्रायसित्तेन खप्रपाप	रनाग्रः		8⊏€
थय गद्वामाहात्मरं	* 4 *		४८८

### स्वीपत्रम् ।

er oc o or ol	पृष्ठायां
प्रकरणम् । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	850
मधाम प्रश्यिपतिपः	<b>খু</b> ০ হ
गोवधादी वासत्वादिना प्रायिससेदः "	4 ६०
श्रद्य प्रावधित्रोपदेशादि	446
श्रय श्रीराह्माभवितिर्णयः	प्रश्
श्राय काराक्षानामान्यतः । ।।।	મૂર્ધ
श्रय प्रायशिक्षपूर्वा हरात्यं	મૂર્પ
श्रध वाल्यादिभेदात् प्रायस्तिम्	પ્રદ
	<b>भू १७</b>
त्रध धेनुमूखव्यवस्था त्रध ज्ञानस्तादि निरूपणम्	मू १ द
श्रय विपादिस्वामिकगोवधप्राययित्तम्	પ્રશ્
यथे विभाद्यासम्बद्धायम् । यथैकद्वायमादि गोस्रधप्रायस्थितम्	ય્રફ
श्रयकावनारि नामकाविष्मायस्तिम्	<b>५२६</b>
	५२द ध्रुद
Martin Andrews (1977)	4.5R
अय गामवापपादः षय निभित्तिने नरवधापवादः	५२८ ५३८
क्षान सामहासाहास्य स्वतातामा स्वय	44-
ទាន់ ទោងស៊ីរាជការវិទាន់បាន ខែងជ	19 U U O
सरमं प्रसेतः	યુપુર્ યુપુર
श्रथ गोसांसादिभचणप्रायश्वित्तम्	મુપ્ર મહત્ર
श्रय भार्यायां माहत्वादिवदतः प्रायश्वित्तम्	५५३ ५५८
यथोपवीतच्छेदनप्रायश्चित्तम्	
श्रथ रेतोमूवपुरीयभच्यप्रायश्वित्तम्	પ્રમ્ પ્રમૃદ્
षयोक्छिष्टस्य वाण्डालादिसाग्रमायितम	મમ્ યુપ્ક્
षय रजखनास्परप्रायधित्तम्	<del>-</del>
च्योतिस्तस्वम् ।	
त्रय राष्ट्रादिनिर्णयः	धूयूट
पसदगड्योः प्रमाणम्	
मुनिविकोणाग्रयवस्या	
षय र्वयसक्ष। ित्रगणनम्	ं ५६८

### स्वोपतम्।

	•		
प्रकरणम्			पृष्टायां
श्रयाष्ट्रवर्गः	<b># 0 #</b>	***	भू 🗢 घ
वारफलम्	•		पू ७८
भय ग्रहणम्		•••	भू द ३
यथ नामाः नच्त्रज्ञान	ार्थं गतपदचक्रम्		प्रू⊏ ७
भय चन्द्रतारादागुभप्रत	•		पूदद
भय प्रकोर्गकम्	***	•••	ሧፚፂ
भय निर्वात:			पूट्य
श्रय केतु:		***	99
ष्यथाकालहृष्टिः	•	***	ሂረያ
श्रय सर्वतो भद्रम्	***	<b>+ 4</b>	پروت
चय वासादि चक्र		•	€ व स्
ष्यय विवादः	•		६०३
मार्जुरवेधः			€ • ≒
नाडों नच्च चं		••	६१२
श्व रिपडप्टक	***	***	६१३
चय नवयध्यागमनं	1 •	•••	द १५
षय प्रथम रजीयोगः	***	***	414
भय गर्भाधान	<b>.</b>	***	€ १७
भय पोडगवर्षीयागिभणे	ी चिला	•	€ 2 =
घय पुंसवन	***	4.4	ፈየሬ
षद्य पञ्चास्तृतं	•	••	486
यद्य मौमलीयदन	<b>*</b> •	***	द १८
चय जातभद्रादि		•	₹ २ ७
चय गण्डयोगः	4 .	• •	4 4 2
चय पताको वेधः	* •		€ > 8
भाग समारागित्स	•		4₽*
चय जनानच्यकत	•	• •	₫ B Ś
यद्य प्रसद्गापन	•••	•	£ 2.C
चय वयं नताको	•••	***	₹8•
चय क्षत्रेय सम्बद्धिक न	• •	***	₹83

•	MAILMAN !		
प्रकरणम्			पृष्ठायां
भय जातकमी	114	***	aur
षय षष्ठीपूजा		<b>.</b>	€8⊏
चय नामकर्ष	* 4 *	<b>* * *</b>	द्ध्
षय निःकामणे	**=		
श्रयासप्राग्न	<b>*</b> •4	***	€¥.₹
ष्यय नवान			<b>€</b> ५२ '
श्रय चुडाकर्गां			<b>हे</b> ५३
भय कर्णविधः	4 + 5		€ ¥ ₹
यय विद्यास्थः	* * *	* = 4	६५५
अथ उपनयनम्		•••	Ę¥Ę
भय समावत्ताम	• • •	••	€ y.c.
श्रय ग्रह।दि	* * *	••	<b>EER</b>
अय ग्रह्मवेशः		***	६६२
षय पुष्करिखारमः	•••	• •	<b>ဋီ</b> ၆≎
	* ^	***	もつさ
अय क्रिकमी	• • •	* • •	€¤₹
यय लाङ्ग नचकाम्	→ •	***	६≒२
त्रय वोजोशिचक्रम्	***	1.6	€⊏8
त्रय हपचक्रम्	<b>₽</b> . <b>.</b> ¶	•	€⊏8
अथ मुटियहणम्	***		€⊏¥
अय धान्य उद्देशकारः	•	***	ĘŁo
पथ वोलसञ्चयः	<del>-</del>	* •	ξCο
अय पश्चिस वसर्गण्ना	**	***	25
भया इतम्		***	६८२
श्रय याद्याः	• •	**	% - ଞ
भय क्षचक्रम	- 4 4	••	<i>७</i> १२
भय सिद्वासनचक्रम्		r *	७३३
<del>-</del>	*** Il 27 Il Trans	:	જ,`
भध सामग्रकाम्	मनमासतस्वम्।		<b>*</b>
म य कर्माविश्वेषे सास्ति	 a प्रीकारि⇒.	• • •	⊅ફ⊂
	ગ્યમાદ્:	4%	<i>⇔</i> 8 °

E16

**८**{ ₹

**حر 8** 

प्रकरणम्	<b>3</b> <sub>3</sub> .		प्रष्ठायां
षथ दर्शान्तमामशक्यके साधकान्तराणि			७५४
अध चैवादिगद्धानां चान्द्र	वाचिता	***	कपूर
ष्य सन्भासः	***	•••	% द
यय दौचाकात:	* 4 4	4 * *	o∈8
ष्यय दीचायां प्रतिप्रस्वः	***	***	⊘⊏ų
श्रय स्त्रीशूट्योः प्रणवयुद्धन	व्यनिपेध:	***	৩=৩
अथ दो चितसागोचे जपार	यधिकार:	•••	29
ष्रयागीचे विषाकी संनम्		***	* #
अयाधिमासे विवाहादिनिर	रेघ:	***	<b>ರ್</b> ಷ
श्रथ पर्य्युदासविचारः	***	•••	<b>८∘</b> ∌
ष्य नवासम्	444	***	द्ध हु
षय समयागुद्धिः	***	***	ट१७
चय रोगे दानादि			દર્ય
त्रय सुमुच्चकत्यम्	***		द३६
श्रय महादानस्चणम्	***		⊏g∘
चय मनमामकर्त्तयव्यवस्	***		⊏ R s
षय पिष्टपचस्तक्रिया	***		⊏8 €
ययाम्ययुक् क्षण्यस्यादः	•••	ha e	⊏Bá
<b>घयामावस्था</b>	411		<b>C</b> g <b>S</b>
ष्रधाधिमामे प्रताब्दिकादि		# 4. P	⊏4 •
षय मिष्डनापकपंविधारः		* * *	ڪ۾ ڏ
चय सम्यामनिपेधविचारः		***	⊊Äβ »
त्रधापुषस्य स्ताहिन पार्यका		***	£Ä Ä
भयाधिमामं सुतस्याधिमामे	प्रत्या स्टिक	<u>.</u>	EA A
<u> </u>		•	
	रतस्त्रम् ।	<b>L</b>	
चय चानित्राप्तम्	***		رد لا ت د

चय वरचविधिः

ं थय स्यास्यापनम्

शय दूष्यामादनम्

- 11- 11g 1		
		प्रदायां
*	7 * 4	⊊€8
भ	***	•
***		= 4.0 € <sup>4</sup> .0
***	444	द <b>्द</b>
		<b>د</b> رد
•		≂Ęڍ
<b>.</b>	•••	<b>⊏0</b> ₹
•••	***	⊏⊘á
<b>4.6</b>	***	£ ⊘8
	***	このこ
**•	***	೯೨೭
***	***	このこ
• •	***	<b>3</b> 5
***	• • •	== 6
* * #	***	TT&
***	***	ححد
***	***	ECH
• • •	***	<b>દ</b> ૦પૂ
•		003
		ے ہ دے
		દ ૧૨
**************************************	***	<u>૮</u> ૧્યૂ
WA VID	٠	29
	~0/E	८१७
T / C N	HEF.	<u>દ</u> શ્દ
D 14	ISE	८२१
F1.3	与作	८२२
* (C. ) . *********************************		૯રફ
	<b>**</b> ••	€ ಕ ⊏
• • • •		८४१
	S N	A VIO

€83

#### यीगपेशाय नमः।

## तिथितत्तम्।

प्रणम्य सिच्चानन्दं रामं कामदमीश्वरम्। तिष्यादितन्तं तत्त्रीस्यै विति श्रीरधुनन्दनः॥

तव तिथिखरूपमाच हैमाद्रिकालमाधवीययोः स्कान्दे प्रभासखण्डम्। "ग्रमा पोडग्रमागेन देवि प्रोक्ता महाकला। सस्थिता परमा माया देशिनां देशधारिणी॥ श्रमादिपीण-मास्यन्ता या एव ग्राग्यनः कनाः। तिययस्ताः समास्याताः षोड-श्रीव वरानने"॥ चन्द्रमण्डसस्य पोडशमारीन परिमिता देइ-धारिणी प्राधारणिक्षण प्रमानास्त्री महाकला प्रोक्ता चर्यो-दयरचितवानिया सक्स्चवत् सर्वानुस्ता तदन्याः पचदग कनाः प्रतिपदादितिथिविशेषक्षा द्ति पोडशैव कलास्तिथय प्ति। यत प्रथमकला कियारूपा प्रतिपत् एवं दितीयादि-करा क्रियारूपा दितीयादिः साच वृहिरूपा चेत् यका द्वासरूपा चेत् क्षणोति। तथा च पट्चिशकातम्। "तत्र । पचावुभी मासे शक्तकाणी क्रमेण हि। चन्द्रहिकरः गक्तः कृषायन्द्रचयात्मकः ॥ पश्चत्याद्याम्तु तिययः क्रभात् पञ्च-दश सुता:। दर्यान्ताः कृष्णपचे ताः पूर्णिमान्तास ग्रक्तके"। पचितः प्रतिपत् एतसवे कियैव काल इति सतानुसारा-दुता तदतिरिक्षकालवादिमते तु तत्तत्वियोपनिचितः कान इति। यया विषापुराणे। "कालसक्षं क्षं तदिस्योभेनेय वर्तते"। विश्वधर्मोत्तरे च। "धनादिनिधनः कासी रुद्रः सह-

ेपेण: सातः। कलनात् सर्यमूतानां स कालः परिकोत्तिः" ॥ कलनात् स्यकरणात्। तथा च विद्युप्राणम्। "ये समर्या नगलिमन् स्टिमंदादकादियः। तेऽपि कानीन लोयसे काली हिवनवत्तरः" ॥ न च "घष्टमांगे चसुर्याः सीणो भवति चन्त्रमाः। भ्रमाधास्याष्टमांग्रेच ततः जिन भवेदनुः" रति कालयानीयदर्शनाञ्चतुर्दश्याः शिषयाने (पञ्चद्रायाः कालायाः चयारमादेवं दर्शान्तयाते चाद्यक्षमाया उत्यसेविरोध रसि वायं तस्य दर्गयाहोपयुत्तापारिभाषिक व्ययोत्पत्तिपात्वं न सु तदास्तवं स्वित्रियोतिःगास्त्रविरोधात्। तथाप्ति गोमिनः। "स्याचन्द्रमसीर्यः परः सन्निकर्यः सारमायस्या" इति परः सिववर्षेय उपयेषोभावापत्रसमस्त्रपातन्यायेन राखेकांगा-वक्देन सहावस्थानह्यः। तया च यमावास्यायरक-ताद्यमद्यावस्थानयुक्ताकमगडनाश्चन्द्रमगडनस्य। "पर्काद्दिनः-सतः पाची यद् यालहरहः शभी । सामेहदिशक्षिस्तत् सान्ति-यियान्द्रमसं दिनम्"। इति सुर्धिसिद्दान्तीक्षेन। "विंगांशक-न्तयाराभिमींग इत्यभिधीयते॥ पादित्याद्विष्ठष्टस्तु भागं दादगकं यदा। चन्द्रमाः स्थात्तदा राम तिथिरित्यभिधीयते" पति विणाधमोत्तरवचनादाशिहादगांगदादगांगभोगात्मक-निर्गमरूपवियोगेन शुक्कायाः प्रतिपदादि तत्तियेश्वरूपः सिरेवं "स्याचन्द्रमसीर्यः परी विप्रकर्षः सा पीर्णमासी" इति गोभिकोक्तेन घौर्णमासीघटकसममगाञ्चवस्थानरूपपरमविधो-गानलरमकमण्डलपवेशाय चन्द्रमण्डलस्य राशिक्षःस्यांग्र-हादगांशभोगात्मकप्रवेशकप्रसिक्षणंण कणायास्त्रत्तिथे-योत्पत्तः।

> तत्र तिथिविशेषविद्यते कर्माण उमयदिने तिथिनाभे प्रमृष्वेतं निर्णयमाह विष्णुधर्मोत्तरम्। "नद्यदं देवदेवेश

तिधिञ्चा दिविनिगताम्। दृष्ट्रीपवासः कत्त्रशः कयं ग्रह्णः जानताण ॥ यहर खवाचः। "मातिथिम्त्रद्होरावं यस्या-मभ्यदितो रवि:। तया कर्माणि कुर्वति द्वासहही न कार-णम्। सातिथिम्तदहोरावं यस्यामस्तमितो रवि:। तथा कर्माणि कुर्वित द्वासहही न कारणम् द्ति। "गुक्तपछे तिथियाचा यस्यामभ्यदितो रवि:। सप्पपचे तिथियां द्वा यस्यामस्तमितो रिवः"। चवामावास्याविसिधिविदिस्याभ्यां न व्यवस्था। किन्तु रवेष्ट्यास्तमयतिथिसस्बन्धात् गुक्त-क्षणपचाभ्यां व्यवस्था। साच युगमाद्यनामाततिथिकमपरा सामान्यविशेषन्यायात्। युगमभा इ ग्रह्मपरिशिष्टं निगमय। "युग्माग्निकतभूतानि परम्योवस्ययोः। स्ट्रेण हाटशी-युक्ता चतुर्देग्याय पूर्णिमा॥ प्रतिपदाप्यमावास्या तिथोर्युगमः महाफलम्। एतदास्तं सद्दाधोरं इन्ति पुष्य पुराक्षतम्"॥ हितीयावतीययोशतुर्वीपश्चम्योः पष्ठीसप्तम्योरप्टमीनवस्यो-रेकादमौद्यायमुर्गोपौर्णमास्योः प्रतिपदमावास्ययोग्स मननं तत्तिधिमावनिमित्तके कमणि महाफनम्। एतत् प्रयोजनन्तु तिधिधियोपविश्वित कर्मणि तिधिकाण्डविशेषनि-यमनम्। खतिया कर्मानिवाहे सहायभावे नान्वतियानु-प्रवेशाद्ववामाद्याचरणञ्च। धनण्य विष्णुधर्मोत्तरे। मा तिधिम्तदहोरावमित्वनेन खण्डतिधेरहोराचलानुकोर्भनमही-रावसाध्योपवासादिका हिलाधं तश तिष्यन्तरमहायभावं विना प्रायगो न मन्धवतीति। यतः प्रातःकाले तत्तियः माभे तिपासरिष्यवाससङ्खः। पद्योरावाभीजनरूपस्य तय प्रातरारकाईलात्। मंत्रसरप्रदीपेऽपि "प्रातःमध्या-नातः लाता सद्भयं सुध पाचरत्"। द्याह्मम् प्रवेदं योजः कर्मणस्टावदपूर्वजनकलेन विधेयलेम च पाधानां तिपादिस्तु

गुगलेन समिद्रपसत्त्वालं तदाई गर्गः। "तिथि नत्तव-वारादि साधन पुरखपाययोः। प्रधानगुणभावेन स्वातन्त्रेगण न ते चमाः"। प्रधानस्य विषेधकर्मणो गुणभावेनाङ्गलेन तद्त्रां "क्यांसिविहितं नैव बुद्दी विपरिवर्त्तते शब्दात् तदुपस्थानसुः पादेगे गुणो भवेत्"। प्रमाणान्तरामिति हितं कर्भ बही प्रधर्म न विषयीभवति प्राथमिकशब्दादेव तस्य कर्मण उपस्थिति-रिति उपादेये खिविषेये कर्मणि पूजादौ चन्द्रादिकियाखेन तदविष्ठित्रकालवीन वा शचि तत्कालजीविनः कर्माधिका-रात्तिकान् प्रमाणान्तरसम्बद्धेनाविधेयत्वात् तिष्यादिगुण इति। षातस्तिधि विनापि प्रातरेव सङ्ख्यः नतु तत्तिव्यनुरोधा-दन्यविति। एवच मासपचितिधीनाचित्याद्यनुरोधेन प्रात:-सङ्ख्योदित्यमुरोधेन च सन्यतिधिकमीषीऽन्यतिष्यारकोऽसुकः तियावारभ्यासुकं कमंग्र कर्त्तव्यमिति वहायम्। आरका एव तिसिधेरनुपविशान दोषः। एतदासां युग्मविषरीतं प्रतिपद् हितीययोः हतीयाचतुर्यं।रिलायोर्मेलनं महाघीरं महापाप-सनक्षम्। यवापवादो वस्त्रते यतः "पूर्वाक्षो वै देवानां सधाः दिनं मतुष्याणामपराष्ठः पितृणाम्।" प्रवादि मुलादानुरोध-नीमयदिने कमायोग्यप्रमुकाले हितीयालामे हतीयायुतेव दितीया प्राष्ट्रा न प्रतिपद्यता खतीयापि दितीयायुतेव न चतुर्थीयुता एवमन्यत्र नत्वे कदिन एव कर्मायोग्यप्रशस्तकास-लामेऽपि युग्मादादरः। अतएव, "कामाणो यस्य यः काल-स्तक्तालवाधिनो तिथि:। तया कभी। णि क्विति इत्रसहही न कारणम्"॥ इति हद्याप्तवल्कोयेन सन्देवनिरामात् सन्देशविषय एव युग्सादिवचनप्रहत्तेः प्रधानस्य क्रमीकी कोध-केन पूर्वाञ्चादिगास्त्रेण गुण्या तियादेनियाभक्षस्य युग्मादि-गास्त्य जेत्यलाच । व्यस्तिधिनिन्दार्थवादीऽपि सन्देषः

विषयमिण्यपर एव विधियेपत्वात्तस्य। एवच पूर्वदिने पूर्वाले युग्मसम्बन्धिपरतिधिरप्राप्ती परदिने च तत्पाप्ती ति चिविद्यितपूत्रादेः पूर्विद्यानुरोधात् परदिनकर्त्रश्च प्रतीयते। नतु सुरमानुरोधात् पूर्वदिने। प्रवचा "पञ्चमौ सप्तमौ चैव दयमौ च वयोदगो। प्रतिपन्नवमो चैव कर्त्रशा सामाखो तिथि:"॥ इति पैठोनसिवचनस्यत्। "सामाखाः नाम सायाक्रथापिनो दृश्यते यदा"। इति स्कन्दपुराणेन सायाष्ट्रयापिनो तिथे: साम्युख्यविधानेन पूजादावनववाषाष्ट्र-पवासपरत्वम्। एव, "विसन्धशापिनी यातु सैव पूज्या सदा तिथि:। न तत्र युग्मादरणमन्यत्र इरिवासरात्"॥ पति पारायरीयेण विसम्ययापिलेन नियमाभिधानं तद-पव।दक्तिमिति सायाङ्मधापित्वमिष मृहत्तीन्यूनत्वेन ज्ञेयम्। "वतीपवामसानादी घटिकैका यदा भवेत्। सा तिथि: सकला चेया पिवर्धे चापराहिकी"॥ इति देवसवचनात्। नन्दहो-रावसाध्योपवासादी कुतो न रावियुग्मग्रहण मैवं तवापि कर्मार्थं दिवा तदद्वसानदेवतापूजादौनां कर्मणां कर्न-च्यलाद्भा च तिस्पेधात् दिवायुग्मस्यैध ग्रहणमिति तिथि-विवेश:। यतएव जावातः। "श्रहःसु तिथयः पुर्णाः कर्माः मुष्ठानतो दिवा। नक्षादि अंतयोगे तु रानियोगी विधिर्यते"॥ दिवासमानुष्ठाने कार्त्वये घड:सु तिथयः पुर्णाः तिथालर-सयोगात् पुरुषा चतः कर्मानुष्ठाने ता एव प्राष्टाः। चन्यथाः इविहिते वर्मप्यइविधानमनर्थकं स्थात्। नक्तादिव्रतयोगे-लिति निप्रासाध्यकमीपतचणम् अव रावियोगो विधि-थते राची तिथलारसंयोगी विशियत प्रत्ययः। वस्तुतस्त पश्चमीसप्तमो सैव इत्यादिना विशेषतः सायाष्ट्रव्यापिनी तिथे-र्षष्टणाद्ववाधऽपि न रावियुग्मादरः श्रन्यथा तद्भिधान स्त-

र्धकं स्थात्। एतच जयन्तो शिवरावग्रदिविगेपेतरपरम्। यदापि "सानं दानं जप:याहमनन्तं राष्ट्रधंने। घास्री राचिरन्यत तसातां परिवर्जयत्"॥ इति पर्यादस्तितर-कालोऽपि कर्मयोग्यस्तथापि, "पूर्वाहो वै देवानां मध्यं हिनं सनुष्याणामपराह्यः' पितृणाम्"। इति सुत्युक्तकाललामे स एव नियासकः प्रशस्तवात्। चतएव "ययास्तं सविता याति पितरस्तामुपासते। तिथिन्तभ्योऽपराक्षो हि स्वयं दत्तः स्वयभ्र-वा"॥ इति ग्रह्मपरिभिष्टीयेन यस्तमासिन्यास्तियेः प्राये-यापराह्मसम्बन्धेनापराह्वी हेतुतया निर्दिष्टो नतु पर्ख्दस्तेतर-कालः प्रशस्तकानालामे तु सामान्यकानमादाय युगमादिना व्यवस्था कचित् विशेषवचनादेव रातियुगमाद्रः यथा। "मध्याक्तव्यापिनौ ग्राह्या एकमक्ते सदातिथः। नक्तादि-अतयोगि तु रावियोगि विशिष्यते" ॥ यव युगितर क्षणापन-प्रतिपदुभयपचदगमी वयोदगो सप्पचतुर्यो है थे तु प्रागुल-शक्तपचे तिथियां द्योतादिना वद्यमाण प्रतिपत् त्ति विशेषा स्यादित्यादिवचनाद्यवस्याः तियेः पूज्यकानापेचा विधेयकर्म-खेव निधि हे कर्मणि तुत्तत्तिधिमात्रापेता। नतत्र पूज्य-कासमावापेचा। तदाइ कासमाधवीये वहगार्यः। "निमित्तं कालमादाय हित्तिविधिनिषेषयोः। विधिः पूच्यतियौ तत्र नियेधः वासमात्रके॥ तिथीनां पूज्यता नाम कमानुष्ठा-नती मता। निपेधस्तु निष्टस्याताः कासमाचमपेत्रते॥" एतद्वनद्यं कालञ्जाधिकरणन्यायमूलमिति विद्वतमेका-दशौतले। कार्मानुष्ठानतः वार्मानुष्ठाने वित्तः पालनम्। गार्थ-वचनोक्तनिमत्तिस्यतं विधिनिपेधयोरन्षानाननुष्ठानक्ष्य-पारने कालस्य निमित्तलेन अभिधानात्। "अत:कालं मवस्यामि निमित्तं कर्मणासिस्"। इति भविष्यपुराणाञ्च। यावध्यअपवीदिक्षित्रमाणस्य नित्यनैमित्तिकलम्। व्यक्तमाइ
मार्कण्डेय पुराणम्। "नित्यं नैमित्तिकं न्नेयं पर्वयाद्यादि
पण्डितेः" दति एवच्च धयौचान्तात् दितीरीऽक्लोत्यादिकस्य
कालविश्येपस्य निमित्तत्वेनोन्नेखः सृङ्गच्छते। "मासपचतिथीनाच्च निमित्तानाच्च सर्वयः। उन्नेखनमकुर्वाणो न
तस्य फलभाग्भवेत्। दति ब्रह्माण्डभविष्यपुराणोक्ते.।
निमित्तानामुत्पत्तिविधिममभिव्याद्यतियतानां न तु प्राथस्वेनोक्तानाम् यत्र चकारद्यश्रुतेमीसादोनां पृथक्निमित्तानाच्चोन्नेखः। न तु मासपचितिथीनां निमित्तोभूतानामिव।

भने च वैदिक क्रिया निमित्तस्य का सविग्रेषस्य गुचितत्-कान जोवित्वेनाधिकारिविशेषणीभूतस्थान्ते या मप्तमोमा नाधिकरणे यो जटाभि: स भुड्का इतिवत्कालस्य विशेषणत्वेन व्यतीयाप्राप्तेः किन्तु कालभाषयोः सप्तमीत्यनेन तहाधिका पुन: सप्तमी विधीयते प्रारदि पुष्पान्ति सप्तच्छदा दतिवत्। धतः कत्तृविग्रेषणीभूतस्यापि कालस्य वैदिकक्रियाया निमित्त-तयोद्देख: क्रियेव काल इति मतेतु सुतरां नाधिकरणता मूर्या-दिक्रियाया कर्त्रव्यस्य कर्मणो प्रधिकरणतानुपपत्तरिति पूर्वा-ह्व।देस्तु प्रशस्तवेन निमित्ततया नोन्निख इति। युग्मादरस्तु दैवसत्य एव न पित्रसत्ये। तथा च व्यासनिगमी "दितो-यादिकयुग्मानां पूज्यतानियमादिषु। एकोहिष्टादिवृह्वादौ इस्रम्ह्याद्दिपणा"॥ इति एकोहिए।दिष्टह्यादी एको-हिष्टादियाद्दनिमित्तभूत तिथिविगेषस्य हद्यादौ हद्यादावित्य-यादिगञ्चात् चयस्तिभातले याद्येतया सति यादकास्य मन्देहे द्वासम्बादिदेपणा ज्ञासम्बादिविधायको नियामक दति यावत्। पत इदिष्ठामी चन्द्रस्य ताभ्यां श्रुक्तकण्यची

लच्चेते। "गुक्तपचे तिथियां ह्या यस्यामभ्यदितो रिषः। स्पापचे तिथियोद्या यस्यामस्तिमतो रविः" ॥ इति विशा-धर्मित्रैकवाकात्वात्। तेन तिधिदेधे श्रापराह्नितरिषट-क्षत्ये गुलक्षण्यचयो रवेरदयास्ताभ्यां व्यवस्था। भाष-राह्मित ता सिवर्डोकरणादी द्वासष्टरादीत्यादियष्टात् प्रागुत्र ययास्त्रसित्यादिना व्यवस्था। एतदियय एव काल॰ साधवीयप्टतं सुमन्तु वचनम्। "दाप्टन्तु व्यापिनौ घेत् स्या-माताइसातु या तिथि:। पूर्वस्यो निवंपेत् पिग्ङमित्याङ्गि-रसमापितम्"॥ तिधिविवेकेऽपि। पित्रक्षत्ये च पूर्वाह्रे सधाइविहित संश्वे विणुधमोत्तरवचनात् भक्तपचक्तण् पस्भेदेन ध्ववस्था। एवश्व प्रागुत्तविष्णुधर्मीत्तरवचन छप-वास्य कर्त्व्यः कथमित्ववोपवासपदमपराह्मविद्वितरः पितृक्तत्यदेवकत्योपनचकम् एतच प्रत्युत्तरवचनं उपवास-भित्यनभिधाय कर्ममावनिर्देशात् कर्माणौति बद्दवचन-निर्देशाञ्चावगस्यते। अपराह्मविद्यितन्तु ययान्द्रां सविता यातीत्यस्य विषयो हेतुषिनगदस्वरसादित्य् क्रम्। एतञ्च ष्ठभयदिनापराह्मसाभे न्नेयम्। यत्न चीभयदिनेऽपि न तज्ञाभस्तव द्र्यंतर्रतिथिषु। "अपराह्मे तु संप्राप्ते अभिजि-दोषिषोदये। यदत्र दोयते जन्तोस्तदत्त्रयमुदाष्ट्रतम्"॥ इति मत्यपुराणवचनाद्यरदिने गौणापराह्ये यादम्। अभिज्ञिदः ष्टमघटिका रीडिणं नवमघटिका मुख्यापराह्मस् पञ्चधा-विभन्नदिनचतुर्थोधी यथा "प्रातःकाली सूहर्त्तां स्त्री न सहू-षस्तावदेवत्। सधाङ्गस्तिमूहर्तः स्वादपराह्वस्ततः प्रम्॥ सायाक्रिसिइन: स्यात् याद्वं तत्र न कार्येत्। राच्सी नाम सा वेसा गहिता सर्वकर्मास् ॥

नन सिपडीकरणसापराक्षिकाले किं मानमितिचेदप-

राह्ने तु पैद्यकमित्युसागवचनमेव मानम्। किञ्च। "यदाप्यद-न्तकः पूषा पैष्टमत्ति सदा चन्म। प्रानीन्द्रेखरसामान्या-त्तरङ्कोऽत्र विधीयते"। इति कन्दोगपरिशिष्टे यथा बह्रना-मनुरोधात्तरङ्खचर्नैकानुरोधात् पैष्टचरः 'विरुद्धधमीममवाये भूयसां स्थात् मधमीक्षकम्' इति जैमिनिस्वाच तहदवापि बहुदेवताकापावणानुरोधादेकोहिष्टकालवाध इति। एवं संव-सरमधिक्तत्य। "सपिण्डौकरणं तिसान् काले राजेन्द्र तच्छ्ण। एकोहिष्टविधानेन कार्यां तदिप पार्थिव । इति विणुप्रा-यौयमेको द्दिरांगे तदितिकर्त्तव्यतापरं नतु तत्वालपरं तथाच परिग्रिष्टपकाग्रधतम्। "श्राह्यस्यमुपकस्य कुर्वीत सहिपाड्ड-नम्। तयोः पार्वणवत् पूर्वमेकोहिष्टमयापरम् ॥ इति शह-वचनान्तरं यव च प्रथमपरमासाभ्यन्तरे मलमास्रवातेऽपि षष्ठमासिकपूर्वतिथिरेव प्रथमपाएमासिकस्य कानः एकाइ-न्यूनपरमासे तस्य विधानात्। दितोयम्य तु चयोदशमासिक-पूर्वितिथि: एकाइन्यूनसंवसारे विधानात् यथा छन्दोगपरि-शिष्टम्। "एकाइन तु घरमामा यदा स्पुरिव वा विभि:। न्यूनाः संवत्सरयेव स्थाता पार्यामिके तदा ॥ संवत्सरय वयोदग्रभिर्णि मासैभवति। तथाच स्रुतिः। द्वादग्रभासाः संवत्तरः कविचयोदशमासाः संवत्तरः इति। श्रव काल-माधवीयपृतेन। "पाग्माधिकाब्दिके यादे स्यातां पूर्वेदारेव ते। सासिकानि खनीये तु दिवसे द्वादश्रीप घ"॥ इति पैठोनसिवचने कवाकात्वात्। एकाह्नम्पदेन सतिविपूर्व-तिद्येप इणम्। एतच पूर्वमृततिद्य विद्याय अपरमृततिध-मादाय मासवर्षगणनया सिद्दम्। एतेन पूर्वमृततिथि-मादाय मासवर्षगणनया सतियेः पूर्वतिथिं विष्ठाय तत पूर्वदिने मैथिलानां यत् पाएमासिकं इयकारणं तहेयमेव। अञ्च

स्यातां पाएमामिके तदा इत्यत । "दाद्यप्रतिमास्यानि षाद्यं याग्सामिके तथा। मणिग्डोकरणचैव इत्वेतत् आद्योडधम्"॥ इति छत्रीगपरिशिष्टीयगणनायामि पार्सामिके दल्यपा-दानात् प्रथमदितीयपाणमासिकलेनैदीक्केषः नतु न्यनपाणमा-सिकलोन न्यनसावलाशिकालोनिति। एवस हितीयपाएम।मि-कस्य पैठोनसिना यदाध्दिकत्वमुक्तं तच्च। "प्राध्दिके सन्द्र-पाटः म्यादेकान्दः पुनरान्दिके । दति श्रद्धोक्तप्रायिश्वन-विशेषज्ञापनार्थे तत्परदिनकत्त्र्यप्रेतवाज्ञस्य पुनराष्ट्रिक-लायश्च अतएव "पूर्वेदा्राव्टिक आहे परेदाः पुनराव्टिकम्"। इति शहुवचनास्तरम् एतेन हितीयाब्दोय प्राप्तिपृष्टल-सम्पदानक्षमाडामभोजनेऽपि मूनपाख्कप्रायसितं हैय-सिति। नन्वेव परत्र सप्तमे मामि क्रियमाणस्य कथ धारमा-धिकालमितिचेत् भाकाम्। छत्तरप्रमासे मलमासपातिऽवि तथालसावयाकलात्। अय यदापक्षष्ट स्पिण्डनं सतं तद यसात् हहापस्थितौ का गतिरितिचेत् यया त्रपक्षष्ट सपि-राइन जन्या पूर्वे पृष्धमवसारकाले प्राप्य पिद्रत्यमापकम्। "हाती मपिण्डोकरणे नरः मंधसारात्परम्। प्रेतदेह परित्यच्य भोग-रेइं प्रयदाते" ॥ इति विष्णुधर्मीत्तरोग्रास्था द्वारमाकाले ऽपिकल्पाते। "अवीक् मवस्यगद्वडी पूर्णमवसरापि वा। वे मधिएडोक्तताः प्रेता न तेपान्तु पृथक् मिया"॥ द्वि शातातपोग पूर्णसबसरप्रद्यास्भकानगोस्त्यत्याभिधानात् यव तु "यदस्यां सहिरापदोत्" इति गीभिनस्वेण अवक्षीं विधोयते तत "प्रामावन्तन। दक्क. आल विद्यात्" इति गौभिन स्वात्तरेष च्डादिरूपष्ठदेशीमद्यान्तर्विधानात् स्पिएडी-कारणस्य चपराक्षे विधानात्तयोरवाधायामसपूर्वदिने सप कर्षः। एवश ग्रहितस्वितिवितस्वमस्तिविपाम्यानवदृद्धि

निश्चित्य सतं सपिण्डनं तदानीं विघ्नेन द्वहाभावेऽपि द्वह्या-ः रभाकालान्तरं पूर्णसंबद्धारं वा प्राप्य तदेव पिव्हत्वप्रापकमिति। न सिपण्डनात्तरम्। त्रव्र "व्यः कत्तीसीति निधित्य दाता विपानिमम्बरीत्"। इतिवनिधिस्यति उक्तरकोरिकसमाव-नोपसचणं भविष्य सिमस्य कर्माणः प्रत्यू हाईलात्। एवश्वः हिस्यादं यदर्थं कतं तत्कमी चेत् विद्यात् तिहिने न क्रियते । तदा दिनान्तरे तत् कमाणि क्रियमाणे तदप्रत्वेन पुनर्वे हि-याइं कर्त्राद्यमिष । "प्रधानस्याकिया यत्र साङ्गंतत् क्रियते । पुनः। तदष्पर्याक्षियायान्तु नावृत्तिनं च तत् किया"॥ इति छन्दोगपरिशिष्टेन साङ्गकरणाभिधानात् हिमाद्रिष्टतम्। "पूर्णे। संवलरे याहं पोड़गं परिकीतितम्। तेनेवच सपिएडल' तेनैवाब्दिकमिष्यते"॥ भव पूर्णसंवसारक्षियमाणयादाद् यथी- । भयनिर्वोद्यस्यापसष्टयादाद्यभयनिर्वोद्यात्र पूर्णसंवयारे चाब्दिकान्तरम्। एवच पचदणयाडे सतेऽध्यवेयम्। गीभि-सेन पूर्णसंवतारे सपिएडीकरणमभिषाय "चत छड्डे संवतारे संवसरे प्रेतायाचं ददाद यसिमम्हनि प्रेत: स्थात्" इति स्वेणाद्याब्दादृद्धं सांवसरिकविधानाद्य।

यानित् "मुखं यादं मासि मासि भवयांप्राहतुं पति। द्वाद्याद्वेत वा कुर्यादेकाचे द्वाद्यायवा" ॥ दित मरोचि-वचनेन एकाच्यक्तयतया द्वाद्यमासिकयाद्वान्युक्तानि तानि शूद्रेणापि याद्यमासिकदिन एव कार्याणि नत्वाद्यमासिकं सत्वा तत् परदिन एकाद्यमासिकानीति ज्ञेयम्। एवच तियामपक्षये तकाव्य तदक्तकासक्तिच्यतया पाण्यासिकदय-स्विप्दीकरणायकपः सिदातीति स्थोभिर्माव्यम्।

सिषाङीकरणेति कर्तव्यतायां मद्यप्राणम्। "चतुभ्यं-साम्यणाचेम्य एकं यामेन पाणिना। गरशैत्वा दिचलेनेद्यः पाणिना च तिसोदकम् ॥ मुमार्कियत्वा पृथिवीं ये समाना इति सारन्। प्रेतविषय इस्ते तु चतुर्भागं जलं चिपेत् । ततः पितामद्यादिभ्यस्तमान्तेय पृष्ठक् पृथक्। ये समाना इति हास्यां तळालन्तु समर्पयेत्। अध्य न्तेनैव विधिना प्रेत-पात्राच पूर्ववत्। तेभ्यसार्घं निवेदौव पयाच् स्वयमाचरेत्" ॥ एकं प्रेतपावं वामेनानन्तरं दिचिणेन च ग्रहीत्वेति सम्बन्धः। ये समाना इति मन्द्रस्यं पठन् प्रेतपादस्थमुक्षृष्टजले कुग्र-रिखाययेण चतुर्दा विभन्ध भागमेकं प्रेतव्याद्वाणश्वस्ते चिपेत् द्यात् उत्पृष्टजसिण्डयोः संविभागे मन्त्रस्य कर्णत्वं च्यक्त-माह यातातपः। "निरूप्य चतुरः पिराङ्गान् पिराइदः प्रति-नामतः। ये समाना इति हाभ्यामाद्यन्तु विभजेत् त्रिधा। एप एव विधिः पूर्वमर्घा पात्रचतुष्टये"॥ इति ततस्तदनन्तरं तमानीः पितामद्यादिभेदेन विश्वाद्यमेयादिया द्वात मन्त्रेयका-रात् पितामहाद्युष्णृष्टवाक्येश तदुक्तृत्य ये समाना इति ह्याभ्यां मन्त्राभ्यामध्ये तत्त्वलं प्रेतपावस्थवलन्तेनैव विधिना प्रत्येकेन पूर्ववश्तुर्भागरूपं प्रेतपाद्वात् समर्पयेत् पितामहादिपात्रेषु मिययेत्। तभाः वितामहादिमास्त्रिमस्तिनात्रितसुप्पतिलो-दबारूपमध्यं निवेद्य तत्तत् ब्राह्मणहस्ते प्रसिष्य पदादाचामे-दित्यर्थः। तेन प्रेतनाह्मणहस्ते उत्मृष्टदत्तस्यैवार्घाजसस् तदविशिष्टजलस्य भागवयं पितामदायुक्षृष्टार्घाजलेषु मित्री. कर्मधामिति प्रतीयते। पत्रप्व द्त्रसीव प्रेति विकास्त हः

ब्रह्मपुराणे प्रेताध्य दानानन्तरं ततः पितामहादिभ्य इति श्राम्दक्षमस्यावाधेमार्घ्यपात्रेषु गन्धपुष्यदानपर्यन्तं पिष्टपूर्व-कता उसमें तु प्रेतपूर्वकता। यथाचमने "त्रचिणी नासिके कर्णी इति गोभिनस्वस्थपाठकममुझद्वा "अषुष्ठेन प्रदे-शिन्धा घाषं पयादनन्तरम्। चङ्गहानामिकाभ्याच चचुः योवे पुनः पुनः" । इति दचीक्षयाव्यक्रमी खद्यत इति अत-एव क्न्दोगपिशिष्टेन सुनक्रमान्ययात्वं सप्टौक्तं यया "ति: प्राप्यापो हिरमुच्य मुखमेतान्युपसूत्रीत्। त्रास्यनासाचि-क्षणीं वाभिवच: शिरोऽंगकात्"॥ पतेनानुसुष्टजलीन श्रमुख्रुष्ठजनसमन्वयोत्तरोत्तर्गः पितृद्यितायामुको निरस्तः। ब्रह्मपुराणे ये समाना इति सारणानन्तरं जलप्रचेपमात्राभि-धानेन पूर्वमुसर्गप्रतीतेः एवं मंस्रवन्त्रममन्वयस्तु मैथिसीस्री-र्राप न युक्तः प्रागुक्षवचनेषु समन्वयोत्तरार्घ्यनिवेदनीक्षेः स्वय-माचमेदिखेव पाठ: कलातरी तथा दर्शनात् पाचमनं कुर्याः दिति वाचसतिमित्रव्याख्यानाच । पाचमेदिति इस्रकान्दमः आचरेदिति तु लेखकप्रमादपाठः यव च श्रीपमत्रमनुद्धाप्य मर्वमन्रमेकवोदृत्य डिच्हिएसमीपे दर्भेषु मधुमध्विति प्रचनमी भदन्तेति अधिला वीं सौन् पिण्डान् दयात्" इति गोभिन-स्वेण "सर्वसात् प्रक्षताद्वात् पिण्डान् सध्तिलान्वितान् द्रव्य-श्रीपेण" इत्यनिन च त्राहद्य्यमेषद्र्योगैव पार्वणे पिग्डविधानात् तिहरूताविष सिष्यडोकरणे तिस्यमात् यदापि ग्रेपांभावे पिण्डनिष्टत्तिरायाति तथापि यथोक्तवस्वमम्पत्तो पाद्यं तदन्-कारियत्। "यवानामिव गोधुमा वीष्ठीणामिव गान्तयः"। इति कृन्दोगपरिधिष्टात् "सुर्यासामे प्रतिनिधिः शास्तार्थः" द्ति न्यायाश्च मध्वाद्यभावे गुडादिग्रहणवत्। द्रधान्तरेणापि विष्डदानं ग्रेषद्रव्यनियमसु तसमावे द्रव्यान्तरत्यागाय सम्यया तदङ्गभाये कमायेगुण्यं स्यात् "महविग्डकियायाम्" इति सन्तोः पिएइस्र प्रेतिपिछेन सहिमयीकरणं यवेति सिष्दिकर्णममात्यासिहायं सुतरां तम तयाचरणं प्रति-पत्तिरुपकर्माद्व एव प्रतिपाद्याभावे तिव्रष्टतिः "पग्रयागे सीहितं निरम्यति ग्रहाविरस्यति" इत्यादावुका। यतएव

"यज्ञवास्तुरूपप्रतिपत्तिषागिऽपि यज्ञी यस्त्रिन् यसतीति" यज्ञवास्तु समाख्यानुरोधेनास्त्रतकुशविरहेऽपि कुशान्तरप्रति-निधिभेद्दनारायणैगीभिसभाष्ये एकः। "प्राकस्त्रिष्टिकत पावाप इति गोभिनस्वस्य व्याख्यान् ऽपि पाउप्यत रत्यावापः प्रधान-श्रोमः स सु खिष्टिक्षदोभात् प्राक्न पथादित्ययः" एवस्र "सुख्य-भोगे लक्षते यदि चर्नष्टी दुष्टी या भवति तदान्यः पाचाः मुख्ये सते चेन्नष्टदृष्टो तदाच्येनैव सिष्टिसहोम" एति मरला भाषो एतेन योषनाये पिग्ङनिवृत्ति विवस्त्रतिभयोक्तं हियम्। पत्र भविष्यपुराणं गस्थीदकति सैय्त कृष्यति पात्रचत्-ष्टयम्। अर्घाघ पिद्यपाचेष पेतपातं प्रभचयेत्। ये समाना इति हाभ्यामितत् चेयं सिपिण्डनम्। नित्येन तुत्यं श्रीपं स्थादे-कोहिष्टं स्विया पपि"॥ मिलोनेति निल्यपद्मवावश्यकपरम्। तेन सपिग्डीकरणस्थोभयात्मकत्वात्। श्रीपमङ्कातं पार्वणांशि पार्वणतुत्यमेकोहिष्टांशे एकोहिष्टेन तुन्य बोध्यम् एकोहिष्ट-मिति एको हिष्टं तदमीया हिलात् मिप्छोकरण खेल्यभयपरम्। "एतत् सपिएडीकरणमेकोहिष्ट सिया यपि" इति याज-वस्कावचनैकवाकातात् तेन यादे पुमध्ये एतत् याद्वदयमेव सिया कर्त्यं नलाग्यद्यक्याद्याद्य मत्र चिल्या द्रित क्तिरिष्ठत्व इति कर्त्रि पष्ठीति कर्त्विनयमः। सुद्धि-त्रादादी स्वीणां भोजनदर्यनात्र भोज्ञत्व नियय:। सन्न स मातु:पत्था मुद्द सपिएडने अवग्रराध्येखग्ररथो: पिएडी क्रिशे-राक्छाची। तथा च गार्थः। "पतिनैकैन कत्त्व सिप्छी-कारणं स्तिया:। सा गता हि स्तैकलं कुशैरन्तयम् (पतृन्॥ अध्यास्यायती यसाव्यिः प्रकादन क्रिया। पुनेदेशेण सा काय्या मात्रखट्यार्थिभ."॥ भन्तर्यन्तीत्यर्थेऽन्तर्यविति लिङ्गचलयेन गुस्विमिति इलायुधः। प्रवचनं गोभिन-अधिस्वभाष्यकतापि लिखितम् अतएव प्रव्रक्ति पतिचे वा वितरि संतेऽधि न धितामहादिभिः सह मातः सपिएडीकरणं किन्तु पितामहादिभिरेव "खेन भवा सहैवास्या: सपिग्डो-करणं स्वियाः। एकलं सागता यसाञ्चरमन्त्रा हतिवते:। तिसन् सति सताः कुर्यः पितामद्या सहैवतु" इति षत्र

तिसान् सतीति आद्वान है भर्तुर्पल च एम्। प्रतएव "तथा-श्चैव तु जीवन्यां तस्याः श्वयुति निययः इति सञ्चारीतेन आयूजीवने तस्याः खये त्युक्तं न तु खग्ररेणिति कचिद्युक्तम् एव पितामद्यादिभिर्मातुः सिपण्डीकरणे सामगेन "ये चाच लामनु यांच लमनु तसौते खधा" रति मन्ती न पाछा: मन्त-सिङ्गविरीधादतवधास्यद्यिकै मालपचे यौद्तादिभिमेन्द्रानारं चिषितं न ये चाव व्यति वस्तुतस्तु आध्य द्यिके कृन्दोगानां माखपत्त एव नास्तीत्व् क्रम्। एवच्च "ब्रघ्यार्थं विखयाचेषु प्रेतपावं प्रमेचयेत्। एतत् सपिण्डोकरणमेकोहिष्टं स्त्रिया श्रिप" इति याच्चवल्कान पावणैकोहिष्टविक्षतीभूतपंसिष-ण्डनातिदेशात्तिहरूतीभूत ख्यादिभिः सह स्त्री सपिण्डनेऽपि ये समाना इति मन्बहयस्य पार्वशोक्त ये चाव लामिति मन्द्राणां लिङ्गार्थासमवेतत्वे ऽपि प्रक्रत्यर्थममवेतार्थत्वात् पाठ:। एवञ्च "मातामदानामधेवं यादं कुर्खादिचचणः। सन्दोहिण यथा न्यायं श्रेषाणां मन्द्रवर्जितम्"॥ इत्यनेन ग्रेषाणां यनान्ववर्जनमुक्तं तत् "शुद्दन्तां पितरः शुद्दन्तां पितामहाः"। इत्यादि प्रक्तत्यू हयोग्यमन्त्रवर्जनपरं न तु चिद्गोद्योग्यमस्ववर्षनपरम्। सर्वाभावे स्त्रियः कुर्य्यस्यादि-ं भाकेण्डेयपुराणीयद्वेतदानुगुखेन व्याख्यातं श्रहितस्वे याद-तत्त्वे घ।

चय विद्यपतितस्ताहाविदितमाहकालः। लघुहारीतः।

"याहविद्यो समुत्यसे स्ताहाविदिते तथा। एकाद्य्यां प्रकुः
वीत कृष्णपचे विद्येपतः"॥ यत्र स्ताहाज्ञाने यत् याहे
तिहनकरणयोग्यं मासिकं सावसारिक तदेव याहविद्यः
सित्यताव्यन्वेति उपस्थितत्वात् न तु ममावास्यादिविहितम्
एवच्चेत् क्यं स्ताहितरिक्षयमाणानाम् याद्यपारमासिकद्यः
याहानां यहण्मिति चित्तदादितदन्तन्यायात्। "ययाक्रमेण
पुचेण कार्यां प्रेतिक्रिया सदा। पतितापतितावापि एकोहिष्टःविधानतः"॥ इति जावालवचनात्। "त्युत्क्रमात् प्रेतः
याहानि यो नरी धर्ममोहितः। ददाति नरकं याति पित्यमिः
सह याखतम्"॥ इति देवलवचनाञ्च। प्रन्यया तिपामकर्षे

तदन्तभूतयाद्वानामकरगप्रसङ्गात्। एवदः पतितप्रेतयादः यदि कणोबादयां न कत तदा परवादकाले कत्तयं न तु पतितत्रादगीणेकादशीकातानुरोधेन परशादम्खा-कालवाधः। एतत्र्यायमूलं हेमाद्रिष्टत देवलवचनन्। "एकी-हिन्ने तु समाप्ते यदि विद्यः प्रजायते । साम्राज्यसिक्षियी तिसिस्तदा ददात् प्रयत्ततः ॥ भव सताइत्राहस्य विन्ने-र्शा देशलावधारणात् ऋष्यगुष्ठवचनं देशसिति विश्रेषण साधक तदाया—"देये पितृगां याहे तु प्रमीतं जायते यदि। तदशीचे व्यतौते तु तेषां याहे विधीयते ॥ ग्रुची-भूतन दातर्थं या तिथि: प्रतिपद्यते। मा तिथिस्तस्य कर्त्रचा न लन्या वै कदाचन ॥ देशे विद्वे प्यवश्य रेये यत सप्येकादयी प्रतीचणीया नवेत्यत्राग्रचीभूतेनेत्यादि दातव्यमित्यत भवनोयवत् यादं दातुमईत्याधान् कास इति हात्य युरोरच्यत्रापि चेत्यनेनाईतावित्यधिक्रत्य यकि च हात्या द्रवानेन चाईणाधिकारणे कालप्रात्ययः। चन्यया पुषवचन-पराहेंन पौनक्ष्यापतः। ततय दातयं शाहपूक्यकान मध्याद्भादिक प्राप्य या तिथिः ग्रचोभूतेन प्राप्यते सा तिथि-कास याइस कर्नचा करणाही म लगा क्रणोकारशी धर्मीचिवद्ये पतीचणीया। ततः श्रदीभूताद्यविद्यसीय-अहिपशस्तकाल प्राप्ततिथिखण्डनियमादपशस्तकालेऽपि त-निधिखण्ड एवं चाहं न श्रक्षपचीय तहितीयखण्डे चनुप-स्थिते:। एवश्वाशीचान्ते मङ्गवाभ्यन्तरसमास्य तिथी न श्राह किन्तु मधाद्वादिपाप्तरियौ यादं प्रमस्तकान्तान्। यथा खरइतियौ प्रश्रस्तकालनामे नत्नान एव कमा न तु सुगमा-दिना सामान्यकाललाभ इति। सध्यक्तिरिष स्तरप्य पूर्वी-त्तरभागयीरेको इष्टारभकानाकेन तत्प्रामिरादरगौधा यधा कानमाधवीयध्रती व्यासः। "कुतपमयमे भागे एकी हिष्ट-मुपक्तमत्। यावर्तनसमीपे वा तवेव नियतातावान्॥ याव-र्तनं पश्चिमदिगवस्थितछ।यायाः पूर्वदिगामनारभाषानः तत्-समीपे कुत्रपरोपदण्डे। गौतमौडपि "प्रारभ्य कुत्रपे श्राह" कुष्यादारीहिणं बुधः। विधिन्नी विधिमास्याय शैहिषन्तु न सद्येत्"॥ एतद्दनं भुजवस्थीमें भीजदेवेन धृतम्। वीधायनः "यो यस्य विद्वितः कालः कर्मणस्तदुपक्रमे। तिथि-र्याभिमता सातु कार्या नीपक्रमोज्जिता"॥ अतएव मदन-पारिजाते सोकाद्धिः "गणितात् द्वायते कालो यत्र तिष्ठन्ति देवताः। वरमेकाद्दतः काले नाकाले सचकोटयः"॥

पर्यवं पोडगयाद्यानां ययाक्रमस्यावध्यवत्वे भान्या एकस्याप्यकरणे तदादिश्राद्वानां पुनः करणप्रसद्धः "प्रवृत्त-मन्यया कुर्याद् यदि मोहात् कथ छन । यतस्तदन्यया भूतं तत एव समापयेत्" इति छन्दोगपरिश्रिष्टादिति चैव क्रम-क्षाद्वानुरोधेन हि प्रधानोभूतयाहान्तराणासाष्ट्रतरयुक्तत्वात् किन्तु यत् प्रतितं तदेव कर्त्रव्यं तुख्यकचाणा पोडग्रयाद्याना-मेकतरामिदौ पोडगानामपूर्वाणामनुदये प्रधानापूर्वासिदे-र्द्यापूर्वेषत्। न चाङ्गामिष्ठाविष समानमतदिति वार्ष्य तेषां कथ स्थादित्याकाद्वायां पूर्वमुत्पत्यमानतया प्रधान-विषयोत्पत्तिवाक्यविषयत्वाभाषात्। भतएव सर्वग्रह्मधि-करणेऽज्ञामिद्याविष नित्ये कचित्र प्रधानसिद्धिरिति सिद्यान्तः प्रधानैकतर।सिद्धौतु प्रधानापूर्विसिद्धिः सर्वतन्त्रविद्दद्देव यत-एय छन्दोगपरिशिष्टम्। "समाप्ते यदि जानीयागायैतदाया स्रतम्। ताबदेव पुन. कुर्याचाइतिः मर्वकर्मपः ॥ प्रधान-स्याक्रिया यत्र साङ्ग तत् क्रियते पुनः। तदङ्गस्याक्रियायान्तु नावृत्तिनं च तत्किया" इति नावृत्तिनं साद्रप्रधानावृत्तिः। न चेति न च तावना। वसाद्वस्य करणं किन्तु तहेगुस्तसमा-धानार्थं विद्युधार्यमाइ योगियाभ्रवस्काः। "प्रभानाट् यदिया मोहात् प्रचविताध्वरेषु यत्। प्ररचादेव तदियोः सपूर्णे स्थादिति श्रुतिः"॥ एषच् प्रश्तामिति प्रागुरुवचनं प्रयोगमध्य एव सुकारत्वेन योध्यम्। न घ मधिएइनानतार् प्तितमासिककरणे पुनः सपिएडोकरणप्रसद्भः। "सपिएडो-करचे हत्ते प्रधक्तं नोपपचते। प्रधक्ते तु छते पयात् पुन: कार्या स्पिक्ता" इति सपुरारीतवचनादिति वाजम। तद्वचन्या प्राप्तिपदासीकप्रेषस्य गाम्बोह्हनपूर्वक गासिका-दिवारचपरत्वात्। तया घ "मैतानामिष्ट सर्वयां ये सन्तेष

नियोजिता:। क्षतार्थास्ते हि संवत्ता: सपिएडीकरणे क्षते॥ प्रेतलाचे ह निस्तीर्णाः प्राप्ताः पित्रगणन्तु ते। यः मृपिण्डो-क्षतं प्रेतं प्रथक् पिण्डे नियोजयेत्। विधिघस्तेन भवति पित्रहा चोपनायते"। इति शातातपवचने पित्रव्यप्राधन-लारं पृथक्षरणं निपिदम्। अच तु पोडशयाद्याम्यस्या तदसिष्ठी पृथकरणेऽपि न दोष: छन्दोगपरिशिष्टवचनाञ्च तद्-यया."सिपण्डीकरणादूई' न द्यात् पतिमासिकम्। एको-हिष्टविधानेन दयादिखां गौनकः"॥ न दयात् प्रति-्मासिकमेकोहिष्टविधानेनेति सम्बन्धात् दद्यादित्या इ शीनवा इस्रनिकोहिष्टस्यैवापक्षष्टसपिएडोकरणाटूई विकल्पो द्रियंतः। स चापाप्तपेतभावविषय इति याद्वविकोत्तवत् भ्रमपतित-मासिकविषयोऽपौति। प्रागुक्त सञ्च हारीतवचने विशेषत इत्यमावस्थापेधया तस्या अपि विद्ये विधानात्। इमाद्रिष्टतं पट्विंशकातं "मासिके चान्दिके लिक्कि मंप्राप्ते स्तम्तके। बदन्ति श्रुष्टी तत्कार्धं द्रगं चापि विचचगैः"॥ राजमात्रेण्डे "याद्विद्वो समुत्यने चन्तरामृतम् तके। एका-दग्यां प्रकुर्वीत कषापचे विश्वेषतः॥ त्याद्यविश्वे समुत्यके स्तर्याविदिते दिने। समावास्यां प्रकुर्वीत वदन्येके मनी-ंषिणः"॥ अत्र स्तस्तकोपादानादृष्यमृह्वचनिऽशौचपद्-मेतलप्रम्। यत्वन्तरासृतस्तकेऽपि एकदश्या न्याहिष्यान तत्र खन्या वै कदाचन इति ऋषग्रह्मवचनविरोधादशीचान्त-दिने मलमासादिरूपविद्यान्तरेण तदकरणे बीध्यम्। अतएव याद्वविके अपाटवादागीचास्यामिष पतितमेकोहिष्टमेका-दश्यामग्रीचान्ते च मसमासे न कत्त्वां किन्तु मलमासा-व्याप्तकाष्ट्रीकादम्याभेवेत्युक्तम्। यतु "जातकभीण यत्याइं नव याद तथेव च। प्रतिसवसार याद मलमामेऽपि तत्-मातम्। प्रतिसवसार यादमगोचात् प्रतितश्च यत्॥ ससमासे-र्पि कर्त्तव्यमिति भागुरिभाषितम्"॥ इति ज्योतिर्वचनदयं तत्र पूर्ववचनशेषाद्वस्य "श्रमक्रान्तेऽपि कर्त्तश्यमाब्दिक प्रथम ्दिजै: रित लघुहारीतवचनैकवाक्यतया श्रन्याधिमासविष् .यकलात् "मलमास स्तानाच श्राहं यत्प्रतिवतसरम्। सन्त-

मामेऽपि कर्त्तव्यं नीन्येपान्तु कदाचन" इति कालमाधवीय-भृतपैठोनसिवचनैकावाक्यतया सलमामसृतविषयकत्वाच न दोपः यरवचनेनापि तद्भययादस्याभौचपतितस्य मसमासा-भ्यत्तरे कर्त्तव्यतोक्ता नतु तद्भिन्नस्यानुपस्थितस्य राजमार्न-यहेन एकाद्यां कत्त्यतोत्ते:। प्रचेताः "प्रविद्याते सते यमावास्यायां यवण्दिवसे धा" दूत्ववामावास्यायामपि सता-ष्टाविदित याष्ट्रविधानेनेकाद ग्यां प्रकुर्वीत स्रण्य चे विशेषत द्रसमावस्यापेच्यवोषपत्ती विश्रेषत दति यवणात् मैथिलोत्तं श्रुक्त काद्यां तत्करणं न युक्तं एकादशीमावे प्रकुर्धीत क्रण्यपचे विश्वयतः कुर्वीतिति वाव्यभेदापत्तेः। श्रम्भमतेतु कृष्णपघे एकादग्राममावास्यापेचया विशेषतः कुर्वतिखेकं वार्ष्यं त्रवण दिवस इति सरणस्येति ग्रेप: सृतग्रन्दोऽत सृताष्ट्रपरोऽनिधित सृतसौद्व देखिकाभावादिति याद्वविकः। सृताद्वनौस्वेव सूचे पाठी मैथिनपाद्यात्यदाचिणात्यानाम्। पत्रामावाम्या-यामिति गमनमाससम्बन्धिन्धां "प्रवामवासरे च्रेयं तमासेन्द्र-श्चरियवा"। इति सारणादिति मिताश्चरा। एतश्च सृतदिन-सामयोरजाने वच्यमाणहरस्यतिवचनात्। सृतमासे जाते मरणदिनाज्ञाने तु तदीयामावास्यायाम्। तथा च हेमाद्रि-कानादम्निग्धास्त नथावर्षमानभूतानि वचनानि । "हर-स्पति:। न ज्ञायते सृताइयेत् प्रोपिते संस्थिते सति। माम-चित्र प्रतिविद्यातस्त इर्गे स्थान्। ताइनि ॥ स्ताइनी त्यव यत् कर्त्तव्यमिति शेषः प्रीपित इत्यद्वानकारयोपस्चणं मामाज्ञाने तिथिज्ञान तु स एव "यदिमासी न विज्ञातो विज्ञातं दिनमेव हि। तदा मार्गिशिरे मासि माचे या तहिनं भवेत्"। काला-दर्श निर्णयासृतयोगार्गिशर इत्यम पाषाद्रक इति पाठः। भविष्यपुराणम्। "दिनमेव तु लानाति मामं नैव तु यो नरः। सार्गभीव तथा भाद्रे साथे वा तहिनं भवेत्"॥ एथु स्तादा-वधारणशाविधानामविशेषो याद्यः। सतदिनमासयोरसानै त् ष्टस्यतिः "दिनमासी न विद्याती मर्णस्य ग्रदा पुनः। प्रस्थान दिनमासी तु पाद्यी पूर्वीक्रया दिगा" पूर्वीक्रया दिमेति यथा सरप दिनमासमाने तद्यहणं तयोरेकतराचाने

यद्या व्यवस्थापितं तथावापौति तेन प्रस्थानदिनभासजाने तद्यद्यं पद्यानमासमावज्ञाने तदौयामायास्या प्रस्थानतिथिमावत्राने तु मार्गगीर्पादौ सत्तिथिपश्चिति। सन्देहेत भाष्ट यस:। "गतस्य न भवेत् वार्ता यावत् द्वादग्र-वार्षिकी। प्रेतावधारणं तस्य कर्तव्यं स्तवान्ययैः। यमासि यद्दर्धातस्तन्यासि तद्ह.क्रिया। दिनाञ्चाने कुह्नस्रस्य पायाद्ययाचवा कुहः"। एवध्य सरण प्रस्थानदिनमामाञ्चाने यवणदिवसम्य विषयः। प्रभामखण्डम्। "सृतम्याद्यो न वानाति मामं वापि कथवन। तेन कार्यमसावयां ग्राह याघेष्य मार्गके" कशस्त्रित परजपत्यान टिनमाम व्यवणाहि रूपेण केनायान्नाने। यतएव एषां सृत्तियादीमां पन्ना-नेऽपि यसान्तिथी मृतिः अयरी तस्यानेव तत्तिथेरपि विभार्षे तकासैकाद्याममावास्याणं वा एकोहिष्टं तथा अवयसाम-खापि विद्यागिन कार्थमेकोहिए प्रमाणाभावादिति दाच-स्पतिसियोक्तं हेयं यवगदिनविसारणे तनामोयेकादश्यमा यास्ययोगेषणं यद्तं तटपि प्रमाणशून्यम्। इत्यस् प्रवेद तमा सीयक्षणौकादम्यभाव एव प्रमावास्या प्राष्ट्रा आहतिहा स्ति वचनात्। चन्यया तहचनस्यसृताद्यविदिन द्रस्यस्य विषया-तुपधसी:। तस्याय प्राधान्यं तहचने विशेषत इत्विश-धानात् ।

ननु भगोचे तुकातीते वे द्वि श्रवणादगोचान्त द्वि प्रयोगि वक्तव्यमिति यादिन्तामणिः। मैवं यथा स्ताद्दिन तुक्तं-व्यमिखादिना स्ताद्विदिनिमित्तत्वेऽि तत्तिविविशेषस्यैव चक्रेतः न तु स्ताद्विनेत्र एक्षेतः यथा वा तत्र श्राद्वे विद्य-पतिते एक्षादश्यादिविधानात् एकादश्यादिक्षणेव चक्षेतः। तथा तताि श्रवीभूतिन दातव्यमिखादिना श्राद्वप्रशस्त्रकात्त पाप्तिविधिविशेषस्येव चक्षेतः। न तु अभोचान्तस्येव चक्षेतः।

पध जनातिधिकत्यम्। तस मलमामे न कर्त्तव्यं चान्द्र-सामोधत्वेन सावकाशत्वात्। न च तस्य सीरमामीधत्वं तथात्वे तन्तासे तसिथे: कदाचिदपासी तद्यं तत्कत्यनोपापत्ते: नचे-ष्टापत्ति: प्रतिसंवतारं तिहसानात् यथा ब्रह्मपुराणं गार्थ

"सर्वेश जमादिवसे सातैमंद्र सपाणिभः। गुरुदेवासिविप्राश्च पूजनीयाः प्रयत्नतः॥ खनश्चवञ्च पितरी तथा देवः प्रजा-पति: प्रतिसवसारश्वेव कर्त्तव्यय महीसाव:"। सातैस्तिल-स्रातैः प्रजापतिर्द्धद्या। तथा च तत्तिथमिषकत्य "तिलोइर्त्ती तिसम्रायो तिसहोमी तिसपदः तिसभुक् तिसवापौ च पट्-तिलौ नावसीदति"। सङ्गलपाणिभिः यभिषेतार्थसिंहर्मेङ्गलं तहेतुत्या गोरोचनादिकमपि सङ्गलं तेन गुगुल्वादिपाणिभि-रित्ययः। तयाच कत्यचिन्तामणी "गुडद्धतिलानदाज्यम-यत्येश्व बन्धनम्। गुगाुलुं निम्बसिद्दार्थं दूर्वागीरोचनायुतम्। सपूच्य भानुविन्नेग्री सद्घपिं प्रार्थयेदिदम्। चिरनौदी यथा त्व भी भविषामि तथा मुने !। रूपवान् विनवांसैव यिया-युक्तय सर्वदा। भाकेण्डेय! सन्दाभाग! सप्तकत्पान्तजीवन! पायु-रिष्टार्थं सिद्दार्थमस्राक वरहो भव"॥ स्वनघत्रमिति स्व-नच्वं अधिन्यायन्तर्गत जनाकाजीननचवः नामकरणे तया दर्भनात् वस्यमाणब्रह्मपुराणीक्तप्रणवादिनमोऽन्तेन नामीव पूजाविधानाच तदजाने खनचनाय नम इख्रेषिम्। पूजायामर्घानन्तरं पाद्यमाद्य मत्यपुराणम् "प्रघ्यपाद्यादिक-न्तव मधुपर्कं प्रयोजयेत्"। पाद्यानन्तरमध्यभार नरसिंह-पुराणम्। "पादां सेव त्यतीयया चतुर्याध्यं प्रदापरीत्"। खतीयया पुरुषसूक्षीयखतीयया ऋचा अभयक्रमदर्भगादि-क्छाविकसाः इति योदसः योपतिव्यवद्वारिनर्गये "नवास्वर-धरो भूत्वा पूजयेच चिरायुपम्"। तथा "सिभुजं कटिलं सीम्य सुद्वर्षं चिरजीविनम्। सार्कण्डेयं नरी भक्त्या पूज्येत् प्रयतस्तथा॥ तती दीर्घायुपं व्यास रामंद्रौणि क्षपं वर्तिम्। प्रश्लादच हन्मतां विभीषणमधार्चयेत्"॥ रामीवि परग्र-राम: चिरजीविमाइचर्यात् द्रौणिरम्नत्यामा। तया "स्न-नसतं समातिथिं प्राप्य सम्प्रजयेषरः। पष्ठोश्व द्धिमक्तेन वर्षे वर्षे पुनः पुनः। योगियाच्चवस्काः। "ध्यायेवारायणं नित्यं सामादिषु च कमस तिद्यां रितिमन्त्रेण सायादस् पुन: पुन:। गायती वैषावोद्योपा विष्योः समार्षाय वै ॥ धायित सारेत्। स च मन्त्रः। "तिहिच्चीः परमं पदं सदा पर्यान्त

स्रयः दिवीव चत्तुराततम्"। वामनप्राणम्। "मयमङ्गन-मङ्गलां वरेष्यां वरदं ग्रमम्। नारायणं नमस्कृत्य सर्वकर्माणि कारयेत्"॥

संकर्णाकरण निन्दामाय भविष्यपुराणम्। "संकर्णन विनाराजन्य किञ्चित् कुरते नरः। फनशास्यास्यमं तम्य धर्मस्याद्वेचयो भवेत्"॥ वद्यपुराणं "प्रणवादिममायुक्तं है नमस्वारानकी रितम्। "खनाम सर्यमलानां मन्य रस्र-भिधीयते। पनेनेव विधानेन गन्धपुष्पे निषेद्येत् ॥ एकै-कस्य प्रकृषीत यद्योहिष्टं क्रमेण तु। गत्थपुष्पमात्रं पञ्जोप-चाराद्यसभावे। यया मन्त्राच्छतगुणं मोक्ष भक्ष्या सचगुणो-त्तरम्। अक्तिमन्त्रसमितन्तु कोटिकोटिगुणोत्तरम्॥ सर्वत्र कर्मोपदेशक दिक्षणादिभिरर्चयेत्। तथीपदेष्टारमपि पुन-येच ततो गुरम्॥ न पूज्यते गुर्घन नरेस्तत्राफता कियाण इति मसापुराणवचनात्। ततः कर्मानलरं तिनद्दोमस् पूजितदेवतानामभिः कार्यः "एकेकां देवतां राम ! समुहित्य यथाविधि। चतुर्णन्तेन धर्मन्त । नामा च प्रणवादिमा॥ होस-द्रव्यमधैकैकं शतस्यन्त होमधेत्" इति विषाधमीत्रदर्श-नात् एव होमें साहान्तता च मन्त्रस्य । "खाहावसान जुह्न-यात् ध्यायन् वे मन्द्रवताम्"॥ इति सृतेः भगको तु देवी-पुराणम्। "होमो यहादिपूजायां यतमष्टीतरं भवेत्। पष्टाः विश्वतिरष्टी वा यदाशक्ति विधोयते"॥ स्कान्दे। "खण्डन नखकेगानां मेथुनाध्वानमेव च। श्रामिप कलइं हिंसां वर्षे. वहीं विवर्तियेत्"॥ पध्वामम् पध्वगमनं कलहिमित्यत सङ्गर् मिति कचित् पाठः। सङ्गरं युदम्। वर्षष्टदौजनादिने वृद्धमनुः। "सते जमानि संकान्ती याश्वे जमादिने तथा। अस्प्रयस्योने चैव न स्नायादुणावारिणा" ॥ जनानि । पुत्रजनानि स्वीतिषे । "साला समादिने सियं परिहरत् प्राम्नीत्यमोष्टा त्रियम्। मत्यान्योचयतो दिजाय ददतोऽप्यायुचिर वर्दते"। शक्तून् जादति यस्तु तस्य रिपवो नागं प्रयान्ति भवं भुड्ते यस्तु निरामिष स हि भवेत् जनान्तरे पण्डितः। दौषिकाशां "जगर्ममुता यदि जमामासे यस भुवं जमीतियिभवेच।

भवन्ति तदसारमेव याववैरुष्यसमानसुखानि तस्य ॥ सतान्त-क्षुजयोर्वारे यस्य जनादिनं भवेत्। भनृचयोगसम्प्राप्तो विद्यस्तस्य पदेपदे" ॥ क्षतान्तकुत्रयोः यनिमङ्गलयोः । "तस्य सर्विषयोस्रान ग्रष्टविप्रमुरार्चनम्। ग्रहानुहिम्स होमो वा यहाणा प्रोतिमिच्छता॥ सोरार्योर्दिन मुक्ता देयानुचे तु काञ्चनम्। मुरामामौ यचा क्षष्ठ ग्रेलेयं रजनौहयम्॥ शठीचम्पकसुस्तच्च सर्वीपधिगणः स्रुतः"॥ सीराययोः शनि-भौमयोः। रजनोद्ययं छरिद्रादास्हरिद्रे एषां पत्नादीनामपि यहणं कषायावयवयहणमाह मत्यपुराणम् "एपा पवाणि साराणि सूनानि कुसुमानि च। एवमादीनि चान्यानि कपायाखोगणः स्मृतः"। तव क्रमः। तिलोइनेन तिन-युत्रामलीन स्नान नवदस्त्रपरिधान गुग्ग् लुनियाखेतसर्पप-दूर्यागोरोचनाक्षक जनायन्यं दिच्यपाणी वधीयात्। गुर-देवाग्निविप्राः पूजनौयाः खनचवमपि पूजनोयम्। प्रव च इस्ता खातीयवणा पक्षोवे सगियारी नपुं ि स्यात्। पुंसि पुनर्वसुपयो सूल स्वस्ती स्तियः ग्रेपा इत्यनेन निष्ट्रनिर्णेयः। जनानचत्रादीना गीपनमाद्व विष्णुधर्मोत्तरे। "गोपयेष्नमा-नद्यवं धनसार राई सलम्। प्रभोरप्यवमानस् तस्य द्य-रितश्व यत्" ॥ धनसार धनश्रेष्ठ मल छिद्रम्। पितरी प्रजा-प्रति: सूर्यो गणगतिर्मार्कण्डयस पूजनीय:। "स्रतिल गुड-संयुक्तमञ्ज्ञस्यविभितं पयः। सार्करङ्घवरं लब्धा पिवास्यायुष्य-इतवे" इति गुडतिमदुषधानमन्तः। ततः प्रार्थनामन्त्रो। "विश्नोवी यया त्व भी भविषाभि तया मुनै। रूपवान् वित्तवारीय त्रियायुक्षय सर्वदा ॥ सार्कण्डेय सद्दाभाग सप्त-कल्पाला जीवन। चायुरिष्टार्यसम्बद्धमणाक वरदी भव"। तती थासपरग्रामाख्यामकपविषयद्वाददम्मदिभीपणाः पुननीयाः। पद्याप। "वैसोखे यानि भूतानि स्यावर्शाच च्याणि च। ब्रह्मविद्यागिवै: साह रचा कुपंत्य तानि में । द्ति मरखपुराषीय रघायं पठेत्। विख्माखवादमध्यक्रमम्तु विष्णुपुराचादुसेयः यया ''क्षणीऽधि वस्देवस्य मादो क्षपाष सत्तरः। दैवकाय मदावाद्वर्धसदेवसदायवान्"।

स्रयः दिवीव चत्तुराततम्"। वामनप्राणम्। "सर्वमङ्गन-मङ्गलं वरेण्यं वरदं ग्रमम्। नारायणं नमस्कृत्य सर्वकर्माणि कारयेत्"॥

संकर्षाकरण निन्दासाय भविष्यपुराणम्। "संकर्षान विनाराजन् यात्विचित् कुर्तते नरः। फलझात्याक्यक तभ्य धर्मेखाईकयो भवेत्"॥ ब्रह्मपुराणं "प्रणवाटिसमायुक्तं 🎚 नमस्तारात्तकी तितम्। "स्वनाम सर्वसत्वानां मन्त्र इत्ध-भिधोयते। धनेनैव विधानेन गर्यपुष्पे निवेदयेत्'॥ एकै-कस्य प्रकुर्वीत यद्यीहिष्टं क्रमेण तु। गन्धपुष्पमात्रं पञ्चीप-चाराद्यसभावे। यदा "मन्द्राच्छतगुणं प्रोक्ष भक्ष्या नचगुणो-त्तरम्। भिक्तमन्त्रममितन्तु कोटिकोटिगुणोत्तरम्॥ सर्वेष कर्मोपदेशक दिचणादिभिरश्चेयेत्। तथोपदेष्टारमिष पूज-येच तता गुरुम्॥ न पूज्यते गुरुर्यम नरेस्त्रमाफना क्रिया" इति मस्त्रपुराणवचनात्। ततः कर्मानन्तरं तिलहोमस्त पूजितदेवतानामिः कार्यः "एकैकां देवतां राम । समुद्दिय ययाविधि। चतुर्थन्तेन धर्मन्न ! नाम्ना च प्रणवादिना॥ होस-द्रव्यमयेकैक शतम्खन्तु होमयेत्" इति विषाुधर्मीत्रास्थ-नात् एव होमे खाहान्तता च मन्त्रस्य । "खाहावसाने जुह्न-यात् ध्यायन् वै मन्वदेवताम् ॥ इति स्रुतेः पश्रको तु देवी-पुराणम्। "होमो यहादिपूजायां यतमष्टोत्तरं भवेत्। प्रष्टा-विश्वतिरष्टी वा यद्याशक्ति विधीयते"॥ स्कान्दे। "विरहन नखकियानां मैथुनाध्वानमेव च। ऋमिप कलहें हिंसी वर्ष-हही विवर्णयेत्"॥ अध्यानम् अध्यामनं कलहभित्यव सङ्गर्-मिति सचित् पाठः। सङ्गर युद्धम्। वर्षहृद्दी सन्मदिने वृद्धमनुः। "सृते लकानि संकान्ती यादे जकादिने तथा। ऋस्प्रयस्पर्यने चैव न स्नाधादुणावारिणा" ॥ जनानि । पुत्रजनानि ज्योतिषे । "स्राला नमादिने स्तियं परिहरन् प्राप्नीत्यभोष्टा शियम्। मत्यामोचयतो हिनाय ददतोऽप्यायुधिर वहेते"। यक्त्रन खादति यस्तु तस्य रिपवी नागं प्रयान्ति भुवं भुड्तो यस् निरामिष म हि भवेत् जन्मान्तरे परिष्ठतः। दोषिका "लगर्चयुक्ता यदि जनामासे यस भुवं जनीतियिभेषे

माइ मत्यपुराणम्। "नवप्रधमसं छला तनःकर्म ममार्भेत्। धन्यथा फनट पुंमा न काम्य जायते क्षचित्"॥ वामनपुराणे। का सिकगुक्तपत्तमधिष्ठत्य बिलं प्रति भगवद्याकां "बौरप्रति-पदानाम तव भावी महोत्सवः। श्रवलां नरगार्द्ना ष्टाः पृष्टाः खलकताः ॥ पुष्पदोपप्रदानेन पूजधिषन्ति मानवाः"। तव मन्तः। "विनिराजः ! नमस्तुभ्यं विरोचनस्त ! प्रभो !। भवि-खेन्द्रस्रागते! पूजेयं प्रतिग्रह्यताम्"॥ प्रतिपदा प्रतिपत्तिया श्रव प्रतिपदि। ब्रह्मपुराचे विनिराजिति मन्त्रस्य पृत्रम्। "मन्त्रेणानन गाजेन्द्रा समन्त्रो मपुरोहितः" इत्यर्ड पद्याद्धि । "एवं पृत्रां नृपः कृत्वा रावो जागरणं ततः" इत्युक्तमिति पुन-ब्रिह्मपुराणि। "शद्भरध पुरा दूतं समर्ज सुमनोष्टरम्। कार्त्तिक गुक्तपत्ते तु प्रथमेऽहिन भूपत्।। जित्य गद्गस्तव जयं लेभे च पार्वती। अतोऽर्थाच्छद्वरो दृ:को गोरो नित्यं सुर्कोषिता॥ तथा-द्यात प्रकर्त्तव्य प्रभातं तत्र मानवैः। तिस्मिन् यूर्ते जयो यस्य तस्य मधसरः ग्रमः॥ पराचयो विषद्धनु नथनाग्रकरो भवेत्"॥ द्युतद्यापाणिभिः क्रोइनं यथा मनुः। "चप्राणिभिर्यत् क्रियते तझोकं दातम्राते"। ततियमधिकत्य भवियोत्तरे। "यो यो याद्द्रयभावेन तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर !। इपंटैन्यादिना तेन तस्य वर्षे प्रयाति कि"॥ तया "महापुर्वातिधिविधं यनिराज्य-विवर्धिनौ। सानं दानं शतगुणं कात्तिक्रम्यां तियौ भवेत्" ॥ भविष्ये "रोष्टिखा प्रतिपदाक्षा मार्गे मामि मितत्रा। गङ्गायां यदि नभोत सूर्यग्रहगतेः समा ॥ कन्यतरी । वामनपुराणं "मन्दामु. नाभ्यङ्गम्पाचरेच चौरच रिज्ञामु स्यामु सामं पूर्णासु योधित् परिवर्जनोया भद्रासु सर्वाण समावरेश"। नम्दादिक्रमभाष्ट क्योंतिये। नन्दा भद्रा क्या रिक्षा पूर्णा घ प्रतिषद: क्रमात्।

प्रतिपदादिपञ्चरगितियम् कुषाण्डादिपञ्चरग्रद्यभचणे प्रतिपदादिपञ्चरगितः। "कुषाण्डे धार्यदानि च्यादृद्यां न गारद्विम्। द्वष्टगत्नः पटोले व्यादनदानिल् सृत्रके द कल्डा सावते विस्त्रे तियाग्योनिय निम्बके। ताले गागेरमागः व्यात् नार्विने घ श्रुषता। तृत्रो गोमांमनुस्या व्यात् "सहसन्त पितुर्भाता गौरवेणातिरिक्यते" इति सनुवधने सप्त पितृनपेक्ष यद्दीरवमुक्तं तत्वीयगरचार्यम् अतएव मनुः। "मृते भर्त्ति पुत्रस्तु वाष्यो मात्ररश्चिता"। वाष्यो गईजीयः पत्र वैदिकेतरमन्त्रवाठे शूट्राटेशयधिकारः वेद-मखवजे श्रूद्र इति छन्दोगा द्विका चार विस्तामणि ध्रमस्तो वेदेति विशेषणात्। एवस पुराणमधिक्तत्य "प्रध्येतध्यं न षान्धेन बाह्ययं चित्रदं विता। श्रीतयमिष्ठ शुद्रेण नाध्ये-तव्यं कदाचन" द्रित भविष्यपुराण्यचनं पुराणमन्वेतरपरम्। पख्यत्रसानयाहे पु पौराणिकमन्द्रोदिष निधिष्ठ:। शूट्रमधि-क्षत्य "नमस्कारेण मञ्चेष पश्चयन्नाच शापरीत्" इति यान्न-वन्कीन "बद्धाद्यविधामेव मन्तवम् सानमियते। तूणोमेव ष्टि शूद्रस्य मनगस्कारकं सतम्" इति योगियान्नवस्योन माधमधिकचा "चयमेव विधि: प्रोक्तः श्रुद्धाणां सन्तविर्धितः। असन्बन्ध सु शुद्रम्य विभी सन्त्रेण रहाते" इति वराष्ट्रपुराजेन च नमकारेणेति तूच्योमिति सम्बद्धित इति चाभिधाना-देतत्यरं वैदिक्षपरश्च श्रुद्राधिकारे गीतसवचनम् "चनुसतोऽस्य नमस्तारो यन्त" इति यनुपनीतस्यापि यूद्रममत्वेन यादा-तिरिक्षे वेदपाठिनिषेधमाइ मन्:। "नाभिव्याद्वारयेद्वस्त-स्त्रभानिनयनाहते। अद्भेष दि ससस्तायत् यावहेदं न जायते ॥ स्त्रीगामपि वैदिकमन्त्रितिषमान्न सृमिंदतांप-नीयम्। "पावित्री प्रणवं यजुर्कक्षी स्तीशुरयोनिक्हिन साविवीं प्रश्वं यज्निसीं स्वीश्दो यदि जानीयात् सस्ती-धो गच्छति इति नेच्छन्तीति पर्धान्ते पराश्वरभाषोऽिष सिखितम्। जनातियै: प्रामुक्त बद्धपुराणीयत्वात् पीण-मास्यनामामादारः। ग्रह्मपरिशिष्टम्। "उपाक्रमे तयोत्-मर्गः प्रमवाद्ये। यानहदी प्रशः कार्या वर्जायता तु पेंद्रकम्" ॥ अवाष्टकासाइचय्यकिकाशाष्ट्रस्यां तथा दर्शनाञ्च प्रमयाची जमदिनं हादशमासाः संवयसः कचित्रवीदशमासः सवसर इति शुत्या वर्षे मासद्विक्तपा मानद्वविकता सेवात पाद्या न तु सीरे मासि तिधिदयसामानानष्टिकीमूनवाद-नीता पाद्या तिविद्यसामस्य मानहित्वे प्रमाणाभावात्। विशिष्ठशाष्ट्री च गर्गो यवनो दगाइम् । जनाग्यमामं निल भागुरिध चूडे विवाहे चुरकर्णविधे"॥ एतद्विषयभेटस्तु राज-मार्त्तएड "उन्नानि प्रतिपिदानि पुन: समावितानि च। मापेच निरपेचाणि श्रुतिवाक्यानि की विदेः"॥ सापेच निर-पैचाणि समधीममधीवपयकाणि। चुरित चुरकर्म राज-मार्नगढ़े। "देवकार्यो पित्रयाह्ये रवेरंशपरिस्था। सुरक्रम न अविति जन्ममासेऽथ जन्मभे"॥ एवञ्च चुड द्रति चुडाकरणे श्रीधकदोषाय नार्यास्त् लनामामे विवाहमाद्व श्रीपतिव्यव-हारममुचये। "स्नानं टान तपोविद्या सर्वमङ्ग स्वयंत्रम्। उद्दादय कुमारोगां जन्ममाम प्रशस्यते"॥ एवं "असोद्ये लकास तारकास माम्रध वा लकानि लकाभे वा। जतेन विप्रो न बहुश्रुतोऽिंघ विद्याविशेषैः प्रधितः प्रधिव्याम्" इति व्याम-वचनेन जनामाम उपनयनविधानात्तदङ्गमाध्यववयनेऽपि न दोपः। उदये सम्बे भे राभी न बहुश्वतीर्राप स्वत्यविद्योर्राप। श्रव जन्ममामस्यास्य मौरादरी यावादिमाइचयात व्यव-हारार्डाप तथा। प्रांतमास जन्मनचत्रसत्यमाह विद्याधर्मी-त्तरम्। "अन्यनस्था मोम शिरः सार्नन यसतः। पुता मीमस्य वर्त्तेचा नचत्रस्य तयासानः॥ आदं कुर्यात् प्रयत्नेन विद्भिनाह्मणपूजने। वाहनायुधरत्नात्यं पृजनौयं प्रयत्ने:। सराणामचन कार्या कंशवस्य विशेषतः" ॥

श्रय प्रांतपत्। सा च क्रणा दितोयायुता प्राच्या "प्रति-पत् सदितोया स्थात्" दृत्यापस्तस्त्रीयात्। न चैतस्य गुक्का-पत्त्व प्रांतपदाप्यमावः त गुक्कापरेण मद्भोचात्। तत्रश्च गुक्कामावास्थायुता ग्राच्या "तिमस्यव्यापिनी या त मेव पुग्या मदातिथिः। न तत् युग्मादरणमन्यत्र द्वितामरात्'॥ क्रणाप्यपवामं दितोयायुता न ग्राच्या। तथा च सद्द्वांगष्ठः। "दितीया पद्ममो वेधाद्यमो च त्रयोदणी। चतुदंगोन्नोप-वाम दृन्यः पूर्वात्तर् तियो" दितीयाविधाद्योगात् प्रतिपत् तृत्तीये दृन्तौत्ययः। प्रमन्यच श्रतीपवामपरेण विश्वप्रविधि-नापस्तस्त्रीय सामान्यस्य स्कोचात्। क्रमादी नवग्रद्वपूत्ता-

माइ मत्यपुराणम्। "नवयहसमां छत्वा तनःकसं मसारमेत्। धन्यया फनद पुंमां न कास्य जायते कचित्"॥ वासनपुराणे। का त्तिक गुक्त प च सिंध हत्य व सिंप्रति भगवद्याका "वौरप्रति-पदानाम तव भावो महोस्रवः। श्रवत्वां नग्गादुन। ছटा: पुटाः खलक्षताः॥ पुष्पदोपप्रदानन पूजयिष्यन्ति मानवाः"। तव मन्तः। "वनिरानः। नमस्ययं विरोचनस्तः। प्रभो।। भवि-खेन्द्रसूराराते ! पूजेयं प्रतिग्रह्यताम्" ॥ प्रतिपदा प्रतिपत्तिया श्रव प्रतिपदि। ब्रह्मप्रापे दिनराजिति मन्त्रय पृवंस्। "मन्वेणानेन राजेन्द्र! मगन्वी मपुरोधितः" द्रवार्ड पद्याद्पि। "एवं पृत्रा नृपः कृत्वा रावौ जागरण ततः" इत्युक्तमिति पुन-ब्रह्मपुराणि। "गद्गरस पुरा दूतं समर्ज सुमनोद्वरम्। कार्तिके श्रुक्तपन्ने तु प्रथमेऽहिन भूपर्ता॥ जित्रश्र श्रद्धास्त्रव जयं लेमे प पार्वती। अतोऽयाच्छिइरो दुःकोगोरो नित्य सुर्कोधिता॥ तस्रा-द्यात प्रकर्त्वय प्रभातं तत्र मानवै:। तिसान् खूर्त लयो यस्य तस्य सवस्म र: गुभः ॥ पराचयो विरुद्धम् लब्धनाश्वरी भवेत्"॥ दातस्वापाणिभिः कोडनं यथा मनुः। "घप्राणिभिर्यत् क्रियते तक्षोंक द्यूतमुद्यत्"। तत्तियिमधिक्षत्व भविष्योत्तरे। "यो यो याद्द्रमभावेन तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर !। एपटैन्यादिना तेन तस्य वर्षे प्रयाति हिं"॥ तया "महापुष्यातिथितियं विनिरास्य-विवर्धिनो । स्नानं दान गतगुणं कात्तिक्रम्यां तियौ भवेत्" ॥ भविष्ये "रोष्टिखा प्रतिपद्मका मार्गे मामि भितेतरा। गङ्गार्था यदि मध्येत सूर्ययक्षाते: ममा ॥ कम्पत्री। वामनप्राणं "नन्दासुः नाभ्यद्गम्पाचरेश घौरश्व रिक्तास खयास सामं पूर्णासु योषित् परिवर्जनीया भद्रासु सर्वाण समाचरेश"। नन्दादिक्रममाद च्योतिये। नन्दा भद्रा लया रिक्रा पूर्ण च प्रतिपदः क्रमात्।

प्रतिपदादिपश्चटमितिय कुषाण्डादिपश्चरम्य व्यापश्चिम् स्मिन् दीपमाह मृतिः। "कुषाण्डे चार्यहानि स्याहृहतां न स्मित्रहाम्। बहुमबः पटोले स्याहनहानिन् भूनके । कनदी आवते विल्ये तिल्यम्योगिय निम्मके। ताले मगोरनामः स्थात् नारिकेले च स्थाता। तस्यो सीमांमनेला स्थात

क्षलस्वी गोबधात्मिका॥ शिम्बी पापवारी प्रीक्षा पृतिका ब्रह्मघातिका। वालांकी सुतद्दानि स्वात् चिरशेगी च मापदे॥ महापापकर मास प्रतिपद्रादिषु वजयेत्"॥ सप्तस्यामेव तालनिपेधादन्यचैतज्ञचण प्राप्तमत "ताल खेताख वार्त्तार्की न खादेहेण्यो नर'। इत्यनेन तासमिष खेत निषिष्ठ साइचर्येष नपुसकसिद्धेन खेतानुषद्वात्। एव अलाव यत्नाकारा वार्ताकी कुन्टसिमा इति यदिप "कुसुभ नानिकाणाक हन्ताक पौतिक तथा। भचयन पतितस्तु खादाप वैदालगी दिन " दख्यानमा मामान्यतोऽभिहित तम नामिका खेतकलस्वीति कट्यतर् । "पृतिका च दाट ग्यामधिकदोपाय शूद्रविपयिका वा वार्साको वस्लेति समुद्र करभाषम् अवेदमस्वस्वीत वर्त्तनाकारामित्यसानुपङ्गकल-नम्। व्याधितस्वीपधिक्रयायामपवादमाह सुमन्तः। "लगुन पसाण्ड्रसञ्जनसभीयाद्वस्तिकावाभीच्यावस्युमामसूत्ररती उमेध्याभद्यभद्यमे गायचारसहस्य सूभि सम्पातानवनये द्रपवामय एतान्येव व्याधितस्य भिषक् ऋयायामप्रतिसिञ्जानि भवन्ति यानि चान्यान्येव प्रकाराणि तैन्वप्यदोप " इति कुभौपाना इति ग्याता सम्पातानुदकविन्द्न शिर्मि पात्री दिति प्रायिक्विविक । प्रायिक्त वचनान्तरैकवाकात्या ययायोग्यसू इनौध कत्पतरी "नाभ्यद्ग मर्के न च भृतिपुत्रो चौरस्य गुक्त उय सुजे च मासम्। वुधे च यापा न समाचर्च गेपेपु मर्वाण मदेव कुष्यात्। चित्रा खहम्ता यवणासु तल शीरं विशाखा प्रतिपत्स धर्मम्। सूने स्रो भाद्पदासु सास योपियाधाक्षतिकसात्तरासु"॥ स्व धानष्टा स्वा स्वा-गिरीं मधाक्तिकाम्या भद्रीतरास्ताम् दतीया मुमाम षान्दम । कति । दितश्व मार्पप तैल यसन मुप्पवासि तम्। घट्ट वकतैनच सानाभ्यकेच निताम " पचेना "तेनाभ्यद्रनिषेधे तु तिस्तेन निषिध्यत । वार प्रतिप्रस्य माइस्मित । वयो पूषा गुरो दूवा भूमि भूमिजवासर। भागते गामय दयात् तेमदापापगालये। "दयातेन इति श्यः ।

भय दितोया "साच कषा पूर्वयुता याद्या प्रतिपत् सदितीया स्वाद् दितीया प्रतिपत् युता'' द्वापस्तस्ववचनात्। तवीत्तयुत्ते: प्रतिपत् कृष्णा तसाइचर्यात् हितीयापि तथिति गुला तु पर्युता याद्या युग्मात् एवं वस्यमाण उपवासविधाय-वायो: विषद्वचनयो: व्यवस्योत्रेया यथा नाग्द:। "हितीयै-वादशो पष्टी तथा वैवाष्टमीतिथि:। वैधादधस्ताबन्यस्ता उपवामे तिथौस्विमाः"॥ श्रत्न द्वितोयाद्यास्तृतौयादियुताः नोपोषा दखर्य: विषारहस्यम् "एकादश्यष्टमो पष्ठो दितौया च चतुर्दशौ। वयोदध्याध्यमावास्या उषोष्याः स्युः परान्दिता."। तसात् पूर्ववचनं सप्यापस्विषयं प्रवचनं शुक्कपस्विषय मनारयद्वितीयायान्तु दिवा वासुदेवार्द्धनं रातौ चन्द्रोटयेऽर्घः टान नक्त भोजनादिकम्। यथा विषाधमीतरे। देवसभ्ययं पुष्पैय धूप्रदोपानुसिपनै.। उहच्छतय बानिन्दोर्दयादर्घाः समाहित:॥ नक्त भुञ्जीत चनगे यायत्तिष्ठति चन्द्रमाः। चरां गते न सुस्त्रीत व्रतमङ्गभयाचरः'॥ चस्त गते चन्द्रे विष्यु-प्राणे। "द्वाराबा बत यच ण्वमेव तिथी मृतम्। तन्या-सुभययोगिन्यामाचरत्तद् इत व्रती"॥ एवमेव तियौ दिना राविसम्बन्धितयो। गृत मुनिभिः भ्रमण्य तस्यामित्यादि। स्कन्दपुराण् "यापाढस्य मिते पचे हितीया पुष्पमयुता। तस्यां रय समारीष्य रामं मा भद्रया मह। बाहीत्मव प्रवृत्ताय प्रीण-रेच दिनान् वहन्"। तया "रासाभावे तियौ कार्या मदा गा प्रीतये सम"। लिङ्गपुराणे "कार्त्तिक तु द्वितीयाया गुकाया भात्यपुत्रन। या न स्यादिनम्यन्ति भातरः गगननानि" सम्या ्द्रति ग्रेष.। सद्वाभारते "कार्त्ति ग्रह्मपद्यस्य द्वितीयायां युधि-हिर !। यमा यमुनया पूर्व भोजितः स्वरह स्वयम ॥ तस्या निलयती वार्य। स भीक्रथमना वर्षः। यद्यंत भगिनी एस्तारी-

यगस्ते" ॥ प्रणाममन्त्रस्त् "धर्मराज ! नमसुभ्यं नमस्ते यसुना-यज्ञ। पादि मा किइरै: सर्घ सूर्यपुष्ट। नमीऽम्न ते" ॥ यस्-नाच मपूच्य नमस्त्रधात्। "यमस्यमनमस्ते भ्य यमुने। नीक-पूजिते।। वरदा भव में नित्य सूर्यपुष्ति। नमीऽस्तु ते"॥ यम दला पठेत् भातस्तवानुजाता इ भुद्धः भक्तमिट गुभम्। मीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत् "। ज्येष्ठाचेत्तटा घग्रज्ञाताद्वमिति वदेत्। यत भोक्षय पुष्टियर्डनिमिति विधित्तमभिव्याष्ट्रतफन श्रुवा भोजननियमस्य प्राधान्यात्तस्य सुग्यकानोऽष्टधा विभक्त-दिनपचमाशो ग्राष्ट्र । यथा दच । "पद्यमे च तथा भागे सविभागो यथाईत । पित्रदेवमनुष्याणा कीटानाचीप-दिशते॥ भंविभाग तत कला ग्रहस्य शेषभुग् भवेत्। द्रतिष्ठामपुराणाद्यै. पष्टच्र सप्तम नयेत्"॥ मिवभागो विभ-च्याय प्रतिपादन देवोऽत्र वैखदेवयर्भसम्बस्धी पञ्चमाशालाभे तु। "न भुज्जौतोषृतसेष्ट नातिसीष्टित्यमाचरेत्। नातिप्रगी नातिसायमण॥ इति मनूत्रपर्युदस्तास्योदयास्तेतरकानोऽपि याधा । सी हिला दिशि । यस भी जनसा रागप्राप्त दिशि तत्ता-लम्य "सुनिभिद्धिरान प्रोक्त विपाणा मत्येवामिना नित्यम्। अइनि च तथा तमस्त्रियां मार्देप्रद्यामाना "॥ दति कात्या यनीयेन नियमितताडीजनकानस्य वैधत्वेन शास्त्रीयत्वात् न सामान्ययास्त्रप्राप्तुरपजीविपर्युदासासङ्गति । अनामध्ययन भान्ताना प्रेतपचीत्तरिहतोयाया तिविषेधात तथा च राज सार्त्तण्डे। "प्रेको चैचा दितीयास्ता प्रेतपची गते तुया। या स को जागरे याते चैत्रपावस्था परेऽपि च॥ चातुर्मास्ये समाप्ते च दितीया या भवेतिथि। परास्त्रेतस्वनध्याय पुरागौ परिकोत्तित "॥ ज्योतिषे। तया "यमिस्तीयाया यात्राया मरणं भवेत्"॥

श्रय छतीया। साच चतुर्थीयुता रमान्नतेतरदेवकर्मसु चाद्या। "रमार्या वर्जीयला तु छतीया मुनिमत्तम।। यन्येषु सर्वकार्येषु गणयुत्ता प्रमन्यते"॥ इति सन्नविन्तीत् गणीगणपतिस्तिथियतुर्थी तत्त्व युग्मवाद्य रमान्नतमात्व पर भविष्योत्तरे। "भद्रे। कुर प्रयत्नेन रमास्य नतमुत्तमम्।

ज्येष्ठ-ग्रह्म-त्वतीयायां स्नाता नियमतत्वराः"॥ रभया ज्ञत-मिति रभावतं साति: "वैगाखे मासि राजेन्द् ! गुलपचे खती-यिका। अञ्चया सा तिथि: प्रोक्षा छ त्रिकारो हिणोयुता॥ तस्यां दानादिकं पुर्यसच्यं ससुदाद्यतम्" ॥ भविष्ये। "या ं गुक्ता कुरुशाद्रन ! वंशाचि मासि वै तिथि:। हतीया साऽचया लोके गौर्वागरिभवन्दिता॥ योऽस्यां ददाति करकान् वारि-वाजसमन्दितान्। स धाति पुरुषो दौर्! लोकान् वै हेममा-लिनः"॥ वरकान् कुमान् वाजमन हेममालिनः स्थिस। बद्धपुराणे। "यः प्रयति खतोयायां खपां चन्दनकपितम्। वैशाख्य सिते पचे स यात्यचा तमन्दिरम्"॥ रूपितं चर्चितं स्कन्दपुराणमः "वैशाखस्य सिते पचे खतीयाऽचयमंत्रिता। तत्र मां लेपयेद्गन्धलेपनेरतिगोभितम्"॥ ब्रह्मपुराणम्। - "वैशाखे गुक्कपचे तु त्रक्षीयायां जनार्दनः। यवानुत्पादया-साम युगञ्चारव्यवान् सतम् ॥ व्रह्मलोकाश्विपयगां प्रयिव्या-तम्यां वाय्यों यवेहीमी यवैविद्युं समर्चयेत्॥ यथान् दयात् दिजातिभ्यः प्रयतः प्रागयेद्यवान्। पूजयेत् ग्रह्यं गद्भां कैलाग्रघ हिमालयम्॥ भगीयघच नृपति माग्राणां सुद्धावहम्। स्नान टानं तपः यादं कपहीमादि-कञ्च यत्।। यद्या क्रियते तव तदानन्याय कर्यते"॥ त्रवा-नन्यश्रुतेः पूर्ववचने नचत्रयोगः फलातिगयार्थः।

चय चतुर्थी। साच पचमीयता याद्या युग्मात् 'ण्का'
दश्यक्षमी पक्षी चमावाच्या चतुर्थिका। चपीच्या परमयुक्ताः
पराः पूर्वेण संयुताः' इत्यग्निपुराणाच मविष्ये। "प्रमायै
सोमवारेण रवियारेण सप्तमी। चतुर्धी सीमवारेण चचयादिप चाचया"। यतु "चतुर्थीमंयता कार्ष्या व्यतीया च
चतुर्थिका। व्यतीयया युता नेव पद्मस्या कार्येत् कचित्"
क्रिक स्वावेश्वनंवच्यं पद्ममीयुतानियेधकं तदिनायन प्रतपरमिति गुन्चरणः। व्यतीयायुतानियेधकत्ये द्विचित्वनुष्पनेः
सर्वेषेय पद्ममीयुताया ग्रष्टणात्। मारस्यत्याद्विपसाच कृतिः
"वयोदस्याचतुष्यांय सप्तस्या द्वादगीतियः। प्रदीपेश्ययमं
धीमान् न द्विति यदाक्रमात्। सारस्यो गापपतः मीरस्

वैषा उस्तथा"॥ प्रदोष प्रन्दोऽव प्रधमप्रष्टर प्रति हीसादिः। रातिपर इति निर्णेयासतसद् भो बदेवः "ग्रक्तपचे चतुर्घान्तु मिहे चन्द्रम्य दर्शनम्। मिष्याभिगाप कुर्तते न पश्चेत्तव्र तं ततः" चतुर्धाः दर्गनिषेधात्तत्रोदितस्य चन्दस्य पद्यस्यां दर्गने तुन दोप:। अत:। "पञ्चाननगते भानी पञ्चोत्तभयोरिप। ' चतुर्घाम्दितयन्द्रो नेचितयः कदाचन" ॥ चतुर्घां निचितय इति मृनिभिर्मादन उक्त इत्वर्धः। श्रयदा चतुर्घ्योगित्यस्य प्रधान-कियान्वयाभासितवादोचितव्य इत्यनेनान्वयो न तु उदित दल्यनेन तथा च "अव्यक्तं प्रधानगामि" इति सूते अव्यक्तमा यव्द्य प्रधानेन मह मस्यस प्ति भट्टनारायण्यास्यानम् दति उदितस्वर्दोदितयाष्ट्रित्याः मह्मपाद्यान्परी वा। "दासाणो सुश्वादया जम्ब कोष्ट्रण वा गवा। खरितं सोम-नचवं दृष्ट्या मद्या अचिभवेत्" इति पराशरीकोदित इतिवत् ् नन्वेजपदस्य क्षयमनिकार्यतिति चेता यावस्तोऽधीमावित्त पदानीति तया चोक्तम्। "यादनामेव धातृना निज्ञ कृष्णितं भवेत्। पर्धयेवाभिषेयस्तु नावद्विग्णविग्रनः," ॥ शिद्व सामर्धा रुढिगत प्रमिद्ध न खप्रमिद्ध हनहिंद्यागलोशित्यादौ गमना-दिक्रम् ऋभिषेयो वाचः तावद्विर्धातुभिर्गुण्विय्हो गुर्गेर्गण-नाभिविषदी यहण यदार्थे म तथा एतेन धातुमममस्यार्थेल पदस्य ब्रह्मपुराणे मिछाकाधिकारे "नारायगीऽभियासम्न निभाषसभौचिष्। स्मितयतुर्थामद्यापि मनुष्याय पर्वञ्च सः॥ अतयत्रयो चन्द्रन् प्रभाटाहीच्य मानवः। परेस्ह्रोः धिकावाका प्राञ्चको वाध्युद्द्युक्त"॥ श्रीभग्राः वरीवाद-विषयोभून: सोर्शभगाप:। धावेधिकावाक्य विद्युप्राग्रे 'सिइ: प्रसेनमवधीत् मिही जाखवता हत:। मुल्मारक । मा रोटोस्तव द्योप स्वसन्तव "॥ अनेन सन्वेणाभिमन्तित लर्न पैयम याचारात् स्थमत्तवीपार्यानच स्रोतव्यम्। माघे युक्त-चतुष्या गौरो पूज्या बच्चमाणवचनात्।

त्रय पद्ममो। मा च चतुर्योग्रता ग्राह्या गुग्मात् "पद्ममो च प्रकत्या चतुर्योमिष्टि ग विभो"। इति ब्रह्मपुराणाच । "प्रत पद्ममो तु प्रकत्या पद्मागुका तु नारद" । इति शह्मवैवर्तन

वचनं तच्छ्कापरं शक्कपचे तिथियां द्येखेकवाकात्वात् इति केचित्तचिन्यम् "चतुर्धोमंयुता कार्या पच्चमी पर्या नतु । दैवे कर्माण पैत्रेच गुल्लपचे तथासिते" इति कानसाधवौयधत-धारीतवचनात्। यदापि पैते तिन्नपेधो निर्धकः युगावचनस्य देवसत्यमाद्वपरत्वात् तथापि यथा आपराधिके पित्रे स्तरपव परविद्या न ग्राष्ट्या तथा दैवेऽपौति विवचया दैविपत्रयोः सहोपन्यामः''। ब्रह्मवैवर्त्तवचनन्तु स्कन्दोपवासविषयकमिति ः माधवाचार्यः। घत्र पञ्चम्यासुपवासः पष्ट्या स्कन्दोपासनाय षष्टोसमेता कर्त्तव्या सप्तमो नाष्टमोयुता। यतङ्गोपासनायेषः षष्ठामाहुरुपोषणम्"॥ दति भविष्यपुरागोत्तवत्। पतङ्गः स्यः। तथा च विशिष्ठः "क्षणाष्टमी स्कन्दपष्ठी शिवरावि चतुर्दंगी। एताः पूर्वयुताः कार्य्यास्तियन्ते पारण भवेत्'॥ वस्तुतस्तु पञ्चमी परया न त्विति वचनान्तरैक्षवाक्यतया षष्ठग्राध्युतिति पाठः। स्कन्दपष्ठी वच्यते देवीपुराणे। "स्रप्ते सनार्दन सप्ते पञ्चयां भवनाङ्गने। पूजवेन्यनमादेवी खुडी-विटपसस्थिताम्। पद्मनाभे गते शय्यां देवै: सर्वेशनलरम्। पञ्चम्यामिति पद्ये समुत्तिष्ठति पद्मगों ॥ सनसादेवीं विपहरीं सुद्दी सिज ह्याः। देवैरिति सद्दार्थे तृतीया। "देवीं संपूज्य नत्वाच न सर्पभयमाषुयात्। पञ्चम्यां पूजयेनागाननन्ताः द्यानाहोरगान्। चोरं सपिम्तु नैवेदां देयं सपैविषापहम्"। सनमध्यान यथा पदापुराणम् "देवीमस्यामहोना प्राप्रधर-वदमां चारकात्ति वदान्याम्। इंसारुदासुदारामर्गणत-वसना सर्वदां सर्वदेव। स्रोरास्यां मण्डिताङ्गीं काणकमणि-गणैनीगरलै रनेकैवन्देऽहं साष्टनागामुक्कुचयुगलां भोगिनीं कामरूपाम्। पुराणान्तरे। "धनन्ती वासुकिः पद्मी सद्दा-पद्मीऽध तचकः। कुलीरः ककटः ग्रही हाष्टी नागा प्रकी-त्तिता:॥ श्रीपः पद्मी मद्यापद्मः कुलिकः ग्रद्धपालकः। वासु-किस्तचक्येव वालियो मणिभद्रक ॥ ऐरावतो ध्तराष्ट्रः क्कांटिकधनञ्जयी"। गाराडेऽपि तबैव "धनन्त वासुर्कि शह पद्मं कालमेवच। तया कर्कोटकं नागं धृतरादृद्ध यहकम्॥ वालिय तत्त्वाचापि पिङ्गल मणिभद्र म्। यजे-

सानिसतानागात् दष्टमुक्तो दिवं घनित्"॥ यत च "योऽमी चानलक्षेण ब्रह्माग्ड सचगचगम्। पुणवडारयेक्ट्रितमी नित्यं नमो नमः"॥ इत्वनन प्रभवपूर्वण मस्यप्राणीक्ते-नानलं पूजरीत्। रताकरे "पिचुमर्टस्य पताणि स्यापरोद्धवनी-दरे। सयस्यि तदश्रीयात् ब्राह्मगायापि भोजयेत्" ॥ पिनु-सर्घ निख्य भविषोत्तरे साधगुक्षणस्मधिष्ठत्य "पतुर्यो वरदा नाम तथ्यां गीरो सुपृजिता। मीमायमतुनं कुर्यात् पञ्चम्यां शोरपि शियम्"॥ स्वसारप्रदीपे "पञ्चम्यां पृजये-इसों पुष्पध्यानवासिमः। सम्याधारं लेखनौच प्रचिन लिखेततः॥ माधिमामि मितं पश्चे पश्चमी या थियः प्रिया। तस्याः पूर्वाह्म एवेद काध्यः सारस्वतोत्सवः"॥ सारस्वत इत्यु-पादानात् थियः सम्बत्धाः तथा च थाडिः। "बद्योमरस्रतो घोत्रिवर्गमम्पहिमूांतशोभास्। उपकरणवेशरचनाविधासु च यारिति प्रधिता। तथा चौतां यां ददादिलादी नानाशब्द-स्यापि प्रमिडार्धतेव व्यवसारः विपरीतार्धग्रास्कवाक्यविश्विप-सखेतु यप्रमिस्राधिलेन च व्यविद्वियते। सर्वेदा नानार्धानां व्यवहारम् स्रेपवाव्यादाविति। "तक्ष्यप्रकलिमन्दोविभतो गुभकान्ति कुचभरन्मिताङ्गी स्विमयामिताले। निल-करकमनीयान्नेखनी पुरतकणीः भक्तनविभवमिद्यौ वाग्देवता न."॥ इति भारटोतं ध्यायेत् पाद्यादिभिः पृज्ञ-यिवा "भद्रकाची नमी निर्वासम्बद्धी नमी नमः। वेद-वैदान्तवेदाङ्गविद्याखानभ्य एव च खाद्या" इति ब्रह्मप्राणी-येन वि: पूज्येत्। मत्यस्ते। "वस्त्रजीवश्च द्रोणश्च सरस्त्रत्ये न दापयेत्"। सरस्तीं मपूचा "यथा न देवीं भगवान् ब्रह्मा लोकपितामहः। त्वां परित्यज्य सन्तिष्ठेत्तया भव वर्प्रदा॥ वैदाः शास्त्राणि सर्वाणि नृत्यगीतादिकच यत्। न विद्योनं त्वया देवि ! तथा में सन्तु सिह्य: ॥ नद्मीर्मेधाधरापुष्टिगीरी-तृष्टि: प्रभाष्ट्रतिः । एताभिः पान्धि तनुभिग्दाभिर्मा सर्वती\* इति सत्यप्राणीयैः प्राथयित ।

श्रष्ट पष्टी। सातु सप्तसोगुता श्राह्या गुरसात् राजमानगरे 'जैष्ठे मासि मिते पन्ने पष्टी चार्ष्यसान्नता। व्यजनेककरा- सासा महिना विपिने स्तियः॥ तां विन्यवासिनीं वन्दे पष्टीसाराधयित् च। कन्दमूनफना हारा नभन्ते सन्ति ग्रमाम्॥
कन्दं स्रणादिसूनं तदितरत् भविष्ये "येयं मार्गाशरं मासि
पष्टी भरतसत्तम !! पुष्या पाप हरा धन्या शिवा शान्ता गुहप्रिया"॥ देवीपुराणे चैत्रमिषक्तत्य "यष्टाां स्तन्दस्य कर्त्तत्या
पृजा मर्वीपचारिका। इहैव सुखमीमाग्यमन्ते विष्पुपदं
वजीत् "॥ इयमेव स्तन्दपष्टी पश्चमी युतैवोपोषा। "क्षप्पाएमी स्तन्दपष्टी शिवरावि चतुर्दशो। एताः पृथ्युताः कार्यासित्यान्ते पार्णं भवेत्"॥ इति ब्रह्मवैवन्तवचनात् विष्पुधमीत्तरे "श्रष्टमीश्च तथा पष्टीं नवमीश्च चतुर्दशोम्। शिरीऽभ्यङं
न कुर्वीत पर्यमन्त्री तथेव च"॥

थय सप्तमी। माध पष्टीयता याधा युग्मात् पैठिनसि-घचनाच यथा "वच्चमौ सममी चैव दगमी च तयोदगी। प्रतिपन्नवमी चैय कर्नथा सामा की तिथि:"॥ सामा ग्यम्त्रां स्कान्दे "मामा र्यं नाम मायाज्ञ यापिनी दृश्यते यदा"। धातण्य पर्गदने विसन्यकानाव्यापिले पष्ठीयुक्तपच्चयामुप-वामसाष्ठ भविष्यपुराणं ''पष्ठोममता कर्त्त्रया मप्तमी नाष्टमी त्रमङ्गीवासनायेष्ठ पष्ठत्रामाष्ट्रग्रीपणम्"॥ यया उधीपणे तथा कर्मान्तरे तथा "षष्ठगयुता सप्तमी च कर्त्या मर्घटा तिथि:। पठी च मशमी यव तव मिनिहितो हिर्:"॥ इति स्कन्टपुराणात् तद्या "ग्रह्मपद्मस्य पद्मस्यां सूर्येवारो यटा भवेत्। ममगी विजया नाम तय दत्तं मद्दाफलम्"। भविष्ये "अाजितगर्नायय क्यांदियं समस्त्रम्। स्यांय चर्षं दला साम्याच विशेषतः । यावलामाण्डलामाणिवेवयपरि-सत्यया। तावद्यमहसाति स्यन्तिक सहीटते । गोपय-याद्मण "दाविंगरा पश्चिकं प्रस्यमुक्तं स्वयमयर्थणा"। ब्योतिये प्यान् मीकिकेमीनै: मारानिधिमापकम्। तीनकवितयं क्षेयं ज्योतिशे. सातिमामतम्"। तेन चत्रतिकाधिकमाध-द्याधिकपुरिक्षकाससीनकमिताः प्रस्यसम्बन्धाः दति एव-देतत् मानाधिकयोः मनतारतस्य बीध्यमः पर्यदेवतास्तर-ऽवि तराधीयति एतस्य स्ति मार्थायतुं युत्रम् पत्रम् विवे-

इचोर्च बदाते। धराद्यपुराणे "घद्यापरं सद्याजः व्रतसारीग्यः संजितम्। कथयासि परं प्रयं सर्वपापप्रणागनम्॥ तस्येव माचमाम्य सम्यो सम्पोपितम्। पूजयेदास्तरं देवं विपारूपं सनातनम्॥ भादित्य । भास्तर । रवे । भानी । सूर्ध । दिवा-कर।। प्रभावदिति संपूज्यो देव: सर्वेश्वरी रवि: ॥ पराश्चिकः कताहार: मग्रयां भम्पोचित:। यष्ट्रयाचेव भुन्नीत एप एव विधि: स्रतः ॥ धनेन वतारं पूर्णं विधिना यो चियदिवम्। तयारीयं धनं धान्यमिष्ट जनानि जायते॥ पग्व च शुभं सानं यहता न निवस्ति"॥ सप्तम्यां सम्पोषित इति चादिक्रमेणि तः। तेन सप्तस्यां समुपवस्त्रमारव्यवानित्यर्थः। तत्य प्रातः समस्य।मेव उपवाससङ्खः । रविध वियाक्षपत्याः पूजाकाले ध्येय: त्रिमलापे तु तित्याविल्झा त्राराशित ऐदिकारोग्यधनधान्यपारलीकिवशुभस्याननाभकामः। संब-सरं यावदारी खद्रतिमिति विशेष:। नतः प्रसृति सप्तम्याम्प-वासं कुर्वन्। "प्रास्टिख। सास्कर। रवे। सानी। सूर्या। टिवा-कर। नमस्तुभ्यं" इति सन्वेग पृष्ठयेत्। श्रव पष्ट्रादिष् तत्तत् समिविधानात् पष्टोसमेतित्यस्य न विषयः कालिकापुराणे भन्नां प्रति मुर्यावाकाम। "श्रद्धद्वा मां न भुन्तीत विष्मनं नेव दर्शित्"। तथा "मदर्चा ध्तनिमिस्यं शरीरे न तु धार्येत्"। श्रज्ञी प्रतिमा।

यथ विधानसामी क्रसचितामणी "यर्जायं मुचिगीमयं समिरंचं तीयं फलझायुते सूनं नज्ञस्पीपणञ्च विधिवत् क्रत्वेक्यतं नरः। चीरं वाय्यनं घतायनिर्मित प्रीक्षान्तमूनि क्रसात्। क्रत्य द्वादशसप्ति दिनक्षतः प्राप्तीत्यमीष्टं फलम्"॥ प्रवाचाकांयादीत्रभीजनित्वसिरवसीयते तपस्वात् तथा च मस्यप्राणं "तपीभिः प्राप्यतिऽभीष्ट नासाध्यं दि तयस्वतः। दुर्भगत्वं द्वया लोको वदते स्रित माधने"॥ तपसः लोगः स्वभावत तथेवोज्ञम् "उमित चपना पुत्ति न चमं ताववं वपः। भोद्यं लोगस्वभावस्य तपमः मीम्यदर्भने"॥ व्यक्तमुक्त वपः। भोद्यं लोगसमावस्य तपमः मीम्यदर्भने"॥ व्यक्तमुक्त वधाः, "अर्वपनाद्वरसावमन्तरीच्यद्वीतना व्यक्तिवादिष्ठयवन्मातं सञ्जल सरीच जलम्। क्षदलीफलमध्यम् क्यामात्वन

मपक्षकम्। कुशमूलं यवमात्रं खक्षायादिगुणे चणे॥ भच्यं मितौदनं नतां गुडीपवसनं तथा। एकभक्तं मयूरार्खप्रमाणं भोजनं मतम्॥ अर्देपस्तिमात्रन्तु कपिलादुःधभद्यगम्। साला संपूज्य मार्तगढ़ं प्राझ्खो वायुमाययेत्॥ पृतं खल्पं पौषमामे माघादय्दं ममाचरेत्। ब्राह्मणान् भोजयेद्वत्या गुडचौरनिरामिपै:॥ विप्राय दिचिणा देया विभवस्यानुरूपतः। ष्यष्टस्यां पारणं कुर्यात् कटुस्तरिंहतेन च॥ मुहमापतिना-दीनि प्रतिचैव विवर्जयेत्। एकसिद्धं भस्यमुक्तमर्वतन्त्रानुसा-रतः॥ एतद्दतस्य माघादिमासविशेषविद्यितकर्मालेव मल-मासेतरकत्त्व्यमाद्य। वशिष्ठनिद्वपुराणम्। "प्रारब्धेतु व्रते पथात् सम्प्राप्तेत्वधिमासके। पूर्वमानेन तं त्यक्का कार्य्यं द्वादग-मासिकम्' ॥ पूर्वमानैन मिलिख्नच शून्यवत्मरमानेन तं मल-मामं द्वादयमासिकं द्वादयमासेषु एव कार्यं न मनमास द्रत्यर्थः यत्तु "मासे मिन्नित्तुचेऽप्येवं यजेहे वीं सग्रहराम्। विन्तु नोद्यापनं कार्य्यमित्याह भगवान् शिवः"॥ इति विणारहस्य-वचनं तनासिविशिपानिद्वितमाममावक्तर्यामावास्यादिव्रत-कर्त्तेव्यता परम् छद्यापनं प्रतिष्ठा एवमारकीऽपि निपिदः गार्ग्यः। "प्रस्तं गते गुरौ गुक्ते वाले वृद्धे मलिस्तुचे। उपा-यनमुपारकां व्रतानां नैव कारयेत्"॥ उपायनं प्रतिष्ठा उपा-रकामारकाम् एतच् कालागुहिमावपरं तत्तकाविधिकत्यने गौरवात् भवियो "भाद्रे मासि सिते पचे सप्तस्यां निययेन या। स्नात्वा शिवं लेखियत्वा सण्डले च सञ्चान्विकम्। पृज-येच तदा तस्यां दुष्पुष्पं नैव विद्यते"॥ इदं कुछ् टीव्रनखेन खातं भविषे "सूर्यप्रहणतुला हि ग्रह्ममाधस्य सप्तमी। श्रक्णोदयवेनायां तस्या स्नानं सद्दाफलम्॥ साघे सामि मिते पचे सप्तमी कोटिभास्तरा। दद्यात् सानाघ्यं दानाभ्यामाय्-रारोग्यसम्पदः ॥ चरुणोदयवेलायां शुक्का माधस्य सप्तक्षो। गङ्गायां यदि लभ्येत सूर्यप्रध्यतैः समा"॥ कोटिभास्तग कोटिसममीतुल्या स्थ्यपदणफ्नं सानजं "मित्रिहिते बुहि-रन्तरङ्गा" इति न्यायात्। तेन बहुशतमुर्थयप्रणकानौन-गङ्गासानजन्यफलसमभक्षमाप्तिः फनमव चेयम् चव बहुतर-

शतस्यिप्रहाणां प्रत्येकाधिकरणतामंभर्गणान्वयात् कानागां स्त्रानानां तत्पानामपि बहुशतलं लभ्यते धनी नाप्रसिद्धः पूर्णसप्तयो पूर्वापरयोर्धवाग्योदयकाली सप्तमी तव पूर्विटिने तलाले सानम्। "चतस्री घटिका प्रात्यक्षोदय उचाते। यतीनों सानकामी ह्यं गद्रामाः महगः स्नाः। वियामां र्जनों पाइक्यक्वाधन्तचतुष्टयम्। नाडोनां तद्भे सन्यो दिवमाद्यान्तमञ्जित"॥ इति कालमाधवीयपृत वद्यावैवसीयेन पूर्वेष ,तिकालस्य पूर्णितिधिमस्वन्धि दिनवत्त्रियमभिष्ठत्वेन इतर्य चेतराइ लेना भिधानात् चत्रपय दक्षेण तत्कालभार-था। इनकारामा भाषा क्या स्मोदयकाने सहना स्वानिय-लाभ एव सान "व्रतीपवामसानाडी घटिकेका यदा भवेत्। खदरी मा तिथिप्रश्चित याहादावस्तगामिनी<sup>»</sup> इति विया-धर्मोत्तरात् श्रव श्रटिका मुझ्ते यादयोग्यकानानुरीधादिति वस्यते ब्रह्मवैववर्त्तवचने घटिका दण्डरूपा परवचन नाडीना-मारान्तचत्रयमिल्येकवाकालात् येतु स्योदयात् पागपि प्रात स्नानिवानात् तवेव माघमभस्यास्यगुण्मनविधिनीय-वादिखाहु: तश्चित्यं "प्रकरणान्यत्वे प्रधोजनान्यत्वम्" इति जैसिनिस्त्रेण प्रकारणभेटे गुण्विध्यसिष्ठेः अत्यव कत्यतर् रवाकरथी.। "य इच्छे हिपुनान् भोगान् चन्द्रस्थ्यप्रहोपमान्। पात सायौ भवे विख्यं दो भाषौ साचफालगुनी" इति विच्या-साती नित्यसानप्रकरणात् प्रकरणान्तराकानात् प्रकरणान्त-राधिकरणचारीत काम्यसानान्तरिमदमप्रक न तु गुणपान-विधि: किला काम्यकरणे प्रसङ्गानित्यमिदिशित श्रव माध्-भाषानिभित्तकमाध्यप्तमीनिमित्तककाम्यस्नान्धोः प्रातिविधाः नाम् नेभित्तकालीन प्रायश्चित्तवत् मकदनुष्ठानम्। "प्रधानस्या-किया यत्र साई तत् कियते पुनः। तदहस्याकियायान्त नाहाँ तर्न च तत्किया"॥ इति कात्याग्रन्वचन्त् "त स्रास्न-माचरेट मुक्का नातुरी न महानिधि। न वासीभि: सहाजसं नाविज्ञाते जलागये"॥ इति सनुवचनैकदाजससाननिषेधास "धमाविदाचरेत् सानमाञ्चित्र पुनः पुनः"। इति मनुवच-नाच चतएव नान्दीसुखमकरणशेषे प्रधानानाम्य काम्यानां

तसर्गमालविहितानां तन्त्रेणैय सिहिरिति याहिचन्तामणिः निष्कामिवेषाप्रौतिकामयोः सुतरां सक्तदनुष्ठानं "गुणतार-त्रस्यात् फलतारतस्यम्" इति न्यायेन फलं बोध्यम्। ष्रचौरगुडादिमाध्यमेदविबिर्देष्टमगव्यं "पचान्तरेऽपि क-न्य।स्थे रवी श्राक्षं प्रशस्यते। कन्यागते पञ्चमे सु विशिषेणैव कारयेत्"॥ इति हेमाद्रिष्टतादित्यपुराणोक्तवत् एतद्वचनप्रागद्व का तिकामनामाञ्चिपयं "देशकानायमचित्रदात्रद्यमनी गुणा। सुक्त श्रस्थापि दानस्य फलातिगयहितव "॥ इति ब्रह्म-षुराणोक्तवच तौर्धभेदे त्वेकदापि नानासानम्। "विपुषहिवसे पामे पचनौद्यीविधानतः" इति प्रद्यपुराणादिवचनात् तीर्ध-भेदे तन्वप्रमङ्गयोरसभावाच। श्रतएव गङ्गावाक्यावनीतीर्ध-चिन्तामखोः। यतु प्रयागि स्वाह सामकोडोक्तेऽपि साध-सप्तमीस्रानादावसाधारणमङ्गलीन पुनस्तयैव प्रात;स्रानावरणं तद्युक्त तदा सञ्जत् सानस्येव विहितत्वात्। श्रन्यथा तत् व्यक्षणन्यामनाथां तटानन्यापत्तेरित्युक्तम्। साने परिपाटी-साई सत्यक्षकतायां विषाः "सप्त वद्रपत्राणि सप्ताक-पत्राणि च शिरमि निधाय' "यदात् जनाक्षत पाप मया सप्तसु जनम्। तना रोगञ्च गोकञ्च मावरौ इन्तु सप्तमी"॥ इत्य-च।यं सायादिति शेष । रोक किंद्र तिथिक लास्य पौर्णमास्यन्त-मासाङ्ग कलान्याकरोति पद मकराकोरव्यचान्द्रमासीय निथि-सत्यपरम्। "तिथिकत्ये च क्षणादिं वर्ते श्रुकादिमेव च। विवाहादौ च सौग्रांदं मासं कत्ये विनिर्दियेत्"॥ इति ब्रह्म-पुराणान्मन्वत्रपदिलेन तथा युक्तलाच यथा मस्यपुराण। "यम्रामाचन्तराही च रयमापुदिवाकराः। साधमामुख सप्तस्यां तमात् सा रथसप्तमो। घर्णोदयवेनायां तस्या सानं महाफलम्"॥ अतएव नारसिंहे रयाग्यायासित्युतं यया "सद्दानवस्या द्वादाया भरखामपि चैव दि। तयाचयहती-यायां शिषावाध्यापरेट् बुधः। माधमामे तु सप्तस्यां रया-खायाच वर्जयेत्"॥ हार्य्यां गयनीत्यानदारम्यां भरत्यां शक्ष्वज्ञपातभरत्यः मिति कत्पतकः पत्र महानवस्य।दिसाइ-चर्य।च न्वत्वं प्रतोयते चत्रव चतुर्दगमन्वलरादिगणने साणि

शराय्युक्षेत्रः। यया भविष्यभक्षयोः। "यश्वयुक् गुक्तनयभी द्वाद्यो दार्सिकी तथा। द्यतीया चैत्रमामस्य तथा भारपद्य च॥ फालानसायमावसायोपसेकादमौतवा। भाषाद-सापि दशमी तथा माध्य सप्तमी॥ यावणम्याष्टमी खणा तवापाढसा पृथिमा। कार्तिको फारगुनो चैत्रो च्ये हो पश्च-दगी मिता। सम्बन्तरादयस्वेता दत्तस्याध्यकारिकाः" ॥ त्रव त्रमावस्थाष्ट्रमीव्यतिरिक्षाः गुक्ताः पुनः पुनम्हया पदीपा-दानात्। खपक्षमोपसद्दारयोः गुक्तत्वकोत्तनाच पत्र काम-भेनी हतीया चैव माघखेति कल्पतरी तु हतीया चैवमामस्रेति लिखितम् श्रव, पाठहेभे श्रोपतिरत्नमानायाम्। ध्रवयुनि श्रुक्तनवमीदादश्युर्जे मधी खतीया च इति पाठाचैवखतीयैव याच्या। योदसोऽध्येवम्। माध्यससम्यायान्द्रतं सोरागर्मऽपि "धर्षपत्नै: सवदरैदविक्त सचन्दनैः। अष्टाद्रविधिना चार्घ्यः द्यादादित्यतृष्टये॥ माघेऽय फाल्गुने यापि भवेदे माघ-सममो। माकरोति च यत् प्रोक्षं सत्प्रायो इत्तिदर्गनात्॥ यष्टाङ्गविधिना योऽप्यं भानोमूं हैं निवेदयेत्। तास्त-पातार्छ्य शिव पुष्य द्रमगुणं स्मृतम्" ॥ इति विष्णुपुराणी धेन श्रादिलापुराणे "ऋचराशिविश्रिपेण यत् कर्म विश्वितन्तरैं:। हैवं वाष्ययवा पैद्धं तदन्यत्नापि दृश्यते' यध्यमन्त्रम्य "जननी सर्वभूतानां सप्तमी सप्तमिक । सप्तव्याहितिके देव । नगस्ते रविमण्डलेण ॥ प्रणासमन्यस्तु "मप्त समिवद्योत सप्तनोक-प्रदीपन। सप्तस्या हि नमसूभ्य नमोऽन्ताय वेधमे"॥ सप्तिरम्बः।

प्रथारमी। माच ग्रुक्ता नवभौग्रता ग्राह्मा गुनमात्।
कणाच सप्तमीग्रता यथा निगमः "कणावचेत्रस्मो चैव कणापचे चतुदंशी। पूर्वविदेव कर्त्तथा परविद्या न कुर्वाचत्॥
रपवासादि कार्योषु एप समः सनातनः"। भविष्यपुराणे।
"चतुदंश्मा तथारम्यां पच्योः ग्रुक्तकणायोः। याऽस्द्रमक न
स्वीत भवाचनपरो नरः॥ यत् प्रथमच्य प्रोक्त सतत सवयाजिनाम्। तत् प्रख मकनं तस्य शिवनोकच गच्छति"॥
ततः सततसवयान्यचयपुरासमप्रथमाप्तिः शिवनोकगतिय

फलम्। फाल्गुनशक्काष्टमो चतुर्दश्योरारभ्य वर्षे यावत् प्रत्य-ष्टमौ प्रति चतुर्देश्युपवासव्रतम्। कालिकापुराणे। "यैषा ललितकान्याख्या देवी मङ्गलचिष्डिका। वरदाभयप्रस्ताच द्विभुजा गौरदेश्विषा॥ रक्षपद्मासनस्याच सुकुटकुग्डल-मण्डिता। रक्तकीषेयवस्त्रातुस्तितवस्ता ग्रुभानना॥ नव-यौवनसम्पन्ना चार्वेङ्गी सलितप्रभा। उमया भाषितं मन्तं यत्पूर्वे लेकमचरम्॥ मन्त्रमस्यास्तु तज्ञेयं तेन देवीं प्रपूज-येत्"। एकमचरं शक्तिवीजरूपम् "तथाष्टस्यां नवस्याच पूजा कार्या विष्ठबरी। पटेषु प्रतिमायां वा घटे मङ्गलचिष्डिकाम्॥ यः पूजरोद्गीमवारे श्रभेर्टूर्वाचतैः शिवाम्। स्ततं साधकः सोऽपि काममिष्टमवापुर्योत्"॥ न्योतिषे। "शनैसरस्य वारेण वारेणाङ्गारकस्य च। कृष्णाष्टमी चतुर्दस्यी पुर्णात् पुर्णतरे स्रृते"॥ तथा "सोमवार्ऽप्यमावास्या चादित्या हेतु सप्तमी। चतुर्यद्वारवारं तु श्रष्टभो च ष्टइस्रती॥ स्रव यत् क्रियते पापमथवा धर्मसञ्चयः। यष्टिजन्मसङ्माणि प्रतिजन्म तद-स्यम्"॥ प्रणम्य जगतामीगं वसुदेवसुतं इरिम्। तज्जमा-तिथितस्वानि विक्ति श्रीरधनन्दनः॥

त्रय जमाष्टमी। ब्रह्मपुराणे। "ग्रय भादपदे मासि कणाष्टम्यां कली युगे। ग्रष्टाविग्रतिमे जातः कणोइसै देवकीसृतः। श्रष्टाविग्रतिमे साविणिकमन्वन्तरप्रयमयुगाः पेचयेति ग्रेषः॥ विण्युपुराणे महामायां प्रति भगवदाक्यम्। "प्राष्ट्रकाले च नभसि क्षणाष्टम्यामहं निशि। छत्पत्यामि नवम्याच्च प्रस्तिं त्यमवाप्यसि"॥ इत्यादिषु भाद्रपदनभः पद्योनिविश्वहार्थता तत्कालस्यैकश्चतिम् जतया गोणचान्द्रेण भाद्रता मुख्यचान्द्रेण त्यावणतेति। ग्रामकापस्तु गोणचान्द्रेणेव तद्यमिव भाद्रपदप्रयोगात् श्रम्यया तद्मिधानमन्यकं स्थात् तिविक्तत्ये च कृष्णादिमिति वचतात्। यन्तु विश्वष्ठसंदितायाम्। एकांकान् वचने त्यावणनभस्योपादानं तत् सोरामिप्रायेषः। यथा "वावणे वा नभस्ये वा रोहिष्यो सदिताद्यमो। यदा कृष्णे नरेर्ज्ञस्या सा जयन्तीति कौत्तिता" ॥ कृष्णे कृष्णपञ्चे हस्योगोगमाने यया "सिंहाक रोहिणोय्ना नरा सपाएमी र्याद । रान्त्रईपृशीवरमा जयन्ती कलयापि च"॥ इति यराध-स्विता। एतन द्वाटग्रमामेषु क्रयाष्ट्रमीप्वणि रोहिणीयोग-पुरस्कारेण जयलोत्रतमिनि हैतिनिर्णयोक्त निरम्तं उत्तयचग-विरोधात्। "स्थात्तन्द्रमसीय पर सन्तिकर्प मामाबास्या"। प्ति गीभिलम्बेण ज्योति शाखगणनया च चन्द्रस्थ्ययोरमा वस्यायामिकराध्यनस्थाननियमेन हाद्यासु मासेष्यष्टस्था रोहिणौ योगस्य सर्वधैवा मभावाद्य । भविष्यात्तरे । "त्रावणे घष्ट्रसे पचे छत्यासमाष्टभीवतम्। न करोति नरो यसु म भवेन् क्रराचम ॥ वर्षे वर्षे पुत्र या नारो कृषाज्या द्रशीवतम्। न करोति महाल्या व्यानी भवति कारने"। भविष्ये। "सप्तासाधियामचेदोहिणो या न सर्ध्योत्। ज्ञत मक्त्यये त्तव न चरावी कदाचन ॥ तत्र सप्तस्या तिहिन तस्या एव प्रात्सिमिन्दानी सक्त्यमाह हङ्कात्। "प्रात् सन्या तत सला सकल्प वुध प्राचरत्। प्रातमकलाचि हिद्दानुपयाम इतादिकम" । प्रस्वविक्तं। "मन्दादिदिवसे प्राप्ते यत्पाने सागपुननै । फल भाद्रपदेश्यका भवेत कोटिगुण दिन ।" ॥ तया "यस्या तिथौ वास्मित य पितृया प्रयक्ति। गया-न्योद्ध स्तर्ग निवाद नाच सम्राय "॥ पुनाच सध्यग्रहे । "क्षणाष्टमान्तु रोहित्यामर्हरा देईनं हर"। दूति गान्डा, इसमाण्यवनजाताच्। श्रत्यद्राष्ट्राता भविष्ये। "विकाले पूज्यदेव दित्राराक्षी विशेषत । श्रदेशवाव्या तथा पुर्या नीनाविधेरिषि"॥ अव भविष्यपुराणशिविष्योत्तराखा सविष्य पूजाविधिरिक्षधीयते। "पार्ध। तद्विक्ष प्राप्ते दक्तिधा नगृर्वकृत्। उपवामस नियम ग्रहीयाइतिभावत ॥ वास्ट्रेंव समृहिन्द सर्पाप्राशात्वो। उपवास करिद्यासि क्षणाष्ट्रम्या नभस्य हम्। अदाक्षणाष्ट्रमी देवी नभयन्द्रसरोहिणीम्। अर्थ विखीपवासेन भीच्ये इहमपरे इहिंग। एनसी मोखकामी रिका यहोबिन्द । विधोनिजम्। तस्ये मुचतु मा वाहि पतित भोवसागरे॥ भाजनामाण याधत्यक्षया दुक्त क्षतम्। तत् मणाग्य गोविन्द! प्रसोद पुरुपोत्तमः । एतन्सन्त चतुष्टय

मंवसरप्रदीपधृतं तथा "एक्नेनैवोपवामेन सतेन कुक्नन्दन!। सप्तानस कतात् पापास्य चित नाव संगयः"॥ गटहस्पक्षस्य तया "तनाध्ये प्रतिमा खाष्या काञ्चनादिविनिर्मिता। प्रतप्त-काञ्चनाभासा देवको सुतपिखनो॥ माञ्चापि बानकं सुप्तं प्रस्ता नोरदच्छविम। वसुरेवोऽपि तत्नैव खङ्गचर्मधर: खित:॥ यशोटा चापि तन्नैय प्रस्तवरकत्यका। वनभद्रस्तया नन्दो दची गर्गथतुर्मुखः ॥ एवं प्रपूजयेद्वस्था गन्धपृष्पाचतैः फलैः"। तथा "स्विश्विसे स्थापयेद्देवीं सचन्द्रां रीडिणी तथा। देववीं यस्टेबच यशोटां नन्टमेव च ॥ चरिष्ठकां वलदेषं संपूज्य पापै: प्रमुखते। चर्चराचे वसीर्धारां पात्रवेदगुडमपिपा। तता वर्रापनं पष्ठीं नासादै: करण सस। कर्त्रव्य तत्वणाद्वादी प्रभाते नवमोदिने। यथा सम तथा कार्यो भगवया मही-स्रवः ॥ द्वाद्यगान् भोजवेद्धस्या तेभ्यो द्वाघ द्विणाम्। सुवर्णं याञ्चनं गाद्य वामांसि कुगुमानि च॥ यदादिष्टत्रसं नोके लुखों में प्रीयतामिति। यं देवं देवकी देवी वसुदेवा-दजोजनत्॥ भोमस्य ब्राह्मणो गुर्खे तस्मै ब्रह्मासन नगः। स्वद्म वानुदेवायोगोबाह्मणहिताय च॥ शान्तिरस्त शित्र-ञ्चास्त इत्युक्ता तान् विमर्जयेत्। एवं यः कुरुत देश्या देवन्ताः सुमहोत्सवम्॥ वर्षे वर्षे भगवती सङ्गती धर्मनन्दन !॥ नरी वा यदि वा नारो ययोक्षं फनमात्र्यात्। प्रवमन्तान-सारोग्य धनधान्वर्दि सद्ग्रहम्"॥ तथा "मम्पर्कणापियः सुर्यात् का उज्जयाष्ट्रमीवतम्। विष्णुनीकमय।प्रीति सोऽपि नार्वय संगय:॥ लयन्याम्पवामय सहापातकनाशक:। गर्यः कार्यो सहासत्या पूजनीयय केमवः ॥ तुष्यये देवकी-युनोर्जयम्बीभंत्रकां द्रतम्। कर्त्तवां चिन्तमानेन भन्नवा भक्षजभैरिष्ट॥ यकुर्यन् निरयं याति यावदिन्द्रायतुर्देश"। वर्दापनं नाडीच्छेटनम्। सुवर्णमवाशीतिरनिकापरिमितं रीम कार्यनं तती न्यूनं कार्यनिमत्यव मेरिनीमिति छचित् पाठः। भौमध्य प्रधियोमस्यस्थिनः छत्या, मे प्रीयता शित्यज्ञा रयारियनेपान्यः। तान् प्राध्यणान् भक्षत्रनेरिति तैः सह-त्यर्थः प्रमण्य विद्युपुराचम्। "सहस एदिकपी शि ख्वाई-

मवि अस्यते"। अत्र पूजीववासयीः प्रधानत्वेनाकाद्वाः विरदादनत्वये भन्यतरस्य गुणत्वमवस्यं वाच्यम् एषच पूर्ज-वाङ्गम् उपवासस्त प्रधानं उपवासस्य नियमितिस्प्रपक्षिण्यव-णात्तवैष विध्वत्वयात्। भद्गस्य प्रधानविधिविधेयत्वेन पूजाया विध्यन्तरानपेश्चणात् भतएवीपसंशारेऽपि सयन्यामित्यादिना उपवासम्भिधाय पूजनोययेत्यभिहितम्। न चैष पूजने फलानुपपत्तिः "यस्य पर्धभयोज्ञहभवति न स पापश्चीक म्णोति" इत्यादो गुणेऽपि फलम्यपणात्। सतएव नद्मवैवर्तः मृणां विना व्रतेनापि भञानां वित्तविजिनाम्। स्रतं नेवोपवा-रीन प्रीती भवति माधवः॥ भक्ष्या विनोधचारिष राह्री जाग-र्णेन च। फलं यच्छति देखारिकंयन्तीयतसभावम्॥ विसयाकामकुर्वाणः सम्यक्षसमवाप्रयात्। सुर्वाणो विस-श्रात्वम् सभतेश्वर्य फलम्"। विनावतेन पूजायङ्गं विना। एवश् करणे फलशुतिरक्षरणे प्रागुक्त आवणे वश्वते पचे दत्या-दिना दोपश्रतेयास्य काम्यत्वे नित्यत्वस् । ननु काम्यत्वस-नित्यतं त्रसति कामे परित्यतं प्रकातात् तथा सत्ये कसा कर्मणो नित्यत्वकास्यतास्या हेरूपाङ्गीकारे नित्यानित्यः संयोगविरोधः मैव सयोगपृथक्लन्यायात्। स च न्यायो ग्रया खादिरे पशुं व्याति खादिरं वीय्यकामस्य यूपं कुर्वी-त्रीत युवते। श्रव समयः किं कास्यस्येव खादिरता निर्लोऽपि स्थात् डेत निति चत्र फसार्थलेनानित्यतया नित्यपयोगाङ्गता त्र युक्ता यत् निसंहिप खादिरत्ययवणं तत्नास्यस्यैव पश्चन्ध-नाय युपात्रयज्ञापनार्थम् चतो न नित्ये खादिरतेति प्राप्ते राम्यानाय चतुर्थाध्याय स्वम् एकस्य च उभयत्वे संयोग-प्रयक्तिमिति यत संयोगः सम्बन्धमापम्। एकस्य खादिरस्य क्रलपंपुरुषार्थलक्षीभयात्मकले वाकाइये क्रत्योपल फस-श्रीपत्व सत्त्रणपंग्रोगसंद्रावगमात् न निस्धानित्रप्रघोषविदेशाः। न च चात्रयत्वापनार्थे निखवाक्यं सिवधानार्देवात्रय लाभा-दत उभयायाँ खादिरतित। "एवं दशा ज्ञाहीति द्वेन्द्रिय कामस्य" इलादाव्ययार्थतेव दिधलस्य देधात्रवणात्। गरुड-भविषोत्तरवचनानि राजमात्तेषः क्षत्रचित्तासणि धृतानि

यया "तमेबीपवसेत् काल राखी कुर्याञ्च जागरम्। एकाग्रे-णैव भावेन वियोगिमानुकोत्त्यन्॥ अनघं वामन शौरिं वैकुण्डं पुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषोकेश माधवं मधुसूद-नम्॥ वराष्ट्र पुरहरोकाच नृसिंह देखसूदनम्। दामोदरं पद्मनाभ केशव गर्डध्वजम्॥ गोविन्दमच्त ख्रापामनला-मपराजितम्। यधोचज जगन्नाय मर्गस्यत्यन्तकारिणम् ॥ अनादि निधन विषा विनीकेशं विविक्रमम्। नारायण चतु-र्वाष्टुं शहुचक्रगदाधरम्॥ पौताम्बरधरं नित्यं वनमाला-विभूषितम। योवलाइं जगलेत् योक्षणं यीधरं हरिम्॥ प्रपदोऽ ह मदा देव सर्वकामप्रसिद्ध । एवं प्रित्वा बरद कप्र वन्देत सक्तितः॥ प्रणमामि मदा देव वासुदेवं जगत्पतिम। नामान्धेतानि संकीर्त्यं गत्ययं प्रार्थयेवरः॥ वाहि मा सर्व-लोकेश । हरे ! मंसारसागरात् । स्नाहि सां सर्वेषापन्न ! दु ज-भोकार्णवात् प्रभो ।॥ सर्वनोनेखर ! व्यक्तित भागिवे। दैवकोनन्दन। योग। इरे! ससारसागरात्। वाहि मा मर्ब-द् खन्न! रोगगोकार्णवात् इरे!। दुर्गतां स्वीयसं विण्यो। ये सारन्ति मछत् सछत्॥ सोऽइं देवातिदुर्धतस्त्राहिमा श्रीक-सागरात्। पुष्कराच ! निमग्नोऽच मायाविज्ञानसागरे ॥ वादि सां देवदेवेग। लानो नान्योऽस्ति रिचता"। ततयीपयाम पूर्व-दिने नियमं विधाय तिह्ने प्रात सानादिक विधाय "सूर्य. सामोयम.काल सन्धे भूतान्यहःचपाः। पवनो दिक्पतिर्भूमि-राकाश क्वचराऽसराः॥ द्वाह्म शासनमास्याय कल्पध्वसिद मिविधिम्" इति पठिला "तिहिच्छोः परम पद महा प्रश्नान्ति स्रयः । दिवीय चत्त्राततम्" ॥ दति सन्देण नारायणं सम्राख तसदिख्यार्थ उद्देमुखो दर्भवयफनपुर्णातन समादिपूर्ण यया नामोपपद वा पात्र स्टहोला त्रोष्ठराजमाटमीवतम् षदोत्यादिना संकल्पयेत् यदा्पवासदिने मात.मग्रमी तदा ममस्या तियावारभ्येति वक्तव्यं "धर्माय धर्मेग्वराय धर्मगत्रचे धर्ममभवाय गोविन्दाय नमी नमः"। इत्युद्धार्य प्रागुष्त-वासुदेवं मसुद्धियति सन्तवतृष्टय पठित्। पर्दरावे तु प्रण-वादि नमोहन्तेस्तम्बार्माभवीस्देव देवकी वसुदेव ययोदानस्

14.8 रोडिगोचण्डिका दलदेशन् पूजयेत्। दचगर्गचतुमुकानपि तथा संवसर प्रदीपे भविष्यात्तरीयम्। वनभद्रस्तथा नन्दो दचोगर्भेयतुर्भुदः। पूजनीयस्तया भक्त्या गश्वपृष्णाचतेर्जलैं । त्तय "माञ्चापि वानकं सुप्तं पर्याद्वे स्तनपायिनम्। श्रीवस-वस्त पूर्णाद्व नीलोत्पनदनक्कविम्"॥ इति भविष्यासरीयः ध्यानं क्षत्वा गर्डप्राणोक्षेसन्तः विग्रेपे रतस्य प्रणवादि नमोऽन्तेन योक्षणनामा पूजनम्। पर्धं तु। "यद्राय यद्भेखराय यद्भपतये यद्भमभावाय गोविन्दाय नमी नमः"। द्ति स्नान तु "योगाय छोगावराय योगपतये योगमभाषाय गोविन्दाय नमी नम." इति एवं नैवेदो एवं विम्बायित्यादि ष्ट्रतिनाभ्यां होम धर्मायेखादि खाहान्तेन गयन विखा-येखादि ततो देवक्यादि पूजा कार्या पादायमुच्चयन्ती योदंवकाथरणान्तिक। निषणा पद्मजे पूज्या नमी देखे यिये" इति संवसार प्रदीपपृत्तवचनात् योपृजापि तती गुडध्रेवेमोर्धारा नाडीच्छेदनं पष्ठीपृत्रनं नामकरणादिकच कुर्यात्। "पूत्रवेयुद्धिताः मर्वे स्रोशूद्र।णाममन्त्रकम्। चन्द्रीः दये भभाद्वाय दयादघी हिर्दिस्त्रन्"॥ तिहिधिय "श्रद्धी तीय समादाय सपुष्पकुशचन्दनम्। जानुभ्या धरणी गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्"॥ अर्घ्यमन्त "द्योरीदार्णवसंभूत! ष्रविनेवभमुद्भव !। ग्टनाणाध्ये ग्राप्याद्भेद रोहिस्या सहितो सम्॥ मोमाय मोमञ्बराय सीमपतये सोमसम्भवाय गीवि-न्दाय नमो नमः"। प्रणासमन्त्रो यथा "ब्योतसायाः पत्ये तभ्य जोतिषां पत्ये नमः। नमस्ते रोष्टिणौकान्ताः सुधावाम ! नमोऽस्तृते॥ नमोमग्डनदौपाय शिरोरलाय धर्जेटे:। कनाभिवंदेमानाय नमयन्द्राय चारवे"॥ ततसान्धं वामनमित्यादिना "प्रणमामि सदा देवं वाभुदेवं अगत्यतिम्" रूलन्तन नामकोत्तेन प्रणामी वाहि मामिखादिना लती नाचीऽस्ति रचित्यन्तेन "यहाची यच कोमारे वार्षके यच यौवते। तत्प्रयं दृष्टिमाप्नोतु पाप हर हनायुध !" इति प्रिव-रहस्योगिन प्रार्थनं कुर्यात् "ततः स्त्रोबैः स्तृति कृत्वा वासुद्वं जनादनम्। गौतवादिवतृत्येय ग्रीप कालं ययामुखम्" न्ये.

## तिथितत्त्वम् ।

दिति श्रीपः। परदिने प्रातमंगवन्तं ययोदिने मंपून्ये दुर्गायाय महीत्सवः कार्यः ततो ब्राह्मणान् भोजयेत् तथ्यो दिखणाञ्च सर्णादि यत्किञ्चिदिष्टतमं खणो मे प्रीयतामित्युक्ता द्वात् ततः यं देवामित्यादि शान्तिरम्तु शिवञ्चाम्तु इति मन्द्र पिठत्वर ब्राह्मणान् विभर्जयेत् ततः पारणं सुर्यात् तस्मन्दः। "मर्वाय सर्वेश्वराय मर्वेषतये सर्वमण्याय गोविन्दाय नमो नमः"। पारणानन्तरं समापनमन्त्र भूताय इत्यादिकं पठेत्।

यय व्यवकानव्यवस्था। तत्र हिरावे रोडिणीक्षण्। प्रस्री र्नाभे जनाष्ट्रमीयताय म एव काम: तम्य मुख्यत्वेनाभिन धानात्। तथा च विशिष्ठः "अष्टमौरोहिणौयुक्ता निशाही दृष्यते यदि। सुर्यः कानः स विज्ञेयस्तव कानो छरिः खयम''॥ भविष्यपुराणविषाधर्मात्तरयोः। "प्रदेशये तु रोहित्यां यदा क्षणाष्टमी भवेत्। तम्यामभ्यर्थनं मीरहित पापं विजयाजम् । सीपवासी हरे: पूजां कत्वा तव म मीट्ति"। चयमेव लयन्यःग्यो योगः। तया च यराष्ट्र-महितायां "सिहार्के रोहिपौयुक्ता नराः रूपा। इसौ यदि। राष्ट्रविष्यापरगा जयन्तो कलयापि च" इति विषाधर्मी-त्तरादिपुराणयोः। "रोष्टिणौ संहिता छप्या सामि भाद्रपदे-उष्टमी। सप्तस्यामहरावाधः कलयापि यदा भवेत्। तव लातो लगवायः कौस्तुभी इरिशेश्वरः। तमेबीपवसेत् कार्न तब कुर्धाश जागरम्"। इस्य "पविद्याय मर्चायां लातो देवकोनन्दनः"। इति मप्तस्ययेधे लगा यापं कम्प-भेदादविषद्वं साम्यागर्धराचाध द्रत्यव पर्धराचादधयोहं मिति भविष्यपुराण-वायुपुराषयीः पाठः। स्कान्दे "क्यं पुष्त्रञ्च क्रमते लगलोशिति तां विदुः। शेषिणौ महिता हरणा मास च गावराष्ट्रमो । पर्दरायाद्ययोद्धं कनपापि यदा भवेत । खयसी नाम मा प्राक्षा सर्यपापप्रवाशिनी" । प्रस्वापि "वर्शमाद्ययोद्ग मेकार्घटिकान्यिमा। शीर्दी पाटभी दाशा उपयाभग्रतादिए" । एकप्रटिकान्विता पर्देषटिकान स्विता वेत्वयः। चतेन यदा भ्यादिये भाष्याभ्यष्टमी रोडियो-मुना स्वनन्तरं पूर्ण नयमी मीमयारेद वुधवारेद या युना

स्यात्तदा सर्वापवादिका सैवोपोचा इति। यदाह ब्रह्मवेवतः " उद्ये चाष्टमो किञ्चित्रधमी सक्तमा यदि । भवेतु व्धसंयुक्ता प्राजापत्यर्र्यसयुता॥ श्रापि वर्षश्रतेनापि नभ्यते वा नवा विभो !"। पद्मपुराणेऽपि "प्रेतयोनिगतानान्तु प्रेतत्वं नागितन्तु तै:। यै: सता यावणे मामि अप्टमी रोडिणीयुता। पुनर्व्धवारेण सोमेनापि विशेषतः॥ किं पुनर्वमोयुक्ता कुन-कोव्यास्तु मुक्तिदा" इति निरस्तं गुणफनानुरोधेन जयन्यास्य-मुख्यकानवाधायोगात्। स्कान्दे "न करोति यदा विष्णो-र्जयन्तीमंत्रकं व्रतम्। यमस्य वशमापत्रः महते नारकीं व्यथाम्"॥ भविष्ये "तुष्ययं देवकोस्नोर्जयन्तीसंज्ञकं यतम्। कर्त्तव्यं चिन्तमानेन भक्त्या भक्तजनेरिष्ठ 🖈 अकुर्विवरय याति यावदिन्द्रायतुर्देश"। इति जयन्तीलहुने प्रत्यवायश्रुतेय। वुध-सोमलङ्गने प्रत्यवायात्र्यवणात् गुणफलत्वमेव मञ्चार्णवेऽिय व्धसोमवारयोगो गुणफलायेखुक्षम्। हेमाद्रिरिप यदा तु यहिवस एव रोहिण्यष्टमीयोगस्तदा तचैव व्धवारादियोगः फलातिशय:। श्रम्ये खेवमाडुः। यदा पूर्वदिनादेरात्रे रोहिणौयुताष्टमी नोत्तरा तथाविधा मा चेहुधे सोमे च भवति तदोत्तरैवोपोषा न पूर्वा उदये चाष्टमी विश्विदिति वचना-त्तन्न। यदार्घादरात्रे तु रोचित्यामित्यादिवाक्यं वुधसोसवार-युज्ञाष्टमीव्यतिशिक्षविषयत्वेन मावकाश्यम्। वुधमोमवाव्य स् दितौयदिवस एव रोहिणौयोगे सावकाशं तथापि वृधसोम-वाकासा सद्वीचे कर्मकालकापितिधिसमावाद्वराव्यकासा सङ्घीचे तद्दाधप्रसङ्गात्। तथा च वुधसीमवाकासीव सङ्घीची नार्द्वराववाक्यस्येत्यन्तेनाच। माधवाचार्य्याऽध्येवम्। किन्त्वयं योगो व्धसोमवारे प्रातः किञ्चिद्ष्टमी यमन्तरं तिह्ने नवमौन चय उभयतिष्योरेव रोडिणी स्थात् तदैव भवति । ब्रह्मवैवर्त्त "उदये पाष्टमी विश्वित्रवमी सकला यदि" इत्यव सकलिति विशेषाभिधानात् चतएव श्राप वर्षशतेनापौत्युपपदाते शस्य याद्यता च जयन्यसाभ वष्य प्रागुतायुक्तेः ननु वुधसोमवार-वदष्टम्यां रोहिणोयोगो गुणफलामस्य मैवं तिथिदेधे रोहिण्या-नियामकलेनाभिधानात्। तथा हि सृतिः "प्राजापत्यर्ध- संयुक्ता लिणा नभिस चाष्टमी। सुझर्नमिप स्थित सेवी-पोष्या महाफला"॥ विशिष्ठ: "वासर् वा निशायां वा यदा युक्ता तुरोहिणौ। विश्रिपेण नभी मासि सेवीपोधा सदा तिथि:"॥ अनयोरेवकारसुते:। "एकादशीशताद्राजनधिकं रोडियौवतम्। ततो हि दुर्जभं मला तस्यां यतं समाचरेत्" ! प्ति ब्रह्माण्डपुराणे रोहिणोव्नतमिति यवणाच वुधादि-वाकान्तुन नियासकं प्रमाणाभावात् प्रस्तृत फलश्रुतेगुणफल-बोधलमिति। एवच्च तिथिवित्रीयनियन्तितापवादिवधावेव-कारश्रुत: पष्टिदण्डात्मिकामघष्टमीं रोक्षिगोरिक्षतां परि-त्यस्य रोडिगौसहिता खलाष्यष्टमौ उवीचा यदातु पर-दिनेऽपि रीडिणौरिंडता तदा पूर्वेवोपीया। "प्रिटरण्डा-सिक्षायाय तियेनिक् मणे परे। चक्रमेण्यं तिथिमल विदा-देकादशीं विना" इत्यनपोदित सामान्यविपयत्वात् वस्य-भाषायचनजाताद्यः यदा तूभयदिनं जयन्तीयोगस्तदा पर-ध्यक्षवामः मङ्क्षकालमारस्य तिथियामिसकात् श्रतएव वोधायन: "यो यथ्य विश्वित: कान: कर्मणस्तदुपक्रमे। तिथि-याभिमता सा तु कार्या नोपक्षमोज्यिता"॥ सङ्ख्यकानः प्रश्तरेव प्रातःमङ्गम्यग्रेदिदानिलादि वराष्ट्रपुराणात् "प्रातः-मन्या ततः कला मङ्गल वुध प्राचरत् पति मंबसरपदीप-वचनात् "उदये तूपवासस्य नक्षस्यास्त्रसये तिथिः। सध्याङ्ग-व्यापिनी प्राष्ट्या एकभन्ने मदा तिथिः" इति वीधायनयचने-नोपवामे उदयगामि तियेविधानात् नद्यवस्यास्त्रनिगौषमस्य-स्वेन चनवत्त्वात् तियेस्तिमस्ययापित्वाद्य। तया च भविष्य-पुराणविष्णुधर्भोत्तरयोः "उपोधितयं भद्यवं येनामां याति भास्तरः। यत वा युच्यते राम निशीये शशिना सह"॥ निगीयेऽहराचे। परागरः। "चिमन्यव्यापिनी या तु मैव पुच्या सदा तिथि:। न तव युग्नादरचमन्यव रिद्धामरातृ" ॥ किं पुनर्नधमीयुक्षा इति सिद्धियमाणवचनाञ्च। एतदिपय एव ब्रह्मवेवर्त्तवचनं 'वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमी सहिताष्ट्रमी। सा समाधिन कर्मचा सप्तमी महितारमी। पविद्यायात्र सर्चायां ज्ञाती देवकोनन्दनः"। यन् वियुधर्मतिरे "लयन्ती

शिवराविय कार्य भट्नग्रास्विते। क्रिक्षोपवामं तियाली तदा कुर्याञ्च पारणम्"॥ गर्डपुराणविषा्धर्मीत्तरयीः "लयन्या पूर्वविद्यायामुपवासं समाचरित्। तिय्यन्ते वोत्सवान्ते वा इसी क्षवींत पारणम्"॥ तत्पूर्वदिनमात्रे जयन्तीनाभे विद्या प्रतिप्रमदाय दोष्यम्। यदा तु विना जयन्तोयोगः सुभयदिन रोहिणोयुताष्टमौ लभ्यतं तदापि परेखुक्पवासः। तथा च कानमाधवीरी स्कन्दपुराणवद्यावैधन्योः। ममभी सिंदिताष्ट्रस्यां भूत्वा ऋचं दिजीत्तम । प्रानापत्यं दितौरीऽद्धि सृह्यां हैं भवेदादि। तदाष्ट्यामिक न्नेयं प्रीप्तं व्यामादिभिः युरा। मुहर्त्तेनापि सयुक्ता सा सम्पूर्णाष्ट्रसी साता। कि पुन-नेवमोगुका कुलकोवास्तु मुक्तिदा" मुझक्तिमधाष्ट्रधामिकं सम्पूर्णदर्गं तत्ताधिकारित्वात्। पद्मपुराणे "पूर्वविद्वाप्टमौ या तु षदये नवभी दिने। सुझत्तेनापि सयुक्ता सा सम्पूर्णा-ष्टमौ भवेत्। कला काष्टा मुझर्नाणि यदा कणाष्टमी तिवि:। नवस्या सेव याद्या स्यात् सप्तमो सयुता न कि"। सयुता रोहिस्येति ग्रेपः। रोहिसीरहिमायान्तु तयाविधारां पूर्व-दिन पदीपवामस्य वस्यमाणलात्। यत् सप्तमी राविशिपे रोहिणी सहिताष्टमो परदिन च रोष्टिणी नास्तव्यापिनो तदा पूर्वेद्युरुपवासी वनवन्नचन्नसम्बन्धादिख्या तश्चित्य बल्ववच्छमम्बन्धस्य सामान्यस्य प्रागुक्तद्रशावैवनस्कन्दः पुराणविशेषवचनैरप्रयोजकीकतत्वात्। एवणु "व्रतोषवास-स्नानाही घटिकैका यदा भमेत्। मा तिथिः सक्ता जेया पित्रयें चापराक्षिकी" पृति देवलवचनस्याध्यत न विषय: क्षनाकाष्ठ। दिविशेषवचनात्। न च सप्तभौसहिताष्ट्रस्या-मिल्एकमात् एव सप्तमी सहिता न हील्यणदानाच बद्धा-वैवर्सवचनाद्यविषयत्वे पूर्णाखण्डयोजयन्तीं विना रोहिणी-योगे परदिने कथमुपवास इति वाश कि पुनर्नवमोयुता कुनकोव्यास्त मुक्तिदा इत्यनेन नवमीयोगस्य तवापि हेत्त्वेन कौर्तनात्त्वाचि मलात्। तिथिदेधे उपवासनियासकस्य मध्यस्थोभयदिमलाभे प्रागुक्षेमीपोपितथ्यभित्यदि भविष्य-पुराण्विष्णुधर्मात्तरीयेण परदिननियमितत्वाच । तिथिविवेदी

,म्येवम् एवच्च नचवामस्वन्धे घष्टस्यां पूर्णायां नास्ति विप्रति-पत्तिः विसध्यव्यापित्वात्। खण्डायान्तु निशीषसम्बन्धि-न्यामुपवासः। तया च माधवाचार्यपृत परशरदचनम्। "दिवा वा यदि वा रावौ नास्ति चेट्रोहिणौकला। रात्रियुक्तां प्रकुर्वीत विग्रेपेणेन्द्रमंयुताम्"। नारदौयसंहितायामपि "अपोष जवाचिक्रानि कुर्व्यान्जागरपन्तु यः। पर्दरावयुता-ष्टम्यां सोऽखमधफलं लभेत्"॥ अव अईराचयुर्तियीपेणेन्द्र-सयुतामित्यवापि तथा। एवञ्च पूर्वेदा्रेवाष्ट्रस्यां निशीययोगे सदैवोपवासः। "क्षणाष्टमौ स्कन्दपष्ठी मिवरावि चतुर्दगौ। एताः पूर्वेयुताः कार्य्यास्तिष्यन्ते पारणं भवेत्" इति वशिष्ठ ब्रह्मवैवर्त्तपैठीनस्यक्तस्यास्येष एव विषयः। क्रष्णाप्टमी कृष्ण-खमाष्टमौ स्कन्दपष्ट्यादि माइचर्यात् तियन्ते पारणविधा-नाच । चर्नेव विषये तियेरसागामिले विष्णुपुराणम्। "चनाभे रोहिणौभस्य कार्याष्ट्रस्यस्तगासिनौ। तत्रोपवासं हालेव तिध्यन्ते पारणं सृतम्"॥ एताद्यवचनं भविष्रिपि किन्तु तवापवासः कर्त्राय दति हतीयचर्णे पाठः। न चैतद्वचनयोः पूर्वेद्युरेव निशोधप्राप्तो परेद्युरस्तगामिलमात्रेऽपि विषय इति वाचां विग्रेषेणेन्द्रसंयुतामित्यस्याईराव्युताष्टम्यामित्यस्य च बाधापत्ते: तिष्यन्ते पारणं भवेदित्यनुवादापत्ते य । विम-स्यव्यः पिनौत्यस्य कर्मोपक्रमकासौन तियिनियामकस्य च तिथिमामान्यविषयकस्य विशिषेणेन्द्रमंयुतामित्यनेन घर्षराव्र-युताष्ट्रस्य। मित्यनेन च समाष्ट्रमोमावविषयकेण याधितत्वात्। एवस परदिनमांते सभयदिने या निगीयसम्बन्धे सभयदिने वा तटमान्ये परिवृरिवीपवामः महस्वकासानुरीधासियेध्य-सम्ययावित्याचा "विना ऋचेष कर्ताया नवमीमंयुता-ष्टमी द्रांशिद पुराषाचा माधवाचार्यप्रमतयोऽप्येवम् ।

भव पारणकानः। पारणकानय भविष्य विष्णुरहस्य सद्यवेवलेषु। "षष्टम्यामय रोहिष्यो न कुर्योत् पारणं कवित्। हन्यात् पुरा कृतं कर्म छपवापार्शितं पन्नम्। तिविरष्टगुणं हन्ति नचवच चतुगुषम्। तथात् प्रयव्वतः कुर्यात्तिभानते च पारणम्"॥ षव छभयवियोगे पारणः सुक्रम्। यदा च सार्धप्रहर्गनगाभ्यन्तरे एकम्य वियोग-स्त्दैकतरवियोग्डिप पारणम्। तथा च नारदीये "तिथ-नत्त्रमयोगि उपवासो यदा भवेत्। पारणन्तु न कर्णव्य यावतिष्ठस्य संच्यः। सःयोगिकं व्रते प्राप्ते यद्येकोऽपि वियु-च्यते। तत्रैव पारण कुर्यादेव वेदविदो विद्."॥ यदो वाध्यापि साईप्रस्थियाध्यन्तरे न वियोगस्तदा तयोगवियोगेऽपि पात-क्सवान्ते पारण "तिथान्ते चौसावान्ते वा व्रती कुर्वीत पारणम्" इत्युक्तवचनात् । निर्णय। स्ति तु प्रतिक्विति पारण्-मिति पाठः। न च भोजनस्य रागपाप्तत्वे न विधित्वासम्भवास् तिधिनचन्नधोविधोग विना न पार्य कुर्यादिखे दार्घ इति वाच्यम्। "उपवामेषु सर्वेषु पूर्वाह्ये पारण भवेत्। अन्यया तु फलस्याई धर्ममेवीपमर्पति" इति देवलवर्जन पारणनिय-भात्। विश्व यदि पारणमञ्जे न स्थालदा प्रतिनिधिविधानं नीपपदोत। तथा च कात्यायनः "राज्यादिकं भवेदित्वं पारणन्तु निमित्ततः। यद्विस्तु पारियत्वा तु नैनिकान्ते भुक्ति क्रिया" इति। अतप्य हिमादिमस्तिष्टतवचनं "तिग्राच्यो-र्यदाभेदी नचक्यान्त एव वा। भईगलेऽयवा कुर्यात् पार-यन्वपरेऽहिन"॥ यदा रावे: साईपहरमितकस्य तिथि-नचत्रयोविच्छेद. चयवा तेवल्या नचत्रयान्तस्त्रदाऽपरेऽस्त षपवासपर्दिन पारण कुर्यात् नचचस्थेत्येकतरोदनचणम्। हैमादिस्यदा परदिनैऽईराबाद्परिभान्ति सियन्तो वा भवति तदा श्रहेराते पारण कुछात् इत्याइ। तस्र, वर्जायत्वा महा-निशामिति बद्यमाण्यचनविरोधात् यहरावादुपरिभान्तर्शन-थन्तो वा भवतीलयं प्रमाण नाम्ति बिन्चविराध एन तदांध-करण समिधानात् तु कारणाहेरात्रं व्यवक्तिया अपवास-दिनात् परदिने पारण विधीयते। जोसूनवाइनस्तु न छि तियिभान्ते च पारणमिति पारणकासंव्यतापर जैन तदस्त एव विधि:। किन्तु नचस्रे तिथी च वर्तमाने न कुछा-दिति तालार्थं तत्त्रैव दोपश्रतः रागप्राप्तभोजनासुवादेन निधिनचचेतरवाली पारणं सुर्खादिति वा विधि:। म च राधियोपे भोजन्यावन्दः दतोय एवाइनि पार्ण

भविषति यहणेऽपरेऽहनौतिविनयमाभावादित्याह। तन्न, पारणविधेनियमक्पतयोक्तत्वात् रात्रिग्रेपे भोजनस्याविद्वित-खात्। तथा च ब्रह्मवैवर्त्तः "वियामां रजनीं प्राप्ट-स्यक्षायन्तचतुष्टयम्। नाडीनां तद्भे सस्ये दिवसायन्त-संज्ञिते"॥ एतद्दवनबलात् सङानिशा परकालस्य नाडी-चतुष्टयस्य परदिनादिखेन तदानीं पूर्वदिवसीय भोजनानुप-पत्तेः तद्दिनसत्यलोपापत्तेय। चतएव "मुन्नो ग्रागिन सुन्नोत यदि न स्याचाचानिशा" इत्युक्तम्। कात्यायनोऽपि "म्नि-भिर्दिश्यनं प्रोक्तं विप्राणां सर्खवासिनां नित्यम्। यद्दनि च तथा तमस्विन्धा साईप्रइर यामान्तः"॥ प्रत्यनेन रात्री साई-प्रहराभ्यन्तर एव भोजनं न तुतत्परत चाह यहणवद्परेऽहनि पारणेऽपि दत्तवचनाञ्च केचित् तु तिथ्यचयोरितिवचने श्रपर-उद्यमि उपवासलतोयदिवसे पारणं कुर्यात्। यया वचन-वनात् पारणे घौक्षार्गक पूर्वाञ्चपरित्यागेऽपि न वतवेगुखं तयावाप्योवार्गिक द्वितीय दिनपरित्वागेऽपि न तयात्वमिति। यत्पुनर्भयमत्वे रात्रावैव तत्वैव दिवसे पारणविधायकं तिष्यु-घयोशित वचनं तदसत् चपरेऽइनोत्यवापर इत्यस्य वैयर्पाः पत्ते:। यया श्रुतार्थपरतयैवीपपद्मस्य वचनस्य तिथिनचत्र-सच्चे पारणनिषेधकानां वचनानां वाधने सामर्थाभाषादि-त्याचु:। तव घौसंगिक दितीयदिन परित्यागे प्रमाणमेव नास्ति तिष्णुचयोरिति वचनश्चेदस्य तद्भुपायत्वे प्रमाणं नास्ति। न च चपर द्रखम्य वैयर्थापच्या तयात्वभिति वार्च तयात्वे नि:सन्देष्टार्धं न पर्राप्तनीत्येवं ब्रुपात्।

वस्तुतस्तु पारणन्त्रपरेऽइनीत्यनेन प्रवश्यवक्रयोपीपित तिय्युष्पयोभेद इत्यत्नोपश्चितोपवासस्य परितन इत्येव प्रतीयते न तु हितीयदिवसस्य परिदने प्रतएव "पद्म क्रप्णाप्टभो देवीं नभयन्त्रसरोहिणोम्। पद्मियत्वोपवास्त्र भोष्योऽष्टमपरे-ऽइनिण्डति सन्तनिद्धभिष् मङ्गच्छते। किञ्चानेव वचने नघष्यान्त इत्यत्र भोजनाष्टकाले एकतरिवयोगेऽन्यस्य पर्द-राववियोगेऽपरेऽष्टनीत्यस्य सांयोगिक इत्यादि वचनेकवाद्य-तया प्रयस्तिहितीयदिवसपर्यस्यायशावक्रयत्वे न पर्दराये समय वियोगेऽपि तथैव युक्तत्वात्। अन्यथा सांयोगिकं प्रत्यस्य निर्विषयतापत्ते:। एवश्च "सायमाद्यन्तयोरक्काः सार्यं प्रातस्य सध्यमे । उपवासपत्नं प्रेप्सोर्वर्ज्धं भन्नचत्रष्टयम्" इति मद्दाभारतोधोसर्गिक हितीय दिनपारणसाध्यवाधः। एत-दिषय एवोत्सवाको पारणमाइ "तिष्यको वीत्सवाको वा व्रती क्वीत पारणम्" दति। न च त्रव्र तिथ्यक्ते तारकान्ते वैति पाठ इति वाचं पूर्वपाठम्य हेमाद्रिनिर्णयास्त साधवा-पार्थप्रतलात् व्याप्यातलाच एतिहप्रये ब्रह्मवैवर्तः। "सर्वेप्वे-वीपवासेषु दिवा पारणीमध्यते। भन्यधा फलाइ।नि: स्याहते धारण पारणम्"॥ धारणं नियमग्रहण ततसास्ट होत नता-व्रतस्य राविपारणनिपेधः। गरुड पुराणेऽपि "यन्वतिस्या-गमोराबौ तामसस्तेनसी दिवा। तामसे पारणं कुर्वे स्तामसी गतिमाष्ट्रयात्"॥ नच यदि प्रथम निगायामेकतरवियोग-स्तदापि ब्रह्मधेवतादि वचनाहिबा पारणमनन्तमह माधवा-चार्योतं युक्तमिति वाच्यं "न राषी पार्णंकुयाहते वै रोष्टि णोद्यतात्। निशायां पारणं कुर्यात् वर्जीयत्व। सद्दानिशां र्ति सवत्परप्रदीवधृतस्य "न रात्री पारणं कुर्छादृते वै रोहिणौषतात्। भव निम्यपितत् कार्यं वर्जियता सहा-निगां" इति ब्रह्माग्डोक्तम्य च निर्विषयतापत्ते.। स्त्रीणां यवादादि भोलनमपाइ ब्रह्मपुराणं "ततः प्रविश्व च रहहं यवावं मुऋते च ताः। युक्तमिल्लविकारेश मध्व।ज्यम विचे: सह"॥

तदय सचेपः। यचेकदिन जयन्यनाभे च रोष्टिणीयृका-हमयदिने चेत्तदा पर्राटने। जयन्यनाभे च रोष्टिणीयृका-हम्यान्। जमयदिनं रोष्टिणीयृक्षाष्टमीनाभे पर्राटने। रोष्टि-खनाभे त नियायमध्याम्। जमयदिने नियीय-समन्ये तदमानन्ये वा पर्राटन इति। जपनास पर्राटने तिविनस्वमीग्रह्मानं, चाइण्याः। यदा, नः स्मानियायः। पूर्वमेक तरसावसान सन्यतस्य मद्दानियायां तदनन्तरं वा नदेशनावसाने पारणम्। यदा सद्दानियायासुभयस्थिति-स्तदोत्मवान्ते प्रातः। एक्सिनः द्वि यन्यवटीय श्रीरष्टु-नद्रममद्दान्यिद्यदितं श्रीक्षण्यान्याष्टमीतन्त्वं समासम्। षय दूर्वाष्टमी। श्रक्तापि पूर्वविद्या श्राह्या। "यावणी दीर्गनवमी दूर्वा चैव इताश्रनी। पूर्वविद्वेव कर्त्तव्या श्रिव-राविवेलेदिनम्"॥ इति सहस्रतिवचनात्। बलेदिनं द्युत-प्रतिपत् इताश्रनी रक्षाखतीया भविष्योत्तरे "पच्चे भादपदस्यैव श्रक्ताष्टस्यां युधिष्ठिर। दूर्वाष्टमी व्रतं पुख्यं यः करोतीष्ट्र मानवः॥ न तस्य चयमाप्नीति सन्तानं साप्तपौत्तपम्। नन्दते वर्दते नित्वं यथा दूर्वा तथा कुलम्"॥ भौमपराक्रमे कार्त्तिक-श्रक्तपचमिकत्व "गोष्ठाष्टस्यां गवां पूजां गोग्रासं गोपदिच- यम्। गवानुगमनं कुर्यात् सर्वपापविमुक्तये"।

षाप्रदायखा जड्डे तिसृषु क्षणाष्ट्रमीषु त्रादानि नित्यानि यया गोभिन: "मष्टकाघोड्व मायहायखास्त्रमियाष्टमी" इति वद्यापुराणे "पिवादानाय सूले स्युरष्टकास्तिस एव च । कण्ण-पचे वरिष्ठा हि पूर्वा चैनी विभाव्यते॥ प्राजापत्याहितीया ' स्यात् हतोया वैखदेवको । चादापूपै: सदा कार्या मांमै-रन्या भवेत्रया। प्राक्तैः कार्या हतौया स्यादेष द्रश्यगती-विधिः"॥ सूरी प्रधानम्याने श्रमावास्यायां भभावास्या हि त्राहम्य प्रधानकालम्बह्ददिति यावत्। ऐन्द्रीसारनेरिन्द्रदेवता-कयागमम्बन्धात्। एव प्राजापत्या वैद्यदेवको च मांसैः पग्रीः। तथाच गीभिनः "ययुवास्पतरमभारः स्यादाप पश्नेव कुर्यात्" इति यदा वैति निपातसमुदायो यदार्थं पश्चिति छाग एव "क्वागीऽनादेशे पगुः" द्रति गीतमात् न च "तेषा कर्ष-मष्टम्यां गौ:" गोभिनस्वेण गवोपदेयात् क्यमनुपदिष्टत्व-मिति षार्थं तदमभावे पशुरित्यनेन यः पशुरुपदिष्टम्तस्य विग्रेपसी रनुपदिष्टत्वास् तैषो पौषौ। वस्तुतस्तु हिष्यग्रे मगोऽपि विदितः यया "इच्चाकुम्तु विकुच्चि वै भप्टकाया-भयादियत्। मांसमानय याद्याय स्गं इत्या भद्यावन" द्ति। स्थिगवधाभावमास स एव पवध्यास स्तियं प्रास् स्तिधायोनिगर्नेचिषि ॥ एतद्दें महापुराणेऽपि चार्खाः मामगस्यमोधितत्वं वधाते पश्वभावे स्वानीपाकेन यया गोभिन: "पपि या स्थानोपाकं कुर्रीत" इति तहिषा-नन्तु "सारोपाकं परासानं कुर्याद् यदानुकस्पितम्।

अपयेतां सवलायास्तर्या गोः पयस्यनु । इति छन्टोगपरि-। शिष्टों से माञ्चम् । भन्विति भोदनचरीः पद्मात् भन्यव भाता-तपः "नवीदके नवाचे च ग्रहप्रच्छादने सदा। पितरः स्पृष्ठ-यन्यनमष्टकासु सवासु च॥ तसाह्यात् सदोदाको विहत्सु वाद्वाणेषु ५"॥ तसादतं प्रधानं पूपादिकं तूपकरण्लिन . शक्तानामावश्यकमुभयव सदेति श्रवणात्। तथाच "निखं सदा यावदायुने कटाचिटतिकसत्। खपेत्यातिकमे दोष-श्वतेरत्यागदर्भनात्। फलाश्वतेवीपाया च तिवत्यमिति की सिं-तम्"॥ नवीदके वर्षीपक्षमे ऋदिंगते रवाविति यावत्। "पार्द्रादितो वियाखान्तं रविचारेण वर्षति" दति नव्यवर्द्ध-मानभूतात्। "पाइट्काले समायाते रोद्रऋच्यते रवी। नाड़ीवेधसमायोगे जलयोग वटास्यहम्"॥ इति रुद्रयाम-लाच । रोद्रमाद्रिनयोदकयाहस्य मावकाशत्वात् वयोदश्या-दिक्रनिषेधमाच दौषिकायाम्। "वयोदशी जन्मदिनञ्च नन्दां जगर्मितारां सितवामगद्य। त्यज्ञा दरी ज्येन्दु अराज्यमेव ध्येषु च याद्यविधानिमप्टम्"॥ सितवामर गुज्जवारम् ऋसं राश्चिः चर्यादयः यवणपुष्य सुगणिरो इस्तार्वत्यनुराधा उत्तर्-वितयशीहिण्यः। कृषापचे चैम्रवीदवाद्याष्ट्रवासस्तदोभयोः चाह्योम्हन्तात् मिहि:।

ज्योतिषे "रजीयुक्चास्युवाची च तीद्राद्यपदित रवी।
तथां पाठी वीजवाणं नाहिभीदुंग्धपानतः॥ स्माणिरिम
निष्ठते रीद्रपाटे स्वाचो ऋतुमित खलु पृथ्यो वर्जयेसी ख्रहानि। यदि वर्णात क्षणणः चेत्रमामाद्य वीजं न भवित
फलभागी ग्रथ्यचाण्डाचपाकः"। रजीयुक्चा ऋतुमती
पृथ्यो। सत्समूत्रे "धरखासृतुमत्याच भूमिकम्ये तथेव च।
चन्तरागमने चेव विद्यां नैव पठेहुधः"॥ ज्योतिषे "यिमन्
वारं सहमांग्रयंत्राने मियुनद्वरित्। श्रम्युवाची भवित्रित्यं
पुनस्तत् खानवारयोः"॥ इदन्तु प्राणिकं सावकाग्रयादमधिसत्य महाभारते "नचने न च कुर्वीत यिमन् जातो भवेदरः।
न भोडपदयोः खाय्ये तथानेये च भारत ॥ द्राक्षप च सर्वेषु
प्राच्ये च विवर्जयेत्। च्योतिषे यानि प्रीक्षानि तानि सर्वाण

वर्जयेत्"॥ प्रोष्ठपदा पूर्वभाद्रपदा हिनस्रक्षताहिवस्तम् या-ग्नेय सॉन्स्का दार्गम्हा स्योतिषे। "दार्गशोरग रौद्रमेन्द्रं नैक्ट्रितमेव स"। उर्गमदीषां रोद्रमाद्री एन्द्र स्येष्ठा नैक्ट्रितं सूना। विष्णुधर्मोत्तरे च "नस्तर्ताण तथैवात दार्गोग्राणि वर्जयेत्"। तत्रोग्रनस्रवाणि पूर्वावयमघाभरखः।

नवात्र आह्वकाल्य स्योतिषे। "सूर्यो चेव विगाखरी सार्तियौ पापे विजनाम्बित नन्दामन्द महीजकार्यादवस पोषे मधो कार्त्तिक । भेष्रप्राहिशिवेषु विष्णुश्रयने कष्णे शशिन्यष्टमे त्याद भोजनक नेवान्नविह्नि युवार्यनाग्रप्रदम्। "ज्येष्ठ।श्रिपादेंगे सूर्यों सुगर्मवा निमात्मक। नवाजैभीजन न्याद जस चन्द्रे तियो न च"॥ सूर्यो चैष विभाजरी मार्ग-शोपस्य विंशति दर्शिकपयमदिनवयावस्थितं सार्गतथौ वयोदग्यां पापे पश्चमतारावये। उपनचन पूर्वावय मधा-अरखः श्राहरश्चेपा शिव श्राद्धी। भोजराजः "ब्रह्मा विष्णु हुइसती प्राप्यधरो मार्त्तण्ड पोप्ए।दिती मैते चित्रविद्याख-वायु धनभे सूनाध्वि यङ्गा तथा। शको वाक्ण च्यन्ते शुभ-दिन यादं नव शस्यते। नन्दाभागव भूमिजेषु न भवेत् यादं नवानाङ्गवम्"॥ ब्रह्माद्य. रोहिणौ यवणापुष्यसृगशिरोहस्ता रेवतौ पुनवस्वनुराधा चिवा विशाखा स्वात धनिष्ठा सूला-श्चिमी क्षतिका च्येष्ठा शतिभया। नवासयाधे मूना क्षतिका ज्येष्ठा विधानासच्छेपभचणप्राप्तेः "चश्रेषा स्निका ज्येष्ठा मूलाजपदकेषु च । सुगुभौमदिन रिक्षे तिथौ नादा। तबौदन" द्रांत याद्यीषाभोजिमावपरम्। पजपद पूर्वभाद्रपदा।

चन्द्रतारादाग्रहो प्रतोकारमाह देवनः। 'कर्म कुर्यात् फलावार्यो चन्द्रादि गोभनं वुधः। सुर्यकाले लिट मर्जे नार्तः कानमपेवते॥ चन्द्रो च ग्रह्वं न्वचण्ड तारे तिथावभद्रे सिततण्डुनाय। धान्यञ्च द्यात् करण्डेवारं योगं तिनान् हिममण्डि लग्ने"॥ तारे जन्मविषत् पापकष्टे। न्रष्ट्यसिव-चित्तन्वसम्। राजसान्तण्डे तागभेदास्वणप्रिमाणमाञ्च एकति पञ्च सप्त हिजाय द्यात् पनानि नवण्य क्रमगा चन्ति प्रतिप्रत्रिमरणास्य तारास्। पनन्तु नीकिकीमीनैः

सारसिंदिमापकम्। तोनकित्रतय त्रेय च्योतिर्त्ते स्मृति समातम्' वामनपुराणच्च "विष्टयो व्यतिपात्य येऽन्ये दुर्नीति ममातम्' वामनपुराणच्च "विष्टयो व्यतिपात्य येऽन्ये दुर्नीति ममाताः। ते नाम सारणादिणोनांग यान्ति महातान "॥ विण्यमितिरं "सर्वाशुमाना परिमोचकारि सपूजन देववरस्य विण्यो " दित ब्रह्मपुराणे "प्रायौगाद्धिसयुक्त नव विप्राभि-मस्तितम्"। प्रभिमन्त्रित मन्त्रानादेशे गायबौति वचनात् गायबेऽति। स्मृति. "रटहोला ब्राह्मणानुत्ता सद्धिप्राणये-चवम्"।

पय भोषाष्ट्रमो। भविष्योत्तरे "गुज्ञाष्ट्रस्यान्तु माघस्य ददाद्वीपाय यो लनम्। सवसरक्षत पापं तत्वणादेव नम्मति"॥ धवलधृतामाति । "श्रष्टस्यान्तु सिते पद्मे भोषाय मितिनोदकम्। भवस्य विधिवद्यः सर्वे वर्णा दिजातयः"।॥ सर्वं वर्णा रत्यपादानात् वाद्वाणशूद्रयीरप्यधिकार । दिजातय इति सम्बोधनम्। "ब्राह्मणस्वन्यवर्णाना य करत्योह्न देहि-कम्। तद्वणत्वमसौ याति द्रष्टनोके परव्रच" दति सरीचि-वचनन्तु भौष्मक्षत्येतरपरम्। तथा च स्नृति "द्राह्मगाद्यास्तु चे वर्णा दयाभीमाय नो जलम्। सवसरक्षत तथा पुरुष नग्राति सत्तम् । । यमवर्णजन्दाननिपेधस्तु पकरणाद्धि भावादि विषय रति चोदत्त । अव तर्पणमन्त्र "वैयाघ्र-पदागीवाय मास्ति प्रवराय च। चपुवाय ददास्येतत् मस्तिल भोषावमें वे दति 'भोषम मात्तनवो वीर सत्यवादो जिते-न्द्रियः। पामिरद्विवराष्ट्रीतु पुत्रपोचोचिता क्रियाः इत्या-गमा मन्त्र । पृवपोवोधितामित्यभिधानात् पिद्धकर्मरोत्या ब्राह्मण पिख्तर्पणानन्तर चित्रयादिकम्त तत्पूर्व तर्पयेत् इति संवयसरप्रदीप।दय । स्रव बोज वर्णज्येष्ठम्।

चय प्रमाकाष्टमो। स्कान्द "मौन मधी मुक्तपचे प्रमो-काच्या तथाष्टमोम्। पिवेदमांककिनका स्वायासीहित्य-वारिणि ॥ प्रमाकाच्ये त्यपादानात्तित्यमात्रेऽपि तत्माभ फनन्तु मन्द्रिन्दित्र मोकर्राहतत्वमयगन्तव्य सोहित्य-वारिणि तद्यप्राच्य नदनसे। पुनर्वस्योगेत् फना-धिरामाद्र निद्रगर्हप्राच्योः। 'प्रमोक्कित्वमाद्याप्टो

ये पिवन्ति पुनर्वसौ। चैबे सासि सिताष्टस्यां न ते योकम-वाष्ट्रयुः"॥ पानसन्त्रस्त्। "त्वामग्रीक हरामौष्टमधुमास-समुद्रव। पिवासि योकसन्तमो सामयोकं सदा कुर्" !! स्तोश्द्रकर्त्तकपानिऽपि प्रागुत्तयुत्तेः खयं मन्तः पठनीयः। स्त्री-पचे उद्दोर्शय नास्ति विव्वतमेकादशीतस्व । श्रशोकपानसु पश्चमार्द्वप्रद्यापिन्यामष्टस्यां भ्राद्धदितीयोक्षवत् । "पुनर्वमौ वृषे लग्ने चैत्रे मासि सिताष्टमीम्। सीहित्यविरजे सायात् सर्वपापै: प्रमुच्चते ॥ पृथिव्यां यानि तौर्यानि सरित: सागरा-दय:। सर्वे सौद्धियायान्ति चैत्रे मासि सिताष्टमीम् ॥ ब्रह्मपुत्र महाभाग शान्तनोः कुलनन्दन। धर्मोघागर्भसंभूत पापं लौहित्य मे हर" इति स्नानमन्तः॥ कालिकापुराणे "चैवे मासि सिताष्टस्यां यो नरी नियतन्द्रियः। स्नायासौ हि-त्यतोयेषु स याति ब्रह्मणः पदम्॥ चैवन्तु सकलं मार्ध श्रुचिः प्रयतमानमः। सीहित्ययोये यः स्नायात् स कैयत्यम-वाप्रयात् ॥ लोहितासारसो जातो सोहित्यास्यस्ततोऽभवत्"। स्रोतीमान्ने विष्णुः "पुनर्वसु बुधोपेतां चैत्रे मासि सिताष्टमीम्। स्रोतःसु विधिवत् सात्वा वाजपेय फल नभेत्" ॥

शय शोरामनवमी। शगस्य संदितायाम्। वैवे मामि नवस्यान्त कातो रामः खयं दृरिः। पुनर्वसृत्तसेयुत्ता सा तिथिः सर्वकामदाः॥ पुनर्वसृत्त संयोगः खस्पोऽपि यदि सम्वते। चैनगृहा नवस्यान्तु सा तिथि: सर्वकामदा॥ स्रोराम-नवमी प्रोक्षा कोटिस्या ग्रहाधिका। तिसान् दिन सहा-पुख्य गममुह्ण्य भक्तितः॥ यत्कि चित् कियते कर्मतड-वचयकारकम्। उपीषणं ज्ञागरणं पितृनुहिश्य तपेणम्॥ तिमान् दिने सु कर्त्रव्यं ब्रह्मप्रसिससीय्स्सि."। चैत्रपदं धान्द्रपरम्। "सपं पूपणि मंप्राप्ते लग्ने च कर्कटाञ्चरो। धाबिरामीत् मकनया की प्रसायां घरः पुमान्"॥ प्रव मेपस्य स्यों चान्द्र चैवस्येव समावासिधिकत्यत्वाचा तथा 'तिसान् दिने महापुण्ये रामम्हिन्य भित्ततः। जपेदेकान्त पानीनो यावत् म्बाइमामी दिनम् ॥ त्नैव म्यात् पुरस्या दशस्यां मोत्रयेहिजान्। भस्यभोत्येवस्विधेभक्ष्या दयास दिवागाम्॥ स्तक्षयो भवेत्रेन सद्यो रामः प्रमीदति"। तथा 'चित्र शुक्का तु नवसी पुनवेष युता यदि । सैव मध्याङ्गयोगेन सहापुर्य-तमा भवेत्॥ नवमी चाष्टमी विषा त्याच्या विषापरायणै:। उपीपर्ण नमयान्यु दशम्यामेव पारणम्"॥ एतद्वनद्यं यानमाधवीयेऽपि किन्तु महापुख्येत्वव महाफलेति पाठः। गुरेति यवणात् गर्वत्र ग्रहाया स्वादरी ग्षिदायाभिति यत-एवाष्ट्रमौविदा नवसी मनस्रवाणि नोपोणेति साधवाचार्यः। भैय ताहमीय न सु विद्या। यदा तु पर्यद्रिन एकादम्यो दम्भी पारणयोग्या तदा दशसी युक्ता नवस्युपीया वैषावैविषा्परा-यणेरिति त्रवणात् चविषावैश्व षष्टमोविषेव प्राष्ट्रा यदा सु पूर्वदिन अष्टमी विदा नवमी परव दमसी गुता नवमी गवा-दगी दिने च दशमी न पारणयोग्या तदा नचत्रयोगायोगे-प्रथटमोविहें य याद्या परदिने उग्रह्मांसव पारणिसिति निध-मात्। तथाच रामार्चनचित्रकायां दगम्यादिषु द्विरयेत् खाज्या विश्व वैषावै:। 'तदन्येयान्तु मर्वेषा इतं तल्लेव निवितस्। दुराधाःसेव राष्ट्रेन स्थाभी नेव लहु येत्॥ निध-रवेषं विचारेण नवसीयसमाचरेत्' इति जारिकाभ्यामगस्य मंशिताच्याच्यानम्। धम्तुमम् दगमौपारणम्खे सर्वेरवाष्ट्रभौ विदा मोद्रापा विद्युपरायमेशित त विद्युपरायणस्वेत भवि-तैयशित्यपदेग परं न त कर्नृविगेषणम्। भगस्य नायेषा- वस्य विद्वीपवासानुपरेगात्। कर्तृभेरे विधिद्वय कलानापसेय धतएव साधवाचार्यांग सामान्यत एव विद्वा निपिद्वा।

चगस्यसहितायामस्य नित्यत्वमाद्य "प्राप्ते चीरामनवमी दिने मत्यों विमूदधी। उपोषण न कुर्ते कुश्रीपानेषु पचाते॥ यस्तु रामनवस्यान्तु भुडते मोद्दादिसूदधी। कुमी पाकेषु घोरेषु पचाते नात सथय " ॥ श्रव सर्थे इत्यपादानात् मरमात्रस्याधिकार । एवच "कुर्याद्रामनवस्या य छपोषण सर्तान्द्रत । सातुर्गभमवाद्योति नैव रामी भवेत खयम्॥ तसात् सर्वाताना सर्वे क्रत्वेव नवसोवतस्। सुचान्ते पातके सर्वेयान्ति ब्रह्म सनातनम्"॥ इति फलकोत्तन प्रागुज्ञसयोग पृथकलन्यायात् सिहम् अगस्यमहिनाया "शाल्यास शिनायाच तुनमोदनकत्यिना। पूना यौरामचन्द्रस्य कोटि कोटिगुणाधिका"॥ तत्रानुष्टानसगस्यमहितात सचिद्य निष्यते। हामप्रात सानादि "उपोष्य नवमीन्वद्य यामिष्यष्टमु राधव।। तेन प्रौतो भव ख भी। ससाराचा हिमा हरे"।॥ र्शति निवेद्य । "कोमनाङ्ग विशानास्यिम्रगोनसम्प्रम्। द्चिणात्री द्शरथ पुत्र।वेष्टनतत्परम ॥ पृष्ठतो सद्भाण देव सच्छव क्रतक्रमम पाख भरतशक्ष्मी तालव्यकरावुमी। "बम्रे खप्र हन्मका रामानुग्रहकाङ्गिम्"॥ एव ध्यात्वा श्रीराम पूजरेत्। स्नानमन्त्रस्तु 'इन्द्रार्शनय यमश्रैय नैऋतो वक्षोऽनिस । कुवेर ईश्री ब्रह्माऽहिर्हिकपाला स्नापयन्तु ते"॥ ग्रिंदिनस्य कीयत्या पूजरीत्। मन्त्रस्तु "रामस्य जननी चासि राममयमिद जगत्। यसस्वापूजयिषामि लीकमात नेतोऽस्त ते"॥ तथा "नमो दशरथायेति पूजयेत् पितर तत । सतो उनुन्नाप्य देवेग परिवासन् समर्चेयत्। पूर्वपटकीण कोर्पेषु म्हदयादीनि च कामात्" ॥ भृद्यादीनि यथा रा म्हदयाय नम रों शिर्धे खादा क शिखाये वषट् रें कवचाय हु रों नेचाभ्या धीषट र अस्तायफट् इति। तथा ' इनुमन्त सुस ग्रीव भरत सर्विभीषणम्। सद्मणाङ्ग द्रगव्य नास्ववन्त दलादिषु॥ धूम्त्र लयन्त विजय सुराष्ट्र राष्ट्रवर्षनम् प्रकोष धूमपालास्य कल्ल दलमध्यतः। दलाधे लोगपालाय तट

स्ताणि तदयतः"॥ नीकपाला इन्द्रादयो दश तद्स्ताणि वळ-शिक्त दण्ड खड्नपाश भड्न्यगदा शून चक्र पद्मानि। मध्याङ्गे लग्न सावयेत्। "अवस्थे ग्रहपञ्चके स्रगुरो सेन्टो नवस्यान्तिथी लग्न कर्कटके घुनवैस्तिने मेषं गते पूर्णणा। निर्देश्चं निष्टिलाः पनाशमिभधो मध्यादयोध्यारणेराविर्भूत समूदपूर्व-विभवं यत्किच्चिदेकं सहः"॥ पलाशा राच्नमाः "सत्वैवं वाटयेद्वाद्यानघ्यं दद्याक्तगत्पतेः। फलपुष्पास्त्रसमूर्णं ग्रहीत्वा शहमत्तमम्। भशोकरत्वज्ञसमेर्युक्तच्च तुनसीदनः"॥ मन्त्रस्तु "दशाननवधायाय धर्मसंस्थापनाय च। दानवामा विनाशाय दियानां निधनाय च॥ परिवाणाय साधूनां रामो जातः स्वयं हरिः। ग्रहाणाच्यं मया दत्त साद्यमः सहितो सम॥ पुष्पाञ्चलि पुनर्दत्वा यामयामेष्वतन्द्रितः। पूज्यदिधिवञ्चक्या दिवारात्रं नयेद्वधः"॥

तदयं मंत्रेष:। श्रुडायां नत्त्रयुक्तायां विवादाभाव: विद्यान्यान्तु पकादगोदिने दशमीपारणयोग्या न चेत् तदा नत्तत्र-योगायोगेऽपि श्रष्टमीविद्यायां पारणयोग्या चेत् तदा श्रष्टमी विद्यां त्यद्या परेऽहिन हपवास:।

यय दशमी। साच गुक्ता एकादश्या क्षणा तु नवस्यागुता याद्या। यथा त्रित्राः "सम्पूर्णा दशमी कार्या पूर्वश।
पर्याथया। गुक्ता न दूषिता यसादिति मा सर्वेतोमुन्ती"॥
यथा सम्पूर्णा दीवरिता तथा विद्यापित विकल्पे व्यवस्थापर्यात वित्राधमां त्रीयं "गुक्तपचे तिथियां द्या यस्थामध्यदिती
रविः। कृत्रापचे तिथियां द्या यस्थामस्त्रामती रविः"। ब्रह्मप्राणवद्मविक्तंथोः। "न्येष्ठस्य गुक्तद्गमौ संवत्सरमुखी स्नृता।
तस्यां सानं प्रकुर्वति दानचौष विशेषतः॥ यां काञ्चित्
सरितं प्राण्य द्याद्मस्तिनीदकम्। सुच्यते द्यसिः पापैः
समद्यापातकीयमैः"॥ यत्र कवनदग्रस्यां नदीमात्रे दर्भसर्प्यकतिनतपंणाद्मकसानाद्यविध्यापच्यः फलम् एवं
दानादिव वस्तृतन्तु वस्थमाणभविष्ये जाङ्यवीपदश्वणात्
दित्यविगदस्यस्थाः। बद्धविक्तंऽिष सरित्यदं जाङ्यवीपरम्
सन्यया नानाितिधः सात्। यां काञ्चिदिति तु जाङ्यवीपरम्

स्वावकम श्रन्यथा कुल्यास।नैऽपि दगविधपापचय: म्यात् मन्त्र-लिङ्गे जाङ्गयोपदयवणाच। गङ्गामधिकत्य वाह्मेर "गुल-पचस्य दशमो ल्यंष्ठे सामि हिजोत्तम। इस्ते दश्पापानि तसाद्गद्रा स्मा"॥ यव केवनद्रास्या द्राविधपापच्यः फलम्। भविषे "च्यैष्ठशुक्षदशस्यान्तु इस्तयोगेन जाइको। इर्ते दशपापानि तसादशहराचर्तं ॥ दशपापानौति दश-जगञ्जतपापानोति विशेषगौयमाइ पराशरभाषे यमः। "ज्येष्टे मागि भिते पत्ते दशस्या हस्त्योगतः। दशजन्मा-ऽवहा गङ्गा दगपापहरा स्मृता"। अब दगजमा छतदगविध-पापच्यः फलम्। ग्रव "प्राप्ते कर्मणि नानको विधातुः शकाते गुण:। समाप्ते तु विधोयन्ते वद्यवीऽध्येकयस्त." इति न्यायेन हस्तानचल गङ्गारूपगुणहयविभिष्ट द्शमी विधे-र्यास्रित्रहित तस्राभस्तव स्नानम् उभयदिने तु तल्लाभे परदिन एव श्रवापि पूर्वदिने वस्यमाणकुभवारमाभे तवापि सार्न वारस्योभग्रतानाभात्। ततय पूर्वदिने तथाविधसान सत्वा परदिने केवल दशस्यामपि दशविधपापचयकामेन स्नातव्यम्। गहः "चौष्ठे मामि चितिसुर्तादने ग्रुक्षपचे दगम्यां एम्हो शैलाविरगमदिय जाइको मर्त्यनोक्षम्। पापान्यस्यां इरति च तिथो सा दशेखा हुरार्खाः पुर्खं दद्याद्पि शतगुणं वाजि-मेधायुतस्य"॥ भीम इस्तायुक्तदशस्यां गङ्गासानाइगविध-पापच्य शतगुण वाजिमेधायुतजन्य पुख्य समपुख्य फलम्। राजमार्नएडे वास्त्रीकि:। "भदत्तानामुपादान हिंमा चैवा-विधानतः। परदारीपर्मवा च कायिक विविधं छातम्। पार्चमनृत्रेष पंगुमाञ्चापि सर्गः। यसमानापस वाद्मय स्वाचनुर्विधम्॥ परद्रश्चेविधिधान सनमानिष्ट-चिन्तमम् । वित्याभिनिवैगय् विविध कर्ममानमम् ॥ एतानि टश पापानि प्रश्मं यान्तु नाष्ट्रवि । सातस्य मस्त रेवि ! जले विद्युपदाइवै॥ विद्युपादार्घमभूते गद्गे विध्य-गामिनि। धर्मद्रवाति विष्याते पाप म ४र लाइक्षि।" ॥ श्रय मन्ति ने प्रणवपूर्वकार्यतानि मामान्यसानमन्तान्ते सस्तन-सादो पाद्यानि "शागन्तुकानामन्तेऽभिनियेग." इति न्दायात्

"मस्वान्ते कर्मसन्विपात" इति न्यायात् "मन्द्रान्ते कर्मा-दोनि सन्निपातयेत्" दलापस्तस्यीयाञ्च। हिमादेण्न्यादि-भेदमाह कामधेनी देवल । "कायकोग मनोद् ल वध घा प्राणिना पुन । य प्रवर्त्तयति देयात् सा हिसेति समासत । यद्वार्थ द्वाह्मणैर्वध्या प्रश्नम्ता स्मपिद्धिण । भृत्यामाध्ये हत्त्वर्धमगस्यो द्याचरत् पुरा"॥ तद्या "पश्पत्रचनमपवाद पैश्चमनृत दृशालापा निष्ठ्रधचनमिति वाद्यागि पटा परेषा देश जाति कुन विद्याशिलक्ष द्वनाचार परिच्छद भरीर कर्मजोविना प्रत्यक्षदीपवचन पर्पम॥ यद्यान्यत् क्रीधमन्तापत्र। सस्जनन वच । यर्प तच्च विद्रोय यद्यान्यभ तयाविधम्॥ चच्याविति सुप्ताच चण्डान वाद्मणिति च। प्रशसानिन्दन हेपात पश्याम विशिधति"॥ तेपामेव पश्य वचनाना परीच म्द्राइरणमपवाद । गुरुन्पतिवसुभाष-मिवसकारी यथैपियातार्थ दोषोपान्यान पैशन्यम्। पतृर्त दिविधममत्वममवाद्येति। "देशराष्ट्रममङ्गाञ्च परार्थे परि-कस्पनात्। नर्महामप्रमङ्गाच भाषण व्यर्थभाषणम् ॥ गुह्या-ष्ट्रामिध्यमज्ञाना वचन निष्ठुर विदु। यदन्यदा वची नीच खोपुमोर्मियुनाययम्॥ इत्येव घट्विकल्पम्य दुष्टवाक्यस्य भाषणात्। इइ वा मुद्र वा क्र्यमनय प्रतिपद्यते'॥ प्रश्रमा-निन्दन प्रशासया निन्दनम् भव चतुर्विध पडविधयोर्विशेष । समज्जासमज्जभेदानादरणेन पार्यापवादयीरेकात् नि ष्ट्रस्य पराषात्रभावाद। असम्बन्धप्रनापव्यथभाषगयो पद्या-यत्वात् नार्थान्तरत्वम्। श्रीभधानमपद्रशार्थिति शेष । वितये अमलभूते वस्तुनि अभिनिवेश पुन महत्य । स्तृति तत्वे महादेवी सृष्टिस्थित्यन्तकारिगीम्। नत्वा वद्ति तत् पुजाकाल योर्धनन्दन ।

अथ दुर्गीसन । मार्कण्डेयपुराणि "शरकाने सहापूजा भियते या च वार्षिकी' दात यथा "स्ताद्दिन तु कर्मव्य प्रतिमासन्तु वसारम्। प्रतिमवसम्बेन पाद्यमकादशिद्धिन" दति याज्ञवल्कायचने साहस्य प्रति स्वस्तरक्तेव्यव्य स्त्री यथा वा "प्रति सवसामाग्रहायणिष्ट कुर्यात्" द्ति प्रति

सवसरकर्त्वयत्व ञ्चते सावसारिक विशेषण प्रतीयते तयात्रा-पीति वार्षिकोति यवणात् "प्रति सवसरं कुर्यात् स्थापनञ्च विसर्जनम्" इत्यव प्रतिसवसर युते प्रागुक्त शरका स इति श्रुतेश वर्षशरदोनिमिसलेन वापिकशरलासीनेति दुर्गापूजाया विशेषण पतोयते। ततय वार्षिकाशरकाकीनद्गीपुजा एक-वचनान्ति दिया तत्त्वल्योत्त नानादिनसाध्याध्येकैव प्रतोयते। "यारदीया महापूजा चतु कर्ममयी श्रमा। ता तिथि त्रयमासादा कुर्याङ्गत्रया विधानत " इति जिङ्गपुराणीये चतुः कममयोत्यनेन चतुरवयवदालेन चभिषानात् सपनपूजन बिलिट्रान होसक्या विद्यमाग्युत्तेय। साच प्रतिवर्षकर्तव्या दुर्गाया दल्यकस्य "धिशरीरे चरेचैव लक्ते केन्द्रगते रवी। वर्षे वर्षे विधातव्य स्थापनञ्च विसर्जनम्" इति देवौपुराण-चचने वीपः। युते भाव दिशरीरे कन्याया चरे तुलाया केन्द्र-गते लग्नगते रदी थन्य दियरीरादे पूर्वा हिं उमकावात् "सवसार-व्यतीते तु पुनरागमनाय घ" इति मन्वनिद्वाञ्च। सा पूजा नित्या वीसाञ्चते अकरणे प्रत्यवायश्चतंय। यथा आरदीया महापूजामधिहात्य दाभिकापुराण "यो मोहादयवालसाहे वो दुर्गा महोत्रवे। न पूजयित टकाहा हेपाइम्यय भैरव॥ क्रुडा भगवती तस्य कामानिष्टाजिङ्गित वै"। विधिसमिभ व्याह्नत फलशुते दास्याचा यथा तर्नेव "हत्वेव परमामा पुनिहेति विदिवीकस । एदमचौरपि सदा देखा कार्यो प्रपूजनम्॥ विभूति मतुना सन्धु चतुर्वेगप्रदायिकाम्"। पूजरी दित्यधिक्वत्य भविष्योत्तरेऽपि "भवानीतृष्टरी पार्थ सब-सार सुखाय च। भूतप्रेत पिशाचाना नाशार्थची साय च"॥ देवीपुराण 'तुष्टाया ऋषदुर्गाया निमिषार्हेन यस् फलम्। न तदलु म ऐशोऽपि शक्ती वर्षशतैरिप"॥ एवञ्चातुल विभू-त्यादिमिनित वा भवानोप्रोतिर्वा तत्तत् कस्पोक्ष वा फल निर्देश्वमिति। एवञ्च तत्तत्वात्पकरणे तत्तत्वि पृजाया द्रव्यदान।दिषु यत्तदन्तर्गतं फन तत्तत्यादीय द्रव्यदानवदा-नुपड्रिकम् भतो न तव काम्याभिनापापेचा वलिघातेत् "ततो देवी समृह्यि काममृह्यिचालन."। इति कालिका-

पुराणे उद्दिखेलिभिधानात काम्याभिनाप द्ति। तत्य सयोगपृथकल न्यागादुभगक्षयम्। तत्य काम्यत्या पूजने सत्ते प्रमङ्गानित्य पूजासिति । एव बन्धिभाषकेऽपि।

एव कर्मकुर्वता यत्ताह्य फल न हथ्यते तत् किल्स्साः वात्। तथा च विष्णुपुराण "यदा यदा मता हानिवंदमार्गा-नुसारिणाम्। तदा कर्नेहं दिरनुमेया विचलणे ॥ याग्यायमोदिन्स यदा धर्मस्ता नृगाम्। तदानुस्य प्राधान्य करोर्सेचेय परिहते"॥ सद्यपुराणञ्च 'यवाधर्म सतुषाद स्वादमं पाटविषद्ध । कामिनस्तममाक्षया जायन्ते यत मानवा ॥ अहङ्वार गरहोताय प्रचीपलेखनास्वर । विप्रा शूट्समाचारा मिक्ति सर्वे कर्नो सुरी" । अस फनजन-कापूर्वकालामेगोऽध्येका अन्यया सङ्ख्यावाष्ट्रनविसर्जनदिन गादिभेद सात्। ततस भी यियस्या मधिवासदिनेऽद्गा-धिकाराय तदीजोभृतकास्यप्रधानाधिकार सम्पादक सुध-तिनजनवागमधित कारयाभिनापपृषेक प्रधानमङ्ख्य कार्ध्य। इति हैर्तानर्राधीन वस्त्रापि वास्यविन निख्यविन वा करणे वसलाशत्तत कल्यारकादिन बोधनादिप्रागेव सहस्यो न तु दिनान्तरे। धारकाले सङ्गपूना इत्यन एक वचन युत्रेक प्रयोगसाध्यत्वे नैककर्मतापत्र कियावानापजन्यस्य वाकार्या भूतिनियीगसैक्याद्रश्वत् न तु प्रत्येक तत्तत्वर्राणा स्वात्यः कलिकापूर्वजनकलादैन्द्रदधादिशीमवत्। यतएव जिवान धनञ्जय समस्यो । "मारभ्य तस्वा दशमीञ्च यावत् प्रपूज-वेत् पर्वतराजपुत्रों इत्वक्रम। अत्वत्व कन्यामस्ये रवी शक्त शक्ता मारभ्य निस्काम्' इत्युपक्रस्य "महानवस्या पूजिय सर्वकामपद्रश्यिनी" इहान्तेन देवीपुराणीदेन अपि पष्टीत प्रभृति गवमीपर्धन्त पूजेयमित्येकलेनोक्षम्। तेन पञ्चया-मेकभक्त तत पद्यापात मकस्य इति रताकर । न च मन्दिकाप्रतिपदिति दुर्गाभक्तितरिष्ठ खुक्त युक्तिमति वाच्य सहानयमीमिनिश्च पष्टीपरित्यांग प्रमाणाभावात् प्रतिपद् क्षायि प्रतिपद्धि क्रमणैकल्सिके प्रश्वतार्थ निवीहाचा एउचानिकारसाध्यविन तिथ्युक्षेकाननारमारस्य दशसी यावतु प्रत्यसमिति वार्षिक शास्तानीन दुर्गामसापूजनिमिति च यथास्थानं वाक्ये प्रयोज्यं श्रन्यथा संकल्पकानोन तिथेरन्य-दिनेऽसम्बदात्तदन्वयानुपपत्तिरिति सुधीभिमीव्यम्।

एवच तत्रेव वध्यमागतत्तदचनात् द्वापानवस्यादि प्रतिपदादि पष्टप्रादि सप्तम्यादि सहाष्ट्रभ्यादि केवल महा-ष्टमौ केवल महानवमी पूजारूपाः सत्या उनेयाः। तदगनार-मगौचमपि न प्रतिबन्धकम्। "व्रतयस्र विवाहेषु याखें होमेऽचन जपे। श्रार्खे सूतक न स्यादनारखे तु सूतकम ॥ धारको वरणं यश्चे मंकस्पो व्रतजापयोः। नान्दीयः इं विवाहादी यादी पादापरिष्क्रिया निमन्यणन्तु वा यादी चारकाः म्यादिति सुति." इति राघः भष्टप्तविषा्वचनात् पाक्षपरिविक्रयेति साम्मेटर्शयाद्वविषय तत्न तस्य तद्दरणम्य यसाधारणाङ्गलात्। सकत्प उत्ती हारोतेन यया 'मनमा ' मकत्ययति वाचाभिनपति कर्मणा चौपपादयति" इति भविष्यपुराणेन च "सङ्गल्पेन विना राजन् यत्किञ्चित् कुरुते नरः। फनचात्पात्यकं तस्य धर्मस्यः देचयो भवेत्"॥ ब्रह्म-पुराणेनापि "याशास्य च ग्रम कार्यमुहिन्य च मनोगतम्"। द्वागस्यपूत्रने उक्त मनोगतं गाम फलम् यागास्य सनमा सङ्ख्या उद्दिश्य वाचा श्रभिलया कार्यां वर्मणा उपपाद्यम्। भविष्ये "शुक्तिशङ्खाञ्मद्यस्तैय कांस्यरूप्यादिभिस्तया। सङ्घर्षो नैव कर्त्यो स्रमयेन कदाचन॥ स्हीतौड्यर पावं वारि पृष्टं गुणान्वितम्। दर्भव्रयं माप्रमूलं फलपुप्यतिनः न्यितम्॥ जनाशयारामकृषे सङ्गले पूर्वदिद्यानः। साधारणे चीत्तरास्य ऐशान्यां निचिपेक्जनम्"॥ धव नेवनस्नानिपेधस् पावा-न्तरसङ्गावविषयग्रहादिमाच्चर्यादेकचस्तपरी वा! "ग्टही-लीड्म्यरं पात्रं वारिपूर्णमुदद्भुषः। उपवामन्तु ग्टस्रीयाद् यद्वा वर्ष्यिव वार्यस् ॥ इति वराष्ट्रपुराष्ट्रिमादिति । अस्य व्रतत्वञ्च गारदीयपूर्वामुपक्षस्य "सष्टावतं सद्धापुर्यं गद्धरादी-वनुद्धितम्। कर्त्तवां सुरराजिन्द्र देवीभक्तिसमन्वितः"॥ इति देत्रीपुराणवचनात्। "व्रती प्रपूजयेदेवीं सप्तस्यादिदिनवये" इति भविष्यपुराणाचा। दुर्गापूजाया वतत्वे व्यक्ते योभागवते

"चैत्रईविष भुञ्जाना कासायसर्चनव्रतम्"। स्कान्दभविष-पुराणयी "शारदो चण्डिकापूजा विविधा परिसीयते। साखिको रालमी चैव तामसी चिति ता मृणु॥ माखिको जपधद्मादीनेवेदीय निरामिषे । माहास्मा भगवत्वाय पुरा पादिषु की सितम्॥ पाठस्तस्य जप प्रीतः पठेइ वौमना प्रिये। राजसो बलिदानेन नैवेदी सामिपैस्तथा ॥ सुरामासा द्याद्वारेर्जपयद्गीर्थना तुथा। विना मन्त्रेस्ताममी स्यात् किरातानाञ्च समाता"॥ शरक्कालीनदुर्गापूजाधिकारे भवि पोत्तरीय "ब्राह्मचे इबिग्वेंग्ये गूद्रेरचेय सबके। एव भानास्त्रेच्छगणे पूज्यते सर्वद्स्यभि"॥ देवीपुराण "स्वय वाष्यत्यतौ वाष पूजरीत् पृजरीत वा"। पूजरीतिलासनेपदा हेतुनिजन्तता रात खय करणासामय यन्यदारा तथाच दश "सय हाम फल यत्तु तदन्येन न जायते। ऋखिक मुत्री गुरुर्स्वाता भागिनेचाऽथ विटपति । पश्चिरेव द्वत यस् तहुत खयमव हि"॥ विटपतिजीमाता एवद्य दर्शवगादौतरत फल न्युनता। इध्योपेपञ्चराते "यर्चकस्य तर्वायोगाद्चेनस्याति शायनात्। शामिरुयाच विष्याना देव मानिध्यसुच्छति"॥ विद्याना प्रतिमानाम्। अक्षायौचादिशङ्कया सोधनादनात् पूर्व गुचि तलालजोविखरूपाधिकाराभावेऽपि यहरणादिक क्रियते तत्कमाकाचि तस्य नारदोक्त स्वय प्रवर्गनवत् प्रवर्शनाय न तु तदानीं प्रतिनिधीयते। भयवा "निचिष्यात्नि खदार्षु परिकलाइसिंज तथा। प्रवसेत् कार्यवान् विपो वृधैव न विर सचित्"॥ इति छन्दोगपरिश्चिष्टोत्तवद्वापि प्रतिनिधो यते एवच वरणं विनापि यदि कचित् खय पवर्तते तथापि तक्तमंसिंदिदिषाच तम् ग्राचिकाले दातछिति। तथाच विवादकरातस्य आकरपान्तिदोषिकासुनारद "ऋत्विक् च विविधो दृष्ट पूर्वेर्नुष्ट स्वय क्षत । यहच्छ्या च य कुर्या दार्त्विच्य प्रौतिपूर्वेकम्"॥ यहच्छ्या स्वेच्छ्या एतत् प्रपश्चित गुहितस्व । भतएव ग्रह्मिखिती "राम्ना पुरोहितोऽमात्व शहस्त्रस्य तदायया" नृपतीनामासाप्रतिनिधीभृत पुरोहित स्तेन त्रपतिरयोचे पुरोहितसागौचाभावात् नृपते शान्तिकः पौष्टिकं पुरोहितेन खीयगुढा। कर्त्तव्यमिति हारनताप्रमुतयः। पूजादिकन्तु गुचिकाले तद्धीपकल्पितद्व्येण कर्त्तव्य
यथा यमः "पूर्वसङ्कल्पितार्थं वा तिकान्नागोनिम्यते"। हात्यचिन्तामणी। "विवानोक्षवयद्योषु ग्रन्तराम्तव्यक्ते। पूर्वमङ्कल्पितं द्व्यं दोयमानं न दूर्थात"॥ स्वय प्रवर्त्तमानाहित्तगदिरनुद्या प्रवर्त्तनात् फलाधिस्थम्। तथा स्मिप्राणम्
"ऋत्विक्षुत्रोऽष्ठवा पद्यो शिष्यो वाधि महोदरः। प्राप्यानुद्याः
विशेषेण जुद्धादा यथाविधि"॥

पुत्रं विशेषयति शुनि: "श्रन्धै: श्रतक्षताद्वीमारेशः प्रय-लतो वर:। पुत्रै: शतहाताहोमारेको हाःत्मकतो वर "। संबक्षरप्रदोपे "माइ।संग्र भगवत्यास पुराणादिषु कोर्त्तिमः। पठें अ मृण्यादापि सर्वकासमस्द्रये"॥ सर्वकासमस्द्रये तत्ता-द्भिनिषित्रिषद्ये। यव यदापि देवीमाहासापाठस्य "सञ्ज्-क्षते क्षतः ग्रास्यार्थः" पति न्यायात् मक्षत्वरणादेव तत्तत् फल-सिद्धिर्शायते तथापि तत्फलबाहुत्याय पुनः पुनः पाठः वेदादी तथादर्भनात् तथाच ब्रह्मबधपायिको मनुः "पठेदा नियताचारिस्त्रवें वेदस्य मंहिताम्। प्रायश्चित्रीविश्टिऽपि वि: पठेदवसपंगम्" इति सम्सतीस्विऽपि "पच्च इयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदग्येकविश्वतिमः। श्विच्छेद पठेडोमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम"॥ अन्दिकेखरपुराणीयेन्द्राचौस्वविऽपि "शत-मावर्त्तयेद् यस्तु मुखते व्याधिबन्धनात्" इति जैमिनिरिप "फलम्य कर्मानिप्यक्तिम्होषां नीकवत् परिमाणतः फनविरीपः स्यात्" इति यथा सी जिककप्रणादीनां वाह्यसेन फलाधिका तथा वैदिकपाठादौनामपोत्यर्थः। "सङ्गल्पित स्तोतपाठे मंख्यां क्षता पठेत् सुधो."। इति वागाहौतन्त्राच दन्द्राकी-स्त्वमग्द्यतीस्तववत् चण्डोपाठस्थावनी फलभूमादिश्वक्रम्। वाराहीतन्त्रे "चग्डोपाठफल देवि। मृण्य गढता मसः। एकाह्यादिगडानां ययावत् कथयामि ते॥ सङ्ख्यापूर्वे सम्पाच्य न्यस्याङ्गेषु सनून् मऋत्। पाठाङ्गानिपदानाच मिहि-माप्नीति मानवः॥ उपमर्गीग्यान्यर्थं विगद्वतं पठेवरः। रहोपशास्यै कर्त्रवं पद्माहत्तं वरानने !॥ सद्माभये सम्त्यके

स्थात्त समुद्रवित्। नवाहताद्वये क्यांन्सर्वात्रवेयफल भवेत्॥ बाजवध्यायभूत्वे च ग्राष्ट्रभारोग्येत्। यशीष्ट्रतात् कास्य भिडिवीरहानिय जायते॥ सन्दाबन्या रिप्यंत्रप्राथा स्तीव ख्रतासियात्। मोच्य पचद्गामुखा व्ययमाप्राति मानव ॥ वानाव्या प्रविधावधानधान्यामम थिट्। राष्ट्री सोतिधिमी॰ साय विपारचाटनाय च । प्रकृत् समदमाइस तथ(ए८ द्यवापिये।। महाप्राचियोच्याय विशाष्ट्रस पठेत सुधी ॥ पञ्चिमावसनान, भवेदभविमोचनम। मद्गरे समगुप्राप्ते दुधिकिसामधे तथा॥ जातिस्त्रमे क्लोस्ड दे प्रायुपो नाम-मागर्त। विविद्धी व्याधिहदी धननाषी तथा स्रये॥ तथैव विविधोत्पाते तथा चैवातिपातके। सुर्घादु यदास् गतादस तत समादाते गुभम् ॥ जियोहाद यताहत्या राज्यहर्दिन्द्रया-परा। सनसा चिन्तित देवि। सिंडोइटोत्तराच्छतात्॥ शतास्त्रमधयद्भाना फनसाप्रीति सुद्रते। सहस्रावर्त्तनाह्यस्त्री-राहणोति खय स्थिया॥ भुक्ता सनीरथान् वासान् नरी मीचमवाप्रयात्। यथाञ्चमध कतुराट् देवानाञ्च यथा हरि॥ स्त्वानामपि पर्वेषा तथा सप्तथाती स्त्व । अथवा वस्नोज्ञेन किमेतन वरानने ।। चण्ड्या अताष्ट्रत्तपाठात् सर्वो सिद्यन्ति मिह्य "॥ पटनश्रवणवत् पाठनश्रावणेऽपि कार्थे "प्रयोज-धिता अनुमन्ता कसा चिति सर्वे सर्मनरकफनभोकारी यो भूग चारभत तिसान फले विशेष " दखापरीनापि प्रह्या-प्रावत्तकनभणप्रयोजकस्यापि फलभुते । श्रव्य पार्टियये भाव-विखे इति प्रयोग । एवं भागतादाविष अताविशेषात् सर्वेषा मेवाधिकार दिलाना पाठयवणयो सूट्स यवण्डिकार । चव काम्यच्य पि सात्तकमीलन प्रतिनाधसमावात् यथायथ परिष्यास कोस्यामि इति सङ्ख्या तै प्रतिनिधीयते। तथाच यधिकरणमानाकनाधवाचार्यध्तपरागरमार्थे शाताश्रप। "योत कर्म स्वय कुर्यादन्यार्रीय सार्नमाचरत्। प्रशक्तो योतमपास कृषादिचारमन्तत "॥ एतहचन काम्पदि प्रातिनाधविधायक नित्यनैमिनिकमात्रपरत्वे तु योतसार्न भेदेनोपादान च्या स्थात्तयोरिविशेपादेव प्रतिनिधिलाभात्। श्रन्ततं उपज्ञमात् परतः। "काम्ये प्रतिनिधिनं स्ति निख-नैमित्तिके डि मः। काम्येष्णक्रमादूर्द्धं केचिदिच्छन्ति सत्तमाः"॥ इत्येकवाकात्वात् ततस्य सार्तं काम्य प्रतिनिधि-नाष्यारस्यते न तु श्रोतमिति स्थितम्।

माद्यात्रिपाठे तु नारायणाय नमः नराय नमः नरोत्तमाय नम: देखे सरखत्ये नम: व्यासाय नम: इति नला पाळां "नारायण नमसात्य नर्घेव नरी-त्तमम्। टेवीं मरस्रतीश्वैव तती जयस्टीरयेत्" इति विधे. भागवतीयस्तीती उदीरयेदित्यस्य खणं तथोदीर-यनचान् पौराणिकानुपशिचयतीति श्रीधरस्वामित्याखान-मनुगामनविरुद्यचैविखत व्यासमिति भागवते पाठात्। चकारेण व्यामी नव्य भागवत तु मग्वती चैवेत्यव मग्बती व्यामिति साचालिखितमः जयपदार्थमाच ब्रह्मचारिकाएडे भविष्यपुराणम् "श्रष्टादशपुराणानि रामस्य चरित तथा। विष्णुधर्मादिशास्ताणि शिवधर्माय भारत । कार्षाच पञ्चमो विदा यमाद्वाभारत स्मृतम्"॥ कार्ण क्रपादैदायनप्रणौतं "मौराद्य धर्मा राजेन्द्र। मानवीक्ता महोपते। अदेति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनोषिषा "॥ जयत्यनेन ससारमिति जय-स्तत्तरुग्रन्थ.। एवञ्चार्थानवनीकनादाचारादादावेष: स्नोकः पैठाते। मत्यमूक्ते वाराष्टीतन्ते च। "जप्ताच प्रणवचादी स्तांत्र वा सहिता पठेत्। ऋन्ते च प्रण्व द्यादिख्वाचादि-प्रत्य ॥ सर्वत्र पाठे विद्वायोऽन्यया विफल भवेत्। शहे-नानचित्तेन परितय प्रयत्नत. ॥ न कार्यासक्तमनसा कार्यं स्तोतस्य वाचनम्। याधारे स्थापियवाच पुस्तक प्रजपेत् सुधौ ॥ इम्त्रस्थापनादेव यसादल्पमल लभेत्। स्वयञ्च लिखित यच क्रतिना निखित न यत्॥ अब्राह्मणेन लिखितं तञ्चापि विफल भवेत्। ऋषिक्षन्दादिकं न्यस्य पठेत् स्तोबं विचल्याः ॥ स्तोत्रे ग दृश्यते यत्र प्रणवन्यासमाचरेत्। सक-ल्पित स्तोवपाठे संख्या कला पठेत् सधी. ॥ अध्यायं प्राध्य विरमेन्न तु मध्ये कदाचन। क्षते विराम मध्ये तु श्रध्यायादिं पठेन्नर."॥

तस्य मार्कण्डेयपुराणीयदेवीमाचात्मापाठसादी ऋपि-धन्दादिकं परेत् तदाया प्रयमचरितस्य "ब्रह्मऋषिमेषा-कानौदेवता गायवी छन्दो नन्दामको रक्तदन्तिकावीजम्मिन-स्तत्वं महाकानौषीत्वयं जपे विनियोगः"। मध्यमचरितस्य। "विषास विमेदानसोदेवता चनुष्ट्यहन्दः शाकभारीशक्ति-र्दुर्गाधीजं स्व्यम्बस्यं सद्दानस्मी प्रौत्वर्धं जपे विनियोगः"। **एत्तरचरितस्य "बद्रऋपि: मरस्वतीदेवता छिण्याक्क्रन्दोभीमा-**श्रक्तिस्रीमरीवीलं वायुम्तस्वं सरस्रतीग्रीत्ययं जपे विनियोगः" नैयतका निकक्षतरी भविष्यपुराणम् "द्तिहासपुराणानि शुला भत्त्य। विगांपते । मुखते मुवैपापेभ्यो ब्रह्महत्यादिभि-विभो ॥ व्राध्मणं वाचकं विद्यावाच्यवर्णजसादरात् । शुलान्य-वर्णजाद्राजन् वाचकात्रस्यं व्रजित्"॥ तथा "देवास्मिग्रतः धला ब्राह्मणामां विगेपतः। यत्यिच शिथिमं कुर्यादाचकः क्षरनन्दन । पुनर्वप्रोत तत्सूतं न सुद्धाः धार्येत् क्षचित्। हिरण्यं रजते गाय तथा कांस्वीपदोहनाः॥ दखा तु वाच-कारोह सुनमाद्राति तत्भलम्"। कांस्रोपहोहनाः सांम्य-फ्रोडा: "धाचक: पुजिती येन प्रसम्रास्तस्य देवता."। तथा "ज्ञाला पर्वसमाप्तिच पृत्रयेत् वाचकं वुषः। आधानमणि विक्रीय य इच्छेत् सफल छातम्"॥ तथा "विस्पष्टमद्वत ज्ञान्तं भटाचरपदं तथा। वानस्वरम्मायुक्तं रसभावसम्बितस् युध्यमानः मदा गुडी ग्रन्थायं कृत्समी नृष । नाम्चणादिषु सर्त्रेषु ग्रन्थायं चार्षयेतृष ॥ य एवं वाचयेद्वद्वान् स विभी धाम उथते"। तथा "मप्तस्यसमायुक्तं कालेकासे विद्यांपत्। प्रदर्शयनुमान् मर्यान् वाचयेदाचको नृष्"॥ देवीपुराणे "इपे भाष्यमित पत्ते कान्याराशिगते रथो। नवस्यां वीधयेहे वी फोडाकोतुषमञ्जले: ॥ च्येष्ठानचवयुक्तायां पश्चां विल्याभि-शन्यगम्। सप्तस्यां मूनस्नायां पविकायाः प्रवेशनम्। यूर्वी-षाटाषुताष्टमां पूजा दोमाशुपोपणम्॥ स्वारण नवस्यालु विभि: पुत्रवेश्विवाम्। अवयोग स्थान्यान् प्रणिपत्य विभ-कंग्रेन्"। पय नवस्यादिकस्य उत्तः। तथा "यावहुकांगु-राकाशं काशं विद्ध गागियहाः। तावश विष्यका गुला भवि-

यति सदा सुवि॥ प्राष्ट्रकाने विश्वेषण श्राध्यिने श्रष्टमीषु च। महायच्दो नवस्यान्तु लोके खातिं गमियति"। श्रनेन महाष्टमौ-महानवमीकलावृत्तौ। सहलोऽपि तद्र्पेण। अव कन्चाराशिगते रवावित्यस्याभिधानं फलाधिक्यायं प्राधि-काभिप्रायं वा न तु नियमार्थम्। तथाले सौराध्विने प्रति-वर्षे क्षण् नवमीमारभ्य शुक्तदशमीं यावत् पूजाक्रमस्यानुप-पत्तेः। त्रव क्षणादित्वादिषु इत्यपि गौण त्राधिनपरम्। श्रतएव कानकी मुद्यादिधृतं "कि कि खर्के हरी सुप्ते शक्रध्वन-कियाध्विने। तुलायां बोधयेहे वी द्विश्विने तु जनादनम्"॥ इति बोधयेटिति षष्ट्यामिनि श्रीपः। श्रवापि नवसीबोधनं कन्यायामेव तथैव मभावात् तेन सिंहार्के कन्यार्के तुनार्के-ऽप्याधिनत्वेन वाक्यरचना सद्घाष्टमौ-सहानवस्योरपि सास-पन्नोन्नेषः। मामपन्नतियोनामिति वचनात् घमायास्या-पौर्णमास्योः पद्मोन्नेखवत् एतेन वार्यादिवत् महा-ष्टम्यादावपि विशिष्टविधिलान मासाद्युनेख इति निर-प्तम् ।

शत कालिकापुराणे नवस्यां बीधनमष्टादशभुजायाः पष्टाां बोधनं दशभुजायाः विश्रीष्याभिधानात्तयैविति वदन्ति तन्न कालिकापुराण एव कामाख्यापञ्चमूर्त्तिप्रकरणे "शरकाले पुरा यस्नात् नवस्यां बोधिता स्रैः। शारदा मा समाख्याता पीठे नोके च नामतः"॥ इल्प्लब्स्य "रूपमस्थाः पुरा प्रोत्तं मिंइस्यं दशबाहुभिः "। तथा "रूपल्ये वं दशभुजं पूर्वीकन्तु विचिन्तयेत्"। इति तथा "पञ्चाननं कामरञ्च दैल्यमपे प्रयूजयेत्"। इति तथा "पञ्चाननं कामरञ्च दैल्यमपे प्रयूजयेत्"। इत्यनेन सिंहमहिषयुक्ताया दशभुजाया श्विष् नवस्यां बोधनस्क्तम्। श्वत्यव नत्नव "दशवण्डेति या सूर्ति-भद्रजानी त्वहं पुनः। यया सूर्त्यां त्वां हिन्यं सा दुर्गिति प्रकोत्ति॥ एतास सूर्त्तिषु सदा यादनग्नो नृषां सदा। पूज्यो भविष्यसि त्वं वे देवानामिष रचसाम्"॥ इल्पनेन कात्यायन्या दुर्गायाः पादनग्नत्वेन महिषासुरस्य पूज्यत्वं पूर्वमुक्तम्। श्वतप्रवाद्यादशभुजायाः पादनग्नत्वं सहिषासुरस्य मुभ्यत्वेति तस्राह्यभुजायाः पादनग्नत्वं स्विष्टासुरस्य

द्राव गरकालकोधनीयलेन गारदापदब्रायत्तेस्तव्यदं ताल-व्यादिसारं ददातीति व्यव्यक्तिम्तु काल्पनिकी।

एवं प्रतिवर्षकर्त्तव्यत्वादाद्रीदि नचत्रासाम्डिप पुला कार्या नच्वयोगस्य फलातिगयाय तथा च लिङ्गपुराणं "सूनाभावेऽधि सप्तस्यां केवलायां प्रवेशयेत्। तथा तिथा-न्तरिष्वेव मृत्तेषु तु फलोच्यः"। देवतः "तिथिनन्तवयोगिंगि द्योरिवानुपालनम्। योगाभावे तिथियाद्याः देव्याः पूजन-कर्माण"। क्षणानवस्यामाद्योगोविधी मन्ते च अयते तथा च मिङ्गप्राणम्। "कान्यायां सप्णविते तु पूज्यित्वार्धमे दिवा। नवस्यां बीधरोहेवीं सङ्घाविभवावस्तरेः"। चतुर्यचरणे गौत-वादिविनिस्नै: इति कालिकापुराणे पाठ:। "इपे मास्य-मिते पचे नवस्यामाद्यीगतः। योष्ठचे बीधयामि लां यादत् पूजां करोग्य हम्। ऐं रावणस्य वधार्याय रामस्या-नुग्रहाय च। अकाले ब्रह्मणा बोधो देखास्वयि हातः पुरा" र्ति मत्तिविद्व । श्रकाल रति तु राविद्येन दिविणायणस्य ॥ तया च न्यति:। "तपस्तपम्यौ शिशिराद्वतु:। सध्य साध-वय यासन्तिकाहतुः। ग्रुक्तय ग्रुचिय ग्रेपाहतुः। त्रयै-तद्वारायणं देवानां दिने नभाय नभम्यय वार्षिकाष्ट्रतुः रूपछ कर्षय भारदाष्ट्रतुः। महाय सहस्यय हैमन्तिकावृतः। भाषितहत्तिणायण देवानां रातिः" दति एवञ्च "राताविव महामाया ब्रह्मणा बोधिता पुरा । तयैव च नराः कुर्धाः प्रति-संवसारं नृष" इति यम्याखितदिषयम्। यतएव लिङ्गपुराणे दिवेत्यतम्। एवस् कालिकापुरागेऽपि बोधने रावाविति-पटं देवता राधिपरम्। ततथ पूर्वास्त्रे नवस्यासाद्रांनस्त्र-युक्ताया बोधनं पूर्वाह्वेतरकाले पार्टामाभे नवस्थामार्ट्से दिवे-त्वब दिवापदात्तवाणि बाधनम् चन्यद्या दिवापद् व्यर्थे म्यादिति। व्येतिपाणिते यातमुत्तं वराष्ट्रेगः "कन्यादिमीन-पर्यान्त यत्र सप्राप्यने शिवः। तत्र बोधः प्रकत्त्रेयो देव्याः राषा गुभपट."। शिव श्राद्धी एवसीभयदिने पूर्वास्त्रे नवसी-नाभे परवाद्विसामे परव बोधनं न सुग्मात् पूर्वेव युग्मवाधक पुर्वासम्य याधकनस्वानुरोधात् दिवानचत्रासामे तु पृक्ति एए नमस्याम् उभयत्र पृवीह्न ताभे तु पूर्विद् न एव युग्गात् श्रत्र कीवननवस्या बोधनविधिने चत्रस्यापि गुणफलत्वाच । "माधि धा फान्गुने वापि भवेदे माधसप्तमो । माकरोति च यत् प्रोत्तां तत् प्रायो हित्तदर्शनात्" इति मौरागसान्याकरोति च वत् पाद्रायोग इत्यस्य प्रायिकत्वेनाभिधान प्रतीयते । तत्यादीरिहत्वोधने मन्त्रान्तरानुपदेशात्तद्युत्तमन्तः प्रणवन्युत्तत्वेतः प्रयुक्तयते । "यन्त्रमधातिरिक्तच्च यच्छिद्र यदयन्त्रियम । यदमिध्यमगुद्धच यात्यामच्च यद्भवेत् । तदोद्धारप्रयुक्तेन सर्वन्चाविकनं भवेत्" । इति योगियाच्चवस्त्रावचनात् ।

पष्टोबोधनेऽप्रेव नवस्यां बोधनासामर्पे तु पंष्ठां सायं बोधन यथा भविष्ये "पष्ठाा विल्वतरी बोध साय सम्यासु कारचेत्" मन्योक्ता वराइमिडिरेण। "बर्डास्तमयात् सन्या व्यक्तीमूला न सारका यावत्"। पष्ठां बोधने तु प्रागुक्त "ऐ रावणस्य बधार्याय" इति "श्रह्मम्याखिने पष्ठां सायाङ्के बोधयास्यतः" इति च पठेत्।

पत्र बोधनामन्त्रणयोः प्रथक्तं तत्प्रकाशकमन्त्र-भेदात् श्रव बोधनमन्त्रावृक्षावेव श्रामन्त्रगमन्त्री तु "मेर्मम्दर-कैलासिक्सविक्खिर गिरी"। इत्वादि प्रागुत्त देवीपुराणे नवमौषष्ठग्रोबीधनामन्त्रणयोः पृथक्ताभिधानाच । ततस पष्ठामुभयकरणेऽपि पत्नौप्रवेश पूर्वदिने सायं पष्ठौलाभे एकदैवोभयकरणम्। यदा तु पूर्वदिन सायं षष्ठोलाभः न पररिने साय पष्ठीलाभः तदा पूर्वेद्यविधनं परिदने सायमा-सन्त्रणम्। यदा तु उभयदिने साय पष्टानाभस्तदा परदिने पूर्वाह्वे पष्ट्रा बोधनं "बोधयेहिल्ब्याखायां पष्ट्रां देवीं फलेपुच। सप्तस्यां विल्वशाखा तामाह्रस्य प्रतिपूजयेत्॥ पुन: पूजां तथाष्टम्यां विशेषेण समाचरेत्। जागरच खयं क्षयोद्दलिदानं सद्दानिश्चि॥ प्रभूतवलिदानञ्च नवस्या विधि-वचरित्। ध्यायेद्शभुजां देवीं दुर्गामन्तेष पूजयेत्॥ विस-र्जनं दग्रम्यान्तु सुर्याद्वै शावरोत्सवै:। धूलिकर्दमविसेपै: कोइकोतुकमङ्गलैः भगलिङ्गाभिधानैय भगलिङ्गप्रगीतकैः"॥ र्तिकालिकापुराणात्। श्वरो स्त्रेच्छः शाखां विशेषयति

जिङ्गपुराणम्। "युरमाभित्राद्य विद्यस्य फलास्यां प्राधितर्गा तथा। तथाच सरमयीं देवीं साखा पूज्य प्रवेशयीत्"॥ एतानि पद्यादिकस्पिधायकानि। पद्यां बीधने तु नच-वानुपदेगात्र तदादरः। ज्येष्ठादरशु ग्रामन्वण एव तवापि विशेषो वस्यते। भामन्वणन्तु पष्टी विना सायमेव। "यशीया देवता: सर्वाः खः कार्यो यश्च कर्मणि। साममावाद्य-येदिहाद्यान्यद्वेति निमित्तकात्॥ ज्ञो भाविनि जगिताहै र प्रवेशि विस्थवासिनी। विल्वपादममध्येति पूजाये सायम-भिवना"॥ इति इयगीर्पपश्चरातीयदेवीकाण्डात्। "ज्येष्ठा-वाष्ययय पष्टी सार्य कालेन चेडवेत्। सायमेव तयापि सात् विस्वशाखाभिमन्त्रणम्॥ पूर्वा पष्ठी सनज्ञां सार्य प्राप्ताप्ति खजीत्। यदा तु पश्चिका पूजा न परेद्युभविषाति। सिविष्टस यत्पूर्वं पविका दिवससात्। तिहिने वरणं साला पर शाखां प्रवेशयेत्"॥ इति साति सागरप्तत मत्यस्ताच ब्रह्माग्डमन्दिकेखरपुरागयोः "पद्मीपविद्यात् पूर्वेद्यः सायाद्धे धिन्यवासिनौम्। चण्डोमामम्बयेदिदान् नाव पष्ठौ पुर-क्किया"। विश्यवासिनीसिखन्न विस्ववासिनीमिति भविष्य-युराणे पाठ: पठिन्ति च। "सायं पछ्यान्तु कर्नेव्यं पार्वेत्याः चिधिश्रामनम्। पष्ठामावैऽपि कर्तव्यं सप्तस्यामपि मानद्रण ॥ द्रति। ये लेतानि वचनान्यनान्नोच्य पदीप्रवैग्राव्यवस्ति-पूर्वदिन एव पष्टामिव विस्वाधिमन्त्रणं तुत्रते तेषां पूर्णपष्टा-नसरं घडोलाभे घटिकान्यम घडोलाभे या तत्परदिने घटिका तद्धिक सप्तमीनाभे वा तद्नुपपत्तेः पूर्वदिवभीयायाः प्रष्ठा-घावरित्रतात् परदिवसौषाषाः कर्मानहेलादिति।

चय मत्रमीपृत्रा। तत्र मत्रम्यां मृत्युक्तायां केवन्तयां या पृत्रिक्ष प्रवीप्रवेशः। समयत्र सप्तमीनाभे प्रत्व। "युगाद्या वपद्विद्य मामी पार्वतीपिया। स्वेत्द्यमीचन्ते न तत्र तिथिपुरमता" । इति देवीपुराणात्। स्वोतिषे "पूर्वास्रो तथ्यत्विका ग्रमकरी मवार्थिनिद्यद्य पारोश्यं धनदा करोति वित्रयं चण्डो प्रयेशे ग्रमा। सध्याद्रो सनपोडनच्यकरो मेयानचीरावद्या सायाद्रो वधवस्थनादिकसन्नं सर्वचतं स्वेद्रा। राज्ञ सप्ताद्धाय विद्यात राष्ट्रं पितका योफलाबा राज्ञ सप्ताद्धाच्य जनस्खमिखल इन्ति मूनान्रोधात्॥ तस्मात् स्योदयस्मा नरपितग्रभदा सप्तमी प्राप्य देवीम्। मृपालो विग्रयेता सकलजनिहता राज्यस्च विद्याय"॥ राज्य-सर्च मूना "पत्नोप्रविग्रन रात्नौ विमर्ग वा करोति य । तस्य राज्यविनाग्य स्थाद्राजा च विकलो भवेत"॥ देव्या रष्ट दिचिणायनीऽपि कर्त्तव्य कल्पतगृप्तदेवीपुराणे प्रतिष्ठाविधा-नेन तिद्धानात्। तथाच "मिष्टपासुरद्व्याध प्रतिष्ठा-दिचिणायने"। तत्नैव "यस्य देवस्य य काल प्रतिष्ठाध्वज-रोपणे। गर्त्तापूर्णिलान्यांचे श्वभदस्तस्य पूजित"॥ यस्य देवस्य प्रतिष्ठाध्वजरोपणे य काल श्वभदस्तस्य गर्तापूर्णिला-न्यासे रह्यारम्भे सकाल पूजित दत्वर्थ। तस्य प्रवेशिऽपि सकान । "ज्येष्ठादितिच्या मयुक्त रह्यारम्भोदितञ्च यत। तस्पर्भ योजयेद्देशमप्रवेशि दैविचन्तक"॥ इति ज्योतिवैचनात् श्राद्ति पुनवस्य।

पित्रका तु "कटकी दाडिमी धार्त्यं हिरद्रा मानक कतु। विल्वोऽमोको जयन्तो च विद्वोया नवपित्रका"॥ विल्वयुग्मन् मुपक्रम्य गवाचतन्त्रे। "वायव्यस्य राचसस्य न ग्रह्वोयात् कदाचन"। व्याह्वतिभिरावाहनमाह मत्यपुराण "विनान्यक तथा दुर्गा वायुमाकाममेव च। चावाहयेद्रमाह्वतिभिरस्यवेवािक्रमारको॥ तिस्मिन्रावाहयेद्देवान् पूर्ववत् पुष्प-त्राष्ट्रके"॥ तिस्मिन् मण्डलादौ।

प्राणप्रातष्ठाविधमाइ कालिकापुराणे "प्रतिमाया कपोली ही सृष्ट्वा दिचिणपाणिना। प्राणप्रतिष्ठा कुर्वीत तस्या देवस्य वा हरे॥ स्रक्षताया प्रतिष्ठाया प्राणाना प्रतिमास घ। यथा पूर्वे तथा भाव खर्णादोना न विश्वाता॥ सन्येपामिप देवाना प्रतिमाखिप पार्थिव। प्राणप्रतिष्ठा कर्त्तव्या तस्या देवत्वसिद्धये॥ वासुदेवस्य वीजिन तिद्वप्योरित्यनेन च। तथै-वाद्वाद्विमन्त्राभ्या प्रतिष्ठामाचरेद्वरे॥ तथैव द्वट्येऽद्वुष्ठं दत्त्वा श्रव्यच्च मन्त्रवित्। एभिर्मन्त्रे प्रतिष्ठान्तु द्वट्येऽपि समाचरत्॥ सस्त्री प्राणा प्रतिष्ठन्तु सस्ते प्राणा चरन्तु च। चसौ देवत्वनं खाये: खाइति यनुरीर धन्॥ चिद्र मतीर द्वान्य स्मान्य समान्य समान्य

पूजामधिक्तत्व बैधायनः "प्रतिसाम्यानेष्यप्रासी घावा-हर्गावमजनवर्जम्" द्रति प्रतिमास्यानेषु स्विरतरप्रतिष्ठितेषु इखर्यः। जमदिनः "देवताप्रतिमां हृष्टा यति हृष्टाप्यद्-क्डिनम्। नमस्कार् न कुर्व्यादाः प्रावश्वित्रीयते नगः"॥ प्राय-रिश्तीमन् ईयतं। कालिवापुराणम्। "दिन्वमागे तु कौवेरी दिक् भिराप्रोतिद्धिनी। तमात्तनाम यासोन: पूजये-श्रिकां मर्गि कीवेरी उत्तरादिक् तकाख उत्तरामुखः। विमुरामारममुश्वे। "स्रात्वा यद्याविधिविधीतकराननाश्चि-राचस्य मस्यगसनास्यरयत्तस्यः। प्रागाननी धनद्दिखदनी-ऽय यापि यदामनी गणपतिच गुरुच नला" इति वायात् प्रामाननोऽधि देवीप्रतिमोपक्रस्य सत्यपुराणम्। "सिन्द्रं माग्रम्य तामां गिर्मि पातयत्। स्मृतिः "मध्मदां घृतं मनो गुग्गुरमगुग्नमा॥ मरनं सिक्षमिषायी द्याकी धूप रचति" । दगाद्वी दगदरितः भैनतं खनामात्रातं सिहायः मोत्मर्थपः। "तुक्ष्यां पश्चिक्षपूरमागरागुराकुद्धः। सुरा-गांमोपितानियां भूषं द्याणापुष्ट्तम्"॥ सुरूषः सिद्धकं पत्य गाँठो यानी ति खाता। सिता यर्करा नागर ग्राकी।
भविष्ये "विल्होने तु दुर्भिद्य गम्बहीने लभाग्यताम्। धूपहोने तथो होग वस्त होने धनं चयम्"॥ प्राप्तयादित ग्रेष।
का लिकापुराणे "लाइल क्रमुक दक्ता इक्क करमर्दकम्।
सोभाग्यमतुल प्राप्य देवो लोके महीयते। परमान्न पिष्टकञ्च
यायक सपरन्तथा॥ मोदक प्रयुकादौनि कन्दुपक्वानि चोत्स्त्रेत्। इवि शाल्योदन दिख्यमान्ययुक्त सगर्वरम्॥ निवेदेवेग्महादेव्यै सर्वाणि व्यञ्जनानि च। चोरादौन्यय गव्यानि
महिषादोनि सर्वग्र ॥ लाइल नारिकेल क्रमुक गुवाकपल
रचक वो जपूरक करमदेक पानोयामनक कन्दुपक्क जलीप
सेक विना केवलपाले यहिकना पक्षा भ्रष्टतग्रह लादि।

"कन्दुपद्यानि तैलीन पायस द्धिमत्तवः। द्विजैरेतानि भोज्यानि शृद्रीहकतान्यपि"। इति कूर्मपुराणदर्शनात् शृद्र वार्म्ववन्दुपक्षादाान देयानि श्रूद्रेतरक्षतान्यपि। "गौकुले कन्दुगानाया तैसयन्त्रस्त्याः। "मभी सास्यानि गीचानि स्तोषु वामातुरपु च" इति शातातववचने मधीमास्यानि गोचागीचभागितया न विचारगौयानि इति भवदेवरताकर यास्यानदर्गनाच । एवस् गङ्गावाकावत्या चैवर्णिकेन सिद्धा-क्रेन नैवेदा देव शूद्रेण दिसगुत्राधारतनच। तद्त वराष्ट्रपुराणे 'विष वर्षेषु कर्तव्य पाक्षभोजनमेव च। गुत्र्यामभिषवाना शुद्राणाच वरानने।"॥ एतचातुर्वस्त्रियाककरण कलीतरपरम्। 'बाह्मवादिष् गृद्य पदातादिकियापि च" द्रायभिधाय। "गतानि नोकगुराय करोरादौ महासभि । निवर्त्ततानि कार्याणि व्यवस्थापृत्रेक वुषै ॥ समयचापि माधुना प्रमान वैदवद्भवेत्"॥ द्रव्यधिकर्णमानाक्षयाधवाचार्य्यप्रतादित्य-पुराणवचनात्। ततय शूदकर्नृकष्टपोसागीदो ब्राह्मणकर्नुक चर्वत् बाद्यणदारा पकावनेवद्यादि शृद्राधि दातुमहित। एवश "चास शूद्रा पकाच पक्षमुच्छिष्टमुच्यतं" इति स्वय पाकविषय योगिमौतन्ते। 'प्रिवागारे सहकञ्च सूर्यागार च गद्भाग दुर्गागारे विश्ववादा सध्रीख न वादयेत्" n भाषक वास्यनिर्मितकरतालम्। मस्यपुराच "गौतवादिल-

निर्घापं देवस्थाये च कारयेत्। विरिच्चेय ग्रहे ढक्षां धण्टां सद्मो गरहे त्यजित्॥ घर्षा भवेदशक्तम्य सर्वयायमयौ यतः। विल्वपव्य माध्यय तमालामलको दलम्। वद्वारं तुलमी चैव पद्मञ्च मुनिपुष्पकम्। एतत् पर्य्युपितं न स्वाद्यचान्यत् कलिकात्मकम्"॥ साध्यं कुन्दं सुनिपुरपं वकपुरपंस्। पुण्य-बुद्या परकीयधर्मकार्यो वितनमग्रह्मन् तत्कार्यः कुर्वन् फल-माप्नोति। "अभिरूपेण सम्पन्नान् घट्टियत्वा विना स्तिम्। धंसकार्धिमिति जाला न रहहाति कथ ह्वन ॥ योऽसी सुवर्ण-कारय दरिष्ट्रीऽप्यथामस्ववान्। न सूख्यमादादेखातः सभार्थ च्छिषंगुतः। सप्तदीपपतिर्जातः स्यांगुतसमप्रभः"॥ इति मत्यपुराणे नौनावतीविश्वाया नवणाचनदाने हेमतर्घटकस्य तद्याविधफनदर्भनात्। कान्तिकापुराखे "महिषन्तु ददहेव्यै भैरव्यै भैरवाय च। अनेनैवतु भन्तेण त विलं परिपूज्ञ चेत्॥ ययावाई भवान् देष्टि यया वष्टसि चिष्डिकाम्। तथा मम रिपून् इंस ग्रमं वह लुनापक"॥ वाहोऽखः। लुलापको मिद्रपः। "यमस्य वाद्यनस्व'हि वास्त्रपथराव्यय। चायु-वित्तयशोदेधिकामराय नमोऽस्तुते''॥ कामरो सिंहपः। "प्रभूतविनदाने तु हो वा त्रीन् वाग्रतः कतान्। पूजरीत प्राडमुखान् कला मवीम्तन्वेण साधकः"॥

विल्दानप्रकारं तत्रैव। भगवानुवाच। "सापियला विलं तत्र पुष्पचन्दनवन्दनेः। पूज्येत् माधको देवीं सूल-सन्तेमुंहुमुंहुः॥ उत्तराभिमुको भूला बिलं पूर्वमुखं तथा। निरोध्य साधकः पथादिमं मन्तमुदीरयेत्॥ नरत्वं बिल-कृषेण सम भाग्यादुपियतः। प्रणमामि ततः मर्वकृषिणं बिल-कृषिणम्॥ चिष्डकाप्रीतिदानेन दातुरापिदनायन। सामुण्डा-बिलक्षाय बले तुम्यं नमोऽस्तु ते॥ यन्नाधं पग्रवः स्ट्टाः ध्यमेव स्वयभवा। श्रतस्त्वां धात्यास्यदा तम्बाद्यस्ते वधीः-प्रवाः॥ पं क्रीं योमिति मन्तेण तं बिल मत्सकृषिणं चिन्त-यन्ता न्यनेत् पुष्पं सूद्धि तस्य तु भैरव। तती देवीं समृहिष्य काममृदिग्य चात्मनः। प्रभिष्ण विलं प्रयात् करवालन्तु प्रयोत्॥ रसना त्वं चिष्डकायाः सुरसोकप्रसापदाः। क्रीं

श्रीं खड़ेति मन्तेण ध्यात्वा खड़ं प्रपूजयेत् ॥ मत्सक्पिणं शिवसक्षिणम् श्रमिषिच घाताभिसापजलेनिति शेष.। ध्यान तत्रैव। "क्रप्ण पिनाकपाणिच कालरात्रिसक्पिणम्। खय रक्षास्यनयन रक्षमास्यानुसेयनम् ॥ रक्षास्यर्धरच्चेव पाशहस्तं कुट्म्बिनम्। पित्रमानञ्च रुधिर भुञ्जान क्रव्य-सहितम्॥ असिविशयणः खद्रस्तौस्णधारो दुरासदः। श्रीगर्भी विजयशैव धर्मपाल। नमीऽस्तु ते॥ इत्यष्टी तव नामानि खयमुक्तानि वेधसा। नचवं क्षतिवा तुभ्य गुर-देवो महेश्वर:॥ हिरखाच गरौरन्ते धाता देवो ननाइ नः। पिता पिताम इसेव लं मां पालय सर्वदा॥ नौलजौ मूत-मङ्गाश्चारिषादङ्गः साश्चीदरः। भावश्रद्धीऽमपंगञ्च ऋतितंज-स्तयैव च। इयं येन ष्टता सौणो इतय महिषासुरः। तौच्याधाराय गुडाय तसौ खडाय ते नमः॥ पूजियित्वा ततः खद्रम् श्रा हीं फिडिति मन्त्रकैं:। रहहीता विमलं खद्रं छिदयेदलिमुत्तमम्॥ ऐं झीं श्रीं कीशिक रुधिरेणायाय-ताम्" इति "स्थाने नियोजयेद्रक्त शिरस भप्रदौपकम्। एव दत्वा विलं पूर्णं फल प्राप्नोति साधकः॥ हीनन्तु स्यादीनताया निष्फल स्यादिपर्ध्ययात्। भन्येयां महिपा-दीनां वन्तीनामय पूजनात्॥ कायोमध्यवमाप्नीति रक्तं ग्रह्माति वै भिवा। श्रन्येभ्याऽपि च देवेभ्यो यदा यद्यत् प्रदीयते॥ तद्शितं प्रद्यात्तु पूजिताय सुराय वै। वांन-दाने तु दुर्गायाः मवत्राय विधिः स्नृत."॥ तथा "छेद्येत्तेन खद्देन विलि पूर्वमुखन्तु तम्। श्रधवीत्तरवक्तन्त खय पूर्व-मुखस्तथा"॥ श्रव सर्वश्रय विधि: स्नात इत्वतिदेशावरे-त्यत्न छागारिक्ह्यः। मन्त्रे घातयामीति युते.॥ "पशु-घातस कर्रायो गवलाजवधस्तथा" इति विधेश देवी घात-यिष्ये इति प्रयोगः कार्यः श्रव स्वकर्तृकद्वननेऽपि घाति-प्रयोगस्रादी इन्सर्थायति पाठात्। एवञ्च प्रसाद्धि स्धिर श्रीपविलिदानमुपपदाते एतत्पकारकविल्दानादेव "महि-पन्त ददहें ये" इत्युपपदाते। वस्यमाण भविष्यपुराणेऽपि वधानन्तर मांसादिदानसुक्तम्। अतएव दुर्गाभिक्तितर-

द्विणोक्षत्यमद्वार्णवधृतेन देवीपुराणेन पग्रघातविनदानयीः पृथक् फनमिसिहतम्। यया देवी ध्यात्वा पुत्रशित्वा चहरावेष्टमोषु च। घातयन्ति पशुन् भक्ता ते भवन्ति सहावला:॥ विलिं ये च पयच्छित्त सर्वभूतिवनाग्रानम्। तेवान्तु तुथाते देवो गावत् करपन्तु गाइरम्"। भवभूतानि विश्तिमधिपादौनि विनाज्यतो यिमान् वली समिणि दौषिनं इन्तीतिवस्। सामादी पगुपरमयोगमास यद्यपार्थः। "उद्दो वा यदि वा भेषण्यामी वा यदि वा ध्यः। पगुम्यानि नियुक्ताना प्रायाद्दा विधोधते"॥ वालिकापुराधि "गोपितं भन्तपुतस्य ग्रीपं पौगूपसुस्यते। तसाम पुनर्न टयाह्ने: शीर्षच शोणितम ॥ सफलैस्रीयमंयुक्तैः शकरामपुमयुक्तैः। श्राम्य विधिर ट्यात् कामवीजित भैरव॥ तती वनीनां मधिर तोयसेस्वमत्कले:। मधुभि: पुष्पगर्नेय अधिवासा प्रयक्षत."॥ इत्यादि वचनात् मधुमैन्धवय्तं काला दयात्। तथा "पूजामु नाम मासानि दयाहै साधकः सिव्ह। परते तु जी हितं भौषेमसृतं तत्तु जायते"॥ चव बहुपगुघातिऽपि यन्त एकवचनान्त एव प्रयोज्यो न वसुवचनोद्याः नरं पञ्चल-साथतिमित्वय नाधा लिङ्गोष्टाभाववत्। त्रतएव बहुपयौकः-यजमानपयोगेरपि पद्धों मन्नद्यति सन्त एकवचनान्त एवे-त्यक्षमिति योदसोपाध्ययिन दृष्टान्तोक्षतम्।

कह प्रकात "तप्रकाशवपूर्वत्वात्" दित कालायनसूत्रेणीद्रप्रतिषेधात् विकाशविद्याद्यां "प्रपूर्वीत्प्रेचणम् कह" दिति
कर्णात्। नवा मन्त्रस्य वाधः वैभिक्तिकार्यापेद्या प्रायपिकत्वेन वनवतः प्रातिपदिकार्यस्य समविशाधितेन विनियोक्यत्वात्। सत्र प्रश्वातपूर्वक रक्त्रभीपयोर्विनित्वम्।
पग्रवातपूर्वक रिधरपोपदानानन्तरं "एवं दस्य विलं पूर्णं
फल प्राप्तित साधकः" दत्युक्तेः "नान्।पाग्रवामकामांसदिधरैः
कृत्वा नवस्यां विलम्" दति राजमान्तग्द्राञ्च। एवस् प्रकृती
नरक्ष्यवद्यायो बहुवचनोद्याभावात् क्षागादी विकातीभृतिऽपि न वहुवचनोद्यः किन्तु एकवचनमाद्यम् एव प्रतिनिधिप्रतादिना क्रियमाणे कर्माचा तथा सम रिपून् दिस

श्रमं वद्द सुलापक" द्रत्यादा्क्त फलं यजमान एव अन्वेति। पां वे काञ्चन यज्ञऋिवज श्राशिपमाश्राप्तते यजमानस्वैव सामाग्रासते इति होवाच" इति श्रुते:। "ऋविकादे नियु-क्षय समी संपरिकोत्ति। यद्गे साम्याप्रयात् पुर्खं दानिं वादे (यवा जयम्" इति वृहस्पतिवचनाञ्च एवञ्च "घायान्तु नः पिनरः" इति वदवाप्यन् इः एवं वाक्येतु कास्पनिके यज-माननामी सेख दति भविष्ये "चनानां महिषाणाच मेपाणाच तयावधात्। प्रीण्येहिधिवदुदूर्गां सांसभीणित तर्पणैः॥ दुर्गाया दर्शनं पुर्णं दर्शनादिभिवन्दनम्॥ वन्दनात् सार्थने श्रेष्ठं स्पर्यनादिभिपूजनम्। पूजनात् सपनं श्रेष्ठं सपनात्त-पेणं स्रतं तर्पणानां सदानन्तु सिंद्यानियातनम् ॥ सिंदियोऽजो वा निपात्यते यिमान् वनौ चर्माण हीपिनं इन्ति इति वत् तथा मांसम् यामं शोधे तदितरत् प्रक्षम् । एकः-घचनात्। तथा 'स्वमेकमेकं वरदा तृप्ता भवति चिण्डिका। किंधिरणोरणस्थेष्ठ तिर्पता विधिवन्नप। यजस्य दशवपरिण क्धिरेण सुतर्पिता। मिडिपेण शतं वीर सप्ता भवति चिण्डिका ॥ सहसं ऋप्तिमाप्नोति खदेहरुधिरेण च। तपिता विधिवह्गाँ भिल्वा बाह्य जड्ड कम्॥ नारेण शिरमा वीर पूजिता विधि-ववृष। द्याभवेद्गगं दुर्गा वर्षाणां नचमेव तु"॥ स्वमेकं संवत्सरं "खमेको वत्सरो यव्यो मासः" इति श्रुतेः उरणस्य मेषस्य तथा "प्रदाने क्षपामारस्य मन्द्रीयं परिकल्पितः। क्षणासार ब्रह्ममूर्ते ब्रह्मतेजो विवर्षन ॥ चतुर्वेदमय प्राप्त प्रजां देशियमो मद्रः"। तथा "वैषावीतन्त्रक्षणोक्षक्रमः मर्वव मबँदा। साधकैविनिदाने तु याष्ट्राः मर्वसुरम्य तु"। एवश्व चामुण्डेत्यव पछिकेत्य्रष्यः ततय चभिमतस्तत् तत् पलकामो दुर्गापौतिकासो वा पग्रघातं कुर्धात् ततो अकस्य द्यवपीव-च्छिय देवो प्रौतिकामनया एप किथर विनिनम इत्युसनेत्। ततः शिरित ज्यनद्यां टल्बाभिकम्य योदगीया दर्गनाभि-यन्दन म्यर्गनाभिपूजनस्रपनतपेणजनित पूर्व पूर्व पुषाधिया पुष्पपाधिकामनया एय स प्रदोपदागगौपविश्विनम द्रित एत स्त्रीत । "बलिदानपदानाई नमस्त्रारो यत: हत:" इति

छन्दीगपरिशिष्टात् पदीयतेऽनेनेति प्रदानं सन्तः। कालि-कापुराणे। "सद्दामाचे जगनातः सर्वकामप्रदायिनि। ददानि देवर्षाधरं प्रसीद वरदा भव ॥ इत्युक्ता सूलमन्त्रेण नतिपूर्व विचचणः। सगातर्धारं ददानानवः पिष्ठप्रिमः"॥ तथा "स्तियं न द्वास् बलि दत्वा नरक्षमाषुयात्। न घ चैमा-सिक न्यूनं पशुंद्धाच्छिवा विन्म्॥ न च विषक्षिकन्यूनं प्रदर्शा है पति विणम्। काणव्यङ्गादिदुष्टं वै न पशुं न पत-चिषम्॥ किननाइनकर्षादिं भगनगृङ्गादिकं तथा। कुषाग्ड मिचुदण्डञ्च मद्यमास्य एव च॥ एते बलिसमाः प्रोक्तास्त्रशो छागसमाः साताः। चन्द्रशसिन कष्टारेण्छेदनं मुख्यमियाते॥ इस्तेन च्छेदयेद्यस्तु साधकः प्रोचितं पश्रम्। पत्तिणं वापि राजेन्द्र बद्धाहत्यामवाषुयात्"॥ सत्यध्तो "छेटयेनी एए-खड़ेन प्रहारेण सक्षद्धः"। याद्मावस्कादीपकलिकायां व्रह्मपुराणं "नराष्ट्रमधी सदाच काली वच्चा दिज्ञातिभिः" निषेषं सष्ट्यत्युशनाः। "मदामपेयसदेयमनिष्णिद्यम्" इति। व्यनिष्णिद्यमस्त्रीकार्यमिति वस्त्रततः। कास्त्रिकापुराषेऽपि ''खगावर्धिर देखा श्रातास्यामवाष्यात्। सदां देखा वाद्यणस्य वाद्यादेव शौयते॥ न संप्यसार्शितरे विनिन्तु चिवियादय:। इदतः क्षणभारच ब्रह्महत्वामवापुयु,"। यती मदापतिनिधि दानमपायुक्तम्।

यय वैषि सिविचारः। "मा हिस्यात् मर्वाभूतानि" मुलत सर्वे प्रव्स्य व्यापकार्यपरत्या एति विभिन्न स्वाः। "वायव्य खेतमालमेत"। मर्वाणि छन्दि विभिन्न प्राः विषाति कि विषयं स्वाः सर्वाणि छन्दि सिवेश्वेणयाप्राप्तिराखाः वैषाति रिक्त विषयत्वं सर्वाः सर्वाणि छन्दि सिवेश्वेन तत् पदः सिद्धम्। यदि नानाद गंनटी काल द्विषयात् सियः। तत्वः की सुद्धाम् अभिन्तिः न च "मा हिस्यात् सर्वे भूतानि" पति मामान्यकार्त्यः विभिन्न स्वाने पत्रमानमेतः विशेषामावात् विशेषे हि बन्नोः यसा दुवेलं वाध्यते। न च अस्ति विशेषः भिवविषयत्वात्। तथा दुवेलं वाध्यते। न च अस्ति विशेषः भिवविषयत्वात्। तथा हि मा हिस्यादिति निषेषेन हिसाया अनिष्टं नेत्रमावी न्राष्यते न पुनश्कत्वयं स्वम्याः। न च अनिर्यहेत् त्व क्रत्यकार्यः।

रकलयोः वासिद्स्ति विरोधः। हिसा हि पुरुषस्य दोयमा-वच्चति क्रतीयोपकरियतीत्यत्तीन तद्पि सांख्यनवे। मोमां-सकमते तु विरोध एव तथा दि गुरुनये न खलु सर्वभूतिहिमा-भावविषयकं कार्यम् द्रति निषेधविध्ययस्य वाध विना ष्रानोषोमीयपञ्चालभानविषयकं कार्यमिति भावविध्ययं खपपद्यते। सहगरीतु चङ्गे यथा तथास्त्। न च सुख्यपरा-यागे पुरुषायपश्चिमस्यार्यमाधनत्वभनर्यमाधनत्वद्योपप-द्यते विरोधात्। वस्तुतस्तु चङ्गेऽपि विरोधीऽस्थेव कुतो विधेरेप स्त्रभावी यः स्वविषयस्य साचात् परम्परया वा पुर्-यार्थंसाधनत्वमवगमयति अन्ययाऽङ्गानां प्रधानीयकारकत्व-मपि नाष्ट्रीक्रियेत। अर्थसाधनत्वं बनबद्निष्टाननुबन्धेष्ट-माधनत्व प्रनर्थमाधनत्वं चनवद्दिष्टमाधनत्वं न पानयोर-कत्र समाविश इति। अत्रविक्षं "तस्माद्यन्ने वधोऽवधः" द्ति। ननु एव "श्येनेनाभिचरम् यजेत्" द्रत्यव श्येनस्य श्व-वधरूपेष्टमाधनत्वमयगतम् "श्रभिचारो सूनकर्म च" इति सनुना उपपातकगणसध्ये पाठाद्निष्टमाधनत्वसवगतम्। तदे तत् कथम्पपद्यतामिति चेनोवं "भाततायिनमायानां इन्या-देवाविचारयन्" इत्येकवाकातया आततायिस्यले इष्टमाध-नत्वं श्रनाततायिखले तु उपपातकत्वेन वसवदनिष्टसाधनत्व-मिलाविरोध इति गुरुचरणा भ्रष्येवम् । देवोपुराणे "पूर्वापादा-युताष्ट्रम्यां" दत्यव पूर्वापाटायाम्पटाभिधानात्। "कन्यासंखे बवावोपे शुक्काष्टम्यां प्रपूजयेत्। सोपवामी निप्राईं तु सहा-विभवविद्धरेः॥ पूजां समारभेद्या नच्चे वारुकेपि या। पगुचातः प्रकल्यो गवनाजवधस्त्या॥" इति पुनर्देवीपुगा-गावचने वास्गापदेन वस्गादेवत जलं पुनरण्पायधेन तहे-वतपूर्वापाठोत्यते। न तुत्रोदसहरिनायविद्यावासम्पतिमि-योज्ञा शतिभया तदप्रयां तस्या चनामात् तयात्वे तदनन्तर-पौर्णमास्यां गोभिसोत्तस्यां चन्द्रममीः सप्तमराग्यवस्थानकप नियमभद्रापत्ते। तथा च गोभिनः। "स्याचित्रममोर्यः परो विप्रकर्पः सा पौर्णमामो" इति। सत्यस्वाकरे त "नसन्ने वार्केडिप वा" दत्यव पुनर्देवोपुराके "रचर्च वास्मिडीप वाण

द्ति पाठ व्याखातस्य रचर्चं मूनानस्रते वारिमे पूर्वाबाद्धा-नस्रते दति मोपदास. प्रारम्भोपवासः। स्नावसनेऽष्टम्बां पश्चातस्रते. "श्रष्टस्या न्विरेमेश्तिमहामासेः स्गिनिकापुरा-पूज्येदहुलातीयैर्विसिभीजिने जिवाम्"॥ दति कान्किषपुरा-णासः। "श्रष्टस्या बनिटानन पुत्रनाशो भवेत् भूषम्" दति देवीपुराणीयम्। सम्बद्धाविस्तदानपरम्। तत्वपुत्राया स्मान्यतिष्ठकर्शव्यक्षेत्र तद्दिस्तामस्य स्वयस्या सावकायवात्।

तत्पूजाविधायसन्तु कालिकापुराणवचनात्तरम्। "भष्ट-मीनवधीसभी खतीया कन्नु कथति। तस पूज्या लह मुझ योशिकोगणसयुता"॥ ज्योतिषे "पष्टस्या सन्धियोगे सकाल-परिजनै, पूजयेत् सलभावे," कामरूपोयनिवन्धे स्नृतिमागरे च। "मप्टमा, शेषरण्ड्य नवस्या पूर्व एव च। अत्र था क्रियते पूना विद्योग सा सहापत्ता"॥ सत्त्रभूतेऽपि "श्रष्ट-मीनवर्मायोगी राविभागे विशिष्यते। पर्दरावे स्थागुणं मन्याया विगुष भवेत्"॥ प्राधिकारे। "प्रश्मीनव-मीयुक्ता नवमी चाष्टमीयुता। चहेनारोखरपाया छमा-माईऋरो तिथि."॥ इति विष्णुधर्मित्तरीयमध्येतिहथय न सु महानयमोपूजापरम्। तसा यष्टम्यवासपरदिनविधानेन सप्तमीयद्युगमानाद्रात्॥ तद्या विकासमेभिरे। "सद्कार्शी पटे कत्या तय सप्येद्दिन। पाणिन शुक्तपचस्य चाष्ट्रस्या प्रयतस्तत ॥ इत्यादाशिषाय। "इवीविती हितीरेशक्रि पूजरीत् पुनरेत्र ताम्"। तय तद्यंक स्पितारही। पट इति प्रनाधारोपमधणम्। क्रायतस्वार्णवे राजमार्शण्डः। "सूलेन प्रतिपूज्येद्रगवर्ती चग्डी पचर्डास्तिच्छिम्यामुपवासमयत-धिया भत्या समाराध्य च। नानापागुकमस्त्रमासक्धिरैः क्ता नदम्या अलि नदाव अवर्ष तियिश्व दगर्भी समाध्य सहि-पर्यत्" । धिर्मेखद कर्मति कात्वायनीय. पाठ । दुर्गा-भिक्तिनरद्विष्याम्। "सून प्राध्य प्रयमचर्णे।भ्यञ्चन चरिद्ध-काया क्लाप्टम्यामशनर्वितस्यक्तनिद्ध पूजाम्। मात-कासे पग्रद्यितिथि सामदान् नवस्या निर्माणय ग्रदण-रमभी द्वास्थ्यं द्वायात् ॥ सिक्के खरपुराणे। "सम्-

षस्याः प्रविगादिविमर्गान्तास्य याः क्रियाः । तिषावुद्यगामिन्यां सर्वास्ताः कारयेषु धः"॥ तया चक्रनारायण्यां क्रियायोगी-पसवादेच। "यरत्वालि महापूत्रा क्रियते या च वार्षिको। सार्कार्योद्यगामिन्यां न तत्र तिथिय्गमता" ॥ एतद्वचनं दुर्गोभिक्तिप्रकाश्चि पुराणीयमिति कत्वा निखितम्। प्रवीदय-कानौनवटिकामात्रतिष्यादी सम्यक् पूजनासामर्थे कानिका-पुराणम्। "सम्बक्कस्पोदितां पूजां यदि कर्तुं न शक्यते। उपचारांस्तवा दातुं पश्चेतान् वितरेत्तदा॥ नन्धपृथ्यञ्च भूपच दौपं नैवेदामेव च। चमावे पुष्पतोयाभ्यां तदमावे तु भिक्ततः। संदीपपूजा किचिता तया वस्त्रादिकं पुनः"। मवस्यां बलेरावञ्चकत्वात् बलिद्रीतखः । दाचिणात्यकाल-निर्णयप्तमिबचीत्ररीयम्॥ षष्टमौनवमौपूत्रा दिनभेदाय प्रातःप्राति विषाञ्चतः। यदा प्रातरावाष्ट्रयेहे वी प्रातरेष प्रवेगयत्। प्रातःप्रातव संपूज्य प्रातरेव विमर्भयेत्"॥ एतानि सप्तम्यादिकस्पविधायकानि। चव प्रातःपदं पूर्वोक्रपरम्। "पूराष्ट्रे नवपत्रिका ग्रमकरी" इत्यादिपागुर्केकवाकातात् पत-एव घ्यासः। "वेदार्थो यः स्वयं जातस्ववाजानं भवेद् यदि। ऋषिभिनियितेतव का श्रद्धा म्यामानोषिषाम्"॥ तिथिहिद्य-यादेव कि विव तथा यथा भविष्ये। "व्रतौ प्रपूजयेहे वीं सप्त-म्यादिदिनवर्षे। दाभ्यां चतुरद्रोभिर्वा द्वासहदिवसासियेः" ॥ न चास्र पष्टाई विस्रजेस्क्रक्तं तदर्देन तु पार्वतीम्। न्यना-धिकं न कर्त्तव्यं राज्ञा राष्ट्रधनचयात्"। इति भिष्नपुरायोयेन विरोध इति वाच्यम्। पूर्ववचने पूजयेदित्यसत्वात् पूजानुरी-धेन न्युनाधिकदिनावस्थितिप्रतिपादनात् परवधनस्य तु विस्त्रेदिख्नालात् विमर्जन एव व्याहपूजने कतेऽपि नवमी-युत दगम्या अववानुरोधेन स्मत्वप्रमह्यो यच वा नवसीपष्टि-दण्डासिका सत्परदिने च नवमी सत्परदिने एकाद्रग्राह द्रामो तबोदयानुरोधाद्धिकत्वपमत्रो च निपेधकत्वात् न त सप्तम्यः: पर्छद्गडात्मिकायाः परदिने वृद्घाविष पूर्वदिने निषे-धकत्वम्। "पादिखोदयवेभाषा पारम्य षष्टि नाहिकाः। तिथिम् मारि ग्रहा स्थात् सार्वतिथ्यो द्वायं विधिः"। इति

काल माधवीयधृतनारदीयात्। मा हि गुद्दा रोत्र गुद्धा नान्ये-खर्यः। "प्रकर्षाग्यं तिधिमनम्" इत्यन्नाखाञ्च। अत्रण्य नचवानुरोघाऽघि नास्ति तस्य गुणफनत्वेन प्रधानानुद्यायि-त्वात्। ततय सप्तमोपुज्ञावनाहाष्ट्रम्यादिकत्यमपि पष्टि-दण्डातिकायामेव न तु परदिवसीय फाण्डतियी किन्तु पूर्वोत्रसम्यनुरोधाविगादाविव खग्इतियाविप मन्धि-पूर्विति। एवच याधान् दिने महाप्रमोपुषा निमान् दिन एव उपवासः। न तु सस्धिपूजादिन श्रष्टमौत्वेनोपवामविधः पूर्वमुत्रत्वात् पत्नैव पुत्रवतो स्टब्स्यम्य निषेधः सथा कालिका-पुराचम्। "उपवासं सहाष्ट्रस्यां पुत्रवाक समाचरत्"। अथेदं पूजाद्वीपवासातिशिक्षारम् अन्वया प्रधानस्थानिर्वा-ष्टापसे: इति केचित् तिचित्व "यया तथैव पूतात्मा वती देवीं प्रपूजरोत्" इत्युत्तराईन पुववत एइ उपवासेतर्इविधादिना पूतात्मनः पूजाविधानात्। तया च सस्वसूत्रो । "अयवाधा-युजे श्रक्षपचमाषाद्य नन्दिकाम्। समारभ्य ततो दुर्गा इवियाशी जितेन्द्रिय."॥ इति नन्दिकां पष्टीं जितेन्द्रियो निष्ठत्रमेषुनादिः। अत्र पुत्रवतः पूत्राङ्गमद्दाष्टमीनिमित्त-कोपवामनिषेधात्र। एमोमात्र निमित्तकोपवासनिषेधः इति सवसारादाध्यगमपि माधु सगक्छते। एवख पूर्णाष्टम्य।स-ष्टमीपूजा तत् परदिने चष्टमीनवस्योः सन्धिपुजा तत्परदिने महानवमोपूजा प्रागुलनन्दिकेश्वरपुराणाधुलाष्ट्रयगामितिथा-नुरोधात् तत्मरदिनं दशस्यां विसर्जनं पूजानुरोधेनाधिक दिनलाभाव्।

मधानवमीपूजाकलामाइ सविष्यपुराणम्। "लक्षाभिन् पेका वरदा ग्रुले चाखगुजस्य च। तस्त्रास्ता तनसंपूज्या नवस्त्रान् खरिष्ठका बुधैः"॥ बीवनाष्टमो केवलनवमीकलाबाइ कालिकापुराणम्। "यस्त्र कस्त्रामयाष्ट्रस्यां नवस्त्रां वाय संधिकः। पूजयेद्दर्शं देवीं सर्वकामफलप्रद्राम्"॥ इति, सर्वन घटिकाव्यापिनौ तिथियाद्या। "वृतीपवासस्तानादो धटिकेका यदा भवेत्। तामेव तिथिमाश्रित्य कुर्यात् क्रमोख्यतन्त्रतः"। इति व्यासीक्षनियमश्रते.। एवध्

घटिकोनदेशस्यामपराजितापूजानईत्वात् तत् पूजनं पूर्वदिने। भतएव तत्परमेवेदम्। "याभिवने ग्रक्तपन्नस्य दशम्यां पूजयेत् तथा। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनश्चापराजितम्॥ रूति शिवरहस्रोत्तैकादशौयुत्तदशमीनिपेधकवचनम्। ततस्य तत् पूर्वक्षत्यं देवोविसर्जनमपि तदैव तदन्तापकर्ष न्यायात् वाचस्पतिसियोऽप्येवम्। श्रव घटिकापदं सुदुर्त्तपरम्। "घटि-कैकात्वमावास्याप्रतिपत्सु नचेत् तदा। सर्वे तदासुरं दानं दैवे कर्मणि चीदितं सुहर्त्तमप्यमावास्या प्रतिपत्सु यदा भवेत्। तद्दानमुत्तमं दैव श्रेषं पूर्वं हि पूर्ववत्। इति राज-सार्त्तग्डध्तजावालवचनयोर्घटिकास्हर्तयोरकार्यतात् श्रेपं तिष्यन्तर पूर्वे पूर्वेक्ष घटिकान्यूनं पूर्ववदासुरं घटिकाधिक-श्वीत्तमम्। एवश्व यदा हि तिथिश्चयवर्यात् पष्टीयुक्तसप्तस्यां पत्नी प्रविधनं नवमीयुक्तदशस्यां विसर्जन तदा चरलनाप्राप्ती पूर्वाह्ने नवपितकेलादिभिविभिषतो विहितस्य दैवकर्मलेन शुख्तस्य च पूर्वाह्मस्यावाधाय हिश्यक एव चरनवांग्रे तद्भर्य कार्थ्यम्। "चरलग्ने चरांग्रे वा देव्या नियतमानसः। प्रति-संबक्षरं कुर्यात् स्थापनञ्च विमर्जनम् ॥ इति देवीपुरा-णात्। "राज्ञी विनाधिमच्छेत् स्थिरसमे धिवार्चिता द्रति निन्दा तु चरां शितरपरा चरलग्नसभावपरा वा। श्रवाशस्या-धनुरादी कार्य्यं प्रागुक्षेन पत्नो प्रवेशनसित्यनेन राविपर्यादा-मात्तदितरत्वेन तस्यापि प्राप्तेः। "सध्याङ्गे जन पौडन चय-करी" इति निन्दर्धि रात्नीतरत्वेन री द्विणपूर्वेकुतपप्रसृतिषु षापराह्मित्राइसलेऽपि रीहिणन्तु न लहुयेदितिवदपाय-स्यपशा ।

भष्टस्युषवासफल्च देवीपुराणम्। "एकादगी कोटि-सप्तसुत्वा कृषाष्टमीपर्वतराजपुत्राः। ततोऽपि शक्ता-गुणिता धतेन पराधरव्यासविष्यप्तमुख्येः"॥ कालमाधवीचे निर्गमः। "शक्तपचेऽप्टमी चैव शक्तपचे चतुर्दगी। पूर्वविद्वा न कर्तव्या कर्त्तव्या परसयुता॥ उपवासादिकार्योषु एप धर्मः सनातनः"। स्कान्दे "घष्टमी नवमीमिया कर्तव्या भूति-मिच्छता"। श्रव भूतिमिति यवणात् प्रवादेखदन्त.पातात् 'पुत्रादिकामनयाण्यपदासस्य व्यवहारः। सविष्ये "ग्राह्मपत्तेष तथाष्टस्याम्पवामपरायणः। सालतोक्तरवीरण विकापतेष 'पूज्येत्॥ दुर्गति नाम जमव्यं पुरतोऽष्टगतां नृष्।। सबैमङ्ग-लनामति जमव्यं किन भारत"।॥ ननु चष्टस्युपवामे मानेन पारजविधानात् पिर्यमरणादावित तत् प्रमञ्चेतः। तथा देवीपुराणम्। "ग्रष्टमीं ममुणियेव नवस्यामपरेऽप्तनि। सत्यमांसोपहारेण द्वान्त्रेविद्यमृत्तमम् ॥ तेनेव विधनात्रन्तुः 'स्वयं भुज्जीत नान्यथा"॥ स्वियास्तु "ये लिए वे पुरुषाः पुरुष-मेचेन यजन्ते याद्य स्तियो नृष्णम् व्यादन्ति तास्य तास्य ते पगव इष्ट निष्ठता यमसदने यात्रयन्तोः रच्लोगणाः मैनिकाः इव स्वधितिनावदायास्त्रक् पिवन्तिः" इति स्वभागवतपञ्चम-स्त्रस्यास्त्रेन पग्रमोनमजणिन्दया न तेन पारण किन्तु मत्-स्त्रस्यास्त्रेन पग्रमोनमजणिन्दया न तेन पारण किन्तु मत्-

तैवा पश्ना प्राच्यारण्यभेदमाइ पैठीनिमः। "प्राच्यारण्याः शतुर्द्यगोरिवरजोऽग्वोऽग्वतः। गर्दभी मन्यायित मन्यास्याः प्राचः। महिष्वागर प्रतः मरीकृपगत्रप्रवत् स्थायित सन्यास्याः प्राचः। महिष्वागर प्रतः मरीकृपगत्रप्रवतः। एवच मनुष्यपाः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः प्राचः। प्राचः।

उचते। "विधिरव्यक्तमप्राप्ती नियमः पाचित्रे पति। नय चान्यव च प्राप्तो परिमण्येति गोयते"। पाचित्रे रागतः पन्नतः प्राप्ती रागाभाषात् पन्नतोऽप्राप्तावेव तत्व प्राष्ट्यये नियमविधः। नत् वैधनिविधेन चप्राप्तेति। प्रायसिन्त-विदेशकता मते तु "मस्यास्तु कामतो ज्ञाद्वा सोपवासस्तरम् वर्मत्" रति याचाञ्चाराद्वातायित्तयविन कामतो सामः भवनाम निविधसः 'प्रापात्यचे तथा साहे प्रोचितं दिल-वास्यया। देशन् पितृत् समस्यक् स्वादन् सांसं न दोषसाक्"

इति तेनैव प्रतिपसूतस्य रविवारादौ निपेध इति सुतरामष्ट-स्युपवासपारगोऽपि रविवारादौ मांसनिषेधः। एव मांसामन-त्यागक्ततियमेन नियोगादिष्विष मांमं वर्जनीयमा है प्राय-शित्तविवेके यमः। "भन्नयेत् प्रोन्तित मास मकत् ब्राह्मण-काम्यया। देवे नियुक्त याहे वा नियमे तु विवर्जयेत्"॥ पूर्वीतवचनम्य मत्यमांमीपहारेण नैवेद्यं दस्वैव भोजनं कार्यं नत् भदत्त्वे त्यर्यः मन्यया मृनभूतश्रुतौ वाक्भेदः स्यात् र्नेवैद्याविशिष्टमांमादेराहृत्यापत्तेयेति। प्रीतितं यज्ञार्थं मन्दैः संस्कृतम् चारण्यानामिदानोन्तनप्रोचणाद्यपेदा नास्तौति। यया सन्नाभारते। "भारखाः मबदेवत्याः प्रोचिताः मर्वश्रो सृगाः। त्रगस्येन पुरा राजन् सृगया येन पून्यते"॥ त्रव प्रमाणान्तराप्राप्तवेन "पशुना यजेत" इत्यत्नैकत्ववदिधेय-विशिषणत्वेन चरण्यारे पुंस्वं विविचितम चतण्य हरिवगेऽपि "श्रवध्याञ्च स्त्रिय प्राहु स्तिर्ध्यग्योनिगतेष्वपि"। ततस हरि-खादीनामप्रीचितत्वेनामचात्वम्। यत्तु ब्रह्मपुराणे। "पशोस्तु सार्थमाणस्य न मांम ग्राइयेत् क्वचित्। प्रमास गर्भेगयां गुष्कमांममद्यापिवा" इति गर्भग्रया निषेधन तसारस्वया मध्यायारी बोध तनस्तु "नियुक्तस्तु यथा न्याय यो मांम नात्ति मानवः। सप्रेत्व पशुता याति सक्षवानेकविश्रतिम"॥ इति मनुवचनं तत्कानौनानिधिद्यमांमभ्यिषयम्। प्रेत्वेत्वव्ययं परलोके इत्यर्थः । तथा च अमरः "प्रेत्याम्व भवान्तरे" इति । तथा च सद्दाभारते। "रोगान्तांऽभ्यधितो वापि यो भांमं-नात्त्वनोलपः। फन प्राप्नोत्वयह्नेन मोऽखमध्यतस्य च"॥ मांमत्यागोपदेशेऽपि तत् फलभा इ नन्दिके खरपुराणे। "यसो-पदेश कुर्तते परस्य तु महातानः। मांमस्य वर्जनफल् सो मांमादणल समेत्"। श्रतो रविवारादौ मत्यमांमाशन विनापि श्रष्ट्रस्यवासपारणसिंहिः। स्क्राश्चिष्टेच्यायामावाहन विनेव १

रिवारे यामिषानिषेषो भविष्ये। "श्रामिष रक्षशाकञ्च यो भुड्के च रवेदिने। सप्तजना भवेत् क्षष्ठो दिरद्रद्योप-जायते॥ तसात् सर्वप्रयक्षेन एकभक्ष रवेदिने। क्षुर्या-नक्षं द्विष्यं वा रोगयुक्षोऽन्यया भवेत्"॥ स्मति:। "माप- मामिषमां मञ्च मस्रं निम्बमाईकम्। भचयेद् यो रवेर्वारे सप्तजनान्यपुत्रकः"॥

स्ताशिष्टेन्याधिकरणद्य । स्तास्य खद्राकारकाष्ट्रस्य भक्तास्थिवित्तिस्तिके न्यायामिष्टिलेन प्रकृतिस्विद्यक्तिरित्यिति देशेन दश्रीक्षकप्रकृतिधर्माणां प्राप्ती पूर्वदिन्यातःकानीः द्रिने द्र्याक्षकप्रकृतिधर्माणां प्राप्ती पूर्वदिन्यातःकानीः द्रिनेय देवतावाद्यम्यपि प्राप्तं तद्य तद्यानी न विधीयते निर्मित्तिके निर्मित्तिस्यवतोऽधिकारित्या प्रकृते खोभावि भक्तास्थिक्पनिमित्तसंययेन प्रधानानिधिकारिणोऽद्रानिधिकारात् तद्यकारिणोऽद्रानिधिकारात् तद्यकारिणोऽद्रानिधिकारात् तद्यकारिणोऽद्रानिधिकारात् तद्यकारिणाया प्रावादनं विनेवानुष्टानिमिति । प्रध तत्र पूर्वदिनप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकाननैहत्यदिनिप्रातःकानिययाद्यस्ति तथा प्रकृति त्यविष्ठात्य तथाविष्ठात्यस्य तथापि वयानिष्ठमास्यभेजनपुद्यस्य तथान्त्रवेगुल्यान्त तदिङ्गिल्यमिल्यवेपस्यम्।

मधिकारण च"विषयो विशयसैव पूर्वपचान्तयोत्तरम्। निर्ण-यसंति पञ्चाङ्गं आस्तेऽधिकरणं सातम् । विषयो विचाराङ्गं वाक्यम्। विश्वयोऽस्यायमधी नवेति संश्वयः। पृवेपचः प्रक्ष-तार्यविरोधितकीपन्यामः। उत्तरं मिद्यान्तानुकृत तकीपन्यामः। निष्यः महावाक्यार्थतात्पर्थं निश्यः। एवं क्रमण विवेचन-मवाधिक्रियते द्रस्यधिकरणिमिति। कालिकापुराणे "कन्याः-संस्थे रवा वीपे या शका तिधिरष्टमी। तस्यां राह्यी-पूजि-तथा महाविभवविस्तरै:॥ गवस्यां विनिदानन्तु कर्तव्यं वै यथाविधि। जपं स्रोमच विधिवत् कुर्धात् तत् विभूतरी"। चव नवस्यां होसयुते: "पूर्वाचाढायुताहस्यां पूजाहोसादा-पोषणम्" इति शुतियोभयवैकतरस्मिन् वा होमः। अव होते विधिते तदब्दात् पूर्णपावादिका प्रशग्दिका प्रद्विषादु-पचारान्तर्गतदानि दक्तिणादानवत्। तथा च मत्यपुराणं "देवे द्रवा तु द्रागानि देवे दत्वा च द्विणाम्। तत् सर्व आहाणे द्वाद्यायां निषालं भवेत्"॥ द्वात्वित्यत्र देया-नीति वाराहोतन्ते पाठः अतएव ब्रह्मपुराणे विष्णुत्यापनीय-

पृजने साष्टम्कां यथा। "सुरान् संपूजयेद्वत्या सुमनोभिय कुड्नमे:। दोपैर्धूपैय नैवेदो पायमन च भूरिया। माच-यात्रपदानैय होमै: पुर्णे सदिचिणै."।

पूजाजपद्योगमन्त्रस्तु देवौपुराणे "पूजये जिनद्योगस्तु दिध-चौर प्रतादिभि."। कुर्याहे चास्त मस्तेण दत्यभिधाय "जयन्तो सङ्गलाका सद्रकाली कपानिनी। दुर्गा शिवा चमा धाती खादा खधा नमोऽस्तुते॥ अनेनैवतु मन्वेण जपहोमी तुकारचेत्" एव "पुरश्वरणकार्छेषु विस्वपनैयुतै-स्तिलै:। साचतै: सष्टतैर्वापि शिवासुद्दिया भक्तितः। जुड्-यादनसम्बद्ध सस्तरं काममुद्दये प्रति कासिकापुराणात् श्रवापि विस्वपत्र प्रतोपयोगिर्तति श्रव दुर्गाभितिराङ्गिस्या स्वधा पूजानन्तर स्वाधा पूजालिखनात् स्वाधान्तपाठ निणय द्ति तस्र मत्यमूत्र विरोधात्। तथा च "पञ्चोपचारै विधि-वळायन्याद्यास्ततः परम्। जयन्तो मङ्गलाकालौ भद्रकालौ कपालिनौ॥ दुर्गा चमा शिवा धावौ पूजनौया प्रयस्तः। दत्तपार्खें ततोदेव्याः खाहार्षेव खधान्तथा"॥ इति। न च ' त्रवापि तथा क्रमः। तथाले पञ्चमाचरस्य नघुलानुपपते । दुर्गीमाश्वासमान्तर्गतार्गलाया तथा पाठ दर्शनात् प्राचीन यस्ये तथा दर्शनाच। पूजाया द्वीमिति चतुरचरमधाह कालिकापुराणम्। "चतुरचरमन्त्रण पादादौनय पोडय। वितरेद्वचाराय पूर्वप्रोक्षास्तु भैरव"। तदनन्तर प्रगवादि-नमोन्त देवता नामोचारणमाचानिषुराणम्। "ति क्षिङ्गैः पूज्येनान्तेः सर्वदेवान् समाहित । ध्यात्वा प्रणवपूर्वन्तु तन्नामा समाहित.। नमस्कारेण प्रपादि विन्यसेत् प्रथक् पृथक्"॥ श्रव च "तवाष्टस्या भद्रकालो दृचयज्ञविनाशिनौ । श्राविभेता सद्दाघीरा योगिनीकोटिभिः सद्द। श्रतीऽव पूजनीया सा तिसिन्नहिन मानवै.॥ इति नह्यपुराणात् "दस्तयस्विनाशिन्यं सप्ताघोरायं योगिनोकोटिपरिवृताये भद्रकाल्यै क्री दुर्गायै नम."। इत्यनिनापि पूजा प्रचरति। पूजाया विशेषस्तु दुर्गापूजातस्ये अनुसन्धेय ।

श्रीमादावङ्गाल मानादिग्रहणे छन्दोगपरिशिष्टम् ।

"मानिक्षियायासुक्ताया मनुक्ते मानक्ति । मानक्षद्यक्र"

मानः स्वाहिद्यामय निर्णयः"॥ यजमानाम् विधानं तु साधान्

गणादु निमानप्र कणम् । यथम् किविश्वपद्धरावम् । "यद्दन्धः

भिक्षोभीवेत व्यष्ट मध्यमं महिम्यवैदेः। कत्वसपद्धमिदिष्टं

महुनं मुनिनन्तम्"॥ तेः प्रक्रस्यमान्यवैः कत्वसं कित्रम् ।

सानन्तु पार्श्वनं "यद्यवाः पार्श्वमित्रताः" दित कात्यायनयवनाम् । काजिकापुराण्यम् । "यथानां तण्युन्तेति मदुनं

चाष्टिमिमेषित् । घदीधं योजितेष्ट्रस्य स्वविद्यानिग्वन्तः ॥

क्रीने ब्रह्मवरणं प्रयमतः । क्योतिष्टीमं ब्रह्मोद्दार्थान् ।

क्रीने ब्रह्मवरणं प्रयमतः । क्योतिष्टीमं ब्रह्माद्यान्यक्तिम् ।

क्रिने ब्रह्मवर्षाण्यान्यक्तिस्वार्थावर्षाण्येत् यज्ञस्यान्यक्तिम् ।

क्रिने व्यव्यक्तिम् प्रति कात्यायनोत्तेः ग्रह्मस्यापनन्तु होत्र
कर्मृक्रमव "परित्रमुणसमाधाय दिव्यविते ब्रह्मासनमास्तीर्था"

दित कात्यायनेनेककर्मृत्वाभिधानात्।

तत छन्दोगानां ब्रह्मसाधन प्रकारमाइ गोभिसः। "प्री-णाग्नि परिक्रम्य द्चिणतोऽभनेः प्रागपान् कुष्रानास्तीर्ध तेवा पुरस्तात् प्रत्यका वस्तिष्ठन् सन्यवाने रक्षेत्रोपकानि-ष्ठवाचाष्ट्रस्या ब्रह्मासनात् द्रणमभिमंग्रह्म द्विण्यप्रसष्टमं देश निरस्ति निरसः परावसः" इति "अप छपस्त्रसाय व्रह्म। सने उपविश्वासायां सदने सौदासि दित "पान्य-भिमुखी वाग्यतः प्राञ्जनिरास्ते प्राक्षर्भणः पर्यवसानात्। भाषित यद्मनसिधिं नायद्वीयां वाचं बदेत् यद्ययद्वीयां वाचं वदेहेच्यवोस्य यज्ञद्यां जपेत् प्रिया वा नमो विक्यवेण द्वि ब्रुयात्। "यदावीभय चिकीर्षेद्रोतं ब्रह्मत्वद्य" दति तेन कत्त्वन "छतं वोत्तरामङ्ग मोदक कमण्डलं दर्भवटं वा ब्रह्मासने निधाय तेनेव प्रत्यावस्थान्य सेष्टेत" इति। प्रमेण पूर्वया रिया प्रदेखिणेगामि गला यमेरेविषशा दिशि प्रागमान् सुवानायतीयान्यसंहेतेति व्यवस्ति न मक्त्रयः न तु निर्-स्यतीत्यनेन ब्रह्मित कर्नुनिह् भात्। न च ब्रह्मेत्यस्य भास-नेन सक्तराः उपविमनास् पूर्वे तत् सक्तन्याभावात्। तत्य

दर्भास्तरणान्तं याजमानिकं कर्म। ब्रह्मातु तेषां प्रस्ता-दास्त्रत कुणानां पूर्वदिग्भागे तिष्ठन् चनुपविष्ट एव सव्यस्य वाभस्य उपकनिष्ठया भनामिकया पासनाद्यजमानास्त्तं कुशपवं ग्रहौत्वा टिशिणापर दिश्चिण पिश्वममष्टमदेशम् उभय-दिगष्टमभागं नैऋतिकोणिमिति यावत् निरस्तः परावसु रित्यनेन चिपतीति। अप उपस्था दचिणपाणिना जलं स्पृष्टाऽयानन्तरम् माभने ब्रह्मा ब्रह्मात्वेन उपकित्यत उप-विश्वति। यावमी: सदने मौदामोति मन्त्रेणेति एव मेव भट्टनारायण प्रमृति व्याख्यानात्। एतेन तेयां पुरस्तादि-त्यादि चावमी: मदने सोदेताना याजमानिकं कर्म यजमान-कर्त्वं मौदामौति प्रतिवचन ब्रह्म कर्त्त्वमिति भवदेव भट्ट-कल्पनमेव सोटेति स्वानुपात्तत्वात्। भाषेत यञ्चससिडिम् इति होवान्यथा क्रियमाणे कर्मणि तिसहर्यमेतदेवं कुह-एतत् क्षन्वैतत् कुर्वित्यादि भाषेत तत्नाप्ययद्योधाम् पमस्कृतां यदि गिर वटेत्तदा वैषावो ऋक् इदं विषाुरिति यज्विषार-राटमसौत्यादि नमी विषावे इत्यादि प्रकार वितयान्यतम-प्रकारं प्रायस्वित्तमिति।

श्रव ऋगादि नक्षणमाइ जैमिनि:। "तेषासक् यवार्ष-वशेन पाद्व्यवस्थितिः" रिता। तेषां मन्त्राणां मध्ये यवार्थ-वशेन एद्यान्वियत्वेनानुष्टुवादि पादस्थितिः मा ऋक्। यजु-राइ म एव। "शेषे वा यजु' शम्द" रित शेषे ऋक् साम भिन्ने मन्त्रजाते ततस यमन्त्रजातं प्रस्थिष पिठतं गानादि विच्छेदर्हितं तद्यज्ञिति। सामाप्याइ स एव ''गौतेषु सामाख्या" रित गौयमानेषु मन्त्रेषु साममंज्ञेत्यर्थः। यथु वैति भग्नतौ उत्तरासद्गम् उत्तरोय दर्भवटु कुग्रद्राह्मणः।

त्राध कुण्डविधिः। तत्र सत्यपुराणम्। "प्रागुटक्ष्मवनां भूमिं कारयेद्यस्तो नरः"। प्रागुटक्ष्मवनां पूर्वनीचा उत्तर-नीचां वा। तत्र विधिष्ठपचराते विद्यानस्तितायाञ्च "सर्वाधिकारिकं कुण्डं चतुरसन्तु मर्वटम्"। चतुरस्र चतु-कोणम्। भविष्योत्तरे। सहस्रेत्वय होतस्ये कुर्यात् कुण्डं करात्मकम्। हिस्समयुति तश्च सच्चहीमे चतुष्करम्"॥ हिस्- स्तादिके सानमाह जामनः। "पूर्व पूर्वस्य क्रग्डस्य कोग्" स्वेग निर्मितम्। उत्तरीत्तः कुण्डानां मानन्तव्यक्तिति तम्"॥ पूर्व पूर्वस्य इस्त हिहस्तादिमितस्य कोणस्रवेग प्रगान की गावित्र ति की गदत्त सूत्रे गा निर्मितं परिमितं यकानम् उत्तरीत्तर कुण्डानां तदेव पारिभाषिकं दिइस्तादि मानं नतु प्रक्षत इस्रहेगुखादिभितम्। तयात्वे हिइस्तादि मितस्य चतुर्कमादि परिमाणापतेः। क्षपकपरिमाणवत्। धशिष्ठपश्चरात्रे। "यावान् कुण्डस्य विस्तार: खनमन्ताव-दिखते। इस्तैके मेखनास्तिस्ता वेदास्ति नयनाङ्गानाः ॥ कुण्डे विष्ठमते ता शोधा वसवेद गुणाबुनाः। चतुर्धमते तु कुगडे ता वस्तर्केषुगाजुना."। मेखना ब्रह्मचारिसेखनावत्। कुण्ड-विधिता मृद्घरिता म्ताय खातदेगाद्वास्य । एकाष्ट्रनहरूपं कगढं परित्यच्य एच्छायेण विस्तारंग एतारि क्रमण वेदा-धाइनाः एमहिपरीतास्त्रन्तान्तरीक्षा व्यवद्वारविभ्रहाः। वेदा-चालारः चानयस्वयः। नयने हे। नमाः पट्गुणास्तयः। वस्तके युगानि ऋष्टपट् चलारि। कालोत्तरे। "खातास्।ह्ये-ऽङ्गनः काग्ठः मर्थन्यङ्गाय विधि."। पिङ्गनामते तु। "खातादेकाङ्गलं त्यञ्चा मेखनाना विधिभवेत्"। एकाजुराइस्य पश्चिम दिक्ष क्षेत्रयतामाइ महादान निर्णये। "भुक्ती मुकी तथा पुष्टी जीर्षोद्दारे तथैय च। सदा होसे तथा शान्ता-येक वास्णदिमातम्"। गाग्दातिनके "होत्रये योक्तिसमा-मुपयाप्रत्यपत्रवत्। मुष्टारस्रोकष्टस्थानां कुण्डानां योनि-रीस्ता। पट्चतुद्रे प्रज्ञायाम विस्तारीवितिगानिनी। एकाङ्गनन्तु योन्यय कुर्यादोपदधोमुखम्। एकैकाङ्ग्रानिनो-गीनि कुण्डेप्यन्येषु वर्दयेत्। यवदयकमेगैव योन्यगर्माप वहेंयेत्। स्वनादारभ्य नाम स्वात् योत्वामध्ये म्रस्यकम्"। यामां मिल्लानाम्। चल्लायवदिलानेन चतुरङ्ग विस्तृत-सूनाद्ययोग क्रमणेयाद्वासनाः सकुचित विस्तारा । जामले "माम्माखनयोमध्ये यरिधेः स्यापनाय च। रस्य मुखास् तया विद्वान् हिलीयमेखनी परि ॥ पुरयरणचन्द्रिकायान्तु पत्रवनात् पूर्वं "श्रतादारम्य नान स्याद्योगिम्सस्य

धारणे"॥ इत्यद्वं लिखितं परिश्रीसिदिन्धासांयाच क्न्दोग-परिशिष्टम्। "बाहुमाताः परिधयः ऋजवः सलचोऽत्रणाः त्रयोभवन्यगौर्णाया एतेपान्तु चतु हि शम्। प्रागमावभितः पद्यादुदगयमधापरम्। न्यसेत् परिधिमन्यसेद्दगयः सपू-र्वत."॥ अवगाण्किद्रशिक्ताः अभितः अग्ने पार्ष्वदेये दिचि-यतः उत्तरतस्य पसात् पश्चिमे उदगग्रमुत्तराग्रं वैलोकासार । "कुभाद्यसमायुक्ता श्रश्वस्यद्लवन्नता। श्रृष्टुष्ठमेखलायुक्ता मध्ये खाज्यस्थितियया"॥ कुभादयसमायुका गजकुभाकार--सूलदेशयुक्ता। नतानस्ता। श्रह्मधेखलायुक्ता श्रह्मधित-सृद्धितमेखनावैष्टनयुक्षाः। तथाखे सस्तर्गानितान्यस्थित्या कुण्डे तत्पाती भवतीत्यर्थः। श्रतएव स्वायभुवे। "यङ्गुष्ठ-मानौष्ठकण्डा कार्याख्यदनास्ति."। चङ्ग्रमानौष्ठं कण्डे यस्या योनेः सा तथा श्रोष्ठोऽत्रायं इयगोर्पपञ्चरात्रे "कल्पर्ये-दन्तरे नाभिं कुण्डस्यास्त्रजमिमम्। सुष्टारत्नेगकपस्यानां नाभिरत्मेधविम्तृता॥ नेत्रवैदाष्ट्रसोपेता सुख्डेखन्येषु वर्ष-येत्। यवदयक्रमेषैव नाभि पृथगुदारधीः॥ नाभिचेत्रं विधा भित्ता मध्ये कुर्वीत क्षिकाम्। विद्यादयेनाष्टी पत्नाणि परिकल्पयेत्"॥ खादिराटि स्वाभावे तु राघवभङ्कष्टत-महितायाम्। "पनाश्रपत्रे निश्छिद्रे रुचिरे स्नुक् स्वीस्त्री। विद्ध्यादाख्यपते मचिते होमकर्मण्या तत कुण्डदोपानाह विष्वकर्मा। "खाताधिक भवेट्रोगी खातहीने धनचयः। वक्रकुएडे तु सन्तापो मरणं किन्नमेखले। मेखलारहिते शोकी श्वधिके वित्तमंत्रयः। भार्य्याविनाग्रकं कुण्डं प्रोक्तं योन्धा विना सतम्। यपत्यध्वंमनं प्रोक्तं कुण्डं यत् कण्ठवर्जितम्"।

चतएव विशिष्ठसिहितायां "तसात् सम्यक् परीस्यैवं कत्त्वं गुभवेदिकम्। इस्तमाचं स्विग्डलं वा संचित्रे होम-कर्प्रणि"। क्रियासारिद्धि। "कुग्डमेवंविधं न स्यात् खिष्डलं वा समाययेत्"॥ यारदाति चकेऽपि "निखनैसि-त्तिकं काम्यं खण्डिले वा समाचरेत्। इस्तमात्रन्तु तलायांत् चतुरसं समन्ततः"॥ सष्टाकपिल पश्चराते। "संस्थानुको

यतं साष्टं सहसं वा जपादिषु"।

होमे स्नाहान्ततामार यज्ञपार्यः। "बादाय दिन्णे पाणी सर्वाचमधुरं इवि:। प्राथा खी बक्रिजायान्ते अष्ट्रयाद्या-लपाणिना । विमध्रं द्वमध्यकराक्षकम्। विष्णु-धमीत्तरे। "दूर्वाहोम: पर: प्रोक्तस्तेन खर्गे महीयते। तखाइग्राणं पुण्यम् इच्सिः प्राथयात् कते। तसाइग्रागुणं शस्त्रे ब्रीसिभिदिगुण भवेत्॥ यवैद्यतुर्गुणं मोक्षं तिलेद्यगुणं सासम्। विस्वेदेशगुणं प्रीतां धृतेनाष्टगुणं ततः"॥ इताईन प्रतम्य सर्वोत्कृष्टतं द्शितम्। विज्ञिनाया खाष्टा। "मन्त्रेणो-द्वारपूरीन खाद्यात्मेन विचल्याः। खाद्यासमाने ज्युयास् धायन् वै मन्त्रदेवताम्"॥ इति स्रति:। खाद्यान्तमन्त्रे खाद्या-न्तरं निषेधयति मन्त्रतन्त्रप्रकाशः। "नमीऽन्तेन नमो दद्यात् खाइन्ति दिठमेव च। पूजायामा इतौ चापि सबिक्षाएं विधि: भिवे"।। यन्त्राव्दोत्वावमानार्थः द्विष्ठः स्वाष्टा उकार्ण शिधिमाम्याहिन्दुक्चते तस्य हिलं तेन विसर्गः स च अति-रूपः तन हिठ यञ्डेन। विनय्नितः स्वादीतेति गघवभटः तथा च हिंदु: खाद्यान समियित वर्णाभिधानम्। स्रत तु खाद्या-यन्दः स्रीयद्रव्यत्यागार्यमः। यया "उपस्टि होमाः स्नाहा-कारपदाना जुहोतय."। इति हिरिशमधन खाहाकारिण स्वाहिति परेन प्रदानं त्वागो यास तास्तवा घत्र्व खाङाकारस्य प्रदानार्धकत्वाद्वविस्वागस्याक्तायसिद्वले-नैव सतार्यवात् हितीयसां मानमन्यकं सात् इति भद्दभाषम्। प्रदानाधेकत्वन्तुः तचेव यत भन्तस्वनामि चतुर्धन्तता धतो भयन्तीत्वादी नमः स्वादयोर्यथाययं पुनदेयतितिन्युक्तपाणिनेति शास्यन्तरी-यम्।

"उत्तानिनेव इस्तेन अङ्गुष्ठायेण पौडितस्। संदशादुन्तिः पाणिम् वाग्यतो जुद्द्यदिनः॥" इति सद्दार्गनिर्णयप्ततः पाणिम् वाग्यतो जुद्द्यदिनः॥" इति सद्दार्गनिर्णयप्ततः गोभिनवचनात् एतद्द्वमं परिणिष्टोयसिति साधवावार्यः। सविष्टेशि "बाद्दिन्तः प्रतादीनां स्वेणाधीमुखेन तु। इतिस्वाद्धाद्विस्त दैयेनीसानपाणिना"॥ स्वस्तुपद्याः इतिस्वका यद्वमुद्रया धार्यः। "पद्माद्द्वान् निष्टस्यका

धारयेत् गङ्गमुद्रया<sup>७</sup>। द्रति वाचस्यतिमित्रक्षतमहादान-• निर्णयप्रतवचनात्।

पावको स्नानः प्रथमः परिकल्पितः। धानस्नु मार्तोनाम
गर्भाधाने विधीयते॥ पुंसवने चन्द्रनामा गुड्नाक्रमणि भोमनः।
सौमन्ते भङ्गलो नास प्रगल्मो जातक्रमणि॥ नाम्ति स्थात्
पार्थिवो द्वानः प्राग्ने च ग्रविस्था। सत्यनामाध चूडायां
वतादेशे समुद्रवः॥ गोदाने स्थानामा च वेशान्ते द्वानक्चते। वैखानरो विसगें तु विवाहे योजकस्था"॥ गोदाने
गोदानास्थमंस्कारे। "चतुर्थान्तु शिखोनाम प्रतिरानस्त्थापर्यः। प्रपरे प्रतिहोमादौ। "प्रायधित्ते विधुसेव
पाकयन्ते तु साहमः"। प्रायधित्ताक्षक्रमधाद्वतिहोमादौ।
पाक्रयन्ते पाक्षाङ्कष्ठपोत्मगंग्यद्वप्रतिष्ठाहोमादौ। "जन्तहोमे च विद्वः स्थात् कोटिहोमे ह्तायनः। पूर्णाङ्गलां स्टडोनाम श्वान्ति वरदः सदा। पौष्टिके वन्दसेव कोधीर्यनस्त्राभिचारके। कोष्ठे तु चठरो नाम क्रब्यादोस्तमन्त्रणे।
"श्राष्ट्रय चैव होतव्य यत्र यो विह्नितेष्ठननः"॥

तथा "युमं पातन्तु कांखं खात्तेनागिनं प्रौणयेह्धः।
तथाभावे गरावेन नवेनाभिमुख्य तत्। विशेषनामाञ्चाने
गुणविष्णुभूता स्मृतिः "सर्वतः पाणिपादान्तः भवेतोऽचि गिरोन्
मुखः। विश्वरूपो सहानिनः प्रणौतः भवेकमेनु" यगिनपण्यनानन्तरं सर्वत दखस्य पाठो युच्यते प्रणौत इति मन्तपण्यनानन्तरं सर्वत दखस्य पाठो युच्यते प्रणौत इति मन्तनिष्ठात्। प्रन्यया स्थापनानन्तरमितदभिधानं स्थयं स्थात्।
गुणविष्णुना स्थतिरिति क्रत्या सर्वतः पाणिपादान्त इति सिखितम्। एषध्य दुर्गापूजनस्य पौष्टिककमेत्वात्। तद्वद्वभिमे
सन्तदनामाग्निरिति।

ध्यानमादित्यपुराणे। "विष्ठभ्यः सम्यक्षेत्राचः पौताङ्गो सठरोऽत्यः। क्षाग्रधः माचसूबोऽग्निः सप्तार्चिः गक्तिधा-वकः"॥ यन् प्रकृतकर्भवैगुष्यप्रमनाय शाट्यायमहोमा-भिधानं भवदेव भट्टमग्रतं तच प्रामाणिकं तधादपि महा-प्रामाणिकैर्भद्दनारायणचरणैगैशिनसाये तदप्रमाणीकृत- लात्। इन्दोगपरिशिष्टेऽपि प्रायस्ति प्रकारस्यसासम्भं यथा "यस व्याहितिमिद्दीमः प्रायस्ति तामको भवेत्। चतसः स्तत विद्वेया स्तोपाणिग्रहणे यया। श्रीप वा श्वातिमित्तेषा प्राणापलापि वा द्वितः। होतव्या तिविकल्पोऽयं प्रायस्तिन विधिः स्तरः"। तिविकल्प इत्यनि कल्पान्तरिनपेधाद्वीभिः सीयसमिषि शास्त्रायनहोमो न युक्तः। किन्तु चास्त महा-याहितिभियतस्तिः प्रायस्ति सम्मत्तेऽपि शास्त्रन्तरीयत्वम्। प्रयोवम्। शास्त्रायन होमस्य सम्मत्तेऽपि शास्त्रन्तरीयत्वम्।

माने: मुभलसणमाह वायुपराणम्। "विस्तित् विशिष्ट-तिथितः सर्विः काल्यमहिन्नः। सिग्धः प्रदेशिष्टवे विष्टः स्थात् कार्यमहिन्देशे"॥ वद्यपुराणे। "सुनुद्कीधत्वरायुक्तो भौतमस्वं जुद्दोति यः। श्रमवृद्धे सधुमेवा मोऽस्यः स्थादन्यज्ञकानि। श्रतो स्त्री सस्पुलिक्षे वामावत्तं भयानके। श्राद्रकाष्टेय सम्पद्धे पुत्कारवित पावके। क्षरणाविषि सुदुर्गसे तथा निर्दात मेदिनोम्। भाष्ट्रतिं सुदुर्गस्य तस्य नाशो भवेत् भुवम्॥ श्रापस्तवः। "नापोस्तितिस्थनसन्तावादध्यात्" इति।

पूजामाद मार्कण्डेयपुराणम्। "मंपूजयेत्ततो विद्ध स्था-देवति क्रमात्। अर्कमतस्वादिनौ स्मृतिः। "यादो तु देवति शं तेत्तिरीय करणाण्डिनोः। काण्डमाध्यन्दिनानाध्य परादुन्नेखयेत् सूरान्"॥ पन्येषां नाम्येवदेवतो हेणः। स्मृत्यर्थ-सारमदनपारिकातयोः। "निवधौ यक्तमानः स्थादुहेणलाग-कारकः। प्रश्रिक्षो तु पत्नौ स्थादुहेणल्यानारिका। श्रम-विधौ तु पत्नाः स्थादक्षणुंस्तदनुष्त्रया। स्थादे प्रस्वे चार्त्ती स्वीतानुष्ठाया विना"। श्रक्षय्यस्त्रविदिशोसक्तां।

स्वीतानुद्राया विना"। अध्यय्येज्विदिहोसकर्ता।
पूर्णाहितस्त्याय सर्वद्रीतव्या यथा अतिनपुराणम्।
"मूहानिद्वसन्तेण संस्वेण च धारया। द्वाद्याय पूर्णा
वै नीपविषय कदाचन"॥ पराष्टे भविष्येऽि । सूद्वानिदवैति यज्ञविद्रमां भन्तः। सामगानान्त पूर्णहोसिमव्यादि ।

गासिदीधिकायां विशिष्ठः। "दयात्पाद्यादिकं वर्ष्ट्रेहेतंनास्य रिना तुषः। प्रथमा गीतनीक्षय्यति ऐगान्यां भस्र चाष-रेत्। ऐगान्यामादरेदस्य स्त्रचावाय स्त्रयेणवः। वन्दनां कारयेत्तेन थिरः कर्णांसकेषु च॥ कथ्यपर्येति मन्तेण ययानुक्रमयोगतः। सतः ग्रान्तिं प्रकुर्वीत अवधारणवाचनम्।
दक्षिणा च प्रदातया प्रष्टादोनां विसर्जनम्"॥ ग्रान्तिर्वामदेख्यगानादिः। "पर्युचणच सर्वत्र कर्त्तव्यमदितिन्विति चन्ते
च वामदेख्यस्य गानमित्ययवा विधा" इति क्रन्दोगपरिशिष्टात्
गानं कुर्यात् ऋचस्तिधित या पाठः।

श्रवधारणमिष्ठिद्रावधारणं दिचिणानन्तरं कर्तव्यं न तु पाठकमादर:। "हया विप्रवची यस्त रहस्राति मनुजः गुभे !। घदला दिचिणां वापि स याति नरकं भ्वम्" इति नारदी-यात् प्रतएव भवदेत्रभट्टे नापि वामदेव्यगानानन्तरं दि चिणोक्ता तथा विशिष्ठेन दक्षिणानन्तरं विसर्जनाभिधानेन याहीऽपि तयादर्भनेन प्रनिद्धिकानाङ्गस्य प्रधानकालकर्त्रस्यत्वेन च थारदाः पूजाया नवस्याभेव दक्षिणा देया। ध्यक्षं मत्यध्को "नवस्यां पूर्वेषत् पूजा कत्त्र्या भूतिमिच्छतः। दिचिणां वस्त्र-युग्मश्च पाचार्य्याय निषेट्येत्"॥ न तु देवौविसर्जनानन्तरं दिचिणेति दुर्गाभिक्तितरिक्ष एकां युक्तम्। "उत्तरेण नवस्य।न्तु बिनिभिः पूजरीत् शिवाम्। यवणेन दगस्यान्तु प्रणिपत्य विस-र्जयेत्" इत्यनेम "बार्द्रायां बोधयेद्देवीं मुलेनेव प्रयेगयेत्। पूर्वित्तराभ्यां संपूच्य अवणेन विसर्जयेत्" इत्यम क्वा निर्देगेन च नवस्युत्तराषाढ्योः पूजान्तता प्रतीतेः। "प्राध्विने सामि शक्ते तु कर्तव्यं नवराविकम्। प्रतिपदातिक्रमेणैव यावच नवमी भवेत्। विरावं वापि कर्त्रवं सप्तम्यादि ययाक्रमम्"॥ दति क्षत्यकत्पन्ताधृतभविष्योत्तरवचने पूजनम्य नवस्यलाग प्रतीतेय। कर्मान्ते क्रन्दोगपरिशिष्टेन द्विणाभिधानाद्य। कारियव्यवस्था प्राप्य दिका भयेत्" ॥ याद्यये दित कर्म- कारियव्यवस्था भव नवराविकमित्योसार्थकं तिथि- कि हिन्द्रासाभ्यामधिकन्यूनतामभवात् चतपव प्रतिपदादि तत्तिस्थि कत्यमाद्र भविष्ये कि विष्य प्रतिपहिने। पष्टडीरं दितीयायां के शसंयम इति वे ॥ दप-पच वर्तीयायां चिन्द्ररासक्षकन्तया। मधुपर्वश्वतयांच

तिलुकं नैचमगड्नम्॥ पञ्चमामङ्गायं शक्यलिङ्गानि च। पद्यां विल्वतरी बीधं सायं मन्यासु कार्येत्॥ सप्तम्यां प्रातरानीय सहसध्ये प्रपूजयेत्। उपीवणस्यास्यासष्टभातेः प्रभूजनम्॥ नवस्थासुग्रचग्डायास्तददेवार्श्वने दिवा। पूजा च वसिदानच्य तदकातृः प्रपूजरोत्। कुमारी पूजनीया च भूषणीया च भूषणै:। संपूच्य प्रेषणं क्षय्यांत् दशस्यां भावगी-सिवै:॥ अनेन विधिना यस्तु देवीं प्रोणयते नरः। स्कन्द-यत् पासवित् तन्तु देवी सर्वापदि स्थितम् ॥ पुत्रदारधनर्दिनां संख्या तस्य न विद्यते। भुक्को इ विपुलान् भोगान् पेत्व देवी-गणो भवेत्"॥ अत्र कर्षे प्रतिपदि कलमस्यापनं यज्ञमान-दाशर्धं दुर्गाभितितरिक्षर्या यद्क तत्र युक्तम्। तस्य देवी-पूजानङ्गलेन तत तदिधानसाधुक्तलात्। सत्यपुराणे प्रषयाग एव तस्त्रीक्षत्वाचा यदापि "यग्निक्षम्मा भवानी च गणवक्री-महोरगः। स्कन्दीमानुमहिमणो दिक्षासास नवयहाः॥ गयां घटे तु प्रत्येकं पूजियका यथाविधि। सूर्तिं पविद्रमे-कें के द्यादिव समाहित:" । इति का सिकापुराणीरीन प्रति-धदि ब्रह्मपूजनमाधमुक्तम्। तत्त युक्तं ब्रह्मपूजनशद्गसादि-पूजनसावि तदयनोक्षलेन नद्भिधानसावि युक्तवात् किन्तु तद्दनं सामान्यतः पुजान्तरविधायकतया वीध्यम्। मत्ये। "चर्षकीनो दहें द्राष्ट्रं मन्बहीनस्वयत्विनम्। श्रामानं दिल्णा-हीनी नास्ति यज्ञसमी विषुः" ॥ धर्थो द्राम्।

देवीयावाकानि निर्मान्द्रनिविधिमाद पूजारहाकरे देवीपुराणम्। "सक्त्या पिष्टप्रदेशियायेषुताख्यादिपद्मवैः। भीपधौसिय मध्याभिः मयेवीजैयवादिभिः। नवस्यां पर्वकाले तु
यावाकारी विशेषतः। यः कुर्यात् यद्या चौर देशा नीराकनं नरः। भडमेर्पादिनिनदेजैयभयेष पुष्कनेः। यावती
दिवनान् चौर देशा नीराइनं कुत्रम्। सत्तक् काद्यक्षकःधाणि दुर्गालीके मधीयते। यन्तु कुर्यात् प्रदीपेन स्र्यानीके
मधीयते ॥ पर्वकाले एसवकाली। देखा इति स्रीलामविविधतम्। विण्यादि प्रतिसायां तथाचारात्।

योगाधिकारे परः सुतिमाध मत्यपुराणम्। "त्रीयतां

पुण्डरीकाचः सर्वयज्ञेषारी हरि:। तिलां सुष्टे नगस्ष्टं प्रीणिते प्रीणितं नगत्"॥ क्षत्य महार्णवस्त भविष्यभिवर-हस्ययोः। "दग्रम्यां दीयते यत्र खिलदानन्तु सातवैः। तद्राष्ट्र नागमायाति मरकीपद्रवैः स्कृटम्"॥ भवीक्षविषद्ध-वचनानि भोजदेवजीसूतवाहन हनायुधरत्नाकर दुर्गामिक्ष-तरिष्ट्रणी वाचस्पतिमित्र स्कृतिसागररायसुक्षट क्षत्य सहा-र्णव प्रस्तिभः भनाइतानि।

विजयादशमीमधिक्षत्य। "दशमीं यः समुद्रहर प्रसानं कुरुते तृपः। तस्य सवसरं राज्ञी न कापि विजयो भवेत्"। प्रमानी खड़ादियात्रामाह राजमानिष्डः। "कार्यवशात् स्वयसगमे सूमर्नुः केचिदाहुराचार्याः। क्रनायुधादासिष्टं वैजयिकं निर्गमे कुर्यात्"।

च्येतिपे। "अस्तं गते तु सिक्षे यया दिशा खझनं नृपो-यान्तं पश्येत्तया प्रयातस्य चिप्रमरातिवयमुपैति"॥ मित्रे सूर्य। तथा "हावा नीराजनं राजा वलहरैयंयावलम्। शोभनं खञ्जन प्रायत् जनगोगोष्ठमविधी ॥ नीन ग्रीव ग्रभ-ग्रीव सर्वेकासफलप्रद। पृथिच्यासवतीर्णोऽसि खन्नरीट नमी-उस्त ते" ॥ वसन्तराजी "दृष्टोदितेऽगस्यमुनौ सदेगे सचेष्टितं खञ्जनको विर्ध्यात्"। इत्युपक्षस्य "वं योगयुक्तो सुनिपुवक-स्वमद्यातामिषि शिखीद्गमेन। संद्यासे प्रावृपि निगतायां त्व खन्त्रभायक्षमयो नमस्ते"। एतष्टचनात् यदा शिरिम गिखोदमस्तदा खञ्चनो न द्वयते घगस्योदयानन्तरं गिदा-विगमात् पुनद्देश्वते दर्शनफल "बलेपु गोषु गजवानिमही-रमेषु। राज्यप्रदः कुत्रानुदः गुचि शाद्वनेषु। सधास्विनेश-नखनोमसुपेषु दृष्टो दुःखं ददाति वहुगः खन् खन्रहारीटः"। वर्षक्षत्वे "वित्तं समापि कार्थासिहरतुला गक्ते हुतारी भयं याग्यामग्निभयं सुरिद्धिय कलिलांभः समुद्रालये वायव्यां दर-वस्तगश्चर लिलं दिजाइना चीत्तरे। ऐगान्यां मरणं ध्वं निगदितं दिग्नाध्यं खन्नाने। ज्येष्ठीर्ते स्तेऽध्येशसूचः केचिम कोविदाः"।

स्ति सु मदनपारिजातध्तम्। "कीविति छुनतो ग्रुपात्

जीवित्युक्तस्वया सह। त्रग्रमं खद्धनं दृद्धा देवब्राह्मणपूजनम्। दानं कुर्वीत कुर्याच सानं सर्वीषधीजसैः। खुतोत् पतन जृत्यास जोवीतिष्ठाङ्गिष्वितिः। यवीरिप च कर्तव्य-मन्यया ब्रह्मद्दा भवेत्"। द्रित वन्यघटीय इरिहर-मन्ययाका चीरघुनन्दनमद्दाचार्यवरित्तदुर्गापूजातस्वं समाप्तत्।

त्रथ एकादशी। साच परयुना ग्राष्ट्रा युग्मान्। श्रानेथे
"ग्रह्णो प्रद्मचारी च त्राहिताग्निस्त्रथेव च। एकादश्यां न
भुक्तोत पच्यीन्भयीरिय"। क्षण्यायां पुत्रवती ग्रह्म्यश्य
नियेषमाह ब्रह्मपुराणम्। "पादित्येऽहिन मंक्रान्खामिनतेकादशी दिने। व्यतीपाते कते त्राहे पुनी नीपवसेत् ग्रही"
पस्यैव गयनवीधनमध्ये प्रतिग्रसदमाह ब्रह्मवैवर्त्तः। "श्रयनी
वीधनीमध्ये या क्षणीकादशो भवेत्। सेवीपीष्या ग्रह्मखेन
नान्या क्षणा कदाचन"॥ वैष्णुवस्य तु यावत् क्षणायामुपवाममाह नारदः। "नित्यं भित्तममायुक्तेनंरैविष्णुपरायणीः।
पन्नेपच्चे च कर्त्तथ्यमेकादश्यामुप्यमेत् पच्योन्भयोरियः॥
भव्यचे च कर्त्तथ्यमेकादश्यामुप्यसेत् पच्योन्भयोरियः॥
भवानेभित्तसंग्रतेः। एकादश्यामुप्यसेत् पच्योन्भयोरियः॥

तत्तवागरे। "यथा श्रक्षा तथा क्षण्या यथा क्षण्या तथेतरा। सुलेति मन्द्रते यस्तु भवे वेण्यव छचते" इति वेण्यवमचणमयाक्षम्। वेषोपवाते भोजन चतुष्ट्रयनिष्ठत्तिमाष्ट्र
मचणमयाक्षम्। "सायमाद्यन्तयोगङ्गोः मायं प्रातस्य मध्यमे।
उपवासम्पत्तं प्रेषोर्वक्षं भक्षचतुष्ट्रयम्"॥ पुत्रवतो ब्रह्मपुराणोक्ष रिववागद्यप्रवासनिपेषस् तन्त्रात्र निमित्तकोपवासपरः। "तिविभित्तोपवासस्य निपेधोऽयसुदाहृतः। मानुषह्रकृतो याद्यो थतो नित्त्रमुणीयणम्"॥ इति जैमिनिवचनात्।
"श्रुभानुदिनोपेता सूर्यमंक्षान्ति मंद्रता। एकादशो सदीपोणा पुत्रणीत विविद्यभेण इति विष्णुधमोत्तराख्य। तदिपित्तोपवासमाष्ट्र मंवत्तः। "पमावास्या द्यादशो च संक्षान्तिय
विशेषतः। एताःमग्रस्ताम्त्रययो भानुवारस्त्रथेव च ॥ श्रव्र
सानं क्रवी होमो देवतानाच प्रजनम्। चप्रवासस्त्रयादानसेक्रेंकं पावनं स्मृतम्"॥ पिर्व्यवसरादी तु वराहपुराणिविषा-

पर्मोत्तरकात्यायनाः। "अपवासो यदा नित्यः याद्वः नैमिन्तिकं भवेत्। अपवासं तदा क्ष्यांदाप्राय पिळसेवितम्॥ रिववारे कंसकान्त्यामेकादस्यां सितेतरे। पारणश्चीपवासश्च न कुर्य्यात् पुत्रवान् ग्रही" इति पारणिनपेधो रिववार संकान्तिमात्र प्राप्तपारणपरः। तयोरेव पारणन्तु "सप्तवारानुपोर्येव सप्तधा सयतेन्द्रियः। सप्तजन्मकतं पापं तत्श्चणादेव नम्यति"॥ 'इति। सवस्तर प्रदोपष्टतेन। "नित्य द्वयोरयनयोर्नित्यं विषुवतोः देयोः। चन्द्राक्षयोर्थहणयोर्थेतोपातेषु सर्वस्न॥ भ्रष्टोरातोन्द्वयोः। चन्द्राक्षयोर्थहणयोर्थेतोपातेषु सर्वस्न॥ भ्रष्टोरातोन्तिः स्वान द्यावः तथा जपम्। यः करोति प्रसद्मान्ताः तस्य स्वादश्चयञ्च तत्"॥ इति ब्रह्मपुराण वचनाभ्याञ्च। यनिवारोपवाससक्नान्तिपूर्वेदिनोपवासविधानेन प्राप्तमिति।

विधवायास्य सर्वया निरात्वमाद्य कालायनः। "विधवा या भवेतारो मुद्धोतेकादशौ दिने। तस्यास्य स्ववतं नस्यत् भूणद्वत्या दिने दिने"॥ स्वृतिः। श्रष्टाब्द्दिकोमत्योद्या-पूर्णागौतिवसरः। सुद्द्धको यो मानवो मोद्दात् एकादस्यां स पापसत्"॥ एकादभी व्रत नित्सं तदाद्व ब्रह्मवैवर्तः। "द्रति विज्ञाय कुर्वीतावस्थमेकादभी व्रतम्। विभिष्म नियमाभको-उद्दोरातं सुक्तिवर्जितः"॥ भविष्ये "नित्समतत् व्रतं नाम कर्त्त्र्य सार्ववर्णिकम्। सर्वाश्यमाणां सामान्यं सर्वधर्मेष्वतु-त्तमम्॥ एकादस्यां न सुद्धौत पच्चयोक्तमयारियः। प्रेचेताः "पूर्णाप्येकादभी त्याच्या दितयं वर्दते यदि। द्वादस्यां पार-णालामे पूर्णव परिग्रह्मते"।

एकाद्याः पूर्णतः विशेषयित सौरधर्मः। "श्रादित्योदः यवेलायाः प्राष्ट्रा इत्वयान्वता। सेकादशौ तु संपूर्णा विद्वान्या प्रतिनीत्तिता"॥ दितयमेकादशौ द्वादशो च वर्दते पर्रादनः गामिनी। दादश्यां पारणाया मलामे पूर्णापरिश्रहे श्रधः वासिनेदमाह स्कान्दे। "सपूर्णकादशौ यत प्रभाते पुनरेव सा। तत्रोत्तरां यितः कुर्यात् पूर्वामुपवसेत् ग्रही"॥ कौर्स्यः। "एकादशौ प्रहृद्धा चेत् श्रक्ते छप्णे विशेषतः। उत्तरान्तु यतिः कुर्यात् पूर्वामुपवसेत् ग्रही"। गार्डे "पुनः

प्रमात समये घटिलेका यदा सवित्। तत्नीपवासी विदिती वनस्यस्य यतस्त्या। विधवायास तवेत्र परतो हादगी नचेत्" ॥ प्रहा एकादग्येव प्रकर्षण हहा न हादगीत्वयः। तत्रिवीत्तरान्मव। यत्र तु पूर्वदिने दशमीबिहा परिदेने हादगी मित्रा तत्र सर्वदेव परिदेने हादगीनामे तदलाभेऽपि परीपोचा। "एका-दगी हादगी-मित्रा परतोऽपिन वहते। गटिहिमिर्गतिभिद्यैव सेवोपोचा सदा तिथिः"॥ इति स्मृतिः। चिप भित्रक्रमेन वहते हादगोत्यथः। एतत् हिस्पृशि स्विस्पृशि च सक्षवत्यविभेषात्।

पनेव वयोद्यां पारणफलमाद्य । "एकाटमी दादभी च राविभेषे वयोदभी। सव कतुशतं पुर्खं वयोदभ्यान्तु पार-णम्"। यत्तु "दादश दादशौर्द्यन्ति वयोदश्वान्तु पारणम्" द्रति तदुपवास परिदेन "हाटग्रीलाभे तां विष्ठाय पार्यां बीध्यम्। तथार ब्रह्मपुराणम्। "एकाद्य्यामुपोध्येव हाद्य्यां पार्णं सातम्। चयोदायां न कुर्यास् द्वादश दादशीसयात्ण ॥ काल विवेक संवसर प्रदीप प्रमृतिषु कूमेपुराणम्। "एका-दगौमुपवसेत् हादगौद्यथवा पुनः। विभिन्नां वा प्रकुर्वीत न दगम्या युता कचित्॥ कुर्यादनाभे सयुतां नासाभेऽपि प्रविभिनीम्। उपीष्या द्वादशीतत त्रयोदश्यान्तु पारणम् ॥ उदयात् प्राक्दशस्यास्तु शेषः सयोग इचते। अपरिष्ठात् घवेगम् तसाता परिवर्णयेत्"॥ हाद्यां कराहिमात्रमः प्येकाद्या पनिर्गमे यदि दशमी नोदय सुधित खद्यात् पागर्गोदयकान प्वावितष्ठते तदा संयुक्तीचाते सेवोपोच्या। भवेव विषये "एकाटभी द्याविषा परतीऽपि न वर्षते। ग्रिक्षियतिभियेष सेवीपीया सदा तिथि ॥ इति भविष्य-पुराणीयादिवचनानि दगमीविद्याक्तिष्यतादोधकानि वो-धानि। यव दादयामेकादयानाम एव प्रक्षोदयदिवासाः कामिद्यास्य सार्यामेकार्योकार्येकारे माहिष्यकां क कुर्यात् इत्यर्धतीऽवगतेस्तव परैकाद्य्यपोषा इत्यवगव्यते। एतिहपरी ''धष्टिद्यङासिकायाध तिथेनिष्क मणे धरे। पत्रमंख तिधिमल विद्यादेकादगीं विना"॥ इति सगच्छते। तया कान्तमाधवीचे गाक्डम्। "माहित्योदयवेलायामा-

रम्य पिटनाड़िकाः। सद्दीर्णेकादयोनाम त्याच्या कर्मफले-पुमि."॥ सत्रापि वयोदयां दादयी नाम एव परोपोणा-दत्यवधेयम्। नोचेत् तब पूर्वामुपोच परिदने दादयादा-पाद समुत्तार्थं पारण कुर्यात् "विद्वाध्येकादयो याद्या परतो द्वादयौ नचेत्" इति "मृहत्तं दादयौ न स्थात् घयोदयां यदा मुने। उपोणा दशमौविद्या मर्वेरकादयो तदा"॥ इति "वयोदयां यदा न स्थात् दादयौ घटिकादयम्। दशम्येका-दशौविद्यां यदा न स्थात् द्वादयौ घटिकादयम्। दशम्येका-वचनेभ्यः चन मुहत्तं घटिकति पारणयोग्यकालोपलचणम्। "कलाद्यां द्वाद्यों दृष्टा निश्लीयादृष्ट्यं मेविद्य। चामध्याद्वाः क्रियाः सर्वाः कर्त्तव्याः श्रम् शासनात्"॥ दित शीधरस्थामि-धतवचनात्।

श्रवीदयानन्तरवर्त्तिनी दशमी वद्येकारशी खृशति तदा सा प्रविश्यनी पदवाचा। तां विष्टाय द्वारशीमवीपवसेत्। तदिदमुक्तं नासाभिऽपि प्रविश्विनोमिति। श्रकाभेऽपि पर्रादने एकादश्यनाभेऽपि। श्रतएव काखः। "उदयोपरिविद्यातु दशस्येकादशौ यदि। दानवेभ्यः प्रौणनार्धं दत्तवान् पाक-शासनः"॥ स्कान्दे "दशस्यैकादशौविद्या गान्धारी तासुपी-पिता। तस्याः पुत्रशत नष्ट तसात् तां परिवर्जयेत्। ये कारयन्ति कुर्वन्ति दशस्यैकादशीं युताम्। श्रास्तोक्य तन्तुख बद्यान् स्य्येदर्शनमाचरित्"॥

यवारणोदयिका पश्चिरण्डेकादयी पूर्णेकादयोर्थिक खाया मिवियेषः हित चेत्र "दादय्यां पारणालामे पूर्णेव परिग्याया मिवियेषः हित चेत्र "दादय्यां पारणालामे पूर्णेव परिग्याया मिवियेषः हित । द्रव्यविशेषात् यत्र वेधावेनापि पूर्णोपोष्या हित । यत्र योदयविद्यात द्वादय्यां पारणस्थालामेऽपि वेधावेनीपोष्या किन्तु खण्डेकाद्य्यपोष्येति। "द्यमी श्रेष संयुक्तो यदि स्यादर्गोदयः। नेवोपोष्य वेधावेन तिह्नेकादयोत्रतम्"॥ इति गारुडे वेपावेनित्यभिधानात्। तत्रापि क्रणापचे यर्गोन्द्य विद्येषोष्या यक्षपचे तु न तथिति विशेषः। "एकाद्यीं द्याविद्यां वद्यमाने विवर्जयेत्। पचे हानी स्थितं सीमे सहयेद्यमीयुताम्"॥ द्रित काल्विवेक्षस्य महार्थवस्त

भविष्यपुराणैकवाक्यत्वात्। भवणोद्य कालमास स्वन्द-पुराणम्। "उदयात् प्राक्चतसस्तु नाडिका चरणोद्यः। सत्र सानं प्रशस्तं स्थासि पुण्यतमं स्वृतम्"॥ नाडिका दण्डः।

तदयं संविष:। गटहस्थादीनासुभयपत्ते एकादश्यामुपवासा-धिकारः। एषण्यचेकाद्यां पुत्रवतो गटहस्य नाधिकारः। इरिगयनाभ्यन्तरे तस्याध्यभिकारः। वैषावपुत्रवद्गरहस्यस सर्वे क्षणाद्यामध्यधिकारः। शक्रवार रविवारादावध्येकादश्या-मुपवासफलाधिकाम्। विधावाग्यास्तु सर्वनाधिकारः। श्रव ष्यष्टाद्धिकापूर्णाशीति वर्षमानवी नित्याधिकारी एका-दशीवतं निर्ह्णं पार्यदिने हादशीलाभे सबएव पूर्णामेका-दशीं त्यक्षा खर्डाम्यवमेत्। तदनाभे ग्टही पूर्वां तदन्यः परां विधवापि। यदातु पूर्वदिने दशस्यायुतैकादशी तदीसगम् पोधा द्वादश्यां पारणं कुर्यात्। परदिने द्वादश्यनिर्गमे तु वियोदम्यामपि यदा तु स्योदियानन्तरं दशमीयुतैकादशौ पर्दिने न नि'सरति तदा तां विष्टाय द्वादश्रामुपवसेत्। यदातु स्योदियपूर्वकालीन दशमीविडेकादशौ परदिने न निःसरति तदा तास्पवभेत्। यदा तु तथाविधा सती पर-दिने नि:मरित तत्रादिने च द्वादशी तदा तां विद्या खण्डा-मुपोष्य द्वादायां पार्येत् यदा तु सभयदिने ति हिषेकादगौ त्रयादिने चन हादगौ तदा पष्टिदण्डास्मिकां विश्वासपोध परदिने हादगादापादमुत्रीधं पारयेत् वैणावस्त तवापि गुक्तपचे तु परासुपोच वयोदग्रां पारयेत्। एकादग्राप-यामः स्तकादावधि कार्थः। भविष्येत्तरं पद्मपुरागयोः। "एकादग्रां न भुजीत पत्त्रपोर्भयोरिप। स्तके सतके यापि पन्यसिन् वाष्यगोचके। सर्वद्या न परित्याच्या इच्छता श्यिमाक्षमः"। स्तियासु पुलस्यः। "एकाद्यानं सञ्जीत नारी दृष्टे रक्षम्यपि"। पात्रक्षं प्रति नारदीयम्। "बनुकस्पी नृणां प्रोतः घोणानां वरवर्णिन । यागुपुराणे "उपवास निषेधे सु कि चित् भधां ग्रकस्पयेत्। न दुखेदुपवासेन छप-वामकलं समेत्र प्र

ष्णवामनिषेषासामर्थयोर्भच्यप्रकागमास नारदीये।
"मूनं फलं पयस्तीयम्पभीग्यं भवेत् ग्रमम्। नत्वेवं भीजनं
केवित एकाद्यां प्रकीतितम्"॥ एवमित्यत्वक्यातिरिक्तम्।
'पद्मपुराणे "नक्तं द्रविव्यात्रमनीदनं वा फल तिनाचौरमवास्वुचान्यम्। यत्पञ्चात्र्यं यदिवाय वायुः प्रशम्तमत्रोत्तरमुत्तरख्"॥ फलाहागदावणि तुनसीरिहतन्त्वे द्रोपमास गरुडपुराणम्। "तुनसी विना या क्रियते न पृजा सानं न तद्यभुनसी विनाक्ततम्। भुक्तं न तद्यन्तुनसीविवर्जितं पौतं
न तद् यन्तुनसीविवर्जितम्"॥ यत्र यौभगवद्याय्यम्। "मच्छयन मद्याने मत्यार्थपरिवर्जने। फलमूनजनाहारी हृदि
प्रत्यं ममार्पयेत्"॥

ष्टविषात्रमाइ सृति:। हैमन्तिकं मितासिकं धार्यं सुक्षा यवास्तिनाः। कलाया कङ्गनीवारा वाम्तुकं हिनसी-चिका। पष्टिका कालगाकच सूलकं केमुकेतरत्। खबणे सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दिधिमिपियो। पयोऽनुद्रुतसारद्य पन-साम्बद्धरोतको। तिन्तिडोजोरकष्ट्रैव नागरङ्ख पिप्पनीर कटलौ लबलो धाबो फलान्यगुडमै घवम्। धरौनपक्षं मृन-यो इविषातं विद्ध्धाः"॥ चत्रासिन्सित्युपादानादन्यत स्वित्र धान्यतगडुसे न दोषः। इमन्तिकमित्यभिधायागस्य सिक्षतायाम्। नारिकेनफलञ्चेव क्षदनीं नवनीन्तया। चाम्यमामनकद्वेव पनस्च हरोतकीम्। व्रतान्तरप्रयस्त् हवियं मन्दरे व्धाः। अज्ञौतु मनुः रह्मपरिशिष्टच "प्रभुः प्रथमकत्यस्य योऽनुकत्ये प्रवर्तते। न माम्पराधिकं तस्य द्रभंतिविद्यते फलम्"॥ इति। चनुकर्षेऽपि विणूपामनं पारणश्च कर्त्तव्यम्। "एकमक्तेन नक्तेन तथैवाया चितन स। छपवासेन दानेन नैवाद्वादिशिको भवेत्"॥ इति माद्यग्रेय-, वचनात् दानेन ब्रह्मवैवर्त्तीक्षेन। यथा "उपयामासमर्यये-देकं विप्रन्तु भोजयेत्। तावडनानि या दघाद् यद्वक्ष दिग्णं भवेत्। सहस्रसम्भितां देवीं लपेहा प्राणमंयमान्। कुर्यातु हादयसंस्यकान् यथा गिता वते नरः"॥ देवीं गायहोम्। माख्ये। "दश्रम्यां नियताष्टारी मांस्रमैयुनविज्ञतः। एका-

दशा न मुझीत पद्योग्भयोरिष"॥ स्रिमन्तोषे "कास्य माम मस्रद्य चनक कोरदूषणम्। भाक मधुषगद्मञ्च त्यजी-दुपवसन् स्तियम्"॥ चनक कोलेतित्यात अलोपवसांवति तद्नि भोजनासम्यवात् सामोग्यात पूर्वापरयाग्रेष्टणम्। स्वृति। "शाक माम मस्रद्य पुनर्भाजनमेथुने। द्यूतमत्य-म्बुपानस्व दशस्या वैषावस्यजीत्"॥

स्पृति । "प्रात सस्यां तत कत्वा सहस्य बुध पाचरेत्"।

वाराई "ग्रहीखोड्म्बर पाच वारिपूर्णमुद्दस्तु व । उपवारान्तु ग्रह्मीयात् यहा वार्य्यव धारयेत्। एकाह्म्या निराहारो भूत्वा चैवावरेऽहिन । भोत्येऽह पुण्डरीकाच । प्रारण मे

भवाचुत ।" ॥ यहाँति ताम्यपादाभावे चनमाद्य ग्रह्मीत्वा
सहन्ययेदित्ययं । कान्तराधवीयप्रतस्तान्दे "उपवासन्तु
सहत्या मन्त्रपृत जल पिवेत्"॥ मन्त्रमाष्ट कात्याग्रन ।
"ग्रहाचर्ण मन्त्रेण विजेपेनाभिमन्त्रितम्। छणवासफल
प्रेषु पिवेत् पातगत चनम्"। पाचमनवचाद दूपणम्।
तत प्रार्थयेत्। "इट वत मया देव। ग्रहोत पुरतस्त्य।
निविद्रा सिविभाग्रोत त्वत्यमाटाज्यनादेन।"॥ ब्रह्मपुराणम्।
"एकादग्याभुभे पचे निराहार समाहित । सपूच्य विधिवदिणा यह्मा सुममाहित । याति विण्यो पर म्यान नरा
नास्यच भग्रय ॥ वृत्तिहपुराणम्। "उपवामी नर्येष्ठ। एकारस्ता विश्वीयते। नरिनेह समार्यंच सर्वेषापे प्रमुच्यते" ॥

हादगीमधिकता कात्यायन । "पात सात्वा हरि पृत्य उपवाम मूमपेयेत्। श्रज्ञानितिमिगन्धस्य व्रतेनानेन केशव । ॥ प्रमीद समुखो नाधरित्रान्दिष्टिप्रदो भव । मन्त्र निविद्यो हरिय निवेद्योपोपणम तती । हादग्या पारण कुर्खात् वर्नियत्वा न्यादकीम्"॥ स्पिटकी पृतिकाणाकम् । हादगीनगुने देषसाह नारदीयम् । "श्रद्धास्तिक्षरी द्वापा हादगी निविता त्रणाम् । कृत्या । कृषानुस्त्रमगतीना यतिभेत्र । समारापंत्रमग्नाना प्रमोट मधुस्तन।" ॥ इत्वननापि निवि देशस्त्रक्ष । विष्युधर्मित्र 'हादग्या प्रयस पादा हिन्दिस्य देशस्त्रक्ष । तमितक्षम्य क्षवीत पारण विष्युतस्तर हिन्दि म्मृति: "कनादीं द्वाद्यों दृष्टा निगौषादूर्द्व मेव दि। भाम-ध्याद्धाः क्रियाः मर्वाः कर्त्तव्याः ग्रभुगामनात्"॥ निगौषा-दूर्द्वं सादेपद्वरत्रयोषित्। श्रवामामर्थ्यं कात्यायनः। "सम्ध्या-दिकं भवेत्रित्यं पारणन्तु निमित्ततः। श्रद्धिन्तु पारियता तु नैत्यिकान्ते भुजिक्तियाः"॥ ब्रह्माण्डपुराणम्। "कांस्यं मांसं स्रा चोद्रं लोभ वित्रथमाषणम्। व्यायामञ्च व्यवायञ्च दिवा स्वप्न तथाञ्चनम्। शिनापिष्टं मस्रांश द्वाद्योतानि वैणावः। द्वाद्यां वर्जयेद्वित्य सर्वपापैः प्रसुच्यते"॥

नामनपुराणे। "एकादम्यां नगत्सामि गयनं परि-कल्पयेत्। भेपाद्वि भोगपर्यद्व क्रत्वा मंपून्य केमवम् ॥ भनुद्धां व्राह्मणेभ्यय दादम्यां प्रयतः ग्रन्तः। नय्या पौता-भ्यरधरं देव निद्रां ममानयेत्"॥ भनुद्धां लय्या दति भन्वयः। एकादगोसमये दिवामयनं परिकल्पयेत् राष्ट्री द्वादमीचणे निद्रेति।

व्यतं वराहे। "बाघाढ़ गुक्तदादम्यां पौणमाम्यामयापि वा। चातुर्माध्यवतारमां कुर्व्यात् कर्कटमंद्रमे॥ घमावै तुत्रार्केऽपि मन्द्रेण नियमं व्रतौ। कार्त्तिके गुक्तदादयां विधिवसत् समापयेत्॥ चतुर्धापि हि तश्चीर्षं चातुर्मास्यं वतं नरः। कार्सिक्यां शक्तपचे तुद्दादग्यां तक्समापयेत्" 🛭 मात्यो। "चत्रो वापिकान् मामान् देवस्योत्यापनावधि। मधुखरो भवेतिय नरी गुडविवर्जनात्॥ तैनस्य वर्जन।देव सुन्दराष्ट्रः प्रजायते। कट्रेनिपरित्यागात् शमुनागः प्रजा-यते। नभते मलाति दीर्घां स्थानीपाकमभचयन्। सदा मुनि: मदा योगी मधुमां मध्य वर्जनात्। निराधिर्नीदगी-खखो विष्णुभक्षय जायते॥ एकान्तरोपवासेन विष्णुसोक-मवाप्रयात्। धारणायतनोमाञ्च गद्वाचानं दिने दिने ताम्य वर्षनाहोगो रक्षकष्ठय जायते । पृतत्यागात् सुलावष्यं सर्वे सिध वपुर्भवेत्। फलत्वागात् सतिमान् वरुपुत्रस् जायतं' ॥ ''नमो नारायणायति जञानगनजं फलम्। पादाभिवन्दनाहियोनिमेहोदानमं फनम्। एवमादिवतैः पार्थ ! तुरिमायाति केमवः" । सनक्तमारः "इदं वतं सया

देव ! गरहीतम् पुरतस्तव । निर्विद्यां सिहिमाप्रोत् प्रमित्नं त्वियं कियव ! । गरहीतेऽछिन् वर्त देव ! यद्यपूर्णं त्वहं किये । तको स्वत् संपूर्णं त्वत्प्रसादाक्ष्यनार्दन !"॥ समाप्ती च "इद वर्तं मठा देव । करं प्रीत्वे तव प्रमो ! । न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसाद्यान् त्वाचार्तन ।"। भवेव यतिमिक्षक्रत्य कारकारद्वान् "वकरावं वमेत् प्रामे नगरे पश्चराव्रकम् । वर्षाभ्योऽन्यव्र वर्षासु मासांस् चतुरी यमेत्" ॥ पतद्यक्षाविषयम् । "कह्वं वार्षिकास्यां मासाभ्यां नैकस्थानवासी" ॥ इति शहीकोः ।

मात्यो। 'भोते विणाः सदापाढे भाद्रे च परिवर्तते। कासिके परिबुधीत गुक्कपचे इर्रार्टने"। सविधनारदीययोः। "मैवाद्यपादे स्विपतोष्ठ विष्युवेषात्र्यमध्ये परिवर्तते च। पीणावसाने च सुरास्टिना प्रवध्यते मामचतुष्ट्येन"॥ मैनमन्राधा। वैणायं अवणा पौणां रवती। अविषा। "निशिखापो दिवोत्यानं सन्यायां परिवर्तनम्। श्रान्यत पादयोगिऽपि द्वादम्यामेव कार्येत्"॥ अन्यत खापादिवि-हितराव्यादीतरकाले दशमी प्रतिषदीय। "किलाकीवाद्य-पार्देन दगस्यमिन यो दिवा। पौचामिष किन्तेन प्रति-पदाय यो निशिष दगस्यंग्न दशस्या अभो यस पादे तेन। यः पादो दिवापाग्रक्तेन वा किस्। भन्न समामी प्रतिपदोर्ध-जेनात् तर्दितरैकार्यमादि पश्चतिचिषु भैवादिनचव पाद-विशेषनाभैऽपि हादगीं विनापि शवनादिशित प्रतीयते। वचनात्तरं ''रवलकी यदा रावी हाटगा च समायुत:। तदा विज्धात विषा दिनान्ते प्राप्य रेवतीम् ॥ दिनान्ते विधाविमसदिनद्यतीयमागि दिवोत्यानिमत्वसुरीधात्। विष्णु-धर्मोत्तरे। "विषास्थित सस्विति न च राद्री प्रबुध्यते। द्वारम्याग्यस संयोगे पादयोगी न कारणम्। समाप्ते दादगी-ग्धी अधानग्रधन हरें। पादयोगित कसंयो नाहीगान विधिन्योत् ॥ यशास्यगणम्। "हादगरां मन्त्रिमसये नरावाणाममभवे । चासाकामितपरीयु मयनावस्ताद्किम् ॥ पामाकामां पापादभाद्वार्शिवानाम्। तत्र दाटच्याः निमादो नसमसावयागात् सारमाग्याभाषे तिथलार

निशाद्यनादरेण पादविशेषयोगात् तदभावे दादश्यां सत्या-यामेव शयनादिकं वीधनन्तु द्वादश्यां रावी रेवत्यन्तपादयोगि दिनव्हतीयभाग इति विशेषः। शयने मन्त्रमाइ वराइपुरा-णम्। "नमी नारायणेत्युक्षा इमं मन्त्रमुदौरयेत्। मेघान्यपि मेघग्यामं ह्यपागतं सिच्यमानं महीमिमां निद्रां भगवान् ग्टह्मातु सोकनाथ वर्षास्त्रिमं पश्चतु मेघष्टन्दम्। ज्ञात्वा स् पश्चैव च देवनाथ मासासत्वारि धेकुएउम्य तु पश्चनाथ। ततस्र "सप्ते त्वधि जगनाधे जगत्सप्तं भवेदिदम्। विवृद्घे त्वधि ब्धेत जगत् सर्वं चराचरम्"॥ इत्यनेन पूजयेत्। पार्खं परिवर्तने तु। "वासुदेव ! कगदाय ! प्राप्तेयं हादगी तव ! पार्खेण परिवर्तस्य सुखं स्विपिष्टि माधव !"। इति पठेत्। "लिधि सुप्ते जगनाये जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विवृद्दे लिधि वुध्येत जगसर्वं चराचरम्"॥ इत्यनेन पूजयेत्। नैयत-काम्निककरपतरी ब्रह्मपुराणं काक्तिकग्रह्मपद्ममधिकत्य। "उपवामः प्रकर्त्वय एकाद्यां प्रकागरः। द्वादग्यां वासु-देवस पूजितचाः प्रयदातः"। छत्यानसन्तस्तु "सहेन्द्र सद्रैर-भिन्यमानो भवानृपिषवन्दितवन्दनौयः। प्राप्ता तवैयं किस कोमुदाच्या जाग्यच धाग्यच चनोकनाया ॥ मेघा गता निर्माच-पूर्णचन्द्रः शारदापुष्पाणि च मोकनाथ !। षष्ठं ददानीति च पुर्वाहेतोर्जाग्यव जाग्यव च मोकनाद्य !"॥ ततः "उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यन निन्द्रां नगत्तते !। त्या घोत्यौयमानेन हित्यतं सुधनत्यम्"॥ इति पठित्वा पूजयेत्।

मत्यपुराण भीमं प्रति भगवद्दाकां "यदाष्टम्यां चतुर्देग्यां द्दिग्यां स्वाद्ग्यां स्वादंग्यां द्दिग्यां सारत !। द्रम्येद्यपि दिनचीपु न यक्तस्वमुपी-पितृम्॥ ततः पुण्यामिमां भीमतियां पापप्रणाणिनोम्। उपोष्य विधिनानेन गच्छे विण्योः परं पदम्"। भीमतियिं भीमतियित्वेन स्वातामेकादगीम्। विम्तारस्वे कादगीतवि-अनुक्रवेदाः। विश्वापर्मे "स्वादगीमें स्वाद्यां स्वादगीने सार्वे सार्वि प्रति पचे मीपवामी जितिन्त्रयः। द्वादग्यां पर्तिनाचार कत्या पापात् प्रमुणते। तिनद्वायो तिनोद्वां पर्तिनाचार कत्या पापात् प्रमुणते। तिनद्वायो तिनोद्वां विख्योमी तिनोद्वां विद्यायां पर्तिनीद्वां। तिनद्वायां स्वाद्यां विद्यायां स्वाद्यां विद्यायां स्वाद्यां विद्यायां विद्यायायां विद्यायां विद्यायायां विद्यायां विद्यायां विद्यायां विद्यायायां विद्यायां विद्याया

नावसीदति। सलमु पट्तिमी भृत्वा मर्गपापैः प्रमुच्यते। विश्वद्यसप्तसाचि स्वर्गनोके महोयते"।

चय हादगी। सा च एकादगीयुता पाद्या युग्मात् नारदीये। "येणाध्यम्भवने तु हादगी थेणावी तिथिः। तन्तां
गीतस तीयेन खापयेत् केणवं ग्रचिः"। हयं पिपीतक हादगी
यव "पहीममेता कर्त्तथ्या मसमी नाहमीयुता। पत्रद्रीपासनायेह यहगमाहृदपीयचम्। एकादग्यां प्रकृतिन्त् छपवासं मनीपिणः। छपासनाय हादग्यां विन्तियहित्य
तथा"॥ इति भविष्य प्राणिन एकादग्यपवामानन्तरं हादग्यां
विष्णुपासनाया छल्लादवापितया ध्यवहरन्तीति नाव युग्मादरः। हादगीचयेत्पवासानन्तय्यं विनापि पृत्ति। ह्यं
पूर्ववचनीक्रयहीयुता सप्तमीवत् द्राधादद्वादिषु ग्रयनादिकं प्रासुन्नवचनात्।

सिवयोत्तर। "द्वादभी अवजीवेता सर्वपापहरा तिथि:। व्धवारममा युक्ता ततः गतगुणा भवेत्। तामुपीप्य समाप्नीति होदग होदगीफनम्"। छभयदिन तज्ञाभे सु एकादगी युता श्राह्या। "द्वादगी च प्रकत्त्वा एकादग्याप्रता विभो। मदा कार्याच विद्वविष्याभक्षेय मानवैः ॥ दति म्कान्टात्। यदात्वेकाद्ग्रामेव यवणा तदा तासुप्यमेत्। तथा प नारदः। "याः काधिक्षिययः प्रोक्षाः पुख्या नचवयोगतः। ताखेव सद्दत कुर्यात् अवगद्दादशी विना"॥ भविष्योत्तरे। "एकादशो यदा तु खात् यवमन समन्विता। विजया मा तदा प्रोक्ता भक्तानां विजयप्रदाः तिथिनचयमग्रीरी उपवासी यदा भवेत्। तावदेव न भोज्ञाच्य यावचैकास्य सत्तयः। विग्न-पेण महीपाल यवणं वर्रते यदि। तिधिचयेण भौक्रव्यं द्वादशीं नैद सहयेत्"। तिथिचयेष एकादशोधयेण भोज्ञव्य दादग्रा पारवेदिखर्यः। यत हेतुः दादगीमित्यादिः। यदालेकादशापवासदिने यवण नास्ति प्रदिने हादभगं तत् तदोपवासहयमाह ब्रह्मवैवनीः। • "एका-दगीमुपोर्येव हादगीं समुपोद्येत्। नवात विधि-चीप: सादुभयोदेवता इशिः"॥ यह च "श्रमसाप्ते वते पूर्वे नैव कुर्यात् व्रतास्तरम्"॥ इति स्नृतेः पारणस्याकरणेन
पूर्वीपवासासमासावुषवासास्तरारको विधिनोपो न भवेदित्यर्थः। हेतुमा इ अस्योरित्यादिः। इस्योपवासासामर्थे तु
यवणहादग्रेपवोषोप्या तथा च स्नृतिः। "वरमेकादभी भुक्ता
हार्टभी समुपोषयेत्। पूर्वीपवासजं पुख्यं सर्वं प्राप्नोत्यसंगयः"। तथा "उपोष्य हादभी पुख्यां विश्वाच्रत्वेण संयुताम्।
एकादग्राइवं पुख्यं नरः प्राप्नोत्य संशयः"॥ हादग्रापवासः
कास्यः। तथा ह सार्कण्डः। "हादग्रामुपवामेन सिहात्मा
नृषं। सर्वगः। चक्रवस्तित्वमतृषं संप्राप्नोत्यतुनां श्रियम्"॥

अत काम्निमापुराणात् भक्तीत्यानविधिसिस्यते। "श्रयातः युण् राजेन्द्र ! शकीत्यान्धजीत्सवम् । यत्कृत्वा सूपतिर्घाति नी कदाचित्पराभम्। अज्नोऽप्यक्षकणेस प्रियकोधव एव च। चौड्खरय पञ्चेते केल्वर्ये मत्तमाः स्मृताः। अन्येच देवदा-र्घाद्याः गानाद्यास्त्रवस्त्या। तञ्च वृत्तं तुदेद्रात्रौ सप्शामन्यः मिमं पठेत्"॥ तुदेत् च्छेदयेत्। "यानि हने तु भूतानि तेभ्यः खम्ति नमोऽस्त् वः। उपहारं ग्टहौलेमं क्रियता वामव-ध्वजः ॥ पार्थिवस्वां वरयते स्वस्ति तेऽस्तु नगोत्तमः । ध्वजार्थं टेवराजस्य पूजीय प्रतिग्रह्मताम्॥ ततोऽपरे ऽक्कि तं च्छिला मूनमप्टाङ्गल पुनः। जसे चिपेत्तदग्रम्य च्छित्वैवं चतुरङ्गलम्। ततो नीत्वा पुरद्वारं केतुं निर्माय तत्र वै। शुक्काष्टम्यां भाद्र-परे केतुं वेदिं प्रवेशयेत्। दाविशहस्तमानस्तु यथमः केतु-नचते। हाविंग्रन् ततीच्यायान् हाचलारिंगदेव तु। कुमार्थः पञ्च कर्त्तव्याः शक्रम्य नृपमत्तमः । शालमय्यस्त् ताः सर्वास्व पराः शक्रमात्रकाः । केतोः पादप्रमाणेन कार्याः शक्रकुमा-रिकाः । माद्यकाहेप्रमाणात्त् यन्तं इस्तद्यं तथा। एवं क्षता कुमारीय माद्यकां केतुमेव च। एकादग्यां सिते पचे यष्टीनामधिवामनम्। अधिवास्य ततो यष्टिं गश्रदाराद्दि-भन्तकै:। द्वादभ्यां मण्डलं सत्वा वामवं विस्तृतासकम्। अय्तं पूजियतादो शक्षं पद्यात् प्रपूजरेत्। शक्षय प्रतिमां कुर्यात् कानकों दारवीं तथा"॥ कानकीं कनकमयीं "झन्य-तैजसभूतां या सर्वाभावे तु स्यमयोम्। तां मण्डलस्य मध्ये

तिशयार्थः। गुणविशेषे पञ्चविशेषः खादिति न्यायोते। च्यतं वियोधमीनिरे। सवायुक्ता च तवापि शसा राजं क्तयोदशी। ततासयं भवेच्छादं मधुना पायसेन च तवाख युक्कणायचे भव यत्त्राष्ठं तमाधु योगिन पायम-योगेन वास्य भवेत्। एवं मनुश्वते यस्तिश्विनाधुना मित्र इत्यनेन सधुमावयुक्तत्वमुक्तम्। यतोऽच स्तरां शृद्खाम्यः धिकारः। यत गजच्छाया योगे फनातिशयः। तथा च क्तयचिन्तामणी स्कृतिः। "क्षण्यचे वयोदश्यां मधासिन्दः करेरवि:। यदा तदा गलच्छाया याह्रे पुराशेखाध्यते ॥ करे इस्तानसवे सम्बादशमां शोपरिसपादवयोविंगांश इति यावत्। प्रविभागानामपात प्रथम् यावमावभ्यकम्। यथा यादचित्तामणी समृति:। "विभक्ता प्रविभक्ता वा कुर्यः शाहमदैविकम्। मघासु च तद्यान्यत नाधिकारः पृथम्बिना" ॥ चदेविकं प्रवास्दिकें के दिष्ट चन्य सप्तापचादी नाधिकारः न निव्याधिकार:। "सपिएडोकरणान्तानि यानि श्राहानि योडम। प्रवक्तिव सुताः कुर्याः प्रयाद्व्या यपि किचित् दस्रवापिना समुज्ञितानाम् अष्टयग्ट्रयायां पुंचां स्पिग्डी-करणान्सानीति विशेषणात् तद्त्रस्थाद्यामां पृथक्करण-मपि प्रतीयते। मघावयोटगौनिमित्तक याह्ये पुत्रवता पिएडा न रेगा: "भौजड़ी तिधिमासादा यावश्चन्द्राक्षेमइसम्। तवापि सहतौ पूजा कर्त्या पिट्टदेवते। ऋचे पिएइप्रदा-नन्तु ज्येष्ठपुर्वी विवजंयेत्"॥ इति देवीपुराणात् भीजद्वी पञ्चमो चन्द्राके सद्गमम् अमावास्या पिस्रदेवते ऋचे मचा-याम्। श्रातातपः। पिण्डनिर्वापरितं यत्तं स्वाइं विधी-यते। स्वधा वाचनसोषीऽत्र विकिरस्त न सूर्यते। बद्ययः देखिणा खाँचा भीमनस्यं तथास्विति"॥

स्कन्दपुराखें ''दाइणेन समायुक्ता मधी खणा। चयोदशी। गङ्गायां यदि लभ्येत स्थिपध्यतैः समा"॥ वाक्णं यत-भिवा। "शनिवारसायुक्ता सा महावादणी कृता। गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिस्ध्यपहैः समा। ग्रमयोग समायुक्ता ग्रमी यतिभवा यदि । सदामहिति विख्याता विकोटि कुलसुद्ध-

रेत्" ॥ कुलं पुरुषमिति याज्ञवल्कादीपकलिका। तथा च मेदिन्यां "कुलं जनपदे गोवे सजातीयगणेऽपि च। भवने च तनौ स्रोव कर्एकार्योपधी कुन्ते"॥ अव संज्ञाविधेः सार्यकलाय निभिन्नलेन मासपश्वतिव्युक्षेखानन्तरं मद्दा-वार्णो सहामहावार्णावृज्ञेखनीये आहे पार्वणादि संज्ञी-से खनत् पौर्णमास्यमावास्ययाः पत्तो सेखवस् । "मासपत्त-तियौनाञ्च निमित्तानाञ्च सर्वेगः। एक्सेखनसकुर्याणी न तस्य फलभागभवेत्"॥ इति वचनात्। तेन चैत्रे माि क्षणेपचे वयोदयां तियी सप्तावक्यां सप्तामप्तावाक्यां यधाययं प्रयोज्यम्। वारस्तु स्योदयादुदयान्तरं यावत् तया च स्थि सिद्वान्तः "स्तकादि परिष्केदा दिनमासान्दपा-स्तथा। मध्यमग्रहभुक्तिय सावनेन प्रकीत्तिताः। उद-याद्दयाज्ञानीभौम सावन वासराः"॥ दिनाधिपस्य रथाः देभीत्यं दिनं वारक्षं सावनगणनेनीतां भौमेति पित्रादि-दिनवाहस्वयं कीमं पाद्मयोः "हो तिथन्ताविकवारे यव स्यात्स दिनचयः"॥ वशिष्ठः। "एकसिन् सावने लिक्कि तिथीनां वितय यदा। तदा दिनचयः प्रोक्तस्तव साइसिकं फलम्"॥ दूत्येतयोर्वचनयोरेकवाकातयापि तथावगस्यते। विखापृर्वीपरयोशित्यादिकन्तु च्याति: ग्रास्त्रीतं कालदोगदि-ज्ञानार्थमिति। अव "संकान्तियु ध्यतीपाते प्रश्रेष धन्द्र-सुर्यायोः। पुष्ये झात्वा च गङ्गाया कुलकोटीः समु**ष्टित्<sup>ण</sup> व** द्ति ब्रह्माएड पुराणात् यदणमात्रे विकोटि कुलोडरणविधाः नात् ततोऽधिकेष् वाक्षादिष्रोत्तरगुक्षु महामहावादिलाः मिय यत् विकोटि कुनोडरणमुक्तं तटुडरणगततारतम्येनावि-क्डम्। "ययक्रतुमधीते च तस्य तस्यामुयात् फलम्"॥ इति याज्ञवस्कारीक्षाध्ययनात् यद्या तत्तद्यागकर्षेऽधिक फलम् अतएव शिष्टानामादरोऽपि तथित। न चाव "सानं कुर्वन्ति या नार्ध्यक्ट्रे शतभिषा गते। सप्तजना भवेयुस्ता दुर्भगा विधवा भ्वम्" ॥ इति। "वयोदम्या छतीयाया दमस्याञ्च विशेषतः। श्रूविट् चितियाः सान नाचरिषुः कयस्न" इति प्रचितीनावालवचनाभ्यां स्रीणां शुद्रादीनाच सान्निवेश

भोननं सुर्यात् "उपवासे त्यात्तानां नतं भोजनिम्बते" इति तहृतवस्तात्तात् प्रयुद्धा चेत् पूनां कारयेत्। सायि-काषोपवासादिनं सदा श्रद्धा प्रगुद्धा च स्वय क्रियते। एवं स्मृतिपारिभाणिकायां वर्दमानोपाध्यायाः। नारदः "दिवाभागे त्रयोदस्तां यदा चतुर्दशो भवेत्। तत् पूज्या सहासाध्यो देवो सत्यवता सह"॥ दिवाभागे दग्डद्धयमात्र सन्तेऽपि प्रतएव प्रदोपे त्रतभाचरित्त। पूर्वाह्ये तिह्वस्त्वऽपि पराह्ये विसन्त्य-व्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्यव्यापित्ये त्रवाह्या एव विसन्त्र्यव्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्यव्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्यापित्ये पराह एव विसन्त्र्याचित्रं त्रयाविधा तदापि पराह एव वधा च्योतिषे "चतु-दंग्याममावास्या यदा भवित नारदः। छपोष्या पूजनीया सा चतुर्दग्यां विधानतः"॥ सा सावित्यो। तत्यामावास्यायां सावित्योवत्रविधानं श्रिवाघोरिति वचनन्त्रे तत्यरम्। पराग्ररः। "सावित्योमर्वयत्वातु फलाद्यापरःऽद्वि। तत्याविधवा नारी वित्तभोगान् नभेत सा"॥

भविषोत्तरे "भाद्रे मास्यमित पद्ये भवीराच्या चतुर्दशी। तामुपोष्य नरो याति शिवसोकमयत्रतः"॥ सविष्ये "सन्तरः व्रतमितिक सर्वपापक्षं गुभम्। सर्वकामप्रदं नृणां स्त्रीणा-श्रुव युधिष्ठिर !॥ तथा श्रुक्तचतुर्य्यां मामि भाद्रपदे भवेत्। तस्यानुष्ठानमाविण सर्वं पाप पणश्यति"॥ व्रतार्भप्रतिष्ठयो-र्वज्यवासमाइ ज्योतिषे। "गुरोस्गोरस्तवास्य यार्वकं सिंडके गुरी। विकिजीवाष्ट्रियोऽद्धि गुर्वीद्त्ये दशाहिके॥ पूर्व-राभावनायातातिचारि गुरुवसारे। प्रायाभिगन्तुजीवस्य चातिचारे विपचने॥ कम्पादाङ्गतसप्ताहे नीचस्थेन्ये मिन-मन्ति। भानुलक्षितके मासि चरी राष्ट्र युते गुरो॥ पौषा-रिकचतुमसि चरणाक्रितवर्षणे। एकेनाक्रा चैकिस्ने हिली-चैन दिनचये॥ एतौयेन तु सप्ताह माङ्गस्यानि ग्रुमान्विताः। विद्याग्या कर्णकेती भूदोग्नयकोत्दरान्॥ सीधसानमनाहुसं नयानादिसुर्चणम्। परौचा रामयद्रांय पुरसरणदीचणे ॥ वतारका प्रतिष्ठे च स्टहारक्षप्रवेशने। प्रतिष्ठारकाणे देव-कूपादेवं जैयन्ति च॥ दावियदिवसाद्यास्ते जीवस्य सार्गवस्य तः दासमतिमद्यदी पादाखे दादशक्रमात्॥ श्रस्ति

प्राक् परयोः पर्च गुरोर्वाईकवालते। पर्च हडी महास्ते तु भगुर्वासोदयाधिकः। पादास्ते तु दयाद्वानि ष्ट्रधो बासी दिन-व्रयम्"। नच "मधाक्ते भोज्यवेनायां समुत्तीर्थ सरित्तटे। ददये यौला सा स्वीणां समूहं रक्षवाससाम्। चतुर्दश्यामर्च-यन्तं भक्षा देव प्रयक् प्रयक्"॥ इति भविष्योत्तरीयानाधाञ्च-व्यापिमो तिथियां होति वाच पूर्वाह्नो वै देवानामिति शुखा-दिभिः पूर्वाह्वे दैवक्वत्यविधानात्। विध्यसमभिव्याद्वतार्थं-वादेन तद्वाधायोगात्। किन्तु तस्यैव गौणका सबोधक तत्। कालमाधवौयोऽप्येवम्। भविष्येऽपि पूजाविधायको मध्याद्भी नोत्तः यथा "सत्वा दभमयानन्तं वारिधान्यां निवेश्य च। पूजयेद्रस्पपुष्पाद्यैनैवेद्यैविविधेरिप ॥ चतुर्दशपत्नैभूलैर्जनजैः कुसुमैरपि। यवगोधूमणालौनां चूर्णनैकतरस्य च॥ क्रत्वा पूप इय तस्मै ददादेनं प्टतान्वितम्। खयमेकन्तु भुद्धौत करे बड्डा सुडोरकम्॥ चतुदेशप्रस्थियुक्तं सुड्डमेन विसे-पितम्। सुविन्यस्तं विष्णुनाम प्रतिग्रन्यिसमन्वितम्। चतुर्देशसूबमयं सूब कार्पासमेव च"॥ पूजाडोरकवन्धन-सन्तम्तु रत्नाकरे। "घनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नान् सम-भ्युद्दर वासुदेव !। भनन्तरूपिन् ! विनियोजयस्व धनन्तरूपाय नमी नमस्ते"॥ इति मन्त्रमुक्ता" उनेन डोरक बहुा भोक्तव्यं सुख्यानसे." दल्बई भविष्योत्तरीयं कालकौ मुद्यां लिखित-मिति तथा "वावोऽइ पापकर्माइं पापात्मा पापसम्भवः। वाहि मां पुरुरोकाच ! सर्वपाप हरी भव ॥ घटा मेसफल जना जीवितञ्च सुजीवितम्। यत्तवाद्दि युगालाग्रे सूर्धा मे स्त्रम-रायते"॥ द्रत्यास्या नसस्तुर्यात्। धनन्तकयामध्यव शृखन्ति ।

सेव कर्त्तव्यं सानं नरकभी हिभः ॥ सपामार्गपत्रवद्य । सवध्य-मेव कर्त्तव्यं सानं नरकभी हिभः ॥ सपामार्गपत्रवद्य भामये-च्छिरसीपरि। ततस तप्णं कार्यः धर्मरानस्य नामभिः। नरकाय प्रदातव्यो दौषः संपूज्य देवताः ॥ नरकाय नरक-निवृत्तिये। "प्रथीभिधेयोरैवस्तु प्रयोजननिवृत्तिष्णं इति निवृत्ताविष ताद्ष्यं रुखनेन चतुर्योविषानात्। प्रपामार्ग-

स्रामणसन्तः "प्रीतलीप्यममायुक्त सक्षण्टकद्वान्वित। इर यायमपामार्गः भ्राम्यमाणः पुनः पुनः॥ ततः प्रदोपसम्बे दोपान् ददाात् प्रयक्षतः । ब्रह्मविषाभिवादौनां भवनेषु मठेषु च"॥ सविधो "कार्त्तिक भोगवारे तु चित्रा क्षणाचतुर्दशौ। तसामाराधितः साणुनैयेच्छिषपुरं भुवम्॥ यां काश्वित् सरितं प्राप्य क्षणापचे चतुर्दगौम्। यसुनायां विग्रेपेण निय-तस्तर्पेयेद् यमान् ॥ यमाय धर्मराजाय सृत्यवे चान्तकाय च । वैवस्रताय कालाय सर्वभृतचयाय च॥ श्रीडस्वराय द्रभाय नीनाय परमेष्टिने । हकोदरायं चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥ एकैकस्य तिलैभियां स्तीं स्तीन् दयाञ्चनाष्ट्रमौन्। संब-सारक्षतं पापं तत्वगादेध नश्यति"॥ प्रवाचारात् चतुः देशशाकभचणञ्च कर्त्रेव्यम् ग्रव निर्णयासृतभृत "योलं केम्वाः वास्त्रकं सपपं काल इ निम्बं जयाम्। ग्रानिश्चि हिन मीचि-काचे पट्कं शोलफं गुडुचीं तथा॥ भग्टाकीं सुनिपग्छकं शिवदिने खादांन्त ये मानवाः। प्रेतत्व न च यान्ति कार्तिः कदिने क्षम्णो च भूते तिथी"॥ जयां जयन्तीं पटकं पटोनम्। भविष्ये "हथिके ग्रह्मपत्ते तुया पाषाण्चतुर्देगो। तस्यामा-राधवेदीरीं नहां पाषाणभीजने:"॥ पाषाणाकार्षिष्ट-भोजनैः। यमः "माचे मास्यसिते पत्ते रटन्यास्या चतुदशी। तस्यामुद्यविनायां स्नातो नावेचते यसम्"॥ षदयवेनाया-मक्णोदयवेलायाम्। "अनकाभ्यदिते काले माधे क्षणाचतु-र्यो। सतारयोगकाने तुत्रवसान महाफनम्। साता सन्तर्धतु यमान् सर्वपापै, प्रमुचर्तः । अस्र तिधिकात्यत्वात् गीणचान्द्रादरः। श्रवाकणीदयकाल एव सानं पृथितिच्तु-र्वगयमतपंगञ्च॥ यत् उदयवेनायां स्योदयवेलायां अनला-म्युदित इतीपद्धें नेजिति व्यास्यानं तत् समुद्रकरभाष्यभृत-सतास्योमेसानराडीनवनीकानेनेति।

यंघ भिवराविवतम्। कानमाधवीये स्तान्दे नागरखण्डं "माघमासस्य भेषे या प्रथमे फान्गुनस्य च। क्रय्या चतु-देशी सातु भिवरावि: प्रकीत्तिता"। भवेकस्यास्तिधेर्माधी-यसफान्गुनीयस्वे सुर्यगीणद्वतिस्थाम् भविक्वे ततस्तु

माध्यनन्तरा अतुदंशीधिवरात्रिः सस्यामुपवासः प्रधानं "न स्नानन वस्तेण न ध्रोन न चार्चया। तुथामि न तथा पुर्यो-र्यथा तत्रोपवासतः । इति ग्रङ्गरोत्तेः। स्कान्दे "तती रासी प्रकर्तव्य शिषप्रीणन तत्परै:। प्रहरे प्रहरे सानं पूजा चैव विशेषतः"॥ श्रव वीषया प्रहरचतुष्टयसाध्यं व्रतं प्रतीयते। नरसिद्धाचार्य्यभृतेखरसंहितायाम्। "यैवी वा वैषावी वापि यो वा स्यादन्यपूजकः। सर्वे पूजापलं इन्ति शिवरात्रिविधिमुखः"। संवत्सरप्रदोपे "दुग्धेन प्रथमे स्नानं दग्ना चैव दितौयके। द्वतीये च तथाज्येन चतुर्ये मधुना तथा" त देशानसंहितायां "माचे क्षणाचतुर्देश्यां रविवारी यदा भवेत्। भौगो वापि भवेदे वि! कर्त्तव्यं व्रतमुत्तमम्॥ शिवयोगस्य योगेन तद्भवेदुत्तमोत्तमम्। शिवराद्भित्रतं नाम पर्व-पापप्रणागनम्। पाचाण्डानमनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदा-यक्षम्"॥ नागरखण्डे। "उपवामप्रभावेण वलादपि च नागरात्। शिवरातेस्तथा तस्य निषुस्यापि प्रपूज्या। याद्यान् नभते लोकान् शिवसायुच्यमाप्र्यात्॥" पाद्मे "वर्षे वर्षे महादेवि ! नरी नारी पतिव्रता । शिवरावौ महा-देवं कामं भत्या प्रपूजयेत्"॥ ईग्रानसंहितायाम्। "एव-मेव वृतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं वृतौ। द्वादमाब्दिकमिति द चतुविंगाव्दिकं तथा॥ सर्वान् कामानवामीति प्रेत्य चेह च मानवः" हेमाद्रिष्टता स्मृतिः। "प्रदोपव्यापिनौ याद्या शिवं-रावि चतुर्दभौ"॥ पदोषमाह वत्मः। "पदोषोऽस्तमयादूर्द" घटिकाइयमियते"। एड्सिनन्तरम्। धायुपराणे। "वयो-दश्यस्तरी सूर्यं घतस्विष नाडिषु। भूतिविषातु या तव शिवराबि व्रतश्वरत्"॥ ईग्रानसंहितायाम्। "माघे कण्ण-चतुर्द्रायामाद्दिवो महानिशि। शिवलिइतयोद्गतः कोटि-स्यंसमप्रभः॥ तत्कानव्यापिनौ याद्या शिवस्यविद्यते तिथि:! 📑 चहरावादधधोर्ह युक्ता यव चतुर्दगो। चाप्ता मा दृग्यते यस्यां तत्यां क्यांत् व्रतं नरः"॥ चव "महानिगा हे घटिके रावेर्मध्यमयामयोः"। इति देवलोक्षा महानिया याद्या। घटिका एकदण्डः। एवस यहिन प्रदोपनियौद्योभयव्यापिनौः

चतुर्दशी तदिने व्रतम् उभयव्यास्यनुरोधात्। कानमाधः वीयोऽप्येवम्। एतेन परदिने सभयव्यापिलेऽपि पूर्वदिवसीय-रात्रि दितौधधामपश्तिचतुर्धशैसखे बहुपहरध्यापिलेन पूर्वदिन एव व्रतमिति निरस्तम्। यदा तु पूर्वेद्युनिशीय-यावचाप्तिः परेद्युः पदीपमाव चाप्तिस्तदा पूर्वेद्यूवंत प्रधानः बानवास्यनुरोधात्। "पूर्वेद्यस्यदेव्या भद्रानिधि चतुर्दयौ। व्याप्ता सा दृश्यते यस्यां तस्यां कुर्यात् व्रतं नरः"॥ इति र्द्रशानसंहितावचनाचा। एतहिषयण्य सविष्यपुराणम् "प्रके-रावात् प्रस्तानु जयायोगो भवेट् यटि। पूर्वविष्ठेव कर्तिया शिवराचि: शिवपियै:"॥ विष्णुधर्मात्तरे ''सयन्ती शिव-राष्ट्रिय कार्ये भट्रजयान्तिते। क्रास्त्रीपवामं तिथन्ते तटा क्याच पार्यम् ॥ तिष्यत्ते पारणं अयत्तीमाचपरम् सन चतुर्देखामेव तत्। "ब्रह्मागङोदगमध्ये तु यानि तौर्धानि सन्ति यै। पूजितानि भवन्ती ए भूतायां पारणे क्षते ॥ प्रति स्तान्दात्। "दिनमानप्रमाणेन या तु राभी चतुर्दशी। शिवगतिस्तु सा चेया चतुर्दश्यान्तु पारणम्"॥ इति गीत-गौयाचा यदा तु पूर्वदिनेन निशीयव्याप्तिः परिदेने प्रदोश-भावशाधिनौ तटा परा प्राञ्चा प्रदोपछ। धिनौति प्रागुक्तत्वात् निचे स्तिमस्यव्या पिलाच । एत हिपय एव लिङ्ग पुराणं "शिव-राविव्रते मूर्ता कामविष्ठां विवर्जयेत्। एकेनैयोपवासेन व्यक्षित्र व्यवस्थायाम्य पर्याम् "शिवा-घोग तथा प्रेता सावित्री च चतुर्रभी। सुह्युत्रीय कर्त्रथा लुहामेव हि पारणम्"॥ एति वचनात्।

तदयं संचिपः। यहिन प्रदोषिनशौधोभयवाधिनी चतु-देशो तहिन वतम्। यदा तु पूर्वद्यु निशीयव्याधिनी परेखुः प्रदोषमाचव्याधिनो तदा पूर्वद्यु व्रतम्। यदा तु न पूर्वद्यु नि-शौधव्याधिः परदिने प्रदोषव्याधिः परदिने प्रदोषव्यापिनो तदा परदिने। पारणन्तु परदिने चतुर्दशीलाभे चतुर्दश्या तदनाभे चमावास्थायाम्।

तव प्रयोगः। प्रातस्ट्यानः तत्सदिख्याखि सूधिः सोम यति पठित्वा जलादीस्थादाय सद्दल्येत् "मन्तेण्तिन रहियानियमं भित्रमासरः। शिवरातिवतं होतलरियेऽहं महाफनम्। निर्विघ्नमस्त् मे चारा खत्रमादाक्रगत्पते ! ॥ इति शिवरहस्यात् शिवरावि दल्यादिना नियम्य "चतुर्देग्या निरा-हारी भूला गमी ! इपरेऽहनि । भोच्येहं भुक्तिमुत्त्ययें गरणं मे भवेश्वर"॥ इति गर्डपुराणीयं पठेत्। रात्नी प्रथमप्रहरे प्रतिष्ठिते लिङ्गे प्रतिष्ठिते वा प्रतिष्ठा विधाय पूजां कुर्यात्। हीं ऋस्ताय फिंडिति पादघातत्त्रयेण विद्यादि सार्थ्य तेनैव तासत्रयेण करकोटिकया च टश्रहिन्यसन छत्वा भूतश्रदि विधाय हा हृदयाय नम इत्यादिना घडड़ानि खस्य होसिति मन्त्रेण प्राणायाम विधाय पूजरेत्। पार्थिवनिष्टे चेत्तदा वस्यमाण पूजाविधिना पूजरीत्। तत्राय विशेष:। हीं र्रेशानाय नम दति प्रथमप्रहरे दुग्धेन सापियता पुनर्जनेन स्नापयित्वा। "शिवराविव्रत देव पूजाजपपरायगः। वारीमि विधिषद्तं ररहाणार्घं सहिखर ! । इत्यनेनार्घे दत्ता गन्धा-दिभि. भपूष्य मूलमन्तं जिपता प्रणम्य गौतनृत्यादिभिन्तं प्रहरं नयेत्। "तह्यान तक्कपः स्नानं तत्क्षथायवणादिकम्। **छपवामसतौ द्वेत गुणाः प्रोज्ञा मनोपिभि." ॥ इति देवौ-**पुराणे सामान्यतः अवणात् अवापि तथा। दितीयप्रदरेतु विशेष:। हों श्रघोराय नम इति दक्षा स्नानम्। श्रघ्य-मन्त्रस्तु "नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च। शिवरात्री ददास्यर्घा प्रसीद उमया सह"॥ खतीयपहरे तु ही वाम-देवाय नम इति धृतेन स्नानम्। श्रद्यं मन्त्रन्तु "दु. खदारिद्र-भोकेन दम्धोऽह पार्वतौद्धर !। शिवरावौ ददास्यर्घमुमाकान्त ! ग्रहाण में"॥ चतुर्थ प्रहरे तु हीं सद्योजाताय नम इति मधुना स्रानम्। अर्घ्यमन्त्रस्य स्तान्यनेकानि पापानि इर शद्दर्। शिवरावी ददास्यध्ये उसाकान्त । रटपण से ॥ तती नमः गिषाय इति सूनमनां सिपत्वा प्रभातेऽविद्येन इताहि वस्यमाणमन्त्रान् पठित्। तयाच गत्रप्रपुराण "सूत्रमन्त्र ततो ज्ञा प्रभारी ततामापयेत्। चविद्येन वतं देव! तत्रमा- 🔻 दात् समर्पितम्॥ चमच जगतां नाय ! वैनीव्याधिपते। हर् !। यमायाद्य छत पुष्प तष्ट्रहस्य निवेदितम्॥ व्यत्प्रसादान्या

देव ! व्रतमदा समर्थितम्। प्रसन्नोभव मे श्रीमन् ! मद्मूर्तिं प्रतिपद्मताम् ॥ तदानोकनमावेण पविवोऽसि न संप्रदः । परिने व्राह्मणान् भोनियता चतुई शीनाभे तव तदसाभे त्वमावास्यायां पारणं कुर्यात्। तव मन्तः "संमारको गदमस्य व्रतिनानेन शहर।। प्रसौद समुखी नाथ ! ज्ञानदृष्टि प्रदो भव"॥

पत पार्थिवशिवनिद्वपूजाविधिः। तत शिववाकां स्कान्दे "विप्रस्य तु सदैवाइं गुचे राप्य शुचे रापि। स्टब्लन् बालं प्रश्न-षामि पियाणामिव दर्शनात्"॥ विलिं पूजाम । तथा "शुद्रः कर्माणि यो नित्यं स्रोयानि कुरते प्रिये ॥ तस्याप्टमद्यां ग्रह्माम चन्द्रसग्डविभूपिते!"।तथा "नमोन्तेन शिवे नैव स्तीणां पूजा विधीयते"॥ एवकारेण प्रणवनिष्ठतिः। एवं शूद्रम्यापि तथा नृसिहतापनीये। "साविवीं प्रणव यजुर्नक्सीं स्तोजूद्र-योर्नेच्छन्ति। सावित्रीं प्रणव यजुर्नस्मी स्तीशूद्रो यदि जानी-यात् स मृतोऽधो मच्छति"॥ इति नेच्छन्ति पर्धान्तं घराप्रर-भाष्येऽपि लिखितम्। गोधिन्दभद्दधतम्। "स्वाद्या प्रणाव-संयुक्तं युद्रे मन्त्र ददह्विः। युद्रो निरयमाप्नोति त्राष्ट्रावः शुद्रतामियात्"। गौतमः। "रावावदद्मातः कुर्याहै वकार्या सदैव हि। शिवार्श्वनं सदाघ्येवं ग्राचि: कुर्यादुदझु छः"। सदा दिवारावौ। यव हेतुमाष रुद्रजामले। "न पाचौम-व्रतः भभोनेदिवे गिक्तिमंखिताम्। न प्रतीची यतः पृष्ठ-भतोदल ससाययेत्"॥ यजमानः शमोः प्राचीमवस्थितये न समाय्येत्। प्रामोर्डगत् महारक्याप्रतः सांमुखात् पद्म वक्षपचे प्रधान वक्षं प्राच्यवस्थितं एकवक्षपचे सुतरां तथा। तदूपमाइ प्रादिखपुराण "सोम्यं मीनीन्दुसन्नाचं एकवन्न" चतुर्भुज शूलपञ्ज इस्तच वरदाभयपाणिकाम्। प्रायताचं स्राराध्यं सर्वाभरणभूषितम् ॥ शिवरूप गटहे कुर्यात् प्रासादे वाप्यनिन्दितम्"। अवाग्रे पूजानिपेधात् "देवामे खस्य चाप्यग्रे प्राची प्रोक्षा गुरुक्षमैः" इत्यस्य न विषयः। किन्वभिधानादि-प्रसिद्धा प्राची प्राष्ट्रा एतदनुमाराइच्यमाण पूर्वाचारनेयान्ता पूजा। असएव सन्दान्सरम्। "यत्रैव भानुम्नु वियत्यदिति माचीति तां वेदिविदो वदन्ति। तथा पुरः पूजकपूज्ययोश

सदागमजाः प्रवद्क्तितान्तु"। एवध देवतान्तरपूजा पूर्वाह्व प्राष्ट्रा खेन साय पश्चिमाभिमुखेन रावातुद्धा खेन कार्या। प्राक्षियोद्दास्यय प्रात सार्यं निशासु च" इति वचनात् इति वाचस्पतिभियाः। मैवं पूजारताकरोक्त भविष्यपुराणीय-सप्ताचरस्थ्यमन्त प्रम्ताव एव प्रागादिदिङ्गियमाभिधानात्। व्यवद्वारोऽपि चत्र न तथिति लिङ्गपुराणे। "विना भस्रिन्यु-ण्डुेण विना भ्ट्राचमालया। पूजिताऽपि महादेवो न स्थानस्व फलपदः॥ तसान्मटापि कत्त्व्य सनाटेऽपि विपुण्डकः। सवत्सरपदोपे "ब्रिपुरस्य वधे काले क्द्रस्याक्षोऽपत स्तु ये। चयुगोविन्दवस्ते तु रुद्राचाऽभवन् भुवि"॥ यदायेकादि-चतुर्वेशमुखनद्राचेषु मन्त्रफलविशेषाः सन्ति तथापि सुन्ध-त्वात् पञ्चवक्रस्य फलमन्द्राविभधीयते। यथा स्कान्दे "पञ्च-वतः खय षद्ः कालान्तिर्नामनामतः। प्रगम्यागमनाचैव त्रभच्यस्य च भचणात्। सुच्यतं सर्वपापेभ्यः पञ्चवक्रस्य धार-णात्"॥ हं नम इति प्रस्थेकमष्टोत्तरथत जहा शिवाधीमा प्रचाच्य धारणीयं "विनामन्त्रेण यो धत्ते त्रद्राच भुवि मानवः। स याति नरक घोरं यावदिन्द्रायतुर्देश "॥ नन्दिपुराणे। "श्रायुषान् बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् धनवान् सुखी। बर-मिष्टं लभे लिङ्ग पार्थिव य. समर्चयेत्। तसात् पार्थिवं लिङ्ग चीयं सर्वायमाधकम्॥" भविष्ये। "सद्भसगो शक्तत्पिएडं तामकास्यमय तथा। झत्वा लिङ्ग सक्षत् पूज्य वमेत् कस्पा-युत दिवि। वार्स वित्तपट सिङ्ग स्फाटिक सर्वेकामदम्। नर्भदागिरिज येष्ठमन्यद्विष्ठि निङ्गवत्। क्वत्वा पूज्य राजेन्द्र! लपाते चे। पतं पलम्"॥ लिङ्गवत् निङ्गाकारम्। कानकौ-मुद्याम्। "धचादल्पपरोमाण न निङ्ग कुत्रचित्ररः। कुर्वी-ताङ्गष्टतो इन्हां न भदाचित् समाचरेत्"॥ यचौऽगोतिरतिका तथाचामरः। "गुन्नाः पञ्चाद्यमापकः तेपोड्याचः कर्पोस्री" दति। यद्गुष्ठतः तदृष्ठत्यर्वयस्यितः। "यद्गुष्ठाद्गुलिमानन्तु यव यवोप दिश्यते। तव तव इहत् पर्वयां सामिन्यात सदा"॥ इति छन्दोगपरिशिष्टात्। शिवधर्मे। "सइस्र-मर्चयेक्षिष्टं निरयं सनगच्छति। खद्रशोकमनाप्नोति भुक्षा

भोगाननुत्तमात्"॥ तथा "बालुकानि च लिष्टानि पाथि" थानि घकारयेत्। सष्ठसपूजनात् मोऽपि नभते वाञ्चितं फल्रम्"॥ ततसामुकतियावागस्यामुकलाभकामः सहस्रमित-पाधिवशिवसिद्ध पुजनमिति च यद्यास्थाने वाक्यं देयमिति। ब्रह्मपुराणे। "यावत्र दोयते चार्च्य भास्कराय निवेदितभ्। तावस पूजरोदियां ग्रहर वा महेखरीम्"॥ राघवभष्टधतम्। "सर्वत्रेव प्रशस्तीरुष्ठाः शिवस्यां द्विना"॥ अष्ठाः गर्दः। अभिनुराणे" तिलिक्षे. पूजियेकान्तैः सर्वदेवान् पृथक् पृथक्) ध्यात्वा प्रणवपूर्वन्तु तद्मास्त्रा सुममाहितः। नमस्कारेण मन्त्रण पुष्पाणि विन्धमेत् पृथक्"॥ देवीपुराणे। "स्दा-इरणसंघट प्रतिष्ठाद्वानमेव च। स्वपन पूजनद्वीय विसर्जन• मतः परम्॥ इरो महेम्बरशेव भूलपाणिः पिनाकपृक्। पश्रः पतिः गिवधैव मद्रादेव द्ति क्रमात्"॥ अव पूर्विता सप्तः कर्माण परवचनोन्न सप्तनामभिः क्रियानुद्धपविभन्निमद्भि-येथाययं कार्यापि। भट्टार्ययोर्यक्रमास्भवेन पाठक्रमाः देवावाद्यनात् प्राक् प्रतिष्ठा यादे कुगामनदानवत्। तपानु । ष्ठान हराय नम इति मदाहरणं महेश्वराय नम इति सघ-टनं शून्पाणे द्रद सुप्रतिष्ठितो भवेति प्रतिष्ठा। ध्याये सित्यं महेग्रमिखादिना ध्याता पिनाषध्क एषा गच्छेत्यावाइनं प्रशुपतरी नम इति स्रपनम् एतत्पाद्यं नमः शिवाय नमः एव-मर्घादिना पूजरोत्। विसर्जनात् पूर्वं भविष्यपुराणीतं स्रभाव-सिद्ध प्राचौथान्यादिदिसु वामावर्त्तेन पूजनम्। यथा सर्वाय-चितिमूत्तेये नमः भवाय जनमूर्त्तये नमः बद्राय यगिमूर्त्तये नमः। उपाय वायु सूर्तये नमः भौमाय त्राकाशसूर्त्तये नमः पश्चपतये यजमान मूर्जये नमः मदादेवाय सोमभूर्जये नमः रंगानाय स्थिमूर्त्ये नमः। "मूर्त्योऽष्टी शिवस्यैताः पूर्विदक्षमधोगतः। पानियासाः प्रपूक्यास्ता वैद्यां लिखे गिव यजेत्<sup>ण</sup>॥ ततो सहादेव चमस्त हति सहारमुद्रया विमर्जेयेत्। नन्दिपुराणे। "गोभूहिरण्यवस्तादिवनि पुष्प-निवेदने। सेयो नमः शिवायिति सन्त. सर्वायसाधकः। सर्मन्याधिकसायमोद्वाराद्यः यहसरः। तकावजापौ तलमं-

रतस्तहतमानसः। निष्कामः पुरुषो राजन्। स रुद्रपदम-मुते"। भविष्ये पञ्चाचरमुपक्रम्य। "चपवित्रः पवित्रीवा सर्वाषस्यां गतोऽपि वा। मद्यापातक्युत्रो वा सन्त-स्यास्य जपे यथा। मधिकारी भवेत् सर्व इति देवी व्रवी-च्छित्रः" ॥ द्रिति तथित्यर्थः । पूर्विति यथा पदानुरोधात् तैन ययाधिकारी भवेत् तथा अववीदित्यर्थः। तथा "सर्वेषःमिष पावाणां पर पावं महेखरः। पतन्त सायते यसादतीव नरकार्णवात्। ग्रियमुद्दिश्य यद्दतं सर्वकारणकारणम्। तद-नन्त फलं दातुर्भवती इ किमझ्तम्। दत्त्वा नैवेदा वस्तादि नाददौत कदाचन। त्यत्रव्यं गिव मुह्ग्यितदा दानेन तत्-फलम्"। श्रादाने ग्रष्टणे। शिषधर्मे। "तस्रात् पुरुपै: फलै: पचैस्तोयैरपि च यत् फलम्। तदनत्तफलं चेय अक्षिरेवास कारणम्"॥ भविष्ये "सिद्वानुसेपनं कार्यः दिव्यगन्धः सग-न्धिभि:। वर्षकोटियतं दिव्य शिवनोके महौयते'।। शिव-धर्मे। "तसात् पुष्प प्रदानेन सिङ्गेषु प्रतिमासु च। स्रागीति-वर्षकोटीनां दुर्गतिं न नरी व्रजेत्"॥ स्कान्दे। "ग्रष्कास्यपि च प्रवाणि । योष्टचस्य मदैविद्यः। दातव्यानीति ग्रेयः। भविषे। "धुस्त्रकैय यो लिङ्गं मक्षत् पूजयते नरः। संगो सद्यक्तं प्राप्य शिवलोके महीयते। विख्यपनैरखर्खें स योलिङ्गं पूजयेत् संक्षत्। सर्वपापैर्विनिर्मुक्षः शिवलोके मही-यते"। तथा "सर्वकाम प्रदं विच्चं दारिद्रस्य प्रणाशनम्। विस्वपन्नात् परं नाम्ति येन तुच्यति यद्वरः"। तथा "केय-कौटापविद्यानि निशिपर्युपितानि च। स्वयं पतित् पुष्पाणि-त्यजेदुपहतान्यपि"॥ तथा। "देवदार्ममेतश्व सर्जयौवास-कुन्दुरम्। यौफल चाच्यभियन्तु दस्वाप्नीति परां गतिम्"। सर्जः शासरमः श्रीवासः सरसद्रवः। कुन्दुरः शैलेयम्। 'एख: सौगन्धिकं ध्यं यट् सहस्रगुर्योत्तरम् । बगुर्सं अत-साइस दिगुणचामितागुरम्। गुगालं प्रतसंयुक्तं साधात् गरह्याति ग्रह्वरः" ॥ तथा "तैलेनापि हि योदयाद्वताभावेन मानवः। तेन दीपप्रदानेन शिववद्राजते भुवि"॥ निन्दि-क्षेत्रवरे। "श्रय भक्त्या भिवं पूज्य नैवेदासुपकलप्रोत्। यट-

देव नश्यति। अब्दायुतच तिष्ठेमु खर्मनीके न संशयः । ब्रह्मपुराणे। "संदाज्येष्ठगान्तु यः पश्येत् पुरुषः पुरुषोत्तमम्। विष्णुनोक्षमवाम्रोति मोच गङ्गाम्बमक्तनात्॥ ऐन्द्रे गुरः शशीचैव प्राक्षापत्ये रविस्तया। पूर्णिमा गुरुवारेण महाक्येष्ठी प्रकीर्तिता"। ऐन्द्रे च्येष्ठायाम्। प्राजापत्य रोष्टिप्याम्। विना गुरुवारेणापि। "ऐन्ट्रे गुरुः प्राप्रोचेष प्रजापत्वे रिवि॰ स्तथा। पूर्णिमान्येष्ठमासस्य महान्येष्ठो प्रकोत्तिता"॥ ऋतु-राधास्यग्रावि । "ऐन्द्रे मेवे यदा जीवमात्मश्च दशके रविः। पृणिमा शक्रचन्द्रेण महाच्येष्ठो प्रकीतिता"॥ अनुराधाम्य-चन्द्रेरिप व्याघ्रभूतिः। '"ऐन्द्रचे त्वयवा सेते गुरुचन्द्री यदाः स्थितौ। पूर्णिमा च्येष्ठमामस्य महास्येष्ठौ प्रकोत्तिता"। राजमानिष्डः। "च्येष्ठे संवक्षरेचेव च्येष्ठमासस्य पूर्णिमा। ज्येष्ठाभेन समायुक्ता महाध्येष्ठी प्रकीतिता"॥ ज्येष्ठसंवस-रस ''ज्येष्ठामूनोपरी जीवे वर्षं स्याच्छकदेवतम्"॥ इति विणुधमें तिरोक्ती ग्राष्टाः। न तु सवसरादि पञ्चकान्त-र्मस वर्षविभेष: च्यैष्ठ इति वर्षविभेषण्य वैयर्थापते:। सवसारे यदि स्वादितिपाठ: काल्पनिक: प्रपञ्चस्तु मनमास-तत्वे उत्तमसेयः। विष्युधर्मोत्तरे ब्रह्मपुराणम्। "मामि च्ये हे तु संप्राप्ते नचत्रे शक्रदेवते। पौर्णमास्यां तदां सानं सर्वकामं हरेदिनाः॥ तसिन्काले तु ये मर्खाः प्रयन्ति पुरुषोत्तमम्। वनभद्र सुभद्राञ्च ते यान्ति पदमध्ययम्'॥ स्कन्दपुराणम्। ''क्येष्ठामद्वश्वावतीर्णस्तत् पुर्ण्यं लनावा-सरम्। तस्यां मे स्नपनं कुर्यात् महास्नानविधानतः। ज्येष्ठगां प्रातस्तर्न काले ब्रह्मणा सहितश्च माम्। रामं सुभद्रां संस्राध्य सम जोकसवापुरात्"॥ विष्णुधमेत्ति। "पौर्णमासीतथा साधो यावणो च नरोत्तम। प्रौष्ठपद्मामतीयायां तथा खण्यवधीदयो। एतांसु याहकानान् वे निवानाह प्रजा-पति:"॥ अव पूर्वदिने सङ्गवलाभे रौष्टिगालाभे वा परदिने सङ्गालाभे पूर्वदिने जाहम्। "शक्तपचस्य पूर्वाह्रे जाह" क्योत्विचचणः। क्षण्यचापराह्वेतुरोहिणन्तुन सङ्ग-बेत्' इति। वायुप्राणात् उभयदिते तु तकाभे तु परद्नि। शक्तपचे तिथियां द्योति वचनात् एवमचय हतीयादावि। श्वापाढ़का तिकमाघपीर्यमामीपु दानमावश्यकम्। तथा-चायोध्याका एते भरतश्रपये। "श्रापाढ़ी का तिकी माधी तिथयः पुष्यसमावाः। अप्रदानवतीयान्तु यस्यार्थ्यां नुमती यतः"॥ अप्रदानवती दानर दितस्य एता स्तिथयोयान्तु आर्थः। श्रीरामचन्द्रोगतीयस्थानुगत इत्यर्थः। उत्तरवाक्ये यच्छब्दात् न तच्छब्दापेचा।

भय को जागरक त्यम्। कलातरी ब्रह्मपुराणम् "माध्व-युन्धं पौर्णमास्यां निक्तभो बालुकार्णवात्। त्रायाति सेनया साइ कुला युद्धं सुदार्णम् ॥ तसात्तव नरैर्मार्गाः स्रगेष्टस्य समीपतः। ग्रोधितव्याः प्रयत्नेन भूषितव्यास मण्डनैः॥ युष्पाध्य फलसूनाच्चसपंपप्रकरेस्त्या। वेश्मानि भूपितव्यानि नानावर्णेर्विभेषतः॥ सुस्रातेरनुनिप्तेय नरेभांच्यं सवास्वतेः। दिवा तत्र न भोक्तव्यं मनुष्येश्व विवेकिभि:। स्वीवात्तम् ख-वृह्य भोक्तवां पूजितै: सुरै:"॥ पूजितै: सुरैरिति विशेषणे खतौया तेन पूजितसुरैरित्यर्थः "पूज्याय सफसैः पुष्पैस्तया हारोड्ड भित्तयः। हारोपान्ते सुदौप्तस्तु संपूज्यो हव्यवाहनः॥ यवाचतप्ततोपेतैस्तण्ड्लैय सुतर्पितः। संपूजितव्यः पूर्णेन्दुः पयसा पायसेन च॥ स्कन्दः सभार्यस्कन्दय तथा नन्दौ खरी सुनि:। गोमज्ञि: सुर्राभ: पूज्या कागवज्ञिक्ताश्रन:॥ उर-भ्रवद्भिष्णो गजवद्भिर्विनायकः। पूज्यः साम्बैथ रेवन्तो यथा विभवविस्तरै: 🕆 ततः पूज्योनिकुमोऽपि समांसैस्तिलतरङ्खैः । सुगन्धिभष्ट तोपेतैः क्षपराख्यैय भूरिभिः ॥ व्राह्मणान् भोज-यित्वा तु भोक्तव्यं मांसवर्जितम्। विद्विपार्श्वगतैर्नेया दृष्ट्वा क्रौडाः प्रयाखिधाः"॥ ततस द्वारोद्विभित्ति इव्यवादन पूर्णेन्द् सभार्थे गद्र म्कन्द नन्दी खरमुनयः सर्वैः पूज्याः । द्वारोर्द्व भित्ति शक्दोऽत्र वहुवचनान्तः नन्दौखरो सुनिरेषः। गोमता सुरभिः छागवता हुताशनः मेषवता वरुषः इस्तिमता विनायकः। चाखवता रवन्तः सर्वेरव निक्षमाः पूज्यः सहार्यवे लिङ्गपुरा-णम्। "शक्तिंन पौर्णमासान्तु चरेष्णागरणं निशा । कीम्दौ सासमाखाता कार्यो लोव विभूतये॥ कीमुद्यां पुत्रयेन्न-

स्त्रोमिन्द्रमेरावते स्थितम्। सुगत्धिनिधिसदेशोऽचेकांग-रणं चरत्"॥ तथा "निशोधे बरदा नद्मो. कोजागत्तीति भाषिणो। तसी वित्त प्रयच्छामि श्रची. क्रीडां करोति य.। नारिके स्विपिटकीः पितृन् देवान् समर्चे थेत्। बन्ध्ंस प्रीम-येक्षेन स्वयं तदशनो भषेत्"॥ श्रव निशोधि निशोध द्तिः पामिधानात् राविक्तस्यमिदम्।

तत्य "प्रदोषव्यापिनी ग्राष्ट्रा तिथिनेसवत सदा। प्रदो-घोऽस्तमयाष्ट्रहुं घटिकाइयमिखतं । इति वसवचनात्। यहिन प्रदीपनिशीधोभयव्यपिनी पौर्णमासी तहिन कोनाग-रसत्यम्। उभयव्याखनुरीधात्। यदातु पूर्वदिने निग्नीय-व्याप्ति. परदिने प्रदोपव्याप्तिस्तदा परेद्युस्तत्क्वम् । प्रधान 'पूजाकालयास्यनुरीधात्। यदा तु पूर्वदिनं निशीयव्याप्ति: । धरदिनं न प्रदोषव्याप्तिस्तदा सुतरा पूर्वेदास्तत्कृत्यम्। "श्रष्ट । शु तिथय: पुष्या कर्मानुष्ठानतो दिया। नत्नादिव्रतयोग तु 'राषियोगी विशिष्यते"॥ इति वचनात्। विवर्जयेदित्यनुहत्ती रात्यसूक्ते। "महानद्भारास्य तुनसी भिरिष्टकां काञ्चनस्तथा" लक्षोध्यानमादित्यपुराणि। "पागास मासिकामोजगृणिभि-र्थास्यमीस्ययोः। पद्मामनस्यां ध्यायेच त्रिय वैनीस्यमातरम् ॥ शीरधणा सुरूपाञ्च सर्वानद्वारभूयिताम्। रोक्सपद्मश्रथश्रकरां वरदादिशिणन सु"॥ पाश्चिति द्शिणे पाशाच सामाभ्यां वारी पद्माद्भगाध्या भूषिता वासकर हिमपद्म दिश्वणकर वर द्धती मित्रर्थः । ततः पादाभिः संपुष्य "नमस्ते सर्वदेवामा वरदामि हरिप्रिये। या गतिस्वत् प्रवसानां मा मिभ्याख-दर्शनात्॥ विद्यस्यस्य भार्यास पद्मे पद्मानये ग्रमे। सर्वतः पाडिमां देवि। महानिष्म नमीऽस्तु ते"। इत्यनेन नत्या पूजरीत्।, इन्द्रध्यानमादिखपुराणे। "चतुर्दम्त गजाक्दो यद्मपाणिः पुरन्दरः। शचीपतिय ध्यात्रयो नानाभरण-भूषित."॥ पादादिभिः मपूज्य। "विविचेरावतस्याय भाषात् कुलिश पाण्ये। पौलीम्यालिद्विताद्वाय महस्रात्ताय ते नम." । इत्यनेन पृष्पाध्यसिवयं दस्वा प्रण्मेत्। तमः सुपरः पुच्य इति रहधरः। तपाद्यादिभिः सपूच्य "धन-

दाय नमनुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भवन्तं त्वत् प्रसादानी धनधान्यादिममादः"॥ इति पुष्पाञ्चित्रयं दत्ता प्रणमेत्। त्रव सर्वेषां प्रदोषे पूजिति रुद्रधरः। न च निकुभाषयानां पूर्वास एव पूजने निरपवादमिति बाचा दिवा तव न भोक्षव्यम् इत्यपक्रम्य पूज्याय मफलैः पवैशिवादिना विशिष पूजामिधायं भोक्षव्यमित्यभिधानाद्रावावेव पूजाभोजनेऽव-गस्येते। भत्रपवाशकानामेष भोक्षय पूजिते: सरै: इत्यभिधा-नेन विशिष दिवापूजनभीजने विश्विते। योगिनौतन्ते। "विश्विम्तु गरहे ठका घगरां लच्छी गरहे त्यजित्। सर्ववादा-सयीं चग्दा याद्याभावे प्रवाद्येत्"॥ लद्योवाकां "प्रकीर्ण-भाण्डामनवैद्यकारिणीं सदा च भर्तः प्रतिकृनवादिनीम्। परम्य वैश्वाःभिरता मलज्ञानयं विधां स्तों परिवर्ज्ञयासि ॥ मार्कगडेय:। "शिरः सपृष्पं चरणी सुपूजिती वराङ्गनागयम-अस्पभोजनम्। चनग्नगायिखमपर्वभैद्युन चिरप्रनष्टां त्रिय-गानयन्ति पर् ॥ मानुपास्य गरहे यव चहारावन्तु तिष्ठति । रामानिया स्यावामसायान्येपासु रचमाम्। सूर्पदामादियां यव पदाकर्षं तथासनम्"॥ सस्यिमे। "यव द्भी: त्योः स्थिता तव यव त्रीम्तव सर्वति:। स्यतिक्रीमाया त्रीय निव्धं खणो सप्तान"॥ मत्यपुराणम्। "स्थिरोपायो **टि पुरुपः** भियरत्रोरेव जायते। रचितुं नैव गक्तीति चपनपपनां थियम् ॥ चवश्यभृद्योगयता चौरपारा भवेत् मदा। यदा-प्रोता। दिवा समञ्: पुनरमुधिम्" । क्रांबकोमुदाम्। "गारिक भोदक चोत्वा चरां जांगरेच निशा मणे विनां प्रयच्छमिको लागर्सि महोतने" ॥

मध चतुरद्वम्। चछक्रोडायां व्यासपृथिष्ठिरमंगदः प्रच-रति। युधिष्ठिर छवाच। "चष्टकोष्ठात्व या क्षीडा तां ने वृद्धि तयीथन। प्रकर्यचैव से नाय चनुराक्षी यदा भवेत्" ॥ व्यास डवाच। "चष्टो कोष्ठान् समाभिष्य प्रदक्षिण क्रमेण तु। चक्ष्यं पूर्वतः हत्या दक्षिणे दक्तिं बन्तम् ॥ पार्षः। प्रियमतः पीतमुक्तरं भ्रमासनं बनम्। राष्ट्री यामे गर्ले सुर्योत् तमाः दश्यः तत्रम्यास्म कृष्यात् कोन्तेष पुरत्ये युद्दे पश्चितः ष्टयम्। कोणे नौकाहितौयेऽग्व छतीये च गजीवसेत्॥ तुरीये च वसेट्राजा वटिकाः पुरतः स्थिताः । पञ्चकेन वटीराजा चतुः प्केणेव कुम्हर:॥ विकेणेव चलत्यम्बः पार्थनीकाहरीन तु। कोष्ठमेक विलद्भाय सर्वतो याति भूपति: ॥ अय एव वटी-याति यन इन्यप्रकोणगम्। यथेष्टं कुञ्जरो याति चतुर्दिशु मदोपते। तिर्ध्यक्तरङमो याति महियिता विकोष्ठकम् ॥ कोणकोष्ठदयं सहुत्र ब्रजेन्द्रीका युधिष्ठिर। मिष्ठामनं चतूराजी नुपासप्य पट्पदम्॥ काककाष्ठ सुप्तमोका नौकाक्षप्रकार-कम्। घाताघाते वटौनौका वसं इन्ति युधिष्ठर॥ राजा गजोदययापि त्यक्षाघात निर्दान्त च। घत्यन्त स्ववलं रहीत् स्वराज बलमुत्तमम्॥ चर्णस्य रचया पार्ध कलस्यं बलमुत्त-मम्"॥ नौकायायत्वारि पदानि प्रावस्थाष्ट्री पदानि रुखा-धिकामश्रस्य। "मतङ्गलस्य गर्वेण राजा क्रीडति निमरम्। तसात् सर्वेषलं दस्वा रच कौन्तेय कुष्त्ररम्॥ सिंहासर्न चत्राजी यदवस्थानतो भवेत्। मर्वसैन्यैर्गजेवीप रचितस्यो महीपति:॥ चन्यद्राजपद राजा यदा यातो युधिष्ठिर। तदा सिंदामनं तस्य भण्यते मृपसत्तम॥ राजा च मृपतिं इता कुयात् सिंहामनं यदा। हिगुणं वाहयेत् पण्यमन्ययैका-गुण भवेत्"॥ हिगुण पण्यं दातव्यत्वेन प्रापयेत्। "सिव सिष्ठासनं पार्धे यदारोष्टति भूपति:। तदा सिष्ठासनं नास सवं नयति तद्वम्॥ यदा सिद्दासनं कर्तु राजा पष्ठपदा-न्यितः। तदाघातेऽपि इन्तव्यो बलेनापि सुरिच्तिः॥ विद्य-माने नृपे यस स्वकीये च नृपवयम्। प्राप्नीति तु यदा तस्य चत्राजौ तदा भवेत्॥ नृपेणैव नृपं इत्वा चत्राजौ यदा भवेत्। द्विगुणं वाच्येत् पर्यासन्यधैकगुणं भवेत्॥ स्वपदस्य यदा राजा राजानं हिन्त पाधिव। चतुरङ्गे तदा भूप वाह-येच चतुर्गणम्॥ यदा सिद्धामने काले चतूराजी समुस्थिता। चत्राजी भवत्येव नतु मिहासन सृप"॥ अब्रेट् वीज छभ-यया जयेऽपि परसिंद्धामनाधिकारात् पर राजवधे शौर्थाधिका-निष्कग्रकत्वदर्भनात् कौडायामपि तथा कल्प्यते। "राजद्वय यदा इस्ते पालानी राजि सस्थित। परेण सहतयेकी बलेनाम्य-

परार्थिते॥ राजद्यं यदा ईस्ते न स्यादन्यकरे परः। तदा राजा हि राजान घातेऽपितं इनिचति॥ नृपाक्षष्टो यदा राजा गमिष्यति युधिष्ठिर। घाताघातेऽपि इन्तव्यो राजा तव म रचकः ॥ कोणं राजपदं त्यक्षा वटिकान्त यदा व्रजेत्। वटौ च पट्पद नाम तदा कोष्ठवसं नयेत्॥ यदा तस्व भवेत् पार्थं सत्राजौ स पट्पदम्। तदापि च चत्राजौ भवत्येव न सथयः॥ पदाते. पट्वदे विडे राज्ञा वा इस्तिना तथा। षट्पदन भवेत्तस्य ऋवध्यं मृणु पार्थिव॥ सप्तमे कोष्ठके यत् स्यादिका दशमेन वै। तदास्योन्यञ्च चन्तव्य सुखाय दुर्वेल वलम्॥ विवटौकस्य कौन्तेय पुरुषस्य कदा-चन। घट्पद न भवत्येवीद्रति गोतमभाषितम्। नौकैका वटिका यस्य विद्यते खेसने यदि। गाढावटीति विख्याता पद तस्य म दुष्यति"॥ पद राजपद कोणपदच्च। "इस्ते र्ष्ट्रे वल नास्ति काककाष्ठं तदा भवेत्। वदन्ति राचमाः सर्वे तस्य नस्तो जयाजयौ ॥ प्रोत्यिते पच्चमे राज्ञि स्ते वव्याच पट्पदे। श्रशीच स्यात्तदा इन्ति चलिता चालितं बलम्॥ हिराहत्यागते तसात् इन्यात् परवल नयी। पार्यं सिहासने काले काककाष्टं यदा भवेत्॥ सिहासन भवत्येव काक-काष्ठ म भाष्यते। उपरिष्टञ्च यत् स्थान तस्योपरि चतुष्टये॥ नौकाचतुष्टय यव क्रियते तस्य नौकयाः नौकाचतुष्टयं तस्य ष्ट्रद्वीकेति भएयते। न कुर्यादेकदा राजन् गजस्या-भिमुख गलम्॥ यटि कुर्वीत धर्माज्ञः पापयस्तो भविष्यति। स्थानाभावे यदा पार्थ इस्तिसमुखम्॥ करियति तदा राजन् इति गीतमभाषितम्। प्राप्ते गजदये राजन् इन्तथ्यो-वामतो गजः" ॥ इति चतुरङ्गकी हनग्।

वैष्णवास्ते स्कन्दपुराषम्। "पौष्णान्तु समतीतायां यावत् भवति पूर्णिमा। माघमासस्य देवेन्द्र पृजा विष्णोर्वधौयते"॥ इति पौर्णमास्यन्तमाघमुपक्रस्य "पितृषा देवतानाञ्च सूनक नैव दापयत्। दत्त्वा मरकमाप्नीति भुज्जीत ब्राह्मणो यदि। ब्राह्मणो सूनकं भुक्ता चरेशान्द्रायण व्रतम्। यन्यया नरकं याति चव्रविद्यूद्र एव च। वरं भूतमभन्यन्तु पिवेद्दा- महित्य यत्। वक्तनीयं प्रयतिन सूनकं सदिरा-समग्"॥

फाल्गुनपीर्णमास्यां दोलयात्रामाह क्रायचिन्तामणी महापुराणम्। "नरो दोलागतं हृद्दा गोविन्दः पुरं विजेत्"॥ स्कन्दप्राणीय पुरुषोत्तममाहालारे क्ष्मित्राध्याये। "फाल्गुन्यां क्षीडनं कुर्यादोलायां मम भूमिप"॥ विप्पुपराणे। "चतुदेश्यद्यमीचेव समावस्याध पूर्णिमा पर्वाण्येतानि राजेन्द्र
रविसंक्षान्तिरेव च। स्वोतेल मांमसभौगौ पर्वस्वेतेषु वे
पुमान्। विष्मुत्रभोजनं नाम प्रयाति नरक स्तः"॥

भय रविमंक्रान्ति:। भविष्यमास्यज्योतिषेष्। "सृग-कर्कट सकान्ती हे तूदक् दिल्लायण । विष्वती तुनामपे गोलमध्ये तथापराः" ॥ सुगो मकरः गोलोरागिचक्रम्। "धनुर्मिषुनकन्यासु भौने च पड्योतयः। इप इश्विफ सिंहेप् कुमी विषापदो स्राता"॥ देवीपुरामाम्। "यावदिंशकसा-भुक्ता तत्पुण्यं चोत्तरायणे। निरग्ने भास्करे दृष्टे दिनान्तं दिचिणायने ॥ अर्हरात्रे त्वमंपूर्णे दिवापुर्णमनागतम् । अर्ह-राचे व्यतीते तु विज्ञेय चापरेऽहिन ॥ संपूर्णेचाईरावे च एट्-येस्तरमयेऽपिवा। मानाउँ भास्तरे पुख्यमपूर्णे प्रवंशीदने॥ सपूर्णे तूमयोचेंयमसिरके परेऽहनि। पड्गौतिमुखेऽतीते वृत्ते च विषुवद्दये॥ भविष्यत्ययने पुरुषमतीते चीत्तरायणे। चादौ पुर्खं विजानीयात् यदाभिन्ना तिथिभवेत्"॥ विश-कता विंगतितमो कना सक्रान्तिचणादृद्धं यावत् भवति तावत् पुर्णम्। निरंगेऽ शकशुन्धे मक्तान्तिकाले हि भास्क-रोऽ शकर हितो भवति तिसान् दृष्टे दिवेति यावत् दिनञ्च दिनकरकारसंस्कृता स्त्रिगनाडिका इति च्योतिर्विदः। तदन्तं तत्समाप्ति यावत् तावत् पुखम्। तथा च हहद्विष्ठ : "विंगत् कर्कटे नाड्योमकरे विग्रतिः स्रुताः"॥ नाड्रो दग्रः। "डल्पमाद्विपन्त पद्या विपन्तान्तु पम गरीत्। पमात् पद्या नरी-वाडीं तत् पद्यातु रवेदिंनम्"॥ इति सिहान्तमन्दर्भात्। ततय देवीपुराण इह्दशिष्ठयोरेकवाक्यतया कलानाचीः पर्यायता।

राविमंग्रमणेलाष भईराषेलिति भरंपूणं वानान्य्वार्ध-राये। "कनाम्यनादेशके तुर्याद मक्रमण भवेत्। तदश्च. पुष्पमिष्यन्ति गाग्य गानवगोतमा " । इति हात्याचन्तामित् यपंक्रत्यप्रमगगवसमात्। कानकौ मुद्यासः। गानवेत्यसः हारीतः इति पाठ । तमय कलान्यनाईरावाभ्यनार दादगस्वेव सङ्गा-क्तियु भनागत नागत सक्तमणेन यव दिवा तदेव पुख पुख जनक तमु पूर्वदिन तदैव सक्तान्तरनागतलसम्भवात् तेन सक्रमणकानाद्धाीव दिश पराष्ट्री स्नानादिक कर्त्रश्-मिस्यय। अर्दरावे व्यतीते कलाधिकार्दरावे व्यतीते। पूर्णे (ईरावे राविमध्यकानग्री। कनास्म गाईरावे विसि यचनानन्तर भुजयनभौम "बर्दरावे यानाधिया यदा सक मते रवि । तदोत्तरदिन ग्राध्म खानदान अपादिष् । यदं रावे तु मपूर्णे यटा सक्तमते रवि । प्राष्ट्रिनेहय पुरा त्यक्ता सकर्यक्टो" इति वचनाभ्या तथा प्रतीते । कानविवेद कालको मुद्याच भातातपनावानी "पूर्णे चेदर्ररावे तु रविसक्र-सण भवेत्। प्राष्ट्रदिनद्वय पुख्य त्यक्षा सक्तरकर्कटो" ॥ एतयो द्यंवस्थाम। इ कालमाधवीये भविष्योत्तरम। "मियुनात् का किसका स्तियेदि स्यादगुमा चिन । प्रदोपे वा निग्री ये वा कुर्यादद्दिन पूर्वत ॥ कार्मुक च परित्यच्य भप मक्रमति रवि। प्रभाते याहरावे वा स्नान कुर्यात् पर इनि ॥ ततस रावि मध्यदण्डदयात्मकार्ष्ट्र रावसकान्तावद्ये उस्तम्ये उपि वेत्यननो दयोपक्रममस्त्रमयान्तक् मानाई युखम्। एवञ्चामयदिनै पुराकाले पूर्वदिनाकारण एव परादन "व कार्यमय कर्त्रेय पूर्वाह्रे च।पराह्मिम्। न हि प्रतौत्तरिस्य स्तामस्य नवा क्षतम्"॥ इति निद्रपुराणात् मोत्तधर्माञ्च। तबापि दिनि-णायने पूर्वदिनाह साम्रसिनि विशेष । उत्तरायणे परदिनाह ै मात्रमिति विशेष । मानार्षामिति भास्तर भास्तरापनिति कासी दिवेति यावत् तस्मिन सक्रमणेऽपि सानाई पुर्णम एतच विप्वपडगौति विपयम। श्रयनकानया पूर्वमुक्तालात विष्णुपदाञ्चाभयत पोडग्रकसाना पञ्चरग्रनाडिकाना वा पुण्यत्य भातातपादिवचनन वच्यमाणत्वात्। तेन दिवा

एकैंव तिथिभेवेत् तेन मध्यरात्रे संक्रमणे यदुभय दिन्मा-मार्ड पुर्यमुक्तं ति इवितियिविषयम्। अतीते पुनरर्दरात्रे पूर्वेषाज्ञा तिथाभेदेऽपि परस्यैव पूर्वार्डे पुरविभिति तात्प-र्थ्यार्थः। एवच्च राविमंक्षाम्तौ दिन एव पूर्यवाभिधानात्। "राष्ट्रर्शनमंक्रान्ति विवादात्ययष्टिषु। स्नानदानादिकं कुर्यानिधि काम्यव्रतेषु च"॥ इति देवलेन दिन संक्रमणस्य राचिपविष्ट पुर्ण्यकानांशे संक्रान्तिनिमिन्तेन सानदानादि विधीयते इति। यस् "मन्दामन्दाकिनौध्वांची घोराचैष महोद्रौ। राधसी मिथिता प्रीक्षा संक्रान्तिः सप्तभा नृष। मन्दा भ्रवेषु विज्ञेषा सृदी सन्दाकिनी तथा॥ विग्रे ध्वांची विज्ञानीयादुये घोरा प्रकीर्त्तता । चरैर्महोदरी भ्रया करे-ऋ चैय राचमी। मिश्रिता चैव विज्ञेया मिश्रितचय संक्रमे"॥ दल्लेलीर्हादशस्वेव संक्रान्तिष् भ्रवादि नचत्रयोगा-सान्द।दिरूपतया सप्तधा भिनासः। "विचतुः पञ्चसप्ताष्ट नव द्वादश्र एथ च। क्रमेण घटिका द्वीतास्तत् पुर्खं पारमार्थि-कम्"॥ इति देवीपुराण एव तिचतुरादिघटिकानां पुख्यत-मुक्रम् तिष्ट्वाराव्योस्तत्तकालोपदेशास्वकाशमलभमानं स-न्धादयसंकान्ति विषयमिति समयप्रकाशः। भ्रवादिगणस्तु द्यीपिकायाम् "उग्नः पूर्वे भघान्तका भ्रवगण स्त्रीण्यु सराणि स्वभूवीतादित्यहरित्रगं चरगणः पुष्पाविदस्तास्यः। चित्रा-मित्रस्यान्यमं सुद्गणस्तीत्णोहि रुद्रेन्द्रयुक् मिश्रीऽनिः स विशाखभः शुभफलाः सर्वेखक्तत्वे गणाः ॥ अन्तको भरणौ स्वभू रोडिणौ वातादित्यहरित्रयं स्वातोपनर्वमु अवणा धनिष्ठा भ्रतिभवा मित्र स्गान्यभम् भनुराधा स्गोशिरोरे-वत्यः। अधित्द्रेन्द्रयुक् असेषा भाद्रो च्येष्ठा मूलाः श्रानः क्वितिका। कल्पतक्सुक्रमण यथामस्येन एता घटिकास्तत पुर्खं तस्य मंक्रमणस्य पुर्यहेतुत्वात् पुर्यं पारमाधिके मुख्यं "त्रुटे: सइस्र भागोय: म काली रविसंक्रम:"॥ इत्युक्त-सुसा समानानानुष्ठानजन्य समपुख हेतव इत्याह। चुटिस्तु "सघुचर चतुर्भाग स्तुटिरित्यभिधीयते। ब्रुटिहर्य स्वः प्रोक्तो निर्मपत्तु लवदयम्"॥ इति स्र लुक्ता एतदेव

मत युक्तम घतएव देवलेन "या या मिसिहिता नादा सा सा: पुण्यतमा सृता"॥ इत्यक्तम्। एवर्षेता घटिका पुण्यतमाः मानाहोदिकन्तु पुण्यमात्रमिति तमात्रन्देत्यादि न मञ्चाः सक्तान्तिविषयक्षभिति मन्यामक्रान्तिविषयत्वे पारमाधिकः मित्यनुपपत्ते पुरामित्यनेनेव सिहे। पारमाधिकमित्वत कस्पतक्षाः च्यानयलीकनाद्विमक्रम इति पाठकस्पन कष्पन-भेव समयप्रकाशकतापि तथा पठितवात्। जोभूतवाष-नीऽपि कानविवेके "पक्षिमक्रमणे प्रामध कतस्य प्रकोतिं। तम्। रात्री सक्षमणि भागोदिंगार्षं स्नानदानयो ॥ इति हरदिशरादिवचन पर्यानोचनया दिवासक्षान्तो दिनमात्र पुष्य पुष्यतरास्तु विशेष विश्वितानाद्य इत्याष्ट्र। प्रतएव तदृत जावः लिह्हस्पतिगातातपवचनमपि सगच्छते। यथा "वर्त्तमाने तुला मेपे नाह्यस्त्रभयतीद्या"। कालमाधवीचेऽपि यद्रीत्यभिधाय पाशस्यतारतस्यम्त्रमः। एवश्र दिवामकान्ती छत्स दिन प्रय पड्योतिम्बेरतोते इति वचन प्रयुतर-परम्। नन् देवौपुराणे दिवाराव्यो समक्रणे विशिषा कान्नाः भिधानात् मन्य। मकान्ते क कान दति चेत् "विश्वमाहन कियत सहीगवन्तु यनाया"॥ इति विद्यापुराणीन सम्ययो पृथगनुपादानात् दिवाराधि मध्यस्थितानाः इत्रोहेन तयोरल-भीव। तथा च दस ''यहौरातस्य य मस्य सूर्णनस्त्र-वर्जित । सातु मन्या ममास्याता मुनिभिम्तः वद्शिक्षि "॥ योगियात्रावल्का । "क्रासद्वदी च सतत दिनराव्योर्यथाः क्रमम्। सन्धामुहत्माखाता द्वासहस्रो समाम्यता"। वराच "यद्यास्त्रमयात् सभ्या व्यक्तीभूता न तारका यावत्। तेज परिदानिस्या भानोरद्वदिय यावत् । अतएव सेनापि मुनिना नानादेगीय समकारेण च सन्धासक्रान्तिलेन विशेषी नाभिद्दित ।

तदय मसेप । दिनसक्तमणे छत्स्र दिन पुण्य पडणीति सुखे इत्याद्यका पुण्यतर मन्दा मन्दाकिनीत्यादि इपेण विचतुरादि घटिका पुण्यतमा । दिनहत्तीत्तरायणादिकि-दित विग्रति दण्डादीना राविप्रविष्टभागस्यापि पुण्यत्व रातिमंक्षमणे तु कल्यान्त्र प्रथमार्दगते तिह्वसीय शिषयास-दय पुष्यम्। काल। ह्याक्तक मध्यगत्रगते तिह्वसीय तिथेर-भेदे तिह्वसीय शिषय। महय पुष्यं भेदे तु तिह्वसीय शिष्य-यामदय पगद्वमीयाद्ययामदयञ्च पुष्यम् उभयदिन पुष्य-कालेऽपि पूर्वदिनाकरण एव परित्नं तिहिति कार्थ्यम्। तिथिभेटाभेटयोर्दे चिणायनं तिह्वसीय शिषयामद्वयम् उत्त-रायणे तु पर्गद्वमोयाद्य यामद्वयं पुष्यमिति मध्यगत्नीय-कलोत्तरमेवाद्देशवमत्रमणमात्रे तु परित्राद्य यामद्वयं पुर्ण्यामिति मन्यामक्रमणे तु दिनदण्डे दिनस्य रातिदण्डे रात्रेव्यवस्थितिः।

ब्रह्मपुराणे। "ग्रुक्तपचेतु सप्तस्यां यदा संक्रमते रविः। महाजया तदा प्रोक्षा भगमी भास्कर्पिया । सान दानं तपो होमः विद्यदेशिभुजनम्। सर्वे कोटिगुणं प्रीक्षं तप-नेन महोजसा ॥" यह "मासपचितिधोनाच निमित्ताच सर्वश्र " द्रत्यनेन प्राप्त तिष्यक्षे स्वे तिह्यीयणत्वेन महाजये-त्यक्षेत्यं सन्ना विधेरतदेव प्रयोजन यस्यानिर्देश द्रत्यक्षलात् एवञ्च सक्रान्तिविग्रेषस्य निमित्तत्वेन प्राप्तौ विषुवादाक्षेत्वो-इपि। स्कान्दे "एकान्तिनो मया प्रोक्ताः कालाः सक्रान्ति-सञ्चकाः। नैतेषु विद्यार्त्ऽनिष्टं यत्रदाश्चयसन्तितः॥ अयदः यापि यद्त कुपात्रेभ्योऽाप मानवै । भकासेऽपि हि तत्-सर्वे सत्यमध्ययता व्रजत् ॥ सात्त्यो । "षयन को। द्रगुणितं सद्य विष्णुपदाषु च। षडग्रौति सइसन्तु षडग्रोत्यामुदाहः-तम् ॥ श्रातामन्दुचये पुर्यसस्मन्तु दिनचये। विपये शत-साइस माकामावैष्वनस्तकम्"॥ श्राका गवैष् श्रायादी कार्त्तिको साघो वैशाखी पूर्णिमासु। देवीपुराणे। "र्राध-संक्षमणे पुण्ये न सायाद्यस्तु सान दः। मप्तजन्मसमी रागौ निधनयापनायतं' ॥ दी।पकायाम्। "नाडीनसव दिवसे रविभोग शनैयरा.। सक्रान्ति यस्य कुर्वन्ति तस्य क्षेत्रार्शस-खायते॥ मोसूब सर्पपे खानं मधीविधिशलेन च। विशुद्ध काञ्चन द्यायाडौदोषोपमास्त्रये॥ नाडौनच्चाणिचादा द्रम षोड्याष्टाद्य वयावियति पद्मवियत्यः। रवमानायाम्,।

"तारावनादिन्दुरघेन्द्रवीर्धाह्वाकर: संक्रममाण जाः। प्रष्टाय सर्वे सिवतुर्वनेन महीसताद्याः क्रमभः प्रमुखाः" ॥ संवसरप्रदीपे "धुस्तूरवीनसिन्छः स्थायात् सक्रान्तियान्तवे। तथा सर्वेषिधीभिय विष्णुमन्द्राय संनपेत्॥ यदक्रि भेवमंन्क्रान्ति स्तुनासंक्रमणं निधि। तदा प्रजा विवर्दन्ते धनधान्य-सम्हिषिः। कुजाने प्रनिवारिष सहासंक्रमणं यदा। तदा भवेत् प्रजानायो दुर्भिर्चादिभयं सहत्"॥

ब्रह्मवैवर्त्तं। "श्रप्राप्ते मास्तरे कन्यां श्रेषभूते स्त्रिभिद्नैः। चर्घं द्युरगस्याय गौडदेशनिवासिनः"॥ भौमपराक्रमे। "यस्त भाद्रपदस्यान्ते छदिते कलसोद्भवे। श्रद्धां दद्यादगः स्याय मर्वान् कामान् लमेत सः"। नारसिंहे। "ग्रहे तीयं विनि: चिष्य सितपुष्पाचतेर्युतम्। सन्तेषानेन वै द्याद्चिः णाशासुखस्थितः ॥ काशपुरपप्रतीकाशः श्रानिमाकत समाव !। मिवावक्षयोः पुत्र ! कुकायोने ! नमोऽस्त तेण प्रार्थनमन्त्रस्तु । "भातापिम चितो येन वातापिस महासुरः। समुद्रः शोधितो चेन स मेऽगस्यः प्रसौदत्ण॥ गन्धादिकन्त् त्रगस्याय नम द्रित दातव्यं विशेषानुपरेशेन सामान्यतः प्राप्तत्वात्। दिचिणाशा-सुखस्थित इति गन्धाटाविष। प्रयोगाङ्ग कर्नुधमेलादिति रलाकरः। नारदीयं "न मात्ये भचयेनासं न कोमं नान्य-देविष्ट । चण्डाली जायते राजन् । कार्तिके सांसभचणात् ॥ महाभारते। "कौमुदन्तु विश्रिषेण शुक्तपसं नराधिए!। वर्जवेत् सबैमांसानि धर्मोद्यव विधीयते"॥ कौमुदं सासि-कम्। कात्तिकमधिकत्य ब्रह्मपुराणम् "एकाद्यादिषु तथा तास पचस राविषु। दिने दिने च स्नातव्य गौतनासु नदीषु च। वर्जितव्या तथा हिंसा सांसभक्षणमेव च"॥ ततस् मांसभचणनिषेधे कार्त्तिकामसतच्छुक्तपचतदेकाद्याद्रिपञ्च दिनानि यकाथकभेदात् पापतारतस्यादा निषिद्वानि ।

बद्धार्के "दामोदराय नभिम तुलायां लोलया सह।
पदीपन्ते प्रवच्छामि नमीऽनन्ताय नेधमे"॥ लोलयां लच्मप्रा
"इति मन्तेण यो द्यात् प्रदीपं सांपरादिना। आकाशे
स्ट्रिपे वापि सचाच्यफल लभेत्॥ विष्णुविस्मनि यो द्याह

कार्त्तिक मासि दौपनम्। चिन्होम सहस्रस्य फर्ना प्राप्नोति मानवः"। नारदौये। "निष्पावानु।जमाषांश्च सुप्ते देवे जनार्दने। वो भचयति राजिन्द्र ! चाण्डालादिधको हि सः॥ कार्त्तिति विश्विण राजमायांय वर्जयेत्। निष्पावासानिन भार्ष ! याषदाहतनारको ॥ अदस्वानि पटोसानि वस्ताकः संस्तिति च। न त्यजेत् कार्त्तिके मासि यावदाह्रतनारकी॥ एतानि भच्येद्यस्त सुप्ते देवे जनाइ न। शतज्ञार्जितं पुष्कं दहते नाव संभयः" ॥ निष्पावः भिष्वीसदृभो दिचिषाः पथे प्रसिद्ध द्रित कल्पतरः। कदस्थादौनि फल्सिन नपुंसक निर्देशात् कदम्बानीत्यव कलम्बानीति केचित् पठिन्त कलस्वीलेन प्रसिद्दानीति व्याचचते च प्राक्र-तनारकी श्राह्मतानि च्यादिपर्यन्तानि प्रस्यावधीति यावत् तावक्वालं नारकीत्यर्थः। पाह्रत द्रत्यव्र भक्षारस्य इकारण्टान्दसः। कागीखण्डे। "कर्जे यवानमशौयादे-कासमयवा पुनः। हन्ताकं शूरणचैव शूक्यिकोच वर्जयेत्। कात्तिके वर्जयेत् तैलं कात्तिके वर्जयेगाधु। कार्शिके वर्जये कांस्रं कार्त्तिके सासि सन्धितम्"॥ जर्जे कार्त्तिके । शूरण मोलं सन्धितमासवादि। गार्ड। "गवामयुतदानेन यत्फलं नभते खागाः तुनसीपव्रकैकेन तत् फलं कार्त्तिके स्मृतम् ॥ भौमनाथध्तम्। "विद्याय सर्वपृष्पाणि सुनिपृष्पेण केंगवम्। कात्तिके योऽर्श्वयिद्धस्या वाजिमेधफलं लभत्"॥ पद्मपुराणम्। "तुसामक प्रेषेषु प्रातः स्नानं विधीयते। इविष्यं ब्रह्मचर्याच सद्वापातकनाश्रमम्॥ पितासदः। "कार्त्तिकस्यतु यत् सान माधे माधि विशेषतः। क्षच्छादि नियमानाच चान्द्र-मानप्रमाणतः" । याभ्यां कात्तिकादिसाने सौरचान्द्रयोदि-कत्येनानुष्ठानम्। मदनपारिजातध्तविष्णुवचनम्। "दर्भं वा वा पोर्णमासी वा प्रारभ्य सानमाचरेत्। पुर्णान्यज्ञानि विंश्रम् मकरस्थे दिवाकरे" ॥ दर्भ पौर्णमासौभिति पूर्वदिन-मद्भाष्यप्रमिति नारायणोपाध्यायाः। वैप्यवासृते तु भविष्य-प्रराणवचनम्। "गवामर्डप्रस्तानां लचं दचा तु यत् फलम्। तत्पत्तम् समते राजन् ! मेपे सात्वातु जाज्ञवोम्" ॥ कार्त्तिके

फुरुक्वेदं माध्यानं मद्दावतम्"॥ चान्द्र साने तु मकराकांस्पृष्टकाले मकरस्ये रवाविति मन्त्रस्तु न पाठः असमवेताथे
त्वात् आरब्ध कार्त्तिकादि साने तु व्याध्यादिना सामयांभाये
पुत्रादि प्रतिनिधिना कार्यतिष्य नानुकत्यविधिना नित्यसान
एव तिद्धानादिति विद्याकरः। स्कन्दपुराणम्। संप्राप्ते
मकरादित्ये पुत्र्ये पुत्र्यपदे सदा। कर्त्तव्यो नियमः कथित्
प्रतस्त्रपौ नरीत्तमः"॥ पट्षिंग्रक्ततिनगमौ। "संक्रान्त्यां
पञ्चद्याद्य द्वाद्यां याद्ववासरे। वस्त्र न पौड्येत् तत्र न च
चारेण योजयेत्। संक्रान्त्याच्च व्रयोद्यां पचान्ते नवमीदिने। मत्रस्यां रविवारे च स्नान मामनकेस्वजेत्"॥ प्रातातयः। "रविवारेऽकं संक्रान्त्यां पष्ठाां वे सप्तमौतियौ। आरोप्यकामस्तु नरो निम्बपत्रं न भच्येत्"॥

क्षत्यचिन्तामणी गुणिसर्वस्रे च । "चैचे मासि च संपूज्यो घरटाकणी घटाताकः। प्रारोग्याय सुदीमूलं संकान्यां तत्र कारयेत्"॥ पूजामन्तः। "घण्टाकर्णः। महावौरः। सर्वव्याधि-विनामन !। विस्फोटक भये प्राप्ते रच रच महावल !"॥ भिव-पुराणे। "घण्टाकणीगणः श्रीमान् शिवस्थातीव वस्रभः"॥ क्षत्यचिन्तामणी "सस्रं निम्बपत्रच योऽसि मेपगते रवी। श्रिपि रोपान्वितस्तस्य तचकः किं करियति"॥ संवक्षर प्रदीपे तूत्तराईं "मेषस्येच विधी तस्य नास्यद्रं विष्ठं भयम् इति स्मृति:। "सेवादी शक्तवो देया वारिपूर्णा च गर्गरी"॥ वारि-टाने मन्तः। "एप धर्मघटोट्तो ब्रह्मविषाुशिवात्मकः। अस्य-प्रदानात् सफला सम सन्तु सनोरथाः। वैद्याखियो घटं पूर्ण सभोच्यं वै दिजनाने। ददात्यभुक्ता राजेन्द्र! स याति परमां गतिम्"॥ पूर्णं जलेनेति श्रेषः। सहार्णवे। "यो ददाति हि मेपादौ भक्त्रनम्बुघटान्वितान्। पितृनुहिम्य विप्रेभ्यः सर्व-पापै: प्रमुचते। विप्रेभ्य: पादुके कृतं पित्रभ्यो विप्ने शुभं 🛭 पितृभ्यः पितृनुहिश्य द्रत्यर्थः। चत्र विषुवस्य पुर्खित्रीपननकः लेन विविचितलात् मेषादाविति विषुवसंक्रान्तिपुर्यकास-परम्। अन्यया दालहयकत्पनापत्तेः। कर्मोपदेशिन्यां व्यासः। "सकान्यां पचयोरने दादश्यां त्राधवासरे। सायं सत्यां न

बुर्वीत हाते च पिट्रहा भवेत्"॥ देवीपुराणे। "अतीताना-गतो भोगो नाद्यः पध्यम् सृताः। साम्रिधन्तु भवेत् तम श्रष्टाणां संझमे रवे.। पुरुष पाप विभागेन फलं देवी पय-च्छति"॥ भोगः पुरायपायज्ञननयोग्यकानः पुरायपायविवेचने विद्यामितः। "यमार्याः क्षियमाणं हि संक्षान्यागमवे-दिभि:। सधमेियं विगईत्ति तमधर्म प्रचचते ॥ आगम॰ वेदिभिः क्रियमाणमिति सम्बन्धः। तान्विकास्तु। "विश्वित क्रियया साध्योधमः पुंसोगुणी सतः। प्रतिपिद्धक्रियासाध्यः सगुणो धर्म एचाते"॥ यहाँकि मिन्नेय काले पुरवपापफलदा-नदर्भनात्। संक्षमण पुण्यकाल एव स्नानादियनेनादित्यागः। एवरिव गुरुचरणाः एकादशी प्रकरणोत्त मक्रान्यपवासस्य व्रत-त्वेन भावरूपत्वाद्वावघटितत्वाद्वीभयथापि तत्र पृष्ये विधेष्-तिरित्यनेन पुराकासगुक्ताहीराचकत्त्र्यता अष्टम्यपवामवत्। एकादेगौतस्वे एतषष्ठधा विम्पटम् एवस राविष्ठागर्श्व मक्रान्तो दिवाशेषाई मावस्य तत्पुख्यकालवाद्राविमुहर्ताई साय सन्यो॰ पासन कार्यमेव। ब्रह्मपुराणे। "नित्यं ह्योग्यनयोजित्य विषु-धनीदयोः। चन्द्राक्योय इणयोक्यतीपातेष प्रयम्। अहीरावी-पितः सानं याद्यं दान तथा जपम्। यः करोति प्रसनात्मा तस्य स्यादसयस्थितत्"॥ असोरावोषितः पूर्वदिने सतोप-वास एतत परमेव "पहरावे व्यतीते तु संक्रान्तिर द इभवेत्। पूर्वे ब्रतादिकं कुर्धात् परेदाः सानदानयोः" इति भीमप्ररा-क्रमीयम्। स्नानदानयोरित्यत्र सप्तमीनिर्देशात् परदिवसीय छानदाननिमित्तक पूर्वदिन उपवास सयम रूप व्रतादिकं कुर्यादित्यर्थः ।

यय गहणम्। ज्योतिये "भविषादान्तरे राष्टोः सेतीर्या संखितो रवि:। चतुष्पादान्तरे चन्द्रस्तटा संभाव्यते गप्तः"॥ भविषादान्तरे नव्यवस्य नव्यवयोगी विषादास्थन्तरे। "यधि-वृष्ठे रविस्तमाव्यत्वयगतः यभी। पूर्णिमा प्रतिपत्तस्यौ राष्ट्रणा यखते भगौ"॥ एतटपि पूर्ववचनामुसारेण तव्यतः ष्यादास्थन्तरे सति त्रेयं तस्यात्तमारस्य तत् परतो वा प्रत्योदिशे "त्रण्याचे द्यतोयायां मास्स्यं यदि व्यायते। ततस्वयोदशे

सूर्ये राष्ट्रणा ग्रस्थते रविः"॥ मासर्चं कार्त्तिकादी क्रितिकादि एतद्पि भविपादान्तरे सित चिय राष्ट्रीः पादभीगय सास-ध्येन। "रविभौमनवांशितु निरम्नं यासमादिशेत्। बुध-सीरिनवांशे तु मलिनं चुद्रवर्षशम्॥ गुरो रंशकमासादा सवसाहकः। प्रशिश्कानवागितु प्राहट्काले सहज्जलम्॥ चन्यवाव्यक्तभूती तो दृखेते छादिताखरी"॥ चन्यत वर्षेतर-काले ती चन्द्राकी। क्रत्यचित्तामणी वराष्ट्रः। "खेते चेम-स्भिचं ब्राह्मणपौडाञ्च निर्दिश्रेद्राष्ट्री। श्राग्निभयमनलवर्षे पोडा च इत। प्रष्टतोनाम्॥ इति रोगानुतापः प्रस्थानामी-तिभिय विध्वसः। कपिले शोधगलस्त्रेच्छध्वसोऽय दुर्भिचम्। यर्गपिकरणानुरूपे दुभिन्नं ब्रष्टयो विद्यापीडा भूम्नाभे चेम-सुभिचमारियेनान्ददृष्टिच कापोताक्ण कपिले स्थामाभे च चुइयं विनिर्दिशेत्। कापोत. शूद्राणा व्याधिकरः क्षण्वर्णस विभनकमनपौताभी वैश्यध्वसौ भवेत्। सभिनाय सार्चिष-मिनभय गैरिकरूपे च युद्धानि दूर्वाकाण्डग्यामे हास्ट्रिच।पि निर्दिशेकारकमः अश्रनिभयसंप्रदायी पाटलिकुमुसीपसी-राष्टुः"॥ राजमार्त्तग्छे। "सप्ताष्टजन्मग्रेषेषु चतुर्थे दशमे तथा। नवमे च तथा चन्द्रे न कुर्याद्राइदर्यनम्"॥ श्रीपति॰ व्यवद्वार निर्णये विशिष्ठ.। ''जन्मभे जन्मराशौ च पष्ठाष्टम गते तयो:। चतुर्थे द्वादशे चन्द्रे न कुर्याद्राहुदर्शनम् ॥ ग्रासदर्शन-मावेण चार्यश्वानिर्मेषद्भयम्। जायतं नाव सन्देषस्तस्मात्तत्-परिवर्जियेत्"॥ अन्यनच्यापेच्या पष्टे त्रयात् मप्तमतारायां निधनेऽपि चेत्येकवाक्यत्वात् जकाराभ्यपेचया यष्टमे चन्द्रे श्रवाष्य्यसचणश्चे चदा नवमे चन्द्रेऽहु इत्येकवाव्यत्वात् वराष्ट-सिहतायाम्। "जन्मभप्ताष्टरिष्फाद्वरमस्ये निमाकरे। दृष्टीऽरिष्ट प्रदो राष्ट्रजन्मर्चे निधनेऽपि च"॥ रिपफ द्वादग्र-राशि:। श्रद्धो नवमः। निधनं सप्तमतारा तथा "वैनाशिकः क्रमो हर प्रहणं सुधांश्वभास्करयोः। जनयानि रोग बहुधा हा श विनचयं चाग्र। नमाष्टनायान्य वधमें संस्वे निशाकरे जनासु तारकास्। दद्वा तमयन्द्रमसं प्रयद्वादभ्यस्य द्वात् वानक दिनाय"॥ उपक्रमे सुधाश्रमास्वारयो रिति दर्गनात्

चन्द्रममिति स्थिसाप्यमन्त्रचगम। वैनाशिक ऋषे वयो-विग्रतिनचत्रे इति केचित्। वस्तुतस्तु वैनाशिकापदे निध-नतारापरम्। निधनेऽपि चैत्येकवाकात्वात् वैनाशिकपदम्य गर्मेष विपक्त रादिसाइचर्यात् स्रयोविमतिगचत्रस्य पत्य रिपद-प्राप्तत्वादिपि सप्तमतारायां पिठतत्वाच । यथा "विपत्करप्र-त्यरिसंगीतेषु वैनाशिकचेषु छतं हि कमे। सर्वे नृणां निप्त-समेव तसात् क्षतेऽपि तवास्ति ग्रमं न किश्वित्"॥ जाया-न्य प्रधर्मा सप्तमहादशदशमनवमराशयः। ननु च्योतिः शास्त्राद्यक्त निपेधो हिंसावद्यष्टिच्छिकपरोस्त नत् वैधपरः मैवं "राष्ट्रदर्शन मंझान्ति विवाहात्ययहिष्। सानदानाः दिकं कुर्य्य निधा काम्यवतेष च"। इति देवन वचने दर्शन-पदञ्जवणाहर्शने सति सानारेमेष्टाभ्यदग्रहेतुत्वादर्शनमपि विधेयम्। तथा च संवसर प्रदीपे भाक्षण्डे यः। "एकश्रव-मुपोर्येव राहं दृष्टाचयं नरः। पुरुषमाम्रोति क्षत्वा च दानं त्राडं विधानतः"॥ ततस तस्यैव प्रक्षतत्वेगीपस्थितस्य यैध-दर्भनस्य पर्युदासी नसु रागप्राप्तदर्भनस्य निपेधोऽप्रक्ततत्वे-नानुपस्थिते:। एवच पदार्थान्ता साकाङ्ग विशेष विधि-मपष्टाय तदितरव मामान्यमन्वेतीति सर्वत्र पटाष्ट्रवनीयादी सामान्यस्य विश्वेषेतरपरत्वे वीजम। यथा सहरहर्दयात् दौचितो न ददातौति प्रतिपेधात् दौ चितेत्रयदं न राग्रप्राप्त-निपेधकम्। तदुक्तं "तिधैव ज्ञायते कर्त्ता विश्वेषेण प्रति-क्रियम्। योग्यत्वं प्रतिधिद्यत्वं विश्वेषेण पदान्वयैः"॥ यज्ञ-भानः पठतोति शुखा तर्योग्योविद्यान् दोचितो न ददा-नीति प्रतिपेधाद्दीचितेतरपरः "स्वर्गकामीऽजिन्होमेन यजेत" इत्यव विशेषणात् खगकामः कर्त्ति तेन सप्तमचन्द्रादीतरी राहुं दृष्टा सायादिति नभ्यते। एवं वैधदर्शनपर्थ्यस्पि निन्दाप्रायिसियोः अवणाद्रागप्राप्तदर्शनस्य प्रमुख्यप्रतिषेधः ऋविभगमननियमे पर्वणः पर्युदस्तवेऽपि तव रागप्राप्तगमः नस्य प्रसच्य प्रतिपेधवदिति प्रपश्चितं सनमास्ततस्य । स्रतएव भोजराजः। "पौषे मैंचे हारायचे नवासं नाचरेषुधः। भवे-व्यमान्तरे रोगौ वितृषां नोपतिष्ठते"॥ अव निन्दायवणात् प्रमण्यता नोपितिष्ठत इति यवणात् पर्युदामनेति। देवन-वचने नियोति पर्युद्दतममयमावपरमन्यया मायाक्के विदा-इति र इदर्गन मझान्दादिनिमित्त द्वानादि च न स्थात। सत्तप्व "यहणोद्दास मंझान्ति यावादो प्रस्वेष् च। दानं नैमित्तिक ज्ञेय रावाविष मदिखने" इति दानदर्पणधून हुइ विश्ववचने रावाविष मदिखने" इति दानदर्पणधून हुइ विश्ववचने रावाविषाच्चा प्रतिविद्य कानान्त्र समुद्यी-यते। इन्दोगपरिणिष्टम्। "यव्यद्वय व्यावणादि मर्वानद्यो रज्ञालाः। तास सानं न क्वीत वज्ञीयत्वा समुद्रगाः। छपा-समिण चोत्तर्गे प्रेतस्ताने तथैत च। चन्द्रस्थ्यत्वे चेद रज्ञो दोषो न विद्यते। स्वर्धन्यक्ष समानि स्युः सर्वास्वमामि भूतन्ति। कूपस्थान्यिष स्रोमार्कप्रदर्ध नाव मद्रयः"। यव्योन्सासः।

नदीनचणमाद्य। "धनु सहस्राख्यष्टी च गतियसिं न विदाते। नतानदोशस्वदा गर्नास्ताः 'पिन कोर्नताः''। खर्षनोगद्वा यासामपाम् । धनु प्रमाणमाह विश्वधर्मीत्रीय प्रथमकाण्डम्। "हाद्याङ्गिकः शङ्क्षयन्तु शय सृतः। तचतुष्कं धनु. प्रोक्त क्रीग्रीधनुः महस्रिक."॥ ग्रागेहस्तः। श्रव विशेषो सदम पारिजाते निगमः। न द्खेनौगवासिनाः भिति। अनैव व्याभवाद:। "स्रभावे कूपवापीनाम अन्ये-नापि समुद्धते। रजादृष्ट्रिपि पर्यास यासमागो न दुर्घाति" ॥ घन्येन सुभादिना। घतएक छन्दागपरिशिष्टकतापि तास्ति-त्यधिकरणेन निर्दिष्टम्। देवलः। 'गङ्गाच यम्नाचैव प्रच-काता सम्खती। रक्तमा नाभिभृयन्ते ये चान्ये नदमञ्जाः" कुरुचे या सरस्रती सा प्रस्ताता। "श्रीणसिन्धु डिस्प्याः ख्यकोकसो इत्यघर्षरः। शतद्रुय नदाः सप्त पावनाः ब्रह्मणः सुता."॥ यहणे सूपस्यप्रश्रसया यहणप्राक्षासीनीहतस्या-वृत्ति:। व्याघः। "पादित्यिकार्णः पूत पुनः पूत्रच विञ्चना। व्याध्यातुर. स्वायात् यहणेऽप्युष्ण वारिषा"॥ एवसूत सस यतोऽत उणावारिणापि स्रायादित्यर्थः। व्यामः। "मर्वे भूमिसमं दान सर्वे व्याससमा दिजाः। सर्वे गद्वासम तोयं यहणे नाव संयय."॥ तथा "इन्दोर्लचगुण प्रोत्तः रवेर्यगु-

णय तत्। गद्रातीरे तु संप्राप्ते दुन्होः कोटी स्वेर्द्रश्रा संगोग-ष्टवन्तन्यायात् यत्र यादं नित्यं काम्यद्य। तया च ऋण-अङ्ग गातातपौ। "सर्वस्रेनापि कर्त्तवां आहं वै राष्ट्रदर्भने। यनुर्वाणम् तस्हारं पद्वे गौरिव सौद्ति । चन्द्रस्थ्यम् यसु आरं विधिवदासरेत्। तेनैव सकला प्रको दसा विप्रस्य वे वर्ण ॥ प्रभामयाष्ट्रमाष्ट्र प्रचेताः। "प्रापद्मनमो तौर्ये प चन्द्रस्थिपहे तथा। - भामभादं हिनै: कार्ये शुद्रेण तु सदै-विषि"॥ विशिष्ठः "श्रयां चेत्रगतं प्रीक्षं सतुषं धान्यसुराते। षामं वितुषिभित्युष्टं स्वियमसमुदाष्ट्रतम्"॥ योगिनीतन्से। र्विरमे रामयाहे तु यय न चास्येत् सचित्। हही तु चालयेदवं सक्रमे यहणेषु च"॥ यहणितिमनत्राहादि सब-सासेऽपि कार्यं "नित्य नैमित्तिके कुर्यात् प्रयतः सन् मिल-म्बुचे। तौर्यमानं गजच्छाया मेत यादं तथैव घण ॥ इति एइस्रितवचनात्। त्राइविवेकेऽध्येवम्। "चम्द्रस्थ्यम्हे स्रान याददानजपादिक। कार्याणि मलमासेऽपि मित्य-नैमित्तिक तया"॥ इति कासमाधवीयधृतवचनाच । चापिना षमोऽपि कानदोषाः समुचिताः। सारसम्रहे "सत्तीयेऽवे-विध्रयाचे तन्तु दामन पर्वणोः। मन्त्रदीचां प्रकुर्वाणो मास-चाँदीन ग्रोधयेत्"॥ तन्तु पर्वपरमेखरीपवौतदानतिशः यावणी दामन पर्व मदनभष्ठनितिधिश्वेत्रग्रक्तचतुर्दग्री। रामा-र्चनचिन्द्रकायां "चन्द्रसूर्ययहे तौर्ये सिहचेते शिवासये। भन्तमात्रमध्यनमुपदेशः भ उचाते"॥ गार्ड। "स्थिय दः स्थेवार सोम सोमयशो भवेत् चुडामिक्रियम् योगस्तवानन्त-फल सातम्। प्रन्यसात् प्रष्टणात् कोटिगुणमव फलं लभेत्"॥ देवोपुराणे। "यस्य राग्री ग्रहाः पञ्चायवा सप्त सुराधिए!। यहण चन्द्रस्यस्य ग्रहेर्वाष्ट्रमसंस्थितै:॥ सनिदान प्रकत्तेवां मातृषां पूजन हितम्। स्यीसाध्यर्जन कार्या विद्याग्रम-ना शनम्"॥ नच देवल दर्शनेत्यच राष्ट्रदेश्यतेऽनेनेति व्युत्-पत्था राइदर्शन महणं न तुतसा दर्शनिमिति वाचां "चन्द्रे वा यदि वा सूर्यों दृष्टे राष्ट्री महाग्रहे। अचयं कि धितं पुर्ष तमायके विशेषतः" ॥ इतिमार्कण्डेय वचने राष्ट्री इष्ट इत्य- भिधानात् राहुं द्रष्टा घयं नर इख्नातात् यावहर्यनगीचर इति वचनाच तम् दर्गनं चाच्यन्नानं न न्नानमात चन्द्र-सुर्योपरागस्य सानादो संक्रान्तिवत् ज्ञातस्यैव निमिन्नलात न्नाने प्राप्ते राजुदर्शन इति वचने चन्द्रस्योधरागे च यावह-श्रीचर द्ति जावास वचने च दश्नादाचाच्पन्नातिषय-स्येव निमित्तता विधोयते तत्रैव दशेम् खालात्। तया च संवसारप्रदीपे। "चच्चपा दर्शनं राष्ट्रीर्यन्तद्ग्रहणमुच्यते। तत्र कर्माणि कुर्वीत गणनामः वती न तु"॥ यसर्ण यस्णनिमि-त्तक कर्मप्रयोजकं राष्ट्रदर्शनमधास्यातीपस्थापित सानादि कन्: साक्षिधात्तिष्ठभेव साधवात्। श्रन्धधा "सीमन्ती-स्रयने चैव प्रवादिसुखदर्शने। नान्दीमुखं पिद्धगणं पूजयेत् प्रयतो ग्रही ॥ दति विशापुराणीऽपि खपुवस्थान्यकत्क सुख-दर्शने जातेऽपि याद्यं प्रमञ्चेत । पूर्वनिखित मार्कण्डेयवचने ट्टें ति का यवणाच हैमादिस् यावदर्गनगीचरस्तावत् पुष्य-काली यदास्त गतः। न दृश्यते तदा न पुरुषकालः। तया च यस्तास्त्रसिते विशिष्ठ' पूर्वमेव सानार्थं तिष्ठति भोद्गे। देव-लोऽपि "यया स्नानच दानच सूर्यम्य यहणे दिवा। सोम-स्यापि तथा राह्री सानं दानं विधोयते"॥ निगमीऽपि "सर्थ-ग्रही यदा रावी दिवा चन्द्रग्रही भवत। तव स्नानं न सुर्वित ददात् दानं न कुवचित्" ॥ इत्याद्य साधवाचार्योऽपि प्रस्ता-स्तमयपर्यान्तं द्रभैनयोग्यत्वात्तावान् पुर्खकालो भवतीत्वादः। छतेनान्यकर्नुक दर्शने ग्रस्तास्तानन्तरस्य यत् स्नानादिकमिन हितं नारायणोपाध्यायेन तर्यमिति।

पवद्य यस्तास्ते प्रस्तीदये च पुरधरणं न समायति सार्था-दिस्तिपर्यान्तिस्यभिधानात्। यथा पुरसरणचिन्द्रकादिष्। "चयत्रान्त प्रकारण पुरसरणमिष्यते। सहणेऽकस्य चिन्दोवी-श्रविः पूर्वसुषोषितः। नद्यां ससुद्रग्रामिन्या नामिमान्नजले स्थित । यदा पुष्योदके साला श्रविः पूर्वसुषोषितः। सह-णादि विभोचान्तं जपेबान्त समाद्वितः। धनन्तरं द्रशांगिन क्रमाद्वीसादिव घरेत्। तदन्ते सहतीं पूजां कृष्यीत् व्राह्मण-तर्पस्। ततो सन्तर्गासद्ययं गुतुं संपूज्य तोषस्तेत्। एवद्य णच तत्। गष्टातीरे तु मंप्राप्ते इस्टोः कोटीरवेर्द्रश्"। संयोग-रविक्लनायात् यत्र यादं भित्यं काम्यश्व। तया च ऋच-अक्ष यातातपी। "सर्वस्वनापि कर्त्तव्यं याष्ठं वे राष्ट्रदर्भने। मजुबाषम् तच्छा चं पहे गौरिय सीट्ति । चन्द्रस्थाय हे यस्तु आय विधिवदास्योत्। तेनेव सकला एको इसा विप्रस्य वे वर्ण। चन्नामयाद्यमार प्रचेताः। "प्रापदानको तीय च षद्ध्यपे तथा। - मामयादं दिनेः कार्ये मुद्रेण तु सदै-विषि"। विभिष्ठः "गर्यं चेत्रगतं प्रोक्षं सतुपं सान्यमुस्तते। षासं विसुपमित्युत्रां खिन्नसम्रमुदाद्वतम्"॥ योगिनीतन्त्रे । र्विरमेर। मन्त्राहेतु अन्नं न चालयेत् कचित्। वृद्धी तु चालरीदमं मंक्रमे यहणेषु घण ॥ यहणिमित्तयादादि सस-सासेऽपि कार्यं "निख नैमित्तिके कुर्यात् प्रयतः सन् मिल-माने। तोर्घसानं गजच्हायां प्रेत यादं तर्येवच"॥ इति वस्यतिवचनात्। याह्यविवेऽग्येवम्। "चम्द्रम्थ्यग्रहे स्रानं त्राइदानजपादिकं। कार्याणि मलमासेऽपि नित्य-नैमित्तिक तया"॥ इति कासमाधवीयधृतवचनाश्व। प्रिया यन्येऽपि कानदोषाः समुचिताः। सारसम्हे "सत्तीयेऽव-विध्यामे तन्तु दामन पर्वणोः। मन्बदौचां पक्षवीणो साम्र-र्चारीन योधयेत्"॥ तन्तु पर्वपरमेखरीपवीतदानतिथिः श्रावणी दामन पर्व मदनभद्धनतिथियत्रमञ्जूष्यो। रामा-र्घनचन्द्रिकाया "चन्द्रस्थेग्रहे तौधे सिहचेत्रे शिवासरे। मन्त्रमाष्प्रकथनमुपदेशः म खखते"॥ गात्हे। "स्येग्रहः स्र्यं वारे सीमे सीमग्रही भवेत् चूडामणिर्यम् योगस्तवानमः-फलं समृतम्। धन्यसात् प्रष्णात् कीटिगुणमव फलं लभेत्"॥ देवोपुराणे। "यस्य राश्री ग्रहाः पश्चायवा सप्त सुराधिप।। यक्ष चन्द्रस्यास ग्रहेर्वाष्ट्रमसंस्थिते:॥ विसिद्दानं प्रकत्तेवां मातृचां पूजन हितम्। सूर्यसाध्यक्षेन कार्ये प्रावसाग्रम-ना भनम्"॥ नच देवन दर्भनत्यच राष्ट्रंश्यतेऽनंगति व्युत्-पस्था राइदर्शनं अहणं नतु तस्य दर्शनमिति वास्यं "सन्द्रे वा यदि वा सूर्ये दृष्टे राष्ट्री महाग्रहे। अच्छां कशितं पुर्ध तेवाणके विशेषतः"॥ इतिमार्कण्डेय वचने राष्टी दृष्ट इत्य-

भिधानात् राचुं दद्वारचयं नर दत्वत्रत्वात् यावद्रश्नेगीचर् द्रति वचनाच तच दर्शनं चाच्यानानं न ज्ञानमावं चन्द्र-सुर्योपरागस्य सानादी संक्रान्तिवत् द्वातस्यैव निमित्तत्वात् न्नाने पाप्ते राचुदर्शन इति वचने चन्द्रस्योपरागे च यावर्-श्रवगोचर इति जावान वचने च दशनपदाचाच्यमानविषय-स्येव निमित्तता विधोयते तर्वेव दृशेमुख्यत्वात्। तथा च संबसरपदौषे। "चचुधा दर्शनं राष्ट्रोयसद्यहणस्चते। तत कर्माणि कुर्वीत गणनामावतो न तु"॥ यद्यां यद्यानिमि-त्तक कर्मप्रयोजकं राष्ट्रदर्भनमप्याख्यातीपस्थापित सानादि कंत् साविध्यात्तिष्ठमेव लाघवात्। अन्यया "सीमली-स्यम चैव प्रवादिमुखदर्शने। नान्दीम्खं पिष्टगणं पूजरीत् प्रयती स्टही" ॥ इति विष्णुपुराणेऽपि खपुवस्यान्यकर्वेक मुख-दर्शन चातेऽपि यादं प्रमुच्येत । पूर्वनिवित मार्कण्डयवचने दृष्ट्विति ह्या खवणाच हिमाद्रिस्तु यावइर्यनगोचरस्तावत् पुर्य-काली यदास्तं गतः। न दृश्यति तदा न पुर्खकालः। तथा च ग्रस्तास्त्रमिते विशिष्ठः पूर्वमेव सानार्थं तिष्ठति नोर्ह्वः। देव-लोऽपि "यथा स्नामञ्च दामञ्च सूर्यासा यश्गे दिवा। सोम-स्यापि तथा रावौ स्नानं दानं विधीयते" ॥ निगमीऽपि "स्थैन याची यदा रावी दिवा चन्द्रयही भवेत्। तव सानं न सुर्वीतः टदात् दानं न कुलचित्"॥ इत्याह माधवाचार्योऽपि यसा-स्तमयपर्यन्तं दर्शनयोग्यलासावान् पुरस्कालो भवतीत्वादः। धतेनान्यकर्नक दर्शने ग्रस्तास्तानन्तरस्य यत् सानादिकमिन द्वितं नारायणीपाध्यायेन तद्वेयमिति।

एवद्य ग्रस्तास्ते ग्रस्तोदये च पुरसरणं न मस्यति स्पर्धाः हिस्तिष्यं स्तिस्य सिधानात्। यया पुरसरण चित्रकादिष्। "स्वयान्य प्रकारण पुरसरण सिध्यते। सहणे अस्य चेन्दोर्वाः ग्राचः पूर्वस्योपितः। नद्यां सस्द्रगामिन्यां नामिसालजले स्थितः। यहा पुष्योदके स्नात्वा ग्राचः पूर्वस्पोपितः। ग्रहः णादि विमोत्तान्तं सपेवान्त्र ससाहितः। सनन्तरं द्रयांग्रेनः समाद्योगादिक स्वरत्। तदन्ते सहतीं पूनां कुष्यात् वाद्यण-समाद्योगादिक स्वरत्। तदन्ते सहतीं पूनां कुष्यात् वाद्यण-समाद्योगादिक स्वरत्। तदन्ते सहतीं पूनां कुष्यात् वाद्यण-समाद्या। ततो सन्त्रमसिद्यां गुनुं संपून्य तोषस्रेत्। एवद्य सन्तिभिष्ठिः स्याद्देवता च प्रमोद्धति। अधवान्य प्रकारीऽयं पोरयारणिको विधि:। चन्द्र मूर्य्योपरागेच स्नात्वा प्रयत-सानमः। सार्गादि मोचपर्यन्त अपेमान्त ममाहितः। जपात् द्यांग्रती द्वीमं तथा होमान् तर्पगम्। एवं कृत्वा तु मन्त्रस्य सायते सिहिक्समा"॥ गीपाममन्त्र तर्पणेत् द्वामसम-स्वात्व यथा। "इह गोपान मन्त्राणां तर्पण होसमंग्यया। समं द्वेयन्तु सर्वेषाभित्यश्यमधिदीविदु."॥ पुर्गस्क्रियाचर्याः याम्। "होमाशको लपं कुर्यहिममंत्याचतुगुणम्। धड्-गुणं चाष्टगुणितं यथामच्यं हिजातयः॥ तथा खीणान्तु विज्ञेयस्तेषामेव समोजपः। यं वर्णमाण्यितः श्टम्तक्जपस्तस्य कौ तित."॥ तथा "मूनमन्त्र समुचार्य तदन्ते देवता।सभाम्। दितीयान्तामस पद्यासप्रयामि नमाइन्तमः। तपेपस्य दयां-शिन मार्जन कथितं किन। तश्चैवं देवतारूप धाः त्यानं प्रपूच्य च। नमोशन्त मन्त्रम्यार्थ्य तदन्ते देवताभिधाम्। हितौयात्तामष्टं प्रयादांभविद्यास्यनेन तु। तायैग्द्रानिना शुद्धैरिभिषिकेत् स्वसूर्वि । सार्जनस्य दर्शाः न वाञ्चाणानिष भोजयेत्। विद्राराधनमाचेगा व्यङ्ग माङ्ग भवेद्यतः। अपो-उचापूर्वको द्वामसर्पण चामिपेचनम्। भूदेवपूजन पच पका-रेख पुरस्क्रिया" ॥

तव प्रयोगः । स्नात्वाचस्य तत्सदिखचार्थ्य प्रदोखादि राष्ट्रयस्ते निशाकरं श्रमुकगोवः श्रांश्रमुक देवसमां श्रमुकदेवन् ताया श्रमुकमन्त्रसिद्धिकासो यासादिमुक्तिपर्यन्त तत्वपमञ्च करियो दल्लिमच्य तावत्वालं कपेत् । ततः प्रातः पृजयेत् । ततो जपदशाश्रहोमं कुर्यात् तदसक्षये राष्ट्रयस्त निशाकर-वाकौनामुक्तमन्त्र जपदशांश्रहोमममसख्याचतुर्गुण जपसङ्घः-रिप्ये प्रति मद्भल्याः जप काला समप्रे राष्ट्रयस्त निशाकर कालोनामुक्तमन्त्र जपदशांश्रहीम तद्दशाश तर्पणमस्द्रस्थि दति मद्भल्या मन्त्र सुद्धार्यामुक देवतामहं तर्पणासि नम दल्लेन तर्पयेत्। गोपान मन्त्रे त दोसदशाश दल्यव दाम-सम्मख्येति निर्देश्य ततस्तु राष्ट्रयस्य निशाकरकालोनामुक-सन्त्रन पदशाश्रहीम तद्शांश तर्पण तद्दशांशासिवेक सप्ट

करिष्ये इति सङ्कल्परात्मानं देवतारूपं ध्यात्वा नमोऽन्तं सन्त्र-सुचार्यामुक्तमसमिषिद्यामौत्यनेन स्वमूर्डन्यञ्जलिनाभिपि-श्वेत्। गोपालमन्त्रे तु होमदयांग्रेखव होमसमसखोति निर्देखम्। ततो महती पूजां विधाय तद्भिषेकद्शांश्-ब्राह्मणमोजनमइं कार्ययथे इति सङ्ख्या ब्राह्मणान् भोजयेत्। गुरुं संपूज्य दक्षिणया तोषयेत्। सूर्व्ययहणे तु राहुप्रस्ते दिवाकर इति विग्रेष:। यद्यणदर्भने स्नानमावश्यकम्। तया च हरदिशिष्टः। ''संक्रमे ग्रहणे चैव न स्रायाद्यस्तु मानवः। सप्तजनामु कुष्ठी स्वात् दु:खभागो च सर्वदा"॥ श्रवाशीचेऽपि साङ्ग सानं कर्त्तेथ्य न याहादि। तथा च संवसरप्रदीपं गङ्गावाकावकाः स्रातः। "स्तक सतके चैव न दोषो राष्ट्र-दर्शने। स्नानमात्रन्तुं कर्त्तेव्यं दानयाहिवविजितम्"॥ भविष्ये "चन्द्र सूर्ययहे चैव मृतानां पिएइकर्मणि महातीर्यं तु संप्राप्ते सतदोषो न विदाते"॥ सप्तातीर्थं गङ्गादी संप्राप्ते तत्तत् सेय-वामादिना सम्यवा प्राप्ते न तु प्रथम प्राप्तिमात्रे संशब्दानर्ध-काःपत्ते:। पराश्रयवचने तौर्धपरम्य तत्तिमित्तक कर्मणि लनन मर्षाधीचाभावोध्या सुतरां चतेऽपि तथा कल्पनाया-युक्तत्वाचा यथा ''दोचितेष्वभिषिक्षेष् वततीर्थपरेष घ। तपोदानप्रसक्तेषु नागीच स्तस्तके"। दीचिति यज-मानानां सोमयागाङ्ग दोचणीयेष्टी कतायां दीचितलं भवति तेन दीचणोयेष्ट्रासरं कानं यक्तमानस्य यत् कर्त्रश्यं विधितं तभागीचं नास्ति यभिषिक्षेष प्राप्तराज्ञवाभिषेकचित्रयेषु ति धियेष विश्वित व्यवशारदर्शनादि कर्मण्यगीचं नाम्ति। व्रतः परो व्रतानुष्ठानप्रसक्तः तीर्यपरस्तत्तत् चेववामादिना तिष्-मित्तक कर्मानुष्ठानप्रसक्तः। एवं रापोदानप्रसक्तेष्विप नागोचं गर्गः। "यिधिं खिनमानचने प्रधेते ग्रियभास्तरो। तज्जा-तानां भवेत् पौडा ये नराः गान्तिवर्जिताः" ॥ दोपिकायां "ग्रहण ग्रहपरिपोडित नाडोनचय टोपगमनाय सुद्द ज्ञत-मुय्ये: सायात् कलिनीकनचन्दनोगोरे:" 🛊 गतपुष्पा ग्रनुका फिनिने प्रियद्गः फलं सातीफसं नाही नथवाणि च चादा-रमम षोड्याष्टादम वयोविंग पद्मविंगानि। च्योतिपे

"तास्त्रपातं तिर्है: पूर्णं पूर्णं वा गव्यमिपिषा। भास्तरग्रहेषे दयाबाडौदोपोपपौडित:। पृतकुभीपरिनिष्टितं ग्रहः नव-नौतपूरितं दवादाखादिदीपगान्यै विजाय दोषाकर पहणे। गायौ यत्र विधन्तुदेन तरणियन्द्रोऽधवा ग्रस्यते। तसाहेट-हुताश शहर्यमाः कखाणटा रागयः। मध्यखारिधगाय-काइदयमाः सामान्यभोगपदा युगमन्ती तुरगाष्ट्रमाः ऋलु नृणां यच्छन्ति नेष्टं फलम्"॥ वेद दुताश शहरसाधतुस्ये-काटशपट् रविशायकाङ्क दशमाः हार्शपञ्चनवमदश्रमाः युग्नखौ तुरगाष्ट्रमाहेत्रक सप्तमाष्ट्रमाः। हात्यचिन्तामणौ। "श्रविष्ठतं सन्बिल्पातैः सप्ताद्वान्तः स्मिलमादेश्यम्। यञ्चान श्रमं ग्रहणजंतत् मवं नाशमुषयाति"॥ भविक्षतिति करका-दिरहितेत्वर्धः। यत्त्रप्रहणे भीजन विधिनिपेधी दृष्टीपराग-विषयावेव नपुंमावविषयौ मानाभावात्। मुन्ति हर्द्वेत्या-दिना तस्यैन प्रकृतलाचेला हु:। तदा मनोरमम्। "चन्द्रस्य यदिया भानोयं सिनहिन भागेष। यहणन्तु भवेत् तच तत्-मुर्वा भोजनकियाम्। नावरत् मग्रहे चैव तथैवास्त सुपा-गते। यावत् स्थादोदयस्तम्य नान्त्रीयात्ताददेवतु। सृक्षिः दृष्टा तु भुष्त्रीत स्नान सत्वापरेऽप्तनि" प्रति विष्णुधर्मोत्त्रवच-नेन सामान्यतो निपेधात् तयैवेतिसप्रदल्वेनैवेत्वर्यः। चन्द्र-स्थेपहे भुता प्राजापत्येन ग्रध्यति। तिसानेव दिने भुता। विरावाच्छ हिरिष्यते" इति देवजवचनेन सामान्यतः प्राययितः-विधानाचा तिसानेव दिन सिंद्यमोय निपद कालाभ्यलार । "यादिलेऽइनि मकान्ती चन्द्रमुख्यप्रहे तथा। पारणञ्चीप-वामञ्चन कुर्यात् पुववान् रहही"॥ इति निषेधात् पुविगो ग्टलस्यस्थापि सस्तास्तेऽपि नोपवामः किन्तु ग्रल्णानन्तरं पुर्व वा निर्देशिकाली तेन किश्वित् भच्यभिति सवत्सरप्रदीपः। यहण पूर्वभोजन निषेधे विशेषमा ह हरुद्दीतमः। "सूर्ययहे सुनायोगात् पूर्वे यामचतुष्टयम्। चन्द्रग्रहे तु यामां स्तीन् वामहदात्रेविना"॥ चन्द्रस्य गस्तोदये विशेषमाच वृहत्त-गिष्ठः। "यसीद्ये विधोः पूर्वं नाइभीलम्माचरत्"॥ वाल-हदात्रविषये वासस्तिनिम्यष्टतमाकं स्डेयवचनम्। "सायाङ्के

ग्रंहणं चेत्यादपराह्ने न भोजनम्। प्रपराह्वे न मध्याक्रे मध्याक्रे चेत्रसङ्गवे। मङ्गवे ग्रहणं चेत्यात् न पूर्व भोजनक्रिया "॥

श्रवानध्यायोऽपि न दृष्टापरागमाविषययः। "व्यादं न की भीयेंद्र ब्रह्म राष्ट्रीराहीय स्तके"॥ द्रति मनुवचने सामान्यती निपेधात् एव व्याधानध्यायो यस्तास्तविषय इति मिताधारा। चलानिष्टाधिकामपि। "ग्रसाव्दितास्तमितौ ग्रारद्धान्याः वनोखरचयदौ सर्वयस्तौ दुर्भिचमरकदौ पापमदृष्टौ"॥ इति वचनात्। अन्यवावद्योरावमनध्यायो याज्ञवस्क्रात् यथा "सम्यागनित निर्घात भूकस्पोस्कानिवातने। समाप्य वैदं दानिशमारणाकमधौत्य च॥ पचद्यां चतुर्श्यामष्टम्या राष्ट्र-सूतवे। ऋतुष्ठिथपु भुक्षा वा यादिकं प्रतिग्रह्म च"॥ युनि॰ श्रमहोरायम्। पुर्णालिहिचझरोको ख्राङ्गिवङ्गावपांपित्त-मिति विश्वप्रकाशात्। ननु तदहोराव्यस्य पश्चदशीप्रतिपत्-वटितत्वात् श्रनधायप्राप्तौ राष्ट्रस्तके द्रत्वनेन पुनरनधाया-शिधानी, नुवादापत्ति रिति चेस चैत्रयावणमार्गशीर्पाणामादि प्रतिपदो निल्या इति ब्रह्मचारि काण्ड धत दारी तवचने एतासामनधाये निल्लावाभिधानादन्वासा काम्यलात् श्रादिपतिपदः गुक्तपतिपदः । "सच योधिष्ठिरी सेना गाष्ट्रिय स्वताहिता। प्रतिपत्पाठगौनानां विद्योव तनुतां सता"॥ इति व्याम वचनमपि तावसावपरं गाङ्गेयो भोषाः। एवस ऋतुमन्धिष्विति चृत्रतुरुवसारा-भिरायेण ततय राष्ट्रसूतक इत्यपि निस्तत्वाय भतएव गोतमोत्ताकालिकानध्यायोऽपि सङ्घलत। यदा भाकानि-कानिर्घात भूकम्पराष्ट्रदर्भनोस्कादत्याकानिका इति निमित्त-कासमारभ्य परेद्युर्धांवत् स एव कासस्तव भवा एते चीत् क्षद्रनिर्घातादिविषया सनुनीस्कायां तथा विधानात् यया "विद्युत्स्त्नितवर्षेषु महोस्काना च मंद्रवे। पाकानिकामन-ध्यायमेतेष् मनुरस्यीत्"॥ सहीस्कानां मेम्रये इतस्ति। नेक सद्दोस्कानां सन्तिपाते चन्नादिषु प्रतिप्रसवसाह सनुः। "वेदी-पकरचे चैव स्वाध्याचे चेव निहाके। सामुरोधीऽफ्लनधाचे श्वीतमत्त्रेषु चेविष्ट"। यराग्ररभाष्टे मुर्गपुरापचा "पन-

ध्यायस्य नाष्ट्रेषु नितिष्ठासपुराणयीः। न धर्मभाष्ट्रेष्टन्येषु पर्वस्वेतानि वर्जयेत्'॥ श्रद्धान्याद्ध ग्रिचापद्मभ्। "क्रन्दः पादी तु वेदस्य इस्तो कस्पोऽय कप्यते । क्योतिषामयमं नेत्रं निरुक्तं ज्योत्रमुचते॥ शिचा प्राणन्तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्रतम्। तस्रात् साइमधीत्यैव ब्रह्मतोके महौयते'? । कस्यी-नाना शाखागतस्त्रिष्ठादिकस्पितः प्रन्यचबेदमूनकः समंद्राः भिरनुष्ठानप्रतिपादको ग्रन्य इति कल्पतरः। ज्योतिषामयमं च्योति:प्रास्त निक्तः वैदिकग्रब्दनिषंचन ग्रन्यः। पर्वस्तित्य-नेन संक्रान्तिपरियहेऽहयन विषुवयीरेव परियहः। तथा च नारदः। ''प्रयने विषुषे चैव श्रयने बोधने हरेः। प्रध्यायसु न कर्त्त्रयो मन्वादिषु युगादिषु"॥ सम्यागर्जने तु ग्रास्त्रमात्र-चिन्तानिन्दा माध क्षत्यचिन्तामणी दुर्वासाः। सन्यायां गर्जिते सेघे गास्त्रचिन्तां करोति यः। चत्वारि तस्य नभ्यन्ति पायु-विद्या यशोवसम्। प्राटुष्क् तेष्विमपु तु विद्युत्स्तनित निस्तने। सच्योति: स्यादनध्याय द्रत्याष्ट्र भगवान् मनु: द्रितः मनु वचनं वर्षाविषयम्। चिनिषुतु चावसयादिषु पादुष्कृतिषु स्रोमार्थं प्रज्वसितेषु प्रातःसाय सम्यायामित्यर्थः। तस्यां विदात् स्तनित-निखने सति मौरनाचवान्यतर ध्योतिया सद वर्षते यः कासः सदिनमाचं वा रावि माविमित्ययः। भष्टम्यादिष् विशेषमाष्ट यत्। तहिनं तदहोरात्रमनध्यायविधी विदुः"॥ केचिदाहुः क्षचिद्देशे यावत् दिननाडिकाः। तावदेव त्वनध्यायो न तिवायदिनान्तरे। तहिनं तां तिथिं प्राप्ये त्यर्थे:। दिनास्तरे तियानारे तव पूर्ववचनमुत्तरमौमांमाध्यायिभिः परिग्रशीत परवचनन्तु यन्य यम्यपर यन्तु निर्णयासृतप्तत "प्रतिपञ्जेश-मावेण कलामावेण चाष्टमी। दिनं हूपयते सर्वे सुरा गव्य-घटं यया"॥ इति। तत् दूपयत इत्यभिधानात् पूर्ववित्तिता-मावेष सर्वदिनदूषणाय। यञ्चापरमुत्रां ग्रस्तास्तमयपचे तहिने उपवास एव 'स्किं दृष्टा तु सुक्तीत स्नान .कालापरेऽस्नि"॥ इत्यादे पूर्वदिनभोजनव्यावर्त्तक तयैव सार्घकत्वादिति तद्धि न सन्दरम्। परेऽप्तनि दृष्टेव स्नाला भुज्जीत रोगादिना तहिने

तदकाणे तत्परिंदने भीजने तु न दर्शनाद्यपेत्रेत्वेतावतेव परे-उइनि इत्यादे: सार्यकत्वात्। एवच्च 'श्रद्दरावे व्यतौते त् यदा चन्द्रयहो भवेत्। सायन्तव न सुद्धोत न तु पातरभोजनम्'॥ इनि हइतारदीय वचनस्याप्यसङ्गोचः स्थादत एव नारायणी-पाध्यायेन "न सानमाचरें का" इलादि मनुवचनमध्येत-दितरविषयमिति यस्तास्तिमिते चन्द्रे प्रातभीजनस्याभ्यनुज्ञाना-दिति चाभि हितम्। एय च दर्गननियमोन रागप्राप्तदर्शन एव मेघादिना तु चदर्शन तु चद्यवानमाक्षलयेव भुन्नीत। 'मेबमानादिहोपेण यदि मिसिने दृश्यते। त्राकलया तु तं काल भुज्जोत सानपूर्वकम्"॥ इति क्रत्यतस्वार्णवध्तवचनात्। नचेदमयस्ताम्त्रभिति विषयं तावनात्वविषयत्वे प्रमाणा-भावात्। प्रख्त ग्रस्तास्त्विषय एवेदं सार्यक्रमन्यव द्रश्ना-पेचायां प्रमाणाभावात् तव मुन्ने प्राणिनि भुन्नोत इहोनाव-सावमुत्राम्। यस "स्तके स्तके चैव स्तकं राहदर्गने। तादस्यादश्चिवित्री यावन्यकिनं द्राग्रहें"॥ इति वचनं तद्धि मुक्त्यवधारणपरम्। तथा च ब्रह्मपुराणम्। "यदे-वास्तं गतयन्द्री राष्टीराननगीचर:। श्राक्षनव्यतु तं कासं क्रिया कार्या विचचर्तः" ॥ चत्रवासेनापि उदयकालमा कलया भुज्यत इति। तया च संक्ष्यरपदोपे। "प्रस्ते चास्तं गतिविन्दौ प्राव्या म्ह्यवधारणम्। स्नावा पाकारिकं कार्यः भुञ्जीतन्द्रदये पुनः"॥ कालमाधवीये सगुः "प्रसावेवास्त्रम-नन्तु रवीन्द्रपाप्रतो यदि । तयीः परेदा्बदये सालाभ्यवदः रेयर:"॥ अनयोद्दयसावाधियोता तमामान्न हिंदि दर्गः नापेक्षा निविंगोधविषय एवेति यगोचातिदेगेतु राष्ट्रग-नय निमित्तसा। स्नक इति पागुक्तवचने पट्चिममास्वचने च दर्शनसुनै:। तद्यया "गर्धपाभिव वर्णानां स्तकं राष्ट्र-टर्जन। यात्राक्षनाणि सुर्वति शतमय विवर्जवेत्"॥ यत-पव छातिः। "पेतचाचे यद्ध्रिष्ट परे पर्युपतच यत्। टमालीभुंताग्रेयच न सुद्धीत बदायग"। एष्टिए पाक-पाये (विश्विम् । परि छपरागि पर्व्यापा स्थितं दम्पलोरायम-द्यासिनीर्भाजनारं पाक्याम्यासप्रिट्शित यादिष-

न्तामणि:। यत् देवस वचनम् "एको हिष्टस्य मेषन्तु नाष्ट्रा-णिभ्यः मसुत्रहति । पद्यात् खयश्च भुद्धीत पुनर्मद्वल भीज-नम्"॥ तस्य एकोहिष्टस्य ग्रेपं ब्राह्मणेभ्यः समुत्रस्जेत् नत्व-वग्रेवयेत् पथात् स्वयं पुनर्भद्गन् भोजनं पाकान्तरकतात्रं भुष्त्रीत द्रत्यर्थः तस्थानाचरणात् ग्रास्थन्तर विधयम्। यह-णाद्शिनापि मुक्ती स्नातव्यं मुक्तिमावस्यैव जननायीचनिमि-त्तत्यया ब्रह्माण्ड पुरागम्। "ग्रहणे गावसाग्रीचं विमुत्ती सीतवं स्रांतम्। तयीः सम्पत्तिमावेण उपसुख्य क्रियाक्रमः"॥ **उपस्थयं साला। सवसर प्रदीपे मुक्ती साला प**ठितयम्। "स्विष्ठ गम्यतां राष्ट्रो । त्यच्यतां चन्द्रसङ्गः । वर्मचाण्डाल-योगीत्यं कुर पापचयं सम"॥ इति। स्थानद्दणे तु स्थानद्रम द्ति विशेष:। शर्वीप्रधाचारवशाद्दातव्य दति। न च "नेचे-तोद्यन्त मादित्यं नास्तं यान्तं कदाचन। नोपसृष्टं न वारिस्यं न मध्यं नममोगतम्॥ इति मनुवचनन वैधदर्शन निपेधोऽस्त जन्म सप्ताष्टित्वादि निषेधवदिति वार्षं तत्रोद्यदादित्यादिद्र्श-नस्य रागप्राप्तस्य साइचर्या द्राइदर्गनस्यापि तथाभूतस्य निषेधः। श्रतएव "चन्द्रे वा यदि वा सूर्यो दृष्टे राही महा-ग्रहे। श्रध्यं कथितं पुरखं तनाऽप्यर्के विशेषत."॥ इति मार्क-र्डियवचनं वैधदर्शन परम्। एवच "तैसे अने तयावस्त सादर्शे च सलान्विते। न प्रश्चेत्र तथा प्रश्चेदुपरक्षं दिवा-करम्"॥ इति विणुधमीत्तरीयमपि वैधेतरनिषेधकम्। देश्चितेत्वनुष्टनी याच्चवत्काः। नाग्रची राच्चतारका द्रत्यताः श्रुचेः पर्युदासाच्छुचेदेशंनमनुज्ञातम्। श्रवाश्रुचिमूवपुरीयो-सर्गाद्य भौचवान् न तु जननाद्यभौचवान् तत्र दत्तवेचनात्। भोजराजः। "एकराव्यं परित्यच्य कुर्य्यात् पाणियस् ग्रहे। प्रयाणे सप्तरावन्तु विरावं व्रतवन्धने ॥ व्रतवन्धने छपनयने।

यथामादास्था। सा च प्रतिपद्युता याद्या युगात्। वराहपुराणे चाण्डाल शपये। "पष्टाष्ट्रस्यस्थमादास्या उभे पर्चे चतुर्देशी। यस्नातानां गतिं यास्ये यदाइ नागमे पुन."॥ यतोऽव स्नानमावश्यकम् धतोऽव जीवत्यिद्यक्षेणापि स्नात-स्थम्। "समास्रानं गयास्यादं दिच्णामुखभोजनम्। स प्रयोगी यदा। छनविंशति दास्यमानि पर्छसानानि यदा दिचिएं भागचत्ष्टयेन छातानि तत दिचिणायान् कुथाना-स्रोधी "प्रसात् कुरी स्ता ये च गतियेषां न विद्यते। आवा-इयियो तान् सर्वान् दर्भपृष्ठे तिलोदकैः ॥ सातामहकुले ये च गतिर्घेषां न विद्यते। आवाद्यियो तान् सर्वान् दर्भपृष्ठे तिसोदकै:॥ वन्धवर्गकुरो ये च गतिर्येषां न विदाते। आवार इिंग तान् सर्वान् दर्भष्ठ तिलोदकी."॥ इत्येते स्तिलोद-कैरावाह्य "प्राव्यस्यकापद्यन्तं देविपिष्टिमानवाः। त्ययन्तु पितरः सर्वे मात्रमातामद्यादयः। धतोतकुलकोटीनां सप्त-दौपनियासिनाम्॥ यावद्यभुवनाक्षोकादिदमस्तु तिनी-दकम्"॥ इत्येताम्यां तिलोदकाञ्चलीन् दद्यात् तती मुला-दितः पित्रतौर्धेन पिण्डान् दयात् तत्र क्रमः। "अस्रात्कुले स्ता ये च गतियंषां न विद्यते। तेषासुहरणायश्य इसं पिग्र्डं ददास्य इम्॥ माताम इबुली चे च गतियें यां न विदाते। तिपामुहरणार्धाय इमं पिगई ददान्यहम् ॥ वन्यवर्गकुले ये घ गतिगंपां न थियति। तैपामुस्यणार्थाय इसं पिण्डं ददा-भ्यष्ठम्॥ श्रजातदन्ता येकिचित् ये च गर्भे प्रपौडिताः। तिपास्तरपार्थाय इसं पिग्डं स्टास्यहम्॥ श्राग्नद्धाय से केचियामिद्रधास्तया पर्। विद्युचीरहता ये च तेभ्यः पिग्डं ददाम्यहम्॥ द्वदाहे सृता ये च सिंह्याव्रहताय ये। दंदिभिः यहिभागिपि तेभ्यः पिग्डं ददास्य हम्॥ । उहस्य न-स्ता ये च विषयम्बद्धताय ये। श्रामोपघातिनो ये च तेभ्यः विगद्धं ददाम्यहम्॥ अरख्ये वर्त्तानि वने घ्रधया द्यप-या इता:। भूतपेतिपिगाचाच तथ्यः पिएडं देदास्य इस् ॥ वन नले। "रोरवे चान्धतामिसे कानस्वे च ये विवतः। तैषाम्हरणार्थाय इसं पिण्डं टटास्यहम्॥ भनेक यातना-संस्थाः प्रेतन्त्रोके च ये गताः। तैयासुदरणार्थाय इसं पिन्हः ददास्यद्दम् ॥ श्रमेक यातनासंख्या ये नीता यस विद्वते:। सैयामुहरणार्थाय इसं पिण्डं स्टास्य इस् ॥ नर्केष् समस्तेष यातनासु च वे स्थिता:। तेपामुद्दरणार्थाय इसं पिएड दराम्यहम् ॥ पग्रयोगिगता चे च पध्यिकोट सरीस्याः।

षयवा वृद्ययोनिस्या म्होभ्यः पिएडं टटास्य हम् ॥ नात्यन्तर षद्रसेष् स्नमनाः खेन कर्मणा। मानुष्यं दुलमं येषां तेभ्यः पिण्डं ददाम्य इम् ॥ दिव्यान्तरोच भूमिष्ठाः पितरो बान्धवा-ह्य:। सृता प्रसक्ताये चर्तभ्यः पिण्डं ददास्य इस् । ये केचित् प्रेतक्षेच वर्त्तन्ते पितरी सस। ते सर्वे छिप्तिमायान्तु पिक्टरानेन सर्वदा ॥ ये वान्धवा बाश्ववा वा येऽन्य जन्मनि षान्धवाः। तेषां पिएडो सया दत्तोऽचयसुपतिष्ठताम्॥ पिष्टवंगे सताये च माखबंगे च ये स्थिताः । गुरुषग्रस्यसूर्या ये चान्यं बान्यवास्ताः। ये मे कुसे नुप्तविण्डाः पुवदार्व-विजिताः। क्रियासोपगता ये च नात्यभाः पद्मवस्ययाः विरूपा पालगर्भाय जाताचाताः कुले मम। तेवां पिखो सया दत्तोऽचयमुपतिष्ठताम् ॥ चयद्वाणा ये पिख्वम जाता मातुम्तया वगभवा मदोयाः। कुत्तदये ये मम दासभूता-मुखास्त्रधैवायितमेवकायः मिद्राणि मुख्यः प्रमुख हुचा दृष्टाह्य दृष्टाय क्रतीयकाराः। जनान्तरे वे सम दासभूताः स्तेभ्यः स्त्रधा पिएङमप्तं ददानि ॥ प्रयोगिवियति पिएङो योडगपिण्डकं प्रारिभाषिकं पञ्चान्त्रवत्।

प्रोष्ठपयुर्वं मञ्जयुक्कण्वचाय प्रतिपदादिवचदगक यष्ठगदि दगक एकादग्रादिवचक चयोदग्रादिवक तिथिक्य कल् पतुष्टयान्त्रतमेषु प्रतितिथिषु श्राइं कर्त्तयो पूर्व पूर्वकरों परस् भूयम्यं तथा च प्रद्वापुरायम्। "पात्रयुक्कण्यपचे तुं श्राइं कृष्यांत् दिने दिने। विभागदीन पर्च या विभागं त्रवेषेव या वर्ष्यदेवयित चर्च कृष्यादिवस्ययोगस्यक्ष्यं दवरं घर्चं तरम्पूनः स्यवस्थेदपरं वा समयवापित्रदेखावश्राकतः तत्र विभागस्थेताः इत्ये सम्प्रवित्त स तु प्रदास तथात्रे विभागवर्षे प्रवेगिति विधाननुष्यसे। प्रवाद्यायित्रमे तद्युक्योवसामी मन्यसाम्भः स्या मासिष्यस्ययुक्षद्ययोगः। तत्य निमन्ययादी चास्रिकं मामि स्पायसे रस्येव सारमिकः स्योगः सर्गयः प्रार्थमकः वाक्ये दिने दिने तिथी तिथी। "तिदिने इं दिवस्यान्त्रमाने प्रकोशितः"। इति विद्युवस्थित्रस्यान्त्रमारेष्ट मोद्यान्त्रमाने धर्मोत्तरे। "उत्तराद्यनात् यादे येष्ठ' स्व।इदिणायनम्।' चातुर्मास्यञ्च तलापि प्रसुप्ते केशवे हितम् । प्रौष्ठपद्याः परः पचस्तवापि च विशेषतः। पद्यस्यद्वे ख तवापि दश-म्यूइमितोप्यति। भघायुता तु त्रवापि यस्ता राजं स्वयो-दभौ"॥ वहदाजमार्नण्डे। सत्यपुराणम्। "कन्यां मते मिबतिर दिनानि द्रापञ्च च। पार्वणेन विधानेन याह तत्र विधीयतं"। काण्याजिनिभविष्योत्तरीययोः। "नमस्य स्थापर पचे याद्वं कुथात् दिने दिने। नैव नन्दादि यखं म्यात् नैव वर्ज्या चतुर्दगी"॥ नभस्यस्येति सुख्यचान्द्रेष भादस्य। अव प्रागुत देवीपुराणान्यवाचयोद्यां पुत्रवता पिण्डरित त्याहोन हाते नैवाख्युक्कस्पत्राहस्य निर्वाही न लक्षमूत पिएडानुरोवेन याद्यान्तरं कर्त्तव्यम्। "प्रधानस्या-किया यव साङ्गंतत् कियते पुनः। तदश्वसा कियायान्तु नाहितिने च तत् किया"॥ इति कन्दोगपरिश्रिष्टात्। एवं प्रेतपचादिस्तस्य पावंगविधिना सांवसरिक न्याखे स्ते मातामहादि याहाय न पुनः पार्वणारमः। "पिनरी यत्र पूज्यन्ते तत मातामणा भुवम्"। इति व्रष्टस्य तिवसनेन माता-महानामधेव चार्षं लुद्याहिवचण."॥ इत्वनेन च पित्: माहाधौनप्रवृत्ते.। एवमविभक्तसापत्न भावोर्केन पावणे खतेऽपर्य मातामहत्रादाय पुनः चार्यंग न वार्योयम्।' श्रतएव होत निर्णयेऽपि साम्बिकीर्यन पितुः सयाहे विवादि-विकस्य यादे किते तव मातामइयाद्याय न पार्वणार्भाः वाजि-नवत्त्रभागयोजकत्व।दित्युक्तम्।

मृति: "तीर्थं तिथिविभेषे च गङ्गायां प्रेतपचते। निषिदे ऽपि दिने कुर्व्यात्तपणं तिलिशिश्यतम्"॥ गङ्गादाति-रिक्त तिलतपण्य निषेधमाद्य "पिल्लोः याद्ये रवौ शक्षे मङ्गान्यां निश्चिमस्ययोः। सप्तस्यां वर्षत्वद्धौ च न कुर्यात्तिल-तपंणम्"॥ प्रपचन्तु सलमासतस्त्रे उनुमन्धेयः। भविष्ये। "रीय दोपान्दिताः राजन्। स्याता पश्चद्यो सुवि। तस्याद्या-वर्षद्त पितृषां में महालये"॥ महालये कन्यागतापरपत्ते निषद्त सलमामादिना चन्नायास्यस्यामिष। सलमासे याद्या- भावमाह कौयुमि:। "संवसरातिरको व मासो यः स्वावयो-दगः। तिस्म स्वयोदग्रे याहं न कुर्यादिन्दुमक्वये"॥ संव-सर्प्रदोपे। "एकराग्रिस्ति स्र्यं यदि दग्रेहयं भवेत्। दग्रेयाहं तदादौ स्थात् न परत्र मिलस्तुचे"॥ यनु "जात-कर्मणि यस्त्राहं दर्गयाहं तथेव च। मन्मासिऽपि तत्कार्यं व्यामस्य वचनं यथा" इति व्यासवचनं तिस्प्रहिषद्यज्ञास्य-याह्मपि मन्मामतस्ते विव्रतम्।

भमावास्या श्वाहकानमाइ छन्दोगपरिशिष्टम्। "पिर्डा-न्वाचार्यकं यादं चौणे राजनि शस्त्रते। वासरस्य ततीयांशे नातिमध्याममौधतः"॥ पिग्डान्वाद्याध्यवसिति। "ततः प्रभृति पितर: पिर्इसंज्ञान्तु लेभिरे"। 'इति मत्य पुराणात् पिएडानां पितृणां चन्वाष्टार्ये यादं सासैकद्य सिजनकं यत्त्रया तया च मनुः। "पिग्डानां मासिकं याद्यमसाद्यां विदु-वुंधाः"॥ राजिनिचन्द्रे। श्रयत इत्यनेन क्विचन्द्रक्या-भावेऽप्यमावास्या यादं स्चितं एता हग्व्यतातेः। सानि-निर्गानमाधारणत्वाहध्यमाण कात्यायनी सरीत्या चीगाः स्तिभितावर्द्धमाणाभेटः माधारणः। यस् "पित्यञ्चन्तु निर्वर्षं विप्रयन्द्रचयेऽस्मिमान्। पिएडान्वाहार्थवां याद् सुर्यान्यामानुमामिकम्"॥ इति मनुवचनं तत्सास्निः पिच्छ-पित्यदा निवेत्वे सामानुमामिकं प्रतिमासिकं याद' कुर्वितित क्रमविधायकम् पवानुग्रब्स्य वीपार्यकतं तया च "नचग-वोपोसम्बन्धिमांगेपरिप्रतो। यनुग्यु महार्थे च हीने षपय वर्षते"॥ चन्द्रचयेऽमावास्यायां न तु कात्यायनोक्त चये तथास्त्रे वर्डमानादो प्रतिमामानुपपत्तः। एवमेश श्राइवि-वेकः। अतएव तबैवामावाम्याव्यतिरिक्ष क्षयापचि विह्नि पाव-णयाह्ये ययास्त्रसिति वचनाह्यवस्थेत्युक्तं तत्र माग्निकर्त्तव्यत्वा-विश्वितामावाम्याव्यतिरेकामिधागात् चौणादिभेदेन व्यवस्था मार्क्निक्रिन माधारणोत्यवगस्यते। एवद्यामावास्यायां सृताह-निमित्तकौरस चेवज पुत्र कर्त्य पावणेन चोयमाणादिना न च्यवस्था किन्तु यथास्त्रिसत्यनेन। एति इष्टतं मसमास्रतस्वे। यत्त दगम मुझ्तंबस्य मत्यपुरायोक्षापराह्विन वेशि याहे

तस्य त्यागः। पिएङ्घित्यन्नार्घण्वेति वासर त्यतीया-गाभिधानं साम्निकपरमेविति परिशिष्टप्रकाशोक्षं तम युक्तं ''पूर्वाह्वो वैदेवा नां सध्य दिनं सनुष्याणाम् अपराह्व. पितृ-णाम्"॥ इति शुला तनाइतस्य मनुष्यकर्माद्गलेन बीधना-टेव याहे परिलागः। एतत् युतिसूनकमेव वासरस्य खती-यांग इत्युतां वासरस्य हतीयांगे विधाविभक्तस्य दिनस्य खतीयभागे नातिसम्यासमीपत इति सम्यासमीपैकमुहर्स चापदापि वर्जनीय इत्यर्थः। तेन "प्रातःकानी मुह्नलां स्वीन् सङ्बस्तावदेवतु । मध्याङ्गस्त्रिमुहर्त्तः स्यादपराश्चस्ततः परम् ॥ सायाक्क स्तिमुहर्तः साम्क्राप्टंतत न कार्येत्। रासमी नाम सा वेता गर्हिता सर्वकर्मस् ॥ इति मत्ख्यपुराणे निविद्य-मुझ्त्तंवये पार्पाद मुह्त्तेद्वयमभ्यनुद्वातम् प्रतिश्रद्धस्यौत्। "तिसुह्रत्रापि पूर्वादशा च वहुचैः"॥ इति हारीत वचनाश्च तेन पूर्वदिने मुझ्रेनयमात्रमाभ परदिने वासरवतीयाथा-साभे पूर्वदिन एव शाहम् गतेन नातिसम्यासमीपत इत्वनेन राध्यसी वेलामानं निषिध्यत इति सैथिलमतसपास्त भव-कर्मस सानरानारिष्यपि यनापरीत्यर्थ इति याहिविवेकः। तेनामको तस्यामपि तत्करणम् चतएव पराश्ररः "दिवाकर-करें: पूर्त दिवा स्नान प्रायति। अप्रशस्ते निश्चि सान राष्ट्रो रन्धव दर्भनात्" ॥

दगेहें के क्रव याहिसत्याह हन्दोगपरिशिष्टे कात्यायनः।
"यदा चतुर्दगी यामं सुरीयमनुप्रयेत्। चमावास्या चौयमाणा तदेव याहिसप्यते"॥ चतुर्दगीयाम चतुर्दगी सस्विधदिनयामिति तिहिनप्यामावास्यासम्बद्धो ति चतुर्दशी निहेंगोऽधिकेन व्यपदेगा भवन्तीति न्यायात्। तेन यदा चमावास्याचतुर्दगोमस्विध दिनस्य चतुर्य प्रदर्श हत्स किश्चित्र्यनवा चनुप्रयेत्। चयानुप्रयेदित्यभिषानात् तुरीययामस्य
पादान दण्डद्यान्यून प्रयम मुहर्तस्य बहुकालत्यं प्रतीयते।
पतिन प्रदर्शयान्यून प्रयम सुहर्तस्य वहुकालियं पद्यश्च विभस्रापराह्ममुहर्त्वयाम्यतार्थे दर्गसामे हेथं नत्वेकदिनमात्रे

तक्षामे। तव पूर्वितिन वामरम्य स्तीयांग दल्निनेव देधानु-टयात्। पती यहिने वासर हतीयांगि ताद्य दगनाभस्त-चैव यादम्। मुझर्त्तान तिथेम्तु कर्मानर्दताच रेथिवसरः। सया च भविष्ये "व्रतीपशामनियमे घटिकैका यदा भवेत्। मा तिथि: सकना जेया पित्रये चापराक्षिको ॥" इति। मन च प्रागुत्त ज्ञावानिवचनीता सुहर्नात्मिका घटिका प्राष्ट्रा योग्यत्वात् नत्वेषर्ण्डाक्षिका वध्यमाण्गेहिणदिपहणेतया दृष्टताचा तत्रय पूर्वीक्षष्ठेये तिस्वमीय चतुर्दश्यपेचया पर-दिन चमावास्या चौयमाणा त्यन कालव्यापिनौ न तु पूर्वापर दिवमीय यावश्वतृदेखपेषयाऽनुपस्थितः। एवं स्तिभातावर्षेः मानयीरिं तदैव पूर्वदर्श एव त्राहम्। स्रोक्तचन्द्रसयान्री-धात्। यदा चिश्रह्ण्डात्मकदिवसे चतुर्ययधिक चतुर्ययाम-पूर्ण मुप्यापराञ्चीय किञ्चित्रानमुझर्न सामस्तदापि तदैवेला नेन चन्द्रचयानुरोधात् पूर्वदिन चाहं नतु मुखापराह्रीय-मृष्ट्रचेताभेऽपि परदिने भव चन्द्रचयस्तुद्रश्रष्टमयामात् प्रभृति प्रमादास्यासप्तमधामधर्यन्तमितिवच्यते। तदैवैत्येवका-रयवणातियिद्वेधे खर्ड विशेषो नियम्यते कर्मण वण्डान्तर-व्युटामाय। एवश्व यव पूर्वापरिदने वासर खतौयांशीय-मुज्यापराह्वे महर्त्तीनदर्शनामस्तवापि पूर्वदिग एव त्याड वामरद्यतीयाग चन्द्रचयाति गब्दखरमात्। विमुह्नर्सापौत्य-नुरोधाधः यत्र तुर्वदिने विमुह्नमावयापिसमावासाः परदिने द्वतीयांगमृहर्षयाधिनी सतो घोयमाणा तृव पर-दिन चन्द्रचव्याभावेऽपि मुखापराञ्चलाभात् यादम् यन्यया "यदा चतुरंगीयाम तुरोयमशुपूर्यत्" ॥ इति विशिपाभि-धानं व्यर्थं स्थात्। यथ यव पूर्वाह्मं त्याहं तव "यदहस्त्रे-व चन्द्रमा न दृश्वेत ताममावस्यां कुर्वेति"॥ इति गीभिन-विरोधः तयाविध चतुर्दशीयुत्तामाधास्यायाः मिनीवालौलेन ग्रस्यस्ट्र्यंमान्। तताच म एव। "यद्तं यदघस्वेव दर्शनं नैति चन्द्रमाः। ततच्यापेच्या चेय चौणे राजनि चैत्यपि"॥ यद इस्वेव चन्द्रमा नं दृश्येत ताममावास्यां

बन्यया गोभिनीय ताद्य स्वान्तरेण सह पौनक्त्यापनेः तसात् प्रथमसूतं कुह्नपरं तच्च बर्दमानापचे नियतं सीणा-स्तिभातयोस्त यथायोग्यमनुमरणीयम्। एवश्व "यदहस्वेष चन्द्रमा न प्रश्वेत ताममावास्यां कुर्वीत"॥ इति श्वितरेतत् समानार्थकं शुलान्तरं वा तदिप बर्दमानादि परं न तु काला-यन वचनात्रव चयनच्या कलातर प्रसृतिभिन्ता युता "अतिस्मृतिविरोधे तु अतिरेव गरीयसी"॥ इति विरोधात्। चीण इति कात्यायनेन मया यत् चीणे राजनीत्युसं तदपि च्याभिपायकम्। "चयैवं दृश्यमानेऽप्येकदा"॥ द्रित यहा-भिलस्य स्वान्तरं तदायं यदहस्वे धित्यादि दितीयस्व प्राप्त-तिथे: सिनौवासौलेनेव चन्द्रदर्शन प्राप्ते रिखत चाह स एव। "यचीतां दृश्यमान्ऽपि तच्चतुर्दश्यपेचया। चमावास्यां प्रती-चित तदलो वापि निर्धपेत्"॥ दृश्यमानि प्रयोक्षदेति यदुक्तं तच तुर्देखां याद्वाय पूर्वसूवममावास्यापदोपादानाश्चर्त्वये मात यमावास्याविषयम्। इट पुनित्यभूतचतुर्दशीविषयमिति त्राह्मविषेकः। तक्तिममावास्यावचतुर्दशौत्यवाह प्रमावास्यां प्रतीचेतं त उभय तिधिपामी याद्यायामावास्या प्रतीचणीया यत्र पूर्वदिने दिवासार्ह मुहर्त्तमात्रेशमावाच्या परदिनं च सार्ह-दशम सुहत्रेमावे तवचाभयदिन याह योग्यामावाम्या न प्राप्यते तव तदन्ते चतुर्द्रयान्ते निर्विषेत् ददात्। अनेवविषये साम्निनिरम्योधिययमाच कालमाधवीचे जावानि:। "पप-राष्ट्रद्याध्यापौ यदि दर्गस्तियिचये। पाष्टितानीः मिनीवानी निरम्यादेः कुहमेता" ॥ पादिशब्दादसुपनौतशूद्योर्घहणम् ।

चयमाद कात्यायनः। "पष्टमेऽ ये चतुई त्याः चौणीन्
भवति चन्द्रमाः। यमाधास्याष्टमायि च ततः किन भवेदणः"॥
चतुदेश्यष्टमे यामे चन्द्रमाः चौणः चतुर्यं भागोनकनाविशिष्टीन्
भवति। "चचेन्द्रस्य प्रष्टेऽयितष्टते"॥ इत्यादिक्यसात्।
यमावाय्याष्टमे यामे चाणुभवति पुनक्त्यदाते किलित्यागमवान्
नौयां तन्त्रमायाद्यायाः मसमे यामे छत्यद्यय इत्यवगस्यते।
तत्यान्य कलाययवनायोत्पत्ति चयः सा च स्वयत्यायां
विनामेऽष्यस्तीति याद्यविवेदः। उत्पत्तिरादाचणस्यन्यः तेन

विनाधस्थानन्तलेऽपि नातियामिः। यत्वविभेषमाह स एव। "श्राप्रदायसमावास्या तथा व्येष्ठस्य या भवेत्। विशेषमाभ्यां व्रवते चन्द्रचारविदोजना."॥ आस्यामिति खप्लोपे पश्चमो। इमे प्राप्येखर्थः चन्द्रचारियदो ज्योतिर्विदः । यव पौर्णमास्यन्त-मास इति परिशिष्टप्रकाशः। अत वीजं ब्रह्मपुराणीयतिथि-. सत्यम्। तया च श्राहमधिक्षत्य ब्रह्मपुराणम्। "पयोमूल-फलै: याकै: क्रण्यचे च सर्वटा"॥ अन क्रण्यचे चतुर्द्यी-व्यतिशिक्षायां यस्यो कस्याधितियौ त्याद्विधानादमावा-प्यापि लभ्यत इति कोवियेप इत्यक्षाइ स एव। "अवेन्दुराद्ये प्रहर्शवितद्वते चतुर्धभागोनवानाविष्यष्टः। तदन्त एव चय-मिति सत्स्मेयं च्यातियकविदो वदन्ति"। यत मासद्येऽ ऽमावास्यायां चतुर्यभागीनकलावश्रिष्टः चतुर्यभागीना या कला तयाविशिष्टः कलाभागवयमावः सम्राद्ये प्रहर्शवितिष्ठते। चर्यात् चतुर्दश्यष्टमयामे चयारका द्रति तदन्त एव चमावस्या-स्त्याम एव चयं कत्समिति। जन्यवामावास्यासप्तमयाम इति विशिष्:। तैन सार्गगौर्ष च्येष्ठयोत्भयदिने चन्द्रचय-नामे यद्यपि यदा चतुर्दशोयासमिति वचनात् पूर्वदिन एव याद प्राप्नोति तथापि तद्वनं चन्द्रध्यानुरोधमूलमिति सत्-स्रव्यानुरोक्षात् द्योणायामपि पर्वापराह्वनामे श्राहम् श्रन्य-यैति दिशेषाभिधानं व्ययं स्थात्। श्रवापि विशेषान्तरमा इ स एव। "यस्मिन्नस्रे दादग्रैकथ यत्र्यस्तिसंस्वतीयया परि-दृश्यो नोपजायेत" यव्योमासः हतीययामात्रया चतुर्थभागीन-कल्या परिदृश्ययन्द्रो न भवति किन्तु तदिधवा न्युनकसयेति। तेन मनमामयुताब्दे चन्यमामवदनयोरपि चतुर्दश्यन्तयामादि-दग्रममयामपर्यत्त चय इति। मलमामयुताय्दस्तु एकमा-नानभाषाद्ददयानन्तराद्द मृतीयेऽद्दे मलमामस्यावस्यभा-वादिति। चन्द्रचयानुग्द चीणपचमुपमंदर्गत स एव। "एवं चार् चल्लममो विद्वा होणे तसिवणाह्रे च द्याम्"॥ एव चारं गतिविशेषम्।

क्तिमाताया व्यवस्थामा हम एव। "मिमियया चतुर्दश्या यमावास्या भवेत् कवित्। खिनितां तां विदुः केचिदुपेध्व- मिति चापरे"॥ चीणायाः पूर्वमुक्तत्वात् बहेमानायास वद्याः माणत्वादस्य वचनस्य स्विमातापरत्वम्। खिवतां नौचाम्। पिटलीकपापणानकां केचित् यजुविदिनः प्रपरे स्रग्वेदिनः तामेव उपेध्वमुपगच्छतं याद्यायेति येषः उपेध्वमित्यव गताध्वा मिति पाठे गतः प्राप्तः पिटलीकप्रापणाय अध्वाऽनयेति गताध्वा प्रश्चसेत्ययः। तसाच्छन्दोगा उमयानुरोधादिच्छातं अभयादं कुर्वन्ति इति कात्यायनस्वरमः। व्यक्तमाद लघुः द्वारीतः "विमुहर्त्तापि कर्त्तव्या पूर्वादर्शा च वह्नु चैः। कुदुर् ध्वयुभिः कार्या यथेष्ट मामगीतिभिः"॥ अत्र विमुहर्त्तत्युः पादानात् स्तिभतायाः पूर्वदिनं विमुहर्त्तमाच लाभेऽपि वहुः चानां यादं मुख्यापराञ्चलाभादाप परदिनं सामगानां तत्रा- प्यनियमः एताद्यव्यय एव उभयवापराञ्चलाभेऽपीयं ध्यव- स्थेति यादविवेवः। मुख्यापराञ्चस्य एकदिन मात्र लाभेऽप्युः भयदिनालाभावः।

वर्दमानायां व्यवस्थामास कात्यायनः। "वर्दमानाममाः वास्यां नचयेदपरेऽइमि। यामां स्त्रीनिधिकान् वापि पिट्-यज्ञस्ततो भवेत्"॥ यामां स्त्रीनिति पूर्वदिवसीय यामत्रय-न्धन चतुर्दश्यपेचया चयेवं वासर खतौयांशानुरोधेन न्याब-विधानात् कथमभावास्यात्राहे पर्यादस्तराव्यादौतरकालपरि यहः सत्यम्। तिथिद्वेषे चौणादिभेदेन खण्डविमेषपरिय-हाय वासर हतीयांशापेक्षा भन्यधोभयदिन वासर हती-यांगाप्राप्ती यादनीपायत्तेः प्रागुत्त निरम्यादैः कुहर्मतेत्यस्य निर्विषयतापरीय पतः पर्य्यदस्तेतरकानस्यःपि परिग्रष्ठः यदा तु पूर्वापरवाण्डयोरन्यतरस्यैव परिग्रहस्तदा यथा योग्धं तवैष सायाद्ध मुहर्नहय पर्यादम्तेतरकान कुतपादि मुहर्न-पञ्चक रोष्टिणादि सुहर्त्तचतुष्टय वामर वतीयांगीयापराह्न-सुहत्तदयकाणा ययाक्रममायत् सामान्यप्रमुख्य प्रमुक्तर प्रमु-स्ततमत्वेम राया: एवमदाग्रातियाविष नातिमस्यासमीपत इति पूर्वोक्तवात्। "मायाद्ध सिमुहर्नः याच्छादं तत्र म कारयेत्" इति मत्य्यपुराणात् "रावी न्याषं न कुर्यात रासमी-कोशिता हि मा। सन्ययोत्भयोसैन सूर्ये वैयाचिरोदितं

इति मनुवचनाभ्याम् "अर्द्ध मुह्हर्तात् कुतपात् यनाह्न चत्-ष्टयम्। मुइतिपञ्चकां वाजि स्वधाभवनिम्थते" इति मत्य-पुराणात् मुझर्त्तपञ्चकमित्यत क्षतपादिति त्यप्नोपे पञ्चमो कुतपमारधित्ययः। ततस्तेनैव "अपराह्ने तु संप्राप्ते अभिनि-द्री हिणोद्ये। यदव दीयते जन्तो स्तदचयमुदाञ्चतम्"॥ इत्युक्तम्। "पूर्वाह्यो वै देवानां अध्यं दिन समुखाणाम् अपराह्यः पितृ-णाम्"॥ इति ञ्चते:। वासरम्य त्यतौयांश इति कात्यायन-वसनं मायाक्र सिमुह्न त्रः स्याच्छात्वं तत्र न कारयेदिखेषाभे-कवाकात्वाद्वामग्रहतीयांगीयापराह्न मुह्न तदयस्य साभ इति। व्यव "दर्शयादन्तु यत् प्रोक्तं पार्वणं तत् प्रकीर्त्तितम्। व्यय-राह्यः पितृगान्तु तव दान प्रशस्थते" ॥ इति शाततपौय वचने प्रशस्यत इत्वभिधानात्"मासि मास्यपरपचस्यापराह्यः श्रेयान्"॥ द्रखापस्तस्ववचने येयानिलाभिधानाच प्रशस्यतारतस्यं अस्पाते न तु मुख्यकत्पानुकत्पत्वमिति। श्रपरपत्तस्य क्षण्पस्मावस्य तथा च शुति: "पूर्वः पची देवानामपरःपचः पितृणाम्" इति एवज्ञामावास्या न निमित्तान्तरं किन्तु क्षणापचनिमित्तक-याद्य प्रशस्तकालपरा यतएव शतोस्तारतस्येन बहन् कल्पा-नाइ गोतमः। "त्रथ याद्यममावास्यायां पितृभ्यो द्यात् पञ्चमौ प्रभृति वापरपञ्चस्य यथा याहं मर्विसन् वा द्रयदेश-व्राह्मण समिधी वा काल्लियमः मिक्तित इति"॥ योऽयममा-वास्यादि काल्तियमः स अक्तस्य सद्रचसारीगिणीवीडव्य इति यादविवेक:। चत्रवासावास्यायामति प्राथस्यमाह निगमः। "श्रपरपत्ते यदहः सम्पदाते समावास्यायान्तु विश्रेपेण"॥ तया च मनु:। "क्षपापचे दश्रम्यादी वर्जीयत्वा चतुर्दशीम्। ्याडे प्रमस्तास्तिथयो ययंतान तयेतराः"॥ यत चतु-दंगौ वर्जनं तदन्ते वापि निवंपीदित्युत्त विपयेतरिवपयम-न्यथा तद्वनं व्यथं स्यात् नचेढ शक्त इत पिष्टमाविषयं तस्य प्रकारग्रेदादशुपस्थितः समावान्यायाः प्रतीचायाः असमावे चतुर्दशो विधानाच। यतु "कार्य्य यादममावास्यां मामि-माम्युड् पचये"। इति मार्कग्डेयपुराणिऽभिष्ठितं तमामि मासियत् कार्यं यादं तचन्द्रचयेऽमावास्यां प्राप्यातिप्रयस्तं

गोतमादि वचनैकमूनलाञ्चम्द्रचयाभावेऽपि वर्षमानादौ याद्वविधानेनामावाम्याया त्रलामेऽपि चतुर्दश्यन्तयामे याहः विधानिन च विशिष्टविध्यमुपपत्तेय। यत्तु "ग्रमावास्या-ष्टका कृष्णपचपघदगौसु च"। द्रत्यभिधाय "एतम्रानुपनीः , तोऽपि कुर्यात् सर्वेषु पर्वेषु । त्याद्वं माधारणं नाम सर्वेकाम-फलप्रदम्॥ भार्याविरहितोऽध्येतत् प्रवामस्योऽपि नित्यगः। भूद्रोऽप्यमन्त्रवत् कुर्यादनेन विधिना व्धः" ॥ इति मतस्य पुराः यस्। तत्र यनुपनीताँऽपौत्यपि गब्देनोपनीतः सस्चौयते । तवानुपनोतस्य जात साम्राहिताग्नेरपनौतस्य च माग्नेः सक्षवासयी:। "न इग्रेंन विना याह्याहिताम्नेहि जमान." इति मनुना कष्णपचीय माहस्यामावास्याया विधानात्तरेया-वाक्यतया मत्स्य पुराणि नित्यश इत्यनेनामावास्याया यन्त्रिः त्यलाभिधान तसानिपर कृषापच्य यन्नित्यलाभिधान •तसास्निभिनम्य योग्यत्वात् एवमन्यानि वचनानि व्याख्ये-यानि। त्रव व वस्रद्रादित्याकारेण पित्रिपतामहानां धातव्यवं याद्धविवेकोकं व्यक्तमाह "वसुर्द्राटिलक्यान् यादार्धें तर्पयेत् पितृन्। नामगोत्रे ममुचार्य तिनीस्तौर्धेषु भयतः"॥ इति स्रात्वर्धमारमदनपारिज्ञातपृत वचनमिति वस्तादोनां ध्यानमादित्यपुराणं "प्रसन्नवदनाः मौस्ता वरदाः यशिषाणयः। यद्यासनस्या हिमुत्रा वसवेऽष्टी प्रकीतिताः॥ करे विश्लिनो वामे दक्षिणे चाचमानिनः। एकादग्राक्ष-र्त्तेया रद्रास्त्राचेन्द्रमोत्तयः॥ पद्मासनस्या हिभुजाः पद्म गभोद्रकान्तयः। करादिस्कन्धपर्यन्तनास्तपद्वस्थादिगः॥ इन्द्राया द्वादमादित्यास्तेनीमखनमध्यगा."। यत्र पितृ-द्यिताप्रयोगान्यनाधिकान्धेतानि। "निधायाथ दर्भचय-मासनेषु समाहितः। प्रैषानुप्रैष्यसंयुक्तं विधानं प्रतिपाद-येत्"॥ इति वचनात् "ब्रह्मणानामसपत्तौ कत्वा दर्भमयान् हिजान्। याह सत्वा विधानेन पद्याहिप्रेषु दापयेत्'॥ द्शि याद्रस्वभाषकर समुद्रकरष्ट्रत वचनाच यस्य प्रेषणस्य प्रस्वस्मयाधित तर्युक्त कर्माणी विधानात् दर्भवट्रूप दर्भ-चयमादाय कर्मकरणे निमन्तितोऽसि हमाः सा इति प्रह्म-

शर्मावा विमन्त्रण द्विष्ठियाभावः। कुरुष्वेत्वादि प्रत्युत्तराः चान्तु यन्येनापि सभावादनुजादीना कर्त्रायतैव। यन्नोत-मर्गानन्तरं भाजनात् पूर्व भोजनका सेऽपि मध्यातिति पाठ स्त्याच याज्ञवल्का । "मध्याह्यतिका गायची सध्याता इति स्त्राचम। ज्ञा यथासुख वाचा भुञ्जोर स्तेपि वाग् यता ॥ श्वनमिष्ट इविषच द्यादकोधनीऽत्वर । त्राह-भेय पविवाणि जम्रा पूर्वजप तथा"॥ पूर्वजपमित्यनेन तत्-प्राप्ते. त्रव च भोजनात् पूर्व मधुमध्विति जपानन्तरम त्रज डोनिमिलादिक पाठाम "घयडीन क्रियाहोन विधिहीनच यद्भवेत्। तत् सर्वमिछ्टमिस्विख्वा यत्नेन भोजयेत्"॥ इति यमवचनात्। एवञ्च "यसैन यावयेत् याहे द्वाह्मणान पादमन्ततः। यघयमत्रपानन्ततः पितुस्तस्योपतिष्ठते"॥ षुलादि पर्वणि याद्वे भारतीय द्वाक पादादि यावणोक्ते मत्तेषेण भारतवश्रद्धानिरूपकलेन दुर्खीधनो मन्युमयो युधिशिरो धमीमय इति स्रोकद्दर पठनीयम श्रपहृतगुर्गवी-सामद्यत याद्यमञ्चाकाशक पित्रगायालेन सप्त्याधा इति गुष्तकोरच होमयेत्। कोरस्य च दधि त्रेय मधुनय गुडो भवेत्"॥ इति मत्स्यस्तावचनेन "मधु यहा न विद्यत तल जोर्णगुडो भवेत्"। द्रत्यायुर्वेदोयेनापि प्रतिनिधि सुडेऽप्य-विकत एव सध्वातादि सन्व पठनोय। "तैल प्रतिनिधि कुर्यात यज्ञार्थे याजिको यदि। प्रक्रतीव तदा होता ब्र्याइ घुतवत्रोमिति"। इति यज्ञपाश्च वचनदर्मनात् "शब्दऽवि प्रतिपात्त "। इति योतकात्यायनस्वाच। प्रतिनिहित द्रव्ये गुतगब्द प्रयोज्य गुतद्रव्यव्या प्रतिनिध्यपादानाच्छ-ब्द्रान्तरपयोगी द्रव्यान्तरबुद्धिपसङ्गत्। एव हस्तादावानी कर्गोऽध्यानी करिष्ये इति।

वैदिकप्रधोगमावे प्रणवादित्वमाष्ट योगियाज्ञवहत्त्र,।
"यक्ष्म नञ्जाति सिक्ष यिष्ट्रद्र यदयज्ञियम्। यदमेध्यमणचच्च यात्रयामच यद्भवेत्। तदोद्वारप्रयुक्तेन सर्वेचाविकन्त
सर्वेत्"॥ तस्य पूर्वपाठमाच भगवतीतायाम्। , "तस्रादो-

मिलुदाष्ट्रत्य यज्ञदानतप क्रिया। प्रवर्त्तन्ते विधानीताः सतत ब्रह्मवादिनाम्"॥ तथोदाष्ट्रतं ब्रह्मपुराणे। "तानस्ती करिय इति प्रणत प्रार्थयेहिजान्। कुरुप्वेति स तैरुक्षी दिचिणाग्नि समाह्वयेत्"॥ अत्र प्रश्ने तदनुषदेगात् उपदेशे ऽधिकशुणल प्रतीयते। इति प्रमेऽपि प्रणवादिल युक्तम् श्रतएव पित्रद्धिताक्षत्रप्रदीपादिषु तथा निषितम्। एवश्व सवंव वैधप्रश्रीत्तरादी प्रणवादित्वे फलाधिकामेव तथा प्रश्नि-दाधेत्यनविकारणानत्तर इस्तद्यप्रचालनाचमन हरिसारणं क्षत्वा गायवी मध्वातादिवय मध्वयञ्च जपेत्। तया च ब्रह्मपुराणम्। "तत प्रचास्य इस्ती च याचस्य च इरि सारेत। प्रेतभाग विस्ट्रचाय प्रायिचित्रीपशान्तये॥ सव्या-इति ममणवा गायबीख तती जपेत्। पाठेनाधुमती पुर्या स्तया च मधुमध्विति"॥ प्रायश्वित्तीपशान्तये प्रायश्वित्तमाखा या उपग्रान्तिकृत् मिद्यो। गायबौनपविधिमाह योगि याज्ञवल्का। "प्रणव पूर्वमुचार्य भूमुंव स्वस्तत परम। गायकोप्रणवयान्ते अपेद्यवमुटाह्नता"॥ प्रवान्तेरपि प्रणव श्रुते "तिष्ठदाद्यनात् पूर्वा सध्यसासपि यक्तित । श्राक्षो तोइद्रमाञ्चात्वा मन्या पूर्वितक जपन" । इति छन्दोगपर शिष्टोक्त पूर्विक प्रणवयाञ्चितमाविकी रूपिमति ततपकाज कचाध्यानञ्च प्रगवल्वेन द्योरेकाद्विरद्धिति न्नाहाद्यव मान पिण्ड। येकु शास्त्ररणात् पदात् प्रवर्ग जनात् प्राक् देव ताभ्य दति वि पठनोयम्। "डपयेग्य कपेदीमान गायत्री तदनुष्रया। भन्य षच्याम्यह तसादमृत ब्रह्मनिर्मित्रम्॥ देवताभ्य पिद्ध्यय सहायोगिभ्य एव च। नम स्वधारी म्बाहाये नित्यभव भवन्विति॥ याद्यावमाने त्राहम्य विशा त्रचा जपेत् मदा। विगडनिर्वपणे चैव जपेदेतत् ममाहित् ॥ पाद्यमानसिम त्रुला त्राहकान उपस्थिते। पितर सिप मायान्ति राचमा प्रद्रवन्ति च"॥ इति ब्रद्धपुराचात् ।

गीवपदमेबोद्यायम्। "गोत्र स्वान्त सर्वत गोत्रस्ता चयकमेषि। गोत्रस्तु तर्पणे प्रोच कत्ता एव न भुद्धाति"॥ इति गोभिनेत विग्रेवतोऽभिद्यानात्। एव "सर्वतेव वित

धीर्ता पिता तपणकर्माणि। पितुरचयकाले तु अचयां स्तिमिच्छता"॥ इति गोभिसवचनान्तगत् पितरिस्येव वक्षयं ससम्बन्धिकशब्दानां पदिन्यायेन खसम्बन्धिपरत्वाञ्च नत्वसात् पितरिति श्रम्यया एतदसादम्रामित्याद्यभिलापापत्तेः एवं यज्ञेंदिनां पिएडगब्दो नपुं सकलिङ्गेन प्रयुज्यते यथा वनितां पिण्डं दयादसावितत्ते इति यादविवेकध्तपिण्डपित्-यद्वीयकात्यायनवचने पिण्ड्विशेषणत्वे नैसर्टित नपुंमक-मिर्देशात् "भाषेतेतञ्च वै पिण्डं यज्ञदत्तस्य पूरकम्"। इति म्रायम् द्वावनीऽपि तथा दर्शनाच पिग्डान दस्वा वरं समाज्ये प्रसाल्याचम्य इरिं सारेदिलाइ ब्रह्मपुराणम्। "ततो दर्भेषु षिधिषत् समाज्य च करं ततः। प्रकाल्य च जलेनाय विराचस्य इरिं स्मरेत्"॥ यदापि करसमार्जनादीनि पितु-पची उत्तानि तथापि पितृपार्वण एव ''मातामदानामधेवं दैव पूर्वे यादं कुर्वीत"। इति गोभिनस्रवेण पित्रपचधर्मातिरे॰ श्रीन एकोहिष्टादि याहेऽपि यावाहनादि निपेधानुपपया पार्वणधर्मातिदेशात् सर्वत्र तानि प्राप्तानि किन्तु पार्वणे पर्-पिग्डदानानन्तरं सामगेतराभ्यद्यिकादौ नवपिग्डदानान-न्तर्ञ्च तन्त्रेणैतानि कार्य्याणि लाघवात् आग्नेयादिवयेषु प्रयाजादि तन्वतावत् तवापि पिष्टपचास्तृतदर्भेषु करसमा-र्जनं सेपभागिनो हुइप्रितामश्रादीं स्त्रीनुहिश्य कर्त्रयं "ग्राप्य पिग्डां स्तरस्तां स्तीन प्रयतो विधिपृर्वकम्। तेषु दर्भेषु तं इस्तं प्रमुख्याक्षेपभागिनाम्॥ लेपभाजयतुर्घोद्याः पित्राद्याः पिग्डभागिनः। पिग्डदः सप्तमस्तेषां साधिग्डं साप्तपौरू यम्"॥ इति ययास्यानस्यमनुवचनाभ्यां महैकवाक्यत्वात् द्ति तद्धि दर्भागां मूर्ले "दिचिणाग्रेषु दर्भेषु पुष्पधूपसमन्त्रि-तम्। स्विपित्रे प्रथमं पिएडं ददादुच्छिष्टम्बिधो ॥ पिता-सम्राय चैवाय तिस्पर्वे च ततः परम्। दर्भमू ले लेपभुजम्त-र्धरोह्मपघर्षणै: । पिष्डैकीतामश्रास्तदत् मन्यमात्यादिन्युतै: ) प्रीषधित्व। दिजायाणां दद्यादाचमनंततः"॥ इति विष्णु-पुरागात्। नचेतत् पाठकामासातामद्वपिखदानात् माक-लेपचर्षणभिति वाचा "सर्वेषु मधुमध्वित्यचसमी भदन्तेति

जिपला श्री स्त्रीन् विग्डान् द्यादवनिन्य दितं गौभिनस्त्री "दमेषु श्री स्त्रीन् विग्डान् स्वनिन्य द्यात्" इति वात्यायनग्रह्यो च श्री स्त्रीनिति वीसा दर्भनात् पर्विग्डदानमध्ये विग्डदानित कर्त्तव्यताव्यतिरिक्षानां निष्ठत्तिः प्रतीयते स्वत्यव विग्रद्धाता यादकल्पतर्प्रस्तिभिः पर्विग्डदानानन्तरमेव कर्व्यतं यादकल्पतर्प्रस्तिभिः पर्विग्डदानानन्तरमेव कर्व्यतं निक्तिन्। विग्रुपुराणन्तु दर्भमूनविधायकं निक्तिन्। विग्रुपुराणन्तु दर्भमूनविधायकं निक्तिनम्। विग्रुपुराणन्तु दर्भमूनविधायकं निक्तिनम्। विग्रुपुराणन्तु दर्भमूनविधायकं निक्तिनम्। प्राथ्ववनिननदानादेः प्रागि तद्तिन् वाद्यावाने वाद्यावाने वाद्यावाने वाद्यावाने व्यवस्थिति। स्त्री स्त्रासद्यक्षेत्र विग्डदानं व्याकिन् भेटपरिमिति। स्त्री स्त्रासद्यक्षेत्र विग्डदानं व्याकिन् भेटपरिमिति। स्त्री स्त्रासम्भवेऽपि निक्द्वेश्यककरमार्जनप्रचान् जनासमन्दरिस्मर्णानि काय्योणि साधार्षप्रवृत्तप्रापुक्त अद्यान् पुराणात्।

भव यादचिन्तामणिः। विःपिवेदोचितं तोयमित्याः दिना ताबदाचमनं विद्वितं तदव विरावन्ति पाचारप्रदीपी-उप्येविमिति तथ "विराचः मिष्टपः पूर्वे हिः प्रमुख्यात्ततीमुखम्"। इति भनुषचने छदगमेशसृक्षम्य "प्रचास्य पाणी पादी चीप-विश्व विराचामेत्। द्वि:परिमृजौत पाणि पादावभ्यस्य शिरी-अयुचयेदिन्द्रियाण्यद्धिः मंगुगि दिचगी नामिके कर्णी" । इति गोभिनस्ये च चिः पिषेदित्वचैष विराचामिदित्ववाभिधाना-दवापि तथैव युक्तवास् भनो गोभिनेऽपि तथार्थवे पूर्वापरा-द्वाभिधानं व्यर्धे म्यात् तकात् ब्रह्मपुरागेऽपि विराचासित् वि: पिवेदित्ययः। योदत्तोऽप्येवम्। पिगङपूजानन्तरं वम्-सारीखस्य पाठः। तयाच यद्यपुराणं "पूत्रियत्या तु पिएइ-स्यान् पितृ य प्रणमेहतून्। वसन्ताय नमस्ययं योषाय च ममोनमः ॥ धर्षाभ्ययं गरत् मंद्रा ऋतवे च नमः भदा। हैमलाय नमस्भयं नमस्रे शिशिराय च ॥ मासमंबद्धार-भ्यय दिवसभ्यो नमी नमः"॥ इति बाध्ययनिमन्यगपची यमः। "प्राययेम् प्रदोषान्ते भुतायं गयिमान् हिनान्। मर्पायामियिनिर्मुक्तेः कामक्रीधिविविन्तेः। अविनद्यं भव-दिय मंभिते यादक माणि॥ तेत तथे यिष्ठिन याति चेद्र-लगो स्वम्"। पार्ययेत् भिसन्तवपूर्वकं नियगगर्ययेत्।

''परकोध गरहे यस्तु स्वान् पितृं स्तर्पयेक्जाडः। तङ्गमिस्ना-मिनस्तस्य दर्गन्ति पितरी बलात्। भग्रभागं ततस्तेभ्यो ददावात्यच जीवताम्"॥ गटह इति भूमिमावपरं तद्भामा पिद्धहरणस्य हितुत्वेनाभिधानात् मृखदानाग्रदानयोः प्रत्येवां षर्णनिवर्त्तकत्वेन वैकिष्णिकत्वं ततस्य याष्टविघातनिवर्त्तकः लेन तद्र हतात् पित्ररीत्या भूखामिपितृभ्यः प्रथमतो देयम्। श्रतः पार्वणादौ प्राचौनावौत्तित्वादिना नान्दोसुखे उपवीति-खादिनेति। यत पिष्टपदस्य पाप्तिपद्यलोकमात्रपरत्ये प्रेतानां चरणासभावात्। सुतरां खधिति निर्देश्यम्। प्रमौत-मावपरलेऽपि "न ख्याञ्च प्रयुज्जीत प्रेतिषेखे दशाहिके"। द्रति ऋषगृष्टवचने दशाहिकत्वश्रवणादन्यत खधा प्रयोगाः दवापि तथा। यसवर्णों हुँ दे हिक निषेधस्य सावादिपकरणी-यत्वादन्यभूमावे मग्रदानमिति भौष्मतर्पणेऽप्यका स्वौदत्ती-उप्येवम्। सिङ्गपुराणे "यासयामियसाये तुतच्छादं क्रियते नृभि:। तस्य ब्रह्मान्तिकं स्थान त्रप्तास पितरा दिवि"॥ विषापुराणे "चित्तध वित्तध तृणां विग्रहुं ग्रास्तथ कालः कथितो विधिय। पावं ययोक्षं परमा च भक्तिनृषां प्रय-व्यव्यभिवाञ्चितानि ॥ बद्धपुराणे। "यस्वासस्मितिकस्य ब्राह्मण पतिताहर्ते । दूरस्यं भोजधेमूढो गुणाढंत्र नरक वजेत्॥ तसामातिक्रमेत् प्राची ब्राह्मणान् प्रातिवायकान् । संखन्धिनः तथा सर्वान् दो हिव विट्पति तथा॥ भागिनय विशेषेण तथा वस्त् गरहाधियात्। नातिकामैवरशैतान् सुसूर्वानीय गोपते। यतिकस्य महारोद्र रोखनरकं व्रज्ञत्"॥ ब्राह्म-योऽवास्पविदाः। सूर्यवाद्यापातिकमे दोषभावस्य व्यासाः दिभिनीम्ति मुर्खे चातिक्रम इत्यनिनाभिधानात्। विट्पात-जीमाता सुमुर्जानिति सम्बन्ध दोहिष्ठादि विशेषणांमति कल्पतर्द्धाकरो। मत्स्यग्रहो: "अस्ता: समूना दर्भारा गुक्रेन चाधिकक फलम्" इति चरनी करणहोमे मत्स्यपुरा-गम्। "मन्यभावेतु विप्रस्य पाणावित असेऽपि वा"। यस न्याडाचपरिवेगनन्तु दक्षिणपाणिमात्रेणेय पद्गानभिधानादिति में।यज्ञातां तत्र "एकन पाणिना दत्तं भूददत्तं न भचयेत्"।

इत्यादि पुराणीयेनैकपाणिदत्तमचणिनपेनेन तमात्रपरिवेयनस्यापि निषिडतात् व्यक्तं मत्स्यपुराणीयपित्रकत्ये
''उमाभ्यामपि इस्ताभ्यामाद्वत्य परिवेशयेत्"। पाणिभ्यामपि पात्रान्तरितं क्वता देयम्। "इस्तदत्ताय ये सेहा लवणं
व्यञ्जनानि च। दातारं नोपतिष्ठन्ते भोता भुड्ते चकिल्विमम्॥ तसादन्तरितं देयं पर्णेनाय व्यणेन वा। प्रदवात्र तु इस्तेन नायसेन कदाचन"॥ इति विश्वष्ठेन सामाव्यतो विधानात् पित्रभित्ततरितं स्थामप्येयम्। ष्टइस्पतिः
"यदोकं भोजयेत् त्याद्वे स्वत्यत्वात् प्रक्षतस्य च। स्तोकं
स्तोकं समुद्रत्य तेभ्योद्यतं निवेदयेत्"॥ प्रक्षतं त्याद्वोचितं
द्व्यं स्तोकं स्तोकं पात्रे समुद्रत्य एकस्मिनेन पित्रादिभ्यो
विभज्यात्रं निवेदयेत् मंकल्ययेदिस्थयः।

इपक्षणाभूजार्तमैय वैधकमी। चरणं तथा च इरिवंशे शर्ज प्रति सुर्भिवाक्यम्। "कर्षकान् पुद्गवैर्वाद्यैर्मध्येन द्विषा-सुरान्। त्रिय गक्तत् प्रवृत्तेन तर्पयिष्यामहे वयम्"॥ पुद्भवैशित्युपाटानात् तेन चस्तो गवौवाइनस्यावैधस्वेन तज्जात-द्रव्यस्यावैधवं प्रतीयते। यादीयपावनिषेधे पैठीनसिः। "सौमकायसपापाणपावाणि होनपावाणि भग्नपावाणि चेति"। हारीत:। "हीनपावन्तु तत् प्रोत्तं न्यूनमष्टाद्ग्लानु यत्"। स्मृतिसारसागरे समृति:। "नारिक्वेनजलं कांस्ये ताम्यपावे स्थित मधु। गर्याच ताम्रपावस्थं मदातुल्यं एतं विना॥ तास्त्रपात्रधृतं सांसंयच गव्यं धृतेतरत्। चासिपन्तु गर्था मामद्धिमद्यं पयौरजः॥ द्रव्यान्तरयुतं मांमं पयसा संयुतं द्धि। पयीऽनुद्रतसार्घताम्बपाति न दुष्यति । एतत् पराद्वानुसाराच्छारदातिलकीसम्। "तत्य मंस्कृते वद्गी गोसीरेण चरां पचेत्। अस्तेण धानिते पाते नवें तास्त्रम-यादिके"॥ अस्तेण अस्त्रभन्तेण। वृष्टभातातपः। पात्रे तु स्र्मिये यस्तु यासे भोजयते पितृन्। स वे दाता पुरोधास भोक्ता च नरकं व्रजेत्॥ गुणांय स्पथाकाचान् पयोदिध घृतं सधु । विन्यसेत् प्रयतः सम्यक् भूमावेष समाहितः" ॥ भूभो न तु पावाम्तरीपरि तत्तत् पावाणि। मार्कण्डेय-

पुराणम्। "त्रभच्य यत् स्वरूपेण निविद्धं स्नातकेषु स। वर्जनीय प्रयत्नेन तद्रव्य श्राडकमीणि"॥ विष्णु । "कुषाग्डा नाव्यात्ताको याग्यमाहिषद्ग्धकम्। पालङ्की राजिका यादे हि सिन्न विवर्जयेत्"॥ हि सिन्न च तदेय यत् सूप-कार ग्रास्त्रोत्तापेचितपाकनिष्यचनन्तर शैखादिनिहत्तये पुन पाकान्तरसुत नवदिपाकानन्तरतच्छास्तीप्तसभारणरूप पाकान्सरसिष व्यञ्जनादि चतीतार्यक्तनिर्देशात् चतएव मृष्टानन्तर गुडादिपक्ष मोदकादिक शिष्टदीयते भुड्यते च श्रन्यथा दि संस्कृतस्य तस्य भोज्यत्व न स्यात् "पर्युपित पुन सिद्यमभोच्यमन्यतं हिरण्योदकस्प्रशत्" इति सुमन्तके शाता तपाऽपि। "गोक्कले कन्द्रशालाया तैलयन्तेत्त्वयन्त्रयो । अभी-मास्यानि ग्रीचानि स्त्रीषु वालात्रेषु च"॥ वालोऽच पञ्चवर्षा यन्तरवयस्क श्रमीमास्यानि शीचाशीचमागितया न विचा रणोयानीति भवदेवभष्टरताकरादय । त्रतएव कूर्यापुराणम । "कन्द्रपक्षानि तैलेन पायस दिध शक्षव। हिलेरतान भोज्यानि शुद्री इसतान्य पि"॥ कन्द्रपक्त कानी प्रमक्त विना कैवनपावे यतविज्ञना पक्ष स्टतग्डुलादि। यभौऽपि। "षपूपाय करभाय धाना यटक ग्राव । गाक सामसपूपञ्च सूप लपरमेव च ॥ यवागु पायमच्चेव यचान्यस् स्रोहसकावम् । भव पर्युपित भच्य सूक्षच परिवर्जयेत्" ॥ पृतपक्षापक्षतया पूपापूपहैविध्य स्क यमाध्र कालवगादक्ता गर्तामिति प्रायश्चित्तविवेषा। कर्मो द्धिशक्षय। मनु "द्धिभच्यस् स्कोषु मर्वेद्य दिधिमभाम्"। भस्यमिति शेष ।

देवन । "ये चार्त विश्वदेवार्थ विमा पूर्व निमन्तिता ।
प्राचा ग्वान्याममान्येषा दिदमांपिहितानि च ॥ दिखणामुख
यक्तानि पितृषामामनानि च । दिलिणाग्रेक दमीणि प्रोचि
तानि तिनादक ॥ ब्रह्मपुराणे। "पृथक पृथक चामनेषु
तिनतेनेन दोषका । श्वविच्छित्रास्त्रथा देयास्ते तु रचन्ति
वे दिलान्"॥ पामनेषु तस्तिश्वानेषु भविच्छित्रा त्राह
कानाविधिस्यायिन । विष्णुपुराणे पिण्डानुषक्रस्य "पूलियता दिलाग्राणा द्यादाचमन तत । पेत्रेस्य प्रथम भत्त्या तमानस्को नराधिष। सुखधित्याशिषा युक्तां ददाष्टित्या च दिच्याम्। दिजायशयां विश्वदेवादि पचत्रय त्यादमोक्नु-णाम्"॥ पैत्रे स्यः प्रथमं भक्त्या तेषां व्राह्मणानां मध्ये पित्व-व्राह्मणेस्यः प्रथमम् भाचमनं दिच्याच्च दद्यात् ततस दिच्या पाया देवादित्वाभावः प्रतीयते। न च मातामद्वापेचया पित्वक्तमंमात्र एव प्राथस्यस्य प्रागुक्तत्वादनुषादापत्तेः स खभित धास्त्रन्तरोयम् इदानोन्तनीया दिच्यापि शास्त्रन्तरीया। घजुः सामविदोस्तु न्युकोत्तानानन्तरम्। तया च कात्यायन-गोभिन्ते। "उत्तानं पात्रं कत्वा ययाशिक्त दिच्यां दद्यात्" इति। भत्स्यपुराषे। "दस्ताः पिण्डान् पित्वभ्यस्तु रजतं दिच्यां दद्यात्। स्वस्तौत्युक्ते दिजेस्तेस्तु स्रान् हेन्ना प्रत-पयत् वाजेवाजे इति जपन् कुशायेष्य विसर्जयत्। रतियक्तिः स्तियः कान्ता भोज्यं भोजनशक्तिता॥ दानशक्तिः सविभवा-रूपमारोग्य सम्पदः। त्याद्यप्रयमिद मोत्तं फलं ब्रह्मसमागगः"॥ पुष्पं तद्यदस्य फलं तदत् सहत्।

वृष्टस्पति:। "वन्दिभ्यसैवमर्थिभ्योऽप्यन्नार्थिभ्योऽन्नमर्थितः। यदि तत्र न दयाच विफलं ग्रक्तितो भवेतृ"॥ वन्दिनो वीर्यस्तो-तारः। मर्थितः सन्यदि एभ्योऽन शक्तितो न ददात् तदा यार्षः निप्पलं भवेदित्वर्थः। तच याद्योत्तरकाले पाशीर्प एणस् "ततः स्वधावाचिनमं विष्वे देवेषु चोदमम्। दस्वाशिषः प्रग्रहीयास् द्विभयः प्राद्ध खः पृथक्" इति सत्रयपुराणवचनस्य "द्धिणां दिशमाकां चन् याचेतिमान् वरान् पितृन्" इति मनुवधनस्य च सामञ्जस्यादुपवौती पाद्माखी दक्तिणां दिशं मनसा पग्यन् कुर्यादिति वाचस्पति मियाः तव "पिएइपिययप्रवदुपचारः पिषेत्र" इति गोभिसस्षेष वैद्यदेव कमीतिरिक्ते दक्षिणामु-ख्वप्रतीते:। द्विणां दिग्रमाकांचविति मनुवचनस्य तयाः र्शत्वे प्रसाणाभाषाच । पतएव दक्षिणां दिग्रमाकां चन् वोष्य-साण इति टीकाकारैयाध्यातम्। मनुनाच पाकांचित्र-त्यनन्तर वदातारी मीऽभिवर्डन्ताम् भवश्ववित्युदीरयन्। भभ्य-दीरयन" इत्येय पठितं न तु "पघीरा: पितर: सन्तु" इति । सत्स्यपुराणवचनेऽपि चचयोदकदानानसरं दस्वेति न

पिठतं किन्तु "ततः खधा वाचिनकं विखेदेवेषु चोदकम्" द्वानन्तरं द्वाभीरित्यदं पिठत्वा "भधोराः पितरः सन्तु सिन्द्विद्धुक्तः पुनिर्दिजैगीन' तथा वर्षतां नस्तयेत्युक्तः सतेः पुनः । दातारो नोऽभिवर्दन्तामञ्ज्यवेवित्युदौरचेत्" दति पिठतं तत्य भाषिविभेषे एतादृशक्तम कर्माण प्राद्घुखत्वं न तु गोभिन्ताद्युक्तकर्माण भत्यव पिद्धद्यिताद्यवाभीःप्रार्थने प्राद्मुखत्वं नाभिद्दितम्।

कुशाग्रेण विसर्जनमाइ सत्स्यपुराणं "वाजे वाजे इति लपन् कुयायेण विसर्जयेत्"। तत्र याद्योत्तरकाले देवलः। "निर्हत्ते पित्रमेधेतु दौषं प्रच्छाद्य पाणिना। जाचम्य पाणौ प्रचाच्य ज्ञातीन् शेषेण भोजयेत्॥ ततो ज्ञातिषु भुक्तेषु खान् सत्यानिप भोजयेत्। पद्यात् खयश्च पत्नी च व्याष्ठमेपसुटा हरेत्"॥ निर्हे से यामदेव्यगानान्ते प्रच्छादाच्छादा ति पारिजातगणे-खरो। नतु निर्वापणम्। दोपनिर्वापणात् पुंसः कुमाण्ड-छिदनात् स्तियाः। श्राचिरेणैव कालिन वंशनाश्रो भवेत् ध्रुमम्"॥ इति नष्यवर्षमानप्ततात्। "दीपनिर्वापकीऽभः स्यात्" इति वचनाच। छदाष्टरेत् मभ्यवद्वरेत्। एप च रागप्राप्तत्वात्व विधि: किन्तु साहाङ्गत्वेन नियमविधि:। तथा च त्राहमेपमुपक्तस्यापस्तस्यः। "सर्वस्रात् ग्रामावराईमञ्जी-यात् इति यासावराई पास एव अवराई निकष्ट कीर्टियस्य तत्त्रया। पनियमले मर्वसादिति यादशेपविशेषणं व्यर्थं स्यात्। ध्यक्तं गिवरहस्ये। "थाहं सत्वातुयः श्रेपं नाद्य-मगाति मन्दधीः। नीभामोद्दाद्वयादापि तस्य तद्दिफलं भवेत"॥ नाभाद्रयान्तरस्रोति येपः। पत्र सोभादित्यभिधा-नात् वैधोपवास।दो न नियमः। एवश्व "यिक्तिश्वित् पश्चते गिष्टे भच्चं भोज्यसयापिवा। पनिवेदा न भुज्जीत पिएइसूसे कयञ्चन"॥ इति प्रद्वीक्षं न ग्रीपेत्रभोक्षनव्यायर्भकं किला य लिखित् इति याद्वार्यलेन विशेषणीयम् भन्यया याद्वप्रति-पिष द्रयाणां भद्यत्व' न स्थात् तैन याहार्यपक्ष तत्र चद्श्वा न मोक्षयमिति तश्यार्थः।

गातातपः। यादं क्षता परयादे भुद्धते ये च जिह्नताः।

पतिन्त नरके घोरे नुप्तिपछोदक क्रियाः"॥ जिल्ला लोलपाः।
विष्णुपुराणम्। 'वर्ज्यानि कुवैता श्राहं कोपोऽध्यममं
खरा। भोक्तुरच्यत्न राजेन्द्र! तयमेतन्न मध्यते"॥ राजमार्त्तरे । 'पुनर्भो जनमध्यानं द्यूताध्ययन मैथुनम्। दानं
प्रतिग्रहं सन्यां श्राहं कलाष्ट वर्जयेत्"॥ नव्यवर्षमानध्ताः
स्मृतिः। 'पुनर्भो जन मध्यानं स्नृताध्ययनमैथुनम्। दानं
सन्यां पुनः सानं श्रीहं कलाष्ट वर्जयेत्"। भध्यानमध्यमने
क्रीयात् परं न कार्यम्। "मध्यगमनमाक्रीयपूरणम्" इति
हारीतवचनात्। सेथुनम् ऋतुकालीनमपि तथा च श्राहानन्तरं शङ्गलिखिती। ऋतुस्नातां तदहोरातं परिहरेत्"
इति। दानं याचितावाद्यतिरिक्षयरम्। विद्रस्थिति
प्रागुक्तत्वात्।

ज्योतिये "तुलाराधिगतै भानौ समावास्यां नराधिय!। साला देवान् पितृन् भत्तया संपूज्याय प्रणस्य च॥ कला तु पार्वग्याद्व दिधिचौरगुडादिभिः। ततोऽपराह्ममये घोपये-भगरे मुपः॥ सस्मोः मम्पन्यतां लोका उल्काभियापि वैद्याताम्"। दशहैधे प्रदोषव्यास्या निगयः। "तुनामंस्ये महसांगी प्रदोषे भूतदर्शयोः । उल्लाइस्ता नराः कुर्यः पितृणां भागिदर्शनम्"॥ इति ज्योतिपात् । जभयतः प्रदोपप्राप्ती परदिन एव युग्मात्। "दग्डैको रजनीयोगी दर्मस्य स्थात् परेऽहिन। तदा विद्याय पूर्वेद्युः परेऽहि सुखराविका"॥ इति स्थोतिर्वचनाच । सभयव प्रदोपापाप्तायपि सस्कादान परदिने पूर्विक्षपार्वणानुरोधात्। "भूनाष्टे ये प्रकुर्विता उल्का-श्रष्टमचेत्रमः। निरामाः पित्ररो यान्ति गापं दस्वा सुदार-थाम्"। इति स्वीतिर्वधनाधा श्रमेष सस्मी: पुर्वाचे रावी पूज्या "भमावास्या यदा राची दिवाभागि चतुर्दगो। पूजनीयर तदा सद्मीविद्येया सुखराविका"। द्रित ह्योतिवेचनाग् इस्कायहणादि पिष्ठक्रत्यतात् प्राचीनावीतिना दिचामानुन क्तर्यम्। तथा च मनुः "प्राचीनावीतिना सम्यगपमध्यस-तिस्वा पिचामानिधमात् कार्यं विधिवहभैपाचिना"। इति स्य ग्रहणमन्तः। "ग्रहागदाहतामाच भूतानां भृतदर्गयोः।

खळ्चन न्योतिपा देहं दहेय ब्हासविद्यना"॥ दानमन्द्रस् । "श्रामद्राधाय ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वल-च्चोतिया द्रश्वास्ते यान्तु प्रमां गतिम्"॥ इति विसर्जनमन्दः। "यमलोक परित्यच्य यागता ये महानये। उक्कवनच्योतिषा वल प्रपथ्यन्ती वजन्तु ते"॥ इति वद्मपुराणम्। "श्रमावास्यां यदा देवाः कार्त्तिके मासि केथवात्। अभय प्राप्य सुप्तास चोरोदार्णवसानुषु॥ नद्मोदैत्यभयान्यसा सुख सुप्तास्तुजी-दरे। चतुर्युगसहस्रान्ते ब्रह्मा स्विपिति पद्गज्ञे॥ अतीऽव विधिवत् कार्या मनुषै: सुम्नस्तिका। दिवा तत्र न मोक्तव्य-सृते बालातुराळानात्॥ प्रदोधसमधे लक्ष्मों पूर्वायत्वा यथा-क्रमम्। दीपद्यचास्त्रया कार्या भक्त्या देवग्रहिष्विष्॥ चतु-ष्पयसमानेषु नदोपर्वतसानुषु। वसमूलेषु गौष्ठेषु चलरेषु ग्रहेषु च। वस्तैः पुष्पैः शोभितव्याः क्रयविक्रयभूमयः॥ दौपमानापरिचित्ते प्रदोषे तदनलस्म्। व्राह्मणान् भोनिय-लादौ विभक्त च वुभु सितान्॥ यन दुतेन भोत्तव्यं नववस्त्री-पगोभिना। सिग्धे मुग्धे विदग्धे य वास्वैस्तके: सह"॥ मुग्धेः सुन्दरैः । मुग्धः सुन्दरमूढयो रिति विग्दः ।

श्रव तस्मीपृतायां पुष्पदानकाले। "नमस्ते सबँदेवानां वरदाधि हि प्रिये। या गतिस्वत् प्रपन्नानां सा में भूयात् वर्वानात्"॥ लद्धीय नम हत्यनेन वारत्य पूज्यित्। "सुष्पन्याया प्रदोषे तु तुर्वेरं पूज्यान्ति ये। हित रुद्धरष्टतात् कुवैरमपि पूज्यिन्ति। धनदाय नमस्तुभ्य निधिपद्माधि-पाय स"॥ भवन्तु त्वत् प्रभादामो धनधान्त्रादिसम्पटः। हित पठित्वा सुवैराय नम हित विः पूज्येत्। तती देव-ग्रह्मिद्धु दीपान् द्यात्। तत्व मन्त्रः। "श्रामिन्योतीरवि-न्योतियन्द्रज्योतिस्त्रयेव च। छत्तमः सर्वज्योतीनां दीपोऽयं प्रतिग्रह्मताम्"॥ ततो वाद्माणान् वन्यं य भोजयित्वा ख्य भुक्ता सुख सुषा पत्वूपे भविष्योक्त कर्मा कुर्यात्। यथा "सुवरावे स्पः काले प्रदीपोध्विन्तालये। वन्धुवैन्यूनव-न्यं वाचा सुयन्याचंयेत्॥ प्रदीपोध्विन्त्नं कार्यः सद्भी-महन्त्वेत्वे। गोरोचनाद्यत्वेत् द्याद्क्षेपु सर्वतः"॥ सद्भी-महन्त्वेत्वे। गोरोचनाद्यत्वेत्व द्याद्क्षेपु सर्वतः"॥ सद्भी-

पूजामस्त । "विख्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मानये ग्रमे।
सद्दानिद्धा । नमस्तुस्य सुख्रावि क्षरूप्त मे ॥ वर्षाकाले महा-घोरे यक्षया दुष्कृत क्षतम् । सुख्राविद्यमाते द्या तक्षे कच्छी-व्यंपोहत् ॥ या रावि मर्वभूताना या च देवेप्ववस्थिता । सवस्परिया या च सा समाम्तु सुमङ्गला ॥ साता ख सर्व-भूताना देवाना सृष्टिसमावा । श्वाच्याता भूतले देवि । सुख-रावि नमो इस्तु ते" ॥ कच्छीर नम द्रति वि पूज्येत् ।

यथ यहीं द्ययोग'। स च रविवारव्यतौपात यवणन चत्नैयुंता चेत् पौषमाघयोरमावास्या स्यात्तदा भवति। यद्या
पायात्य निर्णयास्ते। "समार्क्षणात यवणे युंता चेत् पौषमाघयो। यहीं दय' स विद्येय कोटिस् स्येय है सम "॥ यच
स्र्य्यपर्वश्यताधिक इति क्षत्य चिन्तामणी पाठ। तथा "दिवैव
योग सस्तोऽय न तु रात्री कदाचन"। स्कन्दपुराणे। "यहीं
देशे तु सप्राप्ते सर्व गङ्गासम जलम्। शुद्धात्मानी दिला सर्वे
भवेयु वैद्यासम्मता। यत्विचित्र क्षियते दान तद्दान सेतुमात्र सम्मा विष्णा शिवस्तान प्रशासका कोऽपि वृद्ध बारदीयम्।
"सदीं देशे च पुष्यार्के सस्तार्के राहिणी वृष्ठे" इति।

श्रय युगाद्या । तासु च "युगाद्या वर्षहिष्य सप्तमी पार्वतीपिया। रवेस्ट्यमोद्यन्ते न तत्र तिथियुग्मता"। इत्यनेन व्यवस्था। ब्रह्मपुराणे। "वैशाखे श्रक्कपचे तुं व्यतीयाया कत युगम्। कार्त्तिके श्रक्कपचे तुं व्यताद्य नवमे- इति ॥ श्रय भादपदे कणा वयीदस्थान्तु हापरम्। माघे च पौर्णमास्था वे श्रीर किन्युग स्मृतम्। युगारमास्तु तिथ्यो युगाद्यास्तेन विश्वता"॥ श्रव वैशाखादयः पौर्णमास्थन्ता एव। ब्रह्मपुराणे। तथैव तिथ्वक्तव्यामि धानात्। सुख्यवाचित्रे कार्त्तिके नवमेऽस्रनोद्यनेव सिद्धी श्रक्षपच इति व्यथं स्थात् तेन भादक्षण्यचीयित्रो श्रव युक्षपच विश्वता निरस्तम्। श्रामा प्रश्रमान्य क्ष क्षण्यचीयिति मैथिलोक्त निरस्तम्। श्रामा प्रश्रमान्य विश्वपुराण "वैशाखमासस्य तु या व्यतीया नव साई विण्युपराण "वैशाखमासस्य तु या व्यतीया नव स्थती कार्त्तिकश्रक्षपचे। नमस्य मासस्य तिमसपचे वयो-स्थी पञ्चदेशो स्थाचे॥ एता युगाद्या, कथिता, पुराणे-द्यो पञ्चदेशो स्थाचे॥ एता युगाद्या, कथिता, पुराणे-

रनन्तपुर्विद्यययतसः। उपभ्रवे चन्द्रमसो रवेस विष्व-ष्टकाखययनवंगे च"॥ उपभ्रवे ग्रहणे "पानोयमयव तिले-विभिन्न द्यात् पित्रम्यः प्रयतो मनुष्यः। न्यादं छतं तेन समाः सहस्रं रष्टस्यमेतत् पितरो यहन्ति"॥ स्नानमधिकल्वं भविष्ये। "संवसरफलं तव नवम्यां कार्त्तिके तथा। मन्वादौ च गुगादौ च मासवयफलं लभेत्"॥ विरुद्धं गुरुवाख्यस्य यदन भाषित मया। तत्चन्तव्यं बुधैरेव सृतितत्त्वनुभुः सया"॥ सृतितत्त्वे प्रमादाद् यद्विरुद्धं बहुभाधितम्। गुणः सयाया तन्त्रोधां प्रमादाद् यद्विरुद्धं बहुभाधितम्। गुणः

ं इति वन्दाघटीय श्रीहरिष्ठरभट्टाचार्थात्मज-श्रीरघनन्दनः भट्टाचार्थ्यविरचिते स्नृतितन्त्वे तिथितन्त्वं समाप्तम् ।

## श्राहतस्।



प्रणम्य सञ्चिदानन्दं ऋषां वेदान्तविस्तृतम्। पार्वणादि श्राह्यतत्त्वं विक्ति श्रीरधुनन्दनः। श्रय पावणश्राह्यम्। तव गोभितः। "ग्रथ याद्यसमावास्यायां पित्रस्यो दयात् पञ्चमौ प्रभृति वाऽपरपचस्य यदहर्पयते तदहर्बाह्मणानामन्त्रा पूर्वेदा वी चानिन्दो नोपामन्त्रितीनातिक्रामेदामन्त्रिती वा नान्यदन्न प्रतिग्रह्णोयादिति"। यत्ग्रह्यो "घान्वष्टका स्थाली-पाकेन" एतेन पिएडपिटयज्ञी व्याख्यात: - अमाधास्यायां तच्छादमित्रद्वाद्याध्यं मासौनम्" इति सूत्रे गोभिनीनान्व-ष्टकास्थालीपाक्षधमातिदेशेन ग्रमावास्थाया पिएडपित्यग्र मभिषाय तष्ट्राइमित्यनेन तस्य याद्यत्मुका इतरदन्वाहार र्यामिखनेन तस्यामेव याद्यान्तरमुक्तं मासीनमिखनेन तयो मासि मासि कर्तव्यत्वसुतं "मासिमासिवोधनम्" इति श्रुते: नलन्धाधार्य शाहस्य तहृह्य इति कर्त्तव्यताविधानमुक्तम् इदानीं गोभिसीन ग्रमान्तर्राधियादिना तदभिधोयते । अय ग्रब्द, स्नानविधानानन्तर्थार्थः स्नानविधानमुक्ता एतत् स्वा-भिधानास् प्रयवा साम्नेग्टं छोत्र पिएड पिष्टयत्रानन्तयार्थः तथा च मनुः पित्यद्वन्तु निर्वस्य विषयन्द्रचयेऽग्निमान्। विण्डान्वाचार्यकं याद्व कुर्यानासानुमासिकम्"॥ चन्द्रचये श्रमावास्याया मासानुमासिकं प्रतिमासिकम्। मङ्गलार्थय यया श्रुति:। "प्रणवसाय शब्दस दावेतौ ब्रह्मण: पुरा। कार्ड भित्वा विनियती तेन माइनिकादुमीण अवस्मि-त्यभिषाय कमाणी नामधेय "यहान्वितः याहं कुर्वित" इति गोभिनस्वात् "सस्कृत खान्ननायास पर्योद्धिषृतान्वितम्। श्रुद्धा दीयते यसात् याद तेन निगदाते"॥ इति युलम्त-वचनाच । यहा मास्तार्थे दृढप्रत्ययः । "प्रत्ययोधमांकार्येषु तया यादेखदाहता। नास्ति ह्ययद्धानस्य धर्माहत्वे पयो-

जनम्"॥ इति देवलवचनात्। एवच अहयाऽबारेर्यहार्न तच्छाद्वमिति वैदिकप्रयोगाधीनयौगिकम्। तथाचापस्तम्बः। "श्रयेतनानुः याद्वशब्द कमी प्रोवाच" इति । याद्वशब्द यादः नामकं कम्प्र एवं पावणादोनामपि वैदिकप्रयोगाधीनयौगि-कत्वं पित्रभ्य इति यजमानस्य पित्रादितिकमातामसादि-विकपरम्। "ग्रसावेतत्ते यज्ञमानस्य पिवे श्रसावेतत्ते यज-मानस्य पितामहाय मसावितसे यजमानस्य प्रपितामहाय" इति शुते:। "पितरी यव पूज्यन्ते तत्र मातामद्वा भ्रुवम्। श्रविश्विषेण कर्त्रव्यं विश्विपात्ररकं व्रजेत्"॥ इति सद्याज्ञवल्काः वचनाञ्च। मातामहा द्तितदादिविकपरम् द्रवादिबङ्घ-वचनान्ता गणस्य संसूचका इत्युक्ते:। ध्यक्तमाइ गोभिसः। "पिद्यस्यः पितामहेभ्यः प्रितामहेभ्यः मातामहेभ्यः प्रमाता-महेभ्यः वृद्वप्रमातामहेभ्यः खधोच्यतां" इति प्रव प्रागुत्तशुती यजमानस्य इति श्रुते: पित्रादिषदं स्वजनकादिपरम्। न तु "वसुरुद्रादितिसुताः पितरः त्याबदेवताः" द्रति याज्ञवस्कार-षचनाइस्व।दिपरम् एतइचनन्तु तदाकारत्वेन भावनापरमिति त्राद्वविषयस्तयः। व्यक्तं सृत्यर्थसारमदनपारिजातयोः। "वसुरद्वादित्यरूपान् त्राद्वार्थं तर्पयेत् पितृन्। नामगीत्रे मसुचाध्य तिनेस्तीर्येषु संयतं द्रित वस्तादोनां ध्यानमादित्य-पुराणे। प्रमुखद्नाः सोम्या वरदाः शक्तिपाणयः। पद्मास-नम्या द्विभुजा वसवोऽष्टो प्रकौत्तिताः॥ करे विगूलिनो काय-दिचिणे चाचमानिनः। एकादग्रमसन्या रद्रा स्वाचेन्द्र-भोनयः ॥ पद्मामनस्या हिभुजा पद्मगर्भाष्ट्रकान्तयः। करादि-क्तभपयम् नासपद्वनधारिणः ॥ दन्द्राद्या द्वाद्यादित्या-निर्देशात् पत्र वितरी देवता इत्यापस्त्रस्य युवे देवता इति यदुवचननिर्देगात् न योपिद्धा द्यादिवचनाच पित्रादीनां प्रत्येकेन प्रतोनिरपेनेण च देवताखं पित्रभ्य इत्यव्र तु सन्द-वचनात् माहित्यपतीतिर्भिधानिक्षयापेषया गर्गाभीत्यता-मितिवत् न तु टदादिल्यनेनोक्तप्रधानिकियापेचया ग्राह्य-पेचया युतेषंस्व स्वयं कावासिनोक्तत्वात्। तयाच जायासः

"श्रुतिस्म विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसौ । श्रविरोधे सदा कार्यः सार्ते वैदिकवत् सदा"॥ इति चपरपचस्य क्षरापचस्य तयाच शुक्तप्रतिपदादिमासमधिक्षाय श्रुति:। "पूर्वः पची देवानामपरः पचः पितृणाम्" इति । यद्हरिति चतुर्दगौ-तरक्षणपचौयां यां वाश्वितियं प्राप्य शौचादिद्वसम्पद्प-पदाते तस्मिन् याद्वं कुर्यात्। चतुर्दशौवर्जनमाद्व मरीचिः। "विषयम्बद्धापदा हि तिर्ययम्बद्धाणघातिनाम्। चतुर्देग्यां क्रिया कार्या चन्येपान्तु विगर्हिता"॥ विपादिसाइच्यात् माद्याणघातीति माद्याणकतघातीऽस्थास्तीति वोध्यम्। यव यदमावास्यापद्यभौप्रसृति तत्पूर्वेष्ठसाप्रतिपदादितिस्युपादानं तत्प्रतिपदाद्यपेत्रया परपरकां संख्य याहे निरम्ने: प्रायस्य-न्नापनार्थं तथाच निगमः। "पपरपत्ते यदष्टः सम्पदाते अमाधास्यायान्तु विशेषेण" इति । चन्यतियावपि श्राहमाइ गातमः। ''तथा सर्वस्मिन् दिने द्रश्यदेशसिवधौ काननियमः शक्तित," इति योऽयम् भमावास्यादिकाननियमः सद्रव्यस्य शक्तम्य चरोशिणो घोडव्य इति त्याहविषेकः। चतुर्दशौयर्जन-माइ मनुः। "कृषापचे दशम्यादौ वर्जयवा चतुर्शोम्। याही प्रशास्त्राध्यो यथेता न तथेतरा इति। यन चमावास्याष्टका स्वापच्चपच्चदगीयुच" इत्यभिधाय। "एत-ञ्चानुपनौतीऽपि कुर्यात् मर्वेष पर्वस् । याद्यं माधारणं नाम मर्बकामफलप्रदम् ॥ भार्घ्याविरहितोऽधितत् प्रवासम्बोऽपि नित्यगः। गुद्रोध्यमस्यवत् कुर्यादनेन विधिना बुध" इति सत्यपुराचि सचापचाष्टवासी नामावास्याया नित्यम दल्यनम मिलालाभिधानं तदनुपनीतस्य । "नाते कुमारेशिषं मिलिया मिसियाय्य शोमान् जुद्दोति तिसान् चुडावद्योपन्यन-व्यवदेशमेदिनिक्रियास्त्रसियेवेममुदाद्येयुः" दति येजव-पापीक्षत्रात्रीः "पपिमध्यममुशितीपनीत्रय प माग्नैः कत्तवारं तयोश्यावायातिश्विष्ठपायातिमात्रपारंपः निपेधात्। सथाच मनुः "न दर्गन विना याद्यादिः तास्त्रेष्ट्रियान दति यस्यया वाकानेदावसे: १ चत्रामावाच्याकर्मम्ययंकर्मस्ययोः पावंदत्रमाष्ट्र सविधः

पुराणम्। "श्रमावास्यां यत्क्रियते तत्पार्वणमुदास्तम्। क्रियते वा पर्वणि यत् तत्पार्वणमिति सृतिः"॥ श्रद्ध यदिः त्यादेशभगवाभिधानेन विकस्पार्थ वाश्रन्देन च पार्वणस्य सम्पद्धित्यमुक्तं पर्वणि यत्क्रियते दत्यनेनामाश्रास्थाः पर्वत्वात्तच्छाद्धस्य वेदिकप्रयोगाधीनयीगिकत्वेन पार्वणत्वप्राप्ती श्रमावास्थायां यत् पृथगुपादानं तदमावास्थात्राद्धस्य रुदित्वार्थं । तेन पार्वणन विधानेन दत्यादौ यौगिकनानाव्यवश्रस्यपेद्यया एकस्था एव समुदायशक्तेर्वं स्वतात् श्रमावास्था पार्वणभगाति । देशो सभ्यते न तु पूपादिद्रव्याष्टकादिपार्वणधर्मातिदेशः। श्रतोऽमावास्थायामष्टम्यादिपर्वणि च तिविभिन्तन-शाहे पार्वणश्राहम् श्रम्यव पार्वणविधिना शाहिमत्वभिनापे विशेषः।

व्राह्मणानामन्त्र्यति व्राह्मणानामन्त्र्या निमन्त्र्य यार्ड कुर्यात् पूर्वेद्युर्वा पूर्वदिने वा निमन्त्रणं नत्वामन्त्रणं यव प्रत्याख्याने प्रत्यवायस्तिमन्त्रणं यत्र प्रत्यास्थाने कामचारस्तरामन्त्रण-मिति पाणिनिम्बभाष्ये भेदेनोपाष्टानात् अतएव निमन्स-णातिस्मानिषेधमाद्या "यनिन्दोनीपामन्त्रितो नातिसाम-दिति" नात पूर्वापरदिननिमन्तणे इच्छाविषस्प. किन्तु पूर्व-दिनासामर्थं परदिने तथाच देवनः। "मः कत्तांस्रोति निश्चित्व दाता विप्रास्त्रिमन्वयेत्। निरामिष सक्षडुक्का मर्व-सुप्तजने गरहे। अभकावे परदार्वा द्याक्षणांस्तादिमन्द्रयेत्"॥ श्रत्र निश्चिति पदात्रियये निरामिषससत् भोजनस्याङ्गलं यद्यपि निययोऽत खोभायि कर्माणि प्रत्यू इसकायाद्यका-स्त्यापि शास्त्रप्रतिपादित गः कत्त्यत्वज्ञानमात्रविविचितः। चती यव तादव ज्ञानं नास्ति तम तद प्रशिव नापि या इं कर्त्तेव्यम्। वराष्ट्रपुराणम्। "वस्त्रग्रीचादिकर्त्रव्यं खः कर्त्ताः म्मीति ज्ञानता। स्थानीपसेपनश्चेव सत्वा विप्राचिमन्त्रयेत। दन्तकाष्ठञ्ज विस्त्रेत् ब्रह्मचारी गुचिभवेत्"॥ विस्रजेत् याद्वीयवाद्वाष्ट्रयो द्यादिति याद्विन्तामणि:। एतस्र पार्यण्यकतिकत्वात् सर्वमाद्वे प्रयायाति भाभ्यद्यिके तु न्याह-्टिन एव निमन्वणं पातरामन्वितान् विप्रानिति छन्दोगपरि-शिष्टात्। याहदिने योचित् प्रसङ्गीतरस्य निमन्त्रणमाह मार्कण्डेयपुराणम्। "निमन्त्रयेच पूर्वेद्युः पूर्वितान् दिज्ञ-सत्तमान्। भगाप्ती तद्दिने वाणि दित्वा योणित् प्रसिद्धनम्"॥ भव प्रभव्दात् क्रियानिपात्तिरूपसैयुनकर्नृनिपेधः नतु सार-णादिरूपसैयुनकर्नृनिपेधः। सैयुन चाष्टविधं तथाच दवः। "सरण कीत्तेनं केलि. प्रेव्चण गुप्तमापणम्। सङ्क्ष्योऽध्यवसा॰ यस क्रियानिपात्तिरेव च"॥

याबदिने याबकत्ती दलकाष्टमखादिला द्वादभजल॰ गरङ्गेण सुखं परियोध्य प्रातःस्रात्वा धौतवस्ते विस्यात्। "याह्रे जमादिने चैव विवाहे जीर्णसमाने। व्रते चैवोपवासे च वर्जयेत् दलाधावनम् ॥ इति विष्णुपुराणात्। "घलाभे दनाकाष्ठस्य प्रतिषिष्ठदिने तथा। यपा द्वादशगण्ड्रयेमुख-गुडिविधोयते। तथैवामन्त्रितो दाता प्रात स्नातः महास्वरः"॥ इति रेवनवचनात्। तथैवामन्त्रितो तथैय पूर्वीक्षप्रकारेण यामन्तितो येन स तया देवकत्यमुद्झ् खेन विव्हक्तयं दिचि-गामुखेन कर्त्रधमाच प्रातातपः। ''वद्य यसु देवानां पितृणा दक्षिणामुखः। प्रद्यात् पार्वणयाहे देवपूर्व विधानत."॥ दिससत्तमाभावे भविष्यपुराणम्। "यस्वाः मनसतिक्षस्य ब्राह्मणं पतिताहते। दूरस्यं सीजरीमा्टी गुणाच्यं नरकं घजेत्॥ तसादातिक्रमेत् पाद्यो यापान् प्रातिविशिकान्। सम्बन्धिनस्तथा सर्वान् दीष्ट्रिनं विद्पतिं तया। भागिनेयं विशेषेण तया धन्धून् ग्टहाधिपान् ॥ मातिः क्रमेझरयेतान् सुसूर्खानिप गोपते। चतिकम्य संदारीद्रं रीरवं नरकं प्रजित्" ॥ बाह्मचोऽबान्पविदाः सूर्व बाह्मचाति-क्षम दोषाभाषस्य घामादिभिनोम्ति भूसं यातिकम इस्नेम चिभिधानात् । विद्वतिज्ञीमाता ग्रहाधिषान् ग्रहम्यान् सुमू-यांनिति सम्बन्धिदौदिवादि विशेषपिनिति। दानकस्पतरः

रत्नाकरी। यम: प्रार्थयेत प्रदोपान्ते भुक्कान्नं ग्रयिताम् दिजान्। सर्वायासविनिर्मुत्ते: कामक्रीधविव जिते: ॥ भवितव्यं भवित्रस श्वीभूते याद्यकर्माण। तेतं तथेत्यविद्येन याति चेद्रजनौ सुखम्"॥ प्रार्थयेत निमन्त्रणपूर्वकं नियमं त्रावयेत्। तिवयम-माइ सर्वायासित ते बाह्मणास्तं निमन्वयितारं तथेल्यू चुरिति श्रेपः। श्रवैकवाद्मणनिमन्त्रणपचेऽपि प्रक्षताबृहाभावाद बहुवचनछाने एकवचनोहः नवावाधः वैभक्तिकार्यापेषया प्राथमिकर्लेन बसवतः प्रातिपादिकार्यसम्बेतलेन नियी-च्यत्वात् किन्तु श्रविक्षतं एव मन्त्रः पाठ्यः मत्स्यपुराणेऽपि त्वं मयात्र निर्मान्त्रत द्रखुपक्रम्य बहुवचनान्त मन्त्रपाठाच तद्-यया। "दिचिणं जानु चालस्य त्वं सयात्र निमन्त्रितः। एवं निमन्त्रा नियमान् यावयेत् पैत्वकान् बुध."॥ तिस्रयममाच "श्रक्रोधनै: शीचपरै: सततं ब्रह्मचारिभि:। भवितव्यं भव-द्भिस सयाव याद्यकर्माणि"॥ प्रक्ताविवं प्राप्तत्वात् एको हिष्टे चिप नोष्टः। एवं देवताभ्य. पित्यभ्यय द्रत्यम्बनुद्धा पाठ्य पित्रपदस्याग्निसात्तादिपरत्वात् अत्र परदिने निमन्त्रणे मर्वायासेत्यस्य न पाठः भ्यः पदानन्ययात् किन्त्वक्रोधनैरित्यस्य पाठः चव निमन्तित द्रत्यस्यातीतमाव प्रकाशकात् सादं कर्तुं लां निमन्त्रये इति सङ्क्त एव प्रयोगो युक्तः प्रतएव विद्यताविकोहिष्टपयोगे विप्रत्वामहं निमन्वय इति वराइन प्राण लडक्त एव प्रयोग उक्त इति तस्वम्।

बाह्यणासम्पत्ती कुशमयबाह्यणे त्राष्ठमुत्तं त्याद्वविके।
"निधायाय दभेषयमासनेषु समाहितः। प्रैषानुप्रैषसंयुत्तं
विधानं प्रतिपाद्येष्"॥ इति तद्वत्वचनात् "माह्यणानामसम्पत्ती छत्वा दभेसयान् दिजान्। त्राष्टं सत्वा विधानेन
पर्याहिषेषु दापयेष्"॥ इति त्यादसूत्रभाष्यकारसमुद्रकर-

**धेतवचनाच । द**भवट्नचणमाइ रताकरे ग्टहामंग्रहः। "जाई केशो भवेत् ब्रह्मा नखकेशस्तु विष्टरः। दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामवर्षस्तु विष्टरः"॥ इति याद्यक् ब्रह्मा ताद्यक् क्रमेण ब्राह्मण इति भाष्यम्। यान्तिदीविक्षायाञ्च ब्रावस्तस्यः। "सप्त-भिनेवभिर्वापि साईहितयवेष्टितम्। प्रणवेनैव सन्तेण हिजः कुर्यात् कुरादिजम्" इति नवभिरित्यर्थः पञ्चभिरिति कमी-पदिशिन्यां पाठः दर्भसंख्या विशेषाभिधानं क्रन्दोगितरपरम्। "यज्ञवास्तुनि मुख्याच सम्बे दर्भवटी तथा। दर्भसंख्या न विहिता विष्टरास्तरपेषायि"॥ इति कसीगपरिधिष्टान् घाष्ठाणप्रतिनिधिलेन गोभिसग्रद्धो कमग्डलुं दर्भयटुं वा निधायेति दृष्टं प्रागुक्तवचनप्राप्तञ्च द्रभेवदुरूप द्रभेचयमादाय कमंकरणे यस्य प्रैषस्य प्रश्नस्यानुप्रैयं प्रत्युत्तरसवाधितं तद्-युक्तकर्माषीऽभिधानात् निमन्वितोऽसि तृक्षासः इति प्रत्यु-त्तराभावात् निमन्त्रणखिष्ठाप्रयाभाषः। न घदभैवाद्याप्रपचे श्रेत्रेषावसोः सदने सीदामीत्यविक्ततमेव वक्तव्यमिति भद्दभाष्य-दशनाद्वापि निमन्त्रितीऽकौथनेम वक्तव्यमिति पार्ष "यदावा उभयचिकीर्पेत् होत्रखं ब्रह्मखं च तेनैव कस्पेन क्रवमुत्तरामद्गमुद्क कमण्डलुंद्भेवटुं वा ब्रह्मासने निधाय" दति गोभिलसूबेण होतुईद्यकर्भकर्तृत्वेन विधानात् तस सीटामीलस्य प्रतिनिधिलारोपवैगनेन समवेतार्यलात् गते-नैवेलेवकारेण भीरेखासा कलानाया प्रयुक्तलाच पत्र त निम-क्षितीऽघोत्यस्य सर्वयेवासमवेतार्थत्वेनायुक्ततः कुरुष्वत्यादि प्रत्यसराणान्यन्येनापि सक्षयादनुत्तादीमां कर्त्रयसा एव। एवद्य दर्भवटी त्राह्म्य करकेऽपि "धविध्यिके कयभाये यत प्रधानस्य प्रदाते। पविद्यात्यक्षं कर्मातस्य प्रकरपाइता"। द्ति साग्रेन याहाइत्वात् कर्नुमस्कारकताच निमन्वणाः भावेऽिय सक्षतिरामियमोजनमेयुनवर्जनयोः कर्तव्यतिति।

उपवेशनमाष्ठ गोभिनः। "स्नातान् श्रुचीनाचान्तान् पाद्म जान् छपवेश्य देवे युग्मान् यथाशक्ति प्रयुग्मान् पिवेर एकैकस्वीद्दालान् हो देवे तीन् पैतेर एकैकसुभयत वा। साप्तासदानामधेवं तन्त्रं वा वैयदिविकम्। देवपूर्वं यादं संवीत" दति स्नातानवगाहितान् न तु मन्त्रसातान्। ग्रचीन् स्तकादिरिहतान् एवं प्रयतत्वादियुक्तानां वाष्ट्राणानां टर्भामने स्वागतप्रयाद्यादिना आसनस्पर्यष्टस्त्रप्रष्टणपूर्वकम् उपविश-नानिकार्याणि एवं प्रयतोऽपराह्वे गुचिः गुक्तवासां दर्भेषु तिष्ठन् एवं स्नागतिमति ब्रुयात् "पाद्याध्यासमनीयोदकानि दस्ता वाद्याणानुपसंग्टश्च उपवेशयेदासनसालस्य" इति शङ्खलिजित-वचनात्। खयमपि स्तकादिरहितः स्नातः क्षतदेवपूजान्त-नित्यस्यः। अव याददिने चहुपुतेलं न याद्यम्। तथा च स्मृतिः। "प्रातःस्राने पित्रशाहे पष्ठमा द्वादगीषु च। स्रास्नानममं तैलं पितर नरकं नयेत्॥ पृतञ्च सार्पपं तैलं यत्तीलं पुष्पवासितम्। षद्ष्टं पक्षतैलञ्च तैलाभ्यक्षे च नित्यभः" ॥

ततय प्रथमं प्राद्या खाः शिला पादी प्रकालयेक्तनीः। धद्द्या स्वा पेत्रके दिचणामुखः" इति देवलवचनात् दिचणामुखः भन् क्षतपादशीचम्त्रवापि वामपादादिक्तमः। यथा गीभिनः "सन्यं पादमवने निने" इति वामपादं प्रचाः स्वयति "दिचणं पादमवने निने" इति दिचणं पादं प्रचाः स्वयति "दिचणं पादमवने निने" इति दिचणं पादं प्रचाः स्वयति "दिनां पादमवने निने" इति दिचणं पादं प्रचाः स्वर्थति इति । काल्याधनग्रहोऽपि "स्वयं प्रचाल्य दिचणं प्रचान्त्रवाने विचलते तेन यज्वेदिनामिष प्रथमं वासपादप्रचाननं प्रवं श्रुद्धापि तते दिचणपाणी पवित्रं वामे बहुतरक्षशान् धारयेत् "स्वाः सोपयदः कार्या दिचणः सपवित्रकः" इति कन्दोगपरिशिष्टात् ततः प्राद्य छ उद्द्यु खो वा क्षताचमवः

"शिच देशं विविज्ञच गोमयेनीपनेपरीत्। दिचिणाप्यवन-चेव प्रयत्नेनीपपादयेत्"॥ इति मनूज्ञ गोमयोपनिप्तदेशे उपविशेत्" द्रासीन जर्द्व: प्रद्वो या नियमो यत्न नेष्टगः। तदा-सीनेन कर्त्तव्यं न प्रद्वेन न तिष्ठता" इत्यादि छन्दोगपरि-शिष्टात् द्रासीन उपविष्ट जहीं दण्डवत् स्थितः प्रद्वीऽवनतपूर्व-कायः। जानुपातं विशेषयित विशिष्ठः। दिचणं पातयेज्ञानु देवानुषचरन् सदा। पातयेदितरज्ञानु पितृन् परिचरविष" इतरद्वामम्।

अय खाइदेशाः। यमः। "रूचं क्षमियुतं क्षित्रं सद्दी-गांनिष्टगन्धिकम्। देर्गत्वनिष्टशब्दच वर्ज्ययेत् याद्यकर्माणि क्च ध्लियुतं क्षित्रं पद्धिलम् घनिष्टगिश्विकम् घसुरिभगत्वम् श्रानिष्टशस्य प्रतिकूलशब्दम्। विषाुः। "न स्तेष्टियिपये श्राहं कुर्धानेच्छेन्तं तथा। चातुर्वेच्यं व्यवस्थानं यश्मिन् देशे न विदाते। तं स्नेच्छदेशं लानीयादार्थावर्त्तमतःपरम्"॥ शहनिखितौ "नेष्टकारचिते पितृन् सन्तर्पयेत्" इति ब्रह्मपुराणं "पृथक् पृथक् चास्रनेषु तिस्तेनेन दीपकाः। श्रविच्छित्रास्तथा देयास्ते तु रचन्ति वै हिजान्"॥ यासनेपु तसिधानेषु पविच्छिताः प्रच्छाद्नावध्यवस्थायिनः। रचन्ति याधिमतिश्रेषः। धिजा इति सस्योधनम्। ततो धाम्तुपुरुपाय जम इति पारवर्षां सुर्थात्। "त्राहाधिकरणे यत्र नार्शितो वास्तुदैवतः। तय श्रुत्यं भवित् सर्वे रचीविद्यादिभि हितम्॥ तसाहास्वर्धन कार्यं सम्यक् मन्यदमीस्भिः" इति राघय-भद्रधृत-वास्तुगान्त-हाट्यम-द्यमात्। योगियात्त्रवल्याः। "ध्ययिकारायणं नित्यं सानादिषु च कमाषु। प्राययिच्यपि सवयाह कतायुचते प्रमान् । प्रमादात् कुर्वतौ कर्मा मणवेताध्वरेषु यस्। धार्यादेव तदियोः सम्पूर्णं स्यादिति

श्रुतिः॥ तहिष्णेरिति मन्त्रेण मन्त्रेदम् पुनः पुनः। गायती विष्णे होषा विष्णोः संप्ररणाय वैण्णाः तत्य त्याउम्यादी श्रिताहिष्णोः परसं पदं सदा प्रश्नान्ति स्र्यः दिवीव चत्त्रातन्त्रम्णः। इत्यनेन विष्णुं सार्त्। प्रिनपुराणम्। "अद्यन्ति विष्णुं सार्त्। प्रिनपुराणम्। "अद्यन्ति विष्णुं सार्त्। प्रिनपुराणम्। "अद्यन्ति विष्णां समाचरेत्। दन्तायं देवदेवाय तन्त्रे पाष्णुपयुद्धयेत्"॥ अपयुद्धयेत् कर्माणि योजयेत्। विद्वपुराणे "गालयामिश्रनाये त्यक्त्राहः क्रियते नृतिः। तस्य अस्य निस्तानिक स्थान द्यस्य पितरी दिविणाः तत्य भाजन्यामे विष्णुं मपूज्य शाहीयायं दद्यात्।

ब्रह्मपुराणे। "परकौय रहहे यस्तु स्वान् पितृन् तर्पये-ज्जडः । तद्भिम्बामिनस्तस्य प्ररन्ति पितरो वलात्। ययभागं ततीमतेम्या ट्यात् मून्यच जीवताम्"॥ गरह इति भूमाचपरम्। यद्भवामिषिष्टप्रशस्य हेत्तवेनाभिधानानात् मूखदानाग्रदानयोः प्रत्येक इग्णनिवर्त्तकलेन यैकिष्पिकल स्रातिशास्ते विकल्पस्तु प्राकाद्वापूरणे सति" इति भविष्य-पुराणात्। ततस यासविघातनिवर्त्तकेलेन तद्द्रत्वात् पित्ररीत्या भूखामि पित्रथः प्रथमतो दैयम्। ततः पार्व-षाटी प्राचीनावीतिलादिना नान्दोसुखे उपवीतिलादिना इति। श्रव पित्यदस्य प्राप्तिपत्थलोकभानपरत्वे प्रेतानां एरगासभावात् सुतरां खधेति निर्देश्य "खधाकारा परित्यागी सर्वेषु पित्रक्षमास्य । इति याद्यकाण्डे विष्णुवचनात् प्रमौत-माव परत्वे तु "न सधाच प्रयुच्चीत प्रेतिपण्डे दशाहिके" दति ऋणगुरुवचने दगाहिकग्रहणादन्यय स्वधापयोगादवापि तथा। श्रमवर्णोह्वदेखिकनिषेषस्य स्नातादि प्रकरणीयत्वा-दन्वभूमाचेऽप्रदानमिति भोषतर्पणे उक्षम्। योदत्तोऽप्येवम्। एतच खभूमावस्वामिकायाच भूमी न दयात् श्रसामिका- न्छा ह यम:। "घटव्यः पर्वताः पुछ्या नद्यम्तोर्धानि यानि च। सर्वाण्य स्वामिकान्याह्ननं हि तेषु परिषदः"॥ पुछ्या दिति विशेषणादटक्यो नैमिषाद्याः पर्वता हिमान्याद्या नद्योग्यास्तौर्धानि पुरुषोत्तमादिस्तेवाणि वाराण्याद्यायतन्तानि च। स्वाम्यभावे हेतुमाद्य न हितेष्विति। परिषदी यथेष्टदानविक्रयणादिविनियोगन्वणः।

देवनः "यादस्य पूजितो देशो गया गङ्गा सरस्ततो।
सुरुचेत्रं प्रयागय नैमिप पुष्कराणि च॥ नदौतटेषु तीर्थेषु
शैनेषु पुलिनेषु च। विविक्षेषु च तुष्यन्ति दत्तेनेष्ठ पितासष्टाः"॥ विविक्षं विजन तत्तय तथाविधान् व्राह्मणान्
स्वागतादिना पूजियत्वोपवैद्ययेत्। याद्वाधं यद्वेद्यां प्रवेद्ययितव्य तदुत्तरदिया यद्वि सारियतव्यं तद्द्विणदिशा "उत्तरेणाष्टरेदेव्यां टचिणेन विमर्जयेत्" दतिवायुपुराणात्। पेदिरत्व
दिविणाप्नवनदेशः। याज्ञवस्त्याः। प्रपराह्वे समस्यद्याः
स्वागतेनामतास्तु तान्। पवित्रपाणिराचान्तानामनेषूपवेद्यवेत्"॥ उभयतेति देवपचे पिद्वपचे चेत्वयः। एवं मातासष्टपचेऽपि पृथक् वैद्यदेवत्राध्यण मातामद्यवाद्यमेक वैद्यवेववाद्ययोपवेद्यनम् एव बाह्मणानामसम्यत्तौ यस्तत्रयाः
सनेषु दर्भवद्वयोपवेद्यनम्।

यय याडदेवाः । तय याडमेदे देवतामेदमाइ इइम्पति. ।
"दृष्टियाडे कतुद्धः सत्योनान्दीमुखे वसुः । नेमित्तिक्षे
कालकामो काम्ये च धूरिलोचनी ॥ पुरुरवा माद्रवाय पार्यणे
समुदाञ्चती" ॥ दृष्टियाडे दृष्णायाडे नेमित्तिके एकी दृष्टे ।
"एकी दृष्ट्य यष्ण्रावे तस्येमित्तिकमुण्यते । तद्यादेव कर्णयः
समुग्मानाय विद्यान्" ॥ दृति भविष्यपुराणात्। एक्य

एकोहिष्टे विश्वदेवकरणाकरणयोः शाखिमेदेन व्यवस्था। तत्र सामर्गयनुर्विदोर्ग्रह्म।नुसारात् विग्वदेवरिष्ठतत्वं साग्नेक्ट खेरि-मोविष्वदेवसिन्तर्वं तद्ग्रह्मपरिणिष्टोक्षत्वात् यथा "यिषात्रवे पुराणे वा विक्षे देवा न लेभिरे। यासुरं तक्षवेच्छासं सुषसं मन्ववर्जितम्"॥ इति। "कास्यं कामाय तु हितं कास्यमभिप्रेता र्धसिहये। पार्वेषेन विधानेन तदघ्यां खगाधिपणद्रति भविष्य-पुराणीतां काम्ययासे कामाय इत्यमेनैवाभिषेतार्थसामे यभि-प्रेतार्थसिष्ठय दति यत् पुनक्पादानं तत् खगतपुवादिफलोदेख-कलेन तिष्यादि श्राहानामेवात कास्यखार्थम् पतः मंक्रान्यादि-याबादस्य भेदः। एवश्व संकानवादियाधे पिष्टहमेः प्राधान्यं पुवादेः फलस्यानुपड्डिकालं तिथादियाहे तु पुवादेः फलस्य प्राधान्य पितृत्वप्तेरानुपङ्गिकफन्तविमिति देवविग्रेपवाचकस्य ष्यपि पुरुरवस सकारमध्यता पितृद्यिता याहकार्ड-कर्प-तरमैधिसययपाचीनयादविवेवेषु तथा निखनात् रायमुकुट-प्रशृतिभिरेव पुरोक्धयन्त इति खकपोलरचित ख्रात्मधा मोकारयुक्तः पाठः क्षतः। सतुराजविश्वपवाचकः।

ष्यासनम्। तत्र विशेषमा देवनः। "ये चाच विश्वे देवार्थं विषाः पूर्वं निमन्त्रिताः। प्राष्ट्रा खासनान्तेषां दिदमींप दितानि च॥ दिन्धण मुख्युक्तानि पितृणामासनानि च। दिन्धण प्रेक्तदर्भाण प्रोचितानि तिसीदकैः"॥ प्राष्ट्रा खलं दिन्धण प्रेक्तदर्भाण प्रोचितानि तिसीदकैः"॥ प्राष्ट्रा खलं दिन्धण मुख्य खासमागापेचया ज्ञेयम् एषां विश्वदेव ब्राह्मणानां पितृणां पित्र ब्राह्मणानामेतचासनं ब्राह्मणोपविश्वन्वार्थं निष्ठ विश्वदेवार्थं पित्राद्यर्थेवा तथा च यमः। "ततः सिंदमिति प्रोच्य कल्पिते चासने तथा। प्रासम्बन्धित तान् ब्राह्मणितं संस्थ्य स्विष्य कल्पितासनस्य ब्राह्मणोपविश्वन्व प्रवीपयीगावगतिर्विश्वदेवः पित्राद्यर्थं सनन्तु कुश्वयात्मकमेव प्रवीपयीगावगतिर्विश्वदेवः पित्राद्यर्थं सनन्तु कुश्वयात्मकमेव

पाणिप्रचालनं दत्वा विष्टराधं कुथानिष "प्रावाष्ट्रयेदनुत्तातों विश्वे देवा स प्रत्यचा। तथा द्विगुणांस्तु कुथान् दत्वा लयन्तस्त्रेत्वृचा पितृन्" प्रति याज्ञवल्कातेतोः प्रचाल्यतेऽनेन प्रति प्रचालनं जलं तेन तृष्णीं ब्राह्मणपाणी जलं दत्त्वा विष्ट-रार्थमासनार्थमिति दीपकलिका। कुशान् ऋजून् द्वात् दिगुणानित्युक्तेः।

" त्रध दर्भाः। व्रह्मपुराणे "सचिन्नसाध हरिताः पुष्टाः सिम्धाः समाहिताः। गोकर्णमावाय कुगाः सक्षच्छिनाः समुलकाः॥ पिळतीर्थेन देयाः स्युद्रवीग्याभाकः एव च। कामाः कुमा वस्वनास तथान्ये तीस्त्ररीममाः ॥ मीस्नास शादलारीय पड्दर्भाः परिकीर्त्तिताः ॥ तीच्छरीमया इति वस्वजानां वियोपणं तेन तेपामसाभ "शूकळणशरशीर्ययुत-वस्वज उत्तपग्रग्ठवर्जं सर्वतृणानोति" गोभिलेन तद्द्रातिरिक्ष-वल्बजानां निपेधो वीहव्यः। सपिष्क्षमाः साग्राः सिका ष्रकर्षेगी: पुष्टां न सुस्ता: .समाहिता निर्दोषा शादना इति मौक्षस्य विशेषणं शूकानि फलपुष्यमञ्जयेसा येषां दृणानां मन्ति तानि शुक्रद्यणानीति भट्टनारायणचरणाः गोकणमाता विस्तृताषुष्ठानामिका परिमिताः। विष्णुः। "कुत्रास्याने काशं दूर्वी या दघ।दिति" छतसृष्टिष्ठम्तपरिमिताः कुगाः प्रस्तरणार्थाः तया च वायुपुराणम्। "रिव्रिपमाणाः गस्ता वै पियतीर्थेन संस्कताः। उपम्यूने तथा सूनाः प्रस्तारार्थे सुग्रीत्तराः" ॥ वर्ष्यं सुगाना ए ए। रोतः "चितो दर्भाः पियदर्भाः ये दर्भा यश्रभूभिषु । स्तरणासनिष्ण्डेषु पड्दर्भान् परि-यर्जयेत्। पिण्डाधं ये स्तृता दर्भा येः कृतं पिष्टतपंजम्। सूको च्छिष्टप्रसेपे तु त्यागस्तेषां विधीयते" ॥ दन्दीगपरि-शिष्टम्। "धतेः छते च विरम्बे त्यागस्तेषां विधीयते।

नीवीमध्ये च ये दर्भा ब्रह्मसूते च ये धताः॥ पवितां सान् विज्ञानीयाद्यथा कायस्तया कुशाः। बाचस्य प्रयतो नित्धं पवित्रेण दिजोत्तमः। नोच्छिष्टन्तु भवेत्तत्र भुक्तश्रेषं विवर्ज-येत्"॥ इति वचनानुरोधात् पवित्रदानमेव सम्यक्।

अधानुद्धा। पूर्वदिननिमन्त्रणे तदहर्निमन्त्रणे वा आहदिने निमन्त्रणानसरमनुद्राग्रहणमाद्द श्रापस्त्रमः। "पूर्वेद्युर्निवेदनं वैदनं परेद्यहितोयं हतीयमामन्तवामिति निवेदनं खो मया श्राहं कर्त्रयं तत्र भवन्ती निमन्त्रणीया द्रखेवं रूपं निवेदनम्। दितीयं खामई निमन्त्रये इत्यनेन निमन्त्रणम्। स्वयि श्राह-महं करिये इति दतीयमनुज्ञायस्थरूपं तव दर्भवट्रपद्यी निवेदननिमन्त्रणयोरभावः किन्त्वनुद्धायां त्वयौति स्थाने दभंभयत्राह्मणे दति वक्तव्यं साचात् व्राह्मणपचे दितीयदतीय-मिति बोधनापेच्यं ब्रह्मपुराणम्। 'उपवेश्य सपेश्वीमान् गायवीं तदनुत्रया। मन्तं वस्थामष्टं तमादसृतं ब्रह्म-निर्मितम्॥ देवताभ्यः पिष्टभ्यय महायोगिभ्य एव स। ममः स्वधायै साद्वाये नित्यमेव भवन्तिति॥ आद्यावसाने याहस्य विराष्ट्रस्या अपेत् सदा। पिएडनिर्वपणे चैव अपेटेततः समाहित: ॥ पाळामानिममं शुला याहकाल उपस्विते। पितर: चिप्रमायान्ति राचसाः प्रदूषन्ति च"॥ उपवेश्य ब्राह्मणानुपवेद्य तदनुद्रया तस्य यादम्यानुद्रया तत्य क्रार्-म्बेति प्रतिवचने सध्ये श्राहाङ्गलेन गायबी जपादिकं क्यां-दिलार्यः। तथा च ब्रह्माण्डपुराणम्। "याखं करिषा इलोवं प्रच्छे दिप्रान् समाहित:। क्षुक्चिति स तैरकः क्ष्याद्वभीषन् तथा" ॥ विप्रान् निमन्तितद्राधाणान् तदसकाचे द्राष्ट्राणास्त-रानिष कुरुवेति प्रतासरसा समग्रवात्। यतएव पिटद्यिताया त्राहानुद्यानत्तरं गायह्यी अप उत्तः, न च गायही-

**जपार्थमनुजाग्रहणानन्तरं वधनान्तरसिद-त्राहानुजापर**ल-समावे ष्रन्यपरत्व कत्पनानुपपत्तेः षत्र देवताभ्य दति मन्त्रे विदिभेदेन मैधिलानां यत् पाठकत्पनं तत् कत्पनमेष। पुराणे एकधैव लिखितलात्। ततस खधायै स्नाष्टायै नित्यमेव भवन्विति इति सर्ववेदिनां बहुसमातः पाठः। यत्र षानुजायाः सङ्गलार्थकारित्वेन तत्तमासाद्युह्नेखमाचरन्ति । षव ब्रह्मपुराणे तत्तनासे कृष्णपचक्रत्यमभिषाय गुक्षपचक्रत्या-भिधानेन सप्णपचनिमित्तकपार्वणयाहस्यापि ब्रह्मपुराणीय-त्वात् पौर्णमास्यन्तमासेनोन्नेखः। तद्यया "पयोमूलफलेः याकैः क्षण्यचे च सर्दा। पराधीनः प्रवामी च निर्धनी वापि मानवः। सनमा भावगुरेन यादे दद्यात्तिलोदकम्"॥ एदमख्युक क्षष्ट-पचाष्टका मधावयोदशीपु चयव राध्युक्षेखः श्रूयते तथ सीरेण एतद्भयसाधकासत्वे तु दर्शान्तेन वैशाखादिनोहावः। याह्रे गोव्राद्यसेखमाइतु:पारस्करप्रचेतसो । "गोव्रसम्बन्धनामानि पितृणां परिकलपयन् । गोभिलोऽपि। "गोवं खरान्तं सर्वत गोतस्याच्य कर्माणि। गोतस्त तर्पणे प्रोप्तः कर्ता एव न सुद्याति॥ सर्वचैव पितः प्रीक्षं पिता तर्पणकर्माचि । पितुरचयाकाले तु भाषयां द्यपिमिच्छता॥ शमीबध्यदिके कार्यो ग्रमी तर्पणकमीणि। श्रमीणीऽचयकारीतु पितृणां दत्तमध्यम्"॥ शर्मिदार्यनेम गोवसम्बन्ध-नामानि इत्यनेन एकवाक्यतया शभाक्तं नाम प्रतीयते। तया च विष्णुपुराणम्। "ततदानाम सुवीत पितेष दयमेऽइति। देवपूर्वे नरास्य हि श्रामीवमादिसंगुतम् ॥ देवपूर्वं देवात् पूर्वं नरास्यं नर नाम तश्च विश्विष्टं श्रमीयुर्त एतश् विष्रपरम्। श्रमा देवय विप्रस्य वर्गा द्याता च भूभुतः। भूतिग्रंत्रस वैग्रस्य दासः शूट्र कारयेत्"॥ इति यमवचनात् भव चकारेष देव-

भ्रमेणोः समुद्धयः। तत्रापि भ्रमीवर्माचलतामास श्रातान्त्रपः। "भ्रमीन्तं म्राह्मणस्य स्थाद्यमीन्तं चित्रप्य स। धनान्तञ्चेव वैश्वस्य दासान्तं चान्यज्ञमानः" पत्र धनान्तमिति श्रुतेः प्रागुक्षवचने भृतिपदश्वतेय भृतिपदधनपदयोर्वेकल्पिकन्त्राः प्रवे भ्रमीतिस्थानेन भ्रमीन्त नामा विभेष्यस्य विभेषण्यल्वात् पितरिति विभेषण्यत् गोत्रस्यविभेषणस्यापि सम्बुद्धान्तत्वं स्थान्तमित्यनेन भद्भान्तरेणभिष्ठितम्। एवं सम्बुद्धान्तत्वादि-श्रुतं गोत्रपदम्। कत्तां स्थार्यायता न सुद्धातीत्यनेन श्राद्धावे गोवपदमेवोचार्यं न तु पिष्ठद्धिताकल्पत्रशाद्धविषेकोक्तं गोचपर्यायकर्माप सगोत्रपदम्। एवं पितरित्यादिश्वतेः सम्बन्ध्याव्यानां पदिन्यायेन स्थास्त्रस्थिपरत्वात् तोकिकेऽपि तथैवाभिधानात् पितरित्यादिवक्तव्यं नत्वस्रत् पितरित्यादि सन्यया प्रवोत्यमादिविष्ठाः। स्थाया प्रवोत्तमर्गदाद्यि एतदस्यद्वमित्यभिनापापत्तेः। पदम्यया प्रवोत्तमर्गदाद्यि एतदस्यद्वमित्यभिनापापत्तेः। पदमिव श्रोदस्यभत्तयः। सिश्चोऽपि क्रत्यप्रदोपेऽप्येविमिति।

पितादीनां नामाज्ञाने तु शाखलायमसूर्व "नामान्यविद्वां सस्तत् पित्रपितामद्व-प्रिपितामद्वा द्वित् सत्त पित्रादीनां नामाज्ञाने गोत्रसम्बन्धान्तरं देवदत्तपितिरत्यादि प्रयोज्यम् सम्मदित्यनिमधाय तदित्यनेन नामाविद्वत् कर्त्तृनामपराम-ग्रात्।, भतएव श्राष्ठविवेके नामाज्ञाने श्रमुकिपिष्टिपितामद्व-प्राप्तामद्वादिके नामाज्ञाने श्रमुकिपिष्टिपितामद्व-प्राप्तामद्वादिके नामाज्ञाने श्रमुकिपिष्टिपितामद्व-वार्यामित्वाद्यवाधायामुकिपिष्टदेवश्रमीतित्यादिकं प्रयोज्ञव्यम्। न च नामघटकत्वे न श्रमोति पृथद्व वज्ञव्यसिति वाच्यं श्रमीन्दं द्वाद्याप्य स्वादित्यादी श्रमीदिनीमभित्रह्वे नोपपद-त्वेन च प्रतोति:। सतएव सम्बन्धवाचकादस्य भेदः। एवं पितामद्वादी मातामद्वाद्यपूर्वीयम्।

यभिचापप्रकारसाइ ब्रह्मपुराणम्। "एतदोद्यवसिख्का

धिखां देवांय संयजेत्। पिक्षभ्यय तती दद्यादसमामन्त्रणेन तु॥ असुकासुकगोवैतत्तुभ्यमद्गं खधा नमः"॥ एतह इति बहुवचनान्तीपादानेन सम्बोध्या विश्वे देवा श्रिप तथा प्रती-यन्ते तथा विश्वान् देवान् प्रति ष्टइस्रितना च तत्तत् आहे क्रत् दचादिमञ्जकदितयदितयोज्ञलात् तत्तत् सार्थकलाय खर्वस्य**प्रश्स इति वत् पुरूरवो माद्रवसौ विखे देवा** एतहोऽसं नमः" द्रित द्विचनबद्ववचनाम्यां वाक्यरचना पिष्टद्यितादी लिखिता गर्डपुराणेऽप्येताद्यी वाकारचना। यतएव इच्छात्राह्वे अतुद्वादि नामान्युह्वा प्रहस्यतिना तदन्नाने षागच्छित्वित्यादि सन्त्रपाठ उत्तः यथा "उत्पत्तिं नासचैतेपां न विदुर्धे दिजातयः। श्रयमुद्धारणीयस्तैः श्लोकः श्रदासम-न्वितै:॥ षागच्छन्तु महाभागा विश्वे देवा वरप्रदाः। ये यव विदिता याद्वे साधवाना भवन्तु ते"॥ इति ततस नाम-जाने सुतरां तस्येवोचारणं प्रतीयते।

दैवे नम इत्यनेन त्यागमाद्य विष्णुः। "नमो विश्वभ्यो देवेभ्यो इत्यन्नमादी प्राद्म ग्वयोनिवेदरेदिति" श्रव्य नम इत्यनेन विश्वभ्यो देवेभ्यो द्यादित्यन्वयः। ततो देवपचकर्मानन्तरं विश्वभ्यो देवेभ्यो द्यादित्यन्वयः। ततो देवपचकर्मानन्तरं विश्वादित्रिकं मातामद्यादि विकश्च मम्बुद्धान्तगोत्रसम्बन्धनान्ना एतनुभ्यमत्रं स्वधेति सर्वेधाखिगोचरपौराणिकत्वेन सम्बोधननेन नामान्तमुद्याय्ये तत्तच्याखोक्तपकारेण वाक्यरचना। श्रव्य "श्रव्यादिकचेव विण्डदानेऽवने जने। तन्त्रस्य विनिव्यत्तिः स्वात् स्वधायचन एव घ"॥ इति क्रन्दोगपरिश्रिष्टवचनादः स्वित वाधके लाधवमेव तन्त्वतान्याये युक्तिरित्युक्तत्वाच श्रष्यां दित्तरत्व "एतदः विवरो वासस्त्विति जल्यन् पृथक् पृथक् । श्रमुकामुकागेवेतन्तुभ्यं वासः पठेत्ततः। द्यात् क्रमेण वासांसि खेतवस्त्वमवा द्याः"॥ इति ब्रह्मपुराणवचने वासोन्वासांसि खेतवस्त्वस्ता द्याः"॥ इति ब्रह्मपुराणवचने वासोन्वासांसि खेतवस्त्वस्ता द्याः"॥

दानमन्त्रयोः प्रथक्त्वाभिधानात् तदितस्य च कुशासनगन्धान दावोक्षगंदिचिषादाने तन्त्रेणैय वाकारचना सतएव तुभ्यमिति , पदेन प्रकृतवाचिनां निरपेचाणामेव पित्रादौनां सस्बोधनपदेन उपनीतानां तन्तेणोद्देश्यत्वसभावात् तन्त्रेणैव खधा पदसम्बन्ध इति याद्यविवेकः। यव तु प्रकृतेत्यनेन सम्बिधानात् प्रिपता~ महमात्रस्य तुभ्यमित्यनेन नोपस्थितिः किन्तु पर्वनामत्वात् पितादितिकाणां निर्पेघाणामित्यनेन साहित्यासच्चेन बहुवधनेनानुहोखान्भ्यमित्येक यचनेनेवोह्नेष प्रति। एवध ग्रह्योक्त एतत्त द्रत्यादी ते द्रत्यस्य तथ्यं पदस्थानीयविन तथा-विमिति। एव ते पिएइ दूरानम्तरं सन्ते "शे चात्र वामनु-जांच लमनु तस्रे ते<sup>ष</sup> इति ते पदस्य गोभिनेन पुनर्पादानात् सामगीन जाहवाको छभयं प्रयुज्यते तस्र प्रथमं ते इति तदी-स्वर्धे एवच्च याद्वानुज्ञानन्तरं गायक्षीजप उत्तः तं विशेषयति योगियाज्ञवल्काः। "प्रणवं पूर्वसुद्धार्यः भूभुवः खस्ततः परम्-गायतोप्रणवयान्ते जपे द्वोप उदाह्रतः"। तदनन्तरं देवताभ्य द्रिति वि: पठेत्। ततः पुर्दिशिकासं स्रोत्। "शङ्घक्रधरं विष्णुं हिभुजं पौतवाससम्। प्रारमो कर्माणां विषः पुख्ररीकं स्विद्धिम्"॥ दति वाकात् पुरङ्गोकं पुरद्धीकासम्। सार्यः फलं गारुड़े। "भपवितः पवित्री वा सर्वावस्था गतोऽपि वा । यः सारेत् पुण्डरीकाच्य सवाह्याभ्यन्तरः ग्रुचिः"॥

्याहीयद्रव्यमोचणमाह वायुपुराण । "नामोचितं सृशेत् किञ्चित् पेते देवेऽय वा पुनः"॥ सृशेत् द्यात् छपद्यातप्रद्वायां स्वामेच ततेव "वा चेव हिन्त याहानि दर्भनादेव स्वयः । ऋविद्युक्तरसंस्पृष्टं दीर्घरोगिभिरेव च ॥ पतितैः मिनिचेव न साष्ट्यं कयञ्चन । यसं पर्थेयुरेते यक्तव स्वाद-स्वव्ययोः ॥ उत्सद्यं प्रदानार्थं संस्कारस्वापद् सृतः । स्विवा संस्तानान्तु पूर्वमेव हि मार्जनम्॥ सत्सा युताभिरिद्धि पोचणन्तु विधीयते"॥ प्रदानार्धे त्राहार्धे छत्सट्यं तद्यं न नियोग्यमिति कत्यत्तरः। देवलः "चण्डालेन
ग्रनावापि दृष्टं हिवरयित्रियम्। विडालादिभितिच्छ्टः दृष्टमवं विवर्जयेत् भन्यच हिरण्योदकस्पर्योदिति" तदनन्तरं रचायमुकद्यावमेकदेशे स्वापयेत् इति पिखद्यिता। तथा च हृद्धमनुः। "रचणाय तु यद्दत्तसुद्दं त्राह्वकमीणि। ताव-दशन्ति पितरो यावत्तिष्ठति सोदकम्" इति दृष्तं स्वापितं व्यक्षिमंणि त्राहे कर्त्तस्ये सोदकं पाविमिति श्रेषः।

यथ पिस्डपिव्यञ्चातिरेशः। तत्र गोभिसः "पिर्ड-पित्रयज्ञवद्पचार: पिचेत्र इति" पित्रेत्र पित्रादिषाट्पुरुषिकः क्तवे पिएइपित्यद्यद्यन्त्र खग्दचीक्ष पिएइपित्यन्नरीत्या प्राचीनावौतित्व दिचणामुख्वं पातितवामजानुव सतिलव दिगुणभुग्नकुभवयत्व से चावत्वेति मन्त्रीचारणक्षपतया उपचर्षं कार्य्यमित्यर्थः। यस "घचयोदकदानन्तु मध्ये-दानषदिष्यते। पष्ठेत्रव नित्यं तत् कुर्य्याच चतुर्या कदाचन इति छन्दोमपरिशिष्टवचनेन पष्ट्या एवेत्यनेन गीत्रसम्बन्ध-माम्नां पष्टान्तता प्रतीती न चतुर्ध्यायनेन तब चतुर्धी निर्धेधा-गुपपच्या पिएइपिएयज्ञवदित्यतिदेगप्राप्त ये चाचलेति मन्त्रस्प तस्यै ते इत्यस्य निषेधेऽन्वयानुपपन्या तद्युक्त मन्द्रनिषेधोऽपि सङ्गच्छते। "एकोहिष्टस्य पिण्डे तुन्त्रमुग्रच्दो न युज्यते" । इति याखनायनग्रह्मपरिशिष्टेऽनुशब्दनिपेधादनुयुक्त मन्त्र-निषेधवत एतेन कुयासनाचीत्सर्गयोः ये चावत्वेत्यादिमन्त्रः स्यानिखनं मैथिलानां हैयम।

श्रम कुशासनम्। तत्र गोभिनः। "पिनेन दिगुणांस्तु सभीन् पवित्रपाषिद्यादासोनः सर्वत्र पश्रेषु पड्किमूर्दन्यं

प्रच्छति सर्वान् वा सवसासनेषु दर्भानास्तीर्योति" पित्रेर पिवर्षदाने तवादी जनगण्डू पप्रचेपः। तती दिगुणभुमन-क्षभपय तयं पितृणाम् भासनाधं ददात् एतच भारौ विम्हे देवपचे कला पिष्टपचे कर्त्रयां तथा च याज्ञवल्काः। "पाणि-मचालनं दस्वा विष्टरार्थं कुशानिष। यावाइयेदनुद्राती विष्वे देवा स इत्यूचा॥ हिंगुणांस्त कुग्रान् दत्वा उपन्तस्वे-त्युचा पितृन्॥ प्रचात्यतेऽनेनेति प्रचालनं जलं तेन तूर्शीं ब्राह्मणपाणी जलं दत्वा विष्टरार्धम् घासनार्धिमति दौप-कलिका कुणान् ऋजून्द्यात् व्यक्तमाद पाखलायनः। "षपः प्रदाय देभीन् हिगुणभुग्नामासनं प्रदाय" इति श्रासनमित्वनेन उपविश्वनीयत्वप्रतीते इस्ते तददानं प्रतीयते । तथा च कार्णानिः ''दर्भायैवासने दद्यात् न तुपाणौ कदाचन। पित्रदेवमनुष्याणाम् एवं त्रिसि चित्राखती । श्रव पित्रदेव-मनुष्योपादानात् पार्वणादियाहे विखेषां देवानां नित्ययाहे सनकादि मनुष्याणामपि कुशासनदानं प्रतीयते। प्रहा दैविवालेन कुपानां ऋज्लिमिति विद्योपः। देविपित्विप्रयोः दिचिषवामयोः कुशासनस्थापनमाञ्च याद्वसूत्रमास्यप्टतदत्त-नम्। ''पितृषामासनं ददाहामपार्खे कुषान् सुधीः। दिचिषिचैव देवानां सर्वत्र याडकमीस्"॥ सर्वत्र देवे पिल्ले च पविव्रपाणिः पविव्रयुक्त दिचिणकरः श्रासीन उपविष्ट स्तथा च छन्दोगपरिशिष्टम्। "सव्यः सोपग्रहः कार्यो दिच्यः सपविवकः" इति "शासीन ऊर्द्धः प्रद्वी वा नियमी यक्ष नेद्य:। तदासीनेन कर्त्रव्यं न प्रद्वेन न शिष्ठताणा इति सब्यो वामकर: उपग्रहो बहुलुकुग: बासीन छपविष्ट: कही दण्डवत् स्थितः प्रष्टः यवनतपूर्वकायः सवचेत्वनेन देवकार्यः पितृकार्ये च पित्रपाणित्यमासीनत्वच प्रयोषु याहं करियो

धितृनावाद्ययि इत्यादि प्रश्नेषु श्रासनेषु ब्राह्मणोपितष्टदर्भ-युक्तासनेषु दर्भानास्तीर्थ्य विश्वे देवाद्यर्थात्स्प्टदर्भानास्तीर्थ्य वस्थमाणमावाद्यनं सुर्व्यादित्यर्थः । यत्तु श्रानिरुद्धमट्टेन पाद-योरथः सुशासनदानसुक्तं तत्र प्रमाणं न विद्य इति पड्कि-सूईन्यं पितृवाह्मणं प्रस्केदिति ऋज्वत्यत्।

श्रय घावाइनम्। तत्र गोभिनः ''यवानादाय प्रणवं कत्वा विखान्देवानावाष्ट्रियये इति एच्छेत् त्रावाष्ट्रयेखनुत्रातः विखे देवा: श्रागत ऋणुताम इमं हवम् एदं विहिनिषीदत" इत्याबाह्य यवान् विकिरेत्। "विश्वे देवा: शृणुतेमं इवं ये मेऽन्तरोचे उपद्यविष्टयेऽग्नि लिह्वा उतवो यजवा त्रासदा-सिन् वर्हिप मादयध्यं श्रीपधयः समवदन्त सीमेन सह राज्ञा यसौ क्षणोति बाह्मणस्तं राजन् पारयामि इति श्रव समवदन्तेति वकारयुक्तः पाठः वदस्यैर्ध्ये दत्यस्मात् धातीरिति गुण्विष्णु निखनात् व्यक्तमपरम्। यवावाद्यनानन्तरं सत्य-प्रदोपे यवविवारणे यवोऽसोति मन्त्र निखन प्रभाणशून्यं पितृः दियता याद्यकत्पादिषु तूर्णीमित्यभिधानात्। यत देवता-वाइने सहाद्धिकं विप्राङ्ग्रथसणमाइ ब्रह्मपुराणम्"देवाना-वाहियिचेऽहं प्राहुरावाहयस्व च। विप्राङ्गष्टं रहहीत्वा तु विश्वान् देवान् समाञ्चयेत्"। यावाष्ट्रयखेति शाख्यत्तरीयं गोभिलका-त्यायनाभ्यामावाइयेत्यभिधानात्। गोभिलः "पित्रेत्र तिसाना-दाय प्रणवं कत्वा पितृनावाष्ट्रिये इति प्रच्छति भावाष्ट्रयेत्वनु-जातः एत पितरः सौम्यासो गमोरेभिः पथिभिः पूर्विधिभिर्दः-त्तासायं द्विणेऽद्व भद्रं रियञ्चनः सर्ववीरं नियच्छत। धग्रतस्वानिधीमद्यगतः समिधीमहि उग्रव्यत आवह पितृन् इविषे असवि"। इत्यृचायाद्य "प्रायान्तुन: पितर: सीस्यासोऽग्निसात्ताः पथिभिर्देवयानैः पिस्न् यशे सधया

• अध अर्घ तत्र मीभिनः। "अप उपस्या यजिय ष्टचनगरेषु पधिचान्ति इतेषु एकैकिसिन् यप यासिश्चति गवोदेवीति" अप उपसृख्य जल स्पृष्टा यत्र पिष्टमन्त्रोचारणं यौज तथा छन्दोगपरिशिष्टे कात्यायनः। "पित्रामन्तानुहर्षे याक्तालकोद्यविचणे। यधोवायुसमुक्तार्गे प्रहासेनऽनृतभाषणे॥ माजारमूपियस्यर्गे चाकुष्टे काधसभावे। निमित्तेषु च सर्वेषु कर्मा कुर्वेद्यप: स्प्रोत्"॥ पित्रामन्यानुहरणे यज्ञादी विह्नि यात्मालमाे इदयस्यी प्रवेचणे तसीव अधीवायुसम्-सर्गे नोहींदारे प्रहासे महति हास्ये न तु सिते आक्रुष्ट पन्प-भाषण क्रोधसम्भवे क्रोधोत्पक्षी भाषणं विनाऽिय मनसा एपु निभित्तेषु सर्वेत कमीकरणकाले जलसूत्रीत् नलाचामेत्। यान्नवस्कारेऽपि ''रौद्रपित्ररमुरान् मन्वान् तथा वैराभि-चारिकान्। याष्ट्रत्यासभ्य चातानमपः सुद्वान्यदाचरेत्"॥ चममासु अंतच्छाखायमसादीघाः प्रादेगायतुरङ्गुलाः । तथैव **धत्**षेधतो जेयायतुरम्रास्तु द्रव्यपि"॥ तच्छाखा यज्ञिय-ष्टच-भाखायतुरहुलाः चतुरङ्गल-विस्तृता तथैव चतुरङ्गल-परिमाणाः छत्सेधतः कहुतः। श्रव भघ्धपावस्यापनं

कुर्योपरीत्याच वैजवापग्रह्यं "प्राचीनावीति प्रावाख्यप् पूर्वानि सदर्भाणि सतिलानि दिचिणाग्रेषु कुगेषु निधाय" पति पविवान्ति ईतेषु मध्यापितपविवेषु एकैकिसिनिति वीपादेवपात्रे (पि जनादिप्रचेपार्था। तथा च याज्ञवल्जाः "यवैरन्ववकीर्याय भाजने मपविव्रके। श्रनीदेव्यापयः चिष्ठा यथोऽसोति यवा स्तथा। या दिव्या इति मन्त्रेण इस्ते-षर्घा निवेद्येत्"॥ गीभिनः। "एकैकसिक्षेत्र तिलानाव-पति तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवी देवनिर्मातः। प्रव्नमिक्षः प्रक्षः स्वधया पितृन् सोकान् प्रीणाहि नः साहा" दति सीवर्ण-राजतीषुव्यरखाज्ञमणिमयानां पात्राणामन्यतमेषु अप्रसिद्ध-यवपुरेषु वा यानिवा विद्यन्ते एकैकिकिमेकेकेन ददाति सपवित्रेषु इस्तेषु "या दिव्या त्रापः पयमाः। सम्बभृतुर्या चन्त-रोच्चा छत्पार्थवीय्यो हिरस्यवर्णा यज्ञिया स्तान त्रापः शिवाः सञ्चोनाः सुच्चा भवन्तु" द्ति पाठला श्रमावेतस्रेऽर्घामिति श्रव एकैकसिनिति पूर्वसूत्रप्रक्तत्वादेव प्रत्येकपावसाभै पुनर्यदेकैकिसिक्ति नियमाभिधान तम्बन्ते पितृनिति बहुवचनदर्शनादावाहनादिमन्वपाठवत् सक्षन्यन्वपाठ.स्या-दिति तिन्येधार्यं किन्तु प्रत्येकम्व तिसप्रचेपमन्त्र. वहु-वचनन्तु "एतद्वः पितरो वासः" इति वत्प्रयोगसाधुलेनोप-पन्नम्। अत्र तिलानावपतीत्यविश्रीपत गोभिल-दश्मेनात् देवपचेऽपि तिलप्रचेप:। तथा च विखे देवा म घागत दूत्यावाद्य विवारणगणि तिलानामिति वाकीपाध्यायमत यत् तम्र युक्तम्। आवाद्ययेत्यनुज्ञातो विग्छे देवा स इत्या। यवैरनुविकीर्याय भाजने सपविव्रके। शकोदेव्यापय विष्ठा यवीऽसीति यवांस्तया" इति याज्ञवस्काविरोधात्। यवतिन-प्रचेषानलार गत्थपुष्पप्रचेषसभाह ब्रह्मपुराणम्। "ब्रघ्योः

पुर्णेय गन्धेय ताः प्रपूच्याः ख्यास्त्रतः" ऋर्घा याप इति शेषः खगास्तरः याद्वीयगन्धपुष्पप्रतिपादकात्। याट्यायनोऽपि "गम्धपुर्यो रसद्वाया दिव्येति पठन् स्जीत्। स्जीत् उत्-स्जेत् ततो देवब्राह्मणहस्ते प्रागद्यमध्येपात्रीय पवित्रं जलाः न्सरख प्रिच्य वितुर्वाह्मणहस्ते दिचिणाग्रमध्य पात्रीय पवित्रं जसान्तरच प्रचिष्य वामइस्तेऽर्घ्यपातं ध्वा या दिवेति पिंठत्वा वाक्येन विप्रकर्यपित्रसिद्धितमध्ये जलमृत्यजेत् ददात्। तया च वायुपुराणम्। "ततो वामहस्तेन रहहोत्वा चमसानक्षमात्। घिष्टतीर्येन तत्तीयं दिन्गोन च पाणिना। टलदभीदके इस्ते विप्रेभ्यस प्रयक्ष पृथक्"॥ जनपरिपान-न्तरं या दिब्धेति पाठात् पूर्वं पुष्पान्तरेण शिरःप्रसृतिसर्वगात्र-पूजनमाद्य समुद्रकरधृतगीतमः। "शिरमः पादतसेष मस्यगस्यच्ययेत्रतः। पूर्ववत् पृथगिकैकमेकैकेनार्चयेत् क्रमात्"॥ घोड्यर ताम्वपावं खाञ्चं गण्डो शरीऽस्थिनिर्मातं पावं मणिमयानि स्फाटिकादौनि यानि वेति अप्रतिपिहानि कदलोष्टचत्वगादोनि भन चमसादोनां वैकस्पिकत्वात् भन्य-तमेषिति गन्दाश्वेषजातौयेनेव सर्वाख्यव्य पाद्याणि प्रसाविति सम्बोधनान्तनासोपसचणम्। "त्रमाविति नाम ग्रह्मातीति" कालायनदर्भनात् ययऽप्यमाविति यसम्बृहि प्रधमान्तोऽपि समावति तयापि ते इति युषात् पदप्रयोगात् सम्बद्धान्तता प्रतीयते। चतएव क्न्दोगपरिग्रिष्टं "गोवनामभिरामन्त्रर वितृषध्यं प्रदाययेत्"॥ प्रयोगविधायवागीभिनसूचे एतत्ते-अध्य मित्यभिधानात् तद्ग्रद्धोऽध्यध्य मध्य मित्यभिधानाश्च सामगानां मर्ववाभिष्ठापे नपुं सक् सिङ्गेनेव प्रयोगः समिलापे-तरव एकोऽप्ये इति गोभिसेन पुंस्वेन निर्दिष्टः चन्येषां अवेत्र अंसिक्वेनेत्र प्रयोगः तम्रापि पाद्याध्याभ्यां यदिति

पाणिनिस्वेण यद्यद्विधानं तत्सासगप्रयोग एवान्यच निर्य-कार एवार्यग्रब्दः। प्रागुत्त वै अवापग्रह्मवचनेऽस्य पात्र-स्थापनीयकुमानां दिचिणायखदर्भनात् तत्पात्रीपरि पवित्र-स्यापनेऽपि तहस्या पशुप्रोचणवत् तथैव व्यवद्वारात् श्रामनाः-स्तरणीय अग्रेषु तथादर्भनेन दिचणाग्रत्यवद्यावद्यात् वाद्याण-इस्ते पविवदानेऽपि तथा प्रतोयते सतएव गोभिसोय साइन कलभाष्यक्षनाहा यशसाद्रख्यदती गागीयपदती च पवि-वाणां दिचिणायत्वे लिखितमिति नव्यवर्डमानपशुपत्यपि पासरायमुक्तरपद्यतिष्विप तथा निवित्तम् श्रतएव "विशिष्ठीक्तो विधिः कत्स्रोद्रष्टचोऽत्र निरामिशः" इति कन्दोगपरि-शिष्टेन द्वियादे पार्वणधर्मातिदेशेऽपि श्रध्ये "खेषीत्तर-करान् युग्मान् कराग्राग्रपविव्यकान् सत्वाध्ये समदातव्यं नैकैकसात दीयते" इत्यनेन पविवाणामुत्तरायल विधीयते प्रत्येक इस्ते (धर्मदानं निधिधाते च श्रतः पार्वणे दिचिणाग्रत्वं एकैक इस्त्दानत्वं प्रतीयते। गोभिनः। "प्रथमे पाने संस्रवान् समवनीयपावं न्युञ्जं कुर्यात् पित्रस्यः स्थानमसि इति प्रथमे पाचे पिछपावे संस्वान् पितामहादिपञ्चार्थं-पात्रस्थित जलानि समवनीय पशुप्रोत्तणवत् क्रमेण स्थाप-यित्वा तत्पावस्य प्रवितासस्यावेणाच्छादनमास गौनकः। "प्रिपितासहपात्रेण पिधाय प्रतिष्ठापयति" इति याज्ञवस्केन चपि तत्पावस्थाधस्यत्वाभिधागात् पावान्तरेण पिधानमा-सिप्तं तथा च यासवल्काः। दत्तार्घ्यं सम्रवां स्तेषां पात्रे क्षत्वा विधानतः। पिष्टभ्यः स्थानमधीति न्युकं पावं करीः त्यधः"॥ विधानती यथापूर्वं स्थापितं तत्क्रमेण तेन प्रिपता-महपाने गाधः कतं पित्रपानं अहु मुखाविश्वतं न्युनं करोति नतु केवलं पिद्धपावं न्युकां कारोति तदेवपावं पावान्तरेषाधः

करोति "पैद्धकं प्रथमं पानं तस्मिन् पैताम इं सामेत्। प्रितामहं तथान्यस्य नीहरेत्नच चालयेत्" द्वियम-वचनादिति मैथिलोसं युसं याच्चवस्कावचने करोतीत्वनुपद्गा-पत्तेवायमेदापत्तेय शीनकोक्षिधानानन्तर न्युकोक्षरणानुप~ पतेश यमवचनेऽपि पिद्यपातस्य याज्ञवस्कीयाधस्यत्वाय णौनकौय प्रिताम हपात्रमा निधान वैक स्पिकं पिताम ह-प्रितामस्पावस्यपिधानभुका वचनान्तरात्र् कौकतस्य सत्-पावस्थोद्दरणादिनियेष उत्तः तथासम् "पिद्यपावे निधायाथ न्यु अमुत्तरतीन्यसेत्" इति मत्यपुराणवचने न्यसे दिखवाख्या-तोपस्यापितकतुर्वामपार्खे कर्त्रधः "तसाद्यस्य दक्षिणतो लक्म भवति तं पुण्यलक्मोकिमित्याचचते उत्तरतः स्त्रियाः" इति उत्तरायणा दि स्तौति ग्रातपयश्वतीः "उत्तरे चास्य सीवर्णं लक्षपार्वे भविषाति इति महाभारतवचनाच जत्रमञ्द्य वामवचनता सिद्धा पित्वकर्माणि प्राचादिम उत्तरादिक्याच तया च रायमुकुटध्तं पिषश्रमिष्टमुपक्रम्य "ब्राह्मणं या दक्षिणा साम्राची या पूर्वा सोत्तरा" दति। एवञ्च भोत्रवाद्यानामपि सोत्तरादिगविति कत्यतक्त्या सहैका वाकातापि मिदा इति। एवं कर्त्युटि चिणामुख्य वामपार्थः-सुत्तरादिग्भवति इति तत्य कत्पतर्याद्वविवास्याम् एक-स्थानं भद्या दितयेनाभिहितं सच न्यासोदर्भस्तस्वोपशीत्य-निरुद्दभट्टः। श्रव गोभिमस्वे पिष्टपावे र्व्यभिधानात् मंस्रावानिति षहुवचनाथ मन्त्रे पितृभ्य इति पितृत्वेन याष्ट्र-तास्तव तिष्ठांन्त पितरः गीनकोऽयवीदित्यावनायम ग्टहा-परिशिष्टवचने पितृत्वेन पष्टपस्थितेरावाद्यनवत् पट्पुरुपानु-हिम्य स्कादेव न्युकोकरण न तु मातासहादोनां मैथिसीक्ष प्यक् करण्यिति।

षय गन्धादिदानम्। तत्र गीभिनः। "गन्ध्युष्यभूप-दीपाच्छादनानां सम्प्रदानमिति"। तत्र गन्धादिपञ्चानां हन्हिनिर्देशासाधवाच मिलितानां सन्तेशैकोसर्गः निवेदनन्तु प्रत्येकशः तथा च शाद्यायनः एप ते गन्ध एतसे पुष्पं एप ते ध्य एय ते दीप एतसे चाच्छादनम् इति म्रत बहुषु यवेषु सम्पन्नो यव इति जात्यापेसैकवचनं तहहसादीनां प्रत्येकं बहुत्वेऽध्येकवचनान्तत्वेन निर्देशः। "इदं वः पुष्पमिखुक्का युष्पाणि च निवेदयेत्। श्रमुकामुकगोत्नैतन्भ्यमस् स्वधा नमः" इति ब्रह्मपुराणादिष्वेकनातीयानेकद्रव्येऽपि एकवच-नान्तपयोगात् अतएव नवसाध्यायेऽपि ''सूर्यस्य चचुगंसय-तात्" इति सन्त्रे स्र्यस्य चसुर्घष्टलेऽप्येकवसनान्तपदनिर्दे-भात् संगर्गिद्रव्याणामन्तरोयते जसां प्रयोगे एकवसनान्तप्रयोग मृति विचारितम्। चलएव चाभ्युद्धिके पात्रह्याऽनीकार्यं-वाका एतत्तेऽनम् इति सर्वैः पद्यतिक्षद्भिक्षित्वतम् एवच्च पितृ-टत्तगन्धादीनां ब्राह्मणाय निवेदने शाट्यायनीक्ष निवेदनवास्ये ते इत्येक्तवेन निर्दिष्टम् एकब्राह्मणपचे ब्रह्मपुराणे व इति बद्धवचनेम निदिष्ट' तदनेकवाद्याणपचे एकस्मिनपि गुरुख-विवचया व द्रत्यविरोधः तत्र गन्धः। विष्णुः "चन्दनकुद्धम-कपूरागुक्पश्चकाष्टान्धनु लेपनार्थे"।

यथ पुष्पम्। ब्रह्मपुराणे। 'श्रुक्ताः समनसः येष्ठाः तथा पद्मोत्पन्तानि च। गत्थक्षपोपपन्नानि यानि चान्यानि क्षत्स्या." निषेधसाद "जवादिकुसमं भाण्डोक्विपका सकुरु- एटका। पुष्पाणि वर्जनीयानि यादकर्माणि नित्ययः"॥ जवादीत्यादि प्रव्हा देवं विधं रक्षक्रसमं कृषिका सकेषुष्यं कुरुएटकः पीता भिष्टी "उपगन्यान्यगन्धीनि चैत्यद्वची- द्वानि च। पुष्पाणि वर्जनीयानि रक्षवर्षानि यानि च॥

याचे जात्यः प्रयस्ताः स्युमे सिका कुन्दयूथिकाः"॥ दखादित्यु-पक्तस्याच । "केतकीं करवीरच वक्तनं चभ्यकं तथा। जातीदर्भनमात्रेण निरागाः पितरी गताः"॥ जातीति रक्तजातिविषयम्।

चय धूपा:। "ब्राह्मी चन्दनागुरुणी चीभे तथैवीगीर-पद्मकं तुरुष्कं गुगालुचैव घृताक्षं युगपइहित्"। उग्नीरं वीरणमूलं तुरुष्कं सिद्धकम्।

भय दोपाः। तत्र श्रहः। "ष्टतेन दोपो दातव्यस्तिसः तैसेन वा पुनः। धूपार्थं गुमाुनुं ददात ध्तयुक्तं सधुन सुतम्"।

प्रयाच्छादनम् । वागुपुराणे । "आच्छादनन्तु यो द्यादाहतं त्राडकमीणि। आगुः प्रकासमैखर्थं रूपश्च सभते ग्रमम्"॥ पाहतसत्रपारिभाषिकमेव "ईपहीतं नवं खेतं सद्यं यत्र धारितम्। पाहतं तहिजानीयात् सर्वेकमीसु पावनम्"॥ ब्रह्मपुराणम्। धनङ्गलग्नं यहस्तं विभवे तद् गुगं ग्रमम्! वस्ताभावे क्रिया नास्ति यद्मदानतपांसि छ॥ तस्ताहस्ताणि देयानि त्राडकाले विभेषतः"॥ भनो वस्त-दानस्यावस्त्रकावं तहिनाक्तियाभावस्तिः।

चय यद्योपवीतानि। वायुपराणे। "यद्योपवीतं यो द्यात् त्राहकाले तु धमंवित्। पावनं सर्वयिप्राणां ब्रह्मदानस्य तत्फलम्"॥ चतीऽस्य काम्यत्वं ब्रह्मपुराणे। "व्होतचन्दन-कपूरकुद्भानि श्रभानि च। विलेपनार्थं द्यानु यञ्चान्यत् पितृवत्तमम्"॥ रजतादिजीवतां वा यद्भिलपितमासीत् त्याह्मपितिषदं तद्देयमिति। यायुपराणं "लोके त्रेष्ठतमं मर्थमालनयापि यत् प्रियम्। सर्वं पितृणां दात्व्यं तदेवाच्य-मिष्टता"॥ गन्याद्यभावे प्रतिनिधिमाद्द पेटोनिसः। "काग्रह- स्ति विष्णं प्रतिनिधि मैनतिति काण्डं नालं प्ररोधीधर्वा तासे यवः प्रतिनिधि मैनतिति काण्डं नालं प्ररोधीध्रद्धरः सर्वालामे यव प्रति काल्यत्यः। ध्रवयव द्रति नारायणोपाध्यायाः। तथा च वस्त्युग्माभाने खण्डवस्तं देयमिति।
ध्रिय पात्रस्थानम्। ततो मण्डलं कात्वा तास्नादिपातं
पात्रयेत् तत्र स्गु. "मस्मना वारिणावापि कारये काल्डलं ततः"॥
मण्डलं चतुष्कोणम् चत्र देवे ऐश्रानी मारभ्य देवत्वात् दिन्तः
णावर्तेन प्रागयान्तरेखया वायवी मारभ्य देवत्वात् दिन्तः
वा मण्डलं कारयेत्। प्रागुद्दगये ति कात्यायनदर्भनात्
पित्रे तु नैक्ट तिमारभ्य पित्रत्वाद्यामावर्त्तेन दक्षिणायान्तदेखया मण्डलं विन्यस्य "पात्रे दिन्तिणाया" दति च कात्यायनस्त्रात् नव्यवर्द्दमानी ध्रियेवम्। मण्डलाकरणे दीपमाद्य
स्रातः। "स्रश्रद्ध मण्डले हीनं राच मैर्गु ज्यते बलात्"।

त्रश्च पाताणि। तत्र हारीतः। "काञ्चनेन तु पानेण राजती हुम्बरेण दा। इत्तमच्यतां याति खन्नेनाध्यक्तिन चण्या भी हुम्बरेण ताम्नेण। खन्नेन गण्डकियरोऽस्थिनिर्मातेन आर्थकतेन त्रैवर्णिकक्षतेन चन्यदिण पातमिमतः निर्मात काव्यत्यः। एवं कद्बीत्वगादीन्यणि ब्रह्मपुराणे "मीवर्णरीष्यताम्त्राश्म स्माटिक्य श्रहश्वत्यः। भिन्नान्यणि नियोच्यानि पात्राणि पिष्टकमीणिण॥ काव्यतरी। "राजतं दबताक्षं वा पितृणां पात्रमुच्यते। रजतस्य तथा दानं दर्भनं नाम शस्यतेण॥ देवे तु तिविधिदम्। "श्रवाद्यपिण्ड-भोन्येषु पितृणां राजतं मतम्। समङ्ख्यन् रजतं देवकार्थोषु वर्जयेत्ण॥ इति वायुपुराणात्। याञ्चवस्काः। "इत्योपं पद्यान्तु भोजनेषु समाचितः। यथा लामोपपदेषु रीयोषु च विश्वतः"॥ श्रातातपः। "पात्रे तु स्व्यन्ये यस्तु याद्वे च विश्वतः"॥ श्रातातपः। "पात्रे तु स्व्यन्ये यस्तु याद्वे

भोजयते पितृन्। तत्र दाता पुरोधायं भोता च नरकं व्रजित्" ॥ याडीयपानिषधे पैठोनिसः "सोसकायसपापाणपात्राणि होनपात्राणि भग्नपात्राणि चिति" न कार्यायोति शेपः श्रत पापाणस्य निधिद्वत्वात् ब्रह्मपुराणे विश्वितताच विहितनिषिद्वत्विभिति तत्रच पात्रान्तराभावे तपुणदेयतेति होनपात्रचचणमाह हारीतः "होनपात्रन्तु तत्गोत्रां न्यूनमहाङ्ग्वात्तु यत्"। तत्र प्रतिप्रसवमाह ब्रह्मपुराणम्।
"हप्यपानेण पाद्यादि तस्मात् सूद्धोण कार्यत्" तस्मात् श्रष्टाङ्गवात्।

अधारनीकरणम्। तत्र गोभिलः। "उद्दृतप्टताक्तमसं पृच्छति अग्नी करियामि कर्रावेत्यनुज्ञातः पिएडपित्यप्रवस्रु-वाचिति"॥ उड्वा याडस्योपकरणाद्यताक्रममम् उड्वा प्टतास्तिमित्यभिधानात् व्यञ्जनादिवर्जे प्रतीयते तथा च विष्णु-पुराणम्। "जुड्याद्यम्झनचारवर्जमसं ततीऽनले"। प्रत त्रानौ करियामीति निर्देशात् गोभिनग्रह्मे त्रानी करिया-मोत्यामन्त्रणं दीप्यतद्ति स्त्रे प्रामी करिष्यामीति श्रुते: प्रामी करियामि दति छन्दोगानां प्रश्नवाकां छोयतः एवनं करि-चतः पुरुषस्थान्येषान्तु तानग्नौ करिच इति "प्रणतः प्रार्थयेत् दिजान् कुरुषेति च तैरसो दिचणानिं समाद्वयेत्" इति कल्पतग्धतबद्धपुराणवचनात् चारनी करियो दति प्रश्न-वाकाम् यत कुरुषेति शुर्तर्वेदिकप्रशात्तरयोः प्रणवादित्वं प्रतीयते एवस सुन्यन्तरवाको प्रणवासकोऽपि प्रणवादिलं कत्पात पानी करिये इति मन्त्रेण पृच्छतीति कर्कभायकता-उस्य मन्द्रवाशिधानात् सुतरां तथा चतएव पिट्टद्यितादिः ष्यपि सर्वेत्र प्रणवादिलेनोसिनः। पिण्डपित्यभ्रयदिलाति-देगेन खाद्या सोमाय पिद्यमने खाद्या प्रम्तये कथावाद्यनाय

ष्ट्रश्रेत्"। नाभिसार्थानन्तरं जससार्थमाइ व्यासः। "ततः स्प्रयमाभिदेयं पुनरपश्च संस्प्रयोत्"। इन्द्रियसार्योनन्तर भविष्ये। "यद्रमाषुदक्षं वीर समुत्राजिति मानवः। वासुकि-प्रमुखान् नागान् तैन प्रौणाति मानवः"॥ पेठीनसिः। "स्पृष्टा घाणान् यथासंख्यं पादी प्रोध्य ततः ग्रसिः। सब्ये पाणी ततः श्रेषा प्रपो विनिमयेदिति"॥ घ्राषान् इन्द्रियाणीति रत्नाकरः शेषा भाषमनाषशिष्टाः इति सदंनपारिजातः। एतत् परमेव "अस्ततः प्रख्यस्प्रथ्य ग्रुचिः" इति गोभिसस्वम् । अस्यादि-स्पर्यसहित घाचमनं कला उदकं स्पृष्टा श्रुचिरिति सरलाः। यस्तत उपसर्धनात् पाणिना उदकसर्धं क्रया श्रिभंदतीति भद्दभाष्यम्। चतएवीपसार्यभभिषाय तती जलग्रेषं वाम-इस्ते त्यनेदिति पिष्टदियता। एतेन दिनातीनामपि दिरा-चमने चोष्ठजलसर्शमावं ग्रास्तार्थः "प्रत्युपस्प्रश्यान्ततः ग्राचि-भेवति" इति गोभिलग्रह्यादिति क्रन्दोगाङ्गिकं निरस्तम्। इद्यं स्पृशंस्वेवमेवाचामेत्। इति तदनन्तरस्रेण इदय-रपुग्जलनियमात्। "छच्छिष्टीऽवैधातीऽन्ययाभवत" इति स्वा-त्तरेण द्वहतत्वाभावे उच्छिष्टाभिधानात्। एतदनन्तरमेवाय प्रत्युपस्पर्यमित्यादिना हिराचमनादिविधानाश्व। वायुपुराणे। "निष्ठीवने तथाभ्यद्गे तथा पादावस्यने। उच्छिष्टस्य च संभापात् अग्रच्पहरास्य थ ॥ सन्देईषु च सर्वेषु गिखां सुज्ञा तरीय च। विना यद्वीपवीतेन नित्यमेयसुपस्प्रयीत्। उष्ट्रवायस-संस्पर्धे दर्शने चान्यवासिनाम्"॥ द्यागर्हे लत इति शेष:। मन्देरिपु चप्रायत्यस्येति । शिखां मुक्ता चनन्तरं यद्वा यज्ञी-पवैतिन विना स्थिता पुनः परिधाय चाचामेदित्यर्थः। हारीतः। न्स्तीशूद्रोक्षिष्टसभाषणे मुक्षपुरीपोक्षर्गदर्शने देवमभिगन्तु-काम पाचामेदिति"। देवसः। "उच्छिष्टं मानवं रपृष्टा

गोन्धं चापि तथाविधम्। तथैव इस्ती पादी च प्रचान्धानस्य गुहरति"॥ तयाविधमुच्छिष्टम्। याज्ञवल्काः। "स्राला पीला चुते सुरे मुक्का रथीपसर्पणे। श्रावान्तः पुनराचामत् वासोविषरिधाय च'॥ ब्रह्मपुराणं "हीमे भोजनकासी च सन्ययोद्धयोरिष । याचान्तः पुनराचामेत् यन्यत्रापि प्रकृत् सक्षत्। दिराचम्य ततः ग्रदः स्मृत्वा विन्तुं सनातनम् ॥ स्मृतिः। "खुते निष्ठीविते सुप्ते परिधानेऽश्रुपातने। कर्मस्य एपु नाचामेद्दिण यवण सुशेत्"॥ सांख्यायनः। "पादित्या वसवी-बद्रा वायुर्गिय धर्मराट्। विप्रसा दक्षिणे कर्णे निर्ह्ण तिष्ठित देवता."॥ अव हितुमाद पराग्ररः। "प्रभाषादीनि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्यया। विष्रस्य दिविषे कर्षे वसन्ति मनुर-ववीत्"॥ मार्केष्डेयपुराषम्। "कुर्धाद्यमनस्यशं गौपृष्ठस्यार्कः दर्शनम्। कुर्वीतालभनसापि दिनिणम्बयगस्य च॥ यथा विभ-वतो होतत् पूर्वाभावे ततः परम्। न पूर्वस्थिन् विद्यमानं उत्तर-प्राप्तिरिष्यति"॥ पुराणमास्वायुपुराणयोः। "यः कम्म कुरुति मोष्टादनाचम्येष नास्तिकः। भवन्ति विष्ट्या तस्य क्रियाः ,सर्वो न रागयः" ॥

पश्च दन्तभावनम्। हृद्दशतातपः। "सुद्धे पर्युपिते नित्यं भवत्वप्रयतो नरः। तसात् सर्यप्रयत्नेन भच्छोहन्तभा-वनम्"॥ गन्धानद्वारयम्त्राणि पुष्पमास्थानुस्तिपनम्। "उपवा-सेन दुष्पन्ति दन्तभावनमञ्जनम्। पादाभ्यद्वं शिरोऽभ्यद्वं तास्त्रमञ्चान्तिपनम्"॥ मर्वन्नतेषु वन्धानि पर्य्युपितसुखन्या-प्रयत्ते देसुगान्न प्रधिन्ने प्रति यञ्चवरानः। "मनुष्पः किस्ति-पोभद्रे क्षणपित्तममन्तितः। पृथभोणितसम्पूर्णो दुर्गन्धं सुखमस्य तत्"॥ तत्त्रय्युपितम्। दन्तभावनभित्यतेन शोधकस्य काष्टा-देदैन्तमावसन्त्रस्यात् भच्चयेदिति गौषप्रयोगः। पृथिपर-

द्विराचमनरूपभोजनधर्मप्रायर्थः। सत दन्तधावनस्य शोध-क्षत्यप्रतीतेः प्राधान्यम्। श्राप्य "ततः स्नानं प्रकुर्वति दन्त-धावनपूर्वेक्षम्" इति दचीक्षमानन्तर्यमात्रपरम् पारभणीया या द्रष्टेदग्रंपौणमासप्राक् कर्तव्यत्ववत् न खद्राद्रिभावार्थमिति हदगातातपस्य पूर्ववचन विधायकं परवचनस्य निर्वेधकम्। तया च। उपवासेन ऐतुनेति दानसागरप्रायसित्तविनेती। सपवासे चेति पाठे कासविवेवे चकारादनुक्तादिष्वपि व्याख्या-तम्। एतेन न दुखेतेति सैथिसोक्तं द्वेयम्। खक्षमाइ विषाः। "यादे जनादिने चैष विवाहे जीर्णसमावे। जते चैवोपवासे च वर्जयेद्<u>नत्रध</u>्वनम् ॥ इति। "दन्तभावनमद्यात् प्राञ्ज्य खदसुखो विति"। गीतमः। "दन्तस्रिष्टे दन्तवदन्यव जिल्लाभिमर्थणात् प्राक् चुतिरित्येकै"। चुतिरास्रावविद्यात् निगिरनेव तत् श्चिरिति जिह्नाभिमपणायोग्यं दन्तज्ञनम् श्रमीचजनकं न भवतीत्यर्थः। एतचानुपसम्यमानरसविषयम्। "ट्न्तवह्त्तसमेषु रमवर्जने" इति शङ्घवचनात्। जिश्वाभि-मर्पणेऽप्यमक्योहरणे न दोष:। "भोजने दललमे च निर्दे-त्याचमनचरित्। दन्तसम्मसंद्ययं सेप मन्येत दन्तवत्॥ न तव बहुमी यक्षं कुर्यादुहरणे पुनः॥ भवेदमीचमत्यन्तं ख्यविधात् व्रणे क्षते"॥ इति देवसयचनात्। ख्तेरित्यनु-पलभ्यमानरसविषयम्। त्रासाधी लाखा। तदस्त्रिगरत्त्र-त्यर्थः। अतएव शोणितं यया न भवति त्यणादिना दन्तसम्न-नि,सारणाचरणं छन्दीगपरिशिष्टम्। "नारदायुक्तवार्चेय-मष्टाङ्गसमाटितम्। सत्वच दन्तकाष्ठं स्यात्तदग्रेण प्रधा-वधेत्॥ उत्याय नेवे पचात्य ग्रचिभूत्वा समाहितः। परिजय तु मन्त्रेण भचयेद्दस्धावनम्॥ श्रायुर्वलं यश्रीवर्चः प्रजाः पगुवस्नि च। ब्रह्मप्रजाच मेधाच खनो धेहि वनस्पतेण॥

श्चिभूत्वा दिरायमनेनेति शेषः। नरसिष्ठपुराणम्। "दन्तः .काष्ट्य वस्यामि समासेन प्रयस्तताम्। सर्वे कण्टिकनः पुर्याः चीरिणय यशस्तिनः" ॥ पराष्ट्रं नारदस्यापि स्थीस-माद्विणुः। "कनिष्ठाग्रसमस्थीत्यं सक्चे दाद्याङ्गम्। प्रातमूला च यतवाक् भचयेद्रस्थायनम् । भचात्य भूला तक्काञ्चात् ग्रची देशे समाहितः"॥ सक्चे दलिताग्रम्। दादशाहु सन्तु अन्दोगेतरेपाम्। प्रातः प्रातःकासे भुक्ता भोजनपरकाले च भद्यवेदित्यर्थः मार्कग्रेयपुराणम्। "प्रचाल्य भघयेत् पूर्वे प्रचाल्येव तु तत् लाजेत्"। अन विदितकाष्टा-न्याह रुभिष्ठपुराणम्। "खदिरस कदम्बस करज्ञस तयः वर:। तित्तिही वेणुष्टष्ठ श्राम्त्रनिस्वी तथैव च॥ श्रपा-मार्गय विलाय अर्कयोडम्बरस्तया। एते प्रमुखाः कथिता दलधावनकमीसु"॥ महाभारते।, "तिलं कपायं कट्कं मुगिधक एक नित्रम्। चौरिणो सचगुरमाना अस्येहता-धाननम्। भच्चयेत् ग्रास्त्रदृष्टानि पर्वस्विष च वर्जयेत्"॥ पर्वाण्याच विषापुराचम्। '"चतुक्ष्यप्रमो चैव स्रमावास्याय पृणिमा। पर्वाखितानि राजेन्द्र रविषंक्रान्तिरेव च॥ स्ती-तैनमापसभीमी पर्वस्वेतेषु वै पुमान्। विरम् वभोजनं नाम प्रयाति नरकं स्टतः"॥ नरसिंहपुराणे "प्रतिपद्दर्भपष्टीषु नवस्पाञ्चेव सत्तमाः। दन्तानां काष्ठमंघीग।इहत्वासप्तमं कुलम्॥ यनामे दन्तकाष्ठानां प्रतिपिद्धदिने तथा। यपाः हादगगण्ड्रपेर्मुखग्रहिविधीयते"॥ गण्ड्रपम्य दन्तधावनतुला-लेऽपिन तत्र मन्त्रान्वयः द्रौहिकार्यकारिणि यवे द्रोहि सन्यम्येव इति प्रकृतावेव सुतत्वात् सन्विलङ्गविरोधासे ति नव्यवस्मानः। तस तह्रतकात्यायमस्विविशेधात्। ध्यं "गब्दे विप्रतिपत्तिरिति"। प्रतिनिधद्रक्षे शुत्रगब्दः

प्रयोज्यः। श्वतद्रव्या बुद्या प्रतिनिध्यपादानात्। प्रव्यान्तरः प्रयोगे द्रव्यान्तरबुहिप्रमङ्गात्। यतएव 'सोमप्रतिनिधिलेन पूर्तिकास रहीतास सीमं पिवते इति श्रविक्षत एव मन्त्रः पळाते। चतएव जलीऽप्यानोकरणहोमे अग्नोकरिये इति प्रयुज्यते। किन्तु यव प्रतिपदादी दन्तकाष्ठनिपेधस्तव प्रति-निध्यभावात्रात्वपाठः। एवच्च गौष्यायष्ट्रपयोगान्यन्त्र सिङ्ग-विरोधोऽपि नास्ति। शातातपः "प्रतिपद्दर्शपरोषु नवस्यां टन्तधावनम्। पत्रेरन्यत काष्ठेय जिल्लोक्षेषः सदैव हि"। क्रियाकीमुद्यां विश्वाष्ठः "गुवाकतास्त्रिक्तालाम्त्रथा ताडी च केतको। कर्त्रनारिकेली च सप्तेते लगराजकाः। लगराज-शिरापत्रैर्यः कुर्योद्दन्तधावनम्। तावद्ववति चण्डानी यावहरे नैव पश्चति"। पराश्वरभाष्ये हृद्याच्चवस्था। "द्रष्टका-नीष्ट्रपायाणेरितराङ्गानिभिस्तथा। त्यका भनाभिकाङ्ग्रहो वर्जयद्वसधावनम्"॥ अनामिकाद्गृष्ठो त्यक्षा इतराङ्ग्लिभि-रंस्तुधावनं वर्जयेदित्यर्थः। तेनामक्तौ पनामिकात्र्षाभ्यां दम्तान् घर्षयेत्। पाचारचन्द्रिकाधीवम्। पद्मपुराणे। "खणा-द्वार्कपानाञ्चवालुकायसचर्मभिः। दन्तधावनकत्ति भवन्ति पुरुवाधमा."। प्रचेता:। "मध्याक्रसानकारी चय: कुर्या-इलाधायनम्। निराशास्त्रस्य गच्छन्ति देवाः पिल्यगर्थैः सह"। साति:। "यमन्त जुमामाणच कुर्वन्तं दन्तधावनम्। प्रभ्यक्षः शिरसञ्चेत्र सान्तं नैयाभिवादयेत्"। "शरीत:। "ग्रुचि देवा हि रचन्ति वितरः ग्रचिमन्वयुः। ग्रचेविभ्यति रघांमि ते चान्ये दुष्टचारिण."। तथा "सानं दानं तपस्यागो मन्दर्शमी-विधिक्रियाः। सद्भाषारितयमाः ग्रीषश्रष्टव्य नियत्नाः"। दश्चः। "गोचन्दु दिविधं प्रोकं वाद्यगाभ्यन्तरं तया। सूच्च-साभ्यां यृतं वाद्यं भावगहिस्तयान्तरम्। यावग्रा, रावियामी-

उस्ति तावद्ययती नरः। तसायकेन तस्याज्यमादी यहिः
सभीपता"। इति शिष्टग्टहीतवचनात् राविवासस्याज्यम्।
क्रियःकीस्याम्। "जलीकागृद्पादच्च क्रिमगळुपदादिकम्।
कामाहस्तेन संस्थ्य नित्यकर्माणि संत्यजेत्"। कालिकापुराणे। "गुक्तमाचिष्य विप्रच प्रष्ट्रत्येव च पाणिना। न
कात्यानि न कर्माणि रेतः, पाते तथैव च॥ प्रश्रुपाते सस्त्यने
च रक्षमीणि मेथुने। धूमोद्वारे तथा वान्ते नित्यकर्माणि
संत्यजेत्॥ यतं पुष्पच ताब्व् न भेषच्योपकत्यितम्। कर्णादिपिषल्यन्तच पाल सुक्षाणि नाचरेत्॥ जलस्यापि नरश्रेष्ठ
भोजनाह्ये प्रचाहते। नित्यक्रिया निवर्त्तत काम्यनेमित्तिकैः
सच्च"॥

चय प्रात स्थानसञ्ज्ये। ब्रह्मपुराणे। "प्रातःस्रानं ततः कला सचेपेण ययोदितम्। सञ्याद्यापि तथा कुर्यादिति कात्यायनीऽत्रवीत् ॥ यथाइनि तथा प्रातिनेत्यं सायादना-तुरः। इन्तान् प्रचाख नदादो गेहे चेत्रदमन्त्रवत्"॥ दन्तान् प्रचाच्य प्रातरनातुरः सायादित्यर्थः। तत्वासमाद्र विष्णुः। "प्रात.सायौ प्ररूपिकरणप्रसां प्राचीमवलोका स्नायात्" इति ससुद्रकरभ्रतभारते। "सृत्तिकातिलकं कुर्यात् स्रात्वा दुत्वा च भसाना। दृष्टदौषविघातार्थं चाएडालादास्य द्रग्रेने । ब्रह्मपुराणे। "कर्मादी तिसकं कुर्यादूपं तहेणवं परम्। गोपदानं तवोद्योमः खाध्यायः वितृतर्पणम्। भस्रीभवति तसर्वे अर्हुपण्डं विना कतम्"॥ धमना। "मभावे तूदके-गापि पुण्डो दैवतमर्चयेत्"। ब्रह्माण्डे । "महुष्ठ: पुष्टिदः प्रीक्षी सध्यसायुष्वरी भवेत्। अनासिकायदा नित्यं मुलिदा ष परेगिनौ"॥ यासः। "लाइवीतीरसम्भूतां सदं सृद्धां विभक्तियः। विमर्त्ति रूपं सोऽर्कस्य तमोनाशाय केवनम् ॥

गोपीचन्द्रनफलमा इधातातपः। "गोमतीतीरसभूतां गोपीदेहसमुद्रवाम्। सदं मूर्ज्ञ वहेदास्तु सर्वपापैः प्रमुचते" ॥
बक्षपुराखे। "ऊर्द्वपुष्ट्रं सदा कुर्यात् विपुष्ट्रं मसाना सदा।
तिलकं वै दिजः कुर्यात् चन्दनेन यहच्छ्या॥ ऊर्द्वपुष्ट्रं
दिजः कुर्यात् चित्रयस्य विपुष्ट्रकम्। अदेचन्द्रन्तु वैश्वस्य वर्तुलं श्रूद्रजातिषु"॥ ततः सन्त्र्यां कुर्य्यात्। आतुराणान्तु
"प्रशिरस्त्रं भवेत् सानं सानाधक्षौ तु कर्मिणाम्। प्राष्ट्रंण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः"॥ इति जावानवचनाचिद्रशे विद्राय गात्रप्रचालनं तद्यक्तौ सर्वगावमार्जनम् धाद्रंण वाससा कुर्यात्। तदनन्तरं सन्त्र्यां कुर्यात्। एतत्परमेव "वातःसन्त्र्यां ततः कुर्यात् दन्त्रभावनपूर्वकम्" इति
याज्ञवल्कावचनम्।

भय प्रयमयामार्चक्षत्यम्। दचः। "सन्याकमीवमाने तु स्वयं दोमो विधीयते। देवकार्यं ततः कृत्वा गुरुमद्गल- बीचणम्। दिवसस्याद्यभागि तु सर्वमेतत् समाचरेत्"॥ होमस्तु सानः। विण्णुपराणम्। "प्राचान्तस्तु ततः कृत्यात् प्रमान् केप्रप्रसाधनम्। तया "याद्यां द्वानमाद्गस्यदृषीया- समानानि च। समानान हते पश्चेत् यदोच्छे चिल्लीवि ताम्"। पालान देहम्। माद्वलान्याह नारदः। "लोकेऽस्मिन् मद्वलान्यष्टी ब्राह्मणो गोहु तायनः। हिरस्य मर्परादित्य प्राणे राजा तथाष्टमः"॥ यमः। 'यतीना दर्यनद्वीव सर्यनं भाषणं तथा। कुर्वाणः पूयते नित्यं तसात् पर्यते नित्यम् ॥ वसः। कृत्वाप्तः प्रयते नित्यं तसात् पर्यते नित्यम् ॥ वसः। वस्तिनतेषु च। विःषठे- द्वीमनोयन्तु प्राद्मु त्वो वाष्यदद्भु सः। तस्य माभूत् मयं वोरं वेद्युतं योऽवसीदति"॥ कालिकापुराणम्। "यः प्रिवान्वित् स्वतं स्वतं योऽवसीदति"॥ कालिकापुराणम्। "यः प्रिवान्वित् स्वतं स्वतं स्वतं प्रमदित् प्रमप्ति माधको भूत्वा

तस्य कामाः करे स्थिताः"॥ प्रयोगसारे। "विभीतकाककारख्न सुष्ठीच्छायां न चाययेत्। स्तम्भदोपमनुष्याणामन्येषां
प्राणिना तया"॥ विष्णुपुराणम्। "विदिष्टपतितोक्मस बष्ठः
वैरातिकूटकेः। बन्धकीबन्धकीमर्गृ चुद्रकानृतकेः सष्ठ॥ तथाः
तिव्ययभीलेख परिवादरतेः भठैः। बुधी मैक्षीं न कुर्वित नैकं
पन्थानमात्रयेत्॥ नासवृतमुखी जृत्येत् षामकासी विवः
चिर्यत्। नोधिष्ठेत् प्रयव्यक्ष न सुद्धेत् पवनं बुधः॥ नासमः
च्यमभीलेस् सहासीत कदाचन। सहृत्तसिक्वणी हि चणार्थः
मणि भस्यते॥ नखान वाद्येत् किन्धात् न दृषं न महीं
निखेत्। न सम्युं भच्चयेत्रीष्टं न सुद्रीयात् विध्वत्याः"॥
एकपाणिना चन्धःसर्थे निष्यमाह हृष्यितः। "चन्दुःपरिः
हिताकाद्वी न स्प्रयेदेकपाणिना"।

चय हितीययासाईक्षत्यम्। दचः। "हितीये च तथा
भागे वेदाभ्यासी विधीयते। वेदाभ्यासी हि विद्राणां परमन्तम

एचते॥ ब्रह्मयन्नपरं न्नेयः पड्रम्नाइतस्यः। वेद्स्तीकरणं
पूर्वं विचारोऽभ्यसन जपः। तद्दाभद्वेव शिथोभ्यो वेदभ्यामी
हि पद्मथा"॥ पन्याभ्ययमम्प्याद्दतुः श्रद्वाजित्ये। "न वेद
भन्धीत्यान्यां विद्यामधीयौतान्यत्र वेदाष्ट्रसृतिभ्यः"। भन्नानि

च "शिषाकल्पीव्याकरणं क्रन्दोन्योतिपमेव च। निक्ताद्वेति

चाङ्मानि वेदानां गणितानि पद्॥ सृतिस्तु धर्मसहिता"

इत्यमरः। गावडे "धनप्रयोगे च तथा कार्यो विद्यागमेषु च।

पाद्मारे व्यवद्वारे च त्यन्नस्योगे च तथा कार्यो विद्यागमेषु च।

पाद्मारे व्यवद्वारे च त्यन्नस्यान्यः सदा भवेत्"॥ याद्मवल्काः

"वेदार्यानिधमच्छेन् गान्ताणि विविधानि चः"। तत्पन्नसाह

यमः। "दानेन तपमा यद्मौक्षप्रयामेद्रतेस्तथा। न तां गति
मवाप्नीति विद्यया यामवाप्रयात्"॥ कृष्मंपुराणम्। "स्वाध्या
यम्ब स्रयोगेद्वर्श्वाचिक्षोषांग्रसानसाः"। विद्यादानप्रकारमादः।

यम्ब स्रयोगेद्वर्श्वाचिक्षोषांग्रसानसाः"। विद्यादानप्रकारमादः।

गियधर्मे "संखतैः प्राक्षतेर्वाक्येयः यिक्यमतुक्यतः। देयभाव्याख्यायेष बोधयेत् स गुरुः सृतः" ॥ चाद्वि स्वकरवादिः।
गारुक्ते। "देदार्थं धर्ममास्ताचि यज्ञमास्ताचि चैव हि।
मूल्येन लेखियत्वा यो द्यादिति स वैदिकः॥ इतिष्ठासपुराचानि निखित्वा यः प्रयच्छति। ब्रह्मदानसमं पुष्यं
प्राप्नोति दिगुणीकतम्" ॥ तथाच व्रष्टस्पतिः। "पापनासिकेऽपि समये भान्तिः संवायते मृणाम्। धावाचराचि सृष्टानि
पत्नाक्दान्यतः पुरा ॥ उपदेष्टानुमन्ता च लोके तृष्यपत्नी
सृतौ। एकलव्येनानुपमदेष्टापि द्रोणाचार्य्यो गुरुः क्षतः"॥ चतो
प्रस्यकर्तुः सतरां गुरुत्वं यथा मणाभारतम्। "प्ररच्यमनुसंप्राप्य कत्वा द्रोणं महोमयम्। तिस्विवाचार्यवित्तिच्च परमामस्थितस्तदा। इष्यस्ते योगमातस्थे परं निषयमागतः" ॥

सिखनविधिमाह नन्दिपुराणम्। "श्रभे नचत्रदिवसे ग्रभे वापि दिनग्रहे। लेखयेत् पूज्य देवेशान् रद्रबद्धाननार्देनान् ॥ पूर्वदिग्वदनो भूत्वा लिपिन्नो लेखकीत्तमः। निरोधो हस्त-धान्नीय मसोपत्रविधारणे"॥ मस्यपुराणचा। "श्रोषीपतान् समम्पूर्णान् समन्त्रीणगतान् समान्। अचरान् लेखयेयस्तु लेखकः परमः सृतः"॥ अधीतस्थार्थभ्यो दानमावश्यकम्। यथा श्रतः। "श्रो वाधीस्य विद्याच न प्रयच्छेत् स कार्यदा भवेत् श्रेयसी हारमाहणुयादिति" नन्दिपुराणे। "प्रशस्ताव्द- संशोशे कुर्यादित विरामणं" विरामणं तिहनपाठसमाप्तिम्। "समाप्ते वाचकाभीष्टं कुर्यादेव विचचणः। स्थतं स्वतं भृदस्तु व्याख्यान्तु नित्यदा॥ स्वोकः प्रवर्त्ततां धर्मे राजा चास्तु 'सदा जयी। धर्मवान् धनसम्बद्धो गुरुवास्तु निरामयः॥ इति मोच यथायातं मन्तव्यय विमानितैः॥ विष्टेः परम्परं ग्राखं विक्तनीयं विचचणेः॥ कथा यस्तुप्रसङ्गेन नानस्वपुष्टाः

नभाषणै:। युक्तिभिय सारेद्याच्या चिक्रैशावि स्वयं क्रतै:। एव दिनै दिनै व्याख्यां मृणुयाचियती नरः" ॥ विष्णुपुराण "धुचैरध्यापिता ये चते पतिन्ति खभोजने। यो गुरुं पूजये-त्रित्यं तस्य विद्या प्रसीदति। तत्रमादेन यसाव् म प्राम्नोति सर्वसम्पद." । सञ्चाहारीतः "एकमप्यचरं यस्तु गुनः शिखे निवेदयेत्। प्रथिव्यां नाम्ति तद्द्रव्यं यद्द्वा सोऽनृणी भवेत्"॥ निस्पुराणम्। "यय मुलान्यतः प्राप्तं संस्कारं प्राप्त रै गुमम्। पन्यस्य जनरोत् की तिं गुरोः स ब्रह्मदा भवेत्॥ विकारेच तथा भीष्यात् योऽपि शास्त्रमनुत्तमम्। सयाति नरक घोरमचय भीमदर्भनम्॥ वद्या यस्वनन्त्रातमधीया-नादवाप्रयात्। स ब्रह्मस्तेयसयुक्तो नरकं प्रतिपदाते"॥ विष्णुः। "यस विद्या समासाद्य तया जीवेस तस्य परलीके फलप्रदा भवति यस विद्याम परेषा यशो इन्तीति"। देवनः। "इष्टं टत्तमधीत यत् विनय्यत्यनुकीर्त्तनात्। साघानुगीचनाभ्याञ्च भग्नतेजी विभिद्यते। तसादात्मक्षत पुर्ण हथा न परि-कीर्त्येत्"॥ पतुकीर्तन कथन साधा प्रशसा पनुष्रीचनं धनवारीन पद्यात्तापः । भगतिनः फलजनवाग्रातिहीनम् । द्वया रचा प्रयोजन विमा। वैषावास्ते भविष्यपुराणम्। "उपा-ध्यायस्य यो द्वित दस्वा ध्यापयति दिजान्। किम दत्तं भवेत्तेन धर्मकामार्थमिच्छता"। इसौतः। "समित्पुष्प-कुमादीनि ब्राह्मणः खयमाहरेत्"। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः"। शूद्रानौतिरिति विशेषनिधेधात् अन्ध-विष्यानयनमनिषिद्यम्। कये प्रतिप्रसूते ब्रह्मपुराण ' मुष्पष्पेश्व नैनेदाविशिक्रयक्रियाद्वते.' । वीश्क्रयः ख्याञ्चाः मून्येन क्रय:। ,

चय दतीयमामाईकत्यम्। "भृतीये च तथा भागे पोष्य-

र्वगार्थमाधनम्। माता पिता गुर्काव्यी प्रजा दीनाः समा-श्विताः। प्रभ्यागतोऽतिथियान्तिः पोधवर्गे छदाह्रतः। अर्थं पोध्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्। नरकं पौडने सास्य तमा-यम्नेन तान् भरेत्"॥ गार्ड। "स जीवित वरसेको बहुभि-यीपजीव्यते। जीवन्ती सृतकाद्यान्ये पुरुषाः खीदरकागः"॥ योपजीव्यत इत्यापः पुनः सन्धः। सनुब्धासष्टहस्रतयः। . ''व्रही च मातावितरी साध्वी भार्या सुतः ग्रिगः। पय-कार्यगतं कता भत्तेया मनुरव्योत्। चथापनद्यायनं यजनं याजनन्तथा। दानं प्रतिप्रहर्षेव षट्कर्माख्यप्रकानः। चसान्तु कर्मणां मध्ये बौणि कर्माणि जीविका। याजना-ध्यापने चैव विशुद्धाञ्च प्रतियष्टः"॥ गीतमः "क्रविगीरच-वाणिकोऽस्वयं कते कुपौदश्वेति" कुपौदस्य प्रयग्म इपं स्वयं कतस्याभ्यनुत्रानार्धं कुषीदं दृष्टिकर्म प्रदेशान्तर्धभिषानादिति कर्यतरः। हरस्यतिः। "कुपौदक्षिवाणिष्यं प्रकुर्वति।स्वयं क्षतम्। भापत्कासे खयं कुर्वन् मैनमा युष्यते हितः। सन्ध-सामः पितृन् देवान् बाह्मणांचैय भोनयेत्। ते यसाम्यस तं दीषं शमयन्ति न संगयः। विषक् कुपीदी द्यान् वकः गोकाखनादिकम्। क्रयोवसोऽत्रयानानि यानगयासनानि च। पर्यभ्यो विश्वकं दस्वापग्रस्यणंदिकं ग्रतम्। विविक् क्षपौद्यदोषः स्थात् अ। द्राषानाच पुजनात्। राग्ने दस्वातु यड्मागं देवतानाञ्च विंचकम्। विंगद्वागञ्च विद्याणां कविं स्ता न दोषभाक्। इशितः "पष्टागवं धर्मद्रनं पर्गवं लीवितायिनाम्। चतुर्गवं नृगंसामां दिगयं ब्रह्मधातिनाम्" इ सनुः। "प्रमौतिभागं स्टब्लीयात् सामादार्हिषकः मतात् । दिकं यसं वा यद्गीयात् सतां धर्ममनुष्यरन्। दिकं मत्य रक्षामी न भवत्वर्धावस्थि। यतकार्यापद्भौतिभागं

विगतिः पणाः। दिकं पुराणदयम्। एवंविधनियसमितिः
क्रास्य भनापित् ख्यमन्यद्वारा वा यः खाच्छन्द्विन व्यवधरित
तस्यैव प्रायिद्वतम्। भाषित् तु ख्यं करणे नियमातिक्रमे
च न दीव दित प्रायिद्वत्तिविक्षः। याज्ञवस्काः। "उपयाः
दीखरद्वेव योगचेभार्यसिद्वये। देखरमित्रययणुणयुक्तमन्यं
वा खोमन्तमकुित्रातम्"॥ भलव्यस्य प्रापणं योगः सव्यस्य
वचणं चेमः। "वयोबुद्वर्यवाक्षयश्यताभिजनकभेणाम्।
भाचरेत् सद्यों हित्तमितिद्वामशठान्तया"॥ वालः पाशक्रीडां युवा सग्गन्यादिसेवनं हृद्वो भर्मार्यसाधनं बुद्धिमान्
मौमांभादित्रवणम् भर्यवान् वस्त्वानं पामी दूत्यं स्वेद्यो
राजसिद्विधं श्वतेन व्याकरणादिना भर्यवेत्ता वेदार्थनिक्षणे
विग्रदक्तनजम्मवान् तथाविधकुलीदाहनम्। यागवान् पशदिसनम्। एवं वयामस्तीनासुचितानां चेद्यामचरेत्।
श्रीकद्वामकुिट्डाम् श्रगठां सिय्याविषयरदिताम्।

सगवन्नेतायां "सुक्तसङ्गीऽनहंवादी धृत्युक्ताइसमः
नितः। सिहासिहानिर्विकारः कर्त्ता सालिक उच्यते"।
स्कासङ्ख्यक्तफलाभिनिवेगः। श्रतएवोक्तम्। "सा कर्मफलहेतुर्भूमां ते सङ्गोन्वकर्मणि"। तेन बन्धहेतुफलं विना कर्मकर्त्तव्यमिति तात्पर्थ्यम्। धनहवादी गर्धरहितः निर्विकारी
हपविपादश्न्यः। "वास्तो कर्मफलप्रेष्मृ लुंखे। हिंसात्मकीऽश्रविः। हपैगोकान्तितः कर्त्ता राजसः परिकीत्तितः।
श्रयुक्तः प्राष्टतस्त्वः गठी नैक्तिकोऽलसः। विषादी दोर्धस्त्रो च कर्त्ता तामस उच्यते"॥ भगुक्तोऽनवहितः। प्राक्तते
विवेकश्रन्थः। श्रदः श्रक्तिगृहनकारी। नेक्ततिकः प्राप्तसानो। धलसः अनुद्यस्थीतः। विषादी भोक्योकः। यदइत्रा कार्यः तम्मासेनापि न सस्पादयति स दीर्धस्त्री। स्तर्भ

प्त लिङ्गपुरणं "खः कार्य्यमद्यकत्ते व्यं पूर्वाङ्के वाद्यशाह्मिकम्। मि दि प्रतौ सहे सत्यः स्वतमस्य न वा स्वतम्"॥ इति "लाभे म् प्रयोद्यस्तु न व्ययद्यमानतः। प्रसंसूदस्तु यो नित्यं स राज-षस्तिं त्रजेत्॥ पालानो बस्तवान् श्रूरम्हायेवानुगतः सदा। सत्यवादो सदुद्दीन्तः स राजवस्ति वसेत्"॥

नयसाप नरसिंहपुराणे "धनुक्षेनापि सुष्ट्रदा वक्तव्यं जान-ता हितम्। न्यायश्च प्राप्तकानञ्च पराभवमनिच्छता ॥ वक्तर्य . सर्वेषाः सद्भिराष्ट्रापि यश्वितम्। त्रानृख्यमेतत् स्नेष्टस्य सद्भिव कर्त पुरा॥ यत् स्थात्तापकरं पश्चादारमः कार्यभी-ष्ट्राम्। पारभेन्नैव तिह्दान् एप बुधिसतां नयः॥ कुमिन्ने सोद्धदं नास्ति कुभार्थायां कुतो रति:। कुतः पिण्डं कुपु-वेषु नास्ति सत्यं कुराजनि॥ कुसीष्ट्रदे न विश्वासः कुदेशी म प्रजीव्यते। जुराजनि भयं नित्यं कुपुत्रे सर्वदा भयम्॥ अपकारिणि वियमां यः करोति नराधमः। अनायो दुर्वली यदन चिरं स तु जीवति॥ न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नाति। विषयेत्। विषयस्ताद्वयसुत्यवं सूलान्यपि निक्षन्तति॥ राज-सेविषु विखासं गर्भसङ्गरितेषु च। यः करोति नरो सूटी न चिरं सतु जीवति ॥ शव्यीपं ऋणाच्छेषं श्रेषमग्नेय भूमिए । पुनर्वहीत समाय तसाच्छेप न ग्रेषयेत्॥ अद्रोधं समयं छत्वा मुनीनामयतो हरिः। अधान नमुचिं पश्चाद्यां फीनेन पार्थिय॥ कृत्वा सम्बन्धकञ्चापि विश्वभेक्छन्णा न हि। पुलीमानं सद्यानाजौ लामाता सन् प्रातक्रतुः॥ न चासमे निवस्तथां सवेरे वर्षित रिपी। पातयेत्तु स सूलं हि नदीतीर इव हुमम्"। गाइडे । "यो भुवाणि परिखन्य प्रभुवाणि व स्वते। भुवाणि तस्य नम्यन्ति मभुवं नष्टमेव च"॥ विष्यु-मुराणे "श्रस्पद्वानिस्तु पोट्या वैरिणार्यागमं त्यजित्। उपा-

यतः समारकाः सर्वे सिहान्युपक्रमाः॥ भीमान् श्रीमान् चमायुक्तः प्रास्तिको विमयान्वितः। विद्याभिजनहृष्टानां याति लोवागनुसमान् ॥

भागवते कि नि प्रति परीचितवाक्ये "त्वां वर्षमानं नर-देवदेहेष्वनुप्रष्टक्तोऽयमधर्मापुगः। सोभोऽनृतं घोर्यमनार्थ-मंद्रो जिष्ठा च माया कलहब टकाः"॥ चनार्या दीर्जन्यम् षंद्यः स्वधमीत्यागः। अष्ठाऽसस्मोः सस्मगाऽग्रजस्वात्। माया कपटः। "अभ्यर्थितस्तवा तसौ स्थानानि कसर्येऽदियत्। -ध्तं पानं स्तियः श्रूना यत्राधमीयतुर्विधः॥ पुनस्य याच-मानाय जातरूपमदात् प्रभुः। ततीऽनृतं सदं कामं राजा वैरश्व पश्चमम्। श्रधेतामि म सेवेत दुभूषु: पुरुष: क्राचित्"॥ त्रभार्थितस्त्रिक्रिक्होतेन कलिना स्थानसाभाय प्रार्थितः जात∽ रूपं खर्णम्। यधित यत इत्यर्थः तुभूषः कर्त्वं भवितुमिच्हः याञ्चवस्कारः "शूद्रम्य हिनग्रसूषा तया जीवन् विणिग् भवेत्। र्वालीवी विविधिकीवित् हिमातिहितमाचरन्"॥ वर्णम्भवे-दित्यनेन वैग्रव्हर्स्यभिषानास्। मिलौरिति क्रष्यादिनीवनी-पायैरिति बोध्यम्। हारौतः "बानानां दर्सनश्चेव वाहनश्च न शस्ति। पुस्तीपघातनं नैव बाहाना कार्येत्ततः। वृद्धं युग्येन युष्त्रीत जीर्णे व्याधितमेव च। न पण्ड वाइयेहा छ न गां भारेण पीडरीत्"॥ गां स्त्रीगयीमिति नव्यवर्षमानः। मार्के एडेयपुराणं "पादेन तस्य पाग्व्यं कुर्खात् मञ्चयमाता-वान्। अर्डन चात्रभरणं नित्यनैभित्तिकन्तथा॥ यादस्या-र्षार्डमर्यस्य सून्तभृतं विवर्षयेत्। एवमारभतः पुसञ्चार्यः साफल्य-मच्छिति"॥ येन यसार्थी भुज्यते तेन तस्य पारितोषिकं कमी कर्त्रव्यं 'तथाच युधिष्ठिरं प्रति भीषावाक्यम् "बर्थस्क प्रका दासी दामस्वर्धीन कस्यचित्। इति सत्यं महाराज्य

वहीऽसार्थेन कीरवै:"॥ मनुः। "यज्ञेनापीष श्रूदेण न भार्यो धनसञ्चयः। शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते"॥ स्मृति:। "विक्रीणन् मद्यमांसानि ह्यभचस्य च भचणम्। कुवन्नगस्यागमनं शूद्रः पतिति तत्चणात्॥ कपिलाध्वीरपानेन ब्राणणीगमनेन च। वेदाचरविचारेण शूट्र-याण्डासतां वजेत्"॥ श्रभयां गोमांसादि। श्रगया भगि-न्धादयः। इति साधवाचार्थः। कालिकापुराणं "विक्रयं-सवंवस्तूनां कुर्वन् शूद्रो न दोपभाक्। सधु चमा सुरां खार्चाः त्यक्षा मांसञ्च पञ्चमम्" ॥ मनुः "सद्यः पतित ली हेन लाचया सवर्णन च। त्राहेण शूद्रीभवति त्राह्मणः चौरविक्रयात्॥ यशको भेषजस्यार्थे यज्ञहेतोस्तयैव च । यदावायन्तु विक्रीया-स्तिला धान्येन तस्रमाः" ॥ मनुः "जीवितात्ययमापन्नी योऽन्न-मिस यतस्तत:। श्राकाशिमव पह्नेन न स पार्दन लिप्यते"॥ सत्राक्षाणः। नारदः "परेण निष्ठितं सञ्जा राजन्युपष्ठरे-निधिम्। राजगामौ निधि: सर्व: सर्वेषां ब्राह्मणादृते। ब्राह्मणे।ऽपि निधिं लब्धा चिप्तं राज्ञे निवेदयेत्। तेन दत्तन्तु भुञ्जोत स्तेन: स्याद्निवेदयन्"॥ नारद: "धनमूला: क्रियाः सर्वा यत्नस्तरयार्जने मतः। रचणं वर्दनं भोग द्रति तत्न विधिक्रमात्" ॥

चत्तापदि मनुः "ग्रहत्तिकपितः सीदन् इमं धर्मं समा-चरेत्। सर्वतः प्रतिग्रह्णीयात् ब्राह्मणस्वनय गतः॥ नाध्या-पनाद्याजनाद्या गर्हिताद्या प्रतिप्रदात्। दोयो भवति विप्राणां ज्वसनाम्बुसमाद्यते"॥ ज्वसनाम्बुसमाः प्रान्तिजलत्त्या द्रति सुद्धक्तम्हः। "प्रयक्तवंस्तु ग्रयूषां सूदः कर्त्तुं दिजसनाम्। पुत्रदारात्ययं प्राप्तो जीवेत् कार्ककर्मासः॥ यैः कर्मासः प्रचरितैः ग्रयूषको दिजातयः। तानि कार्ककर्माण

शिल्पानि विविधानि च ॥ विद्या शिल्पं सृति: सेवा गीरचं विपणि: सिषि:। धृतिर्भेचं सुषीद्च दम जीवनहेतवः"। विद्या गार्डादि:। शिखं चित्रादिसतिर्वतनं विपणिः विक्रयस्थानं तेन वाणिज्यं सच्चाति । धृतिः सन्तोषः तस्मिन् स्ति खस्पेनापि जीवनम्। "कुषीदं दृष्टिजीविका" रस्यमरः। ष्ट्रस्यति:। "बद्दवी वर्तनीपाया ऋषिभि: परिकीर्त्तिता:। सर्वेपामपि चैतेषां कुपौदमधिकं विदु:॥ श्रनाहध्या राज-मग्रैमूपिकाचौर्पप्रवै:। क्षपादिके भवैद्यानि: सा कुषौदे न विद्यते"॥ याज्ञवस्काः "वृद्घे वृद्धिस्रक्रवृद्धिः प्रतिमाचन्तु कारिका। इच्छाक्तता कामयिता कायिका कायकर्मणा"। ं छागसेय:। ''श्रकट: श्राकिनी गावी जाससपन्दनं वनम्। अनुपं पर्वती राजा दुर्भिचे नव वस्तय."॥ शकटो धान्धादि-वद्दनद्वारेणीपजीव्यः। "पत्रं पुष्पं फलं कन्द नात्तं संस्वेदजं तथा। भाकं पड्विधमुहिष्टं गुरु विद्यादाधीत्तरम्"॥ इति वैद्यक्तीत्रयाक्योगात् याकिनी ग्रह्मवाटिका याकादाहर्णन जालं मत्यादाहरणेन । यसन्दनं खयानादत्वागः ऋगादिः साभेन व्ययाधिक्यनिष्टत्याचरणं फलपुष्पाद्याहरणेत । अनपं वस्रदको देगः सस्णालमालकाद्याद्दरणेन। पर्वतो मेरिक-सृदाद्या हरणेन।

चय चतुर्ययामार्षकत्यम्। दत्तः। "चतुर्यं च तया भागे सानायं सदमार्हरत्। तिलपुष्पक्षयादोनि सानञ्चालिति ने जले"॥ सुर्यादिति ग्रेपः। तथाच "चस्रात्वा चाप्यद्वता च सुर्वेदस्या च यो नरः। देवादीनास्यो भृत्वा नर्वं प्रतिपदाते"॥ यथ सानं दत्तः "यसात्वा नाधरेत् कर्मं अप-धीमादि किश्वनः नागास्वेदममाकीर्यः ग्रयनादुत्वितः पुमान्॥ स्त्यत्वमितः नागास्वेदममाकीर्यः ग्रयनादुत्वितः पुमान्॥ स्त्यत्वमितः नागास्वेदममाकीर्यः ग्रयनादुत्वितः पुमान्॥

रावी मात:स्नानं विशोधनम् ॥ प्रात:स्नानं प्रशंमन्ति दृष्टादृष्ट-फलं डितत्। सर्वमईति पूताताः प्रातः सायौ जपादिकम्। पञ्चानाद्यदि वा मोद्वात् रावौ दुस्रितं क्षतम्। प्रातः स्नानेन तसर्वे मोधयन्ति दिजातयः"॥ दृष्टं मलावकषादि श्रदृष्टं प्रत्य-वायपरौहारादि। प्रातः सूर्योदयात् प्राक्कासः। "प्रातः-स्राध्यभणिकरणयस्तां प्राचीमवनोक्य स्राधात्" दति विप्णुत्ते:। प्रातःसाने मध्याक्ससानधमातिदेशमाच कात्यायनः। 'यया-इनि तथा प्रातनित्यं स्नायादनातुरः। दन्तान् प्रचात्य नदादौ गीही चैत्तदमन्ववत्"॥ यथा तथित कर्त्वयतया सा च "श्राचरेष्ट्रपमि स्नानं तर्पयेद्देव मासुषान्"। इति जावास्युक्ते:। वैदिके कमीणि वासहस्ते बहुतरकुशान् दिचिन पविव धारयेत्। तथा कन्दोगपरिशिष्टं 'क्रखाः प्रचरणीयाः खः कुपा दीर्घाय वर्षिप:। दर्भाः पविव्यक्तिस्युक्तमतःसन्धादि-कर्मस्। सव्यः सोपग्रहः कार्व्यो दिच्यः सपविव्रकः"॥ प्रचरणीयाः पावणपञ्चयज्ञादिकमानुष्ठानार्हाः । वर्हिषः यज्ञाद्यास्तरणार्थाः । 'यतस्तत्तत् कर्मासु कुगविशेषा एताः । चतः सन्धादिकामसु भवस्थाविश्येषशून्याः कुगाः पविद्यं स्रोप-ग्रहः बहुतरकुशयुक्तः सपविव्रको विशिष्टहिदलयुक्तः विग्रेपसाह स एय "अनन्तर्गर्भिणं सापं की ग्रं हिट्नमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पविवं यव कुवचित्"॥ अमन्तर्गर्भिणम् अन्तर्गर्भ-श्रान्यम्। तथाच श्रीनकः। "शनन्तस्तरणी यौत् कुशीः प्रादेशमिक्तो। भनखर्च्छदिनौसायौतौ पविवासिधायकौ॥ एतदभाषे कुम्पवचतुष्ट्यं वयं वा समुद्रकरध्नवचनात्। तदयया "चतुर्भिदंभेपवैय विभिद्योग्यामयापि वा। पविव्रे कारयेवित्यं प्रमस्तं सर्वकर्मसुं॥ विद्याकरवाजपेयिभृतं "पविचन्तु दिजः कुथ्यात् कुमपबद्दयेन वा। पत्रभयेष वा कार्यः

विवाहे यावायां संग्रामे देशविध्वे। नगरप्रामदाहे च संष्टिं सृष्टि न दूषति॥ भाषदापि च कष्टायां राभये पौडने सदा। मातापिवोग्रोशैव निदेश वर्तनात्तया"॥ सृष्टासृष्टीत्य-व्ययम्। क्रियाध्यतिष्ठारे तथिति न दृष्यतीत्यर्थः। गार्षेडे "मवतीयाभिषेकाडि पवित्रं विद्यां वधः। धर्मत्रवणविनायां विषो व्याममतः स्थितः"॥ तथाविधातुरं प्रति जावानः "पशिरक भवेत् सानं सानाशको तु कर्भिणाम्। पार्द्धेष वाससा वापि देशिकं मार्जनं सृतम्'॥ कमिणां "ग्रिरः स्रातम् कुर्वीत देवं पैवामयापि वा" इति मार्केण्डेयपुरा-गोत्तकर्मिकोर्ध्यां मार्जनिमद्ध प्रोव्हनं योगियाच्चक्काः "यसामर्थात्त्वरौरस्य कालगत्त्वादापेत्तया। मलसानादितः मप्त केचिदिच्छिति स्रयः॥ मान्वं भौमं तथानेयं वायव्यं टिखारीय च। वाक्यं मानमञ्जेष मार कानं प्रकी सितम् ॥ वाधी-रिष्ठेति वै मान्य स्टासमन् पार्थियम्। पाने यं असन्। स्रानं वायव्यं गीरणः ग्रांतम् ॥ यतु मात्यवर्धेण स्रानं तहिव्य-सुचाते। वाक्षावगाश्चाच सानसं विक्षाचित्रनम् ॥ समस्तं सानम्हिष्टं मस्त्रसानक्षमण तु। कामदोषादमामर्थात् मर्थे तस्य फर्न सातम् ॥ पापी डिहिति पापी डिहादि ऋक्षय-सव विविध्यतम्। एवच "कामदोषादमासर्थात् म शक्षीति यद्भमि। तदा जात्वा तु ऋषिभिमन्बेर्ट टन्तु मार्जनम् ॥ शब यापस्त द्वपदा यापो डिष्ठाघमप्यम्। णभयसुभिक्दं ह्मावै-मैसासानम्दाद्वतम्। ४ति योगियाचन्कीयं यन्त्रस्था-भान्तरं तत् प्राथान्यस्यापनाय चनएव विद्रद्धितायां म्रम्यातः पूर्वे तक्षिवितम् । भदासभासु गङ्गास्तिकातिम-कड़्य:। अग्रामा सम्हत्यस्थाना दति हन्द्रीगाक्रिक:। यव-गाह्य सन्तायक्रम्यायगादनसाव विविध्यसम् भतो सुख्या-

षगाष्ट्रनरूपसानानुकस्पलमध्क्षम्। कालदोषोऽतिहस्यादिः स्रशमयं ग्ररीरापाटवरेतुः ऋखत्वेत सम्पूर्णवाक्णस्नानिधि-कासायोग्यत्वं वेति। एतम्ब्रस्तं गेई चैत्रदमस्वददिति छन्दोगपरिशिष्टौयं प्रागुक्तम् चन्यया मूनभूतश्रुत्यसरकत्यना-पत्तेः सामर्थे तूष्ट्रतजसेनापि समन्त्रकस्रानमाइ पराग्ररमाथे व्यासः "गौतास्वपो निपेच्योग्णा मन्त्रसभावसंस्कृताः। गेर्हेऽपि श्रस्वते स्नानं तहीनमफलं स्नृतम्"॥ पद्मपुराणं "नैर्मात्यं भाव-ग्राहिश्व विना स्नान न जायते। तसामानीविश्वहार्ये स्नान-मादी विधीयते॥ अनुष्ठुतैष्डृतैवां जलैः स्नानं सदापरित्। तीर्थं प्रकल्पयेदिद्वान् सूलमन्त्रेण मन्त्रवित्॥ नमी नाराय-णायेति मूलमन्त उदाह्यतः। दर्भपाणिस्त विधिना पाचान्तः प्रयतः श्रचिः॥ चतुर्हस्तसमायुक्तं चतुरसं समन्ततः। प्रकल्पत्रावाद्दयेहङ्गां एभिर्मन्त्रेविषचणः ॥ विच्णोः पाद्मस्तासि वैषावी विषापूजिता। पाष्टिनस्वेनसस्तमादाजमामरणा-न्तिकात्॥ तिसः कोळोऽर्हकोटी च तीर्थानां वायुरव्रवीत्॥ दिवि भुव्यत्तरीचे च तानि ते सन्ति जाइवि!। नन्दिनी खेव तं नाम देवेषु निसनीति च॥ इन्दा पृथ्वी च सुभगा विखन काया भिवा भिता। विद्याधरी सुप्रसन्ना तथा सीकप्रसा-दिनी॥ समाच लाइवी चैव ग्रान्ता ग्रान्तिपदायनी। एतानि पुण्यनामानि सानकासि प्रकौर्तयेत्। भवेत् समि-हिता तव गड्डा 'विषयगामिनी। सप्तवाराभिजमेन करसंपु-टयोजितम्॥ सूर्षि द्वाकालं भूयस्यितः पश्चम वा। स्रानं कुर्योभ्रदा तहदामन्त्रा च विचचणः ॥ भागकान्ते रयक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे !। सृत्तिके इर मे पापं यन्यया दुष्कृतं शतम्॥ उद्गतासि वशहेष क्षणेन शतवादुना। भारद्वा सम गालापि सर्वे पापं प्रमीचय। नमस्ते सर्वभूतानां

नैकपत्रेण कुत्रचित्"॥ एतद्दर्शनात् दर्भाः पवित्रसित्यत्रैवमिष व्याख्येयम्। "मार्कण्डेयः सर्वकासं तिलेः स्नानं पुण्छं व्यासी-इत्रवीन्मृतिः। त्रीकामः सर्वदा स्नानं कुर्वातामलकेर्नरः। सप्तमीं नवमीश्वेव पर्वकालश्च वर्जयेत्"॥ विण्युभक्मीत्तरे। "त्वराक्षोधी तथा वर्ज्या देवकर्मणि पण्डितेः। स्त्रुरापः। पययेव ताम्बूलं फलगीषधम्। भच्चयित्वा तु कर्त्वव्याः स्नान-दानादिकाः क्रियाः"॥ भविष्योत्तरे "स्नातुस्तु वक्णस्तेजी लुद्धतीऽग्निः त्रियं दरेत्। सुन्द्वानस्य यमस्वायुक्तसाम्रव्या-हरेत् विष्ठ"॥ स्नातुः स्नानं कुर्वतः।

पगुचेरवगाइनानन्तरं सानमाप्त योगियाप्रवस्काः। "तूर्णोमेवावगाहित यदा स्यादश्चिन्रः। भाचस्य तृततः पदात् सानं विधिवदाचरेत्"॥ वामनपुराणम् "नाभिमाव-घसे गला कला केत्रान् हिथा हिन:। निरुध्य कणी नासाध विष्ठाची मध्यनं ततः"॥ तवैव वृष्टयाञ्चवस्काः। "स्रोतसां - संसुखी भञ्जेत् यवापः प्रवद्यक्ति वै। स्थावरेष् ग्रहे चैव स्थिममुख पाप्नवेत्"॥ सारौतः। "नात्रो न भुक्ता न जीर्णवासा न बहुवासा न नग्नी नात्रम् भावसक्धिको नाल-धृतो नाजसं नाजाते ससे नाकुसे नागुयो न प्रभूतजसे न नाभेरत्यजले न चलरे नोपदारे न सन्धायां न निशायां स्रायादिति"। चलरे काकादिवसिक्यसे इति श्रीदत्तः। **उपहारे द्वारममोपे। यवैकेन सुनिना नम्नवहुवासमो**र्निपेध-विधानात् साने दिवासस एवाधिकारः प्रतीयते। एक्षकस्त्र-साने दोपमाष्ट समुद्रकरप्टतभविषे गोतमः। "एकवस्तेष यत् सानं गूचा विक्रेन चैव हि। स्नातम्त न भवेत् श्रदः यिया च परिष्टीयते' ॥ भतएव "सानं तर्पणपर्यान्सं कुर्या-देकेन वाससा"। इति यदि समूलं तदा प्रेततर्पणपरमिति।

चत्रैकवस्त्रां ज्ञातय इत्यादिना एक अस्त्रस्वविधानात् एकेन एकजातीयेन इति वाचसतिमियः येन वाससा सानं छतं जनस्यस्य तेनैव तर्पणम् इति क्षत्यतस्याणवः। न च "सान-यावान्तु दातव्या स्टब्सिस्रो विश्वदये। जलमध्येत् यः किवित् दिनातिय्रोनदुर्वसः॥ निष्णोडयति तदस्तं सानं तस्य द्या भवेत्'॥ इति वशिष्ठवचने सानशाकाभिति तहस्त्रमिति एकवचननिर्देशेन च स्नानुऽप्येकवस्त्रत्वमिति वाच्यम्। प्रत्र विगुह्य इत्यभिधानेनाधोष्ट्रत्वस्त्रस्यैव सृत्रयेण प्रचालनं न तूसरीयस्य एतदर्धमेकवचनम् श्रतएव सृद्धयेगा-धरीयवस्तं प्रचात्व द्रत्याद्भिक्वितामणिः। विश्ववन्तेक-वाकातया "स्नाती नाष्ट्रानि निर्मृख्यात् सानग्राद्या न पाणिना'। इति विष्णुपुराणीयेमाधरीयवस्त्रेषेव गात्र-मार्जनं निषिध्यते। एतेन निष्पौद्य सानवस्त्रमिति कात्या-यनवचने एकालमविधितिमिति निरसाम्। प्रतएव सर्वेवैकाल निर्देश:। शिष्टानाम् ग्राचारोऽपि तया दति नानस्निमिति पुनःपुनः स्नाननिषेधः रागप्राप्तसानविषयो हरार्घकत्वात् । एवर्षेकस्मिन् दिने नागातौर्याद निमित्तपाप्तसानाहिति-भैवरोव वैधत्वात्। पवापि तन्वपमङ्गयोः सस्य महादेवेति।

चार सामप्रधानकालमा इदा: "चतुर्धे च तया मारी सामधे सुद्मा इरेत्। सिलपुष्पकु गादोनि साम द्वां वा द्वाः जले"। विद्या अप्यामार्थे कु गस्याने का गंदूर्वा वा द्वाः दिति विद्यावर हते "तर्जनी रूप्यमं युक्ता हे मयुक्ता त्वनाः मिका। सेव युक्ता तुर्भेष का यो। विषेष सर्वदा" मन्द्रिः सत्र्वः पक्ति "श्रस्ताः समूला दर्भाष गुच्छेन चाधिकं फलम्। स्वः सोषपदः कार्यो दिविषः मपविषकः" इति रोगिष्यापदाः सादिस्मोऽपि न दोषायेत्वाह रत्नाकरे हहस्यतिः "तीर्थं सादिस्मोऽपि न दोषायेत्वाह रत्नाकरे हहस्यतिः "तीर्थं

प्रभवारिणि सुवर्त ।"॥ नमी नारायणायेति अष्टाचरकपमूलः मन्त्रेण चतुरसं चतुष्कोणरूपं समन्ततः सर्वदिच् चतुर्हस्तं जल प्रतिदिश्च इस्तमावेण व्यविक्दिय तीर्थं प्रत्ययेत्। वितते नदादिजसै सानसानं परिच्छिन्दात्। तव विश्वी:पादिखादि-यानिप्रदाधिनीत्यन्तेन मन्त्रेष गङ्गासाध्ययेत्। सप्तवारा-भिजमेनेति समवाराभिनमेन नमी नारामणायिति मन्द्रेणाभिः मस्त्रेति शेष:। एकवचनितर्देशात् तस्य सुममस्त्रेतीस्या च पत्नापि विनियोगोऽवगम्यते ततस्य सप्तकारपठितनाराथण-मन्त्रेण जनमशिमन्त्रा करश्रीन विवासिक्षि विपेत्। तसयाखकान्त इति सन्त्राभ्या तष्टदिति सप्ताभ्याम् । ''मृत्तिकाः सप्त न याद्या वस्मीके मृधिकोत्कर। यम्सजले इसगानि च इचमूने सुरालये। परसानावशिष्ट च श्रेय: कामै: सदा नरे:"॥ इति दचपतिषिद्वेतरां मृद्यासन्दर तथा मृदा शिर:प्रभूत्वालभ्यानुष्ठतेशष्ट्रतेशं जलै: ग्रिर:प्रभूत्वप्रवालनमः वगाष्ट्रनक्षपधानं वादणसानं समायरेदिति पूर्विकेनाव्यः। सद्यष्टणमन्ते प्रभवारिणोति प्रभवमुत्पत्तिमसुं प्रापिशतुं ग्रीसम्याद्वस्थाधनसिदम्। अदगादनम् चन्नः कर्ण-नासिकामङ्गोभिराच्छादा कुर्यात्। "षङ्गोभिः पिधायैव त्रोवहङ्गासिकामुखम्। निमकोत प्रतिस्रोतस्त्रःपठेद्ध-मर्पणम्",॥ इति समुद्रकरधतात् । प्रवासद्रते वारवयः भेवावमाष्ट्रनं प्रागुष्ठवासनपुराणात्। एए विधिः पौराणिक-लात् सर्वग्राखिसाधारणः। येदमन्तरिक्तलाग् प्रमधीत वेदान नामवि मर्वधा पादरषीयः। मक्यपुराणम्। "सद्यां प्रत्येकग्रः सान भवेत्योदानम पानम्। गोपदानम् दश्रभिसामां भुष्यन्त सङ्ग्रमेण ॥ विशिष्ठः। "ग्रीरनेन विधिना स्राति यत तनाभासि हिनः। सतीर्यफसमाप्रीति तीर्यं त दिगुषं

प्तनम्"। अनेन तीर्थावाहनादिना। भती गङ्गायामप्यावा-इनं सुर्वन्ति शिष्टाः। स्रव च माघसप्तम्यादिनिमित्तकतोर्ध-विशेषनिमित्तकमन्त्रपाठस्तु सृदालक्षनानन्तरं कार्यः। त्रागन्तुकानासन्तेऽभिनिवेश इति न्यायात्। एवं गङ्गायां विशेषमन्त्रानत्तरमेव दशहरादिमन्त्राः पाठ्याः । तत्र गङ्गायां विशेषमन्त्री विद्याकरध्ती। "विषाुपाद्याध्यं सम्भते गद्गे विषयगासिन। धर्माद्वौतिविद्याते पापं मे हर जाङ्गवि। यद्या भक्तिमम्पने यौमातर्देवि जाइवि। अस्तेनास्वना रेवि भागौरिध पुनीहि माम्"। स्सतिः "फालाने श्रक्षपचस्य पुर्यसे दादशी यदि। गोविन्दहादशी नाम सहापातकनाशिनी"॥ यत गङ्गायां प्रद्रपुराणीयो सन्तः। "सञ्चापातकसंद्रानि यानि पापानि सन्तिमे। गोविन्दद्वादगीं प्राप्य तानिमे सर साझवि"। गङ्गासाग्रसङ्गी मन्तः "त्वं देव सरितां नाथ लंदिवि सरितांवरे। उभयोः सङ्गमे साला सुञ्चामि दुरितानि वै'॥ सीष्टिस स्नाने तु सन्तः। 'विद्यप्रव महा-भाग शान्तनी: कुलनन्दन। प्रमोघागर्भसम्भूत पापं लीपिय मे इर"॥ करतीयास्नानमन्तः। "करतीये सदा जीरे सरित्येष्ठे सुविश्वते। पीण्डान् भावयसे नित्यं पापं हर करो-द्भवे"॥ विष्णुः । "स्नातः भिरो नावधुनेत् नाङ्गेयस्तोयसुहरेत् । न तैसं वा संस्प्रीत् नामोचिनं पूर्वपृतं वासो विभयात् स्नात एव सीरणीयो धौते वाससी विभयात न स्नेच्छान्यजपतितै: सद्द संभाषणं क्षुर्थादिति" नाहुभ्यस्तीयमुद्ददिति स्नान-शाटोपाणिभ्या पूरणीयम्। "स्नाती नाज्ञानि निम्हेच्यात् म्नानगाट्यान पाणिना" इति विण्यवनात्। यव वामोऽ-न्तरधारणात् पाक्तततेलसार्शनिपेधः प्रतीयते। "शिरः स्नातस्त तैलेन नाष्ट्र विश्विद्यस्थित्"॥ इति मनुवधनमेतत्परम्। ततः पादाभ्यद्वाचरण सङ्ख्छते।

यदुक्तम् चायुर्वेदीये "चभ्यद्गमाचरेवित्यं स जरायमवा" तहा। भिरः अवणपादेषु तं विशेषेण शीलयेत्॥ वन्धीः भ्यङ्गः कपप्रस्तः क्षतसंग्रहा जीणिभिः। तिलतेलं हितं वाते शिरोऽभ्यङ्गावगाइने॥ वस्तिस्नेद्वानुपानेषु नासाकणोि चपूरणे। सापेपं कटुती च्यो प्यं कफ शुका निलाप इम्॥ सञ्जिपत्त यसत् कीष्ठ कुष्ठाश्च वणतीवनुत्। तेलं कुषुकानं चोषा लग्दीपकपः-पित्तनुत्॥ तैलमेरगडुलं रम्यं गुरूयामधुरं रसम्। सतीच्यां पिच्छिलं वल्यं रक्तेरण्डोद्भवं स्थाम्॥ क्षफपित्रानिलद्दरं रेचनं कटुरीपनम्। इद्वस्ति पार्श्वजानुर्गात्रकष्ष्ठास्थिश्लिनाम्। रितं वातामय खासप्रन्य व्रभ्रविकारिणाम्"॥ विष्णुपुराः णम् "चतुर्धभ्यष्टमी चैव त्वमावास्याय पूर्णिमा। पर्वास्थितानि राजेन्द्र ! रिवसकान्तिरेव च ॥ स्तौ तैसमांससभीगौ पर्वस्रेतेषु वै पुसान्। विरम् सभोजनं नाम प्रयाति नरकं सतः"॥ विष्णुधर्मातिर। ''भष्टमीख तया पष्ठीं अवसीख चतु-देगीम्। शिरोऽभ्यङ्गं न क्विति पर्वमन्दी तथेव चणा गार्ड। "सन्ताप: कीर्तिस्पायुर्धनं निधनमेव च। भारोग्य मवैकामाप्तिरभ्यक्ने भास्तरादिष्ठ ॥ उपोषितस्य व्रतिनः कत्त-केशस्य नापितै:। तावत् योस्तिष्ठति प्रीता यावनीलं न सस्योत्भा कल्पतरो "नाभ्यद्रमर्के न च भूमिपुते चौरख श्रक्षेत्रय क्षेत्रय मांसम्। बुधित्य योपित् परिवर्जनौया श्रेतेषु सर्वाणि सदैव कुर्याध्य चित्राग्रिहस्ताथवधेषु तेलं चीरं विशासप्रतिपस् वैर्ज्ञम्। मूले सघा साद्रपदासु सांसं योदि-नाघासिकसोत्तरास्"॥ मघासिकान्यां सरोत्तरासास् वतीयासमासः द्वान्दसः। ज्योतिषे। "सोनि कौर्त्तः प्रस-रितरां रोष्टिणेये हिरफ्यं देवाचार्यं रिवश्वतदिने वर्षते दोषंसायुः। तैन्त्रस्नानात्त्रत्यसर्षं दृश्यते सूर्यवारे भीते

सृत्युभविति नियतं भागवे वित्तनाथः॥ स्वी पुष्पं गुरी दूर्वा भूमि भूमिजवामरे। श्रेक्षे च गोमयं दद्यात्तीसदीपोपशास्त्रये"॥ दवा रीले एति प्रोष:। तैलपदं यौगिक मिति कलातरप्रभूरे तयः। विष्णुधर्मोत्तरे। "तेले जले तथा वक्कमादर्भे च सस्तान्विते। न पश्चेम तथा पश्चेदुपक्तां दिवाकरम्"॥ छप्णीयधारणं ग्रिरोजनापमयमाय। तेम तदन्तरं न धार्थम्। , तया महाभारतम् "श्राष्ट्रतः साधिवासेन जालेन च सुगरे' न्धिना । राष्ट्रमिनिभं प्राप्य उच्छीयं ग्रिधिलापितम्"॥ जल-चयनिमित्तं वै वेष्टयामास सूर्वनि। शिविनार्पितमगाट-वसम्। सत्यतपाः। "प्रागधसुद्गमं वा भीतं वस्तं प्रस्क रयेत्। परियमाप्रं दक्षिणाप्रं पुनः प्रचालनात् ग्रुचिः । थवायं दया वस्वत्। प्रचेताः "स्वयं धौतेन कर्त्रव्या क्रिया धर्म्या विपिथिता। म च राजकधीतेन नाधीतेन भवित् क्वित्या पुर्वमिवकलनेण खन्नातिवान्धवेन च। दासवर्गेण यद्वीतं तत्पविव्यमिति स्थितिः"॥ सगुः विकचीऽनुत्तरीयस नग्नसाथस्य एव च। यौतं स्थातं तथा कर्म न नग्नसिना-चेद्रपि"॥ विकच्च: परिधानासंष्ट्रतकच्छ:। तथाच योगि-याज्ञवस्कात्रः "परिधानाद्यद्विः कचानिवदा ह्यासरी भवेत्"। साति: "वामे पृष्ठे तथा नाभी कचत्रयमुदाष्ट्रतम्। एभिः कहीः परीधत्ते यो विषः स ग्रविः सातः ॥ वोधायनः "नाभी धृतश्च यदस्तमा च्छादयति जानुनी। चन्तरीयं मगसां तद-शिक्षमुभयोस्तयोः" ॥ प्रचेताः "द्यानाभौ प्रयोजयेत्"। साति: "न स्यात् कर्माच कञ्चकीति" उत्तरीयधारणं चीप-बीतवत्। "यया यद्यीपवीतश्च धार्यते च दिनीत्तमेः। तथा सन्धार्थिते यत्नादुत्तराच्छादनं ग्रभस्" रति खृते:। यत्र हिसो-स्तर्येया सञ्चापसम्बदादिना उपवीतं धार्यते यया उत्तरा-

च्छादनमपि दिखीत्तमेरिति प्रदर्शकमात्रं प्रागुक्तभगुवचनेन सर्वेषां दिवस्तता प्रतीयते। भारते 'न स्यतेन न दम्धेन पारकोण विशेषत:। मूपिकोत्कोणेनीर्णन कर्म कुर्यादिच-घणः"॥ नारसिंहे "न रक्तमुख्वनं वासो न नीसञ्च प्रशस्यते। मलाक्षच द्याहीनं वर्जयेदम्बरं ब्धः"॥ उल्बनम् उलाट-रक्तविशेषम्। अचाररत्ने उशना "दशाहीनेन वस्तेण कुर्यात् कर्माण्यभावतः"। विषाधमितिर "वस्त नान्यभृतं धार्यः न रतां मलिनं तथा। जीर्षं वापदशञ्चेव खेत धार्यं प्रयत्नतः॥ उपानइं नान्यधृतं ब्रह्मसूबद्ध् धारयेत्। न जीर्णमलवद्यासीः भूवेच विभवे सति"। योगियाचवस्काः। "स्यावेवं वाससी भौते यक्तिने परिधाय च। प्रचाल्योक् सुद्दिस इस्ती प्रचा-लयेत्रतः॥ अभावे धीतवस्ताणां श्रीणचीमाविकानि च। कुतपो योगपष्टं वा दिवसा येन वा भवित्॥ अधीतेन च . वस्त्रेण नित्यनैमित्तिकीं क्रियाम्। सुर्वन् फलं न चाम्रोति दत्तं भवति निष्फलम्"॥ येन विति उपवीतेन तत् प्रति-निधिभूतेन कुमरच्च।दिनावा। तथाच स्मृतिः। "यत्रोप-वीते हे धार्यं यौतसार्तेषु कमंसु। त्रतीयं चौत्तरीयार्धं यस्ताचाभे तु दिश्यते"॥ कुतपी नेपासकस्वनः। "निष्पीड-यति यः पूर्वे स्नानवस्त्रन्तु तर्पणात्। निराधास्तस्य गस्छन्ति देवाः पित्रगणैः सड"॥ परागरभायो जावासिः। "स्नानं कलाद्रवासास्त विषम् वं कुन्ते यदि। प्राणायामत्रयं कला पुन: स्मानेन गुइति"॥ जावानि:। "नार्द्रमेकञ्च वस्तं परि-ेदधात् कयस्न"। सारीतः। "पार्दस्य सप्तवातास्त्रमपि गुइमिति"। मदनपरिलाते पारम्कर:। "एकखेदामी मदित तस्य उत्तरार्देन प्रकादयतीति"। यात्रयस्काः। "यद्य-चविधानेव सन्यवत् स्नानमिखते। तृष्णीमेव हि सूद्ध

सनमस्कारकं मतम्॥ चगस्यागमनात् स्त्रेयात् पाविश्यस् 🖊 प्रतियद्वात्। रद्वस्याचरितात् पापात् मुचते स्नानमाचरन्॥ प्रकर्तमसमर्थयेत् जुद्दोति यकति क्रियाः। स्नानध्यानजपै-द्निरातानं शोधयेद् व्धः"॥ तूण्यीसमन्त्रकं सनभस्कारकम्। तूणोभित्यनेन वेदमन्ववर्षं शूद्रस्य इति सृतिवाक्येकवाक्यतया शूद्रध वेदमन्त्रमाविष्यिष इति वाचस्यतिमियाः छन्दोगा-क्लिकोऽप्येवम्। वस्तुतस्तु सनमस्कारकमित्यनेन स्नानस्यैव नमस्कारवस्तं प्रतीयते। न त्वनुपस्थिततीर्थनमस्कारवस्त्रम्। तूर्णोमेवेत्येवकारेण पौराणिकादेरपि निपेधः। एवश्व "भार्या-रति: ग्रिचिभृत्यभत्ती त्यादक्षियापर:। नमस्कारेण मन्वेष पश्चयद्भाव सापग्रेत्" ॥ द्ति ग्राम्मवल्काविशेषोपदिष्टनसम्का-रेतरत शूद्रस्य पौराणिकमन्त्रपाठः प्रतीयते। अगस्येत्यादिना पापच्यः प्रतीयते। ब्रह्मपुराणम्। "नद्यां प्रत्येक्यः स्नामे भवेत् गोदानजं फलम्। गोप्रदानैय दयभिस्तासां पुर्यन्तु सङ्गमे"॥ देवल:। "न नदीषु नदीं ब्रूयात् पर्वतेषु च पर्व-तम्। नान्यत् प्रशंसेत्तवस्यस्तीर्येष्वायतनेषु च"॥ नदीं न नदीलेन ब्र्यात् किन्तु गङ्गादिविश्रिपनामलेन ब्र्यात्। तीर्यादी स्थिता तीर्थान्तर न प्रशंसेत। विष्णुधर्मोत्तरे "पका-रणं नदीपारं बाहुभ्यां न तरेलया। न प्रशंसेयदीतीये नदी-सन्यां कथञ्चन॥ न गिरी पर्वतं रास न राग्नः पुरती नृपम्। श्वासत्तर्या वितृत् देवान् नदोपारन्तु न यजित्"। सनः "न स्नाममाचरेद भुक्षा नात्रो न मद्यानिधा। न घासोभिः सद्दाज्ञसं नाविद्याते जलागये । न स्नानमाचरेक्को ति रागप्राप्तरनामनिषेधः निलम्याप्राप्तत्वात् मैमिनिकनिषेधवक्त-सम्बद्धात् "नैमित्तिकानि काम्यानि निपतन्ति यद्यायद्या। तया तथैव कार्याणि न कासम् विधीयवे ॥ इति दक्षीकः।

पातुर: स्नामसम्बद्धकरीगवान्। धतएव विषाधर्मात्तरं "तीपै-चितव्यी व्याधिः स्थात् रिपुरस्पोऽपि भागवः महानिया तु विज्ञेया मध्यमं प्रदद्यम्। तथ्यां स्नानं न कर्त्तव्यं कास्यनेमि-तिकाष्ट्रते<sup>ष्ट</sup>। इति देवलवचनात् । प्रत्न न वामोभिः मर्रेत्यनेत बहुयासी निषेधात् स्माने द्वियामस्यं प्रतीयते। अञ्चा प्रनः युनः। तेन वार्ष्यादिमंक्रात्र्यादिनिमित्तभेटप्राप्तमेकदा नाना-रनानं निविध्यते। किन्तु तन्तेण प्रमञ्जन चैकं स्नानम्। तथा च निगमः "नायर्शयेत् पुनः कर्मा तर्पणादिकमन्बद्दम्। काम्यनैमित्तिके डित्वा एकं छोक्षच वामरे ॥ विद्यवहिवसे मासे पद्यतीर्थी विधानतः। स्नात्वा सद्भपंगं कृष्ण हद्दा भद्राञ्च भी दिजा:। नर: समस्यद्वानां फलं प्राप्नीति दुर्नभम्" इति ब्रह्मपुराणीत सार्कण्डेयक्रदे प्रदास्त्रभरीवरे समुद्रक्षपादितीय-भेदादी तन्त्रप्रमह्योरभावात् पुनः पुनरेकदिनेऽपि नाना-स्मानसिति "थापोद्या चाष्टर्मं भागसुद्याद् यत्र सुत्वचित्। तिष्योर्यसे प्रययुग्ने या मसदाक्रिकमाचरेत्"। प्रविज्ञाते सुगमतया निन्दितकर्तृतया च। बौधायनः "स्रवन्तीव्दनि-रुषास वयोषणा दिकातयः। मातहस्याय कुर्वीरन् देवदिः पिष्टतर्पणम् । निरुष्टामु न कुर्वोरसंधभाक् सेतुक्षद्भवेत्। तसात् परकतान् सेतृन् कूषांय परिवर्जयेत्॥ उद्दृत्य वा नीन् पिण्डान् कुर्धादापत्स् नी सदा। निस्हासु च सृत-पिण्डान् कूपात्त वीन् घटांस्तया"॥ निरुष्ठासु सेतुभिनिष्ठ-प्रवाहास्। यव परक्षतान् इत्यनेन उत्सष्टकूपाईरिप त्रधात्वास्त्रवापि घटपिण्डोहारः । अतएव मनुनापि निपान-कर्षित्यभिद्धितम्। नतु निपानसामिनः द्ति। यथा "परकीयनिपानेषु स्नायासैव कदाचन । निपानकर्तुः स्नात्वा निपातं जलाधारमात्रं तथा च

याञ्चवक्ताः "पञ्च पिएडाननुद्धान स्नायात् परवारिणि" योगियाद्ववस्त्राः। "अनुदृत्य तु यः स्नायात् परकौय जनाः-शये। द्वया तस्य भवेत् स्नानं कर्तः पापेन निष्यते॥ स्नानं दानं तपी ध्यानं पिह्रदेवार्चनं तथा। पावनानि सनुष्याणां दुष्कुतस्येष्ट कमीणः"॥ ग्रहः"नृषां पापक्षतां तीर्थे भवेत्पापस्य मंचयः। ययोक्तफलदं तीर्थं भवेत् श्रहासनां नृणाम्"॥ क्रन्दोगपरित्रिष्ट' "यब्बह्यं त्राषणादिसर्वा नद्यो रजस्त्र ।। तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जीयता समुद्रगाः"॥ नदीलचणं तबैव "धनुः सप्तसार्वाष्ट्री च गतिर्यासां न विद्यते। न ता नदीयष्ट्वहा गर्नास्ताः परिकीर्त्तिताः ॥ उपाकर्माण चीसर्गे प्रेतरनाने तथैव च। चन्द्रसूर्यग्रहे चैव रजो दोपो न विदाते"॥ यव्योगामः "यव्यामासाः स्वमेकः संवसरः" इति शतपश्चतः। चत्र तासु स्नानमायस्य निषेधात् प्रागपि रजस्रसा इति इतुषस्रिगदात् स्नानानईत्वमेव विवक्तितं न त्वाचमनाद्यनई-तापि। सम्प्रदायोऽप्येवभिति रत्नाकरः मलिख्यतस्वे विष्टतः हितुविद्यारस्थापि एपोऽर्थः स्फुट इति। अत्र विश्रेषी सदन-'पारिजाते निगमः "न दुधेनीरवासिनाम्" इति तवैव व्याझ-पादः। "श्रभावे कूषवापीनामन्धेनापि समुद्धते। रजी दुष्टेऽपि पयसि ग्रामभोगी न दुष्यति"॥ अन्येन कुमादिना चतएव क्न्दोगपरिभिष्टे तास्त्रित निर्देगः।

धनुः यरिमाणच इस्तचतृष्टयं तथां च विण्डधमीतिरे "द्वादमाङ्गृलिकः मद्भुसद्वयच्च मयः स्टतः। तचतुष्कं धनुः म्रोतं क्रोमो धनुः सहस्निकः"॥ मयोहस्तः उपाकमोत्सर्गः कर्माणी वैदिककर्त्वये क्रन्दोगपारिभिष्टोत्ते। "श्रन्त्वरिपि कर्ते कृपे सेती वाम्यादिके तथा। तस्र स्नात्वा च पीत्वा च प्रायः विषे समाचरित्"॥ तथा "प्रभृते विद्यमाने तु उदके सुम-

मोहर। नाल्पोदके दिजः स्नायामदी होत्सन्य क्राविमेण । दति बहुभिष्टं तम्। ब्रह्मपुराणे "निस्यं नैभित्तिकं कास्यं विविधं स्नानिमायते। तर्पणन्तु भवेतस्य पद्गवेन व्यवस्थि तम्"॥ नित्यसहरइ: क्रियमाणं "यघाइनि तथा प्रातनित्यं रनायादमातुरः" इति छन्दोगपरिशिष्टोन्नं प्रातमध्याष्ट्रसम्बन्धि नैमित्तिकं स्थियहणादावावध्यकं कार्यं न तु चार्डालादि-स्पर्शनिसित्तकम्। "सस्य कसीय्यपातस्य मैथनं छर्नं तथा। चसुग्र स्पर्णनं सत्वा सामाद्वाद्यां जलियाः"॥ इति नहा-पुराणे तर्पणिनिपेधात् काम्यं खर्गादिफलकं तीर्घादिस्नान तर्पणस्याङ्गत्वात् येन कस्पेन स्नानं तर्पणं तेन कस्पेन । किन्तु "यसासातं स्वयाखायां परोक्तमियोधि स। विदक्षिस्तद-नुष्ठेयमस्मिद्दोव।दिवाधीवत्"॥ छन्दोगपरिश्रिष्टोता चकारे-णाकाञ्चतमविरोधिपरीक्षमधिकमपि बोध्यम् एवश्व यद्यपि स्नानाङ्गं तपेण तत्प्रयोगान्तर्भवितु सर्हति तथापि तस्य मध्यानुष्ठानमच्चे मस्योत्तरत्वं वाचनिकं चन्द्रसूर्यग्रहादी च सुस्यानुष्ठानाभावात् स्नानप्रयोगान्तर्गतमेव। प्रातःस्नान-स्यापि यथाइनौत्यनेनाहः स्मानधम्मातिदेशात् तदङ्गतर्पण-- सापि सन्योत्तरता किञ्च ग्रहमेधीय प्रयोगमध्ये प्रशिनहोत्र-काल भागते तत्पदार्धक्रमानुरोधेन यथाऽगिनहीवानुष्ठानं तया स्नानानन्तरं सन्याकाले धागते तपंषमक्रत्वेव सन्या-नुष्ठानं युक्तमिति विद्याकारः एवच स्नानाङ्गतर्पणादेव पञ्च-यज्ञालगंतलेन प्रधानतपेषस्यापि प्रसङ्गात् सिडि: तदाइ मनुः "यदेव तर्पयत्यद्भिः पितृन् साला दिनोत्तमः। तेनैव सबैमाप्नोति पित्रयन्निक्या फलम्"॥ यत्र तु शेगादिना स्रानं न सतं तवापि गावमार्जनादिना भौचमुत्पादा पितः यक्षिषये तर्पयेत्। तदाइ गातातपः "तर्पणन्तु ग्रचिः

कुर्यात् प्रत्यहं स्नातको हिजः। देवेभ्यय ऋपिभ्यय पिष्ट-भ्यय यथाक्रमम् ॥ अनाहः पदं नियामामित्यादिना प्रागु-क्षकारायम्। चतएव मनुना स्नाता द्यविशेषादुकम्। तस्मादस्योद्यतर्पणाद्पि चित्रयञ्चतर्पणसिन्धः। महाभाः । रतेऽप्युक्तम् "सुखीषितास्तां रजनीं प्रातः सर्वं कताङ्किकाः। विविश्वस्तां सभां दिव्यां किइरेर्पशोभितांम्"॥ इति अवाप्र-त्याख्यैयकमी।नुरोधेन प्रधानकालादन्यत्नापि कालान्तरे कमानुष्ठानमिति। प्रधानतर्पणस्य स्नानाष्ट्रतर्पणप्रक्षतिक-त्वात् सन्धानुष्ठानान्तरत्वं यथा ज्योतिष्टोमस्य इष्ट्रात्तरका-लल विक्वतिसोमेऽप्यतिदेशात् प्राप्तमिति। एवम् ''श्रनग्नि-राचरेत् क्षत्यं मध्याद्भात् प्राग्विमेषत."। इति वशिष्ठवच-नात् सद्दाभारतवचनाच प्रातरपि सध्याञ्चकर्मानुष्ठानम् एवं "दिवोदितानि नर्माणि स्वनासेनास्तानि चेत्। गर्वयाः प्रथमे यामे तानि कुर्यादतन्द्रितः"॥ इति नारदीयात् पर-कालेऽपि कर्त्तव्यम्। एवं सानाष्ट्रिष्डोद्वाराद्यि तर्पणाङ्ग-विण्डोद्वारसिद्धिः प्रसङ्गात्। यत तुस्नानं विना वाष्यादी तर्पण क्रियते तचैव तनापि पिखीहारः। तथा च गह लि-खिती। "वापि क्पतडागोदपानेषु सप्तपञ्च बीन्। विष्डानु इत्य देवाम् पितृ य तर्पयेत् ॥ इदपानपद वापी-कूपतडारीतरख्यज्ञसाधारपरं तयमाणन्तु सलाभयोत्सर्गतस्वे-उनुसस्यम्। "पुष्ये वा जमानचत्रे व्यतीपाते च वैष्टती। धमावास्यां नदौरनानं दहलाजसदुष्कतम्"॥ अमावास्याम् धमावासीयव्दस्य रूपम्। स्कन्दपुराणं 'नदी तडागसभातं वापौक्षकदोद्भवम्। गङ्गोदकं भवेत् सर्वं ग्रह्वे नैव समुष्ठ,तम्"॥ एतद्दर्भनात् ग्रह्याभिषेवां करोति । अस्प्रय स्पर्शनादौ तज्जालं स्माति। वराइपुराण "दिचिणावर्तमञ्जेच पात्रेऽप्योडस्वरे

"मच्छित्रपद्मपत्रेण सर्वरह्मीदकेन च। स्रोतमा वै नरः स्नात्वा सर्वपापै: प्रमुं खते । विशुधमेतिर। "तथा दव्मेरि दक्षस्नानं सर्वपापप्रणाग्रनम्। गीमुवेण च यत् रनानं सर्वाच विनिमुद्नम्॥ सया मुष्पोदकानामं अवेदारोग्यकारकम्। केवलेकी तिले: स्नानमयवा गौरसपंपै: ॥ स्नानं मियज्ञणा मोक्षं तया सीभाग्यवर्द्धनम्। प्रायुष्यश्च यशस्य धर्म्यं मेधावि-वर्षेनम्। स्नानं पविद्यमाष्ट्रस्यं तथा काञ्चनवारिणा"। शहः "स्नातस्य विज्ञतोयेन तथाच परवारिणा। कायश्विः विजान नीयात्न तुस्मानफलं लभेत्"॥ स्नानफलं वैधम् श्रायुरं वेदीयन्तु भवत्येष । "उणाम्बनाधःकायस्य परिपेको जलाः यहः। तिनेव चोत्तमाङ्गस्य बलनुत् कियचच्छोः"॥ इति यमः। "नित्यं नैमिशिकश्चेव क्रियाष्ट्रमसकर्पणम्। तीर्घाभावे च कर्त्तथमुण्योदकपरोदकः ॥ विष्युपुराणं "स्नानाद्रां धरणी- त श्चेव दूरतः परिवर्णयेत्"। विशाधमीत्तरे। "चएडालेः पतिते। र्म्स च्हर्भाषण वाष्युद्वया। न कार्यं कामतः क्षत्वा कौर्सः येत् केशव विभुम्॥ असे स्थित्वा कर्मा कुर्वन् , जसीन तिसकां चरेत्। भन्यथा भक्षाना सङ्घः कुर्यात् काष्ठेन वा पुनः"॥ इति कमाङ्कितसकं सामग्रेन कर्तव्यम् इति केचित्।

चय तर्पणम्। तिहिषिधं प्रधानमङ्गञ्च। तवादामाहः
यातातपः। "तपणन्तुं ग्रचिः क्षय्यात् प्रत्यहं स्नातको हिजः।
देवेभ्यय ऋषिभ्यय पित्रभ्यय ययाक्रमम्"॥ विधवामधिक्षत्य
काशोखण्डम्। "तर्पणं प्रत्यहं कार्यां भर्तुः सुग्रतिको दक्षेः।

तित्ततुस्तित्यत्यापि नामगोवादिपूर्वकम्"॥ दितौयन्तु ब्रह्मा-गडुपुराणीयम्। "नित्यं नैमित्तिक काम्ये विविध स्नान-मिथते। तर्पणन्तु भवेत्तस्य प्रद्वत्वेन व्यवस्थितम्"॥ तर्पणा-करणे दोषमाइ योगियाज्ञवल्काः। "नास्तिकाभावाद् यद्यापि न तर्पयति वै सुतः। पिवन्ति देइरुधिर पितरो वै जला-धिनः"॥ तर्पणमधिष्ठत्य ब्रह्मपुराणम्। "तसात् सदैव कर्त्तव्यमकुर्वन् मद्दतैनसा। युक्यते ब्राह्मणः कुर्वन् विम्बः मेतिहिभित्ति हि"॥ शहुलिखितौ। "नेष्टकार्याने पितृ'स्तर्पयेत्"। मार्कण्डयपुराणम्। "यच सर्वाय नीत्रृष्ट यचाभी च्यानिपानजम्। तद्दच्यं सलिलं तात सदैव पिष्ट-कमीणि"॥ विषाः "स्नातयाद्रवासा दैवपिष्टतर्पणमभास एव कुर्यात्। परिवर्त्तितवासायेतीर्घमुत्तीर्य"। प्रवापि तौर्थं विश्विमाइ मत्यपुराणे। "तिलोदकाञ्जलिदेयो जलसी-खोधवाधिभः। सदान इस्तेनैकेन यह याह समियते"। अच जलस्वैरित्यनेन स्थलस्थानामपि जलस्यतं नियम्यते। ततस "सन्तर्क भाचान्तांऽन्तरेव पूती भवति। विचि-बदके प्राचान्तो वहिरेव पूर्ती भवति तसादन्तरेकं वहिरेकस याद क्षत्वा चाचामेत्। सर्वत्र शहो भवति इति पैठीनसि वचनात्। जसस्वैकचरणक्षताचमनेनीभयकर्माईवात् तर्पण-काले तीर्यं जलेकचरणेन भवितव्यम् पन्यव व्यनियमः। तदू-पाणां असे तपंणमनिषिषमिति । सासस्यतपंणे भागनेयपुराण ''प्रागयेषु सुरांस्तृष्येक्मनुष्यश्चित मध्यतः। पितृ य दिचिषायेषु ददादिति जलाञ्चलीन् ॥ चग्रचिदेगे तु विष्णुः। ययाः गुचिख्यल व्यासादुदके देवतापितृन्। तर्पश्चेसु यथा काम-सप् सर्वे प्रतिष्ठितम्"। इङ्ग्रातिः। "सद्ययद्रप्रसिद्ययं विद्यासाध्यातिको जपेत्। लक्षाय प्रणव वापि ततस्तर्पप्-

पुराणीयतपंषपचे तु पिद्यपद्य एव इस्ताभ्यामिति अतेसार्वे वाञ्जलि:। यन्यतं नाञ्जलिरित्यवगम्यते। याचारमाधवीये प्रचेताः "माहमुख्यास्तु यास्तिसस्तामां दद्याचिरञ्जलीन्"। इति पराग्ररभाषे सनकादिदिष्यमनुष्याणां तपणादिकं सामगेन प्राद्यु खेन तदितरेणोदस्य खेन कर्त्रश्चं तथाच परि शिष्टध्तं सामवेदीयषट्तिंशदुवाद्याषं "मनुष्याणामेषा दिक् याच प्रतीचीति"। तथाच च्योतिष्टोमे श्र्यते। "प्राची देवा ष्ययगन्त दिच्यां पितरः प्रतीयीं मनुष्याः उदीयीमस्राः अपरेपामुदीचीं मनुषा."। यस् "स्तनध्योऽस्तर्जानुषद-षा खः। दिव्येन तीर्येन देवानुदक्तेन तर्पयेत्' इति यहा-लिखितस्त्रं देवतर्पणे। उदश्यखाविधायक तक्कुति-विरोधात् बाख्यसरीयम् चयन्नविषयवाम्। उदकेनिति श्यवणात् यवादिशिति फलाधिकाधै व्यवद्वारोऽपि तथा। यत्तु "निवीती इलकारेष मनुषांसप्येदय। कुग्रस्य मध्यदेयेन नृतीर्घेन उदध्युखः"॥ सञ्जविष्यूतं इन्तप्रयोगेन नसदान-मुक्तं तत् सनकादिप्रत्येकतर्पणे यथा ''सनकस्तृप्यतां तस्ये-तद्दकं इन्त" दलादी नतु पद्मपुराणीयमिलिततपंषे दत्ते। नाम्बुना चनेन दत्तस्य पुनस्थागासभाषात्। सृतीर्थेन कनिष्ठाषु सिमूलेन "प्रामापत्येन तौथेन मनुष्यांस्तर्पयेत म्यक्" इति विश्वपुराणीयैकवाकात्वात्। मरीचादि ऋषि-तर्पणन्तु भड़्त्यमेण "भड़्त्यममार्प" दति यसवदनात् एवः सापं देवतीर्ययोरह्त्यम्क्पेकदेयत्यसाधर्मेण सरीचादितर्पणे तु दिगाद्याकाङ्गायां देववदिति। पतएव योगियाचवस्करः वचने सनकानित्यव मनुष्यानिति विशेषणं दत्तम्। अञ्चाद्या-नित्यव देवानिति विशेषणं दत्तमिति व्यवहारीऽपितया। सरीचिः "सौवर्णन तु पादेष तास्त्रक्ष्यमञ्चन वा। श्रीहुस्तरेष् खद्भेन पितृषां दत्तमधयम्॥ विना रूप्यसुवर्षेन विना तास्त्रमयेन था। विना तिलैय दभेष पितृषां नोपतिष्ठते"। एतच समग्राभावे बोध्यं नतु एकस्याभावे बोध्यं ग्रहः। "सीवर्षेन तु पावेष राजतेनी हुम्बरेष च। खन्नपानेष शहुना वाप्युदकं पिलतीर्थं स्प्रान्ददात्"॥ प्रद्युः सुवर्णकीलद्यः। "असतीदकीर्यवाद्भिस्तर्पयेष्ट्रेवान् सतिलाभिः पितृंस्तवा"। द्रित छन्दोगपरिशिष्टेनापि पिद्यपचे तिसीदकमात्रविधानात्। पद्मपुराणे चन्दनविधानं फलाधिक्यार्थम्। अपसव्यं प्राचीना-वीतित्वम्। उपवीतित्वं प्राचीनावीतित्वद्याद्यं गीभिसः। "दिचिषां बाइमुद्रत्य शिरीविधाय सत्येऽशे प्रतिष्ठापयित दक्षिणं कद्ममवसम्बनं भवति एवं यद्गीपवीतौ भवति। सर्वा बाइमुद्द्रत्य गिरोऽवधाय दिचिषे प्रतिष्ठापयति सव्यक्षचमव-सम्बनं भवति एवं प्राचीनावौती भवति" इति प्रतिष्ठापयति यज्ञीपवीतमिति शेषः। तथाचामर्गसंश्वीरिष "उपवीतं यसमूत्रं प्रोह्ते द्विणे करे। प्राचीनावीतसन्यसिक्वीतं कार्डलिवतम्" इति। "सावित्री प्रत्यिसंयुक्तं उपवीतं तवा-च्यतं द्वात ब्रह्मपुराणीय पूजादर्शनात्। गायबीमन्तेष ष्ठपवीतं कर्त्रथामिति प्रतीयते। खोकिकास्तु सावित्री प्रियः रिति वदन्ति प्रवरसंख्या विष्टितप्रियिति सोकिकव्यव-द्वारः। विद्याकरपृतं "यया यत्रोपवीतम्" द्रत्यादिवाक्यात् **उत्तरीयमपि यत्रीपवीतवस् सव्यापसञ्चलादिना धार्यः विहर्तः** श्वित्रचे। पिवादीत्यादिना मातामशदिवयपरिष्यः। तदाच विष्णुपुराणे "चिरप: प्रीथनार्घाय देवानामपवर्जयेत्। भरमीयाच यया न्यायं सक्तचावि प्रजायतः। वितृषां भीष-नार्याय विरपः पृथिवीपते। पितामहभ्यय तया भौषयेत् प्रवितासद्दान् । सातासद्वाय तत् पिसे तत्वित च समा-

भाचरेत्' । एतस तर्पणं ब्रह्मयज्ञानन्तरं छन्दोगेतरपरम्। तैयान्तु वैश्वणाय चीपकाय द्वान्तस्यीपसानानसर् गोभिलेन तर्पणाभिधानात्। "षाप्नवने तु समाप्ते तर्पणं तदनन्तरम्। "गायतीच्च जपेत् पयात् साध्यायचेव गक्तितः"। षाञ्चन तु समाप्ते गायवीं जपतः पुरा। तर्पणे कुर्वतः पयात् स्नानमेव वया भवेत्"॥ इति गीभिसीयवचनाभ्याख नुषांस्तृष्येत पिटन् दिचिणतस्तया। अग्रेस्तु तर्पयेहेषान् मनुष्यान् कुशमध्यतः। पितृं सु कुशमूनाये विधिः कीयो ययाक्रमम्" ॥ एवञ्च गोशृङ्गमात्रमुष्ट्रत्य लस्मध्ये जनं चिपेत्। दति यमवचनस्यगोशृङ्गपदं प्रादेशमात्रपरम्। उन्नतोदके तु हारीतः। "पावादा असमादाय ग्रुची पावास्तरे चिपेत्। ललपूर्णेऽयवा गर्से न स्थाने तु विवह्निया। अस यहि यदुप-क्रम्य युतं तद्य येन समं समिष्याष्ट्रतं तदेव तत्रैवाङ्गं नान्य-दिति बोध्यं तदक्षम् इतरत् समभिव्याद्वारपकर्णाभ्यामिति गीतमस्यात् तेन पद्मपुराणीयसाने तद्श्रमेव तर्पणम्। तद्-यथा अब्हाणं तर्पयेत् पूर्वे विष्णुं सद्रे प्रजापतिम्। देवा यचान्त्रया नागा गन्धर्वापरसोऽसुराः ॥ कराः सर्पाः सुपर्णाय तर्यो जकागाः खगाः। विद्याधरा जलधरास्त्रचैवाकात्रागा-मिनः॥ निराधाराय ये जीवाः पापे धर्मे रताय ये। तेषा-माप्यायनायैतदीयते सलिलं मया"॥ एतेनैकाष्ट्राचिति सर्वेषा मतम्। "क्षतोपकौतौ देवेभ्यो निवीतौ च भवेत्ततः। मनुष्यांसर्पयेद्वस्था ऋषिपुवानृषीस्त्रषा॥ सनकथ सनन्दस दातीयस समातनः। कपिससासुरियेव वोदः पश्चामाखसाया ॥ मर्वे ते द्विप्तमायान्तु महत्तेनाम्बना सदा। मरीचिमवाद्विरसी युन्तस्यं पुलदं कातुम्॥ प्रचेतसं विशिष्ठञ्च सुगुं नारदमेव च।

देवान् सर्वान्योन् सर्वास्तर्ययेद्चतोदकैः॥ अपस्यां ततः स्राचा सव्यं जानु च भूतले। चिनिस्वात्तांस्तया सीम्यान् इवियन्तस्तथोषापान्॥ सुकासिनो वर्ष्टिपद प्राज्यपांस्तप-रीत्ततः। तर्पयेच पितृन् भक्ष्या सतिलोदकचन्दनैः॥ दर्भ-याणिस्तु विधिना इस्ताभ्यां तर्पयेत्ततः"॥ चव केचित् पितः-धर्मातिदेशात् दिव्यपितृणामपि यञ्चलित्रयदानम्। तदसत् "कथवालं नलं सीम्य यममर्थमण्लया। पनिवाताः सीमपाय वर्श्विपदः सकत् सक्षत् ॥ इति छन्दोगपरिशिष्टेन विशिष्टेकाष्ट्रसिविधानात्। "पिवादीन्नामगोने च तथा मातामशानिष । सन्तर्य भक्षा विधिषदिसं मन्त्रसुदीर येत्॥ ये वास्ववा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि वान्धवाः। ते द्धिप्तसिख्तां यान्त् ये चास्रतोयकाश्चिणः"॥ सन ब्रह्मादि-चतुर्ष तर्पणप्रयोगाकाह्यायां गोभिलयात्रवस्क्राक्षप्रयोग-विधिर्घाद्यः। स च "थन्वारयोन सब्येन पाणिना दक्षिणेन त्। खप्यतामिति वक्तव्यं नामातु प्रणवादिना"॥ अन्वा-रखेन प्रयास्त्रतेन प्रसादेव वचनात् तर्पणाभिनापे प्रणवा-दिलं खप्यतामिति च सभ्यते। ततय ब्रह्मा खप्यतामिति प्रयोगः। देवा द्वादि मयेत्यन्तेन मन्त्रसिद्वादेकाञ्जलिः। तथा सनक द्रत्यादि सदा दलकोनैकाञ्जिशः एवं पुनरिपा "एकैकमञ्जलिं देवा दी दी तु सनकादयः। प्रहेन्ति पितरस्ती स्तीन् स्वियस्वे कैकमञ्जलिम्" इति व्यासगोभिलस्ववद्य-नाता। नतु हो द्वाविति वीपाश्चतेः सनकादिप्रत्येक एव दाञ्जितिरिति वाचा प्रत्येकपचे हो हो समुदायपचे ख्रायन्-रोधेन तथेव युक्तत्वात्। पद्माञ्जलिपदं प्रागुक्तान्वारक्षेनित त्रवयात्तयाविधद्वस्यपरम्। तद्देकित्यकाञ्चलिपरं वा। देवादिपर्च पिद्रपर्चे तु तो युतावज्ञित्तः प्रमानित्वेतत्वरं एष्ट-

हित:। ददात् विषेण 'तौधेन काम्यञ्चान्यत् मृणुष्व मे"। सातिसारे धृतम्। "वामहस्ते तिलान् दत्त्वा जलमध्ये तु तर्पयेत्। सानयाव्यञ्चले पाते रीमकूपे न कुत्रचित्"! जनतर्पणे रोमरहितप्रदेशे वामवाही वस्त्राच्छादिते तिलान् संस्थाप्य सुद्रारिहतदिचिणहस्ततर्जन्यद्गुष्ठयोरन्यतरेण तिसान् ग्रहीला वामहस्ततसेन खापयिला तर्पयेदिति मदनपारि-जातः। षतएव मरीचिः। ''मुक्तइस्तच्च दातव्यं न मुद्रां दर्शयेत् क्षचित्। वाम इस्ते तिला याच्या मुक्त इस्त ख दिन-यम्"॥ सुक्षप्रसं प्रसारितष्टसं यथा स्यात्। एवं सुद्रा पदेशित्यङ्गष्ठयोगे सन्दशक्यः। "सुन्नहस्तच दिचणम्" इति द्चिणइस्तं तिलर्हितं कुर्यात् प्रतिनैयतकालौन कर्यत्र ! तथाच नारदीये "षङ्गुष्ठानामिकाभ्यान्तु दिखणस्येतरात् तिसान् रहिता पातसान् घाता संतर्पयेत् पितृन्"॥ देवसः। "रोमसंस्थान् तिसान् कत्वा यस्तु सतर्पयेत् वितृन्। वितरस्तर्पतास्तेन रुधिरेष मसेन च"॥

हिष्टिज्ञ सम्पर्के तर्पणिनपेशमास वायुष्ठराणम्। "मेचे वर्धति
य: कुर्व्यात् तर्पणं ज्ञानदुर्वेतः। पितृषां नरके घोरे गतिस्तस्य
भवेद भुवम्"॥ तथा "श्द्रोदकेने कुर्वात तथा मेघादिः
नि:स्तैः"। इति दर्भनादिति कोमुदी। योगियाज्ञ वस्त्यः।
"ययुद्दृतश्चेतु तिनान् मंसिययेक्चले। अतोऽन्यथा तु सब्धेन
तिसा साम्चा विश्वषणेः"॥ अत्र येपादे मदनपारिजाते
लिखितम् "धन्यया वामस्रतेन ततस्तपणमाचरेदिति"।
वायुप्राणम्। "तिलद्भेम्तु संयुक्तं यदया यत् प्रतीयते।
तस्तर्यमस्तं भूता पितृणामुपतिष्ठते"। स्वृतिः। "रविस्कःदिने चैव हादस्यां याद्यवासरे। सप्तस्यां जन्मदिवने न कुर्याःतिखतपणम्" मस्यपुराषे "संकान्त्यां निधि सप्तस्यां रविस्नाः

"सवर्षभ्यो जल देयं नान्यवर्षभ्य एव च"। इति याज्ञ वल्की-यात्। भीत्मायासवर्णायापि भीषाष्टस्यां तर्पणं कार्यः "ब्राह्म-णाद्यास्तु ये वर्णा दद्भींग्माय नो जसम्। संवसास्त्रतं तेषां पुष्यं नश्यति सत्तम् । इत्यादिवचनात्। सन्त्रस्तु 'वैया-व्रपद्मगोवाय इत्यादि ब्राह्मणेनेतत् शिवद्यतर्पणानन्तरं कार्यम श्रन्धेन पिखतपंषात् पूर्वम्। श्रव वीजं वर्णन्येष्ठमिति इला-युधः। श्रपसच्चेन दिचिणासुखेन सितलोदकेन सक्तत् कर्त्त-र्व्यम्। ततः क्रताञ्जलिः। भौष्मः ग्रान्तनवो वीर द्रत्यादि पठेत्। तती ये बास्थवा बास्थवा वा द्यादिना एकाञ्जलि-र्देय:। योगियाञ्जवस्काः। "निष्पोडयति यः पूर्वं स्नानवस्त्रध तर्पणात्। निराधाः पितरस्तस्य यान्ति देवाः मद्यिभिः। तथात्रप्रकरवत्तस्य अपसय्येन पौडितम्"। अनप्रकारवत् थाडो च्हिष्टसमीपानप्रकरवत् तस्याधोवस्यस्य "सानग्राखान्तु दातव्या सृद्क्तिस्री विग्रह्ये"॥ इति विग्रिष्ठवचने अधी-वस्त्रस्य दुष्टस्यैव गुढ्ये सद्दानं प्रतीयते। योगियाच्चक्कः। "वस्तिनपीडितं तोयं सातस्वीच्छिप्टभागिनः। भागधेयं युति: प्राप्त 'तसाविष्योदयेत् 'स्यसे'। अव मन्यमाद गोभिनः। "ये चाध्याकं कुले जाता पपुचा गोविषो सताः। ते खप्यन्तु मया दत्तं वस्तिष्यीडनोदकम्"। धशकी शदः। "पामद्वास्त्रस्वपर्यस्तं सगनुष्यत्विति समात्। प्रस्निययं दद्यात्" एतत् संद्वेषतर्पणं परागरः। "स्रात्वा निवस्य यासी-उत्यत् अहे प्रचालयेक्दाः भपवित्रोक्षतेत् कोपीनच्त-वारिणा"॥ याज्ञवस्यः "स्रात्वेदं वासमी भौते मस्तिवे परिधाय च । यथास्यादमदद्विय हस्तो प्रचासयेत्तदा । रतावार "पाचस्य तीर्घ नता च छोपानको ग्टड प्रजित्"। भय सम्बोपासनम्। तस दन्दोगपरिमिष्टम्। "भत

र्पणाभावः गातातपः "पितृणां पित्तीर्थेन जलं सिच्चे द यधाः विधि। दक्षिणनाय रहियात् पित्रतोर्थे समीपतः ॥ गोभितः। "गोतं द्वरान्तं सर्वन गोतसाद्यकर्भण। गोत्रस्तु तर्पणे प्रोक्तः कर्ता एवं न मुद्यति। सर्वेत्रैव पितः ग्रोक्तः पिता तर्पणकर्मणि। पितुरचय्यकाले तु श्रचयां एपि-मिच्छता। गर्भन्नचादिके काध्यं ग्रमा तपंचकर्माण। गर्भ-णोऽचयकाले तु पितृणां दत्तमचयम्"। कार्णाजितिः। "नाभिमावे जले स्थिता चिन्तयेदृहु मानमः। आगच्छन्तु मे पितर इसं ग्रह्मन्वपीऽध्वित्गृ ॥ योगियाजवल्काः। "नामगोत्रस्वधाकारेस्तर्धाः स्त्रानुपूर्वग्र."। तेन श्रमुकागोतः पिता श्रमुकदेवशर्मा द्रप्यतामेतित्ति होदक तस्मै स्वेधित प्रयोगः िध्धति। एवच मातामहादौ। एव चासञ्जिपयोगी वाअसनेयौतरपर । तेषान्तु सख्दान्ततामाद्द ब्राह्मणसर्वस्य जातूकर्णः। "प्रमीतिपद्यकन्तूपन्तस्वित्यावाद्य नामगीत-मुदाष्ट्रत्य धावता पित्रकार्यभगवितते उदक्रभिति पितृन् पितामशान् प्रिपितामशान्। एकैकस्मै बीखीन् दधात्"॥ धव चाराविति नाम ग्रक्षातीति कात्यायनीत्रस्य नामस्ते इति युषत्पयीगात् सम्बुहान्तता प्रतीयते। तस्य सख्डामानात्मवाचित्वात्। प्रसख्डिपयमान्तत्वेऽनन्वयापत्ते । ततयामुकगोध पितरमुकदेवयमं स्तृप्यस्तिते तिलोदकं खधेति प्रयोगः सिध्यति। एवं सातामशान्तानामपि। ततो मात्रादीनां पद्यां तर्पणानि । द्वाद्यानां मध्ये यो जीवति ते विषय व्रद्रापितामद्रादीन् ग्टदीत्। एव प्रवज-तिते पतिते च। तती विमादक्येष्ठभाद्यपित्यमातुनादीं-स्तर्पयेत्। मदः। "बान्धवानां कत्वा सुद्रदां तर्पयेत्" ॥ सहरो मिलार्यः। मिलायाप्यसक्षाय सत्तं न देवम्।

"सवर्षेभ्यो जलं देयं नात्यवर्षेभ्य एव च"। इति याज्ञवल्की-यात्। भौष्मायासवर्णायापि भौषाष्टस्यां तर्पणं कार्यः "ब्राह्म-णाद्यास्तु ये वर्षा ददुर्भीष्माय नी जन्म। संवसरक्षत' तेषां मुख्यं नश्यति सत्तम"। दत्यादिवचनात्। मन्त्रस्तु "वैद्या-घषयगोवाय इत्यादि ब्राह्मणेनैतत् दिविहतपंणानन्तरं कार्यम् श्रन्येन पित्ततर्पपात् पूर्वम्। श्रव्य वीजं वर्षज्येष्ठमिति इला-युधः। श्रापसव्येन दिचणामुखेन सतिलोदकेन सक्षत् कर्त्त-व्यम्। ततः क्षताञ्चलिः। भौष्यः शान्तनवो वीर इत्यादि पठेत्। ततो ये बान्धवा वान्धवा वा इत्यादिना एका स्निन् र्देय:। योगियाच्चवस्काः। "निष्पोडयति यः पूर्वं स्नानवस्त्रध तर्पणात्। निरामाः पितरस्तस्य यान्ति देवाः सप्तिभिः। तथात्रप्रकरवत्तस्य चपसन्येन पीडितम्'। चन्नप्रकारवत् अ। दो च्छिष्टसमीपानप्रकरवत् तस्याधीवस्तस्य "सानशाद्यान्त् दातव्या सुदस्तिस्रो विग्रह्ये"॥ इति विशिष्ठवचने साधी-वस्तस्य दृष्टस्यैव भुद्धये सृद्धानं प्रतीयते। योगियान्नवन्क्यः। "वस्तिष्पीडितं तोयं सातस्वीच्छिप्टभागिनः। भागधेयं श्रुतिः प्राप्त तसाविष्योदयेत् स्थले"। यव मन्द्रमाष्ट गोभिनः। "ये चामाकं कुले ज्ञाता भ्रमुत्रा गोविणो सताः। ते दृष्यन्तु मया दत्त वस्तिनिषीडनोदकम्"। चत्रक्री शद्धः। "पानद्वास्तम्बपयेन्तं जगनुप्यत्विति समात्। चञ्चलिवयं ददात्" एतत् संचेपतर्पण परागरः। "स्रात्वा निवस्य वासी-रमात् जारे प्रधासरोग्रदा। भपविद्योक्ततेते तु कोपीनचन-वारिणा"। याज्ञवल्याः "स्रात्वेवं वासमी भीते प्रक्षित्रे परिधाय च। प्रचाल्योदसदाद्वय इस्ती प्रचासयेतदा। रद्वाकर "पाचम्य तीर्यं नता प सोपानको रहा ब्रजित्"। श्य सञ्चीपासनम्। तत्र क्न्दोगपरिमिष्टम्। "पत

मिति यावत्। तत्र मन्यस्थीद्वारादित्यमाह याच्चवरव्यः। "यम्बातिरिक्षच यिन्ह्रिं यदयिष्ठिम्। यदमेध्यमग्रहेच यातयामच यद्भवेत्। तदोष्ठारेण पूर्वेण मन्तेणाविकर्ल भवेत्"॥ व्यासः "गायवी नाम पूर्वाह्वे सावित्री मध्यमे दिने। सरखती च सायाङ्के सेव सन्या विषु स्नृता । प्रतिप्रशः-स्रदोधाच पातकादुपपातकात्। गायकी प्रोचिते तसात्। गायन्तं स्नायते यतः॥ स्रवितृचीतनात् सैव सावितौ परि-की सिता"॥ अगतःप्रसवित्रीलात् वागूपलात् सरस्ती तैतिरीयब्राह्मणं "उदान्तमस्तं यान्तम् चादित्यमभिध्यायन् कुर्वन् ब्राह्मणी विद्वान् सकलं भद्रमश्रुतेण। घसावादित्यी ब्रह्मा इति ब्रह्मीव सन् ब्रह्माभ्येति य एवं वेदेत्ययमर्थः। ,वस्य-माणप्रकारेण प्राणायामादिकं कुर्वन् यथीक्षनामरूपोपेतम् सभ्याशब्दस्य वाच्यमादित्यं ब्रह्मेति ध्यायन् ऐप्तिमासुवि-कच्च सकलं भद्रमश्रुते। य एवसुक्तध्यानेन श्रुष्ठान्तः करणी श्रद्धा साचात् कुरुते स पूर्वभिष ब्रह्मीव सन् प्रद्वावान् चिर-की विल्वं प्राप्ती यथीक्षज्ञानेनाज्ञानीपममे ब्रह्मैव प्राप्नीति द्ति पराधारभाष्ये माधवाचार्थः। चतएव व्यासः "न भिर्मा प्रतिपद्येत गायस्रों ब्रह्मणा सह । सोऽहमस्रोत्युपासीत विधिना येन कॅनचित्' ॥ गायत्रीस्य भगेपदप्रतिपादा र्षश्चर:। यहं जीवरूपोऽस्मि भवामीति यज्ञहत्सार्धसत्त-यया कीवेग्बरयोरहद्वारप्रतिफलितवोपाधिरहितेन चिट्रपे-गैकां घटाकाश्रग्रहाकाशयोग्पधिशित्यधगमादैकाभिव भाव-यन उपासीत योगियाज्ञवस्कोऽपि "या सन्धा सा त गायती दिधा भूता प्रतिष्ठिता। सन्या छपासिता येन विश्वास्तेन उपासितः"॥ उपासनायाः फलसाइ स एव। ''गवां सपिंः मरीरसं न करोत्यद्वपोपणम्। नि:सतं कर्मसंयुक्तं पुन-

स्तासां तदीवधत् ॥ एवं स दि ग्ररीरसः सिंपवेत् परमेखरः ।
विना चीपासनादेव न करोति दितं मृषु ॥ प्रणव व्याह्नतिभ्याद्य गायच्या वितयेन च । उपास्यं परमं मृद्या पाला यच्च
प्रतिष्ठितः" ॥ वितयेन प्रणवादिवितयेन मृद्यापितपादकेन
उद्यादिन तद्यांवगमेन उपास्यं प्रसादनीयं तदाइ स एव
"वाद्यः स देखरः प्रोक्तो वाचकः प्रणवः स्मृतः । वाचकेऽपि
च विद्याते वाच्य एव प्रसीदिति ॥ भूभुं व स्वस्त्र्या पूर्वं स्तयः
मिव स्वयस्त्र्या । व्याह्नता ज्ञानदेहेन तस्त्रात् व्याह्नतयः
स्मृताः" ॥ ज्ञानदेहेन तस्त्रज्ञानस्य चिद्रपेखरस्य देहेन ग्ररीररूपेण व्याह्मता उन्ना । तेन तदाच्योऽपीखरः । कृत्रेपुराणम् ।
"प्रधानं पुरुषः कालो मृद्याविष्युमहेखराः । सन्त्रं रजःतमः
स्तिसः क्रमाइग्रह्नतयः स्नृताः" ॥ एतद्रपेणापि भावनीयः ।

गायवप्रधमाद योगियाद्मवस्ताः। "देवस्य सिवतुर्वश्चीं भगमन्तर्गतं विभुम्। श्रद्धावादिन एवाद्यवैरेख्यञ्चास्य धीमिति॥ विन्तयामो वयं भगें धियो यी न प्रचोदयात्। धर्मार्थकाम-मीचेषु वृद्धिवत्तीः पुनः पुनः॥ बुद्धे यादेयिता यस्तु चिदासा पुरुषो विराद। वरेखः वरणीयञ्च जन्मसमारभीरुभिः॥ सादित्यान्तर्गतं यञ्च भगोस्यं तन्तु मुच्चुभिः। जन्मस्युविनाः शाय दुःखस्य पितयस्य प्र॥ ध्वानेन पुरुषो यस दृष्ट्यः सूर्यः स्पर्यः स्वायः वर्षाः वर्षः वरः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः

भूतानि यन्त्रारूढ़ानि सायया"। ईम्बरीउन्तर्यामी सहैंगें पन्तः करणे स्नामयन् तत्तत् कमासु प्रेरयन् यन्त्रारुठ्।नि दार्यम्बतुखगरीरारुटानि भूतानि प्राणिनो जीवानीति यावत् । सायया अघटनघटनपटीयस्या निजशस्या तथा चाम्बतरूणां सन्वः। "एको देवः सबैभूतेषु गूदः मर्वछाणी सर्वभूतान्तराता। कमाध्यद्यः सर्वभूताधिवासः साचाचेतः केवली निगुण्य"॥ भारते। "यथा दानमयी योपिनृत्यते कुइकेच्छ्या। एवमीखरतन्त्रीऽयं ६६ते सुखदु:खयोः"॥ मदनपारिजात संवर्तः। "नत्वा तु पुर्खरीकाच्यमुपात्ताघ-प्रयान्तये। अद्यवश्वसकामार्थे प्रातः सत्यामुपासाङ्गः द्रव्यं क्षलाय महस्यं कुमानादाय पाणिना। नद्यां समुत्यतोगैस् ग्रहे वामकरे स्थितैः"॥ सगुः। "धाराच्युतेन तोयेन सन्ध्यो-पास्तिविगहिता। नद्यां तीयं द्वदे वापि भाजने स्रमसीऽपि वा॥ पोडुखरे च सौवर्णे राजते दारुसकावै। प्रथवा वाम-इस्तेन सन्धोपासिं समाचरित्"॥ वामहस्ते जलं सत्वा द्यादिना निषेधस्त पात्रान्तरसद्वावविषय:।

हपासनाविधिः। कूर्मपुराणे। "प्राक्ष्लेषु ततः स्थिताः दर्भेषु सुस्माहिताः। प्राणायामस्य लिता ये सन्यां समुपा-सते। प्राणानायस्य संप्रोच्च सृचेनास्देवतेन च"॥ प्राक्ष्लेषु प्राग्येषु दृचेनान्देवतेन चापाहिष्ठा इत्यादिना विकेन। दृष्ट-स्वातः। "वश्वासनं नियस्यास्न् स्मृत्वा च्य्यादिकं तथा। संनिमीलितहङ्मीनी प्रणायामं समाचरेत्"॥ कन्दोगपरि-पिष्टं "मूराव्यास्तिस् एवता महाव्याद्यतयोऽव्ययाः। मह-र्जनस्तपः सत्यं यायतो च शिरस्तथा। भाषोच्योती रसो चतं वद्याभूर्भूवः स्वरिति। शिरः प्रतीकं प्रणवमन्ते च शिरस-स्तथा। एता एतां सहानेन तथैभिदंग्रिमः सह। सिर्लिन

टांग्रतप्राणः प्राणायामः स उचाते। श्रव्यया श्रव्ययफल्दा मोच्चदा इत्यर्थः। यिरोमन्ते छन्दोव्दर्बेन्नस्यपदं नेच्छन्ति। तन्न "पोड-शाचरकं देव्या गायव्यासु शिरः स्मृतम्"। इति योगियाञ्च-वस्काविरोधात्। भाद्यन्तयोरोद्वारमादाय पोड्मं संस्था-पूरणम्। छन्दोद्विंदार्यत्वेन सुघटा प्रतीकं भूरादिप्रति-भागम्। एताः सप्तव्याह्नतीः एतां गायतीम् अनेन शिरसा एभिर्देशभिः प्रणवैः सद्द निरुद्धप्राणः विजिपेदेवं प्राणायामः। व्यासः। "बादानं रोधमुलागं वायोस्विस्तः समभ्यमेत्। ब्रह्माणं केयवं शक्षं ध्यायेद्देवाननुक्रमात्"। पूर्ववचने विर्ज-पमावाभिधानात् श्रव विरिति वीषा सन्यावयापेचया "ब्रह्माणं वेशव' श्रमुं ध्यायन् मुखेत वन्धनात्"इति ष्ट्रहस्पतिः भूतविष्णुधर्मोत्तरवचनात्। ध्यानं काम्यमित्यादः। योगि-याज्ञवल्काः। ''भूभुं वः स्वर्भहर्जनस्तप' सत्यं तथैव ध। प्रत्यो-द्वारसमायुक्तस्त्रया तस्मिवतुः पदम्। प्रापोज्योतौति रित्ये-तक्छिर: पद्मानु योजयेत्। विरावर्त्तनयोगानु माधायामसु शब्दितः। पूरकः कुमाको रेचः प्राणायामस्तिनचणः। नासिकागत उच्छासी ध्यातुः पूरक उच्यते। कुभको निय-लखासो सुच्यमानस्तु रचकः"। मीचन विशेषयिन विण्यु-पुराणम्। "नासइतसुखो जुमोत् दासकामी त वर्जयेत्। नोचेंहिंसेत् प्रयष्ट्च न सुर्तेत् पवन' बुधः"।

श्रव ऋषादित्रानफलसाइ स एव। "श्रापे छन्दय देवत्यं विनियोगस्तयेव च। वेदितव्यं प्रयत्नेन भाष्ट्राणेन विशेषतः। श्रविदित्वा तु यः कुर्य्यात् याजनाध्यापनं जयम्। होससन्तर्जलादोनि तस्य चास्यफनं भवेत्"। विशेषतो विशेषफलाय। श्रन्तर्जनादोनि जलसध्यकियसाणानि श्रव-सपंणजपादोनि होससन्यच यत् विश्विदिति पाठान्तरम्। सस्योपामनप्रकारसाध योगियात्तवस्यः। "प्रथमीन्याद्वतीः
सप्त गायती सिगरास्त्रया। धापी दिष्ठा ऋषित्रसः
स्क्षद्वेवाऽधमपणम्। धादित्वरस्यार्थम्, पातःमायं दिने
दिने। स्ट' स्वयभ्या पृष्ठं ब्रह्मणस्त्रमुखं सृतम्"। ब्रह्मणी
देवस्य न्रव्यादिकमाद्व मंदर्तः। "प्रणवस्य ब्रह्मऋषिदेवीऽनिस्तम्य क्षयते। गायतो च भवेत् कन्दो नियोगः सर्वकम्मु। तिमावस्तु प्रयोक्तवाः प्रारम्भे सर्वकम्मुण ॥
तिमावः प्रणवः "व्याद्वतीनास्त सर्वामाप्यस्ते प्रजापतिः।
गायतुप्रणागनुरुष् वृद्धती त्रिष्ट्वेव च। पद्क्तिय जगती चैव
सन्दांस्रेतानि सप्त वे। धिनवायुक्तवा स्यो वृद्धस्तरपांपतिः। इन्द्रय विख्वेदेवाय देवताः समुदाद्वताः। प्राणस्यायसने चैव विनियोग उदाद्धतः"। गायत्रा ऋष्यादिकमादः।
"विख्वामित्रस्रिपण्डन्दो गायत्रो स्वित्यते। लव्दोमोपनयने वित्वागो विध्वेवते"॥

प्राणाधामानन्तराचमने श्रीधाधनः। "स्र्व्वेष मामन्युष इति प्रातः पविव्याणिना इति"। भरदानः। "सायमम्बद्ध मेलुक्का प्रातः स्व्यंव्ययः थिवेत्। चापः पुनन्तु मध्याक्के तत्रधाचमनच्चर्त्त्"॥ तत इत्यव्व एभिरिति भौनकपाठः। मेवाधनीय ग्रद्धपरिभिष्टम्। "प्रातः स्व्यंष्य मेलुक्का साय-मग्निष मेति च। चापः पुनन्तु मध्याक्के कुर्यादाचमनं ततः'। ततः प्राणाधामानन्तरं तदाइ योगियाचववकः। "प्राणस्यायमनं कृत्वा चाचमित् प्रयतोऽपि सन्। चन्तरं खिद्यते यसाचस्यादाचमनं स्पृतम्"। मार्जनमाइ कृत्वोग्परिभिष्टम्। "शिरसो मार्जनं कुर्यात् कुभैः सोदकविन्द्रभः। प्राप्तिष्टम्। "शिरसो मार्जनं कुर्यात् कुभैः सोदकविन्द्रभः। प्राप्ति मुभैवः स्वय साविवी च व्तीयिका। चन्देवत्यं तृत्वः इतिव्रयः हित्व चतुर्यमिति मार्जनम्। भोड्रारो भूरादि व्याक्कृतिव्रयः।

हितीया च गायत्री चतुर्घमापो हिष्ठति च्हक्तयम् इतीदं भार्जनं मार्जनिक्रयाकरणमित्यर्थः। रामायणम्। "ऋगन्ते मार्जनं कुर्यात् पादान्ते वा सम्बाहितः। यापोहिष्ठे त्युचा कार्यां मार्जनम्तु कुभोद्षैः। प्रतिप्रणवसंयुत्तं चिपेनार्हि पदे पदे। व्रचस्यान्तेऽयवा कुर्याष्ट्रपौषां मतमौद्यम्। श्रापी-हिन्दीत सूत्रस्य सिन्धुदीपऋषिः सृतः। श्रापी वै देवता छन्दो गायवो मार्जनं स्मृतम् ॥ छन्दोगपरिशिष्टम्। "करेषो-षुत्व सलिनं प्राणमासच्यतच्च। जपेदनायतासुर्वाचिः सक्तद्वाघमपंषम्'॥ इस्तेन जलसुद्रत्य तत प्राणमपंथित्वा प्राणिनिरोध विना वाशव्दाविरुद्धप्राणी वा सक्तविर्व ऋतञ्च सत्यमित्यादि मन्त जपेत्। मार्जनानन्तरं ब्राह्मीऽपि "जसपूर्षं तथा इस्तं नासिकाये समर्पयेत्। ऋतञ्चेति पठित्वातु तक्क त्तु चितौ चिपेत्"॥ योगियाद्मवल्यः। "पुरा कल्पे समुत्यवा मन्ताः कर्मार्थमेव च। अनैनेदन्तु कर्णवां विनि-योगः स उच्चते"॥ इति सामान्यताऽभिधायापि 'श्रघमपेष-सूत्तस्य ऋषिः स्याद्धमर्पणः। अनुष्टुप् च भवेत् छन्दो भाव-इत्तस्तु दैवतम्। धाखमिधावभृषके विनियोगः प्रक्रोिर्भितः"॥ ष्ट्यमेगाघमपंणस्क्रस्य अध्वमेधावस्यके कर्माण विश्वपतीऽभि-धानात् कर्मान्तर ९ इंग्यें तथैवाभिधानं न तु तत्तत् कर्मण विनियोगार्थम्। श्रतएव तेनैव तद्तम्। "सर्वपाधापनी-दाघं सृतिकारै तदा छतम्। इला स्रोकानपीमां स्त्रीं स्त्रिः पठेदघमपंणम्"। इत्यनेन सर्वपापापनोदाय पाठाय विहितम्। न तु तत्तत् पाठे विनियोग इति एवं सर्वत्र सुधीभिभीव्य भावव्रत्त इति भावः सृष्टिस्तत्र वृत्तः प्रवृत्तो ब्रह्मा इत्यर्थः। क्टनोगपरिशिष्टम्। "उत्यायार्कं प्रतिप्रोहित् विकेणाष्ट्रासि-मभासः। उधिवसृग्हयेनाय चौपतिष्ठेदनन्तरम्"॥ उत्यितौ

भूत्वा प्रणवयाष्ट्रतिसाविवतात्मकेण विकेण स्र्याभिमुखे जलाञ्जलिं चिपेत्। अनन्तरसुदुत्यं चित्रं देवानामिति अस्कृतयेण चोपस्थानं कुर्धात् उधितसमग्दयेनेति पाठी भोजराजाद्यनुमतः। एकाञ्चलिङ्ग्यमाण गोभिलोत्तवाञ्च-त्योर्व्यवस्थामा इ व्यापः। "कराभ्यान्तोयमाद्य गायत्रम चाभिमन्तितम्। आदिखाभिमुखस्तिष्ठन् विरूष्ट्वः सम्ययोः विपेत्। अधाक्रेतु सक्तदेव खेपणीयं दिजातिभिः"॥ अवा-भिमन्दितमित्युक्षेवरिवयं मन्त्रयाठः। प्रधानाहत्ती गुणा-हित्तिन्यायेनापि मन्त्राष्ट्रितरेवभेव समुद्रकरभाष्यम् श्रञ्जलिचैर कारणमाइ काग्यप:। "विश्वकोचो महावौर्धाः मन्देइ नाम राचसः। क्षणातिदार्गा घोराः सूर्यमिच्छन्ति खादितुम्॥ ततो देवगणाः सर्वे ऋषयय तपोधनाः। उपासतीत्रव ये सन्यां प्रचिपन्युदकाष्त्रसिम्॥ दश्चन्ते तेन ते दैत्या वसीभूतेन वारिणा। एतसात् कारणात् विषाः सम्यां नित्यसुपासते"॥ ष्ट्रपसाने विद्येषमा इक्टोगदिशिष्टम्। "तद्धं युक्तपाणिवर्ष एकपादर्वपादपि। कुर्यात् क्षताञ्चलिवंपि कहिवाहरयापि वा"॥ तद्पस्थानं भूम्यलकागुल्फभागी भूभिष्ठैकचर्णो भूमि-लमाईचरणी वा कुर्यात्तव क्षतास्त्रांसः। जहुंबासुर्धा भवेत् प्रादगतविकले प्रयासबाहुन्यात् फलवांहुन्यं तत्नैवोक्तम्। "यत्व स्यात् सन्द्रभूयस्वं स्वेषस्रोऽपि भनीपिणः। भूयस्वं सुवते तत्र क्षच्छात् खेयो द्वावायते"॥ इस्तगतविकस्पे द्वारीत:। "सायं प्रातरपस्थानं कुर्य्यात् प्रकासिरानतः। कङ्घाहस्तु सध्यक्तित्या सूर्यस्य दर्मगात्"॥ तेन प्रातःसायं सतान्त्रस्तिः। मधाक्रे जह बाहु रित्यर्थः। ऋष।दिक्रमाह धासः। "सदुत्यं जातपेदेति ऋषिः प्रस्कत् उच्यते । कन्दोगायवामवास्य स्योः दैवतमेव चृतः अग्निष्टोम उपस्थाने विनियोगः प्रकीतितः।

वितं देवेति हि सर स्थिः कौस खदाहृतः। तिष्ठुप्छन्दो दैवतश्च स्योऽस्थाः परिकीर्त्तितः। ग्रग्निष्टोम उपस्थाने विनियोगस्तयेव च"॥ भव्न विनियोगद्वयम् ग्रग्निष्टोने स्यो-पस्थाने चेति प्रतीयते।

यय सवितुरुपस्थानम्। नमो ब्रह्मणे द्रत्याद्युपजाय चेत्येव मन्त्रेणोपस्थानमुक्का गोभिसेनाम्निसुप्यत्वित्यादिना तर्पणम-भिधाय ततः प्रख्पस्थानं गायवाष्ट्रशतादीनि जवा इति स्वान्तरेण गायवो जपरुपोपस्थानमुक्तं ततस छन्दोगाना-सुपजाय चेत्यन्तसुपस्यानं तत्य तर्पणाधिकारे तर्पणं विधाय गायवीनपं कुर्यात्। ब्राह्मणसर्वस्वे ग्रह्मयान्नवस्क्री। "प्रण्वो भूभुव: खद्य घङ्गानि हृदयादय:। विराष्ट्रत्य तत: पद्यादार्पं छन्दय दैवतम्। विनियोगस्तया रूपं ध्यातव्यं क्रमश्रस्तु वै"॥ भूभुवः स्व द्रत्यध्वरपञ्चकं हृद्य थिरः शिखा सर्वगावकरद्वयेषु प्रत्येकां न्यसेत्। एवमपरं वारदयमिति गायव्या ऋषादि-कमाइ योगियाच्चवक्यः। "विम्हासित्र ऋषिण्छन्दो गायत्री सविता तथा। देवता विनियोगस गायत्रत्रा जप उच्चते"॥ ततद्यावाद्यनं तत्र सामगानां पिष्टद्यितोक्षमन्तः। 'धायाद्दि द्रखादि यजुर्वेदिनाम्तु योगियाज्ञवल्काः। "यावाद्य यज्-घानेन तेजोऽसीति विधानत."। व्यासः "तेजोऽसीति च मन्तेष ताम्। तुरीयेण गायवासीत्यादि परी रजस इत्यन्तेन तथा च वीधायनः "उपितछेदा एतां देवीं तुरीयेण तथाम्यदाहरन्ति गायवास्येकपदी दिपदी विपदी चतुष्पदापदिस न हि पदासे नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय पदाय परो रजसे" द्रायखिला जपतोति ततसैतदुपस्थान कृत्वा गायवीं जिपत्वा विसर्जयेत्। तयाच योगियाज्ञवस्काः। "तासावाद्य जिपत्वा च नसस्क्रस्

विमर्जेयेत्"॥ तत्र तेनेवोक्तमस्तो यथा "उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि । ज्ञाहाणैः समनुद्धाता मच्छ देवि यथा-सुखम्"॥ तत्र भावाहनानन्तरं ध्यानं महापयोगसारे पिष्ट-द्यितोक्तसमानम् । यथा "कुमारी स्वेदयुतां ज्ञहारूपां विचिन्तयेत्। इंसास्थितां कुमहस्तां सूर्यमण्डन्संस्थिताम् ॥ मध्याङ्गे विषाुरूपाच तार्च्यस्यां पौतवासौसम् । युवतीश्व युज्वेदां सूर्यमण्डनसंस्थिताम् ॥ सायाङ्गे शिवरूपाच हद्यां ह्यभवाहिनीम् । सूर्यमण्डनमध्यस्यां सामवेदसमायुताम्"॥ स्वृतिः "गायवी ज्ञहारूपा तु साविती विष्णुरूपिणौ । सरस्ती सृद्ध्या छपास्या रूपभेदतः"॥ योगियाच्चवस्यः । "पूर्वा सन्ध्या च गायती साविती सध्यमा स्वृता । या भवेत्,पियमा सन्ध्या विश्वया सा सरस्तती"॥

करविन्यासाय सृतिः। "कुलोत्तानो करो प्रातःसायकाः धोसुखो करो। मध्ये तिय्यक् करो प्रोक्तो जप एवसुदाहृतः'॥ सध्ये समकराभ्यान्त्वित ग्रीनकपाठः। श्रद्धः। "तिस्रोऽद्युत्यस्तिपर्वाणो सध्यमा चैकपर्विका। धनामा सध्यमारभ्य
त्वप एवसुदाहृतः"॥ सदनपारिजातेऽपि। "सध्यमाया द्ययं
पर्व जपकाले तु वर्जयेत्। एनं प्रकृ विज्ञानीयादू पितं प्रद्युषाः
स्वयम्॥ घडुष्ठायेण यळ्यतः यळ्यतः मक्तिद्वितम्। धसः
स्थातच यळ्यां तत्मवे निष्पतः भवेत्"॥ बहुष्ठाग्रस्य
किपेधात् पर्वणा जपः। गोभिन्नः। "कदाविद्वि नो विद्यान्
तायत्रोसुद्वे व्यत्। गायत्रान्तिसुत्वौ प्रोक्ता तत्मादुत्याय
तां जपेत्॥ यळ्ली श्रष्ट्यवस्त्रोण स्वसे चैवार्द्रवासमा। जपः
दिमो तथा दान तत्सवं निष्पत्नं भवेत्॥ स्टइपु तत्समं जथ्य
गोष्ठे शत्राणां स्थृतम्। नद्यां ग्रतस्त्वन्तु धनन्तं ग्रियमः
विद्यो॥ द्रग्रिकंत्रम्जनितं ग्रतिन च पुराक्ततम्। विद्युगन्तु

सहस्रिणंगायती हन्ति दुण्कतम्॥ सहस्रपरमां देवीं प्रतमधां देवा वराम्। गायतीन्तु जपेहियो न स पापेन लियते"॥ नरसिंहपुराणे। " "तिविधो जपयज्ञः स्थात् तस्य भेटं निवी-धतः। याचिकयं उपायुध मानस्य विधा मतः॥ त्रयाणां जपयज्ञानां श्रेयान् स्थादुत्तरोत्तरः। यत्रोचनीचलितिः सप्टयञ्दवद्वरः॥ सन्तम् वार्येद्यानं जपयज्ञः सवाचिकः। धनेत्वारयेनान्त्रमीषदोष्ठी प्रचालयन्॥ किश्चित् शब्दं स्वयं विद्यादुषायुः स जपः स्मृतः। ध्येया यदचरश्रेष्या वर्णाहणें, पदात्यदम्। शब्दार्थमानसाभ्यासः स उत्तो मानसो जपः"॥ तेन स्थादिस्थात्वर्योच्चारणवान् वाचिनकः। स्थां ग्रष्याः योग्य किश्चित् शब्दवान् उपायः। जिह्नीष्ठचालनमन्तरेण वर्णार्थसन्धानासको मानसः।

वाचिकोऽवि उचैर्जपनिपेधमाइ श्रद्धः। "नोचैर्जधं वुधः कुर्यात् साविव्यास्तु विशेषतः"। योगियाच्चवस्यः। "न चंक्रमन् न विद्वसन् न पार्श्वमवस्त्रीक्षयन्। नोपायितो न जल्पंच न प्राष्ट्रतिश्वरस्त्रथा॥ न पदा पादमाक्षम्य न वै विद्यः करी स्तृती। नेवं विधं जपं कुर्यात् न च संयाव- येत् जपम्॥ उत्तिष्ठन् वीच्यमाणोऽर्कमासीनः प्राञ्चुको जपेत्। पाक् कुर्यायवमासीनो वसानो वाससी ग्रमे॥ यदि स्यात् क्षित्रवासा वे गायत्रीमुदके जपेत्। श्रन्यथा तु ग्रुची भूम्यां कुश्रीपरि समादितः"॥ व्यासः। "जपकाले न भापत व्रतद्दोमादिकेषु च। एतेष्वेवावश्वमस्य यद्यागच्छे- द्विजीत्तमः। श्रमिवाद्य ततो विम्नं योगचेमच कौर्सयेत्"॥ योगियाच्चव्क्यः। "यदि वाग्यामकीपः स्याज्यपादिषु कदा- चन। व्याद्वरद्देश्ववं सन्त्रं स्तरेद्दा विश्वप्रस्थयम्"॥ गोतमः। क्षीधं मोद्दं द्यतं निद्दां निष्ठीवनविज्ञित्तम्। दर्गनं क्षीधं मोद्दं द्यतं निद्दां निष्ठीवनविज्ञित्तम्। दर्गनं

विनितानाच वर्जयेकापकमणि। आसामेत् सम्भवे चैषां सारेहिणुं सुराचितम्"॥ वीधायनः। "नाभेरधस संसम्भं कर्मयुक्तो विवर्जयेत्"। छन्दोगपरिश्रिष्टम्। "तिष्ठेदोदयनात् पूर्वा मध्यमामपि शक्षितः। श्रासीतोड्हमाञ्चान्यां सन्धां पूर्वितिकं जपन्॥ एतत् सस्यावयं प्रोक्तं ब्राह्मखं यदिभि-ष्ठितम्। यस्य नास्यादरस्तवन स व्राह्मण उच्चते"॥ पूर्वा प्राप्य सत्थ्यां सप्रणव्याहृति साविवीरुपं विकं जपन् या उ-दयान् स्योदियपर्यन्तं तिष्ठेद्खितो भवेदित्यर्थः। एवं मध्यमामपि सभ्यां यथाश्राति चिकं जपंस्तिष्ठेत्। पिसमान्तु त्रा उड्हमात् नचत्रदर्गनपर्यन्तं जपसासीत उपविष्टः स्थात्। शहः। "कुशवृष्यामासीनः कुशीत्तरायां वा पंवित्रपाणि-रद् द्वा स्याभिमुखो वाचमासामादाय देवतां ध्यायन् सपं कुर्यादिति"। भव च। "प्रणव पूर्वसुद्यार्थ भूभुवः स्वस्ततः परम्। गायत्री प्रणवसान्ते जपे द्वोवसदाह्वता" ॥ इति योगियाज्ञवल्कोत्रन जपे गायच्या द्याद्यान्तप्रणवद्याभि-धानात् प्रागुक्तविके रिप प्रणवह्यं वेधियं किन्तु प्रणवस्त्रेनेकार-दिविद्यम्। परवचनेन सन्धाविधानस्पसंष्ट्रतम्। निन्दया ति चत्यत्य। भिधानश्च।

प्राणायामादिमायबीजपान्तं मन्धोपासनभाष्ट गीभिलः। "तद्यातः सम्धोपासनविधिं व्यास्थास्यामः। सुप्रचालित-पाणिपादयदमः उपविध्योपसम्य प्रागमेषु दर्भेषु प्राड्मुख उदर्मुकी वा वहिंगको यज्ञोपवीती ततः भूभृषः स्वमेद्द-र्जनस्तपः सत्यमिति सप्तथाष्ट्रतयः प्रतिप्रणवाद्या गायव्यापीः क्योतिरसोऽमृतं बद्धाभूभुवः स्वरोम् इति शिशे दश प्रणव-संयुक्तस्विरभ्यस्त पूरककुशकर्चकाच्य प्राचायाम एवं तीन् हत्वा सप्त या योङ्गवाचामित्। ततो मार्जनं प्रणवयाद्वि-

भिस्तिसभिरय गायवा श्रापोष्टिष्ठा इति तिस्भिः ऋद्भि-रयोदकं इस्ते कवा तम नासिकामाधायायतासुरनायतासुर्वा सकत् विर्वा अपेत् ऋतच सत्यचेति विषदकाच्चिमादित्यं चिपेत्। साविव्या छपस्थानम् छटुत्यं चिवसिति प्रय ध्वायन् युक्तमावर्त्तयेदोम् पूर्वां गायकौमष्टक्रतः एकाद्यक्रतः हादग्र-क्रल: पचदग्रुक्ल: भ्रतश्रल: सप्त्युक्तवयित भ्रष्टक्रल: प्रयुक्ता प्रथिवौमभिजयति एकादशक्षलोऽन्तरौचं दादशक्षलो दिवं पञ्चदशक्तवः सर्वदिशः शतक्रत्वः सर्वान् कामान् सइस्र क्षत्वो यक्तिश्चित् तत्सर्वभव जयतीति। श्रय य द्रमां सन्ध्यां नोपास्ते नाचष्टे न स जयित ये तूपासते ते योविया भव-न्तीति"। तत्रय तयाविधं लिपत्वा। "महेशवदनीत्पन्ना विष्णोद्वेदयसभावा। ब्रह्मणा समनुद्धाता गच्छ देवि यद्ये-प्रक्रया" इति पिटद्यितोक्षेन सामगो विस्त्रेत्। यजुर्विच "उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्राह्मणै: समनु-चाता गच्छ देवि यथासुखम् । इति योगियाचयस्करोत्रेन विस्जीत्। सन्ध्योपासना विसर्जनपर्यन्ता सर्वविदिसिदा पित्रद्यितायान्तु कृन्दोगानाम् चादित्यग्रुकाभ्यां नमः इत्य-न्तेन उद्काञ्जलि द्यात्। तदनन्तरं जातवेद्धे ग्रनवाम इति मन्त्रेणात्मरचणम् ऋतं सत्यमिखनेन रुद्रोपखानचानि-ज्डभट्टेनाधिकमुक्तं सामगेन कार्यम्। "रचले वारिणा-क्तानमित्युपतिष्ठेत । ततो सद्रमवीग् वा वैदिकाष्ट्रापात् द्ति क्न्दोगपरिशिष्टवचनद्यं तत्र प्रमाणं वदन्ति । जात-बेट्से शुनवाम इति सन्द्रजपेन पथि खन्ययनमाइ विप्रा-धर्मोत्तरे।"नातवेदस इत्येतकापेत् खस्ययनः पथि। भयैर्विसुचाते सर्वैः खिस्तिमान् प्राप्नयाद् ग्टहम्॥ चिवमिति उद्खमिले-तयोः प्रयोगान्तरावाह तसैव। "व्युष्टायाश्व तथा राह्यां

प्रातदुः खप्नदर्शने। चिवमित्युपतिष्ठेत विसन्धं भास्तरन्तथा। समित्याणिनरी नित्यं प्राप्त्याच धनायुषी। उदिख्यासाः सादित्यमुपतिष्ठेष्टिने दिने॥ चिपेक्ससाञ्जलीन् सप्त मनी-षु:खविनाशने"॥ व्युष्टार्या शतायां तदनन्तर ब्रह्मवर्ण-विचा तद्रेभ्यः प्रत्वेकम् चन्नलीन् ददात् इत्यपि पिटदयिता । स्रति: "एतदष्टाचरं मन्त्रं जपन्नारायणं सरित्। सन्धाय-साने सततं सर्वपापै: प्रमुच्चते"॥ नारसिंहै। "अर्घ्यं दद्यातु सूर्याय विकालेषु यथाक्षमात्। अग्रक्ष एककालेऽपि मध्या-क्केऽपि वियोपतः॥ सन्ध्यां कत्वा तु दस्वार्घ्यं ततः पश्यी-' द्वाकरम्। सन्धानन्तरमध्यदानं ब्रह्मयन्नतर्पणयीरकरणे तधीः करणेतु सामगानां ब्रह्मयज्ञानन्तरम्। असोषां तपं-णानत्तरं तथाच ब्रह्मयज्ञानत्तरम्। नरसिं इपुराणम्। "तर्तीः उर्घा भानवे द्यात्तिनपुष्पसमन्वितम्। उत्थाष्या सूर्वपर्यन्तः मधेस्य भास्करन्तया" इति तर्पणानन्तरं विणुपुराणम्। "पाचम्य च तती ददात् स्याय मसिनाम्निम्। नमो विवस्तते यद्यान् भास्तते विष्णुतेजसे॥ जगत् सविवे गुचये सविषे कर्मदाधिनै। चादित्याय नमसुभ्यं प्रसोद सम भास्कर ॥ दिवाकर नमस्ते असु प्रभाकर नमोऽस्तु ते। तती रद्वधर्मनं कुर्यादभोष्टमुरपूज्ञमम् ॥ जनाभिषेकपुष्पाधां ध्वा-दोनां निवेदनै:"॥ पद्मपुराणे "सम्पूज्य प्रणमेत् सूर्यं समा-श्वितमनास्त्रतः। नमस्ते विष्णुरूपाय नमस्ते ब्रह्मकृषिणे॥ . सहस्रकारी नित्यं नमस्ते दिव्यषस्पै। नमस्ते स्ट्रवपुषे नमस् भक्तवसम् । पद्मनाभ नमस्रित्त कुण्डमाइदभूषण। नमस्ते मर्वनोकेश सुप्तानामपि वुद्यते ॥ सुस्ततं दुष्कृतं वापि सर्वं परास्म सर्वदा। मर्यदेव नमस्ते इस् प्रमौद सम भास्कर ॥ दिवाकर नमस्रीक्ष विभाकर नमोश्सुते। एवं दिनी नमः स्त्रत्य तिः सता च प्रदिचणम्॥ दिजं गां काच्चनं स्पृष्टा ततो विष्णुग्टहं व्रजेत्"॥ समुद्रकस्भाष्यादी व्यासः। "सूर्याय नमः प्रातःसायश्चेवास्त्रये नमः चनस्त्रिष्टाचारी च प्रद्रया-दुदकाव्यक्तिम्"।

षय ब्रह्मयद्भः। तच याद्मवल्यः। "वेदायवंपुराणानि सेतिहासानि शक्तितः। लपयज्ञार्थसिद्धार्थं विद्याञ्चाध्यासिकी जपेत्"॥ व्रहस्पतिः। "जग्राय प्रणव वापि ततस्तर्पणभाच-रेत्"। ब्रह्मपुराणम्। सन्ध्योपासनानन्तरम्। "कला प्रद-चिणं सूर्यं नमस्त्रत्योपविष्य च । स्वाध्याय प्राड्मुष: कला तप्रीहेवतास्पीन्॥ व्रह्मयज्ञानन्तरं तप्णं सामगीतरपरम्। "ब्रतएव क्षवीत देवता पूजां सपयद्वादनत्वरम्" इति हारीत-वचनं सामगस्य मध्याङ्गपुजापरम्। जपयज्ञी ब्रह्मयज्ञः। युतिः। "टचिष उत्तरी पाणिपादी क्षत्वा सपविवयाणि: त्वमिति प्रति-ग्रद्धीत इति च वीनिवप्रयुक्ति भूभुवः खरिति च भय सःविवीः सिति। गीतमाधस्तक्वी। "एकास्ट्यमेकं वा यजरेकं वा सामाभिद्यादरेदिति"। एतदनुमारेणानिरुद्दमहोन प्रणाधः न्याद्वितगायंत्रीपाठानन्तरं चतुर्वेदादिमन्वचतुष्टयं लिखित-मिति। द्वरमितिकात्यायनी। "मचार्वाक् तर्पणात् कार्यः पयाद्या प्रातराहुतै:। वैखदेवावसाने वा नाम्यवेति निमित्तः कादिति"॥ म ब्रह्मयद्भः पराद्वां प्रातराष्ट्रतिरित्यस्थाध्यापनं व्हायश्च इति स्वानीनेकवाकाता तथाच दक्षः। "दितीये प तथा भागे वेदाभ्यासी विभीयते। वेदस्वीकरणं पूर्वं विचारी-उध्यसनं कपः। तर्मिद्धेय शिष्येभ्यो वेदाभ्यामी दि पश्या'त द्ति वैद्यदेवावसारी वा धामदेखगानक्षी सामगानां यद्य-यत्तः। निमित्तकादिति स्वकारुर्पयितयान्यकानेन कार्यः। "बाध सध्यवामा **सदकालं ललामयतः गुरो** देगे विधी-

यते''॥ दत्यापस्तम्बेन सामान्यतः खल एव ब्रह्मयद्विधाः नात् सामगेतरेरिप तर्पणानन्तरं वेदाभ्यामरूपो ब्रह्मयद्यः कार्य दत्त्वयः। योगियाद्मवल्काः। 'दर्भेषु दर्भपाणिः स्थात् प्राच्चु खस्तु क्षताष्ट्रालिः। साध्यायष्ट्र यथायित ब्रह्मयद्वार्थ-माचरेत्'॥

श्रय देवपूजा। कालिकापुराणे। "सनिने यदि कुर्वीत देवतानां प्रपूजनम्। तत्राध्यासन श्रासीनो नोत्यितस्तु सदा-चरेत्"॥ नरसिंदपुराणे। ''तती सन्हार्चनं कुर्यादभीष्ट-सुरपूजनम् । जनाभिषेकपुष्पाणां ध्रपादेख निवेदनैः (॥ ग्रहार्चनं ग्रहसंस्कार इति केचित्। त्रादिपदेन गत्यदीपनै-वैदाप्रहणम् । नरसिंहपुराणे । "नरसिष्ट ग्रहे नित्यं यः समाजनमाचरेत्। सर्वपापविनिर्मुको विष्णुनोके मसीयते॥ गीमयेन सदा तोयैर्यः कुर्यादुपलेपनम्। चान्द्रायणफल प्राप्य विक्युनोके महीयते"॥ विक्युः। "स्नातः सुप्रचानित-पाणिपादः ग्रिकंश्विमाको दर्भपाणिराचान्तः प्राद्मा ख उद-द्माको वा उपविद्योधानी देवतां पूजयेदिति"। दारीतः। "मार्जनाञ्च नयमिकमामोजनानि देवेन तीर्घन" कुर्यादिति श्रयः। "देवार्श्वनपरो विष्रो विसार्थी वसार्थ्यम्। दस टेवलको नाम इध्यक्येषु गर्हितः"॥ निष्पुराणम्। कामा-मक्षोऽपि लुष्धोऽपि मालग्रामशिमाधनम्। भक्ष्या वा यदि वाऽभत्तया सत्वा मुत्तिमवाषुयात्"॥ रताकरे। "सिधा तु गौकरो नित्यं एचा टार्ट्टायिनी। सप्ता भोगकरी नित्य स्वा एकान्त दायदा । कपिना दहते पापं व्रश्चचर्यं प पूजिता"॥ दायदा धनदा "तथा ध्यात्तानना भरना विषमा वलचक्रिका। नैकचक्रं न भग्नारं चक्रलं मुखकानिमम्। रिमिष्ठक्षिणस्यकं नार्श्वयेत सदा ग्रहीण ॥ लिक्नपुराणे

शिववाकां 'शालग्रामशिक्तायां यो मूल्यमुहाटयेनरः। स च क्रेता चानुमन्ता विक्रेता च परीचकः॥ सर्वे ते निर्धं यान्ति याबदाह्रतमंघ्नवम्। चतः संवर्जयेत् पुत्र चक्रस्य क्रयविक्रयम्"॥ ग्टईऽपि प्रतिमाधारणमाच संवस्तरप्रदीपे चाति:। ''केश-वार्श्वा गरहे यस्य न तिष्ठति सहीयते। तस्यानं नैव भीक्षय-सभक्षेण समं स्मृतम्"॥ अर्चा प्रतिमा। प्रश्नपुराणम्। "शालप्रामिशिलाक्यौ यत्र तिष्ठति केथवः। तत्र देवासुरा यद्या भुवनानि चतुर्द्य' ततस्य सर्वदेषपूजनं प्रालगामे वात्तव्यम् धतएव ब्रह्मपुराणे श्रोगङ्गरः। "श्रग्राष्ट्रां सम नैवेदां पवं पुष्पं फलं जनम्। भामग्रामशिनासमं सर्वे याति पविवताम्"॥ लानं सम्बदम्। गालग्रामशिलायां गिषपूजा-नैषेद्याद्यदृष्टमिति प्रामाणिकाः। तथा "गङ्गा गोदावरी रेवा नदी मुक्तिप्रदास्तु याः। निवसन्ती ह तीर्थादाः प्रालयाम-शिलाजने"॥ पूजारताकरे भविष्यपुराणम्। "वरं देइ-पांखागो वरं नरकसम्भवः। न चैवापूच्य भुक्षीत देवं पश्च-समुद्रवम् ॥ सदा पूजयते यस्तु देवं भक्ष्या पितासहम्। मनुष्य-चर्मगा बद्यः स वेधा नाव संग्रयः"॥ स्मृतिः। "गन्धं भुष्यं तथा भूपं दोपं नैवेदा पञ्चमम्। प्रतिमादिषु पूजायामवण्यं कस्पयेद् बुधः। ससे तु (पुष्पमाचेष ससेर्वा प्रतिपूजयेत्",॥ तुरायद्यं भित्रक्रमे पुष्पेणापौत्ययः। विष्णुः। "भाप भायतनं यसात्तसात्तास सदा हरिः"। त्रतएव वीधायनः। "प्रतिमा-स्थानेष्वस्वासावाद्यनविसर्जनवर्धमिति"। शातातपीऽपि। "यस् देवा मनुष्याणां दिवि देवा मनौषिणाम्। काष्ठलोष्ट्रेषु मुखीणां युझस्यात्मनि देवता" इति भामनीति योगिनो वाष्ट्रीपचारनिरासेन , अस्तर्यागकर्त्तव्यतापरमिति देवनः। "यम्नेन सुमनोभिय गत्थपुष्यैः प्रदीपकैः। ग्रहस्यः पूज्ये-

वित्यं खरह हे रहहदेवताः"॥ मरीचिः। "विधाय देवतापूजी प्रातर्हामादनत्त्रस्"। तत्र पूर्वाह्वे देवतार्चनं मुख्य "पूर्वाह्य एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम्" इति मनुवचने एवकार-सारणात्। मध्याङ्गिपि सूर्मपुराणे। "पौरुपेण तु स्तोन तती विष्णुं समर्चयेत्। वैखदेव ततः कुर्यात् वलिकमं ततः परम्॥ भपसर्पस्तु ते भूता ये भूता भूमिपालका.। भूतानामविरोधेन पूजा कर्म करोम्यहम्॥ भनेन स्विष्डिः 'सात् भूतानपसार्थाय साधकः। ततो दिग्बन्धन कत्वा · दिग्यसानपसप्येत्"॥ ततो सधाइसानानन्तरम् पाञ्च-'मिधिक "स्विण्डिले पद्मकं क्रत्या अष्टपणं सक्णिकम्। अष्टा-चरविधानेनाष्ययवा द्वादयाचरैः॥ वैदिकेरयया मन्त्रेनीमः युक्तेन वा पुन:। स्थापित मां ततस्तिमान् अर्चेयीत विच-च्चण. ॥ देवताप्रतिमां दृष्टा यतिश्वेव विद्णिष्टनम् । नमस्कारं न कुर्याद्य उपवासेन ग्रध्यति ॥ हदत्रारदीये। ''नमेवाः ्ञाद्रसस्प्रष्टं निद्भवा हिनिववा। स सर्वधातनाभोगी याव-्र दाह्तसम्बम्॥ स्वीषामनुपनीतानां मुद्राषाच जनम्बर। स्पर्यने नाधिकारोऽस्ति विष्णो वा शहरेऽचिवा"॥ याव-दाह्रतसम्भवं भूतमम्बद्यय्यन्तं प्रनयपर्यन्तिमिति यावत्। भका-रस्य इकारञ्छान्दसः। योगियाच्चवस्यः। "स्रात्वा प्रणव-पूर्वेन्तु देवतान्तु समाधित.। नमस्तारेण पुरुपाणि विन्यसेन् प्रयक् प्रयक् ॥ प्रणवादिममायुक्त नमस्कारान्तकी तितम्। स्वनाम सर्वदेवानां मन्त्र दत्यभिधोयते ॥ भननेव विधानन गन्धपुण्पे निवेदयेत्"॥ कासिकापुराषे। "शिवं भास्तर-मग्निस् केशव कौशिकौन्तया। मानसेनार्चयम् याति देव-नोकादधोगतिम्"॥ मनसापीत्यर्थः। श्रत्रपव गोतमः। व्यदा समर्थस्तदा मनसा समग्रमाचारमनुपासयेत्"। यश्-

पुराणम्। "पादित्यं गणनायच्च देवीं रुद्रं यथाक्रमम्। नारायणं विश्वसाख्यमन्ते च कुलदेवताम्॥ यः सूर्यं पूजये-वित्यं तयाना नियतेन्द्रियः। भक्तिभावसमायुक्तः संगच्छेत् परमां गतिम्" ॥ तन्मना सूर्यपरायणः नियतेन्द्रियः विषया-प्रमन्तेन्द्रियः। भक्तिरूपास्यत्वेन बोधः भावः श्रद्धाः परमां गति मोद्यम्। मत्यपुराणे। "पारीग्यं भास्तरादिष्टे-द्यन मिच्छे हुता शनात् । ज्ञानच ग्रह्मरादिच्छे सुप्ति मिच्छे-ज्ञनार्दनात्"॥ एषु फलेषु एषां गौन्नदाद्यलं न तु फला-न्तरदात्वव्याव्यत्तिः तत्तदाकाविरोधात्। तथा च देवीपुरा-नाम् । "स्वीमेधाद्वानवात्मस्यमात्मयोगान्महीपते। धर्माय-काममोत्ताणां भाजनो विष्णुपूजकः॥ सर्वान् कामानवाप्रोति सम्पूच्य विष्णुवस्रभाम्। विष्नं न जायते तस्य यजेद् यस्तु विभायकम्"॥ अग्रहीतागममन्त्रस्य पौराणिकौ विश्रुपूजा। विषाधमीत्तरम्। "अक्षामः सात्तिको लोके यत्विचिदिनि-वेदयेत्। तेनैव खानमाप्रोति यव गला न शोचते"॥ भविषे। "वर् प्राण्परित्यागः शिरसी वापि कर्त्तनम्। अनभ्यचा न भुञ्जोत भगवन्तं विसीचनम्"॥ अन्यवापि भगवन्तमधीचन-मिल्य हित मत्स्यपुराणे भगवन्तिमित्यव केशवं की शिकीं शिव-मिति पडितम्।

देवपूजायां सर्वेषामधिकारमाद्य विष्णुपुराणम्। "चमा भीचं दमः सत्यं दानमिन्द्रियनिग्रद्यः। महिंसा गुरुग्रस्था तौर्यानुग्ररणं दया॥ पार्जवं लोभग्रन्यत्वं देवनाद्यापपूजनम्। ग्रम्थस्या च तथा धमाः सामान्यः छचते"॥ महाभारते। "काञ्चन्तः कमीणां सिद्धिं यजन्ते दृष्ट देवताः। चिमं दि मानुषे सोके सिद्धिमंवति कमीजा"॥ कमीणां सिद्धिमाका-इतो देवानां पूजनं कुर्युस्तियर्थः। कमीविभित्तिसमिनियाः

र्छाराट् यजस्य रत्यव यजे: पूजापरत्वनियम:। "गवाक्रिकं देवपूजा वेदाभ्यासः सरित् प्लवः। नाग्यवन्याग्र पापानि मशापातकलान्यपि"॥ दामधर्मे विष्णुं प्रति नारद्वान्यम्। "प्रक्रत्वा देवकार्याणि न कुर्वति।समत्क्रियाम्। सन्तुष्टास चमायुक्ता भवेयुरविकत्यमाः ॥ चविकत्यना चात्मस्राघा-रिक्षताः। देवीपुराणे। "वस्तक्र लिविद्योनन्तु न पात्र कार-रोत् कचित्"। रस्ति:। "द्यिता: पत्रावी बहा: कन्यका च रजखला। देवता च सनिर्मात्या इति मुखं पुरातनम्"॥ गीतमः। "रावावदङ्मुखः कुर्घाहवकार्यं सदैव हि। शिवार्चनं सदापोवं ग्रन्थः कुधारुदर्मुस्यः"॥ यत्तु "परा रोपितष्टचेभ्य. पुष्पाण्यानीय योऽर्चयेत्। प्रविद्याप्य च तस्येव तस्य तिवयालं भवेत्"॥ तत् दिजेतरपरम्। "दिजस्त्रेषेध.-पुष्पाणि सर्वतः स्वदाहरेत्"। इति याज्ञवस्कात्। "देयं-तार्थन्तु कुसुममस्तेयं मनुरव्रवीत्" इति वचनाच्च । गीऽग्सर्थे-खणमधांसि यश्चार्थे योषदनस्पतीनां पुष्पाणि स्वदाददीत फलानि च परिष्टि हितानाम् " इति गोतसवचनाच विशेषो क्रोय:। एवम् "खग्रगन्धोन्यगन्धीनि कुसुमानि म दापयेत्। भन्यायतनजातानि कण्टकीनि तयेव च'॥ इति विणा-धर्मोत्तरीक्ष प्रन्यायतनजातानीत्वपि द्विजेतरपरम्। "द्या वायदिवाकाष्ठं पुष्पं वायदिवा फसम्। धयच्छतो हि ग्रह्मानी श्वमाच्छेदनंमर्हति"॥ इति रमृते:। "देवीपरिभृतं मस्तकोपरिष्टतम् अधीवऋष्टतम् अन्तर्जसचान्तितपुष्य दुष्टम्" रति। हरिभक्तिमामके ग्रन्थे पश्चिवादाशिवादककारसञ्ज पुष्पं पोच्चात् कर्गाष्यमिति कसित्। अतएव तसोरिभ-वादननिषेधमाइ बौधायनः। "समिद्वार्य्यदकुमायुष्यात्र इस्तो नाभिवादयेत् यद्यायेषं गुक्षभिति"। एवं गुक्लं समिदादि-

युक्तम्। लघ्व हारीतः। "लपयज्ञस्य लस्य समित्पृष्यकुगान्" तिलान्। दस्तकाष्ठञ्च भैच्यञ्च वहन्तं नाभिवाद्येत्"॥ श्राभ-षाद्येदित्यनुहत्ती ग्रह्णसिति। "न पुष्पाचतपाणिनीग्रचिने अपन दैविपित्रकार्यो कुर्विनिति । श्रद्यता यदाः। "भचतास्तु यवाः प्रोक्ता भ्रष्टाधाना भवन्ति तेण इति भट्टनारायणधतात् । षतएवामरः। धानाभष्टयवेस्तियः। षागमने तु वशिष्ठः। "जयकाली न भाषेत श्रीमपूजादिकेषु च। एतेषु चैव शक्तेषु 🖟 यदागच्छे द्विजीत्तमः॥ यभिवादा तती विप्रं योगचेमन्तु को र्रोगेत्"॥ अव डिजोत्तमपदं निषादस्थपतिषत् कर्म-धारयसमासस्यैव युक्तत्वादपतितत्वैषणिकापरमिति विद्या-करः । वस्तुतस्तु विप्रसिति श्रवणात् तनाः प्रपरिसिति। "याचितं निष्मलं पुष्पं क्षयकौतच निष्मलम्"। इति यदन्ति तथा। "न पुष्पच्छे दनं कुर्धात् देवार्थं वाम प्रस्ताः। न स्यातानि देवेभ्यः संस्थाप्य धामहस्ततः"॥ सृतिः। "पव-चयान्विता पूर्वा प्रशस्ता चाध्यंकर्माण"। शारदायाम्। "मनिनं भूमिसंस्पष्ट कमिकेगादिदूधितम्। चन्नस्परं समा-ञ्चातं स्यजित् पर्स्युपितं बुधः"। "हारीतमातातपी। "समित्-पुरपक्षभादीनि ब्राह्मणः खयमाहरेत्। श्दानीतः क्रय-क्रोते: कर्म कुर्वन् पतत्यधः"॥ क्रये प्रतिप्रस्त बद्धपुराणम् । "पुरुषेर्येय नेविदोः वीरक्रयक्षियाञ्चतेः"॥ वीरक्षयः वीर-वदाञ्चाश्रुन्येन विक्रतुरूपन्यस्तम् सेन क्रयः तद्भुवाया क्रिया तयाद्वतै:। सप्रदारोतः। "स्नानं कत्वातु ये के वित्पुप्पं गृह्वति वै दिजाः। देवतास्तव गृह्यन्ति भयोभवति काष्ठ-वत्"। एतमु हितौयस्रानाभिप्रायमिति रदाकरः। यहा सस्यस्हे। "साला सधाइसमये न सिन्धात् कुमुर्म नगः। तत्पुरपस्यार्घनाद्दे विनयये परिपचते"॥ आनमालायाम्।

"पुष्पं वा यदि वा पत्रं फलं नेष्टमधीसुखम्। पुष्पाञ्जसि-विधि दिला यथीत्पनं तथापंषम्"। एवच्च पद्मप्राणे "बादिखं गणनायच इत्यादि यथाक्रममिखनेन शब्द-क्रमाभिधानात्। सूर्यं गणेशं दुर्गं शिव विणुं सम्पूज्य ब्राह्मणमन्यांय पूजयेत्। ग्रहीतागमन्त्रस्य तु तत्तत् पूजनादेव पौराणिकपूजनसिंडिः। तदनन्तःपातिनस्तु पृथक् पूजनम्। तत्र सर्वेषां शक्तितारतस्येन वस्यमाणपोडशोपचारादिकं कुर्यात्। धाराती जलेनापि। तत्र प्रथमतः स्येपूजा सम्पन्य प्रथम सूर्ध्यमपरान् यः प्रयूजयेत्। नतत्र तत् कतं पापं संप्रतो-च्छन्ति देवताः। इति ब्रह्मपुराणात्। प्रागुत्तपद्मपुराणवच-नाच। यतु भविष्यपुराणे। "देवतादी यदा मोहात् गणेशो न च पूच्यते। तदा पूजाफलं इन्ति विद्यराजी गणाधिपः"॥ द्रत्यनेन गणेशपूजनम् भादावुतं तत् स्येपूजातिरिक्षे ज्ञेयम्। "श्रादित्यं गणनायच देवीं रुद्र ययाक्रमम्। नारायणं विश्र-षात्यमन्ते च कुरूदेवता." ॥ इति पद्मपुराणैकवाम्यत्वात्। "बादो विनायकः पूज्योऽन्ते च कुसदेवताः"॥ इति बहुच म्बद्धापरिशिष्टोतः गौथादिपूजनपर्मिति कस्पतर्मस्तिभिः रपि स्थिपुजनसादिलमुक्तम्।

भूतग्रहिप्रकारमा स्विष्यपुराणे। "गलायायतनं गृहसर्के ग्रहतनुर्यजेत्। पूरक कुक्षक कला रचक समाहितः॥
कलो हारण दोषास्त हन्यात् कायादिसकावान्"। श्रादिपदेन
वाद्मन सोक्तप्रादानम्। यायव्यान्तेयमा हन्द्रवाक्षणे भिर्यथाक्रमम्। किल्लिपं धारणाभिय हन्यात् गुद्धार्यमात्मनः।
ग्रीपणे दहने स्तको स्वाने च ययाक्रमम्। वायुग्नोन्टक्षनास्याभिधारणाभिः क्रते सति॥ ध्यायेहिग्रहमात्मानं
भणवेनाकं वत् स्थितम्। देशं तिनेव सद्भिन्य पश्चभृतमयं

परम्"॥ तेनैव प्रणवेन। सिश्चन्य संघटा। "स्यूसं सूक्तां तद्याद्वानि खर्षानेषु प्रकस्य च"। द्रह्यादीन्यभिधाय। "श्रावाद्दनादिकर्माणि रहाच प्रणवेन तु"। श्राटिपदेन संख्यापनसम्बिधापनसञ्जिरोधनानि बोध्यानि। "यावद्यागाः वसानन्तु साम्निध्यं परिकल्पयेत्। दत्त्वा पाद्यादिक पूजा शक्या चोन्न' निवेदयेत्॥ जप्ता च विधिवन्नत्वा ततो देव विसर्जयेत्। एप कर्माक्रम' प्रोतः सर्वेषां यजनक्रमे"॥ अव विसर्जयेदित्यन्तेन यथोक्षामकंपूजाम् श्रभिधाय एप कर्माक्रम इत्यमेन सर्वेषां देवानां पूजने श्राकाश्चितभूतश्रद्धादिकार्मात-दिश्यते। नतु तन्मात्रोपयुक्षाङ्गन्यासादिकम् एवञ्च "प्राक् पश्चिमोद्वास्यय प्रात सार्यं निशासु च" इत्यनेन साय पश्चिमा-भिमुखपूजनं नान्धदेवपूजायाम् श्रन्वेति किन्तु सप्ताचरसूर्थ-मन्त्रविषय एव शिष्टाचारोऽपि तथा। तत्र पञ्चोपचाराः तत्र गन्धा भविष्ये "चन्दनागुरुकपूर्यकुद्गोगीरपद्मकै:। त्रनुलिप्ती नरैर्भक्त्या ददाति मानसिपातम्"॥ पद्मकं पद्म श्रनुलिप्तः सूर्यः. प्रवारणात्। तथा "मुकुलैनीचयेत् भानुमपक्षं न निवेदयेत्। चलाभे नतु पुष्पाणा पत्नाण्यपि निवेदयेत्" ॥ तथा "मिल्लिका मानती चैव दूर्वा ग्रोकातिमुक्तकः। पाटला करवीरच जया पावन्तिरेव च ॥ कुटनस्तगरशैव कर्णिकारः कुरुग्टकः। चम्पको दक्को कुन्दो वानो वर्दसमिका॥ ष्यमोक तिसकं सोभस्तया चैवाटरूपकः। मतपत्राणि चान्यानि वकाह्य विशेषतः॥ भगस्य विशुकतदत् पूजायां भास्क-रसातु। विस्वयव शमीपवं पत्रं सङ्गरनसाच ॥ तुलसी कालतुलसी तया रत्तश्च चन्दनम्। गीपति वसक वापि यथेष्ट' विनिवेदयेत्॥ यावन्ति देहरूपाणि तत् प्रस्तिकुलेषु वै। तावद् युगसहसाणि स्यादीने सहीयते"॥ गोष्टपं सप-

श्रेष्ठं स्वत् मदत् परिभाणं वस्यक्ति प्रशंसोयां कर्ति रस्नाकरः।

षय गणेगपूजनम्। तत्र तस्मी व्यतिरेकेण। "न तुसस्या विनायकम्" इति वचनात्। तत्रावाहनविशेषमाइ। वायुः पुराणम्। "विनायकं तथा दुर्गं वायुमाकाश्रमेव च। श्रावा-ध्येद्याष्ट्रतिभस्तथैवाध्विज्ञमारकी"॥ ततो दुर्गापूजमम्। भविष्यपुराणम् । "चन्दनेन विलिम्याचीं अग्निष्टोमफलं सभेत्। विसिध्य क्षणागुरुणा वाजपेयफर्स सभेत्"॥ भविष्ये। "मिक्किकामुत्यलं रस्यं ग्रमोपुत्रागचस्पकम्। प्रशीक-कि शिकार च द्रोणपुष्पे विश्वयतः॥ करवीरश्रमीपुष्पं कुङ्गमं नागके प्रस्। यः प्रयच्छति पुर्वाये पुष्पाखेतानि भारत॥ चिष्डिकायै नरस्रेष्ठ भक्तिस्रहासमन्दितः। स कामानि जिनान् प्राप्य चण्डिकानुचरी भवेत्"॥ देवीपुराणम्। "सम्बरीभिः कुगानाच्य विस्वपत्रेय गोभितेः। एकानुकोस्त्रया सर्वेर्जस्त है: खनसम्बे."॥ ब्रह्मपुराणे "विसंक्षित्वा च सूर्याय सर्वान् कामानवाप्रयात्। चीरेण तर्पण कत्वा मनस्तापैः प्रमुच्यते॥ दक्षा तु तर्पणं कात्वा कार्य्यसिंहिर्भवेत्रृणाम्। पत्नै: पुर्णेर्यद्या-नाभं सर्वेषिधिमयैः ग्रभम्॥ सुक्त नैर्वेषेदेवान् ग्रपक्षं न मिवेद्येत्। फल सधितविष्य कानापक्षमिप स्वजित्"॥ अविष्य "सर्वेषामिव धूषानां दुर्गाया गुग्गुनुः प्रियः। छुतयुक्ती विशेषेण् सततं प्रीतिवर्धनः॥ साहिपास्यं धृताक्तन्तु दस्वा विख्यमयापिया। वाजवेयफलं प्राप्य दुर्गासीके महीयते" ॥ विस्वेऽपि प्रतयोगः। "सक्षयागुरुधूपेन पूषिता सर्वमङ्गला। गोधरीत् पापकिनितं यथानिदिव काञ्चनम् ॥ सक्षणागुरु-धूपेन रूपागुर्मिदितष्टतमिद्याग्यगुगा,नुविख्याम्यसमध्येन। तया "प्रतप्रदोपदानेन चिष्ठिकां पूज्येत्र । स्रोत्रज्ञमेध फलं

प्राप्य स्वर्गलोंके मधीयते॥ तैबदीपप्रदानेन पूजियला तु चिष्डिकाम्। वाजपेयफल प्राप्य मोदते सह किन्नरें ॥ तैस तिसभवम्। भविष्ये। 'पाम्बद्ध नारिकेस्य खर्जर वीजपूरकम। य प्रयच्छति दुर्गायै सगच्छति पर पदम्"॥ तत त्रिवपूजन भविष्ये। "चन्दनाचागुरौ न्नेय पुण्यमष्टगुण नृप। क्षणागुरी विशेषेण दिगुण फलमादिशेत्"॥ तथा "चर्कपुरुपसइस्रेभ्य करवीर विशिष्यते। करवीरसइस्रेभ्यो विस्वपत्रं विशिष्यते"॥ तथा च "करवीरसमा ज्ञेया जाती वकुलपाटला । खेतमन्दारकुसुम सितपग्रच तसमम्। नागचम्पकपुद्रागौधुस्तूरकुसमा स्मृता "तथा। "केतकी चातिसुत्राच कुन्दी यूथी सदक्षिका। ग्रिरीयसर्वेषस्वकुत्रसु मानि विवर्जयेत्॥ सुकुलैनिर्घयेद्देवमपक्क न निवेदयेत्। फलं कथितविषय यस पक्षमपि त्यजेत्॥ अलाभेन तु पुष्पाणा पत्राखापि निवेदयेत्। विस्वपत्रैरखण्डैय यो सिङ्ग पूजयेत् सक्षत्। सर्वपापविनिम्ता शिवलोके सहीयते"॥ तथा "वानकानि कदम्बानि रात्री दैयानि ग्रहरे। दिवा शेषाणि पुष्पाणि दिवाराकी तु सक्तिका"॥ शिवपुराणे। "गुमा लु घृतसयुक्त य शिवाय निवेदयेत्। रुद्रलोकमवाप्रोति गाण पत्यच विन्दति"॥ भविष्ये। "दिधिय प्रतसयुक्त दत्त्वा विस्वमधापि वा। चिनिष्टोमस्य यज्ञस्य फलमाप्नाति मानव "॥ द्धिय कपिय विस्व विस्वफत्तम्। " ष्टतदीपप्रदानेन शिवाय जातयोजनम्। विमान समते दिया सूर्यकोटिसमप्रभम्'॥ शिवपुराणे। "पृतेम तिसतेसेन तथा चैबीमधौरसे। दीप प्रज्वात्य देवेरी भक्त्या सहितसाषुयात्"॥ घोषध्य सर्पपाद्या । "गुडखर्ड्यतानाञ्च भद्याणाञ्च निवेदने। पृतेन पाचिता माञ्चतेषा शतगुणं फलम्॥ सातुलुइफलाधानि सपकानि

निवेदयेत्। गिषाय तत् फलं तस्य यद्गस्याणां निवेदने॥ गन्धभूपनमस्तारेर्मुखवाद्यस्य सर्वतः। यो मामर्चयते तत्र तस्य तुष्याम्यहं सदा"॥

• यय पाधिवशिवसिद्धपूजाविधिः। ब्रह्मपुराणम्। "इरी सद्देखरसैव शूनपाणि: पिनाकप्टक्। पश्पति: शिवसैव मदादेव द्ति क्रमात्॥ सृत्तिकाग्रहणे चैव घटने च प्रतिष्ठने। पावाहने च स्वपने पूजने च विसर्जने। हरादौनि च नामानि मद्दादेवान्सानि कीर्सयेत्"॥ भविष्ये। "सर्वाय चितिमूर्त्तये नमः भवाय असमूर्त्तये नमः रद्रायानिमूर्त्तये नमः उपाय वायुमूर्त्तये नमः भौमायाकाश्रमूर्त्तये नमः पश्रपतये यजन-मानसूर्रीये नमः। महादेवाय सोमसूर्रीये नमः ईमानाय स्र्यमूर्त्तये नमः। सूर्त्तयोऽष्टो शिवस्यैताः पूर्वादिक्रमयो-गतः। भाग्नेय्यन्ताः प्रपुष्यास्तु वेद्यां चिद्रे प्रिवं यजेत्"। शिवमिति नमः शिवायेति मन्त्रेष लिप्ने शिवं पूजयेत्। तती वामावर्त्तेन मूर्त्तीरष्टी पूज्येदिति वाक्यार्थः। भवाग्रे पूजा-निपेधात् "देवागे खस्य चाग्रे प्राची प्रोक्तागुरुक्तमैः"। द्रत्या-ममोक्रस्य विषयो न किन्वभिधान्यसिष्ठप्राची याञ्चा। र्दनुसारादेव पूर्वाद्याग्नेय्यन्ताः पूच्याः । सहेतुकनिषेधस्त रुट्र-यामले। "न प्राचौमग्रतः शक्योनेदिचे श्रांतिसंस्थिताम्। न प्रतीचीं यतः एष्टमतो दचं समाययेत्"॥ यजमानः श्रमी-र्जगत् संदारकर्तुः प्राचीं न समाययेत्। संदारकर्तुः सांसु-स्यनिषेधात्। प्रव्यपञ्चवक्षपचे प्रधानं वक्ष' प्राच्यवस्थितम् ं एकवक्तपचे सुतरां तथा। तद्रूपमाचादित्यपुराणम्। "सीम्यं मौनौन्दुभृत् त्याचं एकवक्षं चतुर्भुलम्। श्रूलपङ्कसस्त्रञ्च वरदामयपाणिकम्॥ भायताचं सुराराध्यं सर्वाभरणभूषितम्। शिवरूप गरहे सुर्थात् प्रासादे वाष्यनिन्दितम्"॥ भविषे ।

"यः क्षत्वा पार्थिवं लिङ्गं अर्चयेत् ग्रुभवेदिकम्। प्रदेशव धनः वान् स्वीमानन्ते रुद्रोऽभिजायते"॥ शिवधर्मी । "वालुकानि च लिङ्गानि पार्थिवानि च कारयेत्। सहस्रपूजनात् सीऽपि सभते वाञ्छितं फलम्"॥ ततो विषापूजा श्राचारचिन्ता-मणौ। पोडघोपचारा:। "श्रासन खागतं पाद्यमध्यंमाच-मनौयकम्। मधुपर्कमाचनस्नानवसनाभरणानि च॥ गन्ध-पुष्पे भूपदोपौ नैवेद्यं वन्दनस्या"॥ कालिकापुराणे। "बासनं प्रथम ददात् पौष्पं दारवमेव वा"। प्रपश्चसारे। "षर्घापाद्याचमनकमधुपर्काचमनान्यपि। गन्धादयो नैवे-द्याला उपचारा दश क्रमात्॥ गन्धादयो नैवेद्याना पूजा पञ्चोपचारिका"॥ सभुपर्नेत्यच स्नानौयमिति कला व्यब-इरन्ति। कालिकापुराणे। "पाद्यार्थमुदक पाद्यं केवलं तीयमेव तत्। तत्तेजसेन पात्रेण प्रह्वेनाय प्रदापरेत्॥ कुश-पुष्पाचनिर्वापि सिहार्थियन्दनैस्तया। तोयैर्गसैर्ययासक्षेरघ्यं ददात् सिदये। अस्तीकरण कुर्यात् सल्लं धेनुमुद्रया"॥ तया ''एवमव खर्घ्य पात्रे एधा मन्त्र जपेत् सुधौः। तत्तीयैः सेचयेत् शीर्षं गन्धपुष्पादिक तथा ॥ न द्याहास्करायार्थं श्रह्यतायैविचचण । उदक दौयते यसु प्रसम फेनवर्जितम् ॥ श्राचमनाय देवेभ्यस्तदाचमनमुख्यते। यथातया सुगर्यवा प्रसन्नै: फेनव जितै: ॥ तत्ते जसेन पात्रेण प्रञ्जापि प्रदापयेत्। स्वर्णस्त्रीदके साने कपूराद्यधिवासितम्। तेजसै: कास्यपा-त्वी ग्राइ वी तिविषद्येत्"॥ स्कान्दे। "दि चिणावर्तगङ्गस्य तोयन योऽर्चयेद्वसिम्। समजनाक्षनं पाप तत्त्वणादेव नश्यति"॥ वराइपुराणे। "सस्मृतः कौर्त्तितो वापि दृष्टः सृष्टोऽपि वा प्रिये। पुनाति भगवद्गत्तयण्डालोऽपि यष्टच्छया॥ एतज्-त्रात्वा तु विद्विद्धः पूजनीयो जनार्दनः । वेदोक्तविधिना

भद्रे पागमीतीन वा सुधीः" ॥ भद्र इति पृथियाः सम्बोधनं तथा "यावत् सर्वेषु भूतेषु सद्वावी नोपजायते। तावदेव-सुपासीत वासनः कायकर्माभिः"॥ चत्राक्ररसी। "सर्वपाप-प्रमत्तो दिधाये सिमपमस्त्रम्। पुनस्तपस्तो भवति पङ्ग-क्रिपावनपावन."॥ विष्णुपुराणे। "गत्वा गत्वा निवर्शनो चन्द्रस्याद्यो पद्याः। चदापि न निवर्तनी हाद्रमाधरः चिन्तकाः"॥ इ।द्याखरस्तु। नमी भगवते वासुदेवाय। नारसिष्ठे। "योऽष्टाचरेण देवेशं नरसिष्ठमनाभयम्। गन्ध-पुष्पादिभिर्नित्य अर्धयेदिर्घितं नरः॥ गत्यपुष्पादिसकत्मन-नैव निवेदयेत्"॥ नमी नारायणायित्यन्न। "ब्रष्टाचरम्य मन्त्रस्य ऋषिनारायणः स्वयम्। इन्द्य देवो गायवो परमाता च देवता॥ ध्यात्वा प्रणवपूर्वन्तु तसाम्ता सुसमाहितः। नमस्कारेण पुष्पाणि विन्यसेन् पृथक् पृथक्"॥ कालिका-सुराणे। ''यहोयते देवताभ्या गन्धपुण्पादिक तथा। श्रम्य-पावस्तिसोधैरभिविच ससुत्स्जित्॥ नैवेदां दविषे वाम पुरतोऽपि न एष्ठत.। दोप दिचणतो ददात् पुरतो वा न वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दि चिणे। निवेद्येत् पुरोभागे गन्धपुरपञ्च भूषणम्"॥ यदापि देव्या इत्युपक्षस्य तया स्थापयेत् यथा काया नाययेत्। "विभौतकाकाकार्यः-सुद्री स्थाया न चाय्येत्। सामादीपमनुष्याणां चन्येया माणिना तथा" दति प्रयोगसागरात्। शारदायाम्। तत तत्र जल द्वादुपचारान्सरान्तरे। एतज्ज्ञ स्थानमुपचारद्रव्यः दानाय। तयाद काचिकापुराणम्। "ग्रदेव दोयते पश्च मण्डस्य तदुत्सजित्। वाक्पुष्पतीयैः कुसूर्मं विमा यच्छा-द्व भवेत्। एशस्य तहहिदंशे हाराही विनिवेद्येत्"ग

क्राइकमिति पद्मस्यावरकं कुतुमं विना यदन्यत्तत् पद्मस्य विष्-र्द्यादित्यर्थः। "प्रतिमादिषु यद् योग्यं गावे दातुष तत्तनी। द्वादयोग्यं पुरतो नैवेद्यं भोजनादिकम्"॥ नरसिंद्वपुराणे। "स्राने वस्ते च नैवेदो ददादाचमनीयकम्"। गन्धादयसु "सुगससमनी धूपदौपनैवेदावन्दनम्" इत्यत्रीक्षाः। त्राप्रकानाः गन्धपुष्पमात्रमाञ्च व्रह्मपुराणम्। ""प्रणवादिसमायुक्तं नम-स्कारान्तको कितम्। स्वनाम सर्वसत्वानां मन्त रत्यभिषीयते॥ मनेनेव विधानेन गन्धपुष्पे निवेद्येत्। , एकैकस्य प्रकुर्वेत यद्योहिष्टं क्रमेण तु॥ साम्नेये केवलपुष्पेणापि पुष्पमुपक्रम्य "धाला प्रणवपूर्वन्तु तदाना 'सुसमाहितः। नमस्कारेष मन्त्रेष विन्यसत्तु प्रथक् प्रथक्"॥ ध्यात्वेत्यव स्नात्वेति तवास्त्रा द्रत्यव्र दैवतमिति योगियाच्चवस्केर पाठः। नरसिंहपुराणे। मरकस्यान् प्रति यमवाक्यम्। "असाभे चान्यद्रव्याणामुदके-नापि पूजित:। यो ददाति स्वकं स्थानं सत्वया किंन पूजितः"। राघवभद्दध्तम्। "सर्वीवचारवस्त्रनामसाभे भाव-नैव दि। निर्मातिनोदकेनाय पूर्णतेखाद नारदः"॥ प्रण-वादिनमोऽन्तस्य नास्रो मस्वलाभिधानासम्वादौ पादााद्यभिः धान न मन्द्रमध्ये पाद्याद्यश्योगदित्वे विकत्पः। "पाद्यश्चेष द्यतीयया चतुर्व्यार्घ प्रदापयेत्"। इति नरसिंष्टपुराणात् श्रद्धापादादिकत्तवित सत्यपुराणात् द्वतीयया पुरुषस्की-यया ऋचा। "यागच्छ नर्रसंहित यावाद्याचतपुष्यकैं!। एतावतापि राजिन्द्र सर्वपापैः प्रमुखते ॥ प्रचतपुष्पकैस्तखु-सादिपुष्पकै:। "दस्वासनसयार्घाष्ट्रं यादासाचसनौयकम्। देव-्रदेवस्य विधिना सर्वेषायैः प्रमुखते । सापितो येन भक्त्या च नरसिंद्रो नराधिय। सर्वपायविनिर्मुको विष्णुनोकं स गच्छति"॥ काशिकापुराचे। "कार्पासं सर्वतो भद्रं दयात्

सर्वेध्य एव तु। नेकात्सरक्षं दद्यानु वासुदेवाय चेनकम् । तथा "तत्पूर्वं पूज्यित्वैव मन्त्रेर्देवाय चौक्षजेत्। निर्दर्भं मिलनं जीर्णं किसं गावाविजितिम्॥ परकीयं चार्षः दंद्रं स्चीविष्ठं तथीपितम्। उप्तकेगं विध्तस्व सेष-सूत्रादिष्ट्रियतम्"॥ उप्तकेशं केशेन सह वापितम्। "वर्ज येत् स्रोपयोगेन यज्ञादावुपयोजने । पताकाध्वजवस्तादो स्रृतं वस्तं नियोजयेत्॥ ग्रैवेयकादिसंगक्तं सोवर्णं राजतस्व व।। निवेदयेतु देवेभ्यो नान्यत्ते असस्भावम्। प्रावारः पानपावश्च गण्डको गटहमेव वाण् ॥ गण्डक साभरणविश्रेष: "पर्यद्वादि-यदन्यच सर्वं तदुपभूषणम्"। जाग्नेये। "चन्दनागुरुकपूर्-कुइमोगीरपद्मकै:। चनुलिमो इरिर्भक्त्या वरान् भोगान् प्रयच्छति॥ कालेयकं तुरुष्काच रक्तचन्दनमेव च। तृष्ां भवन्ति इसानि पुर्यानि पुरुपोत्तमे"॥ कालिकापुराखे। "गन्धो ससयकी यस्त देवे पिवेत्र च स स्मृतः। तत्पको वा रसो यापि चुर्णी वा विषातिष्टदः"॥ तषेव "चन्दनागुरुदश्वा तु रुद्यति दाइजो रसः। प्रशस्तगश्चयुक्तानां गश्चचर्णानि यानि तु"॥ विष्णुधमोत्तिर। "चन्दनागुरुकपूरसगमदन्तर्येव व। जातीफर्स तथा दस्वा अनुसेपनकारणात्॥ अतोऽन्धं नैव दातव्यं किञ्चिदेवानुसीपनम्। अनुसिप्तं जगसायं तासष्टन्तेन बीजयेत्॥ वायुलोकसवाम्रोति पुरुपस्तेन कर्माणा। चामरै-वीजयेद् यस्तु देवदेवं जनाई मम्॥ तिलप्रस्पप्रदानस्य फलं प्राप्नोत्यस्ययम्"॥ राघवभद्दध्तम्। "यद्भपाविस्थितं गन्धं मन्त्रेददात् कनिष्ठया। कनिष्ठाहुष्ठसंयुक्ता गन्धसुद्राप्रकौ-र्निता''॥ नरसिद्धे। "अपर्युपितनिश्किद्धैः प्रीचितैर्जन्तुः वर्जितै:। स्वीयाराबोद्ववैर्वाप पुष्पै: सपूजयेदरिम्"॥ अध्या संपुजवेद्धरिमिति स्थानान्तरे चतुर्यद्वरणे पादः। देवौपुराणे ।

\*खयं पतित पुष्पाणि त्यजेदुपद्यतान्यपि"। नारसिंहै। "मिसिकामासती जाती केतकायोकचम्पकैः। पुनागनागः वकुन्तै: पद्मेश्त्यसजातिभि:॥ तुसमी करवीरैय पसामावन्ति कुं जिसे:। एतेरचेय कुसुमे: प्रमस्तैरच्तं नर: ॥ दत्ता दग सुवर्णस्य प्रत्येवां फलमाम्रयात्"॥ नागो नागर्वयरः।योगिनी-तन्ते। "विस्वपत्रश्च माध्यश्च तमानामसकीदनम्। कह्नारं तुलसी चेष पद्मच सुनिपुष्पकम्। एतत्पर्युपितं न स्थात् यचान्यत् कलिकात्मकम्"॥ नारसिंह। "ग्रमीपवसदसेभ्यो विस्वपनं विशिष्यते। विस्वपनसदस्यो वकपुणं विशि ष्यते''॥ राघवभद्रधृतम्। "कलिकाभिस्तथा नित्यं विना चम्पकपश्चकै:। ग्रुष्के ने पूजयेदिणुं पर्वे: पुष्पै: फलैरपि"॥ विष्णुधमात्तिरम्। "रतानियानि धमात्र चैत्यष्टचोद्धवानि च। क्रमशानजातानि यानि यानि चाकासजानि च"॥ तथा "कौटनं ग्रात्मसौपुष्पं गिरीपच जनार्दने। निवेदितं भयं घोरं निख्लाचा प्रयच्छति ॥ अभुजीवकपुरपाणि रक्षान्यपि चं दापयेत्। अनुक्षरक्षकुसमदामाद्दीर्भाग्यमाष्ट्रयात्"॥ भागनेये। "पद्मान्यम्बुसमुरानि रक्षनीले तथोत्पले।" सिंहोत्पलब क्षण्य द्यितानि सदा सूप'॥ भविषे। "पद्मानि सित-रक्तानि कुसुमान्युत्पन्नानि च। एयां पर्युपितायद्वा कार्या पञ्चितिश्वातः । तुलस्यगस्यविस्वानां नास्ति पर्य्यापतासाता"॥ वामनपुराणम्। "विस्वपतं यमीपतं भृष्टराजस्य पतकम्। त्समो क्षण्तुसमी मदास्ष्टिकरं हरे:"॥ यमु "स्रमीणि तथान्यानि वर्जियत्वा तु केतकीम्"। इति वामनपुराणीये केतकीवर्जनं तसरसिंहितरपरम्। वामनपुराणे। "पारिभद्रं पाटला च वकुलं गिरियायिनी। तिलक जम्बुवनजं पीतकं तगरन्विष। एतान्याद्य प्रशस्तानि सुसुमान्यचातार्घने"।

गिरिग्राधिनौ म्बेतापराजिता। जम्ब्वनजं खेतजवाकुसमम्। विष्णुभमोतिरे। "रक्षायोकस्य कुसुममतसीकुसुमन्त्या। चम्पकस्य तु-देयानि तथा भूचम्पकस्य च"॥ अतसी प्रनः। नारदीयमप्तसहस्रे। "मालती वकुनाश्रीकशिकाली नव-, संस्का। अकानतगराद्वीठमिसकासध्धिण्डिका ॥ यूथि-काष्ठापदं कुन्दं कदम्बं मधुविङ्गलम्। पाटला घम्पकं क्षण्ं सवद्गमतिमुत्रकम्॥ केतकं कुरुवकं विस्वं, कद्भारं वासकं **दि**ल । पञ्चविंगतिपुरपाणि सञ्जीतुर्वाप्रवाणि में " स्कान्दे। "न भावो सफला यस म विष्णोस्तुलसीयनम्। तं स्रोक्टरेय-सद्यां यव नायान्ति वेष्णवाः ॥ यवसात्यया सर्वा यव शादगौ लवर:। तुनसी सासती धाबी तब विश्वा: त्रिया सर ॥ पूर्वा दश्ति पापानि धावी स्रति पातकम् । स्रीतकौ हरेद्रोगं तुलसी हरते वयम्॥ तुलसीं प्राध्ययो नित्यं म बरोति समार्थनम्। तस्वादं प्रतिग्द्रहासि न पूजां दशः वाधिकान्"॥ चतएक "ग्रज्ञाति तुससी मुख्कामधि पर्श्वित्रं इरि:"। तथा "वन्धे पर्यावतं तीयं वन्धे पर्याधते दसम् न वच्यं जाक्रवोतीयं न वच्ये तुलसीदमम्॥ तुलसीपत-भादाय यः करोति समार्चनम् । न पुनर्गेनिमाप्रोति सुक्रि-भागी भवेषि सः"॥ तया "समञ्जादरलेयुक्त सुलभीसभाषैः चित्रो। कुर्वित्स पूजनं विच्छोस्ते क्रतार्थाः कन्नो युगे ॥ साने धाने तया दाने प्रायन केयवार्चने। सुनसी दहते पाछे कीर्तने रोपणे करी । तुसस्यमृतनामासि सदा तं केमव-मिये। केमवायं चिनोमित्वां वरदा अव मोमने ॥ त्वदक्र-सभवेदेव पूजयामि यया इरिम्। तथा कुर पविवाधि मनो अनविसामित । अस्तेवानित यः कुर्धात् स्ट होत्या त्रसोदसम्। पूजनं वासुदेवस्य सचकोटिएसं सभेत्" ॥

राधवभद्दधतम्। "सद्यः पर्य्युषिता वापि निर्माल्या नैव दुष्यति। तथान्धैन इरेस्त्षिस्त्रस्या तुष्यते यया"॥ गर्ड-पुराणे। "गवामयुतदानेन यत्फलं सभते खगः तुलसीपव्र-मोकेन सम्प्रल कार्तिक स्मृतम्"। तथा "तु चर्मी विना यत् क्रियते न पूजा सानं न तद् यत् तुलसी विना कतम्। भुक्त न तद् यत् तुससी विवर्जितं पीतं न तद् यत् तुससी विवर्जितम्"॥ चन्यवापि "तुससौदससंमिय यसीयं शिरसा वहित्। सर्वतीर्वाभिषेकस्य तेन प्राप्त फलं भुवम्" ॥ वैणावा-स्ते धासः। "जलक्षिया भवेद् यावस्त्रसोमूलस्तिका। तावत प्रोचाति विम्बात्मा भगवान् विष्टिभिः सह ॥ संकान्यां पचयोरको दाद्यां निश्चि सन्ययोः। किन्दन्ति तससीये ंतु ते किन्दन्ति हरे: ग्रिरः" ॥ विष्णुधक्योत्तरे। "पुष्पाभादे च देयानि प्रमाणि च जनार्दने। प्रचाभावे जलं देयं तेन पुरुषमधायते ॥ ज्ञानमालायाम्। "नाचतैर्वयेदिणं न तुलस्या विनाधकम्। म पूर्वधार्घयदुर्गा नीनात्तकेदिवाकरम्"।

पय धपः। वामनपुराणम्। "रुष्टिकाएयं कनं दारसिद्धकं सागुरुं सितम्। यद्वी वातीफनं त्रीये ध्पानि न्युः
प्रियाणि वेण ॥ रुष्टिका मासोकनो मष्टिकाच्यगुम्पुनुः मित
कपूर सितित पाठे सिता गर्करा। यद्वी मध्वी। त्रीयो
विणी। कालिकापुराणे। "पुरप धूपश्च गन्धस उपचारांन्तयापरान्। क्षित्रविदेय देवेग्यो नरी नरकमापुर्यात्। नभूमी वितरेष्ट्रपं नासने न घटे तथा। यद्या नथाधारगतं क्षत्वा तं विनिवेदयेत्"॥ विष्युधमीत्तरे। "धूपदः सर्वमाप्रीति धपदः सर्वसम्पति"।

चय दोप:। विष्युः। "न एतं तिस्तिसं विना किश्वि-दीपार्ध इति" विष्युधर्मेसिर। "यावदिश्विनिमेपाणि दोपी देवालये व्यलित्। तावद्दपंसदसाणि स्वगैनोके सदीयते"। तम वया "यः कुर्यात्तेन कर्माणि स्वादसी पुष्पितस्यः"। तम देवदत्तपदोपेत। कालिकापुराणे। "सभ्यते यस्य न्तापस्तु दोपस्य चतुरह्नात्। न स दोप इति स्वातो व्योमविद्धस्तु-स स्वृतः॥ नेतास्तदकरः स्वर्धः क्रूरतापविवर्कतः। स्विष्दः यद्रादितो निर्धूमो नातिद्वस्यकः॥ सर्वेसदा वसुमती सद्ति न सिदं दयम्। अवाय्यपद्यातद्य दोपतापं तथेव व"॥ तथा "दीयद्वर्ता भवेदन्यः काणो निर्वापको भवेत्"॥

श्य नैवेदाम्। नारसिंह। 'भोचका पनसं लख्य तथा-न्यज्ञवन्तीपारम्। प्राचीनामनकं श्रेष्ठं मधुको हुम्बरन्तया ॥ यदापक्षमपि प्राष्ट्रां कटलीफनगुत्तमम्"॥ मीचक कटलकम् । माचीनामनकं करमईकम्। वराष्ट्रपुराणे "अपर्ख्यातपक्षानि दातव्यानि प्रयद्धतः। खण्डाच्यादिसतं पक्ष नेव पर्यापितं भवेत्"॥ वामनपुराचम्। "इविषा मंख्नता वे च यक्षगोध्म-भामयः। तिनसुरादशी सामा ब्रीष्टयस प्रिया छरे: ॥ विष्याः। "नाभर्यं नैवेदार्थं भन्नेषानामहिषोत्तीरं वर्जयेत्। यञ्चलमत्थ्यवराष्ट्रमांसानि चिति"। अध्यम् प्रति यदणेस्य यदभन्यं सक्पती लग्नादि तत् तेन न देयम्। नत् रावरादी दधादि। पञ्चनवय शशातिरिक्षः। "मार्गं मार्गं तथा कार्ग या मास तथेय च। यतानि हि प्रियाणि ह्यः ययोज्यानि वसुन्धर्" । इति वराष्ट्रपुराणे भगवदाववात् । राया "माहिपञ्चाविको मांसमयाज्ञिकमुटाह्नतम्। माहिपं वज्येषाम चौरं दिध एतन्तया"॥ देवनः। "वाण्डानेग गुना यःपि दृष्टं इविर्यत्त्रियम्। विद्वालादिभिनिष्ठ्रं दुष्टमसं विवज्ञेयेत् ॥ सत्यम हिरास्थीदकामग्रीदिति । यो-साग्वते 'यदादिष्टतसं सीके यद्यापि प्रियगासनः। तत्त-

विवेदयेन्यद्यं, तदानन्याय कलाते ॥ सद्यां वास्देवाय "नमी नारायणाचेति मन्त्रः मर्वार्थसाधकः। भक्तानां जपतां तात स्वर्गमोध्यपदायकः"॥ विद्याकरप्टतम्। "सप्टस्नं वः श्रतं वापि दश वानुदिनं जपेत्। कुर्यादष्टाधिकं तपामिति জाप्ये विधि: स्मृत:"। স্বাगमे। "गुद्धातिगुद्धगोप्ता खं रद्वाणास्मत्सतं जपम्। मिधिर्भवतु मे देव त्वत्प्रमादात् लियि स्थिते॥ मन्त्री स्रोकं परिलातु दस्य स्रोन विष्येषे। मुनानुनार्घतोयेन दस्तरसो निवेदयेत्ण॥ पनुर्मन्तः। तत्त्वान्तरे। "विचेषाद्य वालस्याद्यपद्योमार्श्वनान्तरा। उत्ति-ष्ठति तथा न्यासं पडड्रां विन्यमेत्ततः"॥ पद्मरावे "चपविव⊸ कारी नरनः शिरसि प्राष्ट्रतोऽपि था। प्रक्रपन् प्रजरित् याव-त्ताविद्यानमुखते"॥ विषाुप्राणे। "सर्वदेवेष यत् पुर्वः सर्वतीर्येषु यत् फलम्। तत्फल समयाप्रीति स्तुला देवं जनाः र्टनम्"॥ स्मृति:। तथा "भान्वा चातुष्पाश्ये योक्षणं यो नमेश्ररः। घटाङ्गाणिधातेन तस्य मृतिः करे स्थिता"॥ 'स्कान्दे। "बध्ये कलातु भद्वेन यः वरोति प्रदक्षिषम्। प्रद-चिणीक्षता तेन सप्तदीपा वस्थरा"॥ वासनपुराणे। "वि:• पदिचिषस्य: कुर्यात् साराष्ट्रकपणामकम्। द्याग्वमधस्य फलं प्राप्नयाद्यात्र संगयः"॥ सृभिष्ठपुराणे "तरमा गिरमा दृष्या वसमा सनसा तथा। पद्मां कराभ्यां लानुभ्यां प्रणासीः इष्टाइ इथाते" ॥ विष्णुधर्मे । "जामुम्यां चैव पाणिभ्यां गिरमा च विचचयः। सला प्रचामं देवेगे मर्वान् कामानवाष्ट्रयात् व क्रेर्धतास्त्रसिनिसः"। इति भागवतीयात्। गिरीश्त्रमिन योगोऽपि मसस्यारः। श्रीभागपते 'मानातम्यविधानन यभा विधितया भूग । भ्रोपं सदा परिभवप्रमभीष्टदीर हं तीयां-सादं गिवविशिचनुतं ग्रारम्। स्याभिषं प्रपत्रपादः

भवाभिषीतं वन्दे सदापुरुष ते चरणारविन्दम्। त्वज्ञा सुदु फ्यजसुरेपितराज्यसच्छी धर्मिष्ठ प्रार्थ्यवचसा यदगादग्यम् मायास्ग द्यितरेभितमन्वधावहन्दे महापुरुष ते घरणार-विन्दम्। एव युगानुष्ट्रिस्यां भगवान् युगष्ट्रिसि। मनुजै-रीखते राजन् श्रेयसामीखरी हरि.॥ सुत्वा प्रसीद भग-विनिति वन्देत दण्डवत्"॥ तथा "शिरो भत्पादयो कला बाहुभाश्व परसरम्। प्रपन्न पाणि मामोध मौत सखु-रहार्णवात्" इति भगवद्याक्यम् । ब्रह्मपुराणे । "यालिश्वित् क्षियसे देव सया सुक्षतदुष्कृतम्। तस्व व्यय सन्यस्तं खत्मयुक्त करोभ्यहम्" इत्यनेन सबै समर्पयेत् स्वीक्षागपते । "मन्बद्दीन क्रियाद्दीन भक्तिहोने जनार्दन। यस् पूजित भया देव परिपूर्ण तदस्त भ"॥ कालिकापुराणे। "यदचर परि-भ्रष्ट मावाहीनस्व यद्भवेत्। सन्तुमईसि मे देवि कस्य न सवस्तित सन "। पुरसरणसन्द्रिकायाम्। "सुपुक्ता वर्त्वना पुष्पमामायोद्वासयेत् सुधी । निर्मात्यं मस्तके धार्था सर्वाह्न-प्वनुलेपनम् ॥ नेषेदाचीपयुष्त्रीत दस्वा तत् भक्तिशासिने"॥ भिक्तिमा सिन विध्वक्षेनाय। पष्ठस्कान्धेऽपि "उद्दास्य देव स्वे धास्त्रि तिविदितमयत । यदादासविश्वष्ट्रार्थे सर्वेकाम-समृद्ये"॥ स्वे धाम्त्र स्वीयद्वद्ये। उदास्य सस्याप्य तथाच कानिकापुराणे। "ध्यायस्तु सन्त्रेणातेन तत्रस्य स्थापचित् इदि। तिष्ठ देवि परं स्थाने खस्थान प्रभिष्वरि। यत ब्रह्मा-दय सब सुरास्तिष्ठांन्त मे इदि" अविष्ये। "निर्मास्य नोप-भीतव्य रद्रस्य तपनस्य च। उपयुज्य च तमोशासरके पचाते भुवम्"। निर्माख्यमावे तु "सदके तक्सू से वा निर्माख तस्त मत्यक्षेत्"। कालिकापुराखे। ''यो यहेवाईनरत स तन्ने वैषभचक " मद्भापुराषे "पान्य रीयनव यस्त फलमन्यद्रमा-

ष्राच्याद्वाना मुख्यते"॥ ते चापराधा वराद्वपुराणाविष्कृष् लिखाले। भगवद्वतानां चित्रियमिद्दायभीजनम्॥ १॥ चनि-धिइटिने दन्तधावनमक्षत्वा विष्णोर्रपसपणम् ॥ सेयुनं क्रवाऽसावा विपारिपमपणम्॥ ३॥ सतं नरं सुद्वाऽसावा विषाुकमीकरणम्॥४॥ रअखलां सुद्धा विषाुग्रहप्रवेश-नम्॥ ५॥ मानवं अवं स्युष्टाऽस्रात्वा विष्णुमित्रधाववस्या-नम् ॥ ६ ॥ विष्णुं स्प्रयतः पायुवायुप्रयोगः॥ ७ ॥ विष्णुः कमी कुर्वतः पुरोपत्यागः ॥ ८॥ विष्युगास्त्रमनाद्यः शास्ता-न्तरप्रशंसा॥ १॥ ऋतिमिननं यासः परिधाय विष्णुकमी। चरः णम् ॥१०॥ प्रविधानेमाचस्य विष्णोरुपसर्पणम् ॥११॥ विष्णो-रपराधं क्रत्वा विण्शोक्षयमर्पणम्॥ १२॥ क्रूडस्य विणुस्पर्धः-नम् ॥ १३ ॥ निविद्यपुष्पेष विष्णुचनम् ॥ १४ ॥ रक्तं वासः परिधाय विष्णोरुपसपंणम्॥ १५॥ अन्धकारे दोर्पेन विना विष्णोध समानम्॥ १६॥ क्षण्यस्यं परिधाय विष्णोः कर्मा-चरणम्॥ १०॥ वायमोद्द्रतदामः परिधाय विणोः कंमचि-रणम्॥ १८॥ विपावे कुक्ष्रोच्छिष्टदानम्॥ १८॥ वराष्ट्र-मांसं भुक्ता विष्णोषपमर्णम् ॥ २०॥ इंसजानपादसरारि-मांसं भुक्ता विच्छारुपसर्पणम् ॥ २१ ॥ दीपं स्ट्रष्ट्रां इस्तमप्र-चास्य विष्णो स्पर्शनं कर्माक्षरणं वा ॥ २२ ॥ अस्थानं गत्वा-विष्णुपसर्पणम् ॥२३॥ पिन्याकं सुक्षा विष्णोर्यपसर्पणम् ॥२४॥ विणावे वराष्ट्रमांसनिवेदनम्॥ २५॥ मधमादाय पौत्वा वा स्पृष्टा विष्णुग्रहप्रविश्वनम्॥ २६॥ परकीयेनाग्रचिना वस्तेण परिहितेन विष्णुकर्माचरणम् ॥ २७॥ विष्युवे नवान्नमपदाय तद्भोजनम् ॥ २८ ॥ गन्धयुष्ये चप्रदाय ध्रुपदोपदानम् ॥ २८ ॥ उपानश्वाधारम् विप्युष्यानप्रवेशनम्॥३०॥ भेरीशब्देन विना विष्णुपवीधनम्। ३१॥ यजीयं सति विष्णुसर्शनम्॥ ३२॥

एतदुपनचणम्। यया नारसिङ्पुराणम्। "अपराधमहस्ताचि अपराधमतानि च। पद्मेनैकेन देवेगः चमते हेलयाचितः"॥

अय पच्चमयामाईक्षयम् । तत्र वैष्वदेवादिकमाई दच: । ''पश्चमे च ततो भारी संविभागो यथाईतः। देवपित्रमनु-ष्याणां कौटानाच्चोपदिश्यते॥ संविभाग ततः सत्वा स्टइस्यः श्रिषसुग् भवेत्"॥ पञ्चमे भागेऽष्टधाविभक्तदिनस्य संविभागो विभज्यात्र प्रतिपादनम्। एप सुख्यः कत्पः देवी वैखदेव-सम्बन्धो। तथाच देवपूलानन्तर वैखदेवमाइ नृतिइपुराषम्। "वौर्षेण तु स्रुक्तेन तत्र विर्णु समर्घयेत्। वैश्वदेवं ततः कुर्यात् बिखकमा ततः परम्॥ सानं दानं जपः त्राह्यमनन्तं बाहुदर्शने। बासुरी राविरन्यव तसात्ता परिवर्जयेत्"॥ द्रति शातातपीये दिवावैधक्षत्यस्य पर्युदस्तरावीतरकाली गीण एतः। अतएव "सायं प्रातर्वेश्वदेवः कर्त्तव्यो बलिकमी च। अन्यतापि सततमन्यया कि व्विपेभवेत्"॥ प्रातरिति दिवाराविषरम् चनश्रता चतिष्याद्यनुरोधेन पाक-सम्भव एव सायमिति बीध्यम्। विषापुराणे "पुनः पाक-सुपाद्धाय सायसप्यवनीपते। वैद्धदेवनिसत्तं वैपद्धा सार्द विलं इरेत्"॥ इत्यव पुनः पाकसुपादाय इत्यभिधानात्। तेन स्वीयभोजनसभावे पाकं विनापि तदसभावे पाकसत्त एव राह्यो वैखदेवविक माणी दिवा तु सर्वधैव रित। एवमेव त्रीदत्तीपाध्यायाः। यतु सदनपारिजाते। अधंगवित्राचरेत् स्रानमाङ्गिकन्तु पुन: पुन:। तर्पणं ब्रह्मयज्ञच वैग्रहदेवं न चाचरेत्"। इति तद्दिवा पुनः करण राह्यी पुनः करणच निर्पेष-यति। पार्वणयाद्यादिकरणे तदनन्तरं वैग्रदेवविधिमाप भविष्यपुराषम्। "कला त्राइं महावाहो द्राध्यषांय विस्वय झ । वैखदेषादिकं कमं तृतः कुर्याद्मराधिपः"। इति गुन्द-

क्रमण क्रमान्तरं बाध्यते इति न तेन व्यवषार इति पार्व-णादिपूर्वकरणे निन्दामधार गोतमः। "पिद्यशासमञ्जला तु विखदेवं वारोति यः। श्रष्ठातं तद्भवेदसं पितृणां नोपतिष्ठते । 'स्वयमयत्ती यद्धि:। ''पुत्री भाताऽयवा ऋविक् विष्यसः 'स्रीयमातुला:। पद्मीयोविययाच्यास दृष्टास मलिकर्माव' । दृष्टाः प्रतिनिधिलेनेति श्रीषः। इवनीयमाइ क्रन्दोगपरि-- ग्रिष्टम्। "इविषेषु यवामुख्याम्तदमुद्रौष्टयः स्रुताः। मार्ष-'कोट्रवगौरादीन् सर्वाभावेऽपि वर्जयेत्"॥ गौरः खेतसर्पः। पारिष्रम्शसीनकचनकमस्रकुनसोहासनिषेधः। शहः। "कोद्रवचीनचनकमस्रकुलत्योद्दालवर्थम्"॥ आध-'स्तम्बः। "ग्रहमिधिनो यद्यानीयं तस्य होमावसयस स्वस्व-पुष्टिसंयुक्ता" इति 'पुष्टिः कर्मफलम् चशकावादतः शह-. सिखिती। यहरदः पश्चयक्षासिवंपेत् यासूनपदोदक्या-'केभ्य."। इति व्यासः। "ज्हुयात् सर्पिषा युत्तं तेलसार-धिष्ठितम्। दध्यत्रं पयसात्रं वा तद्भावेऽम्ब्नापि च"। तयीरास्मी हिद्याद्वं कत्त्वां वैम्बदेवार्धं क्रते याद्वे विल-कर्मिण न एथक् खाद कत्त्र्यम्। "प्राधानहोमयोषैव वैया-ंदेवे तथैव चं। विकिक्सीण दशें च पौर्णमासे तथैव च 🛚 नवयन्त्रे च यन्तन्त्रा वदन्येवं भनौषिषः। एकमेव भवेत् ऋ । इति क्रन्दोगपरिग्रिष्टवधनात् पित्रशीचान्तदितीयदिने तदारको तु न द्वविद्यादम्। "न तत्पूर्वं यतः प्रोक्षः सपिण्डनिविधः कचित्। वृद्धिन्नादस्य 'सोप: स्वात् पचयोर्भयोरिष"॥ इति छन्दागपरिग्रिष्टात्। • सभयोवैस्वदेवास्ताधानयोः। एवस् पूर्वास्थवैद्यदेववस्य-'कर्मणोर्भेषागुरुनिपार्तेऽपि सुतरो कत्तव्यति। सपादान-निर्णये गीमितः "उत्तानन तु इस्तेन छात्रुष्ठामे च मोहितम्।

संहताङ्ग्लिपाणिस्तु वाग्यतो जुड्याद्विः" ॥ एतद्वनं परि-शिष्टस्रेति पराश्ररमदनपारिजातयोः। वायुपुराणम्।,"दानं प्रतिष्रष्ठी ष्ठीमी भीक्षनं बिक्रिव छ। साङ्गुष्टेन सदा कार्छा-मस्रियोऽन्यथा भवेत्"॥ परिमाणमाइ व्यासः। "बार्द्रा-मलकमानेन कुर्याहोमदविवनीन्। प्राणाद्वतिवनिद्वेव सुदं गावविद्योधनीम्"॥ सीधायन:। "भोजनं ४वनं दानस्यचार: मतिग्रहः। विद्वितीतु न कार्याणि तहदाचमनश्चरेत्र ॥ व्यामः। "घकते वैश्वदेवे तु भिस्के ग्टहमागते। उद्यत्य वैखदेवाव' भिचां दत्त्वा विसर्जयेत्॥ ब्रह्मचारी यतिसैव विद्यार्थी गुरुपोषकः। अध्यगः चौषष्ट्रतिस धडेते भिचुकाः स्रुताः"। तत "स्रशाखाविधिना इत्वा तच्छेपेण वर्लि इरेत्" दति कात्यायनोक्तम्। "वैखदेवन्यु कुर्वीत विद्योनन्त ख्याख्या"। इति व्यामोक्षच साग्निपरम्। निर्मिकर्नुक-ग्राक्षमञ्जोसम्बलिविश्वेषाभ्यां सामान्यविश्वेषन्यायसङ्घोषात्। तया छन्दोगपरिश्रिष्टम्। "पम्यादिगतिमेनीको होमः याकस एव च । धनाहिताम्नेरवैष युव्यते विश्विः सप्त ॥ भग्नवाग्नि-धनन्तरिविद्यदेवाः प्रजापतिः खष्टिक्रहोमाः" दति गीतमीक्षी होस: स च दिग्देवताभ्यो यथा खमित्यादि तदुक्रविक्रिभः सहितो यद्य ज्ञाकरहोमो देवस्तर्यमस इत्याद्यष्टाञ्चलासक-सामवेदपितः स चान्निपुराणादाक्रभूतादिवशिषदितीऽना-श्वितानेरेवेत्यर्थः। श्राकलपद्व्युत्पत्तिमाद भाग्नसायमः। "प्रष्टावष्टी प्रकलान्या इवनीये पनुदृरेव्हे त्रुतस्वनस्य दित च्योतिष्टोमीयय्पकाष्ठभकनाष्टकेन देवक्रतस्येत्यादिमस्येष श्रीमधिधानात्। यसु विष्टद्यितायामेकस्मिन् प्रयोगे गीत-मोत्राम्यादिष्ठीमदेवक्षत्रखेत्यादियाकसप्तीमौ समुधितौ सि-खिताविति तश्चिस्यम्। याकश्च एवेति एवकारेण पूर्वक्य-

समुचयनिरासात्। एष इति सर्वनामः सक्तविरपेष्य कला द्वयावाचित्वात्। साहित्यवाचिहिवचनान्ती तावेव इत्यनुष्टेः। चित्रपुराणादिभिः केवस्याकसहोमविधानाच्च । ततस्य याकस एव चेति चकारस्य विकस्पार्यकलिमिति। मनुः। "शवं व्याद्वतिभिर्द्द्वायया मन्त्रैय याकलै:। भूतेभ्यय बलिं दत्ता ततोऽश्रोयादनित्नमान्"॥ भवानितक इति पाठः प्रणवपरि-शिष्टे। पाचारमाधवीयमदनपारिजातयोरनिकस्य विशेष-मार विशिष्ठ:। "श्रनित्तकस्तु यो विश्रो हासं व्याह्नितिभिः" स्यम्। "हला भाकनहोमैय शिष्टाइतवलिं हरेत्"। भिष्टा-षुत्रिधारात् तथाच याज्ञवस्काः "देवेभ्यय पुतादकात् श्रीय" भूतवितं हरेत्"। श्रीयनाशि त्वन्यदादाय कत्त्व्यमेव .भट्टः भाषम्। परागरभाष्ये हारीतः। "वास्त्पात्तभूतेभ्यो बलि-रहणं भूतयम्रः इति गोतमकस्पे प्रमाविति "सीकिके वैदिके वापि इतो च्छिटे मसे सिती। वैखदेवस कुर्वति पस्मा-पनुत्तये"॥ इति भातातपोक्षजनश्चित्याधारतानिवृद्ययः। ततयाग्न्यभावे त् जलचित्याधारता याकलकसी वितष्ठते। जराचित्योः संस्कारोऽपि नास्तीति चौदत्तप्रभृतयः। ततय बहुवादिसमातः सामान्या धारकणाकसकत्योऽवाभिधीयते। गाकसकर्षे प्यन्ते चिष्टिष्ठश्रोमः। भूतेभ्यश्रेति चकारादादी दैववितः चन्ते च विद्यवितः। "यभाय तूणीमेकास तथा सिटिकदग्नये" ॥ तयाच स्कन्दपुराणे कामीखण्डम्। "भूरा-दाष्याद्वतोन्तिसः खाद्वात्ताः प्रषवदिकाः। भूभृवः स्वः साहिति च विमी दयानयाहुतिम् । तया देवस्रतसादा जुह्यादष्ट पाहुती:। विक्रीभ्ययापि देवेभ्यो भूमी ददात्तया विभिम् । मर्वभयरापि भूतेभ्यो नमो दयात्तद्तर। द्विषे-ऽपि पिद्यभ्यय प्राचीनाचीतिको ददेत्। निर्वेशनीदकासेन

र्धेगान्यां यद्मणेऽपंथेत्'॥ जुद्धयातु षडाइतोरिति पाठश्चेत्तदा भाषिभेदाद्मविस्थतः। पड़ाइतिपचत्तु ब्राह्मणसर्वेते इला-युधिलिखितः। एवं यमाइतिरिप स्विष्टिकत् भोभनाभि-कृषितकारी एवमेव भट्टभाष्यं प्रयोगे तु "भग्नये स्विष्टिकते स्वाद्मा" इति गोभिलादौ तथा दर्भनात् स्वताविष प्रयमती-उन्नेनिर्देशात्। "यथा देवा भाग्नं स्विष्टिकतमन्त्रवन् द्रव्यं नो वहिति सोऽव्रतीत् किं मे ततः स्थादिति यत् कामयसे द्रव्यञ्चवन् सोऽव्रवीत् पर्वेतेष्टिषु केवला सीविष्टक्रतीति तथेति सोऽवद्यद्वीपि इति सीविष्टक्रती" माइतिरिति येषः।

विलिदानप्रकारमाइ छन्दोगपरिशिष्टम् । "चसुर्ये नम द्रुखेवं विचिन्नं विधीयते। यसिद्रानप्रकारार्थं नमस्कारः क्षतो यतः॥ स्वाद्याकारवषट्कारनमस्कारादिवीकसाम्। खधाकारः पितृणाञ्च इन्तकारी नृणां सतः। खधाकारेण निनयेत् पित्राविस्ताः सद्।"॥ वलीनां पूर्वापरयोः सेक-साष्ट्र गोभिलः। "सर्वेषासुभयोरितः परिपेकः" इति। परि पाटीमाद्द विलिदानानन्तरं मार्कण्डेयपुराणम्। "ततस्तीय-सुपादाय तेषासाचमनाय च। खानेषु निविपेत् प्राप्तः नाम्हा तू हिख देवता:"॥ पिळवस्यवामामभ्यूचणानन्तरं दाममाद गोभिनः। "तयैतद्दसिश्रीयमभिषिचापससिदिस्ययां निन-रीत् तत् विद्ययो भवति"। यद्मवस्यमन्तरं कायवस्यमाष्ट विश्वपुराषम्। "ततोऽन्यदन्नमादाय भूमिभागे यचौ पुनः। द्याद्येषभूतेभ्यः खेच्छ्या तत् समाहितः" । देवामनुष्याः प्रयवी वयांसि सिद्धाः सयस्रोरगदैत्यसद्धाः। प्रेताः पियाचा-स्तर्वः समस्ता ये धावनिष्ठन्ति मया प्रदत्तम् । पिपौसिकाः कीटपतङ्काद्या मुभुशिताः कर्मानिवस्यवद्याः। प्रयान्तु ते लिशिदं सयाचं तेभ्यो विस्टं सुखिनी भवन्तु। येषां न

साता न पिता न बर्भुनैवार्जासंहर्न तथा समस्ति। तनुसर्थे-उसं भुवि दत्तमेतत् प्रयान्तु दृतिं सुदिता भवन्तु। भूतानि सर्वाणि तथा बमेतद इञ्च विणाने यतो स्वदस्ति। तसाद इं भूतनिकायभूतमत्रं प्रयच्छामि भवाय तैयाम्। चतुदशी भूतगणी य एप यव स्थिता येऽखिलभूतसङ्घः। वस्ययमनं हि मया विस्टं तेष्राभिदन्ते सुदिता सवन्त । "इत्य्वार्था नरो ददादबं त्रहासमन्तितः। खचाकासविष्ठद्वानां भुवि दवात्तती नरः। ये चान्ये पतिताः केचिदवाद्याः पाप-रोगिए;" । दन्दात् परः सङ्गान्देन सह समासः एवमाद्य-शब्देन गणत्वश्वामीयां समातीयानां बहुवचनाहित्रातीयानां सङ्ख्यायम्बाध्यास्यते। विस्ष्टं दत्तम् पादिकमीपि त प्रत्यवात्। कतः प्रयच्छामि इत्युपयुज्यते। वस्तृतसु साध्या भिधायित्वेगास्यातिकपदस्य प्राधान्यानाश्चित्रपर्योभूतस्य छद-न्तस्य गौषत्वात् कृत्वत्ययोज्ञकासम्यादिवस्या न तत्रातीता-यता पतद्यंभेव पातुसम्बद्धन प्रख्या इति स्वम्। इतिना पचानुकपादविधिरोकवचननिर्देशात् भवस्विरासेनेक एव विषः। विषक्षपदे वाससपरम् चपातपदे पापरोगिपरम्। "यगाच पतितानाच स्वपदां पापरोगिषाम्। वायसानां समीणाच गनकेनिधिपेट् भुवि"। इति मनुवधनेकवाक्य-लात् वायसविवदानसम्बे तु कामधेनुपियदियता एकायुध-वहुषग्रश्चाधर्माकीपहरिहरपहति-ग्रहाकराचार्यदर्गाचारप्रही-पाकिकोदार मध्यवद्वमानपुरामोम्या एति सिखनात् याच्या दित पाठ: कात्पनिक: काकानां यसमभुखदर्शनात् सन्ते तया कलानार्या सानाभावत्। ययच समक्रवाठक्रम-सुक्रमा "पेन्द्रवक्षवासवाः स्रोग्या ये नेक्ट्रसद्धाः वासमाः मित्ररक्षम् भूभी पिर्द्धं सर्गार्पेशम् ॥ म्बाभी भी ग्रावग्रदशी

षेषस्वतक्तलोइवी। ताथां पिण्डं प्रयच्छामि स्वातामेताव-स्सिकी" अ। दस्वानेन विधानेन शाब्दक्रम इशाद्रियते। गृद्धामवाधिकारः। "दानं दयाच गुद्रोऽपि पाकयमैर्यजेत च" इति विशुपुराणात्। "भाष्टारति: श्रविश्वसित्ती: श्राद्यक्तियापर:। नमस्कारेण मन्त्रेण पश्चयद्वान द्वापयेत्"॥ इति याज्ञवस्काच। पश्चयञ्चाधिकारस्य स्कृटमवगमादिति। भव नमस्तारेष मन्त्रेणेत्यभिधानात् याह्यच्यजेषु वैदिकेतर-मस्रपाठो नास्तीति प्राक् प्रतिपादितम्। किन्तु प्रमन्त्रस्य तु शुद्रस्व विषो सन्तेष रहन्नते"॥ इति वचनात् ब्राह्मणेन मन्त्राः पठनीयाः । ब्राह्मणाभावे मन्त्रार्थं भावयन् नमस्त्रार-सुश्चरन् खयं कुर्खात्। वसिदानन्तु पाद्यन्तनमस्कारयुक्त-तत्तत् प्रतिपादकपदेनेति। वसिवैषदेवावशिष्टानां मोन्य-सामाद्व भगवद्गीता। "यञ्जि शिष्टाग्रिनः सन्ती सुच्चन्ते सर्वपा-तकीः। भुद्धते ते त्वष्ठं पाषा ये पचन्याताकारपात्रण ॥ वैम्ब-देवादियन्नावित्रष्टं येऽत्रन्ति ते पश्चम्नाकृतेः सर्वैः पापैर्म्-च्यत्ते। ये पात्सभोजनार्धभेव पचन्तिन तु वैश्वदेवार्धते पापातानीऽघमेव भुस्नते।

प्रति। गोत्रं वंगप्रवर्त्तकसद्विक्षम्। चर्णं शास्त्रा रमृति:। ,"देश नाम कुलं विद्यां पृष्टा योऽन्नं प्रयच्छति। न स तत् फलमाग्रीति द्वा , स्वगं नः गच्छति ॥ मनुः। "न भोजनायें खे विष्रः, कुलगोने निवेदयेतु। "भोजनायें हि ते शसन् वान्ताशोत्युचाते वुधै.",॥ इति । मार्काण्डेयपुराणम्। "भौजनं इन्तकारं वा अयं भिचामधापि वा। अदला नैव भोत्रव्यं यथा विभवमात्मनः॥ ग्रासप्रदानाद्विचा स्थात् भग्रं गामचतुष्ट्यम्। , भग्रं चतुर्गुणं प्राहुईन्तकारं हिली-त्तमा."॥ यामः पसमाविमिति नव्यवर्दमानः। तदानीम-तिथालाभे तु निल्यादानन्तरं तद्वीजनमाह विश्वपुरायम्। "पिवर्धं चापरं विप्रमेकमप्याशयेनुष । तद्देश्यं विदिताचारः सभ्ति पाश्चयित्रकम्॥ श्रवायश्च समुद्रत्य हन्तकारोप-कस्पितम्। निवापभूतं भूपान चौवियायौपकल्पयेत्"॥ इन्तकारोपकस्पित इन्तपदेनीत्सष्ट निवायभुतस् इति पित्र-दानं निवापः सारित्यभिधानात् प्रकृते पित्रदानाष्ठभवात् विद्धदानसद्द्रामित्यर्षः। साद्ययच्याचेति कर्तव्यतायोगन स्वधा प्राचीनावीतयोस्त इन्तकार्यनवीतिश्वां विशेषविद्य-तास्यां प्रागुत्तक्योतिष्टीमौयश्वत्या मामागानां प्रत्यस्य स्वस्ये-तरेपामुददा खलम्य विधानात् दिस्णामुखलस्यापि निवृत्तिः। निष्पदस्य नामातिदेशसीकारे वैयर्थप्रसङ्गात्। एतद्य आहे ने सहैकप्रयोगिण कार्यम्। "निस्यशाहमदैवं स्वास त्याः पष गीयते"। तेन देवयादयकीयं, मन्ययाद कि नियद प्रधानं तेन जीवत् पिछकेष मनुष्यासमावं कार्यं मनुषाय सनकाद्यः। तर्पणादी तथा निर्णयात्। तज्ञार्खाः बाह्यादियान्तं तदाच मस्त्रपुराणं "नित्यं तायत् प्रवच्यामि भिष्यां ना हनविभित्तम् । , घदेवं तहिलानीयात् पार्वणं , प्रमेषु

सृतम्"। अर्घादिनिपेधानुपपस्या पार्वगधर्मातिदेश:। अप्र-जसु इति निषेधानुपपत्था दीचणीयादिषु दर्शपीर्णमासाति-देगवत् इति आहविवेकः। ,श्राचारमाधवीयधृतं पार्वणं तिह कौ त्तितिमिति चतुर्धचरणे पाठादिपि ध्यक्तस्त्रचैवार्थः। लिखित-जातूकार्यो। "नित्ययार्ड प्रवस्यामि पिग्डहोमविवजितम्" इति। होमवाधे हतश्रवाह्याधात् पात्रालकानयाध इति श्राद्यविकादयः। तथाच व्यासवचनेन पानीकरणादिकं प्रत्युक्तं तद्यथा "श्रावाद्यनस्थाकारिषग्डास्तीकरणादिकम्। ब्रह्मचर्यादिनियमं विकान् देवांस्तयेव च॥ नित्ययादे त्यज्ञे-देतान् भोष्यमसं प्रकल्पयेत्। दत्ता च दत्तियां ग्राह्या नमस्कारेविसर्जयेत्। एकमधाशयेतियं पशामधन्वहं ग्रही"॥ इति खधाकारः खधावाचनं तथाच शातातपः। "पिएइनिवापरिष्ठतं यस याष्ठं विधीयते। स्वधावाचन-लोपोऽच विकिरस्त न लुप्यते॥ चच्यदिनणा स्वस्ति मोम-विवर्जितम्। दिचिषारिष्ठतं द्वीतत् दाद्यभोज्ञवतो जिन्नम्" ॥ इति काणीखण्डवचनं दिचिषानिधेधकम्। भगकविषय-भिति। यावैषानन्तरं नित्ययाहे विकल्प उक्तः। भाषेण्डेय-पुराये। "नित्यक्रियां पिनृणान्तु केचिदिच्छन्ति मत्तमः। न यितृगां तथैवान्ये श्रीय पूर्वदराचरेत्" । पवं निलगाह-सभिधाय विष्णुपुराणम्। "दयाय भिचावितयं पश्चि।ट् ब्रह्मचारियाम्। योष्ट्यातु नरी दद्मात् विभवे भत्यवारि-त्रम् ॥ : इत्येतेऽतिषयः प्रोक्ताः मन्यामा भिश्चकाय थे। चनुरः पुत्रशिवेतात् स्यक्षणांत् प्रमुखाते । चकारः पूर्वाद्यातिय-भीजनेन समुश्यार्थः। सन्यामिशचादाने तु "यतिष्ठयो समं टदात मेर्च ददात् पुनर्जसम्। तर्मेश्रे भेददा तुन्यं

तक्त सागरीपमम्"॥ विद्युधर्मत्तरे। "वाखाला वाव पापी वा शत्र्वा पित्रघातकः। देशकासात्ययगतो भरणीयो मतो सम"॥ इति विष्पुपुराणम् "व्याधितस्यामशीनस्य कुट्रम्बात् प्रख्तस्य च। चध्वानं वा प्रपन्नस्य भिचाचर्या विधीयते"॥ अत्र भिचाद्यदाने भोजननिषेधात् मनुष्यप्रस्य नित्यत्वाच अतिथिपाप्तरनित्यत्वात् यज्ञस्विये श्राष्ट्रापमावाय भिचादिदानमावश्यकम्। भतएव बीधायनः। "महरह-ब्रीद्वापेखोऽसं द्यात् त्रामुसफलशाकेखो पर्यवं मनुष्यकां समाप्रीति"। विष्णुः। भिस्वाभावे चायं गीम्यो दयात्. यस्तो वा स्तिप् " "ति। विष्णु पुराणम्। "यत्फलं सोम-यागेन प्राप्नीति धनवान् हिज:। चार्यस् पञ्चमहायश्रीदेशिद्र-स्तदवाप्रयात्" ॥ चकरणे प्रत्यवायमा इ व्यापः । "पर्ययक्रांयः यो मोशाय करोति रष्टशायमी। तस्य नायं त्र च परलोकी भवति धर्मतः"॥ देवपिष्टमनुष्यभूतर्षिपुनामभिषाय गौतमः। नित्धं स्वाध्यायं पिष्टतपंषच्च ययोत्साहमन्यदिति" तपंषः ब्रह्मयत्रयो: पूर्वमुत्रयोरिप नित्यमित्यादिना पुनरिभधानं यज्ञ-त्रयानुष्ठानाम्भावद्ग-वैक्ष्येनाप्यनयीरव्यानुष्ठेयत्वसिति कत्पत्रमभूतयः। अधायको वेवलावीकार्गः कार्यः तत्राध्य-गतौ दुखाभावेवा किश्विद्यं पावेदचा पर् पिनृनुह्य दटमन विष्टम्यः खधेति दस्वाऽपरमन पाने काला ददमन मनुष्येभ्यो इन्त इत्युत्स्ब्य ददात्।

चय गोपासदानम्। ब्रह्मपुराणम्। "सौरभेयः सर्व-दिताः पविताः पुष्यरागयः। प्रतिग्रह्मन्तु मे प्राप्तं गावस्ते-भोक्यसातरः ॥ ददादनेन सन्तेण गवां प्राप्तं स्टेब दि"॥ पत्र सदेवशीलुक्षेनित्याधिकारः। सद्याभारते। "धाससृष्टिं परगवे साक्षे दद्यानु यः सदा। क्रक्रता स्वयमाद्यारं स्वर्ग- कोनं स गच्छति"॥ श्रव्र फनश्रवणात् कास्याधिकारोऽणीत्याचारदर्शनादयः। श्रव्र गोर्तिनभच्यदाने फलातिगयः,
मन्त्रय छत्रो भविष्ये। "त्योदकेन संयुक्तं यः प्रद्याहवाक्रिकम्। कपिलाशतदानस्य फल विन्देन्न सग्रयः॥ पञ्चभूते शिवे पुष्ये पवित्रे सूर्यसम्भवे। प्रतौच्छेद मया दशं
सौरभेयि नमोऽस्तु ते"॥ गवा सक्ति यहुन्यते तत् गवाक्तिः
कम्।

' अय भोजनम्। विष्णुपुराणम्। "स केवसमघं भुड्के यो भुड्को लितिधि विना। यवं सक्षेवसं भुङ्को यः पचलाता-कारणात्। इन्द्रियपौतिजननं हया पाकं विवर्जयेत्"॥ तथा ' "स्ववासिनो दु:खिगिभिषो ष्टदवासकान् भोजयेत्' सस्त्रताचेन प्रथमं चरमं ग्टहों। चभुक्तवत्सु चैतेषु भुक्कन् भुड्केऽतिदुष्का-तम्। सृतद्य नरकं गत्वा श्लेष्मभुग् जायते नरः। श्रश्रात्वाश्रीमसं भुड्के घनपौ पूयगोणितम्। प्रद्वा च क्वमि भुड्के प्रद्वा विषमोजनम्। भसस्ततात्रभुड्मूत्रं बाखादिपयम सकत्॥ भुक्ततस्य यया पुंसः पापवन्धी न जायते। इह चारीस्यमतुलं बलहरिस्तथा रूप"॥ तथा "प्रशस्तरद्भपाणिस्तु । भुद्धीत ग्रयतो रहते। यसं प्रथस्तं पष्यस्र प्रीचितं प्राचणोदकैः। ' न क्षिताइत नैव जुगुसावदमंस्त्रतम्" 🖁 । रतान्याद्य गर्ड-मुराणम्। "तेषु रची विषयासयाधिम्नान्यघद्यानि च। प्राद्भेविक्ति रहानि तथैव विगुणानि च॥ वर्ष्यं मुक्ता मणयः पद्मरागाः समरकताः प्रोक्ताः। पपि चेन्द्रनीलमणयो वैदूर्याः पुष्पदागाः॥ कर्केननकुर विस्वी रिधराचसमन्दितम्। तया स्फटिकं विद्वममणिय यसादु हिष्टं संग्रहे तज् में: १ विष्णु-पुराणे "मन्त्राभिमन्त्रितं शस्त्रं न च पर्युपितं सृप। अत्यव फलमांसेथा. शुष्कयाकादिकात्तया॥ तहहादरिकेथय गुड्-

पक्षेभ्य एव च। भुक्तीती द्रतसाराणि न कदाचि मरिवर्ग नाग्रीयं पुरुषोऽश्रीयादस्यतं नगतीपते। अध्वत्रद्धिसर्पियः शक्तभ्यय विवेकवान्॥ प्रश्लीयात्तकाना भूत्वा पूर्वन्स मधुरं रसम्। खवणास्त्री तथा सध्ये कटुतिकादिकांस्तथा ॥ प्राग्दर्व पुरुषोऽत्रम् वै मध्ये च कठिनाश्नः। पुनरन्ते द्रवाशीतु वसारीयोष मुखति॥ चनिन्दं भद्ययेदित्यं वाग्यतीऽसमः कुलयन्। पञ्चयासान् महामीनं प्राणाद्याप्ययनाय तत्र ॥ सन्ताभिमन्त्रितमिति सन्तानादेशे गायत्रोति वचनात् गाय-व्यभिमन्तितम्। गार्ड "शाकं स्पद्ध भूषिष्ठम् चत्यस्व स विवर्जयेत्॥ न चैकारसंसेवायां प्रसच्येत कदाचन"॥ छन्दोग-- परिशिष्टम्। "सुनिभिद्धिरयनसुत्तं विद्यागां सत्येवासिनां नित्यम्। भइनि च तथा तमस्तियां सार्दप्रद्रयामालः"॥ षद्दनि मचिरोदितास्तिमतसूर्यंतरदिनमावे तत्राधायुर्वेदीये विग्रेप:। "याममध्ये न भोक्तव्यं वियामन्तु न सद्घयेत्"॥ याममध्ये रसस्तिष्ठे विधामे तु रसचयः" ॥ प्रागुत्रद्धवचनात् तपापि पश्चमयामादी मुख्यकालः। महामीनं दुद्वारादि-रश्चितम्। तथा चाविः "मोनवतं मशकष्टं हुद्वारेणैव नयति। तया सति महान् दोपस्तकातु नियतसरेत्"॥ प्राणादिपदेन धन्यमाणप्राणापानसमानोदानव्यानानां क्रमेण तियां प्रहणम्। एय क्रमः यौराणिकत्वात् सर्वेद्याधारणः। विष्णुः। "न खतीयमयाशीयादापदापि कदाचन"॥ इति भगवद्गीतासु । "पायुः सत्त्ववसारोग्यस्ख्यीतिविवर्दनाः। रम्याः स्निग्धाः स्विरा द्वया च।हाराः साध्विकप्रियाः 🛭 कट्रम्ब-भवणात्युग्णती स्पाद्धधावदा हिनः। पाष्ट्रारा राजसस्येष्टा दुःख-योकामयपदाः । यातयासं गतरसं प्रतिपर्याचितच यत्। चिच्छमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ भाभारते।

हिन्दुव्रतसहस्त्रस्य ययरेत् कायगोधनम्। पिवेद् यशापि गङ्गामास्तस्य साम्यं न यात्यसी"॥ गङ्गामधिकत्य मत्त्यपुरा-णम्। "घवगाद्या च पौत्वा च पुनात्यासममं कुलम्"। देवी-पुराणम्। "ये चैव सृत्तिकास्त्रसात्तीर्याद्वाद्वत्य भुज्जते। त सर्वयापविनिमुक्ताः प्रभवन्ति गतामयाः"॥ मनुः। "चायुर्खं प्रास्तुको भुड्के यथस्य दिक्षामुखः। स्वियः प्रत्यक्षुको भुङ्को ऋतं भुङ्को ह्युद्धा खः"॥ नियमत्वेत्रम्। प्रनियमे तु नीद्युखः। हारीतः। "नीद्युखीऽश्रीयात्" रति निष्कामस्य तु प्राद्मुखिनैय यया देवलः "प्राद्मुखोद्मानि भुज्जीत ग्राचिपौठमधिष्ठितः। विग्रह्वद्नग्रीतो भुज्जीत न विदिश्चुखः"॥ जीवकात्वकस्य दिचणामुखलिविधमाद्व षापस्तम्बः। "दिचिषामुखो न भुञ्जीत एवंविधमोजनमना-युष्यं मातुरुपदियति"। वेचितु। "कुइसानं गयायादं तिसेस्तर्पणमेव च। न जीवत् पित्रकः कुर्याद्विणामुख-भोजनम्" ॥ द्रत्याचाररत्नाकरध्ताक्जीवत् पित्रकस्यापि नियेष इत्याहु:। व्यास:। ''पञ्चाद्री भोजनं कुर्यात् प्राद्युको मीनमास्थितः। इस्ती पादी तथैवास्यमेषु पञ्चार्द्रता मता ॥ व्यासः। "प्रद्येकपड्राया नाम्यीयात् सहत. खननैरपि। को हिजानाति, किं कस्य प्रच्छवं पातक सहत्॥ भधास्तम्ब-जनहारमार्गै: पङ्क्षिञ्च भेदयेत्"॥ जनादिना पङ्क्षिभेदाः करणे तु शहः। "एक पड्राय विष्टानां विपाणां सह भोजने। यदोकीऽपि त्यजेत् पाव ग्रेषमयं विवर्जयेत् ॥ मोहात् सुझीत यः पड्तवामु च्छिष्टसप्दभोजनम् । प्राजायत्यं चरिद्धपः चयः सान्तपनृत्वया"॥ सान्तपनं द्वाद्यसध्यमवैकपुराणं देयम्। एतज्जानकतः संकदिति प्रायिचित्रविवेषः। एतत् समानार्थः सिलाभिधाय गोभिचः। ''भुज्ञानेषु तु विषेषु यस्त पात्र'

परित्यजीत्। भोजने विञ्चनसीसी ब्रह्महापि तथी-चते''। चापस्तम्बः। दिवा पुनर्न भुष्त्रीतान्यत फलसू--लेभ्यः"। मनुः। "नातिप्रशे नातिसायं न सायं प्रातराधितः"। भतिप्रगिऽचिरोदितस्यं भतिसायं स्थास्तिमतसमय एव प्रातराणितः दिनभोजनेनातिष्ठमः न सायं न राष्ट्री भुक्षीते-त्यर्थः। यापस्तम्बः। "यस्तु भोजनगानायां भोजनगा डपस्प्रोत्। पासनस्यो न चान्यस स विषः पङ्किट्षकः॥ भोजनगानायां भोजनामः सन् यासनस्यो वान्यत्र स्थितो बा न चीपस्थ्रोत्"॥ वीधायन:। "उपसिप्ते समे स्वाने यची समाधनान्ति। धतुरसं विकोणस वर्त्तसम्हरू चन्द्रवाम् । वर्त्तव्यमानुपूर्वेण ब्राह्मणादिषु मण्डलम् ॥ प्रति। "घक्तवा मण्डलं ये तु भुद्धतेऽधमयोनयः। तेवान्तु यसरचांसि ४रन्यकानि तद्यनात्"॥ भाषस्तस्य:। "भिक्र-काम्बेत्यो विप्रीयदि भुड्के तुकासतः। अपवासेन चैकेन यश्चमध्येन शहाति"॥ तथा शूद्रादिभोजनेनापरिष्कृतपाते-ऽपि ष्ट्रहमनुः। "तास्त्रपावे न भुष्त्रीत भिन्नकांस्ये मसाविते। पनागपद्मपत्रेष् गरही मुद्धीन्दवं भरत्"। नव्यवद्वमान-भूताम्निपुराणम्। "अर्कपते तथा पृष्ठे भायमे तास्त्रभाजने। करे कर्पटके चैव भुका चान्द्रायषधरेत्य॥ पृष्ठे कर्सन पवादिएष्ठे। पैठीनसिः। "तास्त्ररजतस्वणीत्मग्रहण्याता-साटिकानां भिन्नमभिन्नम्" इति न दोयः। चन्न पापापात्रं भोजने विधितम्। ''तेनमानां मिषनास्य सर्वसायममयस्य स। भवानाहिर्म्दा चैव श्रुडिरुक्ता मनीविभिः॥ इति सनुना पापापपात्रस्य ग्रहिविधानाच । प्रचेताः ''ताम्ब्साभ्यक्षने भेष कांस्यपाले च भीक्षनम्। यतिय ब्रह्मचारी च विधवा च विषर्जयेष् । चितः "षासने पादमारोष्य यो भुड्ले

बाह्यणः कचित्। मुखेन चान्नमशाति तृत्यं गोमांसभचणेः" ॥ मुखिन इस्तोत्तोलनं विना। गवादिवदित्यर्थः। श्राम्बमिधिके "बार्द्रपादस्तु भुद्धीत प्राड्मुखसामने ग्रुचौ । पादाभ्यां धरणीं सप्ट्रा पार्नेकेन वा पुनः"॥ बीधायनः। "मोजनं इवनं दानसुपहार: परिग्रह:। वहिजीनु न कार्याणि तददाचमन स्रातम् ॥ इतितः। "मार्जनार्धवलिकर्म-भीजनानि दैवतीर्धेन कुर्धात्"। पराग्ररभाष्ये द्वसमनुः। "न पिवेत्र च भुज्जीत दिजः सव्येन पाणिना। नैकहस्तेन च जलं शुट्रेणावर्जितं पिबेत्" ॥ मार्कण्डेयपुराणम् । "पाद-प्रसारणं सत्वा न च विष्टितमस्तकः"। सनुः "पूज्येद्शनं नित्यं चाद्याचैवमकुत्सयन्। हष्टा हृष्येत् प्रसीदेच प्रथमेचेव सर्वदा ॥ श्रत्र दृष्टा प्रणस्यादी प्राञ्जलिः प्रार्थयेत्ततः । समाकं नित्यमस्वेतदिति भक्त्याय वन्दयेत्"॥ विष्णुपुराषे। "नागः कुर्माय क्रकरी देवदत्ती धनष्त्रयः। विदिखा वायवः पश्च तेषां भूमौ प्रदीयते॥ अदस्वा वाद्यवायुभ्यः प्राणादिभ्यो न होम-येत्"॥ इति शिष्टपिठतवचनावागादिभ्यो विनदानिभिति प्राचीनाचार:। तवावं देवेभ्यो दत्त्वैव भोत्रव्यं तथा च भग-वहीतापि। "इष्टान् भौगान् हि वी देवा दाखनी यज्ञ-भाविता:। तैर्दत्तानप्रदायभ्यो यो भुङ्क्षेस्तेन एव सः"॥ यज्ञैः संविधिता वो युषाभ्यं भोगानद्वादीन् ष्ट्यादिद्वारा दास्यन्ति चतो देवैदैनान् श्रमादीन् तेभ्योऽदाचा यो भुड्को स चौर एव। स्रातः "निवेदा प्राथमात् पूर्वं देवपादोदकास्तिः। होतव्या जठरे वक्की स्वेन पाणितस्वेन तु"॥ तेन पादीदके-नापोग्रान सत्वा प्राणाष्ट्रतिनैवेदोन कार्या। सदत्तनैवेदा-भत्तपास् प्रयाद्रिययते। अद्वापुराये। "पापोगानञ्च रहियात् सर्वतीर्थमयच यत्। अस्तोपस्ररणमधौति वि-

णोरतमयस्य च॥ सत्र चास्तरणार्धन्तु प्रास्तते योऽस्ततं सङ्त्। समृतीपस्तरणमसि साहिति स च छहरेत्" इति। सन्धापहतौ लिखितवचनं प्रमाणयन्तोऽसोत्येतदनन्तरं साहा-कारं कुर्वन्ति। ब्रह्मपुराणे। "हस्तेन नहयेत्रात्रं नोटकेन कदाचन। दक्षायो लहुयेद् भुद्धंस्तेनास निहतं भवेत्॥ हतचात्रमभक्तवं तस्य याति दुरात्मनः। प्राणेभ्यस्वय पद्धभ्य-साहा प्रथवसंयुताः॥ पद्धाहतीस्तु जुद्द्यात् प्रस्थानि-निभेषु च"॥

प्रापाद्वतिसुद्रामाद्व ग्रीनकः। "तर्जनीमध्यमाद्वष्टेर्जन्म। प्राणाइतिभैवेत्। सध्यमानामिकाङ्गुष्ठेरपाने जुहुयात्ततः॥ किष्ठानामिकाङ्ग्रहेर्वाने च जुहुयाह्वदिः। तर्जनीन्तु विदिः ष्कृत्वा उदाने जुसुयात्ततः॥ समाने सर्वहस्तेम समुदाया-इतिर्भवेत्"॥ सृत्यर्थसारे। "प्राणाइतौ प्रतामावे पया-इस्त्रीत नी प्रतम्"। देवसः। "न भुस्त्रीत प्रत नित्यं ग्रहस्थी भोजनस्यम्। पविद्यमय जुद्धश्व सर्पिराष्ट्रसापस्म् ॥ कागौखरडं ''दर्भपाणिम्स यो भुड्के तस्य दोषी न वाधते। केशकौटादिसभूतस्ततोऽश्रीयात् सदर्भकः॥ यावदेवात्रम-श्रीयात्रक्षयात्तरगुषागुषात्। यतो मीनेन यो भुड्के स भुड्को केवलास्तम्"॥ मगुः। "लाध्यायमोजने चैव द्धिगां षाणिमुदरेत्"। उद्देदसाहि हि: कुर्धादिलर्थः। वौधायनः। "बाच्य सष्टते देशे उपविद्यात्रं संग्टहा सर्वाङ्गुनी भिर्शक्ट्-मगोयात्"। संख्द्य भन्नपावं सम्यक् स्ट्वेलयः। कामौ-काएडम्। "प्रद्याङ्ग्वः पतये सुवनपतये तथा। भूतानां पतये खाहिल्या भूमी विख्यम्॥ आपोशानं विधानेन क्षत्वाश्रीयात् सुधीर्दंज."॥ इति स्ववणादुभयं कन्नव्यम्। अञ्चप्राणं "तेजोश्मीति जपस्वनं प्रणमदस्तच यत्।

भाषीशामञ्ज रहियात् सर्वतीर्यमयञ्च यत्। अस्तोपस्तरण-ससीति विणारत्रमयस्य च"॥ अन्नमयस्य विणोर्यदास्तर्ण-मिति विशेष । ततय । तेजीऽसोतिनमस्त्रत्य भुन्नीतेलर्थ । भविषोत्तरे। "स्रातुस्त वर्णस्तेनो जुद्धतोऽनि विद्य इरेत्। भुज्ञानस्य यसस्वायुस्तसास स्थार्टरिस्यु"॥ सीने विशेष-माद्द। पापस्तम्ब। तत्र मौनमुक्तम्। "विविदाव्रहेम्निमि-रसीरायमिभियंह्यतैर्दनीर्दनान् सन्धायान्तर्मेख एव यावर् यावद्यं भाषेत न सन्त्रनीपो भवतौति विज्ञायते इति" सन्त सोपो मीनव्रतसोप । ब्रह्मपुराचे "यस्त पाचितसे सुड्को यम्त सुद्धारमयुष्त । प्रस्ताष्ट्रसिधंस्तु तस्य गोमासवद्भवेत ॥ करेण च पिवेत्रीय यावसास म अच्येत्। मासलिमकरे तीय तृत्य गोमासभचणम्"॥ पत्र भासतिमकरेण जनपान निपेधात् मासन्तिप्तकर प्रचाल्येवापोप्रन कत्तव्यं प्रत्यापोगाने तु इस्तप्रचानननिषेधात् मासलिप्तकर प्रचास्य पुनरमन्त्रितः करेष प्रधापोगान कर्त्तव्यम्। पट्विशकातम्। "पिवती यत् पतेलीय भाजने सुखिन सतम्। प्रमस्य तद्ववैदन सुका चान्द्रायणश्चरेत्। वामपार्खे स्थिते तीये यो भुङ्क्षे ज्ञानदुर्बेल ॥ यासे यासे मल भुका पानीय रुधिर पिवेस्। विद्यमाने तु चस्ते तु झाद्याची चानदुर्घस ॥ तीय पिवति वक्तीण म्वारमी जायित नान्यवा। उद्यय वाम एस्तेन यत्तीयं पिवति दिल। श्वरापानेन सुन्य स्थात् सनुराष्ट्र प्रजापति "। वासप्रस्तेन क्षेवलवासदस्तेन। अप्तर्व योगशियन्तु यशीयं तत् पिदेव श्विजीसम "।, इति "पौतग्रेयं पिवेयवे" इति ग्रह्मपुराचात् राविशेषात् सर्वे निषिद्वम्। ब्रह्मपुराचे। तिसकस्क सर्न चीर दिधि घोद्र पृतानि च। म त्वजेद्देजगानि गक आक कहाचन" । सहाभारते। "यानीय पायम संपि-

देधिचीरष्टतान्यपि। निरम्यं ग्रीयमितेषां न प्रदेयन्तु कस्य-चित्"॥ एतद त्याच्यम् भशकौ कस्यचित्र देयमित्यर्थः । निरम्यं निः शिपमश्रनी यमित्यर्थः । तथा "चन्नं प्रथसं पथञ्च प्रोचितं प्रोचणोदकैः"। इति प्रागुक्तविष्णुपुराणाद्यक्तेतरभचणदोष-साइ मनुः "यालखादबदोपाच सृत्युर्विपान् निघांसति"। श्रमदोपस्त्रिविष: दृष्टद्वारक: श्रदृष्टदारक: । दृष्टदारक मायुर्वेदोक्षः। यदृष्टदारकः सृत्युक्तः। उभयोदक्रम् वालवसा-विवस दिखादिदीयो दशदृष्टादृष्टारकः। यतएव भनु-नैवोक्तम्। "खाध्याग्रे सैव युक्तः स्थात् निस्यमाक्षश्चित्रेषु च"। द्रित युक्तः । उद्युक्तः । इति । "पृथक् पानं पुनद्गिमासिषं पायसानि च। दलक्छेदनमुखाच सप्त अक्षु वर्जधेत्"॥ षायुर्वेदोक्तद्रव्य गुणा यया। "व्याधिमिन्द्रियदौर्वस्यं सर्ष-श्वाधिगच्छति। विरुद्धरसवीय्याणि भुश्वानी नात्सवान् नरः॥ श्रुष्तमांसं स्त्रियो हसा वालाकंस्तर्णं दिधि। प्रभाते सैधुनं निद्रा सदा: प्राणहराणि घट्"। तर्णं नूतनं बाली विवस्नान् द्धि न्तन चे त्युक्तेः। "रसी विश्वी स्वाहस्ती कट्स्हो रस-पाकतः। अस्रतिही कपायामी रसवीर्थावपाकतः॥ रसेट्सं विषान्नियं तत् परी चो चाते यथा। स्त्रयन्ते मसिकाः स्पर्शदनं पर्युपितोपसम्"॥

धय ऋत्गुणाः। "मासेर्हिसंस्येभागियः क्रमात् पहृतवः सृताः। हेमन्ते कुपिताहायोः खाइम्बलवणानुसान्॥ गोधूम-पिष्टमांसेद्धचौरोत्यविक्षतिभेजित्। नवमनः रसान् तेकं गौचे तसीदकं नरः॥ धन्नवाकिष्तरणान् खेदं पादत्राणच्च सर्वदा। छणाखभावैर्लेष्ठभिः प्राहतः धयनं भजेत्॥ ध्यमेव विधिः कार्यः धिद्यरिऽपि विभिन्तः। वमन्ते कुपितः क्षेत्रमा द्यग्नि-मान्यं करोत्यतः। तील्णं वमन नस्यादि कवलग्रहमञ्चनम्।

ध्यायामी दर्शनं धूमं शीचे तत्तीदकं भजित्॥ पुराणयवगीधूम-चौद्रजाङ्गलमांसभुक्। गुरूणासिग्धमधुरं दिवाखप्रच वर्ज-सगालानं भजन् गौधीन सौदति॥ सधाङ्गे गौतले खयात् निशि वात्रिसाश्विते । सवणास्त्रकर्णानि व्यायामञ्चात्र यर्जयेत्॥ वर्षास्वागवले द्वीने कुष्यन्ते पवनादयः। प्रानेः संबधिकं प्रव्यं जीर्णधान्यं रसान् लघु ॥ जाङ्गंलं पिशितं सुद्रान् दिव्यं कीप ललं ग्रुचि। वृक्षान्त्रसवणं स्नेष्टं सगुष्कं चीद्रमेव च ॥ नदीजनीदनन्याहःसम्रायासातपांस्यजीत् । गरदि क्षिति विक्ते विक्तं रक्षमी भणम्॥ खादुतिक्षकपाये चुणा लि॰ मुद्रमरोजलम्। तुपारभारसीहित्यद्धितैसरसातपान्॥ पन्स-मीस्पद्विवास्त्रप्रप्राचीधातान् विवर्जयेत्। नित्यं सर्वेरसास्वादः ख्खाधिकामृताष्ट्रती॥ ऋतूनां शेपसप्ता हे सेवितव्यः परा-क्रमः। तच नित्यं प्रयुच्होत खास्यं येन प्रयत्ति॥ यजा-तानां विकाराणामनुत्पत्तिकरञ्च यत्। व्यायामादपतपणा-टिभिभवाद्वज्ञात् चयाक्रागरात्। वेगानाच विधारणादितिः णुचः ग्रीत्याद्तियासतः । वृत्तिमाभकपायतिक्षवदुकैरिभिः प्रकोपं व्रजिद्वायुर्वास्थिरागमे परिणते चानेऽपराक्षेऽपि च ॥ करम्हीषाधिदासितीचा सवपक्षीधीपवासातपस्तीसम्पर्कतिला-तसीद्धिमुरास्कारनासादिभिः। भुड्के जीर्यति भीजने च शरिंद द्रोभे सति प्राणिनाम्। सधाञ्चेच तथाईरावः समधी पित्रप्रकोपं घ्रजेत्। गुरुमध्ररमातिस्थिदुग्धेस्मच॰ द्रवद्धिद्रिन निद्रासूपस्पिः प्रपूरैः । तुष्टिभपतनकाली योध्मणः सपकीपः। प्रभवति दिवसादी भुक्तमावि घसन्ते। पाध्वान-म्तर्भरीयं स्फटनविमयनचीभकस्पप्रभेदाः। कार्यस्थंमाव-काटी शमधिसपन्भंगशूनप्रभेदाः। पारुधं कर्णनादी विषयः

परिणितिर्भेगष्टिष्रमेष्टी निप्यन्दोष्ट्रनानि खपनमग्रयने ताडनं पीडनञ्च। नामीसामी विवादस्यमपरिषद्नं जुभाणं रोमहर्षे विचेपोत्चेपशोषग्रहणश्चिरता वेष्टनं वेदनद्य। वर्णः श्वामोऽक्णो वा हडपिच महती श्वापरिश्लेषश्रदा। विद्यात् कर्माखमूनि प्रकुषितमत्तः स्वात् कषायो रसस् । विस्तोटास्नकध्मकाः प्रसपनं खेदश्रातम् व्हिनम्। दीर्गन्यं दरणं मदोऽभिमरणं पाकोऽरतिसृष्धमी। खमा हपितमः प्रवेगदचनकदुस्नतिकारमा वर्णः पाण्ड्वविवर्कतः कथितताः कर्माणि पित्तस्य मै। दक्षिस्तम्द्रा गुरुतास्त्रीसस्यं कितनता मसाधिकां स्नेष्टापस्तुपलेपाः श्रीतां कर्डः प्रसेकस्विरकर्तृताः भोयो निद्राधिकां रसी कट्साटू वर्णः खेतो प्रसमता कर्माणि कफस्य जानीयात्। हिदीपलिष्ठः संसर्गः सम्मिपातस्मि-सिद्धयः। पक्षामयकटीसक्थियावाचिस्पर्यनेन्द्रियम्। स्थानं या तस्य तत्रापि पकाधानं विशेषतः। नाभिरोमाश्रयः स्वेदाः नासिका कि धरं रमः॥ इक्ष्यर्गनच पित्तस्य स्थाने नामि-वियोषतः। रूपालीचनकं दृक्षं पक्षामाश्रयमध्यगम्॥ पच-त्यनं विभन्नते रसिकट्रावतीऽनलः। उरः काग्ठिशारः केशः पर्वाखामाश्यो रसः। मेदी द्वाणच लिद्वा च कफस्यानसूरः परम्॥ खस्यानस्यो वसी दीयः प्राक्तं सस्वीपधिर्जयेत्। षयाणीऽस्पवललेन धातुमान्यमपाचितम्॥ दुष्टमामात्रयगतं रसमामं प्रचचते । यामेन तेन संस्पृष्टा दोषी दृष्णाय दूषिताः ॥ सामा इत्यपदिम्यन्ते ये च रोगास्तदुद्वयाः। रूचः श्रीतो न्यः राष्ण्यनोध्य विषमीऽनिनः॥ सस्रेष्टम्पास्तीक्षञ्च पित्तमस्तं द्वं कट्। गुरः गोतसद्सिगधमध्रस्यैधकत् क्षमः॥ विषरोतगुणैद्रव्यैः सर्वदोषः प्रशास्यति । क्रियायासु गुणालाभे क्रियामन्यां प्रयोगयेत्॥ पूर्वस्यां श्रान्तरोगाधं न

क्रियासद्वरीहितः! गुणालाभेऽपि कर्त्रव्या विश्वामान्तरिता क्रिया॥ श्रभ्यस्यमानाः क्राग्रः प्रयोगा ह्यान्ति रोगान् विलनः स्थिरांष्य"॥

, अय पद्रसगुणाः। मधुरः प्रीणनी वस्यो व्रहणोऽनिल-पित्तद्वा । रसायनो गुरुः सिम्धयन्त्रयः ग्रीतसय सः॥ षायु:क्षद् व्रणहा रचः कार्यादावर्तनाग्रकः। ग्रस्तो रुचिकरो ह्रदाः प्रौणनी विक्रिवर्दनः॥ वातषा रसनोदेगी सिम्धीणी रक्षमां मदः। क्षेदनस्तर्पणः पक्षा समुव्यापि कट्स यः॥ लवणः स्नेदनस्तीरणः पाचनीद्दीयनी रसः। सिन्धी मचिकारः स्थन्दी दृष्टिशुक्तकरोऽगुरः॥ कटुर्जिद्वास्य नामाचि रेचनी रुचिराष्ट्रसत्। उपास्तीच्या सद्य: कर्यक्रिमग्रसक्पापर:॥ लघुः शोषौ पड् तिकारः स्रेषा कर्षणकः पटुः। तिकः पित्त-कफच्छेदी विषकुष्ठच्चरापष्ठः॥ दीपनः पाचनी तृष्ठः कण्डः क्तमिष्ठरी लघुः। कपायः श्रीयकस्तभो व्रणस्तानात्तिनाश्रनः॥ क फायो णित पित्त हो क्चः योतो लघु स्तया। योतलः पित्त हा बखः कपवातहरो गुरः॥ उष्णं पित्तकरो वौर्यो वातश्रेष-इरो लघु:। योतं वीर्याण यह्त्यं मध्रं रसपाकयोः। तयो-रस्तं कदुणाञ्च यचीणां कटुकं तयीः। कटुतिज्ञकपायाणां वियाकः प्राथमः कटुः। चन्हीत्यं पचते स्नादु मधुरं सवणं तथा। कट्विपाके ग्रुक्षच्ची सहिवङ्यातसी स्रधः। मादुगुरुः स्ष्टमनी विपाव कफश्कानः। पाकेश्चः स्टविरम्विपनः कुक्कक्षक्षयुं.'। गात्र्डे। "कटुतिक्षक्यायाय कीपयन्ति समीर्णम्। कष्ट्रन्तरावणाः पित्तं खादम्बरवणाः कफम्। चत्रव विषय्यस्ताः समायेषां प्रयोजिताः। चचुयो मधुरो-न्नेयो रसो धातुविवर्षनः। स्थैन्यासस्यविषयय कट्हीयन-' पाचनः" ।

धातुपक्षतिमारं। "क्षषो रुचोऽलाकेशयलेक्सितीऽनव-खितः। बरुवाक्यो मतः खप्रे वातप्रक्षतिको नरः। भकाल-पितितो भीरः प्रखेदी कोपनी बुधः। खप्रे दीक्षिमतः प्रेची पित्तप्रकृतिरुचते। खिरचित्तः सुवहादः स्वप्रकः स्विष्य-सूदंतः। खप्रे जन्नध्यासीकी सेव्यपक्षतिको नरः। सेमिय-जन्नखेत्रंया हिलिदीपात्मजा नराः। दीपान्यतरसङ्गावैऽस्यिध-कात् प्रकृतिः सृता। पानाद्वाराद्ये। यस्य विरुद्धाः प्रकृते-रिषा स्वित्वायीपक्षस्यन्ते तत्सास्यमिति क्षय्यते। सन्द-स्तीच्पोऽतिविष्यमः समयति चतुर्विधः। क्षप्रियतिकाधि-स्वात् तत्सास्यान्वउरिद्धन्तः। समस्य पाननं कार्य्यं विद्यमे यातिनग्रदः। तीच्यं पित्तप्रतीकारा मन्दे सेद्यविग्रोधनम्। प्रमवः सर्वरागापाम् स्वीर्णवार्यनम्। दिवा सप्रं प्रसृवीत सर्वाक्षोर्यप्रवार्यनम्"।

यय धान्यादिगुणाः। "याचयो सध्राः श्रीता लघुपाका वलप्रदाः। पित्तवाल्पानिलकराः स्मिश्वा बद्दास्यवर्षसः। सध्रखान्वपाकच वार्षिकं पित्तक्षद् गुरु। धान्यं शरद्यीरमः भवं रचच पित्तक्षद् गुरु। श्यामाकः श्रोपणी रचो वातलः स्नेष्मिपत्तका। तथा च कद्भनीवाराः कोरदूषाः प्रकीत्तितः"। गारुदे। "त्वं च्याः सामिषा भचाः पेत्रिका गुरवः स्मृताः। तैलक्षत्तास दृष्टिशास्तीयस्त्रवास दुर्जराः। पायमः कप्रकाः सत्त्वत्यः क्यारो वातनायनः। श्रत्युणा सग्द्रकाः पयाः श्रीतका गुरवे मताः। सुदः कपायो मध्रः कप्रपित्तामिनिकः। श्रीतका गुरवे मताः। सुदः कपायो मध्रः कप्रपित्तामिनिकः। सामी वहमनो तथः स्निश्योणो मध्रः गुरुः। वातन्तिवातकः। सामी वहमनो तथः स्निश्योणो मध्रः। गुरुः। वातन्तिवातकः। सामी वहमनो तथः स्निश्योणो मध्रः। गुरुः। वातन्तिवातकः। सामी वहमनो तथः स्निश्योणो मध्रः। गुरुः। वातन्तिवातकः। सामी वहमनो तथः स्निश्योणो सक्षः। मस्रो समुरः श्रीतः संग्राही कप्रपित्तन्त्व। वर्त्वता वातका स्त्रिपत्तन्ता भिन्नवर्वसः।

तिनः कपायो मध्रस्तिनः पित्तहरो गुरः। बल्यो मधानिदह्यो गाडौ केण्ये। निन्नापडः। सिन्धो बल्ये। ल्यम्ब्रीणो
वणलेपहितय मः। समाध्रयांत् तथीणाश्च स्नेडाझानिननागनः। कपाय भावानाध्रयात्तिकत्वाञ्चापि पित्तहा।
पीणात् कपायभावाञ्च तिक्तत्वाञ्च कपि हितः। श्रूकधान्यं
गमीधान्यं नष्ठ संवसरोपितम्'।

चय ग्राक्षगुणाः। "पटोलं कफपितास्क्रास्वरद्द्वगा-यद्म । विसर्पणजनवाधि विदोषाणां विनात्रानम् ॥ यटीन-पक्षं पित्तन्नं नाडी तस्य कफापडा। फर्नं तस्य विदोषद्यं मून तस्य विरेचकम् । वास्तुकः गुक्रसी स्वयो दोपनुत्पाकतो सञ्जः। सञ्चारः क्रियाहा मध्यो वच्चोऽस्निवसवर्धनः॥ वयः-संख्यापनी ब्राह्मो मेधायु: स्नृतिवर्षिनी। निक्य: पित्तकप-च्छर्दिवणद्वसासकुष्ठनुत्॥ सूनके गुरुविष्टिभितौच्यमाम-चिद्रीषक्षत्। तदेव घृतपक्षचित् पित्तसुत् कफवातनुत्॥ नानौशाक्य पित्तम् तिक्षं सध्यौतस्म्। पिष्टिनं गुरु-विष्टिभिवापवातप्रकोपनम्॥ तच्छ्य्क्यर्थं जन्युक् पिसञ्चन्म-ककाप्रदम्। पालद्वी ककपित्रत्री क्वा वातविवर्दिनी॥ तगडुनौयमस्क्वितिविषनुत् खादुपाकतः। कलायभाकं कचन्तु पिसश्रेष्मद्वरं गुरु॥ कर्षापत्तद्दी ब्राह्मी मेधा खरकरी सता। इलिमोचौ सदा तिला कुष्ठद्यो कफपिपतित्॥ यश्चा-बुल: सरस्तीच्य ग्रामवातापची लघुः॥ ग्राकेषु सर्वे निवसन्ति रोगारोगो डि देडस्य विनागहितुः। तसाद् बुधैः गाकविव-र्जनच्च कार्थां तथान्तेषुत एव दोषाः॥ स्त्रिमः निष्पीडित-रस सेहाताच प्रशस्यते। सर्वे शाकमचाचुणमजाह्वेयसमैं श्र-नम्। ऋते पटोलवास्तुककाकमाचौ पुनर्णवाः॥ वार्ताकुरैपा गुणसप्तयुक्ता विक्रिपदा साहतनाथिनी च। शक्रपदा शोणितः

विदिनी च इक्षासकाशाक्तिनाथिनी च॥ सा वाला अध-पित्रमापका सूच्या च पित्रला। सदा फंसा विटोपम्नो रक्षित्रप्रादिनी॥ बुध्माण्डकं पित्त इरं बालं सध्यं, कफा-पहर्। पक्षं लघुणां सचारं टीपनं वस्तिशोधनम्॥ सर्व-दोप इरं द्वयं पर्यं चेतो विकारिणाम्। कुष्मा गडनालिका गुर्वी मकरा कफरोगनुत्॥ सचारा मधुरा रुचा रचा वात-कफापदाः चलावुः ग्रीतला गुर्वी मधुरा विस्तराशिनी॥ वातस्रोपकरी रुचा दुर्जरा मलभेदिनी। अलाव नालिका गुर्वी प्रकरा कफरोगनुत्। कारविज्ञ: स कर्कटो रोचन: कफिपत्तनुत्। भिङ्गाकं कफिपत्तम् गुरुविष्टिभि वातलम्॥ वपुषं सूवलं रुचं बालं पित्तहरं स्नातम्। शूरणी दीपनी रुचः कपन्नो विपदो नधः॥ विश्वेपादर्शमां पर्यो भूकन्द-स्वतिदोषलः। सानकं खादु पितश्व गुरुशोधस्रं कटु ॥ कश्वी मदा कट्: सामवातकत् गुरुपित्तना। कदस्या बनक्षमार्स वातिषित्तकरं गुरु ॥ क्षसुदीत्पसपद्मानां कन्दा सार्वतनाशनाः । कपायाः पित्तशमना विपाके मधुरा रुमे॥ सांसं वातहरं वृष्यं ष्ट्रणं बलवर्षनम्। प्रौणनं गुरुष्ट्रदाच सधुरं रसपाकयोः॥ मस्यास्तु ष्टं हणाः सर्वे गुरवः शक्रवर्षनाः। वस्या सिमधोपाः मध्राः सपापत्तकरा मताः॥ अध्वव्यवायकायामदीप्तानी-नाच पूजिताः। यातोद्धवा न वाधन्ते रोगा सत्यागिनः सदा। सुद्रमत्यासु सववी प्राष्टिको प्रष्टकी हिताः" ॥

भय सवणगणः। 'सैन्धवं दीपनं द्वदां चाचुयां रोचनं मुद्दा क्रिक्षं द्वद्धे विद्दोग्रज्ञं स्पृतं स्वयिक्तिम्॥ सामुद्धं मधुरं पाके नात्युणमवदाधि च। भेदनं सिक्तमीपच शूनचं नातिपित्तसम्॥ जीकपचारित्तवणं पाचनं दीपनं परम्। क्षकवातक्रमिक्तरं मेदनं पित्तकीपनम्॥ पांग्रज्ञं तिक्रमुणाञ्च

श्रेषापित्तकपापदम्॥ हिद्गुतौत्या कटुरसं शूलाजीर्यविवस्ध-नुत्। लघणां पाचनं सिन्धं दौपनं क्षफवातिजत्॥ जीरकं क्चिलत् वयां गन्धाव्यं कप्पवात जित्। पाके तु कटुतौल्णोणां लघुपितास्निवर्द्धनम् ॥ धन्याकं सधुरं द्वयां रोचनं चच्छो-हितम्। कषायतिक्षकटुकं खादुशीतसुगन्धि च। काशच्छदिँ-रुषा मोइनाग्रनं वङ्किदोपनम् ॥ कफानिसहरं खर्यं विरुद्धा-ना ह भूतनुत्। भार्द्रकं रोचनं हृदां कट्रणं ष्टथमेव च ॥ कफा-निनहरं स्वर्धः विद्वद्वानाष्ट्र श्रूलनुत्। श्रुएठो तु कपवातन्नो सस्नेद्दा लघुदीपनी ॥ विपाके मधुरा ष्ट्रणा कटुका दीपनीपरा। इरिद्रा कपविभन्नी कण्डदुष्टवणापद्या। पाण्डुगोधापित् भोश्वासीपविषमेष्ठनुत्। पिपानी मधुरा व्या कट्का दीपनी परा। स्निष्धाणा मारतस्थमकाशसासंयं नायसेत्। भेदनं विषासीसूल दौपनं क्षमिनाशनम्॥ चिवका गज-विष्यत्यौ विष्यतीगुणवत् सृता। सरीचं लघु नौस्पीणं रघं रोचनदोनम्॥ रसे पाके च कटुकं कंपन्नं पित्तकोपनम्। स्वयां शुक्र इरं कायपीनसश्चेष्मवात्र जित्॥ यमानौ कोष्ठ-शूनद्वी द्वद्या पित्ताग्निकारियो। रोचनो कपवातश्री पाचनी क्षमिनाशिनी॥ किञ्चिद्यीनगुणा तस्या यमानी चेय-मभवा। सप्पः स्रोधापित्तप्तः सतीत्यो रक्षपित्तशत्॥ रस पाके कटुसिम्धलमिकुष्ठापष्टा मतः। गुड्युपापादिवल्या विदोपन्नी रसायनी ॥ दोपनी ज्वरत्य्ट्किंकामला वात-रतानुत्। वासकः काश्यवैद्ययेरत्विपत्तकपायदः"।

श्रध फलगुणाः। 'दाडिमं द्वद्यमस्तीणं वातद्यं यादि-दीपनम्। हत्यं कपायमधुरं कफिपसिविशीधि च॥ कर्कसु-कीलश्रदरमस्त्रं वातकफापद्यम्। पक्षं पित्तानिसद्दरं सिग्धास्तु मधरं रसम्। तत्त्वुद्धं कफवातद्वं न च पित्ते विक्द्राति॥ श्रष्टाचूर्णन्तु स्टट्कदिकपञ्च दौपनं लघु। पुराणं स्ट्राशमनं त्रमग्नं विद्विदीपनम्॥ प्रास्त्रं वालं रत्तिपित्तकरं मध्यन्तु पित्तलम्। पर्का वर्णकरं क्चां सांसग्रक्तवलप्रदम्॥ पित्त-विरोधिवातम् द्वयं गुर्वमिदीपनम्। आस्रपेषो कषायीत्या भेटिनी कपापित्तजित्। कार्याफलं सुमधुरं कषाय खिन्ध-शौतसम्। दुर्जरं पित्तशमनं श्लेष्मशकविवर्धनम्॥ 'कदसं मधुरं हृद्यं कषायं नातिशीतसम्। रक्षपित्तपरं क्षां वृष्यं स्रोध्मवरं गुर्॥ सातुलङ्गपलं द्वयसस्तं नष्टाग्निदौपनम्। काश्रिवासाक्तिहरं तृष्णाञ्चं कण्डशोधनम्॥ अस्वीरं सधुरं किश्वित् धत्यसं पित्तकद् गुरा दुर्गन्धिदुर्जरं वक्किकाकवात-विवर्षनम् ॥ त्रणाश्रुलकफोत्क्षेशच्छिद्धासनिवारणम् । तिन्तिडीफ बकं वालं वातनुत् कफ पित्तक्षत्॥ पक्षं तत्-दीपनं भूसं नात्यणा कपवातनुत्। श्रास्त्रातं तर्पणं रम्यं मध्रं ष्टंडणं गुरु॥ स्नेइल श्रेण्मलं गौतं सिग्धं विष्टिभि क्षीयिति। विर्वं मालकपायीयां पाचनं विद्विदीपनम्॥ संग्राहि तिज्ञकट्कं तीर्णं वातकंफापहम्। एकं सुगन्धिमधुरं दुर्जरं ग्राहि दोषलम् ॥ फलेषु परिपक्षेषु पङ्गुणं समुदाञ्चतम्। विस्वादनात विश्वेयं विस्वादामं गुणोत्तरम् ॥ काफवाताम-त्रानद्यो प्राधिषो विस्वविधिको । नारिकेलं गुरुस्त्रियं वित्तद्य खादुशीतलम् ॥ वनमांसप्रदं दृदां हंइणं विस्तिशोधनम्। विशेषतः कोमननारिकेलं निष्ठन्ति पित्तज्वर्षित्तदोपान्। खटकदिदाष्टामयमाग्र ष्टन्यात् सपित्तरक्षप्रभवान् विकारान्॥ नारिकेलीदकं पक्षं गुरुविष्टिशि पिच्छलम्। वातग्री लवणैः पथ्या विसन्नी प्रतमंयुता ॥ नागरेष कफं इन्सि सर्वरोगान् गुड़ान्तितान्। धिथा पच्चरमायुष्या चत्तुष्या सवसीममा ॥ मध्योष्णा दोपनी दोषगोथकुष्ठमणापद्याः तदहात्रीविश्रीषेष ष्ट्रपा ग्रोतेरवीर्यतः" ॥

श्रय तीयगुणाः। "श्रमेनापि विना जन्तुः प्राणान् भार-यते चिरम्। तीयाभावे पिपासार्तः चणात् प्राणैविंसुखते॥ श्रजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि वसप्रदम्। श्रायुराहारकाले च भुक्ताबोपरि नी निश्चि॥ तीयं सप्तगुणं प्रोतां खच्छं सघु च यौतलम्। सुगन्धिसंसृष्टरसं हृदां तृषा प्रणाशनम् ॥ पिच्छिलं क्षमिमंक्षित्रं पर्णयेवासकर्मैः। विवर्णे विरसं सान्द्रं दुर्गन्धं न शित जलम्॥ शीतास्व्मदमुर्च्छमं पित्तसर्दिज्वराः पद्म। यमसमीणदाइत्द्रमदात्यधिवपापद्म॥ एणोदकं सदा प्रयां काग्रवासन्वरानिष्टम्। कफवातामदीपद्मे पित्तलं वस्तिगोधनम्॥ किनत्ति श्लेष्मसंघात मात्तश्वापकर्पति । यजीर्ण जरयत्याश्च पीतसृष्णोदकं निश्च ॥ क्षयमानन्त् यत्तीयं मिष्योनं निर्मलं लघु। भवत्यद्वविध्रष्टन्त् तद्यो-दक्षमिणते ॥ तत्यादद्दीनं वातप्तमर्ददीनन्तु पित्तनुत्। कफ्ष पादशिषसं पानीयं सघुदीपनम्॥ धारापातेन विष्टिभा दुर्जरं पवनापद्म । शृतं श्रीतं विद्वीपद्मं वाष्पान्तर्भाविशीतलम्॥ दिवा शतन्तु यस्रोयं रात्रौ तद्गुरुतां व्रज्ञेत्। मूर्च्छा विस्रोधा-दाहेषु विपे रक्षे मदात्ति ॥ यमक्रमपरौतेषु भ्रमके वसधी तथा। कडुँगेरक्षिकिच शौतमभः प्रशस्ति॥ पार्श्वेशूनी प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे। याध्वानिस्तिमिते कोष्टे सदाः गुहे नवच्वरे॥ हिकायां सेहपिते च शौताम्ब परिवर्जधेत्। चरोचके प्रतिस्थाये प्रमेहे सययौ चये॥ सन्दान्नादुदरे कोहे क्वर नेवामये तथा। अणे च सधुमेहे च मानौयमस्नमाचरेत्। नारिक्षेलादक द्या खादु यौतं हिमं गुरा। क्षणापित्तानिनः हर दौपन वस्तिमोधनम्॥ विभिषादस्मिवर्णस्य नाविकेसस्य यक्तसम्। तत्पित्तप्रभवान् रोगान् सर्वनिवापकर्पति ॥ वानस्य मार्किस्य लसं प्रायो विरेचनम्। नारिकेसाम्ब तर्षं

ख्याघ्रं विस्ताधनम्॥ नारिकेसजसं सीर्षं विष्टिश्वागुरूः पिच्छिसम्"॥

यय चीरगुणाः। "चीरं खादुरसं सिम्भीनसं धातु-वर्षनम्। वातिपत्तद्दरं वृष्यं सेष्मलं गुरु भौतलम्॥ गोचीरं जीवनं वलां रक्षिपत्तानिलापदम्। पायुष्यं पुंस्वकत् पर्यं द्वयं मेश्यं रसायनम्॥ माद्दिपं सिम्धमल्यं मधुरं भौतलं गुरु। निद्राक्तराभिवृषद्धं खादु विद्राविनाभनम्॥ श्रुतीणां कापवातम् श्रुतं भौतन्तु पित्तनुत्। पाममामकरं प्रीष्णं कापवातम् श्रुतं भौतन्तु पित्तनुत्। पाममामकरं प्रीष्णं कवीप्णमस्तं पयः॥ सर्वराचीद्रपिभिर्युतं हृष्यं बलप्रदम्। नष्टदुष्यं वातद्दरं दुर्जरं रुचमित च॥ चीरसन्तानिका सिम्धा वृष्या पित्तानिलापद्या। वन्धं सलवण चीरं यद्य विश्ववित भवत्॥ विवतावालवसानां पयो दोयलमीरितम्"॥

भय दिधगुणाः। "गव्यं दिध तु वातश्चं माङ्गलं भृतिरोचनम्। सिन्धं विपाने मधुर दौपनं बनवर्षमम्॥ माङ्गियं
दध्यतिसिन्धं रक्षपित्तप्रसाधनम्। विपाने मधुरं हृष्यं
कपदृष्टिकरं गुरु॥ दिधं यत् सादु तन्धेदः कप्पाभिष्यन्दिकारणम्। दध्यस्त्रभतियदक्षद्रपणं कप्पपित्तगृत्॥ विदाधिसप्टविष्मूर्वं मन्दं जातं विदीपक्षत्। पौनाधं चातिसारं च
भौतने विपमन्वरे॥ चर्चो स्वक्षक्रे च कार्स्यं च दिधं
भद्यते। भरद्योप्तवसन्तेषु मायगो दिधं गिष्टितम्॥ हिमन्ते
भिशिरं सेव वर्षास्त दिधं भक्षते। रक्षित्तस्मा हिमन्ते
भिशिरं सेव वर्षास् दिधं भक्षते। रक्षित्तस्मा हिमन्ते
भिशिरं सेव वर्षास् दिधं भक्षते। रक्षित्तस्मा हिमन्ते
भिशिरं सेव वर्षास् दिधं भक्षते। रक्षित्तस्मारं कक्षीः
सेव न तदितम्॥ न नक्षं दिधं सुद्धोत न चाष्पपृत्तभक्षरम्।
यथा तथा श्वतात् चौरात् ज्ञातं तव गुणोत्तरम्। वातिपत्तः

चय तक गुणाः। "तक्षं मधु कपायाकां शीवनं कक यात-कित्। गोर्योदराविशीष्टरीगानीं प्रवणी भदः॥ सूक्षप्रदं हैतव्याणि क्वरपार्को मयान् नयेत्। ससारं निर्जलं घोलं तकां पादनलान्वितम्। भडोंदकमुद्दास्त् स्यात् मिवतं जनवितितम्। पीनसम्बासकागादौ सिष्ठमेव तदिष्यते॥ घोलं पित्तानिन्हरं तक्तं दोपत्रयापद्यम्। छद्दास्त् द्वेष्टमन्द्रीव मिवतं कफापत्तन्त्॥ तक्तमासं कफं कोष्ठे इन्ति कण्डगदान्विषा न तु तकां कफे द्यात् नोष्मकाले न दुवेले॥ नो सूर्ष्यायसदाहेषु न रोगे रक्तपैत्तिके। भौतकालेऽग्निमान्ये च कणेलिकामयेषु च॥ मार्गावरीधे दुटे च वायौ तकां प्रमुखते। वातेऽस्तं सैस्वोपेतं पित्ते खादु समर्करम्। पिवेन्तकः कफे चाथि चारित्रकृदसंयुतम्"॥

भय प्रतगुणाः । "प्रतं सहस्तवीयं स्थात् बुहिबीयंसहस-कृत् । सर्वसेहोत्तरं श्रीतं सप्तरं रसपाक्षयोः ॥ वातिपत्त-रसीनादशोषालद्यौद्धरापद्म । रस्तिबुद्धरानगुक्रौतः कप्त-मेदोनिवर्षनम् ॥ गव्यं प्रतं प्रतत्रेष्ठं चाद्युष्यं वसवर्द्धनम् । विपाने सप्तरं श्रीतं वातिपत्तिविपापद्म ॥ साद्धिष्य प्रतं सादु सधुरं श्रीतसं गुन्न । वातिपत्तप्रशसनं कप्तकत् रक्षपितनृत्"॥

चयेच्यादिगुणाः। "इचने रक्तियत्तमा वस्या ह्याः कफादाः। विषाने सध्राः सिन्धा गुरने सूवसाः पराः॥ गुडी ह्यो गुरुः सिन्धो वातभी सूवग्रीधनः। नातिषित्तकरी मेदः कफहडिवसपदः॥ गुडः पुराणीऽधिगुणी वातभा स्क् प्रताधनः। पित्तमो सध्रः सिन्धो वस्यः पय्यो विशेषतः॥ खाउं ह्यातमं ह्या चालुयं हंइणं सद्धत्। वातिषत्तदरं गौतं सिन्धं च्यां सुप्रादम्॥ मर्करा न्यापित्तदरं गौतं सिन्धं च्यां सुप्रादम्॥ मर्करा न्यापित्तदरं गौतं स्वापदा॥ सधु सादु रसं भौते मण्योधनरोचनम्। कपा-यास्तरसं वस्यं क्या दीपनरोचनम्॥ कपायास्तरसं तैनं यास्तरसं वस्यं क्या दीपनरोचनम्॥ कपायास्तरसं तैनं वर्द्धनम्॥ वातन्ने प्रत्तम वस्य क्वां मेधानिवर्द्धनम्। छिर्म-भिन्नचुतोऽपिष्टक्षियतचर्तापि च्छिले ॥ भम्मस्फुटितिवद्यामि-दम्धविश्विष्टदारिते। तथा विश्वितनिभैगने सृगव्याद्वादिभिः चते॥ सेकाभ्यद्गावगाद्देषु तिसतैस प्रयस्यते। वर्जयेत् पयसा स्तिनं मत्यमासमन्पजम्॥ वस्रोफसमकुषमाग्रहमञ्जेनम् फलाइते। मास मूलकसंसिड इते मधु समांसके ॥ मत्यानि चुरिकारेण चौद्रमुखोन वारिणा। पुनक्षोक्षतश्चान प्रतं कांस्ये दग्राहिकम्॥ दभ्ना तक्रेण पयसा तालस्यापि फलेन च। विरोधानैव भुष्जीत भितिमान् कदलौफलम्"॥ श्रुतिः "विश्वधागनजान् रोगान् प्रतिष्ठित्त विरेचनम्। वसन प्रयनं बापि पूर्वं वाद्यितभोजनम्॥ शाम्येतात्पतया वापि दोप्ताने-स्तर्णस्य च। स्निग्धव्यायामदस्तिनां विरुद्धं वितयं भवेत्॥ श्रदृष्टद्वारदीपास्त जायन्ते पापिनाभिष्ठ"॥ भाजसादनै-दीपादिखमन्तरं मनुरप्राप्त । "लगुनं ग्रञ्जनश्चेव पलाण्डं करकाणि च। अभद्याणि दिलातीनाममध्यप्रभवाणि च"॥ करकं क्याकः भमेध्यप्रभवाणि विष्ठादिकातानि। "द्या कप-र्सं यावपयसा पूपमेव च। ऋतुपासतमासानि देव। ऋति द्वीयि च"॥ हयेति देवतादानुदेयेन चासार्थं यत् पचाते। क्तपरमाष्ट्र कन्दोगपरिशिष्टम्। "तिसतण्ड्लसंपकः क्रपरः सोऽभिधीयते"। संयावो प्रतचौरगुडगोध्मादिचर्णसिदः। चनुपाकतमांसानि। मन्दाकतसंस्रतमांसानि देवादानि यानि देवतानैयेदार्धमसानि तानि। इवीपि पुरोडासादीनि प्राक् दोमात्। "पनिद्याया गो.घोरमोष्ट्रमेकग्रफलया। भाविकं सन्धिनी सीरं विवक्तायाय गी:पय: ॥ चार्ण्यानास मर्वेषां सगाणां महिषों विना। स्त्रीष्टीरश्चेष वर्षानि सर्व-स्तानि चैन हि। द्धिमस्यस् ग्रतेषु सर्वस्र द्धिसम्भवम्।

घानि चैवाभिस्यन्ते पुष्पमूलफलैः गुभैः"॥ चनिर्देशायाः प्रस्वानन्तरमनिर्गतद्रशाहायाः गोरिति छागमहिषीपसचम्। तथाच यमः। "पनिद्याया गी:चौरमाजं मा हिपमेव च"॥ एक ग्रफ मञ्जादोक सुरसम्बन्धिलाव् सन्धिनी या ऋतुमती व्रप-मिश्किति तस्याः सम्बन्धिः विवत्सायास वसग्रहणादेव गोर्सिभे गोप्रहणं गोरेव न यजामहिष्योः। सृगाणामिति सिंदिपप्रतिप्रसदात् पशुमावपरम्। शुक्तानि स्वभावती सञ्चर-पसानि कालयगाम् अस्तरां गतानि द्धिसभयं तकादि। अभिस्यन्ते सन्धीयन्ते । गुभैभीद्वादिविकाराजनकैः। तथाच घुष्यति:। "कन्दमूराफरी: युप्पे: श्रस्तै: ग्रह्नारसन्तु यत्। षाविकारि भवेगोध्यमभष्यं तिहिकारकत्"। मनुः। "मत्यादः सर्वभांसारः तसामात्यान् विवर्जयेत्। पाठौनरोहितावादौर नियुक्षी इध्यक्षययोः॥ राजीवाः सिंहतुरद्राय सगरफारिय सर्वग्रः। सामान्यतः प्रयस्थामि विधि भक्षणवर्जने ॥ प्रीचित् भचयेनासं ब्राह्मणानान्तु काम्यया। ययाविधिनियुक्तसः प्राणानामेव चात्यये॥ प्राणस्याविभदं सर्वं प्रनापतिरकस्य-यत्। लद्भमं स्वावरच्चेय सर्वे प्राणस्य भीजनम्॥ क्रीला ख्यं वाष्युत्पाद्य परीपक्षतमेव या। देवान् पितृं यार्चित्वर खादन् मांसं न द्याति॥ नादादिविधिना मांसं विधिन्नो नापदि दिशः । नियुक्तय यया म्यायं यो भांसं नात्तिमानवः । स प्रेश्य पश्रतां याति सकावानेक विगतिम्"। प्रोधितं मन्त-क्षतमीचवार्यसंस्कारयुतं यज्ञहतपग्रमांसविभिष्टं यज्ञाङ्गलेन तदभद्यम्। तथाच तथैवोक्षम्। "मन्येस्तु मंस्त्रतानदात् शास्त्रतं विधिना स्थितः ॥ इति धार्स्यानां मोचित्रत्वमग-स्येग सतम्। तयाच महाभारते। "पारप्याः सर्वदेवत्याः प्रीचिताः सर्वयो स्गाः। सगस्येन पुरा राजन् सगया चेन

पूच्यते"॥ ब्राह्मणकास्ययात्वेकवारं यद्याविधि नियुक्तः भाडा-दाविति शेषः। तथाच यमः। "भचयेत् प्रोचितं मांसं ससत् ब्राह्मणकाम्यया। दैवे नियुत्तः श्राष्ट्रे वा नियमे तु विवर्जयेत्"॥ नियमे शास्त्रान्तरनिषिष्ठतत्कालमांसभच्चेषे। श्रतएव नियुक्तस्विति सनुवचनं तत्कानीनानिषवसांमाभुग्-विषयमिति प्रायस्वित्वविकः। प्रेत्य परलोके। याज्ञवल्काः। "वसेत् स नरके घोरे दिनानि पशुरोमिभः। समितानि दुराचारी यो इन्यविधिना पश्चन्॥ सर्वान् कामानवाप्नीति इयमेधफलं तथा। गरहेऽपि निवसन् विप्रो सुनिर्मासस्य वर्जनात्"॥ सनु:। "वर्षे वर्षे। खसेधेन यो यजेत यत समाः। मांसानि नतु खादेद्यस्तयोः पुर्खफलं समम्"॥ नारदोधे। "न मत्यं भचयेनामं न कौम्यं नान्यदेव हि। च्यडानो जायते राजन् कार्तिके मांग्रभचणात्"॥ सहा-भारते। "कौमुदन्तु विग्रिपेण शक्तपचं नराधिप। वर्ज-येत् सर्वमांमानि धर्मास्तव विधीयते" ॥ कीमुदं कार्ति-कम्। क्षात्तिकमधिकत्य ब्रह्मपुराणे। क्षात्तिकमास-तत् शुक्तपद्यतदेकाद्यादिपद्यदिनानि श्राताशक्षमेदात् पाप-तारतस्याद्या निविद्यानि"। भविष्ये। "पासिष रक्षणाकश्च यो भुड़क्ते च रवेर्दिने। सप्तजमा भवेत् सुद्धौ दिरद्योप-लायते"॥ विषापुराषे। "चतुर्दम्यष्टमी चैव प्रभावास्याध पूर्णिमा। पर्धाखोतानि राजिन्द्र रिवसकान्तिरेव च ॥ स्त्रीतैस-मांसमभोगी पर्यस्रेतेषु वै पुमान्। विगम् वभोजनं नाम नरकं प्रतिपदाते"॥ धव यदापि संक्रान्तिपदेन पुर्खकाली बच्यते तथापि। "बष्टस्यां पद्ययोगन्ते रविषंक्रान्तिवासर्। म्मोपान्ते क्तियं तैनं भीनख परिवर्णयेत्" । इति ब्रह्म-प्राचात् वासरपदयच्यात् प्रस्वकानोपसचितदिन एव

निषेधः। विषापुराणवचनमपि तत्पुख्यकान्तीपलिन्नतत्रहिन-परम्। भन्यथा वासरपदवैयर्थापत्ते:। राजमार्तरहे भोज-राजध्तम्। "पर्दराचादधयेत् स्थात् तिषाचेवादि क्रिया। जर्डु संक्रमणे भागोरपरेऽइनि तत् क्रिया"॥ इति वचनात् सञ्चारध्यषाविकित्रपूर्वापरदिनार्द्वपुरवकालीपसचित-दिनपर-मपोति। स्त्रियास्तु पश्चमांसभचणनिपेधमाइ श्रीभागवते गद्ममः "ये त्विष्ठ वै पुरुषाः पुरुषमधेन अयन्ते याच स्वियो नृपशून् खादन्ति तांच ताच ते पश्व इष्ट निष्ठता यससदने यातयन्तो रची गणाः ग्रैनिका इव खिधितिनाऽवदायासक् विवन्ति" इति खधितिमा कुठारेण प्रवदाय खण्डियत्वा मनुः। "मत्तर्भाषाय न भुष्तीत कदावन। केशकीटा-वपसञ्च पदा स्पृष्टच कामतः ॥ भ्रूषद्वावेत्तितश्चैव संस्पृष्ट-चाच्यदयययः। पतिविषावसीट्च श्रना संस्पृष्टमेव च ॥ गवा चानम्पदातं स्प्रशासञ्च विशेषतः। गणातं गणिकाग्रञ् विदुषा च सुगुपितम्॥ सूक्षं पर्खुषितं धैव सूद्रोक्षिष्टन्तथैव च। स्तेन गायनयोरीव तत्त्र्णो वर्षिकस्य च ॥ चिकिसाकस्य न्गयोः क्रयोच्छिभोजिनः। उपायं स्तिकात्रच पर्या चान्तम निर्देगम् ॥ चनचितं ह्यामांसमवीरायास योपितः। दिपद्यं नगर्थेद्यं पतिनाद्यमवत्तुतम् ॥ पिश्रनातृतिनीयादां क्षतुविक्रियिणस्तथा। सृष्यन्ति ये घोषपतिं सोकितामाञ्च मवंगः॥ चनिदंगस प्रेतावं चतुष्टिक्रसेव च। रामायं तिज चादते गूद्रायं ब्रह्मवर्षसम्॥ चायु.सवर्णकारासं यगः राम्मविक्तिनः। विष्ठा वार्षुपिक्यायं मदाविक्वयियो सनम्॥ भूक्ता चाग्यतमधाचममया चपणं व्यक्तम्। मया भुका चर्ता छच्य रेता विषम् चरेव च । नादात् गृद्ध पकासं विद्यानयादिनी दिन:। पाददीतामभेगामादिक्ताविकराबि-

कम्" । केशकीटावपन्न केशकीटसंसर्गदुष्टम् । कामत इति दुच्छातः। अण्णानिचित पतितदृष्टम्। उदकाया रजस्य-लया। पतिविणावलौढं काकादिना भिचतं घुष्टानं के के भोक्तार प्रत्युक्तानं सवादी यहीयते तदनं पर्युपिनं राव्यन्त-रित तत्तु सेहातां भस्यमाद मनुः। "यक्तिश्वित् सेहसयुत्रं भक्तभोन्यमगर्हितम्। तत्पर्याधतमप्याद्य इविः ग्रेपञ्च यइ-वेत्"॥ विश्रेषमाष्ट्र सु एव। "चिरसंश्चितमध्यादां सुस्नेद्वाः क्षमपि दिजे:। यवगोध्मसं सर्वं पयसाचीव विक्रिया''॥ उच्छिष्ट भुनाविशिष्टं भूगयोद्योधस्य वार्ड्यिकस्य "समर्घ्यं, सूलामादाय महार्घा यः प्रयक्तितः। स्तिकान स्तिकाः भोजनमुद्दिश्य यत् क्रियते तत् क्षुसर्जेरिय न भोक्षच्य पर्याः चान्सम् एकपङ्क्षिखे भुज्यमाने यदि कथिदाचमनं करीति तद्वम्। यनिद्रंशं जननायौषात्रं भनचितमवत्रया दत्त इयामासं देवपित्रहे येन यन सतम्। अवीरायाः पतिपुत्र-विद्यीनया योपित इत्युपदानात् स्वीत्वमात्रेणेवासम्बन्धिन्या-नियेधो न तु पितामञ्चादिसम्बन्धा श्रीय प्रायश्चितिवे-कोऽप्येवम्। नगर्यत्रं नगराधिपानं नगराधिपतेश्वेविति ब्रह्म-पुराणात्। भवत्ततम् उपरिक्षतत्तत्तम्। भनिर्देशस्त्रे प्रेतासं सता ग्रीच्यत्रम् भादत्ते नागयति दोपाभिधानाञ्चलानिष्ठधः क्षलाते ब्रह्मवर्षसम् चध्ययनादिनिमित्ततेजः चमत्या चुत्रानेन त्राष्ठ चपणम् उपवासः। शब्रुं पाजापत्ववतम्। ययादिनः याह्यस्यसम्बन्धस्य भवती चर्यान्तराभावे ऐकराभिक्स एकरानिनिने होचितम् भामसम् दत्तमपि भोननका से तट ग्टहावस्थितं शुद्राचम्। तथा चाहिराः। "शुद्रयेशमनि विमेण चौरं वा यदि वा दिधि। निष्ठत्तेन न भोक्षयां मूद्रावं तदपि स्मृतम्"॥ निष्ठभेन शूद्रामानिष्ठभेन भपिग्रस्था

मिष्यात् ष्टततण्डुनादिखग्टदागते। पुनर्दिराः। "यया यातस्ततो धापः ग्रिं यान्ति नदीं गताः । शूद्राहिपग्रहेष्वत्रं प्रविष्टन्तु सदा श्रचि"॥ प्रविष्टेऽपि स्वीकारापेचामाह परा-शरः। "तावद्भवति शुद्राच यावन सृशति दिनः। दिना-तिकारसंस्पृष्ट सर्वे तहविष्यते"॥ सृग्रति रह्यातीति कस्प-तरः। तच संप्रोच्य प्राष्ट्रमाष्ट विष्णुपुराणम्। "संप्रोच्चित्वा रहीयात् शुद्राचं रटहमागतम्"। तच्च पावान्तरेष ग्राष्ट्रा-माचाद्गिराः। ''खपात्रे यच्च विन्यसां दुग्धं यच्छति नित्यमः। पावान्तरगतं याद्यं दुग्धं स्वयद्व प्रागतम्"॥ एतेषु स्वयद्व यागतस्वैव गुहलं तद्ग्टहगतस्य गुद्रावदोषभागिलं प्रती-यते। इष्टनारदीये। "यः शूद्रेण समाहती भोजनं कुरते हिन:। सुरापौति स विच्चेय: सर्वधमाविष्टण्कत:॥ य: शूद्रे-णाभ्यनुत्रातः कुर्यादा भोजनं दिजः। सुरापीति म विद्येयः सर्वधमाविष्टिष्कतः॥ यः श्रुद्रेणाचितं सिद्धं विष्णुं वापि नमेनरः। स सर्वयातनाभोगौ यावदाह्नतसंभवम् ॥ योपिहिः पूजितं लिङ्गं विण् वापि नमेस्यः। स कोटिकुलसंयुक्त भाकत्यं रौरवे वसेत्"॥ स्मृति:। "कुण्माण्डे चार्यक्षानिः स्थात् ष्टुष्टत्यां न स्वरेहरिम्। बहुयष्ट्रः पटोले स्थात् धन-ष्टानिस्तु सूनके॥ कलाडी जायरी विस्वे तिय्यग्योनिय निम्बने। ताले यरौरनायः स्वादारिकेले च सूर्वता। तुम्बो गोमां सत्यात् यात् कलाको गोवधात्मका। शिक्षो यापकरी प्रीक्षा पूर्तिका ग्रह्मघातिका॥ यार्त्ताको सुतहानिः स्याचिररोगी च मायके। सदापायकरं मांसं प्रतिपदादिषु वर्जयेत्"। तत्र एतस्यामेव तास्त्रियेषाद्न्यस अच्च प्राप्तम् । चतः "तासं खेतास वार्ताकी न सार्देरपायी नरः"। इत्यनेन तासमपि फ्रोतं निषिदं साइपर्यंष क्षेतानुसङ्गत्। एवम

"चनावं वर्त्तनाकारां वार्त्ताकीं क्षान्दसिमाम्"॥ इति यदिपिं "कुमुभां नालिकाशाकं द्वन्ताकं पूतिकाम्सथा। भचयन् पतिः तस्त स्यादिष वेदान्तमो हिनः"॥ इत्युयनसासामान्यतोऽभिष्ठि॰ तम्। तत्र नालिका खेतकलम्बी। पूतिका दादधामधिकदी-षाय शूद्रविषयिका वा इति कलाततः। श्रहः "वाग्दुष्ट" भाव-दुष्टच भाजने भाषदूषिते। भुक्तान बाह्मण:पद्मात् विरावध व्रतो भवित्"॥ एतदभ्यासे। व्रती यावकेन। मनुः। "वीणि देवाः पविवाणि ब्राधाणानामकस्पयन्। ष्रदृष्टमद्भिनितं यच वाचा प्रशस्ति"॥ षद्षष्टमुपघातश्रद्धाभिरत्रातम्। "श्रत्रातस् सदा ग्राचि" इति याज्ञवस्कारैकवाकालात्। वाचेति उप-मधातग्रद्वाया पवित्र भवत्विति त्राष्ठ्राणैर्वाचा यत् प्रशस्यते प्रति दौपकानिका कुञ्जकभद्दी। यातातपः। "गोकुले कन्दु-भानायां तैनयन्तेत्त्यक्षयोः । भ्रमी मास्यानि भीचानि स्तीषु धालातुरेषु च'॥ अभौ मांस्थानि श्रीचाशीचभागितया न विचाध्याणि कन्दुशासायां साजादार्यं धान्यादिभर्जनशासायां वीधायनः। "घदुष्टामन्तताधारा वातीषूताय रेणवः। प्राकराः श्रुचयः सर्वे वर्जियत्वा सुराकरम्"॥ पराईमित्रसुनरिप। यस.। "श्रजा गावो महिष्यद्य द्वाह्मणौ च प्रस्तिका। दश्-रावण श्रुह्मन्ति भूमिष्ठच नवीदकम्' ॥ ब्रह्मपुराणम्। ''नवद्यातज्ञस गावा महिपण्छागयोनयः। ग्रह्मान्त दिवसै-रवदग्रभिनीत सगय."॥ स्मृति.। "काले नदोदकं गुड न पातव्यन्तु तथाध्म्। यकाले तु दगाष्ट स्थात् पौला नाचादर्शनगम्"॥ काले वर्षाकाले। ग्रहः। "स्थानमाच-मनं दान देवतापिद्यतपंषम्। शूद्रोदकैनं कुर्वीत तथा भेघादिनि:सतै:"॥ पानादौतरसामादी हरियंगः। "बभौम-मभो विस्निति मेघाः पूर्व पवित्रं पवनैः सुगिन्धिं। शह-

लिखितौ। "घाकरद्वाणि प्रोचितानि श्वीनि" इति, यमः। "प्राममांसं पृतं चौद्रं स्रेष्टाय फलसमावाः। स्नेस्ह-भाग्डस्थिता दुष्या निष्कान्ताः ग्रुचयः सृताः ॥ विश्रुधमी-त्तरे। "मुखवर्जञ्च गी: ग्रहा मार्जार: क्रमणे ग्रचि:। मुप्पाणाञ्च 'फलानाच्च प्रोचणात् ग्राडिरिचते''॥ चितः। "मचिताः मन्तता धारा भूमिस्तीयं इतायनः। मार्जारसापि दवीं च मार्तिष सदा श्रिचः॥ चार्डालेन गुना वापि दृष्टं चि रयश्चियम्। विडालादिभिष्टिष्टं दुष्टमसं विवर्जयेत्॥ पन्यव दिरस्थोदकसमात्" इति प्रातातमः "तापनं प्रत-तैसानां प्रावनं गोरसस्य च। तंमावमुद्धृतं ग्रहेत् कठिनसु पयो दिधि॥ श्रविलीनं तथा सिर्पिविलीनं श्रपणिन तु"॥ मनु:। "द्रव्याणाचैव सर्वेषां शुह्वित्त्यवनं स्नातम्"। छत्पवनं वस्त्रान्तरितनिवीपणेन केशकौटाद्यपनयनम्। शातातपः। "कौवाभिश्रप्तिते: स्तिकोदक्यनास्तिकै:। दृष्टं वा स्याद् यदनन्तु तस्य निरक्ततिष्यते॥ चभ्यस्य किश्विदुद्वत्य भुष्त्री॰ ताप्यविशक्षितः"॥ श्रुधिरित्यनुहत्ती विष्युः। "गुडानामित्त्-' विकाराणां प्रभूतानां वायुग्निदानेन सर्वेलवणानाञ्च" दति ब्रह्मपुराणम्। "चाण्डालपतितामध्यैः क्वानखैः कुष्टिना तथा। ब्रह्मध्नस्तिकोदक्या कौलेयककुट्खिभि:॥ इष्टवा केश-कौटातं सुइसकनकाम्ब्सिः। शहमयात् सहसेखं प्रभूतं घुष्टमेव चण्या कौलेयक: खा कुटुम्बी प्राणिविश्रेय:। सहसेखं विचिकिसितमनं घुष्ट पर्य्युपितम्। तथा ब्रह्मपुराणम्। "विचिकिता तु इदये यिधवदे प्रनायते। सहसेखन्तु विज्ञेयं पुरीषन्तु स्वभावतः"॥ सत्यस्के । "अनिवेदान भोत्रव्यं मत्स्य मांसच्च यज्ञवेत्। चत्रं विष्ठा पयो भूत्रं यदिक्योरनिवेदितम्॥ अनेन खयं भीक्यमन्नादिदेयभिख्तः

"नामक्यं नैवेदार्थं भद्येषज्ञामिष्ठदीचीरं विवर्जयेत् पश्चनखः' मत्यवराष्ट्रमांसानि चेति" विष्णुवचने तु प्रनेवेविधं निषिषः भित्यविरोधः । श्रतप्यायोध्याकागढे श्रीरामवाक्यम् । "यदनः पुरुषी नूनं तदन्नाम्त्रस्य देवताः" इति ।

्खदसस्यापि भचणमाद योभागवते। "निवेदितं मङ्गताय ददाडुष्डीत वा खयम्"। फलमघाइ "उहास्य देवं स्वे धामि तिविदितमग्रतः॥ ग्रदादि।सविग्रदार्धं सर्वकामसम्बर्धे ॥ उद्दाखानीय स्वे धामि दृद्ये। "त्वयोपयुक्तसमास्वासो-उलद्वारचर्चिता। छच्छिष्टभोजिमोदासास्तव मायां जये महि। हृदिरूपं मुखे नाम नैवेदासुदरे हरे:। पादोदकध निर्मात्यं मस्तके यस्य सीऽच्यतः"॥ ब्रह्मपुराणम्। "प्रम्बरीवनवं वस्तं फलमन्नं रसादिकम्। जला क्षण्योपभौग्यन्तु सदा सैन्यं ष्टि वैयावै: ॥ चम्बरीयहरेलंग्नं नोरं पुष्पं विलीपनम् । अस्या न धने शिरसि चाण्डालादिधको छि सः"॥ नारसिष्ठे। पादोदकफलमाइ । "गङ्गाप्रयागगयनैमिषपुष्कराणि पुर्खान यानि कुर जाङ्गलयामुनानि। कासेन तीर्यसलिसानि पुनन्ति पापास् पादोदकं भगवतस्तु पुनाति सद्यः"॥ ,पद्मपुराणे। <sup>9</sup>रो पिवन्ति नरा नित्यं प्रात्तप्रामिशनोदकम्। प्रचालयन्त्य स्टिखं ब्रह्माहस्यादिपातकम् ॥ शास्त्रयामशिनातीयमपौत्वा यस्त भस्तके। प्रचेपणं प्रकुर्वीत ब्रह्मदा स निगदाते" ॥ ब्रह्मच-रम्हाविशिष्टम। "पविवं विष्णुनैवेद्यं सुरसिष्टिभिः स्नृतम्। भन्यदेवस्य नेवेदां भुक्ता चान्द्रायणञ्चरेत्॥ ऋयाञ्चां शिव-नैवेदा पत्रं पुष्पं फलं जलम्। शालगामशिलास्पर्धात् सर्वं याति पिष्वताम्॥ यो यहेवार्चनरतः स तन्नेवैद्यभुगभवित्। केवल सौरग्रेवे तु वैषावी नैव भच्चयत्॥ समान धान्य-नैवेदां भच येदन्य देवतः"॥ भविष्ठे । मिलां नैव भो त्राव्य,

क्ट्रस्य तपनस्य च। उपयुष्य च समोद्वात् नरके पचति भ्वम्"। अतएव पुरसरणचन्द्रिकायाम्। "सुषुन्ता वर्ताना पुष्पमान्नायोद्दास्येत् सुधीः॥ निर्मास्य मस्तके भार्यं सर्वा-द्वेचनुलेपनम्। नैवेदाश्वोपभुष्त्रीत दत्त्वा तद्वक्रियालिने"॥ विखन्मेनप्रस्तये। नन्दिनेखरपुराषम्। "दस्वा नैवेदा-मुष्पाषि नाददीत कदाचन। त्यक्तव्यं प्रिवसृहिश्य तदा दानेन तत्पासम्" इति शिवदत्ते विशेषः। "ब्रह्मचारि-रदृष्ट्येष वनस्वयतिभिः सष्ट। भोक्तव्यं विषानेवेदां नात्र कार्या विचारणा"। एवच तत् "इन्तकारच नैवेदां भुका कुक् यतिसरेत्"॥ इति विष्णुनैविद्येतरपरम्। तथाच । "बनुत्सृष्टेन सृष्टाम्न' यासार्षं यासमेव वा! विचानिवेदि-तात्रं यो नित्यं सुड्तो स सुत्तिभाक्"॥ स्नोत्रष्टजला-त्रायजनीपयोगेऽपि न दोघः तथा हि। "पदचात् सर्वभूतेभ्यो जर्लपूर्णे जलाशयम्"। इति मत्यपुराणे जलाशयोक्षर्भस सर्वभूतेभ्य दत्यनेन अप्रक्षष्टचेतनोष्ट्रेश्यकत्वाद्ष्ट्रेश्यगतस्वासि-लाजननात्र दानलं किन्तु जर्म खखले दूरीकरणेन नदा-दिवत् साधारणीक्षतम् अतएव ''सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मयोत्-स्ट्रसद' जलम्। रसन्तु सर्वभूतानि स्नानपानावगाइनै:"॥ द्ति मन्त्रसिद्वेनीपादानं विना कथापि न स्वविमिति। तसाधारणजनस्य गोतमीक्षेन स्वामित्वश्रुतः तदुत्सप्ट्रि तद्याले पुनः खामिलात्तदुपयोगः। यथा गीतमः। "सामी ऋक्षक्षयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु। ब्राह्मणस्यात्विष्यसन्धं च्हियस्य विजितं निर्विष्टं वैय्यशूद्रयोः"॥ इति .परियशोऽ-नन्धपूर्वस्य जन्नद्रणकाष्ठारः सौकार इति मिताचरा। हत्त्य-धिकारे खक्षमाद्वापस्तमः। दायादां मिलोञ्को चान्यश्चा-परिगरहीतम्" दति । अपरिगरहीतमनचस्तीकतमसामिक-

मिलार्थः। निर्विष्टं वेतनसक्यं निर्वेगी सृतिभीगयोरित्यमरोहिः। पैठीनसिः "लवणं व्यञ्जनश्चेष छतं तैसं तथैव च। सिद्धां पेयश्व विधिवत् इस्तद्तं न भच्येत्"॥ आश्वमेधिके। "अदक्षाः मपि चाण्डालं खानं कुछ टमेव च। मुझानो यदि पग्येत तदस्य परित्यजेत्"॥ बीधायनः। "भुष्त्रानेषु च विप्रेषु यसु पात्रं परित्यजित्। भोजने विव्यक्तर्शा च बद्घाहा च तथोचाते"॥ श्रन्यत्र गमनेन पात्र' त्यजिदित्यर्थः। सुर्मापुराणे। "यो भुड्को वेष्टितशिंगा यस भुड्को विदिश्च खः। सोपानत्-क्य यो भुड्ते मवे विद्यात्तदासुरम्"॥ इति ब्रह्मपुराणे। "कुर्यात् चीरात्तमाद्वारं नच पद्मात् विवेदधि"। अधि मधिकम्। "इस्तं प्रचास्य गर्ड्षं यः पिवेत् पापमोहितः। सदेवश्चेव पेत्रश्च प्रात्मानश्चावसादयेत्॥ पर्वं पीत्वा च गर्ष्ट्रमम् श्रद्धं त्याच्यं महीतत्ते। रसाततामामागांस्तेम प्रीणाति नित्यमः"॥ इषयासः। "ततस्तृप्तः सस्मतापिधानमसीति" श्रपः प्राप्य तसाहे यायानागवस्य विधिवदाचामेदिति । देवसः। "भुक्काचामेद् यश्रीक्षेन विभानेन समाहितः। श्रीभ-यस सदा इस्ती सदि विषेणेरिया। भोजने दन्तलानानि निर्हत्याचमनं चरेत्। दन्तसम्बमसंहार्य्यं सेपं मन्येत दन्तवत्॥ न तत बहुशो यहां कुर्यादुहरणे पुनः। भवेदशीचग्रत्यनां तृष्विधात् व्रणे सति"॥ वीधायन:। "पुनराषस्य दक्षिणे पादाङ्ग छ पाणिना विस्नावयति । यङ्ग ष्टमातः पुरुषो हाङ्ग ष्टच समात्रित:। ईय: सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रौणातु विश्वधृक्षः ॥ विस्नावयति जलमिति येपः। ब्रह्मपुराणम्। "बाचान्ती-ऽध्यग्रचिस्तावद्यावत्पात्रमनुष्ठृतम्। उष्ठृत्याध्यश्चिस्तावद्याः वदो च्छिष्टमार्जनम् ॥ भुन्नी च्छिष्टं समादाय सर्वेद्धात् कि सिद्धः त्मनः। उच्छिप्टभागधेयेभ्यः सोदवां निर्वपेद्वविण ॥ तत्र सम्बः।

"्रौरवे पुर्णानिसमे पद्मावुदिनिवासिनाम्। प्राणिनां सर्व-भूतानामचय्यसुपतिष्ठताम्" ॥ इत्यनेन श्रीपनसं त्यजेत्। विष्णुप्राणम्। "भुक्षा सम्यगधाचम्य प्राष्ट्रा खोऽपि षा। यथावत् पुनराषामेत् पाषौ प्रचास्य मूलतः॥ सुस्यः प्रशान्तिचित्तस्तु क्षतासनपरियद्यः। यभीष्टदेवतानाच कुर्वति खारणं नरः ॥ प्रानिराष्यायतां धातुं पार्थिवं पवनेरितः । दत्तावकाशो नभसा अरयत्वस्तु मे सुखम्॥ असं वलाय मे भूमेरपामग्चिनिस्य। भवलेतत् परिषती मयास्त्रश्याद्वतं सुखम् ॥ प्राणापानसमानानासुदानव्यानयोस्तया । अत्र तुष्टिकरचास्त् मयास्त्रव्याष्ट्रतं सुखम्॥ प्रमस्यविद्विष्टवा-मलस भुक्तं मयासं जरयत्वयेषम्। सुखं ममैतत् परिणाम-समावं यच्छसरीगं सम चास्तु देहे"॥ विष्णुः। "यया समस्तिन्द्रिय देषि देष्टे प्रधानभूतो भगवान् यथैकः। सत्येन तेनामविश्रीषमेतदारीग्यदं मे परिणाममेतु॥ वीर्ययक्ता यथै-वास परिचाममवैति हि। सत्येन तेन मज्ज जीर्यत्वसमिदं तया । इत्युचाय्य स्वष्टकोन परिस्टच्य तथोदरम्। धनायास-प्रदायीनि कुर्यात् कर्माख्यतन्द्रतः"॥ मार्कछ्यः। "भूयो-श्याचस्य कर्त्रव्यं ततस्तास्य समसणम्"। वशिष्ठः। "सपूगय सुपर्णंच सुध्यंन समन्वितम्। चदस्वा दिजदेवेभ्यस्ताम्ब सं यर्जयेद वुधः॥ पर्णमूले भवेद्याधिः पर्णापे पापसभावः॥ जीर्यपर्ये हरेदायुः शिरा मुहिपपाशिनौ ॥

चय पष्ठयामार्वकत्यम्। "इतिश्वामपुराषायः पष्ठसममकौ नयत्। पष्टमे स्रोकयाचा तु विद्यासम्या ततः परम्" ॥ विद्यापुराषम्। "सच्छाछादिविनोदेन सन्मागांदविशेषिना। दिनं नयेत्रतः सन्यासपितिष्ठेत् समाज्ञितः" ॥ सन्योगसनन्तु पूर्ववदेत । विशेषम्तु पन्तिय सामन्युयेति सन्वेषाचमनं

सायमस्तियति वीधायनीयपरिशिष्टदर्शनात्। गायत्रीजपस छपविश्य प्रत्यक्षु खेन वायुकोणसम्बन्धिदिगष्टमभागसुखेन वा कर्त्रव्य:। "लपसासीत सावित्रीं प्रत्यगातारकीदयात्" इति याज्ञवस्कोयात्। अन्वष्टममिति सांख्यायनात्। 🕝 🕐 🥬 ः प्राय राजिकत्यम्। स्मृतिः। "पूर्वोह्मविद्यितं क्षमे न क्षतं यत् प्रमादतः। रावेस्तु प्रहरं यावत् कर्त्तव्यं तद्ययोक्तवत्॥ दिवोदितानि कर्माणि प्रमादादकतानि च॥ शर्वथ्याः प्रथमे यामे तानि कुर्यादतन्द्रितः ॥ प्रति रत्नाकरः। याज्ञवस्क्राः-द्विरसी। "अपास्य पश्चिमां सन्त्र्यां दुलामीसानुपास्य च। भृत्यै: परिष्ठतो भूत्वा नातित्वसोऽय संवित्रित्"॥ यग्नौ होमी-यासनं सामित्रपरम् । उपास्य चेति चकारी वैश्वदेवादिकं समुचिनोति। सविशेत् स्वपेत्। तथाच विष्णुपुराणम्। "पुनः पाकसुपादाय सायमप्यवनीयते। वैखदेवनिमित्तं वै पत्रमा सार्षे विक्तं हरित्॥ पतिधिद्यागतं तत्र स्वभक्ता पूजयेद् बुध:। दिवाऽतिधी तु विमुखे गते यत् पातकं भवेत्॥ तदे-वाष्टगुणं विद्यात् स्ट्योंटे विभुखे गते" ॥ स्ट्येंटि स्ट्यें यसंगते स्थिंग प्रापिते। तथा। "क्रतपादादिगौचस्तु भुक्का सायं ततो गटहो। गच्छेत् प्रयासस्कृटितामपि दार्मयी तृष"॥ निधि भोजनं सार्दप्रदराध्यस्तरे प्रागुक्तम्।

चय गयनविधिः । सति च्याँ गय्या च न पातनीया सा च च्यादियात् पूर्वमुत्तोननीया । तथा च छातिः । "भाक्त-राष्ट्रश्रय्यानि नित्याग्नि सिक्तनानि च । च्यावलोकिदीपानि क्याया वैश्मानि भाजनम् ॥ चामनं वसनं गय्या जायापत्ये कमण्डलुः । चामनः गुचिरेतानि न परेषां कदाचन" ॥ न कदाचन रत्यनुमतिं विना चन्ययाऽतिय्यानुपपत्तेः । व्यासः । 'याची देशे विविक्ते तु गोमयेनोपलिस्के । प्रागुदक्षुवने भैव संविधित्त सदा वुधः ॥ माइलां प्राकुत्तमञ्च धिरःसाने निधाययेत्। वैदिकेगं रहे मन्ते रचां कला स्वपेत्ततः" ॥ गर्मः। "स्वरु प्राक्षियः प्रते आयुष्ये दिच्चा धिराः । प्रस्कृ शिराः प्रवासे तुन कदा विदु स्क्षिराः" ॥ साकं छेयपुराखे । "प्राक्षिएः गयने विद्यात् धनमायुष्य दक्षिणे। पश्चिमे प्रवर्ता चानि सत्यं तथीत्तरि" ॥ तथा नमस्त्रत्याव्ययं विद्यां समाधित्यः स्वपेतिशि"। साकं छेयः । "शून्यान्तये समाधित्यः स्वपेतिशि"। साकं छेयः । "शून्यान्तये समाधित्यः स्वपेतिशि"। सक्ष्रेवर्यः चापि प्रकरा वोष्ट्रपांत्रपु ॥ धान्यगोविप्रदेवानां गुरूपाञ्च तथीपरि। न चापि सन्त्रध्यते नाग्रची नाग्रची नाग्रची स्वयम्। माईवासा न चापि सन्त्रध्यते नाग्रची नाग्रची स्वयम्। माईवासा न नग्नय नीत्ररापरसस्त्रकः। नाकाणे सर्वश्रुत्ये चन च चैत्रदुने तथा" ॥ न स्वपेदिल्यर्थः।

चय दारीपगमनिविधिः। याच्चवस्ताः। "पोडम्मुनिगा स्त्रीयां तास युग्मास संविधित्। ब्रह्मचार्येव पर्यस्याद्यायतस्य वर्जयेत्" ॥ स्त्रीयां पोडम्मानमा स्तृः गर्माधानमोग्धकासः। तथोक्तविधिना गच्छन् भद्मचार्य्येव भवति तत्र ब्रतादी
एच्छन् ब्रह्मचर्य्यस्वसनदोपी नास्त्रीति मिताचरा। पर्वापि
वोक्रानि। स्वारीतः। "चतुर्येऽस्ति स्नातायां युग्मास च
गर्माधानम्। तदुर्वतं ब्रह्मगर्मे दधातीति" पत्र चतुर्याः
रास्त्री यद्मधानमुक्तं तद्रजोनिष्ठसौ वोद्यम्। "रक्तस्युपरते
साध्यो सानेन स्त्री रजसत्ता" इति सनुवधनेकवाक्यत्यात्।
साध्यो सर्माधानादिविद्यित्वकर्मयोग्येत्वर्यः। साद्यायतस्त्रो
वर्जयदिति तु रज्ञोनिष्ठसौतरपरम्। चतुर्या रात्रो जातस्त्राः
प्रमस्तत्वमाद्यापस्तस्यः। "चतुर्योपस्यवृत्तरोत्तरामजानि,श्रीयसार्यम्" इति मिताचरा मदनपारिक्षातयोः। सानाननारं
प्रमर्णि रज्ञोदर्यि विग्रीयमाद स्रारीतः। "रजसता यदि

साला पुनरेव रकस्वता। श्वष्ट्याद्यदिनाद्यीगग्रचित्वं मष्ट विदाते। एकोनविंग्रतेरविक् एकाष्टं स्वासतोदादम्। विग्रयम्-त्युत्तरेषु विरावमश्चिभेवेत्"॥ षष्टादश्चित्वादर्शक् मसदश-दिनाभ्यन्तरे रत्यर्थः। एवसुत्तरवापिः विशिष्ठः। "विरात्रं रजखला पश्चिभवति सा नाष्ट्रात् नाभ्यञ्ज्यात् नाषाु सायात् षधः भयौत न दिवा खायात् न रक्षं प्रमृजित् नास्निं स्प्रीत् न दलान् चास्येत्न मांसमत्रीयात्न ग्रष्टा विरोचित न इसेत् न निधिदाचरेत् नाष्ट्रसिना जल पिवेत् न सोहिता-यसेन न खर्वेण वैति"। न रक्ष प्रमुजेत् न रक्षं कुर्यादि-स्वर्धः। न खर्वेण वामपाणिना सोहितायसेन तास्त्रपादेण। भरतायपि कामुकीगमनमाइ विश्वपुराणम्। "सृती नरक-मभ्येति हीयेतात्रापि चायुष.। परदाररतिः पुसासुभयवापि भौतिदा। दित मत्वा खदारेषु ऋतुमस्म बुधो व्रजीत्। यथो-सदोषद्दीनेषु सकामेखनृताविष् । प्रोटगर्भामिष यसन्त-कामामुपेयात्। तदास वशिष्ठः। "बाद्य खो वा विजिनिष्ठ-मानाः पतिभिः मध शवन्ते इति स्तीणामिन्द्दत्तीवर इति"। विषानिष्यमानाः प्रसविवाः गयन्ते प्रोरते। सटोरूपं छान्ट-सम्। पैठीनसिः। "लाष्ट्र विस्वरूपं जवान वसेणेन्द्रः तं देवा झप्राष्ट्रित्ववदन् स स्वियः सपायक्षीत वर दास्वाभीति ततोऽस्याः सतीयं नद्वाहत्वायाः प्रषद्मन एकं भृभिवनस्रतय-येकम् पासां मधवा तृष्टः मायच्यत वरं भूमेः स्थिरत्वं हक्षाणा हिनारोष्टा कीणां सर्वकालेषु सभाव." इति सभाव: सभोगः। दुषकानमाइ "स्वेष्ठामूनामवाद्येषारेवतीक्षणिका-वित्रती। समरा वित्रयं स्वका पर्ववर्ध वजेहती"। एवस "ऋती नीपैति यो मायामन्त्री यय गच्छति। तुष्यमाष्ट्रम्त-योदींवसयोगी यय गच्छति"॥ इति वोषायभीयसन्तिह

दीयाभिधानम् पकामविषयम्। "पर्वण्यनारीग्यमनृताविष शच्छन् पत्नोन्तिरात्रसुपवसेत्"। वृष्ट्यातातपः। "स्त्रीणां मंग्रेषणात् सागति तासिः संकथनादपि। ब्रह्मपर्धां विपदीत न दारेष्वृतुसद्भमात्'॥ मंप्रेक्षणादित्यव संगद्दः कामार्यः। याद्वानस्तरम्तु निषेधमाष्टतुः ग्रह्वसिष्टितौ। "ऋतुसातौ तद्षीराचं परिष्ठरेत्। नात्रो न दिवा मैथ्नं व्रजेत्। कौवा पत्पवीधाय दिया प्रस्यन्ते। भत्पायुपच तसादेत-दिवजेयेत्। प्रजाकामः पितृषां नोष्टरेत् तन्तुं विच्छिन्दात् प्रयतिताच्छेदाय ये नाप्रतिष्ठो भवति । तसात् प्रतिष्ठाकामः प्रजया तिष्ठति"॥ नीयव्होनिपेधः। तन्तुं सन्तानम् प्रच्छे-टाय भविष्ठेदाय सन्तानस्य येन यसात् तन्तुष्ठेदात् भप्र-तिष्ठय प्रजानुत्पच्या भप्राप्तनिष्ठः सन् पत्ति तसालदुत्पचार्थं यतितव्यमिति कत्पत्रः। एवश्च श्राहदिने यद्भिगमन प्रागुक्तयाज्ञवल्कावचनादुक्तं मिताचरायां तद्वेयम्। वश्चिष्ठः "शुद्राचेन तु भुक्तेन मैधुनं योऽधिगच्छति। यस्यात्रं तस्य ते पुता चल्याः शूट्रवहिजाः । ऋतुस्नातां च यो भायों सनिधौ नाधिगच्छति। सगच्छेत्ररकः घीरं ब्रह्महिति तथीचते"॥ सिवधावित्यभिधानादसिविहितस्य गमनाभावे न दोषः । प्रची॰ स्प्तिपर्यन्तम् ऋत्वभिगमननियममा ह विष्णुपुराणम्। "ऋतु-कासाभियामी स्थात् यावत् पुत्री न साधते। ऋणापकर्ष-षार्थं हि पुष्तस्योत्पादनं प्रति'॥ यतितव्यमिति येषः। बापस्तवः। "ऋतीत् गर्भगद्धिलात् स्नानं सेयुनिनः स्नुतम्। बनुतौ तु सदा कार्या यौचं सूबपुरीमवत्"॥ इति "दावैता-धगुचौ स्थातां दम्पती श्रयनं गती। श्रयनादुधिता नारी ग्रुचि: स्यादयचि: पुमान्"॥ सेयुनगुहै: पूर्वे सलसूत्रीवार्ग न कुर्धात्। "तैलाभ्यक्षे तया वान्ते श्मश्चकर्माष मैघने॥

येत्। येवा ययायैनामानो योगाः कार्योतु योभनाः। न मकनगुणसम्पन्नस्यतेऽस्पेरश्रीभिर्वषुतरगुणयुक्तं योजयेनाङ्गलेषु। प्रभवति दि न दोषो भूरिमावे गुणानां सजिललव दवानोः समदोतेश्वनस्य। गुणमतमपि दोषः कथिदेकोऽतिष्टदः समयोते यदि नान्यस्वदिरोधो गुणोऽस्ति। घटनिय परिपूर्णे पद्मगत्येत सद्यो मनिनयति स्राया विन्दुरेकोऽपि सर्वम् ।

भय नामा नस्त्रज्ञानार्थे यतपद्चक्रमा ह । ''चक्रं यत-पदं वस्ये ऋद्यांगाद्यरसभावम्। नामादि वर्णतो प्रेया ऋद्य-राज्यंगकाम्तथा। तिर्थागृह्यता रेखा रद्रमंखा सिखेद्र्यः। जाधने कोष्ठकानाच मतेकं १०० नाम संगयः। भवक हडा ऐग्रान्यां म ट पव ता हरिति चाम्नेयां न य भ जखा नैनर त्यां गसद चला वायव्याम्। यच पच क्रमणैव विंगवणित् प्रयोजयेत्। पञ्चस्यसमा योगे एकैकं पञ्चभा कुर। अवः र्णाद्यास्त्रयो प्रेयाः मध्यचर युता स्तया। सन्नातीयैकामाः स्याग पञ्चस्यविनिषयः। ऋद्खतोरम्यकारेण ग्रेनसस्य परि ग्रष्टः। कुर्यात् कुपुभुदुखाने चीणि वीण्यचराणि च। कुघ-हका भवेत स्तभो रोट्रे लीगानगोचर । पुषपठा भवेत् साभी प्रस्ते चारतेय मद्भवे। भुधक भवेत् स्तको पूर्वाषादे च नैक्टेते। द्यभडा भवेत् साभी वाययो भाद्र उत्तरे। एव प्राभावतुष्कञ्च चातव्यं खरवेदिभि:। धिष्टानि सित्तकादोनि प्रत्येक चतुर-सरे:। साभिनित्ययकास्तव यतैकं हादशाधिकम्। यद-त्तां श्रक्षकोष्ठस्थः क्रूरः सोस्योऽपि वा ग्रष्ठः। तवस्थो वेधयेत् सस्यक् पुसी नामादिमाचरम्। सीस्यैविषं ग्रमं ज्ञयमग्रमं पापखेचरै:। मिश्रीमिश्रफलं तव निर्वेधेन ग्रुभाग्रमम्। यदाचं सवैती भद्रे यहोषयहवैधतः। शुभाश्भफल सर्वे तदिषापि विवित्तयेत्। प्रमुख्या भएएए श्रीकारास्त्रेयोंगे धिष्टानि

नस्ताणि। सत्र चतुभिवंधेरिकं नस्तवं यया। सर्डण ३। विवृ । ४। विवेकिकि। ५। सुघडकः । ६। केकीकि । ७। कुचडकः । ६। केकीकि । ७। कुचडकः । ६। केकीकि । ७। कुचडकः । ६। केकीकि । ०। ११। टिटें । ए१। टिटोपि। ११। पुषण्ठ। १३। पेपोरिर। १४। करिरोत। १६। नितृते । १७। नोयियु। १८। सुध्माठ । २०। मेभोजित। २१। जुजेजीखः । ०। खिखुखेखो। २२। गिगगो। २३। गोगि। वशे। चिया । १८। खिखुखेखो। २२। गिगगो। २३। गोगि। २०। खिखुखेखो। २२। गागगो। २३। गोगि। १७। खिखुखेखो। २२। मागगी। २३। गोगि। १७। खिखुखेखो। २। मरक्षयुत्र धकार थुकोन खेयः। इस्ति विव्यक्ति। १। साम्य्ययकारेण दन्य सकारो छेयः। इति यत्रपदचक्रम्।

धय चन्द्रताराद्यशुमप्रतीकारः। "कर्म कुर्यात् फलावामेर चन्द्रादिशोभने बुधः। सुख्यकाले त्विदं सर्वे नार्तः कालमपे-चते॥ चन्द्रे च शक्षं लवणच तारे तिथावभद्रे सिततग्रुनांस। धान्यश्व द्यात् करणचेवारे योगे तिलान् हैम'मण्य लम्ने ॥ योगस्य देम कर्णस्य च धान्यमिन्दोः यहच तराहुनमणी तिथिवारयोध। तारावलाय सवणान्यथ गाध राग्रेटेयात द्विज्ञाय कनक श्रुचि नाडिकायाः"। वामनपुराणे। "विष्टयो व्यतीपाताय येऽन्ये दुर्नीतिसभवाः। ते नाम सारणादिणो-र्माश यान्ति सङ्घलनः ॥ चवणैर्युवितप्रतिमामिभनवसूर्योदरे मना लिखा तारादोपोपश्रमनाय दिलाय द्यादिश्हरी॥ एक निपच सप्त हिजाय ददात् पनानि सवण्य। क्रमगो लकानि विपदि प्रत्यस्मिरणास्यतारासु। पसन्तु सीकिके-माने: साष्ट्रशिदमायकम् ॥ तीलकतियतय श्रीय ज्योतिर्श्रीः रमृतिसमातम्। विषत्तारे गुडं ददात् शाकं ददाधिजकानि॥ प्रत्यरो सवणं ददात् निधनं तिसकाचनम्"॥ राजमार्नणे

प्रहरोपे द्व्यधारणमाह। "दोषो न खाद्यहाणामशिशिर किरणे तास्त्रभिन्दी च ग्रह्म एष्वीपुने प्रवास ग्रग्रधरतनये गातकुमा भुज्ञेन। देवाचार्यो च मुक्ता मणिरसुरगुरी मीमक सूर्यसूनी राष्ट्री सार गिरीणा कमनजतनये राजपट विभन्ते "। यातकुषा सुवर्णम्। राजपष्ट कर्पूराणीति प्रमिद्यम्। गिरीणा सार सीष्ट गिरिसारस्तु विज्ञेयो सीष्ट्रे मलयपर्वते इति निका गड़ भेषात्। "यदाद्य इस्य यद्र्या तत्ति सान् विषमे स्थिते। यद्यात् सत्कत्य विषेध्य खयच विश्यात् सदा" ॥ वुद्धिप्रकाशि "विश्लीं चोरिकामुल गोजिहा हददारकम्। ब्रह्मयष्टी भिद्यपुच्छीं वाद्याल चन्दन धितम्॥ अञ्चगन्ध क्रमात् सूर्याः इद्याद्दीपोपशान्तये। तामादीनामभावे तु स्वयञ्च दश्चिपे भुजि"। विश्वानी विल्व गोजिष्वा धनन्तमूल वृददारक वीर ताइक मिद्दपुच्छी रामवासक। "खेत वास सिता धेनु शाङ्गी वा चौरपूरित । देशो वा रजतशब्दशब्दरोपोपशान्तरी ॥ सिद्धार्यकोध्ररलनौद्धयमुस्त्रधान्य लामज्जक मफलिनौ सवचा च सामो। स्नान कुरु ग्रहगणप्रश्रामाय नित्य सव रविप्रभृतय सुमुखी भवन्ति"॥ सामञ्जब वीरणसूसम्। "सयाम महटे दुर्गे चौरव्याघादिपौडिते। कान्तार प्राणसन्देहे विषवित्र जलेपुवा॥ राजादिभ्यस मदासे यहरोगादिपौडिते। स्रात्वा त पुरुष सर्वेरापदा विष्रमुच्चते"॥ त नरसिष्टम्। 'देव ब्राह्मणपूजनात् गुर्वच समादनात् प्रत्यह साध्नासय भाप णात् श्रुतिवच श्रेयक्याकीत्तनात्। होमादध्यरदर्भनात गुचिमनोभाव। ज्ञपाद्दानतो नो कुर्वन्ति कद्। चिदेव पुरुषम्दैव ग्रहा पीडनम्'॥ गर्ग । गतमिन्दुस्तर भौमो दाविशट भृगुनस्न । पञ्चपञ्चात्रातो जीव सोरस्तु सप्तमप्तति ॥ तयाकी दादश द्ध पोडश परिकोत्तितम्। इरान्त कर

खदरा दृटते च ग्रुभग्रहाः"॥ पद्याग्रतः पद्मसार्डगतहयमिति
यावत्। श्रथ नवानां ग्रहाणां दानानि। "सूर्यो धेनुच तास्त्रह्य गोधूमं रक्षचन्दनम्। चन्द्रे चन्दनगद्धी च वद्मच तिलतण्डुनान्॥ कुकी द्वयः प्रदातस्यो रक्षवसं गुडीदनम्। युधे कपूरमुहस्त्र हरिहस्तं हिरस्यकम्॥ पौतवस्त्रहय जीवे हरिद्राक्षनवानि च। चन्नः ग्रक्ते सितो देयः ग्रक्तधान्यानि यानि च॥ ग्रनी च सतिला देया क्षरणा गौर्को हमुत्तमम्। राहो च महिषीक्षागी माषाय तिनमर्पणः॥ चनामिधी च दातस्यो केतो चाद्मस् मित्रितम्। स्वर्णं गोविष्रपूनामिः सर्वेषां गान्तिकत्तमा"॥

तिष्यादीनां क्रमेग वनवस्वं यया "तिधिदिनकरणर्चं लग्नवीर्यं प्रति रयमाच पराश्ररः क्रमेण"। रयोवेगः। "तिधि-रेकगुणा प्रोत्ता वारसैव चतुर्गुणः। चरुचं स्थात् पोडगगुणं ,योगसैव ग्रताधिकः॥ सहस्रेणाधिकः सूर्यसन्द्रो सत्त्रगुणा-धिकः। वर्षितवा बल मुवंतसाचन्द्रवसंबलम्॥ सग्न-माला चन्द्रमाय मन:कम्प्रेफलं प्रति। तसालग्नाच्छ्यादाश्च नराणां फलमादिशेत्"॥ ब्रह्मसिद्यान्ते । "तिथिरेकगुणा प्रीक्षा नचत्रञ्च चतुर्गुणम्। करणं पड्गुणं प्रीक्षं वारद्याष्ट्रगुणः सातः"॥ एवञ्चाग्रभचन्द्रादो प्रतोकारविधानात् प्रभवति हि न दोषो भूरिभावे गुणानासित्याद्यभिधानात् घष्टवगप्रकरणे कष्टाभीष्टे तुस्त्रमञ्चे फले चेत् स्वातां नागफनयीस्तव वास्तः। "वाचा पङ्क्षियोऽतिरिक्तस्त्योः स्यात् सर्वस्यामे कस्पनैवं प्रदिष्टा" द्रांत वादरायणवचनात् पड्कि: परौपाक:। ये यदारिष्टस्चका दल्यभिधानाच राजमार्नण्डे। "चन्द्रानि-धनगाः पापालग्नादा निधनोपगाः । कर्त्य पाननागः स्वाह्ममाग्रहे पयो यया॥ इन्हरमगान् पापान् वर्जग्रेनेपन विलानच चन्द्रच निधनसंखं सर्वारमायोगेषु इत्याहिच्योतिःयास्तोज्ञनिषेषस्य न पर्य्युदासता ततोऽष्टमचन्द्रासे तत्
प्रतीकारकरजतदानारिपूर्वकं नवास्त्रमादादिकाणे तिस्पात्तभंवति न तु राद्यादो श्राहकारणे श्राहानिष्यत्ति व कर्याःनिष्यत्तिरित । किन्तु यदि प्रतीकारपृर्वकं करोति न दोषछनकम् श्रन्यया प्रतिष्टजनकमिति श्रतएव यद्यापां स्चकलेन
पूर्वस्हित्वात् पूर्वमिषि प्रतीकाराय प्रायस्ति ति ।
तथोज्ञ भगवत्या चिकाच्या भविष्यदिवाहे श्रीभागवते। चिक्तुः
सामग्येजुर्भस्त्वेष्या रच्यां दिजीत्तमाः । पुरोदितोऽयर्वविदे
जुद्या श्रद्यान्तये॥ दिराखक्ष्यवामांसि तिनांस गुढसिश्चितान्। प्राटाहेनुश्च विप्रेस्यो राजा विधिविदां वरः"॥

"यिनचक्र' नराकारं निखिता सीरिमादितः। नाम
भ्रम्सं भवेदात फलं तत्र ग्रुमाग्रमम्॥ एकं मुखे दचइस्ते
चलारि पट् पदद्ये। दृद्धि पच्च करिवामे चर्लारि मस्तके
व्यम्॥ इयं नेत्रदये गुद्धो दय तत्र न्यसेदुधः। मुखे द्वानजीयो देशे भ्रमः पादे त्रियो दृद्धि॥ वामे भीर्मस्तके राज्यं
निवे सीत्यं स्तिगुदे। ताम्बाष्टदादये भ्रम्चे यदा विद्यकरः
भ्रानः॥ तदा सीत्यं वपुष्यन्तु दृत्यीप नेवदच्योः। स्तीयैकाद्ये पछे यदा सीत्यकरः यनिः॥ तदा विद्यः यरीरखो
गुद्धो वर्त्तेऽद्विवामयोः। यस्य पौडाकरः सीरिस्तस्य चक्रे
फलन्विदम्। निजित्वः स्वयद्येष तैनमध्ये चिपेस्तः॥ निचित्वः मूमिमध्यस्यं स्वत्यपुर्षः प्रपूज्येत्। तृष्टिं
याति न सन्देदः पौडां स्वद्धा यनेयरः ॥

श्रय प्रकीर्णकाम्। "गुरोर्युगोरस्त्रवाल्ये वार्डके सिंहगे गुरी। गुर्वादित्ये दशाहे तु वक्ते जीवाष्टविश्वके॥ पूर्वराश्रा-खनायातातिचारिगुरुवसारे। प्राथाशिगन्तृजीवस्य चातिचार- विपचने॥ कम्पादाइतसप्ताहे नीचस्थन्ये मनिस्त्चे। भानु-लिङ्चितके मासि चये राचुयुते गुरौ॥ पोषादिकचतुर्मासे चरणाड्वितवर्षणे। एकेनाङ्गा चैकदिने दितौयेन दिनतये॥ द्यतीये तु सप्ताहि माङ्गस्यानि निजीविषु:। विद्यारमाकर्णवेधी चुडीपनयनोद्दद्यान्॥ तीर्थस्नानमनाहत्तं तयानादिस्रेच-यम्। धरीचा रामयज्ञांस पुरयरणदीचणे॥ व्रतारभप्रतिष्ठ च गृहारकाप्रवेशन । प्रतिष्ठारकाणे देवक्षपादेः परिवज्येत्।। द्वात्रिंग्राह्वसायास्ते जीवसः भागवस्य च। द्वासप्तिमद्वस्ये पादास्ते द्वादशक्षमात्॥ श्रस्तात् प्राक् परयोः पद्य गुरोर्वाः धिकदालते। पत्त वहो महास्तेत भृगुर्वासी दग्नाहिक:॥ पादांस्ते तु द्याचानि वृद्धो बालो दिनवयम्"॥ अलन्ता-शक्ती राजमार्त्तग्डे। "दानी हादी च सन्धांग्री चतुःपञ्च किंगा-सराम्। जीवे च भार्गवे चैव विवाहादिषु वर्जग्रेत्॥ बाल-स्गी परिणीता युवसिरसाध्वी भवेदवध्यम्। इहे तस्मिन् वन्यः सम्बास्ते मृत्यमभ्येति॥ एकराशी गती खातामकचिषयी यदि। गुर्वोदिखौतदा खच्या यज्ञीदार्चादकाः कियाः"। गुर्वादित्ये दयाहे त्विति प्रागुक्तं नचनसेद्विषयम्। रवि-यहयोदंशकविशेषाभ्यन्तरिखत्या अम्तत्यमाह सूर्यमिषान्तः। "एकादयामरेज्यस्य तिथिसंस्यार्कजस्य च । चस्तांया भूमि-पुत्रस्य द्यसप्ताधिकास्तया॥ चन्द्रो द्वादयिभः पथात् दृश्यः प्राग्यात्यदृश्यताम् । पथादस्तमयोऽष्टाभिरुद्यः प्राधादस्तया ॥ प्रागस्ते तूदयः पश्चात् खलात्वात् दश्रभिम्गोः। एवं वृद्धे ष्ठादयाभिषतुद्यभिरंयकै॥ वक्षयीत्रगतियाकति करीलस्त~ मगीदयौँ ॥ कचिस् प्रतिपच्छे पेऽपि चन्द्रदर्शनम्। "घन-भाषाच गरदि इसन्तेऽप्यतुपारिणि। रवे: साईदगांगेऽपि हम्यतामिति चन्द्रमाः"॥ शतानन्दः। "माध्यां यदि मध्र

षास्ति सिंहे गुत्रकारणम्"॥ यत्रैव साएडव्यः। "स्ति-विधजातकान्नप्राशनचूड़ादिकः सर्वः। रविभवनखे जीवे कार्य्योवर्ची विवाहसुर ॥ रविभवनस्ये सिंहस्ये विवाहे विद्योपो वच्यते। भोजराजः। "एकरावं परित्यच्य कुर्यात् पाणिप इंग्रहे। प्रयाणे सप्तरावन्तु विवारं व्रतवन्धने ॥ धनिष्टे विविधोत्यासे सिंधिकास्नूदर्भने। सप्तराव्यं न क्षवीत यावी-द्वाद्वाद्मिङ्गलम्"॥ व्रतबन्धने छपनयने। भृगुः। "वाम्पे राजनि सप्ताची ब्राह्मणानां भाइस्तथा। शूद्रसार्धदिनं प्रीक्षं सर्वकार्योषु वै स्याः"॥ गर्गः। "दिग्दाई दिनमेवाना ग्रहे सप्तदिनानि च। भूकम्पे च समुङ्गते व्याद्वाणि परिवर्जयेत्॥ उल्लापाते च वितयं धूमे पचदिनानि च। यजपाते दिनमेर्का वर्जरीत् सर्वकर्मसु"॥ भीजराजः। "यहे रविन्दीरविन-प्रवासी केतृहमोस्यापातनादिदीपे। व्रते दयाचानि वदन्ति तज्ञास्त्रयोदग्राहानि वदन्ति केचित्"॥ ग्रहणकासे भूक-म्योल्कापातकरकापातवध्वपातादिसमाहारे वयोदशाहमग्र-षम्। विधिदूनतत्समाधारे दयाद्यम् एकैकोदये व्याहमिति सियाः। काम्यपः। उल्कालसणम्। वद्यक्तिसा च सुद्धाया रत्तानीलशिखीळवळा। पौरपौच प्रमाणेन एल्डा नानाविधा मता"॥

श्रय निर्घातः। गर्गः। "यदान्तरोचे बनवान् मार्गतो सर्ताहतः। पतत्यधः स निर्घातो जायते वायुसम्भवः"।

भय केतु:। "केतवस शिखावन्ति ज्योतींपि स्थितराखुत्पातकपाणि"। दीपिकायां "गुर्वादिखे गुरी सिंहे नटे
शुक्ते मिलक्त्रेचे॥ याम्यायने हरी सप्ते सर्वकर्माणि वर्जयेत्"॥
प्रतिप्रसर्वे न्यूनाधिकादिविरोधे राजमार्चछः। "उक्षानि
प्रतिप्रहानि गुनः समावितानि छ। सामैस्यनिरपेद्याचि
मौमांस्यानोह्नवोविदैः"॥

त्रयाकालदृष्टिः। हालचिन्तामणी। "मार्गामामात् प्रभृतिमुनयो व्यासवास्त्रीकिंगर्गायेवं यावत् प्रधपंषविधौ निति काल वदन्ति। नाडौजरः सुरगुरुमुनिर्धित ष्टेरकाली मासाविती न ग्रभफलदो पौषमाघौ न ग्रेषाः"॥ स्मृतिसार च्योतिषम्। "एकराशिस्थितौ स्थातां यदि राष्ट्रहस्पती। विवादवतयत्रादि तदा सर्वव वर्जयेत्"॥ भीमपराक्रमे। "वाषीकूषतष्ठागादिनिषदः सिंहगे गुरी। सकरस्ये तु तत् कार्यः न दोषः काललोपजः॥ कार्यं मकर्ग जीवे विवादाः दाखिलं बुधै। नतु सिंहगति जीवे कुर्दाणो सत्युमाप्रुयात्"॥ मुह्नर्तामृते। "अतियनवाद्य हि चन्द्रोऽनिष्टफन्ः छपा-पञ्चमौपातः। श्रीतविषमगतापि तारा सितपचे नागुमं कुरते ॥ यहेण विद्योऽप्यशुभान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विनो-सगोऽपि। करोति पुसा सकलार्यमिद्धि विष्ठाय पाणियष्ठणं हि पुष्यः॥ पुष्यः पर्वति धन्ति न च पुष्यक्षतं परः। घपि हादशरी चन्द्रे पुष्यः मर्वार्धमाधकः॥ भ्रवमस्तकरिष्टमेऽपि पुष्यो विहितमुप्याति सदैव कर्मासिडिम्"॥ विशिष्ठः। "चौषोऽपि यस्येच गुभक्रियामु क्ररोविलाने सदर्नेऽयवा स्यात्। श्रामद्ममृत्युं तमुदौरयन्ति सन्तोऽयवा सृत्युग्रं इ प्रपन्न.॥ लानदोपाय ये केचित् ग्रह्दोपास्तथापरे। ते सर्वे विलय यान्ति समे गुरुभुग् यदा"॥ श्रीपतिव्यवहारिनण्याः "विष्टावद्वार्के चैव व्यतीपाते श्रमेश्वरे। निधन जन्मनच्ये सध्याद्भात् परतः ग्रभम्"॥ तया "रेवती रविवारेण इस्ता सामेन संयुता। पुषाऽध्यवनिप्रवेष रोहिषी व्यमयुता। साती च गुन्यायुक्ता गुक्रेगोत्तरफस्गुनी। सूलन्तु पङ्गमङ्गेन सर्वकार्येषु ग्रस्यते"॥ भीमपराक्रमे। "श्रिश्वनी सद्द स्य्यंण सोम सगित्रास्त्या। धस्पा भौमवारेण बुधे इस्तः पकौ- स्तिः॥ चतुराधा गुरीवार विखदेवस्तु भागवे। वार्षं यित्रयुक्तमानन्दोऽयं प्रकी तितः"॥ दीषिकायोम्। भूमि- प्रवाक्षयोरिक्वनन्दामसद्दास्पाद्रांन्यचिवािसमूनािमांभः। भागविषाद्वयोरिक्व भद्रा भवेत् फलगुयुग्नालयुग्नोडुसयुता। सोमपुत्रस्य वारे जया स्थानमृगीपेन्द्रगुविन्द्रयास्याभिनिद्धाः सिमपुत्रस्य वारे जया स्थानमृगीपेन्द्रगुविन्द्रयास्याभिनिद्धाः शिक्षाः। मौष्पतेरिक्व रिक्ता च युक्ता यदा विष्ययक्तािमगुक् पितादित्यम्बुभिः। सूर्य्यस्तस्य दिने यदि पूर्णा ब्रह्मदिना- चिपतिद्रविषैः स्थात् योगवरास्तिभिरेव समेताः सर्वसमी- चित्रसिक्तिगुक्ताः। व्रास्ततम्। "भृवगुस्तस्यम्ना पीष्ण- भान्यक्षयारे सरियुगविधियुग्ने फलगुनी भाद्रयुग्ने दिवसकर- तुर्द्दो गर्वरीनाथवारे। गुरुयुगनज्ञवातोषान्त्यपौष्णानि कौजे दद्दनविधियतान्या सैत्रमं मीम्यवारे। मस्टिक्तिमपुष्धा- मेत्रमं जीववारे भगयुग जयुग्नविष्युप्तेचे सितान् ग्रममः कमनयीनौ सौरियारिज्ञतानिः।

यस्तम्। राजमात्तेग्रे। "वन्द्राक्रयोभवेत् पृणी कुर्जे भद्रा गुरी लया। वृधमन्दी च नन्दायां शक्ते रिक्तास्तातिथि:। चादित्वहस्ता गुरुप्ययुक्ता वृधानुराधा शनियोहिणी च। सीने च विण्युः कुर्जरवती च गुक्तांत्रिक्ती चास्तयोगवर्गाः। यदि विष्टिव्यतीयाती दिनं याप्यग्रमं भवेत्।
हन्यति स्त्रत्योगिन भाष्त्ररेण तमा यथा"। कम्य मति येष्टत्यादियोगहनने स्त्रत्योगस्य न सामध्यम्। तथा राजमात्तेण्यः।
"इन्द्रस्तास्यो योगः मर्वाण्यग्रमानि हेन्या नियतम्। न
भवति पुनरिह शक्तो वेष्ट्रांत विष्टिव्यतीयाते। वाराः क्र्रास्तिचिभद्रापादेकाविष्ठतय सम्। एतस्य यमस्योगं विष्टुष्टरस्वाच्यतम्। विष्टुष्टरं तु यत् किण्यित् ग्रमं वा यदि वा श्रमम्।
लायते विष्टुष्टरं सु यत् किण्यत् ग्रमं वा यदि वा श्रमम्।

हिंद्वि: पुत्रनमा तथैव च। नष्टं दत्तं सतं वापि तत् सर्वं विगुः णायते। सर्वदेगाविगीपेण फलं स्थात् गुभयोगजम्। भस्तं सिडियोगद्य यदोकि सिन् दिने भवेत्। तिहनन्तु भवेद्ष्टं मधुमपियेथ।विषम्"। वराष्ठः। "दुःखप्रनामको वारो नचर्व पापनागकम्। तिथिरायुष्करी प्रोक्ता योगी वृद्धिविवर्दकः। चन्द्रः करोति मौभाग्यमंगकः । ग्रुमदायकः करणास्रभते नर्स्सी यः मृणोति दिने दिने। चारूढो दिग्दे रधे च त्रागे पाषाण-काष्ट्रादिके नौकायां तरणे उपान हि कथाशको तथा कोधने। उच्छिप्टे दिनशविशेषसमये नचयवारादिकं दैवन्ना न पठेत् पठेट्यदि पुनः योता स्थियं नाष्ट्रयात्"। चात्विच्ये वर्च्यम-धिक्कत्य भविष्ये। "तिथिनचत्रयोगानां वागणाच्य तथा विभो। सुतको जीविकार्यच यस मुखेन पाठयेत् । प्रत-एव शमः। नस्त्रेजीव्यते यस मोऽन्यकारं प्रपद्यते"। जोतिपे। "सर्वत्र कार्यो व्धश्रक्षजीवाः केन्द्रविकीणीपगताः प्रशस्ताः। त्वतीयनाभारि गताथ पापास्तिधिर्विस्ति। शुभदस्य चाइः"। श्रतानन्दरत्नमानायाम्। "न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ विश्र-धती भीमश्रमेश्वराकाः। श्रभपापग्रहचेत्रं केवलं फलदं तथा। ग्रहयुक्ते चिते तु स्थात् फलं तदनुसारतः। तारापतिं विन्तानं वा दुरितग्रहमध्यगम्। विवाहादिपु कार्योपु त्यजे-श्चिर जिजीविषु:। कार्यारमे विसमादष्टममिन्दुं विवर्जयेत्। क्तरं सपापं पापवर्गस्यं लग्नं चन्द्रञ्च वर्जयेत्। बल्निहा-रणा देव सर्वत्र फलनिययः। निरंशं दिवसं विष्टिं खातीपा-तच वैष्टतिम्। केन्द्रं वापि श्रमेर्डीनं पापाइमपि वर्जयेत्। नन्दाद्याः सिहियोगा भृगुजबुधकुलाकीन्यवारैः प्रश्नस्ताः सूर्ये भाषामिषडदगम् निमित्ततिथयोऽकोदिवारै: प्रदन्धाः"। राज-मार्चण्डे। 'मासार्द्रादियो रामा पट्पचसुनयस्तथा। दह्यन्ते

तियय सप्त स्वादि सप्तिभर्ष है.। दादश्यकेयुता भवेदश्वभदा मोमेन चैकादयो भौमे चापि युता तथैंब दयमी नेष्टा खतीया वधे पछी नेष्टफलप्रदा सुरगुरी शक्ते हिलोया तथा सर्वारमा-विनाशविद्यजननौ स्यांक्षजे सप्तमो। पापीऽकां हे विया-खावययममुड्पस्याङ्मि चिवा चतुष्क तोय विश्वाभिनिङ्गं लक्ष कुजदिवसे खद्रय विश्वगदी द्वारि सूनाविशाखा यसधनमुर-गान्यानिजैविद्धि पित्रं रोचिखाद्यिमेन्द्रगतभमय सुगोरिद्ध-पुष्पावयन्दी सीराहे हस्तयुग्मार्थमयमजनयुक्षीपापुषाध-नानि घरहोऽखरङर्घयुत्ते स्वयद्वपतिदिने सोम्यवारियामापि"। मिहिद्म्धपापयमघण्टयोगा। "रव्यादि दिवसे युक्ता विशा-खादिचतुथतुः। उत्पाटामृत्यवः काला श्रमृतानि यथाङ्ग-सम्"। उत्पाटाद्योगः। "वाजिचित्रोत्तरापाटा सूनपा~ शोष्यभान्तकाः। सूर्यादिवारसमुका योगाः कर्कवाः स्सताः"। करकचा योगः। "पादित्य भौमयोनन्दा भद्रश गुक्रमभाद्वयोः। बुधे जया गुरौ रिक्ता भनौ पूर्णा च स्लादा। यमधर्टे त्यनेदष्टी सत्यौ हादमनाहिकाः। यन्धेपा पापग्री-गाना सध्याद्वात् परत. श्रभम्"। यमघण्टादौना वच्यं काल-निर्णय:। राजमार्नेण्डे "हितोया मौनधनुपायतुर्यो व्य-कुभायोः। मेषककंटयोः पष्ठो कन्यामियुनके स्मौ। दशमी ह्यिके सिहे द्वादयी मकरे तुले। यादा धनु सु सफरीय। परा हितीया एकान्सरे दिनकरे तिथय' प्रदग्धाः। कार्मके चतथा क्षमो मेपे युग्ने इरी घटे। एषु गुक्ताहितीयाद्या द्या. क्या भवादिष्। राष्ट्रीयन्द्रस्य च रवे किला वाच फलं बुधै.। या: प्रोक्तास्तिषयो दग्धा. मेपादिषु च राशिय अक्षास्ताविषमे राशो समे खयाः प्रकोत्तिताः। एभिजीतो न खीवेत यदि मक्समो भवेत्। विदाहे विधवा नारी यात्राया

सरणं भवेत्। निष्मसं क्षिवाणिच्यं विद्यारमे च सूर्खता। रद्रधावेशे भद्गः स्थाभूडायां सरण भुवम्। ऋणदाने फलं नास्ति व्रतदाने च निष्फले। ग्राभकर्माणि सर्वाणि नैव कुर्यादिच-च्णः"॥ डताराशिषु चन्द्रस्थित्या दरधायां व्यत्तालं यथा "पष्ठो मेपकुलीस्योद्धिमकर कन्यायुगे चाष्टमौ सिंहे दक्षिकः राशिंगो च दशमी ती लौ सृगि दादयो चापे चाय भाषेदिका यदि ह्रपे कुषो चतुर्थी यदा दम्धाख्यास्तिषयो वदन्ति सुनय-म्यज्या सदा कर्मस्। त्यज रविमनुराधे वैश्वदेवस्य सोमे भ्रतः भिषमिष भीमे चन्द्रजे चाम्बिनो च। सुगणिरमिष जीवे सप्देवञ्च शक्ते रविसुतमपि इस्ते वर्जनीयाय सप्त। अयोगिषु च मर्वेषु पूर्वधामं परित्यनेत्। ययोगाश्च विनश्यन्ति चन्द्रश्रश्चि-इता इमे। करकचामृत्युयोगाय दिनं दक्षं तथा परे। शुभे चन्द्रे प्रणयान्ति वृद्धा वद्धाइता द्रव"। ग्रुभचन्द्रेण करकचा शान्ति:। न्योपति:। "विरुद्धसंज्ञास्तिधिवास्योगा नचत्रवाग्रभवाध ये वै। इनाइवङ्गेषु खशेषु वन्याः शिथेषु देशेषु न ते विद्दाः" ॥

यय मर्वती भद्रम्। "श्रष्टातः संप्रवस्थामि चक्तं चेलोक्यः दोषनम्। विष्यातं मर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम्। उद्वागा दश्य विष्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्याश्चीतपद्रं चक्षं जायते नात्र संश्यः। श्रकारादि स्वराः कोष्ठेप्दीशादौ विदिशि क्षमात्। प्रदक्षिणक्रमाञ्जेया स्थीतिःशास्त्रविशाः रदेः। क्रांचकादौनि धिष्यानि पृवेश्यादि सिर्मेनतः। सम स्वर क्रिमेणेद च्यष्टार्विर्याक्तसंख्ययः। च्यक्षण्डाः पूर्वस्यां मटपरताष्ट्रिति दक्षिणस्यां नयभज्ञास्त वाक्ष्यां गणदचनाः योत्तरस्यां स्युः। त्रयस्यो स्याद्यास्त पूर्वादि क्रमतो दुषेः। राश्यो द्वाद्य स्थास्या मेपान्ता दक्षमार्गतः। श्रेषेषु कोष्ठकेः

म्बेयं नन्दादि तिथिपञ्चकम्। वाराणां सप्तकं लेख्यं भीभादां तत्तिधिक्रमात्। इत्येप सर्वतोभद्र प्रस्तावः कथितो सया। यिक्षत्रचे स्थितः खेटस्तती वैधवयं भवेत्। ग्रष्टदृष्टिवयेनाव वामदिचिणसंमुखे॥ भुत्तं भीग्य तथाक्रान्तं विद्वं क्रारग्टहेण भम्। श्रमाश्रमेषु कार्व्येषु वर्जनीयं प्रयवतः॥ वक्रमी दक्षिणादृष्टिर्वामा-दृष्टिय शोधगे। संमुखी मध्यचारे च द्वीया भौमादिपञ्चके॥ स्थमुका यहाः योघ।स्तया चार्के हितोयगे। समास्तृतीयगे जेया मन्दा भानी चतुर्थगे॥ वका स्यः पञ्च पष्ठेऽकें त्वतिवका नगाष्ट्रगे। नवमे दशमे भानौ जायते सहजा गति:॥ हाद-श्रौकादये सूर्यें सभन्ते श्रीव्रतां पुनः॥ रविस्थित्ययकस्तिंगा वधेः संख्यात कल्पाते। न तु राष्यन्तरसार्यात् हितीयादिनिक्-पणम्॥ राहुकेतू सदा वक्षी शौघगौ चन्द्रभास्तरो। गते-रेकसमावलादेपां दृष्टिवयं सदा॥ क्र्रावका महाक्र्राः सौम्या वक्रा महाग्रभाः। स्यः सहजस्वभावस्याः सौम्या क्रराय ग्रीघ्रगाः ॥ घडकाः पणठाश्चेव धफढाक्रमञास्त्रधा । एतन्निकं विकं विदं विदे कपभदेः क्रमात्॥ घडकारीद्रग विधे यणठाऽस्त्री यहै। धफढा पूर्वाषाढायां यभाजा भाद उत्तरे। रवी शसी खपी चैव लयी णनी परसारम्॥ एकेन हि इयं म्त्रेयं श्रभाश्वभग्रस्थ्ये। अवर्णादिस्वरहन्दे त्वेकवेधात् हयो-च्येधः॥ युरमवर्णात्मके वैधे चनुस्वार्विसगयोः"॥ सका-रादियुग्स-वर्णात्मकविधवदनुस्तार-विसर्गयोरक-विधादुभयविध ष्ट्रार्थः। "कोषस्य ऋद्योर्भध्ये अन्वादिपादगे यहे। श्रकरादिचतुरको तु वेधः पूर्णितयौ तया। एकादिक्र्रवेधेन फल पुसा प्रजायते॥ उद्देगद्य भयं द्वानिर्व्याधिसृत्युः समेष च। ऋते समोत्तरे हानिः खरे व्याधिभयं तियौ॥ राभी बिड़े मद्दाविष्ठः पद्मविद्यो न जीवति। एकदेधे भयं युद्धे

युग्मविधे धनच्यः॥ विविधे तु भवेज हो सत्युर्वेधे चतुर्यहैः"॥ दृष्टिवरी उदाहरणमाष्ट "भरण्यकारहपर्भ नन्दां भद्रां तुलाश्व भम्। विशाखां हरिमं विध्येट् ग्रह आरनेयमंस्थितः । जदा-हरणान्तरमाइ "वं युग्ममीखरं कचा रेफं खातीमुकारकम्। पश्चिमी रोहिणीस्योऽभिजिइमेवं परेष्विष ॥ यथा दृष्टपाणाः क्रास्त्या सीस्याः ग्रभप्रदाः । क्रायुक्तः पुनः सीस्यो चियः क्रारफलप्रदः॥ अवधिधे सनस्राधी द्रव्यस्रानिश्च भूस्ते। रोग-पीड़ाकर: सीरी राष्ट्रकेतू च विद्यदी ॥ चन्द्रे मिश्रफलं पुंमरं रतिनाभस भागवे। बुधवेधे भवेत् प्रजा जीवः सवग्रभप्रदः॥ खचन खे बनं पूर्ण पादीनं मित्री गई। यहं समग्रहे प्रीतं पादं शत्रहि स्थिते॥ इदश्व सीस्थ क्राणां वल स्थानवशास् समम्। एतदेव फलं विद्यि सीम्यैः क्रैविषय्ययात्॥ स्थान-विषसमायोगात् यत् मच्यं जायते बन्नम्। तत् मंच्यं विध्य-वस्तूनां फल शेय ग्रभाग्रभम्॥ दृष्टिहीने पुनर्वेधे न स्थात् किश्वित् श्रमाश्रमम्। यद्याः सीम्यास्तया क्र्याः वक्षाः श्रीघी-खनीचगा:॥ स्थानस विध्यमित्वव यनं त्रात्वा फर्लं वर्देत्। नक्षप्रहे फर्स हिंद्रां विगुणं स्वीचनंस्थिते॥ स्वभावनं फर्सं शोधे नोचस्योइ फलो यहः। तिथिराश्यशनस्रवं बिद्धं क्रूर-श्रद्धेषा यत् ॥ सर्वेषु गुभकार्योषु वर्जयेत्तत् प्रयक्षतः । स नन्दति विवाहे च यावाया न नियम्ति॥ रोगा हिम्चते रोगी येध-वेना क्षतोदामः। रोगकान्ते भवेदेधः क्र्यच्यस्याष्टः॥ वकः गत्वा भवेद्यत्वः शीवे पाष्यक्तान्वितः। येधस्यान रणे भद्री द्रगं खाँखः पनायते ॥ कविप्रवेशन तम योधाघातय तब वै"॥ कवियोग्यीहा। "यस पूर्वाटिकारायां सपराग्नादिनो रिवः। मादिगस्तिमा त्रोया ग्रेपास्तिसः सदोदिताः ॥ द्रेगानस्याः म्बराः प्राच्यां द्वीया याम्यामयाग्निगाः । नेष्ठे तस्याद्य यारुष्यां

वायव्यां सीम्यगा मताः॥ नचताचि खरा वर्णा रागयस्ति-थयो दिश:। ते सर्वेऽस्तिमता चीया यत भानुस्तिमासिकः॥ नचनें प्रते रुजा वर्णे द्वानि: शोक: खरे प्रते। राशी विश्व-स्तिधी भौति: पञ्चास्ते भरणं भवेत्। याता युद्धं विवादश्व द्वारं प्राप्तादहर्स्ययोः। न कर्त्तव्यं ग्रुभं चान्यद्स्तामाभिमुखं नरै:। यसायायां स्थितं यस नाम्नः प्रथममचरम्। स श्रार्तः सर्वकार्येषु ज्ञेयी दैवहती नरः। करी कोष्ठे तथा दन्दे चातुरङ्गमद्यावंले। वर्ष्याद्यास्तं गता योधा यदोच्छे-द्विजयं रणे। नचत्रेऽभ्युद्ति पुष्टिर्धणं लाभः स्वरे सुखम्। राशी नयस्तियो तेज: पदाप्ति: पश्चकोदये। प्रश्नकाले भवे-द्विद्वं यक्षमां क्रूरखेचरै:। तद्दृष्टं श्रोभनं सोम्यैभियेभियकनं भवेत्। यहाविद्वन्तु यक्षरनं फलं सरनस्मावतः। ज्ञातव्य-मी चिते केन्द्रे भाषित धन्नरादिकम्। ग्रीपेंदिये सौस्य विख-मनर्गे लग्नेऽपि वा सीम्थयुते श्रभं स्यात्। अतोऽन्यया हेतु तदन्ययात्वं मित्रं विभिन्नेरिधकं बसाक्येः। केन्द्रोपगा नवम पञ्चमगाय सौम्याः केन्द्राष्टवर्जमग्रभस्याय पष्टसंखाः । सर्वार्य-साधनकराः परिष्टुच्छतां स्यरिभिविषर्ययगतीसु विषय्ययः स्यात्। लग्नाधिनाधी यदि केन्द्रगः स्यात् तिकावमेतस्य च केन्द्रगं वा। व्ययष्टकेन्द्राण्यपशाय पापा भन्यव याता यदि तच्छुभं स्थात्। प्राचीलानाधिपः कार्य्यं समे कार्याधिपो यदि। दितीयो सम्नपी सम्ने कार्यं कार्याधिपो यदि । सम्नपः कार्य-पद्मापि सम्ने यदि छतोयकः। चतुर्थः कार्थयो स्यातां यदि लमपकार्थपो। कार्यसिहिस्तदा ज्ञेया मित्रश्चेदिधकं मतम्। एवं दृष्टिवशान्त्रयं फलं यदचतुष्टयम्। पूर्णनाडीस्थितो दूती यत् प्रच्छति गुभाग्रभम्। तत् सर्वे सिक्षिमाप्रोति शुन्ये श्रुन्यं समीर्णे। आदी श्रुन्यगतः पृच्छेत् पद्मात् पूर्णां विशेष्ट्

यदि। तदा सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वामे वामं न संग्रयः। म्बास-प्रवेशकाले चेह्तो अस्पति वाञ्चितम्। तस्यार्थः विविभाषीति निर्गमे नास्ति सन्दरम्। जर्दवामायतो दूतो जेयो वामपथ-श्यितः। पृष्ठे दचे तथाधस्ताइध्यश्वीगतो मतः। यात्रा-दानविवाहिए वस्तासङ्घारभूषणे। श्रमे कर्मणि सन्धी व प्रवेशे वामगः श्रभः। कलहयूतयुहेषु स्नानभोजनमथुने। ध्यवहारे भवे भन्ने दचनाड़ी प्रशस्ति। क्रेरेर्भयती बिडा यस्याचरतिथि स्वराः। राभिधिष्यच पचापि तस्य सृत्युर्न संप्रयः। मण्डलं नगरं ग्रामी दुगें देवालयं पुरम्। क्रूरै-क्भयती विधे विनश्यन्ति न संगयः। क्वतिकायां तथा पुष्ये रेवत्याञ्च पुनर्वसौ। विद्वे सति क्रामाद्वेधो वर्णेषु ब्राह्मणादिषु। तैसं भाण्डं रसो धान्धं गजाम्बादि चतुष्पदाः। सर्वे महार्घतां याति यावत् क्रूरव्यधे स्थितम्। क्रूरवेधसमायोगे यस्योध-ग्रहसकावः। तस्य मृत्युनं सन्देशी रोगाद्वाय रणादिप। स्र्येभात् यञ्चमं धिष्टां श्रेयं विद्युनाखाभिधम्। श्रून्यश्वाष्ट्रमगं प्रोक्त सन्नि-पातं चतुर्देशम्। केतुमदादशं प्रोक्तमुस्का स्यादेकविंशतिः। द्वाविंगतितमं क्रमं वयोधिगञ्च वव्यकम् ॥ निर्घातश्च चतुर्विंश-सुक्ता चष्टाव्ययप्राः। प्रसाने विद्यदाः प्रोक्ताः सर्वेकार्येषु सर्वदा॥ जनाभं कमी श्राधानं विनाशं सामुदायिकम्। सांधा-तिकमिदं धिणां पर्कं गार्वजनीनकम्॥ जातिदेशाभिपे॰ कैंद्य नव धिप्पारानि भूपते:। वैधं जात्वा फलं ब्रुहि सीस्यैः क्ररे: शुभाश्रमम्॥ जन्ममं जनानचवं दश्मं कर्मासंज्ञकम्। एकोनविश्रमाधानं वयोविशं विनाशकाम्॥ चष्टादशञ्च नचर्नं सासुदायिकसंज्ञकम्। सांघातिकञ्च विज्ञेयं धिणांत्र पोड्य-मेव हि॥ पट्तिमं राजनातच नाति नामा खनातिमम्। देशमं देशनामचे राज्यमं चामिपेक्सम्॥ स्टाः स्याज्यसमे विद्ये सभी क्षेत्र एव च। श्राधानार्के प्रवास: स्थात् विनाशे वस्थुविग्रहः ॥ सामुदायिकभेरिष्टं हानि सांघातिके तथा। जातिभे कुलनाग्रः स्थात् बन्धनञ्चाभिषेकभे ॥ देशकें देगभद्रः स्थात् क्रूरेरेवं श्रमेः श्रमम्। उपग्रहसमायोगे स्त्युभेषति नान्धवा॥ भयं भद्रश्च घातच सत्युभेद्रयुता स्रतिः। क्रूरेरे-कादिपञ्चान्तैर्युधि विधे फलं भवेत् ॥ तिथिं धिप्णंत्र स्वरं राशिं वस्त्रेव तु पञ्चमम्। यहिने विधयेचन्द्रस्तहिने स्थात् श्रमा-श्रमम् ॥

भय बालादिचक्रम्। "ऋवर्णभ त्यवर्णभ त्यक्षा कोष्ठेषु पञ्चस्। श्रकाराद्याः स्वरा लेख्या एकैकस्मिन् हिकं हिकम्॥ कादिष्टान्तान् सिखेद्वर्णान् खराधो एअणोज्भितान्। तिर्यक् पद्क्षिक्रभणेव पद्धविंगत् प्रकोष्ठके॥ धक्षारादिक्रमात् न्यस्य नन्दादितियिपञ्चकम्। अर्वकुनी विधुन्नी च गुरुः श्रुक्तः शनिस्तया॥ वाराः कोष्ठेष्ययो लेख्या श्रव्हारे सप्तभानि च। पञ्च पञ्च दकारादी रेवस्य।दिक्रमेण च॥ प्रसुप्ती बोध्यते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नाम्त्रस्वादिवर्णी यव तिष्ठेसस्य च ॥ तसाद्वालः कुमार्य युवा वृद्धो सृतः समात्। किञ्जिल्लाभकरी वाल: कुमारस्वदेलाभद:॥ सर्वसिद्धिं युवा धत्ते वृद्धे द्वानिमृते स्रयः। यदि नाम्त्रि भवेदणः संयुक्ता स्वर-लचणः प्राह्मस्वादिमी वर्णः प्रत्युत्तं वद्यामले॥ तिथि-वारचीमेदेन प्रत्येक बालकादिना। नामवर्णादितो घ्रोयं फलं पुसां दिने हिने ॥ तिष्यादिमेसनवद्यात् फलं च्रेयं ग्रुभाग्रभम् । युनि चये ग्रुमं पूर्णमग्रमस स्तिचये। प्रन्यवाप्येवसृद्धां स्यात शङ्करेण शुभागुभम्"।

श्रय विवादः। "प्रस्त्याधानतः श्रविविधमेऽच्दे समे क्रमात्। विवादे योपितां चन्द्रार्के ज्यश्रविद्योपितोः॥ समनृक्षित्रया- रमे भर्त्राचिरश्वतः। याबोद्दाहे गमेकले खगुहराष्ट्रीत तत्पसम्॥ पारम्य जन्मसमयात् युवतिविवादमोजास्दकेषु सुनयः शुभमादिशस्ति। चाधानतः प्रभृतितः समवत्सरेषु प्रोक्तस्योर्न ग्रभदस्तु विसीमवर्षे॥ चयुग्मे दुर्भगा नारी युगमे च विधवा भवेत्। तसाहमान्विते युग्में विवाहे सा पति-व्रता ॥ मास्रवयादूर्द्व मयुम्मवर्षे युग्मे ऽपि भासवयम् यावत् । विवाहगुद्धिं प्रवदन्ति सर्वे वास्यादयो ज्योतिषि जन्ममानात्। शुमाध्दकेषु युवतेरपि जन्ममासात्। सासवयं विवडने परमध्दग्रहिं प्राष्ट्रः समस्त्रसृतयो विषमे तु वर्षे सासत्रयादुष-रितः खतु लगमासात् । राजमार्भाष्टे। "माइत्येषु विवा-हें बुक्तासवरणेषु च। दग्र मासाः प्रशस्यन्ते चैत्रपौपविव-र्जिताः। कन्यासंवरणे इस्तोदकविधी दम्पत्यीर्धनवाष्ट-राशिगरिते दारानुकूले रवी चन्द्रे चार्ककुजाकियुक्तियुति मध्येऽधवा पापयोः। त्यक्षा च व्यतिपातवैष्टतिदिन विष्टिश्च रिक्षां तिथि क्राशायणचवणीषरश्वि लग्नामके मानुपे"। योगविभेषे दोषविभेषानाइ रह्मालायाम्। "कुलीच्छेदो खतीपाते परिघे खामिधातिनौ । वैष्टतौ विधवा नारौ विध-तथा। शूले च व्रणशूलं म्यात् गण्डे रोगभयं तथा विषक्-कोऽप्यहिदयः स्थात् वचके भरण भवेत्। एते वे दार्णाः सर्वे दश योगाः प्रकौत्तिता. । भाष्यसायनः । ''उदगयने षापूर्यमाणे पचे कत्यानचर्ने चौडकर्मीपनयनगोदान विवादाः ॥ विवादः सार्वकाशिक द्रत्येके दति। "श्राप्ता है धनधान्यभौगरिहता नष्टपना यावणे वैग्या भारूपरे पूपे च मरणं रोगान्विता कार्त्ति । पौषे प्रेतवती वियोगवसूना चैत्रे मदोचादिनौ अन्धेष्वेव विवाहिता पतिरता नारी समुद्रा

भवेत्। हरी प्रसुप्ते न च दिल्लायने तिथी च।रिक्ते मिर्गिन- " भ्वयं गते। राजग्रस्तिया युद्दे पितृषां प्राणसंशये। चति-प्रीटाचया कन्या नानुकूलं प्रतीचते। प्रतिप्रीटाच या कत्या क्षलधर्मविरोधिनी चविग्रहापि सा देया चन्द्रलग्नवलेन सु। अयनस्योत्तरस्यादी सकरं याति सास्तरः। राभि कर्क-रकं प्राप्य कुर्ते दक्षिणायनम्" इति विख्युपुराणीतस्य भूडा-दावयनस्य परियद्यः दिनमामादि वोघे तु सिहान्तादयनपरि-थहः। सार्वकालिक द्रत्यस्य विषयमाद्द सुजवलभीमे। "यद-शुडिमब्दशुडिं शुडिं मासायनर्तुदिवसानाम्। श्रवांक्दशः वर्षभ्यो सुनयः कथयन्ति कन्यकामाम्। एतत्परन्तु विज्ञय-मिश्विरो वचनं यथा। कालात्यये च कन्यायाः कालदोपी न विदाते। मलमासादिकालानां विवाहाद्ये प्रयत्नतः। पुसः प्रति सदा दोपात् सर्वदैव हि वर्ज्यता"। कत्य चिन्तामणी। "वापीकूपतडागयागगमनचौर प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिर काण्-धिधन मधादान वनं सेवनम्। तीर्यसान विषाधदेवभवनं मन्तादिदेवेचणं दूरेणैव जिजीविषुः परिष्ठरेदस्तंगते.भागवे''। वृद्धलमार्त्तेष्डे। "सर्वाषि ग्रमकर्माषि कुर्यादसंगते सिते। विवाहं मेखला वदं यात्राञ्च परिवर्जयेत्"। यात्रा-च्चेति चकारो वचनान्तरीक्ष प्रातिखिकनिषिष्ठकर्मान्तरं समु-धिनोति। "बाले गुक्ते वह गुक्ते नष्टे गुक्ते जीवे नष्टे। वाले जीवे हहे जीवे सिंहादिली गुर्वादिली। तथा मलिखुचे मासि सुराचार्येऽति चारगे। वापीकूपतडागादिक्रियाः पागु-दितास्यजेत्। धतीचारं गते जीवे वक्षे चैव इस्यती। कामिनी विधवा प्रीक्षा तथात्ती परिवर्जयेत्। भतीचारं गती जीवः पूर्वभं नैव गच्छति। समचारेऽपि कर्माणि नैव तमैव संस्थिते"। देवसः। "बाले यह तथैवास्ते कुरुते

रक्षे भर्त्वावरग्रह्तः। यात्रोद्दाहे गर्भक्तवे स्वग्रद्दाश्चीति तत्पासम्॥ प्रारम्य जन्मसमयात् युवतिविवादमोत्रान्दवेषु सुनयः ग्रभमादिमन्ति। पाधानतः प्रभृतितः समवत्तरेषु प्रोक्षस्योनं ग्रभदस्तु विस्तोसवर्षं ॥ अयुग्से दुर्भगा नारी युगमे च विभवा भवेत्। तस्यादर्भान्विते युग्मे विवाहे सा पति-यता ॥ साम्रवयादृहु सगुम्मवर्षे गुग्मे ऽपि भासवयमेव यावत्। विवाहग्रहिं प्रवद्ग्ति सर्वे वात्यादयो ज्योतिषि जन्ममाधात् ॥ युग्मान्द्रकेषु युवतेरपि अन्यमासात्। मामस्यं विवस्त परमञ्जाहं प्राष्ट्रः समस्तमुनको विषमे तु वर्षे मामवयाद्य-रितः खलु अमामामात्"। राजमार्त्तग्रे। "माइस्येषु विवा-हिषु कन्यासवरणेषु च। दश मामाः प्रगस्त्रको चैवपौपविव-र्जिता:। कन्यामंबर्णे इस्तोदकविधी दम्पत्योदिनवाष्ट-राभिरिक्त टारानुकृति रवो चन्द्रे चार्ककुनार्किग्रकवियुति सध्येश्यवा पापयोः। त्यक्षा च व्यतिपातवैश्वतिदिनं विटिश्व रिक्षां तिथिं क्राशायणचवयोयरहिते जनांशके भागुपै योगविग्रेपे दोपविग्रेपानाइ रत्नमालायाम् । "कुनीक्हेदी व्यतीपात परिच स्वामिधातिनो । वेधतो विधवा नारी विष-टाहोर्रातगण्डके। व्याघाते व्याधिसंघातः ग्रोकार्ता प्रपंषे तया। शूली च त्रणशूनं स्थात् गण्डे रोगभयं तथा विषकु-कोऽप्यादिदंश: स्थात् वक्षको भरणं भवेत्। एते वै दाक्णाः सर्वे द्य योगाः प्रकौत्तिताः"। भाग्वलायनः। "खदगयने षापुर्यमाणे पचे कत्यानचत्रे चोडकर्मीपन्यनगोदान-विवाहाः ॥ विवाहः सावेकान्तिक इत्येक इति। "पादा है धनधान्यभोगर्राञ्चता नष्टमजा यावणे वैग्या भाद्रपदे इपे च मरणं रोगान्विता कार्त्ति। पीपे प्रेतवती वियोगबद्धना चैवे मदोनादिनौ चन्येव्वेव विवाहिता पतिरता नारौ समुद्धा

अवत्। हरी प्रसुप्ते न च दक्षिणायने तिथी च रिक्षे प्राणिनिः क्षयं गते। राजग्रस्ते तथा युद्दे पितृषां प्राणसंश्रये। चति-प्रौढ़ा चया काचा नामुकूलं प्रतीचते। प्रतिप्रौढ़ा चया क्षन्या कुल्धमिविरोधिनी भविश्रहापि सा देया चन्द्रसम्बस्न तु। श्रयनस्योत्तरस्यादौ सकरं याति भास्तरः। राथि कर्त-टकं प्राप्य कुरुते दक्षिणायनम्" द्रति विष्णुपुराणीक्रस्य चूडा-द्वावयमस्य परियद्दः दिनमानादि वोधे तु सिद्वान्तादयनपरिः प्रदः। सार्वकालिक द्रत्यस्य विषयमाद्द सुजवसभीमे। "यद्द-शुद्धिमञ्द्रशृष्टिं शृष्टिं साक्षायनसुदिवसानाम्। सर्वोक्दश-वर्षभ्यो सुनयः कथयन्ति कन्यकानाम्। एतत्यरन्तु विज्ञेय-मिंद्रिशे वचनं यथा। कालात्यये च कन्यायाः कालदोषो न विदाते। ससमासादिकासानां विवाहादो प्रयत्नतः। पुंसः प्रति सदा दोषात् सर्वदेव हि वर्ज्यता"। क्रत्यचिन्तामणी। "वापीकूपतडागयागगमनचीर प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिर कर्ण-घेधन सहादानं वनं सेवनम्। तीर्यस्नान विवाहदेवभवनं मन्तादिदेवेचणं दूरेणैव जिलीविषुः परिष्ठरेदस्तंगतेआगंवे''। वृषद्राजमात्तेण्डे। "सर्वाणि ग्रभकमोपि कुर्यादस्तं गते सिते। विवाहं मेखला वदं याद्याच परिवर्जयेत्"। याचा-खेति चकारो यचनान्तरोत्रा प्रातिखिकनिषिष्ठकारीन्तरं सम्-चिनोति। "वारी गुक्ते हह गुक्ते नरे गुक्ते जीवे नरे। याले लीये वह जोवे सिंहादिये गुर्वादिये। तथा मलिख्से मासि सुराचार्येऽति चारगे। वापौजूपतडागादिक्षियाः पागु-दितास्यजेत्। चतीचारं गते जीवे वक्ते चेव इष्टम्पती। कामिनी विधवा प्रीक्षा तस्मात्ती परिवर्जवेत्। धतीचार गतो लोब: पूर्वमं नेव गच्छति। समचारेऽपि कर्माण नेव तचेव संस्थिते"। देवस:। ''बासी द्वारे तथेवास्ते कुरुते

दैत्यमन्त्रिण। उदाहितायां कन्यायां दम्पर्धोरेकनाशनम्। प्रागुहतः शिशुरहस्तितये सितः स्यात्। पद्याहमाहिमिति पश्चदिनानि हृदः। प्राक्पचमेव कथितीऽत विशिष्ठगर्गैर्जीवस्तु पद्ममि सुद्रशिग्रविवर्कः"। त्रसन्तात्राज्ञी राजमात्तेणः "वाले हहे च सस्यामे चतुःपञ्च विवासरान्। जीवे च भार्गवे चैव विवाहादिषु वर्जयेत्। वक्षे चैवातिचारे विद्यपतिगुरी दैवपूक्ये च सुप्ते गुर्वादित्येऽधिमासे दिवसकार रिपी वाक्पती चैत्रपोपे। विद्यां केत्रमे वा गरदि सुरगुरी सिंहसंखे मनोजे वर्षादाम्रोति चोढ़ा सुनियतमरणं देवकन्यापि मर्त्तः" ॥ अक-सिक्तत्य राजमार्त्तग्छे 'वाले च दुभँगा नारी हद नष्टप्रजा भवेत्। नष्टेच सत्युमाम्रोति सवैमेतद् गुराविषि॥ सिंहे गुरौ परिणीता पतिसातानमाताजान् हन्ति। क्रमगस्तिः पिवादिषु विधिष्ठगर्गादयः प्राचुः। गुरी इरिस्ये न विवाद-माइइरितगर्गमसुखा सुनीन्द्राः। यदा न माघी सघर्षयुता स्यात् तदा तु कन्योद्वष्टनं वदिन्ति ॥ स्रवैव माण्डव्यः। "मघा ऋसं परित्यन्य यदा सिंहे गुर्कावैत्। तदाक्दे कत्यका चोढा सुभमा सुप्रिया भवेत्" । इारीतः। "अतीचारं ग्रेस जीवे इपे इधिककुभयोः। यज्ञोहाहादिकं कुर्यात्तक कालो न लुप्यते"॥ कत्यचिन्तामणी। "यतीचारं गते जीवे हपे हिस्वकुभयोः । तत चोदाहिता कन्या सप्रयोगात् कुलइयम्"॥ सद्गेतकीसुद्यां भीमपराक्रमे "यदातिचारं सुरराजमन्त्री करोति गीमकायमीनसंखः। न याति चेदादापि पूर्वराशि शुभाय पाणिप्रइणं दिश्यः ॥ अतीवारं गति सीवे स्थिरराशी च संस्थिते। तत्र न नुम्यते काक्षी वद्योवं परा-भरः । वाणेक्यतडागादिनिपिदं सिंहरी गुरौ। सकरखे त्तित्कार्यं न दोषः कासस्रोपनः ॥ यत्तं "कन्याष्ट्रश्यिक-

ण्यातसात्वम्। ६०७ भेषेषु भियुने च भाषे हये। अतीचारेऽपि कर्त्व्यं विवाहादि बुधै: सदा" द्रत्येतदमूलं हैतनि एँयेऽप्यृक्तं दी पिकायां "विकीण-जाया धननाभराशी वक्रातिचारेण गुरु: प्रयात:। यदा तदा प्राप्त ग्रमे विसम्ने दिताय पाणियहणं विश्वष्ट."। देवीपुरा-णम्। ''सकारस्यो यदा कौवो वर्जयेत् पश्चमां यकम्। भेपेषाप च भागेषु विवाद्यः शोभनो मतः"॥ भोजराजः। "यो जमा-सामें सुरकर्मायावां कर्णस्य वेधं कुरुते च मोद्यात्। नृनं स रोगं धनपुत्रनागं प्राप्नोति सूढो वधवस्वनानि ॥ जातं दिनं दूपयते विशिष्ठसाष्ट्री च गर्गी यवनी दशाहम्। जन्मास्यमामं किन भागुरिय चौडे विवाहे सुरकर्णवेधे' ॥ स्रीयतिससुस्यो ''स्रानं दाने तपोष्ठीमः सर्वेमद्रस्यवर्षनम्। अद्वाषय कुमा-रीणां जन्ममासे प्रथयते"॥ क्रत्यचिन्तामणी "जन्ममासे ध पुताच्या धनाच्या च धनोद्ये। जन्मभे जन्मराशी च कन्या हि भुवसन्ततिः"॥ गर्गः। "खेष्ठे मासि तथा मार्गे स्रोरं परिषय व्रतम्। ज्येष्ठपुत्रदृष्टिकोय यव्रतः परिवर्जयेत्" ॥ श्रय ज्येष्ठत्वमादिगर्भजातत्वं तथा च 'जगमाधि न च जनमे तथा नैव समादिवसेऽपि कारयेत्। पाद्यगर्भभवपुत्रकन्ययोः। च्येष्ठमासिन च जातु मङ्गलम्'। चत्र जन्ममासादी पुष्ट-मायस्य निषेधः च्येष्ठमाधे तु च्येष्ठप्रवस्थेति विशेषः। "छत्ति-कार्स रवि त्यक्ता च्येष्ठे च्येष्ठस्य कार्यत्। चलायेषु च सर्वेषु दिनानि दम वर्षयेत्। रवल्यसरशेहिणोसर्गमर्गाम्नामु-राधा मघा इस्ता खातिए। ती शिषष्ठमियुनेषु यस् पाणि-यदः। सप्ताष्टन्यविष्टः सभेर्ड्यमावैकादगद्वितं क्रेस्याय-यह एगोर्न तु भगो यह कुत्र चाएमें ह ज्योतिर्विष्टतन घटा-टिधिकं धिवायमणा धनिष्ठामिनौनधवपारस्करेपीतं यथा "कुमाधाः पाषिं ग्रक्षोयाचिष्मरादिषु उत्तरफन्गुमादि-

त्रयोत्तरापादाचित्रयोत्तरभाद्रपदादित्रयेषु नवसु नचतिष्यं स्वर्धः । भोसपराक्रमे 'पूर्वात्रये विद्याखायां प्रिवाद्ये भचतुः हिये । कदा चासुभवेत् कन्या विधवातो विवर्जयेत् । विष्युः भाद्यो तिके चित्रे ज्ये हायां ज्वलने यमे । एभिविवादिता कन्या भवत्येव सुदुः खिता"॥ एवच्च पारस्करोतां यज्वेदिः विपयमापद्विषयं वा बोध्यम् । "श्राद्ये मचा चतुर्भागे नेक्ट तः स्याद्य एव च । रेवत्यन्तचतुर्भागे विवाद्यः प्राणनायकः । कर्णेविव विवाद्ये च व्रते पुंसवने तथा। प्राथने चाद्यचूडायां विद्यस्तं विवर्जयेत्"॥

विद्यंत्त "तियि १५ श्रद्ध वेद ४ एक १ देश १० जनविश १८ स २० एकादश ११ श्रष्टादश १८ विंग २० एकादश ११ श्रष्टादश १८ विंग २० एकादश १८ श्रष्टादश १८ विंग २० एकादश १८ श्रष्टाः। रष्टोडुना सूर्ययुतोडुना च योगादमू येद्दश्योगभद्भः"॥ कर्माकालीननच वस्त्येभुष्यमाननच व्ययोमिलने यदि एच्चदः ग्रायन्यतमस्त्या भवति तदा न कर्मायोग्यमित्यर्थः। सप्तविशाधिकत्वे सप्तविश्वातमप्त्राय श्रेषात् फल श्रन्ययेक-संस्थानुपपत्तेः। श्रपवादस्तु। "श्रायपादे स्थिते स्य्यं तुरीयांशं प्रदुष्यति। दितीयस्ये खतीयन्तु विपरीतमतोऽन्यया"॥ व्यक्तमाड खरोदये।. "श्रायांशेन चतुर्यांशं चतुर्यांगिन चादिमम्। दितीयेन खतीयन्तु खतीयेन दितीयक म्'॥

चवेव खर्जूरवेधः। तथा च रत्नमाला। "एकामृहु गतां तयोदय तथा तिर्ध्यगताः स्थापयेत्। रेखा चक्रमिटं वृधेरिम-दितं खार्जूरिकं तत्र तु॥ व्याघातादि तु मृह्यि भन्तु कथितं तवैद्यरेखास्थयोः स्र्याचन्द्रमसीर्मियो निगदिता हक्पात एकार्गलः"॥ व्याघातादौति व्याघातयोगसंस्थाद्वस्थयोदया-दम्। तथा च इस्तादौनि नचदाषि देयानीत्यर्थः।

, दीपिकायां "क्षतिकादिचतुःसप्त रेखा राग्री परिश्रमन्।

यहयदेकरिखास्यो विधः सप्तयसाकतः॥ सप्त सप्त विस्ति वित्तं प्रदेखिकास्तियेगूड्व मध क्रिक्तिकादिकम्। लेखयेदभिजिता समन्तितं चेकरेखगखरोन विध्यते॥ वैश्यस्य चतुर्धेऽ ये व्यवण्यारो लिप्तिकाचतुष्के च। व्यभिजित् तत्स्ये खेचरे विज्ञेया रोष्टिणी विद्वा"॥ लिप्तिका दण्डः। "यस्याः प्राणी सप्तर्थं स्वाक्तिका प्राणी विद्वा"॥ लिप्तिका दण्डः। "यस्याः प्राणी सप्तर्थं यस्तिका प्राणी विद्वा"॥ स्वाक्तिका प्राणी स्वाक्तिका प्राणी स्वाक्तिका प्राणी स्वाक्तिका स

पस्यापवादो यद्या राजमार्तण्डे। "विषमदिग्धेन एतस्य पत्रिणा सगस्य मांसं श्रमदं चताहते। यद्या तद्यात्राय्युड्णस् एव प्रदूषितोऽन्यस्मिपदं श्रमावद्यम्॥ छार्त्वं रेखास्थिताः पश्च तिर्थ्यक् पञ्च तथ्येव च। द्वे दे च कोणयोरंखे सामिजित् कात्तिकादिकम्॥ यभुकोणे दितौये तु खेखयेत् सर्वकामीण । क्रूरैभिन्नमयो सीम्यैनैचलं परिवर्णयेत्॥ न लापाते च ये दोषा ये च सप्तथलाकके। ते सर्वे प्रभवन्यत्न नाम्ना पञ्च- श्रलाकके॥ श्रय चक्रान्नये कथित् पादविध दहिष्यते"। तदुक्तं रक्षमालायाम्। केथित्वाणीयते पादविध दिता। दति पञ्च- श्रक्तालायाम्। केथित्वाणीयते पादविध दिता। दति पञ्च- श्रक्तालायाम्। केथित्वाणीयते पादविध दति। दति पञ्च- श्रक्तालायाम्।

रत्नमालायाम्। 'ऋचं हादयमुण्राश्मिरवनीस्तुस्तृतीय गुकः षष्ठ चाष्ट्रममकं जस्तु पुरती हिन्त स्पुटं न त्वया। पद्यात् सप्तमामन्दुजस्तु नवमं राष्ट्रः सितः पद्यमं दावियं परिपूर्ण-मूर्त्तिबहुपः सन्ताहयेचेतरत्। नत्वापातोऽयम्। "पापात् सप्त-मगः गगौ यदि भवेत् पापेन वा सयुती यद्यात्तं परि-वर्जयेत् सुनिमती दोषी ह्ययं कथ्यते। यात्रायां विषदी यहि सुत्वद्यः चौरेषु रागोद्ववोऽप्युदाहे विषवा वर्ते च मरणं शूल्ख पुंस्तमंशिंणः।

"रविमन्दकुनाकान्तं स्गाद्वात् सप्तमं त्यनेत्। विवाद-

यात्राच्हास ग्रहकर्मा प्रवेशने"॥ यामिवविधः। "सून-विकोणनिजमन्दिरगोऽय पूर्णो मिवर्च सौग्य ग्रहगोऽय सदी-चितो था। यामिवविधविधितानपद्रत्य दोवान् दोवाकरः श्रममनेकविध विधसे"॥

भोजराजः। "वियड्दग्रेकादगगो दिनेगः सुतार्घसोभा-यगुभपदः स्थात्। वैषयदाताष्टमराशिसंस्थः ग्रेपेष् वग् टु:खगुच: करोति"॥ रिवगुद्धि:। "कन्यानस्त्रमुद्धी स्वाद्धि-षा इः श्रभक्ष वृषाम्। पयात् भर्त्ति शहरात् याता पुष्पीता-षादयः"॥ विद्याधरीविश्वासे। "पुंसामर्कः स्मृतो योनिर्योः षितामसृतद्कृति:। यतः पुंगोषितोः शस्तं वसमकंग्रशाइ-जम् ॥ गोचरग्रसा विन्दुं कम्याया यक्षतः गुभं वीस्य। लीग्मः किरण खपुंसः ग्रेपेरवसेरपि विवादः॥ दितौयपुत्राद्धगतः प्रभाकरः वयोदगारात् परतः गुभप्रदः। न अन्यसप्तथ्ययः रम्युगस्तया खरीति पुंमामपि ताहशं फलम् ॥ तथा व्रयो-दमाद्यात्र परतः। "वयोदमदिनान्यको दमपद्धरणीस्तः। सार्चे दिमञ्ज भौतांग्रामांसमिकादभंतमः॥ सीरिः पादाधिकं वर्ष मामानष्टौ एडस्पतिः। भवनाष्टं भृगुः सीम्यो यावद्राम्य-शुभाः फलम्॥ कष्टं व्रतादिकै दसुने तथा श्रीपभागगाः। लग्ने तत् पश्चमे तुर्थो दशमे नवमे तथा॥ गुरुम् गुर्वा दोषप्ती विवाहे वर्दते सुखम्"॥ अयमेव सुति हिवुकायीगः।

"गोधू सिं विविधा वदन्ति मुनयो नारो विवास दिने, हैमन्ते शिशिरे प्रयाति सदुता पिण्डोक्षते भास्तरे। ग्रोषो-ऽवास्तिमते वसन्तसमये मानो गते दृश्यतां स्थ्ये सास्तमुपागते च नियतं प्राष्ट्र शरकालयोः। सन्नं यदा नास्ति विश्वत-मन्यद्रोधू निकां तक्ष शुभां वदन्ति। नग्ने विश्वते सति बीर्थे-युक्ते गोधू निका नैव पालं विधन्ते॥ नास्तिन् ग्रहा न तिययो

न च विष्टिवारा ऋचाणि नैव जनयन्ति कदापि विष्मा। षव्याहतः सतमेव विवाहकाले यात्रामु चायमुद्ति भृगुजे न योगः। सार्गे गोध्रलियोगे प्रभवति विधवा साधमासे तथैव पुत्रायुर्धनयौवनेन सहिता कुमो स्थित भास्तर। वैद्याखे सुखदा प्रजाधनवती न्येष्ठे पतेर्मानदा सापाट्ने धनधान्यपुत्र-बहुला पाणियहै कन्यका"। विवाहपटले। "ब्यूढा धनुषि च क्रुलटा तत्पूर्वार्डे सतीत्वपरे जगुः"॥ च्योति:सारसप्रहे "विवाहे तु दिवाभागे कत्या स्यात् पुत्रवर्जिता । विवाहानल-दम्धा सा नियतं स्वामिधातिनौ"॥ मझाभारते। "राह्रौ दानं न ग्रंसिल विना चाभयदिचिणाम्। विद्यां कन्यां हिजयेष्ठा दीपमनं प्रतिययम्" ॥ व्यासः। "रिक्तास विधवा कन्या दर्गेऽपि स्थात् विवाहिता। भ्रनेशरदिने चैव यदा रिक्षा तिधिभवेत्॥ तिधान् विवाधिता काचा पतिसन्तान-बिंदिता" ॥ स्युति: "धर्मार्थकाममोचार्या दाराः संप्राप्ति-हितवः। परौचन्ते प्रयत्नेन पूर्वमेव करप्रहात्"॥ सनुः। "यथद्वाद्वीं सीम्यनामीं इसवारणगामिनीम्। तनुनीमकेय-द्यमां मुद्दद्वीसुद्दहेत् स्तियम्"॥ श्रातातपः "हंमखनां मेघवर्णं सधुपिङ्गलकोचनाम्। ताष्ट्रशीवरयेत् कन्यां ग्रहस्य सुखमेधते"॥ अविष्ये "प्रतिष्ठिततलाः सम्यक् रक्षाभोज-ममत्विषः। तादृशायरणा धन्या योषिता भोगवर्षनाः"॥ प्रतिष्ठितो भूमी लग्नः समस्त्रकोऽधोभागी येषां ते तथा मनुः। "नोद्देश्त्किपिका कत्या नाधिकाद्गीं न रोगिणीम्। नालोमिकां नातिलोक्तीं न दाचालां न पिङ्गलाम्॥ नर्छ-व्यस्तरी मान्द्री नान्द्यपर्वतनामिकाम्। न पद्यप्ति प्रैथनानी न च भौषणनामिकाम्"॥ प्रतिप्रसवमाद्य मस्यस्के। "गङ्गा च यसुना ब्रैव गोमती च सरस्रती। नदीस्वासा नाम हचे

मानती तुस्ती पि॥ देवती चामिनी भेष रेक्षिणी ग्रमहा
भवेत्"॥ कळिषिलासणी। "नेत्रे यद्धाः वेकरे पिष्क नै

या प्याट्टुःगोना ग्रावनी नेचणा च । कूणी यस्मा गण्डयोः
सिनात ग्रीनः सिन्दाधां वस्त्री तां वदिन्ता"॥ निन्दिनेम्बरग्राणे। "ग्रामा सुन्नेग्री तनुनोमरानी सुम्नू, सुग्रीना सुगतिः
सुदन्ता ॥ वेदी विमध्या यदि पद्मजाची कुलैन हीनाणि
विवाहनीया। पृष्टा कुदन्ता यदि पिद्मनाणी कीन्ना समाकीर्णसमाह्रयद्धिः॥ सध्ये पृष्टा यदि राजकन्या कुलैऽपि

योग्या न विवाहनीया"॥ हारोतः। "त्यात् कुन्नज्वतविज्ञानोपण्यां वर्षत्। नचलीपप्तां नाडीनचलहोनाम्"॥

नाष्ट्रीमचन्नमाष्ट्र खरीदये। "पखिन्यादि निखेचकं सर्पाकारं विनाडिकम्। तत्र वेषवमास् ज्ञेय विवादादि-गुभाग्रभम् ॥ विनाडीविधनचवमिनवाद्री युगीशराः। प्रस्तेन्द्रभूतवारुष्यः पूर्वभाद्रपदास्त्या ॥ याग्यः श्रीग्यो गुरुयोनिश्वतामित्रजनाष्ट्रयम्। धनिष्ठा घोत्तरा भट्टा मध्य-नाडी ध्वविद्यता ॥ कतिका रोडियो सपी मघा साती विद्याखिने। उत्तरा अवणा पीषां पृष्ठनाडी व्यविद्यिता॥ श्वादिनाडीवेषचे वष्टं दितीयकं क्रमात्। याग्यादितुष्ड तुर्थेच क्रांतिकादिदिषट्ककम्॥ एवं निरोध्वयेहेधं कन्धामन्ते सुरे गुरी। पण्य जीस्वामिमिन्नेषु देशे ग्रामे पुरे रहि॥ एक-नाडीस्विधिण्यानि यदि स्वविश्वन्ययोः। तदा वेशं विजा-नीयात गुर्वादिए तथैव च ॥ प्रकटं यस जनासं तसा जना-र्घतो व्यथः। प्रनष्ट सन्मभं यस्य तस्य नामर्चती वरेत्॥ हयोर्जन्मभयोर्विधो हयोर्नामभयोस्तया। नामलमार्चर्यार्वधो न कर्त्य कदाचन॥ एकनाडीस्थिता चेत् स्यात् अर्जुनि-शाय चाइना। तसाचाड़ी ग्राधी वीच्यो विवाहे शुभमिन्छता॥

प्राड्नाद्या वैधतो भर्ता मध्यनाद्यो भयं तथा। पृष्ठनाङीव्यधे कन्या सियते नाव संययः ॥ एकनाड़ी स्थिता यव गुर्भमेन्द्रस देवता। तब हेषं रजं मृत्युं क्रमेण फलमादियेत्॥ प्रभुः पखाइनामिवं देशो यामः पुरं ग्टहम्। एकनाडी गता भव्या प्रभव्या विधवर्जिताः"॥ प्रतिप्रसवमाइ ज्योतिये। "एकराग्यादियोगे तु नाडोदोषो न विदाते"। स यथा "एकराभौ च दाम्पत्ये श्रमं स्थात् समसप्तके। चतुर्थे दशमे चैव त्रतीयैकादये तथा"॥ समग्रहणाहिषमसमके दीपः। तयाच। "घोटके सप्तके मेधतुले युग्मइयौ तथा। सिंइ-घटौ सदा वर्ज्यों सति तवाब ही क्हिवः"॥ श्रीपतिव्यवहार-निर्णये। "सुद्धदेकाधिपयोगे तारावले वध्यराभौ वा। अपि नाड्यादिवेधे भवति विवाहो हितार्थाय"॥ राजमार्नण्डे। "न राजयोगे यद्वैरिता च न तारश्रद्धिन गणवयं स्यात न नाडीदोषो न च वर्षदृष्टिगर्गादयस्ते सुनयो वदन्ति"। राजयोगस्तु एकराध्यादियोग एव तत्रैव नाद्यादिप्रतिप्रस-वात्। श्रीपतिरत्नमासायाम्। "अञ्बे भाजफणिद्वयं ख हवभूद्धे वोन्द्रस्मृपिकधाखुर्गीः क्रमशस्त्रतोऽपि महिषो व्याञ्च पुन: सौरभो"। व्याञ्चणी स्माकुक्त्री कपिरधोरभ्र-हयं वानर: सिंडीऽश्वी सगराट् पश्च करटोयोनिस भाना-मियम्। गोव्याञ्च गनसिष्ठमखमद्विषं खेणस वस्त्रग वैरं वानरमेषकञ्च समहत्तददिहालोन्द्रम्। लोकाना व्यवहार-तोऽचदपि च चाला प्रयत्नादिदं दम्पत्योन् पमृत्ययोर्पि मटा वर्चे शुभस्यार्थिभि:। सकरसमेतं सिय्नं कन्या कन्मी सगिन्द्रमोनी च। द्वपभतुले चलिमेपी कर्कटधनुषो च मिय-विधी"। षटकाष्टकाविति श्रेष:।

श्रिष्ड्ष्टकमार । "मकर: करिकुलरिपुणा बान्या

मिपेण सद्द ऋपस्तुसया। किविद्यो हपधनुषी हिस्यकिमियुने चारिविधो॥ यदि कान्याष्टमे भर्त्ताभर्त्तः षष्ठेच कन्यका। पर्काष्टकं विजानीयात् विजितं विदशैरिप ॥ भुंसी गरहात् सुतारहे गुतदा च कन्या धर्मे खिता सुतवती पतिवसमा च। दिर्दाद्यी धनग्रहे धनहा च कत्या रिप्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च"॥ घड्षकादी तारानियमंमाइ भीमपरा-क्रमः। "सीष्ट्रद्यो ह्युभयोर्द्योरिय तयोरैकाधिपत्थेऽपि वाः ताराषर्मुमिविमिवज्वजनचेमार्यसम्पद् यदि । षट्काष्टे नवपच्चके व्ययधने योगे च पुंयोपितोः प्रौत्यायुः सुखब्धिपृष्टि-खनकः सार्यो विवादस्तदा<sup>ण</sup>। गर्गः। "मर्णं तारविरोधे यहरिषुभावे चिरेण। रोगादिनरनार्थ्योः पट्काष्टके वैर∽ सवस्य भवेदायु"॥ ध्यासः। "सेवादियोगेऽपि पङ्षकादौ ताराविषत् प्रत्यश्मिधनास्याः। चन्धी विवासे पुरुषोडुती सि प्रीतिः परा जनासुतारकासः। नचत्रमेकं यदि भिय-राशिनं दम्पती तव सुखं नभेताम्॥ विभिन्नरुचं यदि चैकराशिस्तदा निवादः सुतमीस्यदायी। एकर्चा च यटा कन्या राध्येका च यदा भवेत्। धनपुत्रवती नारी साध्वी भर्त्तिया सदा॥ पडएके गोमियुनं प्रदेयं कांस्यं सङ्घ्यं नवपच्चके ता। सिर्हादगार्खे कनका जतामा विप्रार्चनं हेम च नाडिदोपे॥ सरणं नाडीदोपे कन्दः परकाष्टके विष-क्तिवी। भनपत्यता विकोणे विद्यादिये टार्ट्स्भिश

संयचित्तामणी। "इस्ता खातिय्वतिसगित्राहारः प्रयमिताः विभानि पौषादिले जगुरिह बुधा देवसंत्रानि भानि। पूर्वास्तिसः यिवभभरणी रोहिणी चोत्तराय प्राहुर्भलाद्वियः मुड्गणं नूनमेतं मुनीन्द्राः॥ चिद्राक्षेषा निक्शित पित्रमे वासवं वासवर्षं गक्राग्सोभं वक्षणदहन् सं इ रह्यो गणीऽयम्"॥ फलमाइ शीपितः "संकुले चोत्तमा प्रीतिमध्यमा देवमानुषे। देवासुरे कानिष्ठा च सत्युमीनुषरा चित्र ॥ राज्ञमी च यदा कान्या मानुषय वरो भवेत्। तदा सत्युने दूरस्रो निर्धनत्व-स्थापि वा"॥ राज्ञमासंग्डे। "यदि स्थाद्राच्यमो भक्ती कान्यका मानुषौ भवेत्। विवाहे सुखमाप्रोति वैपरीत्यं विवर्जयेत्"॥ युष्ठजयार्णवे। "देवा जयन्ति युष्ठेन सर्वथा भाव सगयः। रचसां मानुषाणाश्च संपाने निथया स्रतिः॥ कार्विमौनालयो विवाः चेताः सिष्ठतुला ष्ट्याः। वैश्या युग्माजक्षभाष्याः भूद्रा हपसृगाद्वनाः॥ सर्वाः परिषयिद्विपः चित्रयो नवभाग्यवेत्। पडाश्ययो भवेद्येशस्तिसः गूद्रे प्रकोत्तितः॥ वर्णश्चेष्ठा च या नारौ दीनवर्षस्य यः पुमान्। स्रवाः सहत्यपि कुले जाता नासौ भर्भार रच्यते"॥

पथ नववध्वागमनम्। दीपिकायां "स्तीयह्यां चिटाजमवत्वध्वाममनम्। दीपिकायां "स्तीयह्यां चिटाजमवत्वधी काले विश्व हे समुं संखन्य प्रतिस्तोममं ग्रभदिने
यात्रा प्रविशोधिते। त्यक्का इस्तु निर्ध्यकं नववध्यावाप्रविधी
पतिः कुर्यादेकपुरादिषु प्रतिस्तोने च्छित्ति दोषं 'वृद्धाः ।
पैत्रागारे कुचकुसमधोः सम्भवो वा यदि स्थात् कालः ग्रही न
भवति यदा संसुद्धी वापि ग्रक्तः। सपि कुम्भेऽलिनि च भवित्
भास्त्रायेक्तवर्षाप स्थामो भद्रेऽद्धान नववध् विश्वयेक्तिस्र स्वम्।
भक्तीं चर्योभने दिनपत्ती नास्तं गते भागवे स्या कीट्यटाक्रिंग ग्रभदिन पचे च क्ष्योतरे। दिला च प्रतिकोमगी
बुधसिती कीवस्य ग्रही तथा चानीता गुणमानिनी नववध्
नित्योत्यवा मोदते। एकप्रामे चतुःमाचे दुर्भिचे राष्ट्रविद्ववे।
पतिना नौयमानायाः पुरः ग्रक्तो न दुर्थाति" ॥ तथा "काम्यः
पषु विश्वष्ठेषु स्वादित्यद्विरःसु च। भारद्वाजेषु वाद्येसु
प्रतिग्रहो न दीयभाक्" ॥

श्रीपतिसंहितायां प्रचेताः। "पुषादित्यसभीरणादिति वस्त्रस्युत्तरा रेवती तारानायकरोहिणीषु ग्रमदो मेपानि-कृषो रवी वारेष्ट्रिक्यमितेन्द्रवित्स श्रमदे तारे प्रशस्ते विधी कन्यामस्यभीनतीतिस्यमे स्यादङ्गना ह्यागमः"। नारायण-पहती "हत्ते पाणिपहे गेहात् पितुः पतिग्रहं प्रति। पुनरा-गमनं वध्वा स्त्रहिरागमनं विदुः"॥ क्योतिःसारमंग्रहे "विवाह-मास प्रथमं वध्वा नागमनं यदि। तदा स्वैमिटं चित्त्यं युग्माद्यस् विच्हणेः"॥ क्रत्यचित्तामणी। "ध्वश्रू हत्त्व-स्मे विद्यं खग्रस्त्र द्यास्त्रिके। संप्राप्ते हादग्रे विद्यं पति इत्ति हिरागमे"॥ मत्यस्त्री "मुक्का पिष्टग्रहे कन्या भुड्ते स्वामिग्रहे यदि। दीर्माग्यं हायते तस्याः श्रपन्ति ह्यानिकाः"॥

चय प्रयमग्जीशीमः। नारायणपहती। "महिले विधवा नारी सीमे चैव पतिव्रता। विद्या महमवार च तुषे सीमाग्यमेव च॥ वृष्टसती पतिः स्वीमान् भुक्षे चापत्यमेव च। भनी बन्धां विजानीशात् प्रथमे स्वी रजखला॥ पूर्वावरे याग्यभुजद्वरीट्रे वैधव्यमस्या विद्धाति नूनम्। मधे सभोका-प्रथमेऽदितीथे छा बन्धकीन्द्रोनलमे द्वरिद्रा। पुष्पं दुष्टं निन्दिते मे यदि स्वात् भान्तिं कुर्यादद्वनानाच्च पूर्वम्॥ तत्। क्येष्टे स्वादिधवा वर्ज्यस्यावद्व भूयो द्रध्यते मस्तमे तत्। क्येष्टे स्वादिधवा नारी पाधादे धनसंयुता। यावणे च स्तापत्या मादे च बहुरोगिणी॥ प्राध्वने च स्तापत्या कार्त्तिक कुल-नामिनी। माग्योपं धमंभीका पीपे च रतिविद्वला॥ माधे पतिव्रता नारी फान्सुने दङ्गपुविषो। चैवे च मदनोन्यसा वैमाखे प्रयवादिनीण॥ इति मामफलम्। 'क्रांत्रकादीनि परचाणि दिस्त्यप्त लिखेहुधः। चलारि दिन्नु स्टचाणि कीणेषु च त्रय जिखेत्॥ पूर्वादिक्रमती लेख फल तेनेव निर्दिशेत्। स्ती बन्या सभगा चैव विषुत्रा पुत्रिकी तथा॥ विधवा सर्वधम्पन्ना विश्वा चेति क्रमात् फलम्। श्राद्ये रलसि सभूते स्तीणास्चफल भवेत्"॥ इति नचत्रफलम्।

त्रय गर्भाधानम्। "ज्येष्ठा सूना सधासेषा रवती क्षत्तिकाश्विनौ। छत्तरा वितय त्यवा पर्ववर्ज अजेहती" ॥ पर्वाखाइ विशापुराणम्। 'चतुर्दश्यष्टमी चैव श्रमा-वास्थाय पूर्णिमा। पर्वाखेतानि राजेन्द्र रविम्नान्तिरेव च"॥ शीनक "पुनचवाणि चैतानि तिप्यो इस्त पुनवसु । श्रीभ जित् प्रोष्टपचैवानुराधापादयाख्यक ॥ इस्तो सूल अवण पुनर्वसुमृगशिरस्तथा पुष्य गर्भाधानादिकार्थेषु पुनामाय गुण गुभद्। रोहिण्यन्तकचित्राधिवग्राखा ग्रतवर्जिते। भे पुग्रहाहे स्ती गुद्धा फलबस्पनमिष्यते ॥ पुष्पार्कचन्द्रशिव सूलपुनवंसु सादाषाढ्युगमहिमाद्रपदद्यञ्च। एतानि पुसि क्षितानि ग्रुमानि मानि चान्येषु गर्भेषतनादिभयश्व भेषु। नन्दा भद्रा भवेत् पुसि स्तीयु पूर्णा जया सृता। रिक्ता नपुसके लाइसासाता परिवर्णयेत्। स्तीणाग्तुभवति पोड्य वासराणि तक्षादित परिहरेश निशासतस्र । युग्मासु राविषु नराविषमासु नार्थः कुर्यादिपेकमध तास्विष पर्व वर्जम्। सूर्वनं सृतिदुष्टत्वाद्रभोधानेषु नथवे। तस्य पुम वनादी तु पुस्रचले प्रयोजनम्"। यथा याचवस्का । "एव गच्छन् स्थिय चामा सघा मूनाच वर्षयेत्। असा इन्दौ सकत् पुत अच्छ छनयेत् पुमान्"॥ चामाम् चाहार-साघवादिना चौषाम्। यसच व्यामास प्रतः नाय से स्विधा युगमास राह्यि। तसाट् युग्मास पुतार्थी सविगेदार्त्तवी स्तियम् ॥ पुमान् पुसीऽाधके शक्ते स्ती भवत्यधिक स्तिया "

द्रित सन्ताम्। एवध "युग्मायामपि रात्री चेत् शीणितं प्रसुरं तदा। कन्या पुंबद्भवति श्रक्ताधिको प्रमान् भवेत्। कन्येव युग्मराही च प्राधान्यं समवायिनः। निमित्तकारणात् काला-च्छुक्षशीणितयोर्यतः॥ पौडा राशी भीमदृष्टे ग्रशाद्धे मासं मास योषितामार्त्तवं स्थात्। वंत्रये शान्तं यच रक्तं जवामं ्तहर्गायं वेदनागत्महीनम् ॥ गर्भयोग्य ऋतुनिह्यणम्। "पापासंयुतमध्यगिष्ठ दिनक्रस् लग्नचपा स्वामिष्ठ तद्यूनेषु ग्रभोज्भितेषु विकुने किंद्रे विधापे सुद्धे। सदाक्षेषु विकीण-वार्कविधुष्वायविषष्ठान्विते पापे गुगमनिशासु गार्डसमये पुंगुडित: सङ्गम:। सूलमधाखिनौनामाद्यं च्छेष्ठान्य-सर्पाणाम्। अन्यं गण्डपद त्यक्का पोडग्राहे ऋतौ व्रजेत्। त्रभन्ती तु भुजवसभीमें "त्रन्य पीष्णेन्द्रसपीणासाद्यं पित्रस्ति-मूलगम्। गण्डं दण्डवय ख्यातं सर्वकार्येषु कि खितम्। पुमान् विंशतिवर्षयेत् पूर्णपोडशवर्षया। स्त्रिया सङ्गच्छते गभीभये गुन्ने रलस्थपि। भपत्यं जायते भद्रं तयोर्न्यूनेऽधम स्मृतम् । 'सामेशै: सितकुलगुक्रविश्वनिमीस्यलग्नपश्चारीनै: कल्पैः पोडा गर्भस्य पीडितैः पतनमन्यथा पुष्टिः"॥ कालुष्यं मामेशेन पापग्रहयोगश्रव्यश्चास्यिति नीचग्टहयोग उपग्रह-योगादि। मासेश्रजन्मनचन्ने पापग्रहयोगः पौडा येषां जन्म-चाँगि १६।३।२०।२२।११।८।२०।२। सासैश-यान्यादी कतिन गर्भपीडा। यय प्रयात् पुचादिज्ञानम्। "विवाहलम विषमचँगंख. सीरोऽपि पुंजनाकरी विकानात्। स्यादियदाणामवलीका वैथि' वाचाः प्रस्तौ पुरुषीऽङ्गना वा"।

ष्य पोडशवर्षीया गिमणी चिन्ता। "या सूता पोडग्रे वर्षे तत्र वा धृतगिमका। सृत्युस्तस्याः सपुत्रायाः वितुद्यापि च समातः॥ भांभीप्रियषुरजनीगुग्गुलुर्वेश्वलीचना। तालिगिन तिनानाजा गर्भिणीसानमुत्तमम्॥ गौरीं मपूच्य तत्पश्चात् सक्रमेच्छिवसन्तिषी। छागी गर्भवती देया दैवज्ञायाय गोयुगम्। कास्यपात्रस्थितं चन्द्र सितवस्ता छाग्युतम्। बस्तैः कृष्णै य शत्पुष्पैयन्दनागुरुष्यकैः। कृत्वापमार्जयेत्रारी भोजयेट् न्नास्यपास्ततः"॥

श्रय पुंसवनम्। "कुर्यात् पुंसवन स्योगकरणे नन्दे सभद्रे तियो साद्रापाढनुभेखरेषु नृदिनं वैध विनेन्दी ग्रमे। श्रक्षोणे नवपञ्चकपढकगते सीस्ये श्रमे हृष्ठिषु स्वीश्रष्ठ्या घटयुगमस्या-गुक्तभेषूचत्स सामवये"॥ नृदिने पुंगहवारे। वैधो दश्रयोग-भद्गः। हिश्विषचयस्थानम्।

श्रय पश्चास्तम्। "रेवत्यिखिपुनर्वस्वयमस्म्मूनानुराधाः सद्याद्यस्तरप्रस्तुभेषु सगुजे कौवार्कवारे तथा। लग्नर्चे दुपगोभने च नियत सत्यच्य रिक्ता तिथि न देय मासि तु पञ्चमे सुकर्णे पञ्चास्त योषिताम्। दुग्ध सग्रक्तर चैव वृत दिध तथा सधु। पञ्चास्तमिद प्रोक्त विधेय सर्वकसीस्"॥

श्रय सौमन्तोषयनम्। "पष्ठे मासेऽष्टमेऽङ्गोन्यक्रविनस्तां नन्दभद्रे तियो च मैत्रे मृत्ते स्माई करियत्यवने
वीण्विण्वित्युग्मे। तियाख्यादित्यरीद्रे युवतिष्टरिभिषे
व्यक्ति वाणि लग्ने चन्द्रे तारेऽनुक्ति ग्रममणि नियत स्माइ
सौमन्तकर्मा"। तियुग्मे पूर्वीत्तरत्वेन युग्मरूपास फल्गुन्या
पाटभाद्रपदास् । "स्माचरित्ते लग्ने नवाग्रे पुग्रष्टस्य च।
केचिद्दन्ति सीमन्तं तथा रिकेतरे तियो"॥ शहलिखितौ
वस्तदानं नववध्वै। "मघाष्टकेऽस्वुतितयेऽदितिदये पौण्यदये
धात्युगे गुरूद्ये। मासे च पष्ठेऽय चतुष्टये स्त्रिया. शहराज्ञमन्दाष्ट्र विष्टिंदी ग्रमा"॥ गर्भसन्दने सीमन्तोत्रयनं यावत्र
वाल्यस्य इति। सुजवती "श्रीफस्च करे दस्ता स्थिता

भद्रामने तथा। ग्रह्मोदितन हो सह ग्रान्तं हैवान कारधेत्॥ कार्यात्वेण मंग्रय कीवं जाति विद्वमम्। ग्रुवाक रजतं हेम दद्यात् स्तनतटान्तरे॥ तत्वम्हितनदीतीरं देवखातीदकं व्यक्तेत्। सम्याटनं तरीमूं लं तथा देवग्रहं व्यक्ति"॥ हद्य द्राजमार्त्ते । "या नार्यः क्षतसीमन्ता प्रस्ति च कराचन। यद्वे निधाय तं वालं पुनः सस्कारमहिति"॥ त्रतपव कन्दोग-परिग्रिष्टं "संस्कारा श्रतिपत्येरन् स्वकालाहोत् कथ्यन। हत्वेतदेव क्षवित ये तूपनयनादधः"॥ इति सामान्यत स्त्रम्। देवनः "सह सस्कृता नारी सर्वगर्मेषु संस्कृता"।

पश लातभद्रादि। तव दन्तजनमिन्ता। "जातः सदन्तः विद्याद्य प्रथमे तु मासे। यम्बां हितौरी सहजं द्वतीरी मासे चतुर्धे ग्रमकारकः स्थात्॥ मिष्टाव-भोजी समगः स्तास्थे पष्ठे सुखी पण्डितकल्पबुद्धः। ततीः ऽधिकः स्थादनवान् युनास्थे मासेऽष्टमे विक्तस्कैर्विशीनः। स्रमतापो नवमे स्वयुद्ध दशमे तथा॥ एकादमे हादमे च सुखी च सुमगी भवेत्। यष्टी पुत्तलकान् कृत्वा सुगम्ये-गंभवेस्वया॥ स्त्रोत सु सक्तमे चापि स्नापरीत् ग्रक्तपुष्पकेः। सानं सक्तमणस्थाधः शम्भोर्दर्गनमन्ततः॥ श्रोमं विपार्चनश्चेतः मग्रमे दन्तदर्शने"॥

प्रस्थात् पूर्वं ग्रहस्कारमाह सांख्यायंनग्रह्मम्। "काका-दन्या सेचकधातक्या हृहत्याः कोपातक्याः कालक्षीतकस्वेति स्त्रुलानि पेपयित्वा उपलेपयेहे यं यिसन् प्रजायते रचसा-सपहत्ये" इति । काकादनी काकज्ञाः सेचकधातकी काकसोचिका कोपातकी घोपकः कालक्षीतकाः यष्टि-सप्केति कत्यतरः। अतएव हरिवये । "एप सानुष्की यक्षो सानुषेरव साध्यते । अयता येन दैवं हि सदिधेः प्रति-

इन्यते। मन्द्रपामैः सुविद्धितैरीपधेसैव योजितैः। यत्नेन चानुकूलेन देवमध्यनुलोग्यते"। दूखनुचरान् प्रति कंसवाक्यम् । "श्रस्ति गोदावरोतीरे जमाला नाम राष्ट्रसी। तथाः स्मरण-साचेण विश्वाला गर्भिणी भवेत्। पश्चरेखाः मसुन्नित्य तिर्थे-गूर्दक्रमेण हि। पदानि पड्दशापाद्य खेकमाद्ये सुनौ स्रयम्। नवम सप्त ददाल् वाणं पश्चदमे तथा। दितौयेऽष्टावष्टमे पट् दिशि हो पोडशे श्रुतिम्। एकादिना समंदेयम् इच्छाहाड्रं विकोणके। तदा हात्रिंग्रदादिः स्यात् चतुः कोष्ठेषु सर्वतः। दर्शनाद्वारणात्तासां गुभं स्यादेषु कर्मासु। हाविग्रत् प्रसवे नाय्योयतुस्तिग्रहमे नृणाम् । भूताविष्टेषु पञ्चाग्रत् स्तापत्यासु वै भ्रतम्। द्वामप्तिस्तु सन्धायां चतुःपष्टीरणाद्वनि। विषे विशो धान्यकौटेप्वष्टाविशतिरव छ। घतुरष्टी च वानाना रोइने परिकोत्तिता" भोमपराक्षमे "वार्था शिशीर्जमापितः परीक्षं चपाकरे प्रश्नित नेव लग्नम्। चरस्थितः विष्टमधर्मग वा जातः परीचे पितरीति वाच्यम्। लग्नस्थितं वा दिननाय-भूमो यामिवमस्येऽप्ययवा महीने। चन्द्रेच गुक्रेन्द्रनमध्यर्ग वा विदेशसंस्थे पितरि प्रजातः। सप्रस्तिभंयेचन्द्रे ग्रभपद-युतिचिते। दुर्पहेचितयुक्ते च प्रस्तिर्दु,खदा भयेत्। दारं वास्त्रुनि केन्द्रोपगात् यद्दादमित वा विनग्नसात्। दौषोऽकां-दुद्याद्वत्ति स्टितः स्टेइनिर्देशः। लग्ने यादिरगाशस्तद्धि-सुखं स्तिकाग्टइद्वारम्। वासग्टहीद्यानगर्भादारं दिग्विश-घडाडमोपेतात्। डाट्यभागविभक्ते वास्यहे व्यवस्थिते सुद्धांगी: दीपयरस्यिरादिषु तयेव वाष्यः प्रमवकार्छ। समस्य यस्त वर्षो निर्दिष्टा विस्तिन निर्देश्या । यावान् भागः-खयस्पगतो दौपवर्तिय। तस्यास्तावद्वार्ग चयस्पगते सम्नगति: प्रसृति:। द्रन्दोभागवगाद्राभ दींपे तेलम्य संस्थितः। देशित्

पूर्णादिभेदेन वदस्येवं मनीषिणः। भेषे चापस्रीन्द्रयोः किन शिशः प्राची शिवा जायते गोकन्या सकरेष दक्षिणशिरा लातो भवेबियितम्। भौने य्याककिकेषोर्यदि तदा कीवेर-सूरी भपेत् बुकार्चे धटयुगायीयदि तदा पायात्यसूरी नतः। युरमायुरमनरनयशात् प्रसवस्य च कारियो। विधवा सधवा च्रेया क्रमात् खलु विचचगैः"। हुच्छातके। "मेषक्रलीर-सुनानि घटे: प्रागुत्तरतो गुरुमोस्य स्ट्हेप्। पश्चिमतश्च व्रिपेग निवामी दिचिषमागकरी सगिमही। वास्त्रेय प्रागाटिग्टर-प्रसवज्ञानम्। दो दो राशो गेषात् पूर्वादिष् संस्थिती स्टब-विभागे। कोणेष् द्विश्वीराणि लग्नस्थाने शिशोः शयनासि । ग्टहस्य प्रागादिदिग्विभागे बानस्य ग्रय्या । नग्ननवांश्वत्स्य तनुः स्थात् बीर्ययुतग्रहतुत्वतनुर्वा। चन्द्रममे तु नवांग्रपवर्षः कादिविस्मिविभक्तभगावः। सम्मादयीराग्रयः कादिव् ग्रिरः प्रश्तिगाचेषु परिकल्पा नेन तद्धिपात्तहैर्छादिमेदात् तद-द्वाना तथा। यथाह सत्यः। दीर्घपतिदोर्घ ग्रहस्थितोऽवययः दीवं क्षद्रवति। मियत्वे मियफनमेयमस्येष् वाच्यम्। कष्टक्-योवनसामवोत्तप्तनवो वक्षय द्वीराटयस्त मण्डायमबाहुया-खंद्रदयक्रीडानि नाभिस्ततः। वस्ति ग्रिश्रगुदे ततस सप्णावक् तती जानुनौ। जहाँद्रो द्युभयत वाममुद्तिदेकाणभाग-फ्लिया। लग्नादयो राग्रायस्त्रिया द्रेक्षाणभागेस्तत्र प्रथमे श्रीपति दयो भवन्ति ते सामादयः हितोये कार्यादयः हतीये वस्ता-दयः छदितैब्दय माप्तेभुकौरिति यावत्। तैद्दोदग्रभः राग्नि-भिवीममङ्गिति श्रेषः। श्रयात् दितीयादिभिभीगैदेचिएं तेन लग्नात् हितीयो राभिदेचिण चत्तुः हादशञ्च वाममित्यादि चियम्। "तिसान् पापसुते व्यग गुभश्वते सीम्यं हि सच्मादि-गित्। सर्वां में स्थिरसंयुतेषु सहगः स्यादन्यया मन्तुकः।

मन्देषानिलजोऽन्नियस्तिवपजो भीमे बुधे भूमवः स्यां काष्ट-चतुष्पदेन हिमगी शृद्धां जोन्यैः ग्रभः"। तिसान् द्रेक्षाणे। देक्षाणस्तितयहफलनिर्णयः। "योपसुखबाइस्ट्योदराणि काटिवस्तिगुद्धामं ज्ञकानि। खक्जानुकजङ्गे चरणाविति च राययोऽजाद्याः। इति कालनरस्याङ्गे सदसदृषदयोगतः। पुंसामपि तदङ्गेषु ग्रमाग्रभफलं वदेत्। न लग्नमिन्दुस्त गुक्-निरीचते न वा ययाद्धं रिवणा समायुतम्। सपापकोऽर्केण युतोऽयवा प्रयोपरेण जातं प्रवदन्ति निषयात्। भग्नपाद-चंसयोगात् दितोया द्याद्यो यदि। सप्तमी चार्कमन्दारे जायते जारजोई भुवम्। जारजयोगः। "गुक्नेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते वामवेश्मनि। तद्देकाणे नवांये वा जायते न परेण स."। जारजयोगभङ्गः इति लग्ननिर्णयः।

"याद्रक् प्रश्नित सौस्यक्त तृत्यगुणं सृतं समाधने। पित्व-स्वनीसाद्रश्चं रवीः यथाद्वाञ्च बस्योगात्। सक्तं रजस्तसी यत्तु नियांग्रे रिवस्ताद्वक्"। एतेऽन्तरातानः स्वां प्रस्तिः जन्तोः प्रयच्छन्ति सक्ताद्विप्रदाविभागके रिवस्तित्या सान्ति-कादिज्ञानम्। विणुधमितिरे। "तामसा राजसायैव सान्तिकाय तथा स्मृताः। मनुष्या भगुषाद्वीन वास्तिक्त-कफाधिकाः।

स्तनाडिकाः। पन्याः पौष्णोरगिन्द्राणां पर्धेव यवना जगुः।
सूलेन्द्रयोदिवागण्डो निगाच पिष्टमपयोः। सन्यादये तथा
द्वेते रवतोतुरगचयोः। सन्यारानि दिवामागे गण्डयोगोद्वाः शिकाः। सालानं माला त्रातं विनिष्टक्ति यद्याक्रमम्।
सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो निधीयते। तातेनादर्गनं
तापि यावत् पादम्। सिको भवेत्। इद्युमं चन्दनं कुष्टं गार-

चनमयापि वा। इते नैवान्वितं क्रत्वा चतुर्भिः करासैर्द्धः। सहस्राचेण मन्त्रेण वालकं स्नापयेत्ततः। पित्रयुक्तं दिवा-नातं माख्युक्तच रामिजम्। स्नापयेत् माख्यिस्यां सन्ययो-त्रभयोरिष। कांस्यपावं छतेः पूर्णं गण्डदोषोपशान्तये। ददाहेनुं हिरण्यस ग्रष्ठांसापि प्रपूजरीत्। सूनायाः प्रथमे पादे पितुर्वेषुः प्रयम्बति। दितौये नियतां पौडां मातुः कुर्यात् पितुस्तया । त्रतीये धननात्राय चतुर्ये सर्वसम्पदः। घ्यत्ययेन फलं ज्ञेयमश्रेषास्विप पूर्ववत्। बस्मीकस्तिकां ददात् नदाय तटस्पिकाम्। गोविपाणस्ट्रेष दन्तिस्ट्य निचिपेत्। तौर्थाभः पञ्चगव्येन स्नानं भातुः पितुः शिश्रोः। दिवा जाता तुया कन्या निश्चि जातस्तुयः पुमान्। नीभयी-गेण्डदोषोऽस्ति नाचलो इस्ति पर्वतम्। दिवागण्डे निमाजातो निश्चिमण्डेऽथवा दिवा। नीभयोर्गण्डदोषः स्वादाचली इन्ति पर्वतम्'॥ इति गर्ङनिर्णयः। ''मग्रचू लिकामूलमादि-त्यग्रहणोह्नतम्। बालस्य च गले वहं समस्तग्रहदोषहृत्"॥ मय्रच्सिका भपामार्गः। "यह्वोत्पलवचा कुष्ठ' सच्यक्षीइ-विधारणम्। सर्वोपद्रवतो बाल च्लेडादिप च रच्चति॥ चकद्यां निया ग्रण्हो गोष्टतेन विसेपनम् । सर्वोपद्रवदाधिभ्यो बाल रचति सन्ततम्॥ मागधिकासैश्वन्तरभिषित्तमधुमरिच-रचितमतिप्रकटम्। भूतहरमञ्चनमिद् दुईरग्रहदर्पविदार-यम्॥ सुरिभिपित्त गोपित्तं मागधिका पिष्यली। दाक्-हरिद्रा पुर्ये प्रचर्मन मर्रियला रचिता॥ प्रज्जनगुटिका यद्दद्विता भूतविद्रावणी प्रचरसेन सुषाएइरसेन।

षय पताकीविधः। "तिथागूर्द्धगता रेखास्तिसी देयाः पताकया। युताः काथा ब्रेटविदा सर्वसङ्गतरेखया॥ दच्च-स्रोहतरेखातो वाम मेगायराशयः। पद्याष्ट्रयुग्सविशास

षड्दशिन्द्राग्निसागराः ॥ कर्कटान्भीनपर्धन्तमङ्गा देया यद्या-क्रमम्। बाजस्य जन्मकासीनग्रहसम्बद्धाः विन्यस्य चिन्तयेत् पाजः शुभागुमं यथाज्ञमम्। शुभद्ग्हयोगविधेर्न-ग्नाह्यस्य श्रोभनम्। पापदण्डयोगवेधैराख्यहा दृष्टिकाल-वत्। बलाधिके दिनं सध्ये मासी धीने च दायनस्। किर्मीनधनुर्थाञ्च छरिः कोटघरेन च। स्त्रियास्त्रीलिस्-गाभ्याञ्च घटे भीनेन कन्यया। धनुषो सगकर्विभ्यां सकरे धनुषा स्तिया । सीने कर्कित्नाभद्भयां सीनस्तीधनुषासन्ते । तुलाकिकिम्गैद्धन्द्वे कौटकुभ्रष्टपेषु च। सिंदवदेध एतेषु वामद्चिणसंम् द्वे। राष्ट्रकेलकंषीरारै: पापैक्टि युतोऽगुभः। तदस्यैद्युतविद्यस्तु नगन्। श्रिमपदः। एकोनविद्यतिः कर्के सिंहे सप्तदग्रैव तु। पट्तिंगदवनायाच पड्विंगतिस्तुनाः धरे। हिंचिके सिष्टवत् ज्ञेय सूनिविंगच्छराप्तने। षड्विंगं सकरे चीयं कुको सप्तदश रस्ता। नवयुग्से तथा सीने मेपे यब्दयभिस्तया। व्यमेच यथा सिहे युग्मेऽइहरनीचने। वितयाद्वादियं मंख्या दिनमामाध्दनिर्णये। एकाद्वात दिग्ट-हाद्वादा क्वचित् दृष्टेय सभावः। वारेगाद्वेयामेषु रावाङ्गीः पञ्चपट्क्रमात्। पिधपाः स्पर्यद्वास्तव यद्याकदि भवन्ति हि। वरीन्धेन्दुभृगुक्त्यानयमित्तरवयी निशि। रिधियुक्तप्र-रावीशश्नीच्यकुजभास्कराः। दिने तृष्ट्याः परेपेवं तथा त्रशासतुर्यक्षाः। पापदण्डे भविद्विष्टिः ग्रभदण्डे ग्रभं भवेत्। ग्रमप्रस्य दण्डे तु कमारिकाच्छ्मं भवेत्। चार-भात् पापद्या तु कमा निप्पस्तां व्रजेत्। यस्यार्धयामस्त स्वैव प्राग्दर्यः समुदाञ्चतः। पट्षट् परीत्यदण्डारा वयो राषी सतास्त्या। पादित्वे भगुजो मुघोऽपि च गगौ सोने मनीज्यो युजी भौमेर्कः सितसोमनी च गगिने सोमः गनिर्वाक्पतिः।

जीवेऽङ्गारयो भृगुभृगुस्त सीमेन्द्रमार्नग्डजाः। काले जीव-अदीनित्मिकिरणा रामी च दण्डाधिपाः। यामाद्वाधिप-संख्यातो हितीयस्तु तदर्हतः। तदहीत् व्वतीयः स्वात्तदर्हातु तुरीयकः । यद्वाभाये तु राष्ट्रः खात्तदद्वी यसुमंख्यकः । भन्ना-ष्मस्य परित्यागाहिवादर्यः। धिपा यया। रविदनुजवुधग्लीसः न्द्रसुरासुरज्ञा कुलरविदनुजज्ञाः ज्ञेन्द्रसुरासुराद्यः। गुरुगिरिन ' विदेखा: शक्रभीमार्कदेखा: शनिक्षजरविदेखा दण्डपाद्यर्द-यामे"। दनुजो राष्टुः। भर्षयामे। दिनार्षप्रदरे। ग्रम-दण्डमार । "ग्रेपावर्कस्य दण्डो सततश्रमकरावादिग्रेषौ तथेन्दोः शेपो दण्डः कुजस्याष्यय गुरुवुधयोराद्यमादां प्रग-स्तम्। पाटिदण्डस्रधेको स्मुकुलनृपतेः सर्वकार्यः श्विभसः। दण्डायत्वार एते कचिद्पि समये नैव सीरे: प्रशस्ता:। प्रति-दण्डं पनामोपां जाला वाचां कचिच्छुमम्। यवी च वेदा वसवः सुधांग्री कुले चराणां श्रशिजे तथाद्वाः। श्रनाष्ट्रतृहिक् च ष्ट्रस्पती स्याद्राष्ट्री तुरङ्गा स्रुगुजे च रुद्राः। पशुभे दण्ड-संयोगे सर्वेद्र पुण्यवर्जिते। बासस्य सर्णं श्रीव्रं यदि पापै: समन्वितम्। षशुभग्रह दण्डे तु सर्वत्र पापवर्जिते। बाक्षस्य खुश्रसं सर्वे गुभैर्यदि समन्त्रितम्। ष्रश्रमो दग्छमायो हि वेध-येत्तेन सभ्यते। सर्णतव वस्तव्यं बासस्य नान्यया भदेत्। पापस्य दर्जमात्रे सुतर्योगवेधवर्जिते। बालस्य कुग्रलं तत्र गुभैयदि समन्यितम्"। इति पताकीवेघ:।

"पापास्तिकोणकेन्द्रे सौस्याः घष्टाष्ट्रसव्ययगताः । स्वीन्द्री प्रस्तः सद्यः प्राणांस्यज्ञति जन्तः" । स्वीदिष्टम् । "पर्छेन्द्रिमे च चन्द्रः सद्यो भरणाय पापसंदृष्टः । चष्टाभिष्य ग्रुभैर्दृष्टी वर्षेभियोस्तद्र्वने । चन्द्रस्टिम् । "स्तमद्रमनवान्यसम्बन्धः स्त्रेष्यग्रस्तुतो सर्पाय गीतर्रासः । सगुस्तग्रिष्ठ्रदृष्ट्

पून्यैर्यद बलिभिनं युतीऽवलोकितो वा"। पापयुतचन्द्र-रिष्टम्। "दानचतुरस्रसंखे पापस्यमध्यगे शशिन जातः। विसयं प्रयाति नियुतं देवैरपि रक्षितो बासः"। पापमध्यग-चन्द्ररिष्टम्। "चौणे शशिनि विलग्ने पापैः केन्द्रेषु सृत्यु-संस्थेवी। भवति विपत्तिरवश्ये जवनाधिपतैर्भतश्चेतत्"॥ चौणचन्द्रस्थिम्। "नाग 🗆 । गो ८। सिंह २४। जातौ २२। इषु ५ । च्या १ । पाब्धि ४ । त्राश्वि २३ । प्रति १८ । नखाः २०। स्मानि २१। दिक १०। चेत्यजादामी तत्त्वाव्दैर्विधी व्यसुः"। मेषादीनां वियांयवियेषस्यचन्द्ररिष्टम्। "भौने विलाने शुभदैरदृष्टः पष्ठेऽष्टमे वार्कसूतेन युताः। सदाः शिशुं इत्ति वदेनानोन्द्र: सारे यमारी न ग्रुभे चिती च"। विविध-भौमरिष्टम्। "कर्कटधामनि सीम्यः पष्ठाष्टमराधिगोवित्तमन र्शात । चन्द्रेण दृष्टमूर्तिर्वपचतुष्टयेन मार्यति"॥ बुधरिष्टम् । "वृष्टसातिमौमग्रहेऽष्टमस्यः सूर्यन्दुभौमार्कजदृष्टमूर्शिः। वर्षे-स्तिभागिवदृष्टिष्ठीनो सोकान्तरं प्रापयति प्रस्तम्"॥ दृष्ट-स्प्रतिरिष्टम्। "रविश्रशिभवने श्रको हादगरिपुरन्द्रगोऽस्भैः सर्वै:। इष्टः करोति मरण पड्मिर्देषैः किमिच विचित्रम्"॥ गुकारिष्टम्। "मारयति पोड्गाहात् शनैयरः पापवीचिती समे। संयुक्तो मासेन वर्षाच्छुइस्तु मारयति"॥ विविध-श्रानिरिष्टम्। "राष्ट्रयतुष्टयस्थो सरणाय वीचितौ भवति पापै:। वर्षवंदन्ति दश्रभि: षौडश्रभि: केचिदाचार्थाः॥ घटसिं इष्टिश्विकी दयक्षतस्थिति जीवितं इरित राहु:। पापैनि-रीच्यभाणः सप्तमितैनिधितैर्वर्षे."॥ राष्ट्रिष्टम्। "केतुर्य-सिन्धेऽस्युदितस्तसिन् प्रस्यते सन्तः। रौद्रे सपेमुहत्ते वा प्राणै: संत्यज्ञते चाग्र"॥ केतुरिष्टम्। सन्ने ये देकाणा निगड़ाहिविहद्वभपाश्रधरमंत्राः। मरणाय सप्तवपं अरयुतान्

खपित दृष्टाः। द्वेक्काणिरिष्टम्। "गीनकर्कटयीरन्यौ इयि-कस्याद्यमध्यमी। सर्पायत्वार एवेते द्रेक्षाणा निगडास ते॥ तुनामध्यासि पिष्ठाय कुभाद्याः पश्चिषः स्मृताः। हयाद्यमकरा-दान्ता द्रेक्षाणाः पात्रधारिणः॥ सम्माधिपनमापती पष्ठाष्टमरिए-फगौ प्रसवकाले। अस्तमिती मरणकरौ राशिप्रमितवदेइपं:"॥ जकापतिर्जनाराम्यधिप: लग्नाधिपजकाधिपरिष्टम्। "मोन्याः पराष्ट्रमगाः पापैर्वकोषगतैर्दृष्टाः । सामेन मृत्युद्यस्ते यदि न ग्रभेस्तव संदृष्टाः"॥ शीम्ययहरिष्टम्। "एकः पापोऽष्टमगः शत्रदही शत्वीचितो वर्षात्। सारयति नरं प्रस्तं सुधा-रसो येन पौतोऽपि"॥ पापप्रहरिष्टम्। "होरायाः सप्तम सौरिहिंवुकस्यय भास्तरः। पासिन् योगे तु यो जातः सीऽ-लायुर्भवति प्रिये॥ वसुपष्ठगते जीवे समसप्तगते शनो। दादशस्थो यदा भानुवर्षमक न जीवति॥ प्रतिपद्मत्तरापाद् नवम्यामेव क्रिका। पूर्वभाद्रपदष्टम्यामेकादय्याख रोष्टिणी ॥ द्वादश्याञ्च यदाश्चेपा वयोदश्या यदा मघा। एभिर्जातो न जोवित यदि अक्रसमी भवेत्"॥ इति शिश्रारिष्टम्।

, "लम्नाचतुर्थमः पापो यदि स्याद्वलवत्तरः। तदा माळवर्धं स्याप्तत्तेन्द्रे चापरो यदि॥ केन्द्रविकोशमः पापो माळदा सतवासरात्। सपापात् भागवात् पापो चिवुके साळनाशकत्॥ चन्द्रमा यदि पापेन वयेणैवेच वीच्चितः। माळनाशो भवेत्तस्य पठः पापो भवेद यदा"॥ इति माळिर्छम्। "कर्मस्याने स्थिते सीम्ये रिपुस्थाने च चन्द्रमाः। कुले च सप्तमस्थाने नियते पिळसच्चकः॥ तमोद्दा यदि पापेन वयेणैव चिवितः। ग्रमेरयुत्छस्य पितुरप्यन्तमादिशेत्"॥ इति पिळरिष्टम्। "लग्नाचतुर्यो रिवजाऽव भोमः कर्मस्थितो माळवियोगदुःखम्। ददाति गोन्नं खलु सप्तमे च तातस्य

ख्यं यदि सम्मसंखः॥ दिवाकरेन्दोः कारगी कुजार्कती रोगप्रदी पंगवयोषितस्तदा। व्ययस्त्री सत्यकरी युती यदा तदेवहृष्टा मरणाय कल्पिती॥ यमवक्री द्युने चार्कात् पंसी रोगप्रदी स्तियास चन्द्रात्। तक्षध्यगयोस् लुस्तदेकयुतहृष्ट-योयापि ॥ इति माता पिष्टहायोगः।

"एकोऽपि केन्द्रभवने नवपश्चमे वा भाखनायुखविमसी-ष्ठातदिहिमागः। निःग्रेपदोषमपहृत्य ग्रुमं प्रसूतं दीर्घायुपं विगतरोगभयं करोति"॥ सर्वरिष्टभङ्गः। "सीस्यग्रहरित-बलैर्विषसेथ पापैर्लमच मौभ्यभवनं ग्रमदृष्टिदृष्टम्। सर्वा-पदा विरक्षिती भवति प्रसूतः पूजाकरः खलु यथा दुरिते-र्यष्टाणाम् ॥ चन्द्रः पूर्णतनुः सौम्यर्चगतः स्थितः ग्रभस्यांगि । प्रकरोति रिष्टभङ्ग वियेषतः ग्रुक्ससंहष्टः ॥ सोम्यहयान्तरगतः संपूर्णसिखमण्डलः शयसम् निःशेपरिष्टहस्ता भुजद्वलोकस्य गर्ड इव । खोच्छः खग्टहेऽपि वा खमुहृदां वर्गेऽपि सीम्ये-र्राप वा संपूर्णः ग्रभवौचितः ग्रगधरो वर्गे खकीयेरपि वा। शत्र्यासवलोकनेन रहितः पापरयुक्ते चितो रिष्टि इन्ति सुदुस्तरां दिनपति: प्रालीयराश्चिया ॥ शक्कः पश्चसद्वसाचि वुधः पञ्चमतानि च। सद्यमकन्तु दोपाणा इन्याचैवोदिते गुरः॥ सप्ताष्टपष्ठाः सोस्या दरन्ति गणिनः कष्टफलम्। पापैरमित्रचाराः कम्बाषपृत ययोगादम् । पर्चे सिते भवति ज्या यदिचपायां छपो तया हिन ग्रभागुभहष्टम् सिं। तं चन्द्रमा रिपुविनाधागतोऽपि यक्षादापस् रचति वितेव मिगुं न इन्ति। तुलाकोदण्डमोनस्यो समस्यय ग्रनियदा ॥ सर्वरिष्टिं निष्ठ-न्यागु ग्रीपे लाती भवेदासः। राष्ट्रसिपष्ठनामे सानात् मीम्यंनिरीधितः सदाः नाशयति सर्वारिष्टं मारत द्रव तुन-सङ्घातम्। चलद्वपमकि चलि रचित राष्ट्रः समस्तरिष्टिभ्यः।

क्रुरः स्वसेऽप्रयपराधे बहुवैरानुबस्यक्षत्"। दृष्टवियोगानिष्टप्राप्ती चित्तस्य यया पूर्वमवस्थानम्। प्रस्थिरविभूतिसिक्षं
'चलमटनं स्वस्तितिनयसमिष घरमे। तद्विपरीतं चमान्तितं
दीर्धस्त्वच। दिश्वरीरे त्यागयुतं कृतज्ञसुत्साद्दिनच्च विविधचेष्टम्। प्रास्थारणजलोद्धवराधिषु जातास्थ्या शोलाः।
प्रदीर्धस्त्रय भवेत् सर्वक्रमेसु पार्थियः। दीर्घस्तस्य भूपतेः
कर्मनष्टं भवेत् प्रवम्। रागे दर्पं च माने च द्रोष्टे पापे च
च कर्माणि। प्रायये चैव कर्त्तव्ये दीर्घस्तं प्रशस्ति।
दित्र राश्यक्तम्।

चय जनानचवषणम् । "यतानन। दिखियया स्मित्न यक्ती द्वामित्र गुणाः परिष्टाः । यिवा जहम्ता हि भवा जन्याः यिपोद्धवाः सत्पुरुषा भवन्ति ॥ का जाता दिनक्षत् मन स्तृष्टिन्त्राः सत्त्वे क्षुजो ज्ञीवजी ज्ञीवान स्तृष्टि सितय महनो दुः दिने यात्मजः । राजा नौ रविशीत्म चितिस्तो निता कुमारो वुषः । स्ति हिनवपूजितय स्विधी प्रेष्यः सहस्तांगुः "॥ समुखा हः भौर्थि मिति भट्टोत्मल निता सेना ध्याः । "वना वला न्याः समुखा हः भौर्थि मिति भट्टोत्मल निता सेना ध्याः । "वना वला न्याः समुखा हः भौर्थि मिति भट्टोत्मल निता सेना ध्याः । प्रवत्य कुर्युः सम्वां स्वां स्

सत्याचार्यः। "यहस्थंस्य दगा जेगः प्रामिते दग प्रच च। भटावद्वारके प्रोत्ता वृधे सग्रदग स्तृता ॥ प्रमे-सर्ग दग प्रोत्ता गुरोरेकोनविंग्रतिः। राभौ दादगयपाणि भगीरप्रेकविंग्रतिः। दिखु व्ययं व्ययं जेगं विदिशु ख चतुष्टयम्। स्तिकादिपदातव्यं दिगम्बरमता दगा ॥ स्ति-कादिवये स्थाः सोमी रोदचतुष्टये। स्वादिवितये भीमी युधी दस्तचतुष्टये॥ भनुराधा वये सोनिगुंदः पूर्वचतुष्टये॥ धनिस्तावितये राष्टः येपे ग्रकः प्रकीतितः॥ स्वीप्रय-

भीमार्किद्यातिकष्टदा नृषाम्। गुरुज्ञचन्द्रगुक्राणां यथेपित-फलप्रदा"॥ वराष्टः "खगाकधीनग्राकाव्दात् प्रत्यव्दं पश्च वासरान्। तिथीं य चन्द्रशिखिनी स्थागुणी च कता खिनी ॥ दण्डपस्रविपसान्यनुपसानि च सायने। वर्षियता ऋधग्रीष-भोग्यास् गणनक्षमात्"॥ चन्तदंयाज्ञानमाष्ठ । "खद्याभि-र्द्यां इता नविभर्भागभाइरेत्। लब्धा मामास्त तच्छेप पुर्यात्वा तु चिंशता॥ स्रद्वेद्वेता दिनं लभ्य तच्छे पे पष्टि-प्रिते। नवभिष्य द्वते लब्धा न्नेया दण्डास्तदन्तरे॥ रवेः पड्वर्षमध्ये तु वेदा ४ मासा रवेर्निजाः। चन्द्रस्य द्रश्र मासास दिक्दिन पच्च मासकाः॥ कुजस्य त्रस्य रहास्तु मासादिक्-दिवसाः शनैः। ऋतुमासाद्यविशय गुरीवैषीद्यविश्वतिः॥ राष्ट्रीर्मासाष्टका ज्ञेया सगीवर्षसु मासको। एवं ग्रष्टाणा-मन्येपामुद्यारीवान्तरीदयः॥ यद्गुहस्यान्तरे यस्तु यत् संस्यं कालमाप्तवान्। तत् सर्खं खान्तरे तसी सुद्दादिति नियय.॥ स्वान्तरप्रहणे स्वागं स्वागेन पूर्येत सदा"॥ दशा-पानन्तु। "उद्दिग्नचित्तपरिखेदितवित्तनामक्षेत्रप्रवासगद्-पौडितपचघातै:। सचीभितस्रजनबस्रुवियोगदु:सैर्भानोर्दशा भवति कष्टकरौ नराणाम्"॥र। "सौर्यं विभित्ति वर्-वाद्यागरत्नकौर्त्तिप्रतापवस्वीर्थेशुभान्दितञ्च। मिष्टान्नपान-शयनासनभोजनानि चान्द्री ददाति धनकाखनभूभिशहम्"॥ च। "शस्त्राभिघातवधवन्धनरेन्द्रपौडाचिन्तास्वर् विकलतास्व यहे करोति। चौराग्निदाहभयभङ्गविपत्तिरोगकौत्तिप्रताप-धनहाचद्या क्लस्य ॥ म। "दिव्याद्गनावद्वपद्वजयट्-पदल की लाविलासमयनामनभोजनच्य। नानाप्रकार्विभ-वागमकोषष्टि चिप्र भवेदुधदगासु हितार्थिसिहि."॥ सु। "मिष्यापवाद अधवस्त्र नका स्येष्ठा निमासः स्येयुक् प्रियमुखद्रविणे -

विद्योन:। मित्रेषु वैरमभिवाच्छति वैरयुक्त: कष्टासु पापद-दमासु भनेश्वरस्य"॥ भा । "रस्य रटइ विनयमञ्चयमानहृद्धिं प्राञ्जीति सोस्यधनधान्यविभूतियोगम्। धर्मायकामसुख-भोगबद्धपयुक्त यावत् व्रहस्पतिदया पुरुषो हि तावत्" ॥ व । "बुद्धाविद्धौनमतिनाश्रवियोगदु.स मष्टार्घसिद्धभयभङ्गविपा-त्तिरोगम्। सन्तापशोकपरदेशगतं करोति राष्ट्रोदेशा भवति जौवनसंत्रयाय"॥ रा। "सन्त्रप्रभावनिषुण प्रसदाविनामः खेतातपत्रतृपपूजितदेशसाभः। एस्यश्वसाभधनपूर्णमनोरषः स्यात् श्रीकीद्या भवति नियलराजलस्यौः"॥ गु। रवेः ख्यनद्यावर्षाणि ६। तस्यैवान्तर्या मासाः ४। तत्पन्तम्। "उद्दिग्नचित्तपरिखेदितवित्तनाथक्षेथप्रवासगदभौतिमहाभि-, घातान्। दुःखप्रयासवधवस्थभय।नि चैव भानोदधा प्रकुरुते खलु राजपीडाम्"॥ रर। सोमस्य मासाः १०। तत्फलम्। "गदसङ्गटसन्द्रामं खेच्छा द्वानि धनचितम्। कुरुते रजनौ-नाघो भानोरन्तर्या गतः"॥ रच। कुजस्य मासाः ५। दिनानि १०। फलम्। "स्वर्णप्रवानसौख्यानि रत्नानि कौर्त्ति-मुत्तमाम्। ददाति भूसुतोऽभीष्टं भानोरन्तद्याङ्गतः"॥ रम बुधस्य मासाः ११। दिनानि १०। "टद्वं विचर्चिकास्त्रैव बनदुष्टादिबाधकान्। चन्द्रजः कुरुते ग्रोकं भानोगन्तरंगां गतः"॥ तुर। भनेसीसाः ६ दिनानि २०। फलम्। "सन्तापं वित्तनाश्च वसुनाशं पराजयम्। मौरिः करोति वैकस्यं भानोरत्तर्दशाङ्गत."॥ रश । सुरोर्दर्पाद १।०।२०। "धर्मार्थकामधौष्यानि ददाति विबुधार्चितः। कुष्ठादि-ब्याधिहला च भानोरन्तद्यां गत." ॥ रष्ट्र। राष्ट्रीर्मासाः 🖘। "चग्रभामुभवोद्देगं व्याधिभौतिसृतचयान्। कुरुते सिद्धिका-सुन् रवेरलर्दशाहत."। द्रा। ग्रक्तस्य वर्षे १। मासी २।

"कोष्ठप्रोवाभिरोरोगन्त्रशम् श्रूलादिदाक्णान्। श्रीकं करोति सग्जः स्यासान्तर्याङ्गतः"॥ रग्नः एवं रवेवपणि। ६। चन्द्रस्य स्व्लद्यावपीणि १५। तस्यैवान्तर्रशावर्षे २। मासः १। फलम्। ''कुर्याहिभूतिवरवाइनमातपत्रसेमप्रतापवलवीर्य-समन्वितानि । मिष्टाचपानग्रयनासनभोजनानि चान्द्रीरग्रा पच्चकाञ्चनभूमिदालो"॥चच। कुलस्य वर्षे १। मासाः ८। दिनानि १०। फलम्। "पित्तशीणितपौडाझ चौराणाच भयं तथा। सङ्गलः कुर्तते नित्यं विधीरन्तरेशाङ्गतः"॥ चम। युषस्य वर्षे २। मासाः ४। दिनानि १०। 'सर्वत्र द्रव्यलामञ्च गजाखगोधनानिचा चन्द्रजः कुरुते सोख्यं विधीरन्तर्द्रशां गतः" ॥ चतु । प्रनिर्वेषं १ । सामाः ४ । दिनानि २० । "बस्रु-स्रोगं नृपाद्वीतिं व्यसनं भीकगङ्गुलम्। विनाशं कुरुते भीरि-यन्द्रस्यान्तर्थाष्ट्रतः''॥ चया गुरीवंधे २। मामाः ७। दिनानि २०। 'दानमौक्यानि सम्गोगवस्तालक्षारमूपणम्। कुर्ते विव्धाचार्थी विधीरन्तर्भाष्ट्रतः"॥ चष्ट्रा राष्ट्री-वैषे १। मासाः 🕒। ''वङ्किशव्भयं दुःखं शोकं बन्धुधनचयम्। कुरते राष्ट्रस्ययं चन्द्रपाकदशाष्ट्रतः"॥ घरा। श्रक्रस्य वर्षे २। मासाः ११। "सेधाते वरनारीभिनरो सस्भीः प्रवर्तते। मुल्ला-ष्टारमिषप्राप्तिविधोरन्तर्गते सिते"॥ चग्र। रविमासाः १०। 'ऐम्बर्यं यस्मीख्यस व्याधिनाममिश्चिम्। नृपतेनी रविः सुर्यात् विधी: पाकदशाङ्गतः"। चर। एवं चन्द्रस्य वर्षाणि १५ सुजम्य स्वन्वर्षाणि । तस्यान्तरंशा मासाः 🦭 टिनानि ३। दण्डाः २०। "अर्गाभिद्यात्यधवस्यभयानि धने चिन्तास्वरं विकासश्चारहात्रमञ्च। चौरामिभोतिधनदानिनरेन्द्रपोडः क्यांदिनाथानिधनच दगा कुजस्यणा सरा। वर्षं १। सासाः ३। दिनानि ३। दण्डाः २०। "परमेग्बर्ध-

मतुलं नानाविधसुखाययम्। करोति सोमधुषय चिति-जान्तर्याङ्गतः"॥ मव्। यनेर्मासाः 💶 दिनानि २६। दर्डाः ४०। "रिपुचौराग्निभौतिञ्च रोगमन्तरमन्तरम्। मञ्चा-जनक्षती देष: कुजस्यान्तर्गते यनी''॥ सय। गुरीवंधं १। मासाः ४। दिनानि २६। दण्डाः ४०। "पुष्पध्पात्रवस्तार्धे-दंववाद्याष्प्रजनम्। मृणतुख्यत्यमाप्रीति कुजस्यान्तर्गते गुरी"। सद्ध। राष्ट्रीर्मामा: १०। दिनानि २०। "कार्य्यार्थनार्यं सर्वन वस्यचौरादिसाध्यसम्। कुरुते सिहिकापुत्रो भौमस्यान्तर्याः गतः"॥ सरा। शुक्रस्य वर्षे १। मासाः ६। दिनानि २०। "धनहिं सुखादीं स नानावस्त वरस्तियः। प्राप्नीति विपुत्तां लच्मीं कुजस्थान्तर्गते स्यौ"। सग्र। रवेर्मासाः ५। दिनानि १०। "नानारदाच्च सौख्यच सुमिलाभमयापिवा। नृप-पुजामवाप्रीति क्षजस्थान्तर्गते रवी ॥ मर। सोमस्य वर्षे १। सासाः १। दिनानि १०। "धनलाभं सुद्धं भोगं प्रशेरारोग्य-भव च। लोकानम्यम्वाप्रोति चितिजान्तर्गते विधौ"॥ मच। एवं कुजस्य वर्षाणि द। यय बुधस्य स्त्रूबद्या वर्षाणि १७। तस्याम्तर्रशा वर्षे २। मासाः ⊏। दिनानि ३। दण्डाः २०। फलम्। "दिव्याङ्गनाध्रष्टनपद्वजघट्पदत्व सीलाविनामवग्भोग-सुखोदयञ्च। नानाप्रकार्विभवागभकोपदृष्टिं चिप्रं स्केद्रुषः द्या विपुलाध सिहिम्"॥ बुबु। यनिर्धेष १। मासा: ६। दिनानि २६। दर्डा ४०। "वातस्य महाता पौडा विरही वर्स्याः सङ्। विदेशगमनञ्चव बुधस्यान्तर्गते शनौ" ॥ सुशा गुरीवेंधें २। मासाः ११। दिनानि २६। दर्डाः ४०। "धाधियमु-भगैस्यको धनाव्यो मृपवस्रभः। सभेद्वार्था रापुत्रस व्यस्या-न्तर्गते गुरी"॥ बुद्ध। राष्ट्रीवैधे १ मासाः १०। दिनानि २०। ''बसुनामं सनस्तापं देशत्यागञ्च बन्धनम्। करोति वह-

दु:खानि वुधस्यान्तर्गतं तमः"॥ तमो राष्ट्रः। धुरा। श्रक्रस्य वर्पाणि २। मासाः २। दिनानि २०। "धनान्यं बहुपुष्ट्य धर्मष्टिं धनागमम्। कुरुते दानवाचार्यो बुधपाकदशाङ्गत''॥ वुगु। रवैर्मासाः ११। दिनानि १०। "त्रिया परमयायुत्रो गजवाजिधनान्वितम्। प्रभाकरः करोत्यागु बुधपाकदगा-प्रतः"॥ वुरासोमस्य वर्षे २। मासाः ४। दिनानि १०। "काएकादिपवेगच मृहिस्यो भयमेव च। निगाकर: करी-त्याग्र वुधपाकदमाञ्चतः" ॥ वुच। कुजस्य वर्षे १। मासाः ४। दिनानि १। दण्डाः २०। "कफिपत्तसमुद्भूतां शिरःपौडां भयावष्टाम्। सङ्गनः कुरते शोकं व्धयान्तर्याङ्गतः"॥ वस। एवं बुधस्य वर्षाणि १७। ऋय भने: स्यूलदमा वर्षाण १०। तस्यान्तर्या मासाः ११। दिनानि १। दण्डाः २०। "मिणाप्रवासवधवस्रानिरात्रयत्वं चीरादिभूपतिभुजद्गमभौति-षाश्वामिसायवार्जनकार्यदानि पद्गीर्देशा स्याम् । प्रकुर्त नियतं नराणाम्" ॥ शशा गुरीर्यपं १। सामाः ८। दिमानि २। दण्डाः २०। "देवतानुरतं गान्तं नानापाप्ति करोशिच। तुद्रमोग्यममायुक्तं पद्गीरन्तर्गतो गुरः"॥ शह। राष्ट्रीयंपे १। मामः १। दिनानि १०। "तृपाद्ययं स्वरं घीरं ट:खञ्ज प्राणमंगयम्। धनचयञ्च कुरुते शनेरम्तर्गतं तमः ॥ गरा। गुक्रम्य वर्षे १। मामाः ११। दिनानि १०। "सुष्टुहस्-धनै: पूर्वी भाष्या विसममन्वित:। स्वर्णे सुखन्न समते भीर-क्यास्तर्गते मिते" । श्राप्ता रयेमीमा: ६। दिनानि २०। "परदाराभिगमनं करोति फारदोधिति:। सोवनम्य च सन्देष्टं गर्नरसद्गाद्वतः" । गरा मोमप्य वर्षशा मामाः ४। दिमामि २०। "सोनागं कुचिरोगच कफिसगढं गगी। बर्भेदेवय कुर्ते पद्रोरलदंगाद्रतः"। ग्रथ। कुलस्य सामाः ८।

दिनानि २६। दण्डाः ४०। फलं "देहचैण्यं महारोगं नानाः दु:खानि भूमिनः। धननाशश्च कुरुते शनरन्तर्शाङ्गतः"॥ श्रम। बुधस्य वर्षे १। मासाः ६। दिनानि २६। दण्डाः ४०। "श्रायुरारोग्यविजयं बहुवित्तानि सोमजः। करोति चादरं सोके अनेरन्तरंभाइतः"॥ भव्। एवं अनेवर्पाण १०। गुरी: स्थूनदशा वर्षाणि १८। तस्यैवान्तर्दशा वर्षाणि ३। सामा: ४। दिनानि ३। दण्डा: १०। "राज्याखटं तनयवित्तविनायभोगान् पर्याप्तसौख्यधनधान्यसमाययञ्च। विद्याप्रसादवररत्नसुखार्थभोगसिडिं दथा सुरगुरोः कुरुते िययस्था वृह। राष्ट्रीवर्षे २। मासः १। दिनानि १०। "बसुद्देष' ऋषावादं स्थानश्रंगं निराययम्। कसई कारये-द्राष्टुर्गुरोरन्तर्दगाङ्गतः"॥ स्रा। श्रक्तस्य वर्षाणि २। मासाः ८। दिनानि १०। "कलएं यसुभि: माई' विसनार्ग धन-चितिम्। स्वीवियोगञ्च कुरुते जीवस्थान्तर्गतः सितः" ॥ द्वरा। रवेबंधें १। दिनानि २०। "बहुमित्रं वहुधनं सौभाग्यं राजवन्नभम्। कुरते भास्तरः ग्रान्तिं गुरोरन्तदंगाहृतः ॥ व्रा सोमस्य वर्षे २। सासाः ७। दिनानि २०। "भौगाद्यो बहुभार्थय रिपुरीगविवर्जितः। तृपत्तस्यो भवेषेव गुरीरन्त-र्देगाइत. १३ व्या कुजस्य वर्ष १। साम्राः ४। दिनानि २६। दण्डाः ४०। "तीश्यरीपी रिपोर्शना गनवज्ञीमदर्गनः। सुखरीभाग्यसंयुक्तः कुले चान्तर्गते गुरीः"। हम। युषम्य वर्षे २। साम्राः ११। दिनानि २६। दण्डाः ४०। "सुस्यो-शुखः सुद्धौदुःद्धौ मचुद्वद्धः पुनः पुनः। देवार्षनपरी निर्ह्य जीवस्यान्तराति सुधे"। हमु। अनवर्षा १। सामाः ८। दिनानि १। दण्डाः २०। "येग्राजनात्रयात् मौरयं भवे-हिस्तिविविजितः। सुप्तनीतिमना नित्यं गुरोरन्तर्गते मनी ।

ह्य। एवं गुरोर्वपाणि १८। राही खूलद्या वर्षाणि १२। तस्यान्तदंशा वर्षं १। मासाः ४। "भाष्यादिदूषंणनिदान-विवाद्यस्य गुस्ता भिघातभयद्वीनयराक्तमय। अप्राप्तसी खंधन-काञ्चनद्दी राहीर्दशा भवति जीवनसंशयाय"॥, रारी। शुक्तस्य वर्षे २। मासाः ४। फलम्। "शिरोरोग सुदै इश्व क्षयाद्वायाच्च चच्चनाम्। बाभवैः कलहो नित्यं राहोरन्त-गंते सुगी"॥ राग्र। रविर्मासाः 🖒 "शिरोरीगभयं घीरं चृत्यशोकच दावणम्। इष्ट्रिनभयं कुथाद्राष्ट्रीरकार्यतो रवि:॥ रार। सोमस्य वर्षं १। माम्राः म। "स्त्रीमुत्रकल इ-श्चेव वित्तनाशं मनः स्वतिम्। करोति क्रीयमत्यन्तं राष्टीरन्त-र्गती विधु." ॥ राच। कुलस्य मासाः १०। दिनानि २०। "विषयास्त्रास्त्रिचीरिभ्यो नियतं दावणं भयम्। पातस्यान्तः र्गतः कुर्याद्यस्य भूमिनन्दन."॥ राम। व्धस्य वर्षः १। मामाः १०। दिनानि २०। "खरचुदचिपौडार्घ कलर्छ स्वजनै: सर। भृत्यापत्वेषु विदेष' सुधात् पातान्तरे व्यः" ॥ राद्या श्रमेवेष १। मासः १। दिनानि १०। "स्रोपुर्वैः कसदी निर्द्धं बान्धवैः सद्द वैरिता। भवेतु बहुधा दु.स्रं राष्ट्रीरन्तर्गते शनौं"॥ राश्र। गुरोर्वर्षे २। मासः १। दिनानि १०। "याधिदुःखभयेख्यको देवत्राह्मणपूज्यः। कार्यः-सिंडिभवेदिष्टा राष्ट्रीरन्तर्गते गुरी"॥ राष्ट्र। एवं राष्ट्रीवंपापि १२। गुनस्य रामद्या वर्षाणि २१। तस्यान्तर्रभा वर्षाणि ४। मामः १। फलम्। "मन्त्रप्रचारत्विर्प्रमदाविकास-समानदाननृपपुत्तनकीपराभान्। एख्यययानपरिपूर्णमनी-रथरा शोक्षी द्या स्जति नियमराजनस्थीभ्या श्राः। रविवर्ष १। माघो २। 'देइस्तोग्रवणातान्तस्तौग्रतापी-ऽधनान्वितः। त्यतः सादान्द्रोः सर्वेभीर्गनान्तर्गतं रही ।

शुरा सोमस्य वर्षे र। मासाः ११। "समाननाशी रोगस् कर्मानायच नित्यम:। मुक्तस्थान्तर्गते चन्द्रे स्तीनामी नियतं भवेत्"॥ ग्रच। कुजस्य वर्ष १। सामाः ६। दिनानि २०। ''छलाष्टी धनधान्याच्यः कत्यय सुमनाः सुद्धी। भूमि-लामो भवेचैव गुक्तस्यान्तर्गते क्षजे"॥ ग्रुम। व्धस्य वर्पाण ३। मासा: ३। दिनानि २०। "सर्वेत्र समते सीखं मान-सद्ययभुषणम्। भार्या सुग्रीलतामिति भार्गवान्तर्गते बुधे"॥ श्रुव् । शनेवैष १। सासा: ११। दिनानि १०। "श्रुव्यय-मवाप्रीति मित्रहिष्य जायते। चीरादितस्य साभः स्वाध्यक्ष-स्यान्तर्गते यनौ"॥ ग्रुश । गुरोर्वपाणि ३। मासाः 🖛 । दिनानि १०। "राजपूजा सुख प्रौतिः कन्याजननमेव च। भागेवा-क्तर्गते जीवे चौराबष्टञ्च लभ्यते" ॥ श्रष्ट । राघोर्वर्षे २ । सासाः ४। "बन्धनं बन्धुपुत्नादेवस्थनायो रिपोभेयम्। यरीरदैन्य-भामोति राष्ट्रावन्तर्गते सगोः ॥ शुरा। एवं शुक्तस्य वर्पाणि २१। इत्यन्तरंगाफसम्।

श्रय प्रत्यन्तर्थाफलम्। "यहान्तरं दिनं कला पष्टिलसं भुवं भवेत्। भुवश्च गणयेहीमान् रव्यादिक्रमतो यथा॥ रवी च वेदा वसवः सुधांशी कुले च बाणा नव चन्द्रपुत्रे। भनी रमादिक् च इहस्पती च राही तुरहा स्गुले च रदाः॥ रवे-रन्तरमध्ये तु बसवश्च रवेनिकाः। चन्द्रस्य पोड्य प्रीताः क्षुलस्य च द्या रस्ताः॥ वृधस्य वसुचन्द्री च हाद्यय भनिः क्षमात्। गुरोश विंगतिश्वेव राहोशतुर्द्य रस्ततः॥ एप एव विधि प्रीक्तो स्गीद्याविम्रतिः क्षमात्। एवं दिनानि चान्येषां द्यात्या प्रत्यन्तराणि च॥ यस्मिन् प्रत्यन्तरे यस्तु यसस्यं दिनमाप्तवान्। तहिनस्य प्रमाणेन श्वभाग्रभफलं वदेत्"॥ भुवाणि भुवाद्याः वेदाद्वेः पूर्णयत्वा यसंख्यं तस्वस्थिदिनं रवेः प्रत्यन्तर्थाम् एवमन्वेषां ग्रहाणामित्ययः।

चय वर्षपताकी। "रवियन्द्रः कुजः सौम्यः शनिर्जीव-स्तमी सगु:। इन्द्रेशादाष्टरेखासु मध्ये केतुरिमेऽस्ट्पा:॥ क्रसि-कादितिराष्ट्रितिर्यथा केती मघा भवेत्। खनचवादर्षफलं चीयं केतो: पताकया॥ रविणा भाग्यते देशान् सन्ताप-व्याधिपीडित:। कान्सारसङ्घटं श्रीकं करोति च भयान्वितम्"॥ र। "चन्द्रे तुष्टिस्तया पुष्टि: सुखसम्पत्तिरेव च। आरोग्धं सभने नित्यं धनपुत्रसमन्वितम् ॥ च। "भीम सदा कार्यः इानि: क्रक्मीणि योजनम्। चमीरोगो भवेत्तत सन्तापस दिने दिने ॥ म। "ब्धे बोधयकार्यञ्च कन्यालाभी महा-सुषम्। राजसमाानभाडित्यं धननाभी दिने दिने ॥ सु। "जीवे विद्या सुख मानं सीक पूजाधनागमः। सर्वोद्गाभरणं करहे स्वर्षप्रारिवभूषणम्"॥ ह। "गुक्तः पौक्षमाख्याति पुष्टिकर्मसुखानि च। सुक्तारतप्रवानस् राजसमानमेव च" ॥ गु। "गनीरोगभयं श्रीकं बन्धन भयमेव च। भर्यद्वानिं क्षवाकाश्व प्राणनाशं करोति च"॥ श्रा "रक्षसावी भवेदद्रे राष्ट्री हेयो जनस्य च । विदेशगमनखेव विद्यवारिभयं तथा"॥ रा। ''राजकार्यभयं चौर्यं ग्रहदाहय बन्धनम्। केतीव्यं भवेद् घातस्रियामक्तिनानि तुणा के। भयान्तर्यपेगणः। "दिनवयं विग्रदण्डान् खदगाभिः प्रपूर्येत्। वर्षेश्वरात् समारभ्य नाच्य निक्षविधानतः ॥ रवेर्नेखा २० शन्द्रसमः खबाणाः ५० कुजेष्युगमे २८ विदिषद् च पञ्चकं ५६ शने-गुँषाम्नो ३३ गुरुतोऽमिकानो ६३ राष्ट्रीः खबेदा ४० सगुतः खगोमा: ७॰"। राष्ट्रीरित्येकदेषत्वात् केतुपरमपि तेन राष्ट्र-केलोविंगतिविंगतिः इति वर्षफलम्। "सन्ने द्विषापे पतित-मिरपापे सहरोऽधमः। चालहा स्वाश्रत्याचे भवेदेके तु पाचता॥ वर्गीसमगते चन्द्रे चतुरादिमिरीचिते। विसम्बे

वा ऋपजमा भवति राज्यं ऋपयोगे बलयुत दशायाम्॥ कुल-सु खः कुलयेहो वन्धुमान्यो धनौ सुखौ। क्रमात् तृपसमी भूयात् मक्दिः खग्टहिस्तैः"॥ नृपादियोगः। "सूर्या-द्वायगैर्थोभिदितौयगैयन्द्रविनिवेशिः। उभयस्थितेर्प्रहेन्द्रे-र्भयचरीणामतः कथिता"॥ व्योग्यादियोगः। "रविवर्ज्ञां द्वादगगैरनफा चन्द्रात् दितीयगै: सुनफा। उभयस्थितैदुरधुरा-केमद्रमसंज्ञितोऽन्यः" ॥ अनपादियोगः । "मन्द्रगस्थिर-वचनः परिभूतपरिश्रमो भवेदग्रेगौ । उद्घटवचाः स्रृतिमान् स्तब्धगति: सालिको भवेहेगी॥ सुभगो वहुमृत्यधनो बन्धूना-माश्रयो चपिततुत्यः। नित्योसाष्टी द्वष्टो भुनन्नि भोगानुभय-चर्याम्" ॥ च्याप्यादिफसम् । "सच्छीसं विषयसखान्दितं प्रभुं स्थातियुक्तमनफायां भुनफायां धीधनकोत्तियुक्तमाला-र्जितै खर्थाञ्च वहुम्लाकुट्यारमामुद्दिमचित्तमपि दौरध्रे। स्तकं दुः खिनमधनं जातं के सहमे विद्यात्"॥ धनफादि-फलम्। "एते न च यदा योगाः केन्द्रच ग्रहवर्जितं शगाद्वया केमद्रमोऽतिकष्टः शशिनि समस्तप्रहाद्दे लग्नादतोव वसुमान् वसुमान् श्रशाङ्गात् सौस्यग्रहेरुपचयोपगतैः समस्तैः दाभ्यां समीऽलवसुमांच तदूनतायाम् चन्वेषु चत्र्साप फलेप्विदसुत्-क्षटेन सम्बद्धोपस्यस्यस्यस्य हिर्वित्तानम्। स्थमसमवरि- • ष्ठात्यक्वेन्ट्रादिसस्ये ग्रागिनि विनय्वित्तज्ञानधीनेपुणानि। चहनि निशि च चन्द्रे खेऽधिमिनांशकै वा सुरगुरुसितदृष्टे वित्त-वान् सात् सुर्वी च। सूर्यकेन्द्रादिसानवयस्यचन्द्रवभिन विनयादीनामधमादिनिर्णयः। प्रायः ग्रमाः समेता धनभीगः यग्रीऽन्वितं भूपतियुष्टम्। यापाय दुः खतप्त सुर्वन्यधर्न खदु-भगं दीतम्"॥ यहयोगफलं "व्धगुन्मार्गबद्दे विद्वान् दीर्घायुरर्पपरिपूर्णः। सुववाः सुगरीरघरः मुतधनसौध्यान्वितः

ख्यातः । रिवयिनवोहितदृष्टी जाती मिलनोऽलस्य रोगार्तः ।
निर्धनो विरूपदेनः पृष्टी मूढः खलोऽतिदीनसः । जीविन्तः
पिष्डत्यान्तमृत्तिवदार्थयास्तागमपारदृष्टः । दीर्घायुरत्यन्तयुचिः सुयोलो जातः सुपूर्णां भजते विभूतिम् ॥ यं प्रस्यति
स्रगुतनयो लग्ने जन्मिन कटाचमावेणः । सीरिः कुलाचनकुलियः कुत्सित्वुलजोऽपि राजा स्यात् ॥ यान्तात्मा चिरजीवी च सुयौलोऽपि बहुप्रजः । योभनाङ्गो महाप्राज्ञबन्दहुटो भवेवरः ॥ द्र्याद्यहसंदृष्टः प्रायेण ग्रुभावहं भवति
स्रग्नम् । एकेनापि ग्रुभेन न च पापेरिष्यते मिद्धः ॥ स्रग्ने
सर्वयहृदृष्टे नृपतुल्योऽयवा भवेत्। ग्रुभचेने त्वदं वाच्यं
पापचं रिष्टवर्जितम्॥ स्रग्ने पापयहे रोगो दुर्वनः स्रवुपीहितः । श्रुभेचिते तु त्ववैष भवेत् परवध्रतः ॥

श्रय क्रमण लग्नदृष्टिफलम्। "स्तीनिती सृद्धाव्यस् स्यूनभेषास भित्यप्रस्य वर्गे नातः मुख्याविनोत्तरित्तरादः। भीधमेष्यातियुती विद्वान् दीर्घायुर्तिमुभगः॥ नातस पाप-यर्गे दुःखी सन्ति। ज्ञातस्य रोगार्तः। प्रैषः खलीऽतिदीनो सृद्धेस्तेनोऽर्थसीनस्य ॥ दति पड्वर्गफलम्।

युक्तयार्णवे। यसिनृते स्थितो भानुस्तदादि बोणि मस्तके। मुखे बीणि तथा है भे स्कन्धयोर्भुलयोर्भे ॥ हैं इस्तयोः पच छदि नाभावेकं तथा गुरे। तथा जानुयुगे हे है पादयोर्जनिधं न्यसेत्॥ चरण्डांपु यो जातः सोऽल्पायुभंवति प्रिये। जानुनोर्भ्यभणाशको गुद्धो स्थात् पारदारिकः॥ नाभो सम्पर्धनो देवि छदये स्थान्यछात्रनः। पात्योर्जातो भवेषोरो भुजयोर्दुःखभाजनम्॥ स्कन्दयोर्भागभोगी च मुखे धर्मरतो धनी। मूद्धि राजा भवेद्देवि बालानां ज्ञानतो वदेत्"॥ खरोदये। "मुखे घोषे गतं वपं नवतिः स्कन्दयो-र्भयोः। पञ्चायोतिष्टं दि प्रोज्ञा एस्तयोः सप्ततिः क्रमात्॥ वाञ्चोः पद्पष्टिवर्षाणि गुद्धो पद्पष्टिका क्रमात्। पञ्चायत् जङ्गयोः पादे निर्धनसात्मकीवनः"॥ इति जातकचक्रम्।

"चतुरादिभिरेक्षस्यैः प्रवन्यां खां ग्रहः करोति बन्ती। बहुवीर्व्यस्ता बहुत प्रथमा वीर्व्याधिकस्यैव"। ग्रहै: प्रव्रज्या-योगी भवति तेषां मध्ये यो बलो स खां प्रवच्यां करोतीलयः। प्रवच्यायोगः। "तापसब्दसावकरत्तपटाजीविभिन्नुचरका-णाम्। निर्यत्यानाच्यार्कात् पराजितैः प्रच्यतिवैनिभिः। रवि-स्तपस्री चन्द्री बुद्धः सद्यासीत्यादि ज्ञीयम्। प्रवच्यानिर्णयः लाने सूर्यें इचिरोगी प्रशिनि बनयुती रूपवान् वित्तयुत्ती भीमे व्यङ्गः सुवारमो ग्रामधरतनये सर्वगास्तार्यवेता। जीवे दाता पविच: सुकविष्य गते भागवि मण्डलेय: सौरी कण्डति-गाह्रस्तमसि च नियतं विचितो धर्माहीन." ॥ १॥ "विसेऽवें चैव रोगी सततगद्युतो राविनाथ धनाच्यो भौमे नित्यं प्रवासी क्षचिम्रुतधनवान् सोमपुत्रे प्रधानः। सौवे नस्मोप्रमोदी विस्तरति सुगुजे दर्षितः यौनिकेतः। सौरे दौनोऽतिनित्वं तमसि च नियत चौरिकावित्तजीवी"। २। "भातर्थकें सधर्मः स भवति नियत आह्रष्ठा राह्मिनाथे। हिस्सी भीमेऽनुजाना सपदि बधवारी भूमिकाष्ट्रिजीवी। सौस्ये सत्यस्य इन्ता भवति सुरगुरी कामदेवस्वरूप:। ग्रुक्ते राज्याधिकारी रविजदनुजयी-र्माह्यस्ता धनाव्य."। ३। "धर्म बन्धी सुदु.खी खजनपरि-वृतः श्रीतगौ जानुरोगौ। भौमे कुप्रामवासी भवति श्रीयस्ते भारतपुर्वान्वतोऽपि। जीवे रवीपजीकी विदयरिषुगुरी सर्व-सीर्याधिकारी। सीरी गेहे निवासी भवति श्रशियों मन्ट-कर्मा कुचेल."॥४॥ "युवस्थेऽके नरोऽधी प्रयमसुतष्टतः

सिंदराशी सुप्रतः। सोमे सर्वाधिकारी भवति धरणिजे पुत्रशी-कानुनोऽसी। सीम्ये सुखः सुदेषः प्रमुर्धनयुती देवपूर्णः सुपुत्र:कन्यायुक्ती कि शुक्ते रविजदमुक्तयोः पुत्रपौनैविकीनः"।१। "पष्ठे की अवुगदारिपुगणरहित: घीणचन्द्रे गतायुः। पूर्णे असुच हत्वात् भवति धरिषज्ञे हीनदेहीः तिदीनः। सीम्ये प्रास्तार्थ-युक्त स्विद्यपतिगुरी राज्यसोख्योपभोगी। देखाचार्येऽतिरोगी र्विजदनुजयोः पापभुङ्गित्यद्ःखो । ६। "पत्रामर्के च जायापतिरतिविसुखी शीतरस्मी सुप्रवः। सुखी भूयावरोऽसी भवति धरणिजे हीनभार्यय नृनम्। सीम्येऽसम्यः सुदेशस्त्रदः शपतिगुरी यास्त्रवेत्ता शतायुः। शक्ते पुत्रप्रमोदी रविकदनुष्रयी-र्शितभाष्टिय हीनः"। ७। "सत्यी चार्के खसत्युभविति च नियत' भौतरमो नतायु:भूमेः पुत्रेच रोगी भभधरतनये भूम-रोगी विकमी। जीवे तीर्घेषु मृत्युभवति सगुस्ते धार्मिकः स्तौर्यगोऽसो, सौरी शूली गतायुर्भवति विधुरिपी वेदसुलो गतायुः"। प। "धर्मे चार्के नरोऽसी विविधधनयुतः गौतगौ पुरावर्मा, सस्मीवान् पुराविता भवति धरणिने देववित्ताप-ष्टारी। सौम्ये धर्माः सुग्रोखस्तिद्यपतिगुरी राजतुल्यः सुधर्मा, श्रक्तो तोर्थानुरागो रविजदनुजयोः पापश्रीतः सुदुःखी"। ८। "कर्मखर्के प्रतापी प्रचुर्धनयुतः श्लीपदी क्रोधट्टः, सोमे श्रेषान्वितोऽषौ विविधधनयुतो भूमिने बसुष्ठीनः। नित्यो-लाही च सीम्ये प्रचुरधनयुतो देवपूज्ये।ऽतिमानी,दिश्यस्तीशी-ऽपि गुक्रो नृपतिसमधनः सौरिदेखे सुखी घ"। १०। "श्राये चार्के नरोऽसी विद्यधनस्थितः श्रीतगी चार्श्योली, भीमे नित्यं स रोगो शशधरतनये सर्वदा क्रोधयुक्तः। जीवे श्रीमान् प्रदाता करितुरगपतिभागवे प्रास्त्रविज्ञय स्त्रीरतादियुको रवि-दनुजयोः क्रूरकर्मा कुचेनः। ११। "बर्के संखे अयोधी पुरः

धनरहितः सर्वभोगौ सुद्रःखी। सीमे खेदान्वितोऽसी भवति धरणिजे दातरको विव्धिः। सीम्ये धर्मार्थकारी दिनकर-रहिते देवपूज्योऽतिमानौ, शुक्ते शास्त्रानुरागी रविजदनुजयोः क्राकर्मा कुचैतः"। १२। प्रति लग्नादिखग्रहफलम्। हद्द-क्तातके। "तौक्षांगु: ग्राग्रना सम' प्रकृत्ते यवाश्मकार" नर भौमेनाधरतं व्धेन निपूणं सीभाग्य सौख्यान्वितं अर वाक्पतिनाऽन्यकार्थिनिरतं श्रक्षेण वङ्गाग्रुधेर्नश्यसं रविजेन धातुकुश्लं भाग्डपकारेण वा"। १। "कूटस्यासम्दन्तपण्य-मिश्रवं मातुः सवकः शशीसद्गः सुनृतवाकामधनियुणं सीमा-ग्यकी स्थितिस्तम्। विकान्त कुलमुख्यमस्थिगमितं वित्तेखरं माङ्गिराः वस्तायां पिसतः क्रयादिक्रमले सार्किः पुनर्भूसतम्। सूनादिसंहकूटे व्यवस्थित विशिक् वास्योदा ससीम्य पूर्य-ध्यत्तः सजीवे भवति नरपतिः प्राप्तविद्यो दिजीवा। गोपो सल्लो(य दच: परयुवितरती खूतकत् सासुरेच्ये दु.खार्त्ती सत्य-सन्धः सविद्यतंत्रये भूमिजे निन्दितस्। सीस्ये रहचरो वृद्दस्यतियुति गौतप्रयो नृत्यवित् वास्मी भूगणपः सिर्तन श्राधाना मायापटुर्लह्यकः। सहिद्यो धनदारवान् बहुगुणः गुक्तेण युक्ते गुरी। त्रीय:स्तव्यकरोऽस्तिन घटककातोऽस्मका-रोऽपि था। यसितसितसमागमेऽस्पच चुर्युवतिसमायय संप्र-वहचित्रः। भवति च लिपिचित्रपुरतकवित्ता कथितफलैः पुरतीऽपरेऽपि कल्याः"। इति हिग्रहयोगफलम्। "नाना-गमग्रन्यविग्रेषवोध व्याख्यातनामा नृषपूजितय"। "साधः सधमी भवति चन्त्रस्ति चन्द्रमृते चिरायुः। तुङ्गिलमाह "मुविक्रम: सत्यवचा: सुरूप: प्रियंवदी धर्मापरी अरेन्द्र:। सीस्ये तु तुष्टीपगते विलयने विलयणः कालिधरोगरिष्ठः। कचिरतर प्रभदाजनरतः ग्राप्ते निर्मलियदायुक्तः। चननगते

रिवराङ्गजमूर्तिः धर्मरतः पृथ्माध्मष्ट्रितः। प्रचग्डरूपः पुरुष: प्रमापी प्रजाधिप: खर्णवचा: सिर्णु: विसप्रधान: प्रणतिष्यय बुधे विनाने भवति प्रजातः। गुभं वर्गोत्तमे जन्म विशिखाने च मद्ग्रहे। धशून्येषु च केन्द्रेषु कारकर्चे ग्रहेषु च"। सत्याचायः यगों सम कुले मुख्यकारकर्चे प्रागुक्तकार-कर्ते। "धर्माधिपः पश्यति धर्मभावं स्रामाधिपः पश्यति चेहिनानं मृत्यं यदा प्रश्नात मृत्युनायस्वदा तु तीर्थं नियतं स्तिः स्थात्। पष्ठाष्टमकग्टकगोगुरुक्चे मीनसंज्ञनाने वा। भिषेब्लैर्जनानि सरणे वा सीचगतिमाद्यः"। जनमगरणकालः योभीच्चिर्णयः। "वयो प्रष्ठा यदैकत्र राशिनग्नविवर्जिता। भुक्षा च विविधान् भोगान् स्वियते लाज्ञवीनने । सूर्यादिभिः र्निधनगैर्ह् तवष्टसन्निसायुधन्त्रसायजः । त्वट्सुत्कृतय नृत्युः परदेगादौ चरादिभे निधने निधनस्य ग्रहबलेन निर्णयाः निर्णयः। यो बन्नवान्त्रिधनं पश्चति तदातुकोपज्ञो सृत्युः। निधनघुगाधिवाविंग्रद्रेक्षाणेश्रय सृत्युवीनम्"। यष्टधातवस्र। "स्रायुख्यस्वत्वगय ग्रवरसे च मजा मन्दाकंचन्द्रव्धग्रवा-स्रेच्यभीमाः" स्नायुवस्तिबन्धनम्। "रविः पित्ती अशी वातकपात्मा पैत्तिक: कुज:। वातिपत्तकपौ चय कफीज्यो सगुनन्दनः। कफवातात्मको न्नेयः शनिवत्तात्मकस्त्रया"। बनवर्ग्रहदर्भनादिभिनियांणज्ञानम्। "पापद्रेकाणे दाष्टी दाविशे शुभद्रेकाणे सोदः। श्रीपो मिश्रद्रेक्षाणे विष्ठान्यो थाड-वर्गेषु ॥ त्रम्यादिनाभवपरिमाणज्ञानम्। "व्याखाः कुभासि मधाद्याः किमौनान्यमभवौ। सिहाद्यन्वौ सृगाद्यय तुना मधान्यमभवी"॥ व्याडद्रेकाणाः। "स्त्रीपुमीर्जन्म-फनं तुः विक्वत चन्द्रनगस्यम्। तद्दनयौगादपुराक्षतिः सीभाग्यमस्तमये॥ बाल्ये विभवाभीमे पतिसंत्यक्ता दिवा-

करेऽस्तरी सीरे पापैदृष्टे कन्येव जरां समुपयाति। क्र्रेरस्ते विधवा पुनर्भू: शभाश्रभैनशि॥ क्र्रेड्टमेऽपि विधवा सत्-खर्षे सा खर्यं स्वियते। श्रीजे लग्नेन्द्रोः स्वी दुःशीला श्रील-सयुता थुगरे॥ शून्येऽबले कद्याः पतियरे इस्ते प्रवामी स्यात्"॥ इति स्तीणां ग्रभादि। भविष्ये। "यस्य पाणि-तले रेखा किनिष्ठान्त्रनमुखिता। गतामूल प्रदेशिन्याः सजीवे-च्छरदांशतम्॥ दक्षिणे तुकराङ्गुष्ठे यवी यस्य च विद्यते। सर्वविद्या प्रवक्ता च स भवेत्राव सगयः॥ विपिटा विरसा गुष्का यसाङ्ग्यो भवन्ति वै। स भवेद् दुः खितो नित्यं बल-द्वीनस वै गुद्धः॥ खेतेनसिविषचीस पुरुषा दुःसमागिनः। सुधीलाः सुनदा चियाः कामभोगवियजिताः ॥ नवसास्त्रे-स्तयेखर्थं पुष्पितैः सभगो भवेत्। चतुरसमुकी धूर्ता मण्ड-लास्या शठा भवेत्॥ अप्रजा वाजियक्ता च महावक्ता च दुर्भगा। यधना स्त्री सामग्रीवा दीर्घग्रीवा च बन्धकी॥ द्भावयोवा स्थिरापत्या स्यूलग्रीवा च दुः खिता। स्पष्टं रेखावयं यस्याः योवाया चतुरङ्गम्॥ मणिकाञ्चनरत्नाद्यं सा द्धाति विभूषणम्"॥ अग्यच तु । "सातस्यैव सुतः प्रोक्तो मेननी सध्यरेखयोः। ग्रथक्त्वे कारजो न्नेयो सचरौरिति नियितम्॥ किछाषु सिम्से तु रेखयोदार्धनिषयः। रेखासिवेद्धिः क्षेत्रां खल्पाभिर्धनदीनता॥ रक्षाभिः मुखमाप्रीति कण्पाभिः प्रेष्यतां व्रजेत्। तर्जनीसूनगासिन्यां रेखायां किद्रता यदि॥ माधनाधिकमार्जारसपँदशे भविषाति"॥ विषाधमीतरे। "दृष्टिः प्रसद्धा सध्या च वाणी सत्तेमतुख्या च गति प्रशस्ता। एकैक्कूपप्रभवाध रोमा: सक्षत्स्तं हास्यमगुत्तमध्य चालस्य यानमधनद्य वुभुचितम्य पान तथा परिगतस्य भयेषु र्या। एतानि यस पुरुषसा भवन्ति काले तं धन्यमा हरिह

वै पुरुषं दिजेन्द्राः॥ पतिप्रिया पतिपाणा या नारौ पति-देवता। धनचणापि सा ज्ञेया सर्वसचणसंयुता॥ संविपतस्ते कथितं मयैतद् यद्मचणं चार नितस्तिनीनाम्। प्रायो विक-पासु भवन्ति दोषा यत्नाक्षतिस्तत्र गुणा वसन्ति॥ इति देइसचणम्।

षय जातकमा । मनुः "प्राड्नाभिवर्दनात् पुंभो जातकमी विधीयते । मन्तवत्पाप्रनद्यास्य हिरस्यमध्यपियाम्" ।
नाभिवर्दनात् नाभिसस्वदनाडी च्छेदनात् । वर्दनं छेदनेऽय
हे इत्यमरः । वैजवापः । "जनानोऽनन्तरं कार्यं जातकमी
यथाविधि । दैवादतोतः कानयेत् प्रतीते सूतके भवेत्" ॥
एवश्व "सदु भवचरित्राभेष्वेषासुदयेऽपि वा । गुरी मुक्तेऽयवा
केन्द्रे जातकमे च नाम घ" ॥ इति च्योतिः यास्तोक्तं दैवाकानोक्तर्यं वेदित्रव्यं प्रनुक्तर्षेऽपि नध्यादि नियमो न नैमिचिकस्य निमित्तान्तरभाविक्षेत्र निरवकामक्षात्।

त्रय पटीप्जा। विषाधमीत्तरे। "स्तिकावासनिस्या जनाटा नाम देवताः। तामां यागनिमित्तार्थं ग्रांडर्जनानि कीर्तिता॥ षटेऽद्धि रावियागन्तु जनादानान्तु कारयेत्। रचणीया घटा षष्ठी निर्मात्तव विभिषतः। राम! जागरणं कार्यं जनाटानां तथा बलिः"॥ रामित सम्बोधनम्। तवाश्मीचान्तरदोषोऽपि नास्ति। "षमीचे तु समुत्पन्ने पुवजना यदा भवेत्। कर्तुस्तात्कालिको ग्रहः पूर्वाभौचादिग्रध्यति"॥ इति प्रजापतिवचनात्। पुवजनोति श्रवणात् पितृरवाश्मीचामावः न तु मातुः कर्त्तुरिति पुंजिङ्गनिदंभाच। कारयेवित पन्यगोवज्ञाभिप्रायेण। तवादी विनायकादिसदितः मीडममाद्यकापूजनम्। तथा च क्षत्यचिन्तामणी। "क्रागणारणं कार्यं खङ्गो धार्यः समीपतः। स्रावाद्य पूज्येद्देवीं

गणेशं मातरं गिरिम्"॥ देवीं पष्ठीं गिरिं सन्यानदण्डम्। माद्यनामान्याप्ट वहुचरद्वधपरिशिष्टम्। "गौरी पद्मा शचौ मिधा साविवो विजया जया। देवसेना खधा खाष्टा मातरो चोकमातरः ॥ गान्तिः पुष्टिष्टे तिस्तृष्टिराक्षदेवतया मह। चादो विनायकः पूज्योऽन्ते च कुत्तदेवता"॥ तायाभिधाय भविष्ये "पूज्यासित्रेऽयवा कार्य्या वरदा भयपाणयः"। भातर इति सर्वासा विग्रेषणम् चतएय गौर्यं मान्ने नम इत्यादि-प्रयोग:। एता मातरी लोकमातरी चेया: चतएव तयोर्ब हु-खेन निर्देश:। गषेश्रपुजायां प्रार्थनमन्त्रो यथा। "सर्विषयः इरो देव एकदन्तो भनाननः। पहोग्टई (चिंत: प्रीत्या शिग्रं दोधोयुप कुरु ॥ प्रायाहि वरदे देवी सदापशीति विश्वता। अक्तिक्षेण में पुत्रं रक्ष कागरवासरे" ॥ दति धष्ठा पादा-इनम्। ततः पष्ठी पूजयेत्। "गोर्याः पुत्रो यथा स्कन्दः सदा संरचितस्वया। तथा समाप्ययं वासी रखतां पष्टि ते नमः"॥ इति वि.पूजयेदिति भोजराजः। "गणगरीष नन्दाच प्तनासुखसण्डिका। विवानिका शक्कि निका शुष्क-नन्दा च लिक्षका । चाचार्यका रेवती च विनिपिद्धा ततः यसम्। स्कन्दा च दादगैति,चर्मा रचार्यं सायका पदाः" ॥ क्टला चन्हामणी स्ति:। "अय देवि सगरमातर्जगदानन्द-कारिणि: प्रमोद मम कस्पाणि नमी इन् पिष्ठ देवि ते' ध वरपार्थमं "एपं टेडि यथो देडि भाग्य भगवति देडि मे। पुषान् देशि धर्ग देशि सर्वान् कामाय देशि में ॥ धालि खं कार्त्तिकेयम्य मदापष्टीति विद्युता। त्वत्ममादादविद्योन विशं सीवत यासक. व देवतानाग्योगाच मर्वेवां दित-कारिया। समर्पितं रच पुत्रं सदापित नमो। स्तानं कं दलनेन दान व्यनगम् सत्या मस्पर्यत्। सन्दानदर्यं पृत्रयेत्।

"मत्यानमन्दरीऽसि त्वं मियतः सागरस्या। तया ममापि
पुत्रस्य मत्यविष्यं नमोऽस्तृ ते"॥ ततः पट्छित्तिकाः पृजयेत्।
ताय। "शिवा सभूतिनास्तो च कौर्त्तः सन्तिरेव धाः
स्वत्या स्तमा सैव पड़ेताः छत्तिकाः स्स्ताः"॥ मार्कष्डयः
पुराणम्। "धान्यस्तुपग्रगृन्ते च निर्यूषे छ्रितकाग्टहे।
स्रदीपगस्तम्पसे भूतिसर्पपवर्तिते॥ सनुप्रविग्रया जातमपद्वत्यात्मसम्यवम्। स्थपप्रविनी बालं तत्वेबोत्स्व्यते दिल ॥
सा जातद्वारिषो नाम स्थोरा पिशितासना। तस्मात्
संरत्यणं कार्या यत्नतः स्तिकाग्टहे"॥ यूपा अवद्यागस्त्रसः
पगुण्हागः छागनागरणं कार्यामित्येकवाव्यत्वात्। पाद्म
"पायस सार्पया मिथं दिलेश्यो यः प्रयस्कृति। ग्रहं तस्य न
स्वांस पर्पयन्ति कदाचन"॥

षध नामकरणम्। श्रुतिः। "एकाद्रमे द्वादेशे वार्द्धन पिता नाम कुट्यादिति। एकाद्रमे द्वित सुद्धः कद्यः षसमयस्य चेपायोगादिति न्यायात् ष्टतप्रव महन्माये श्रुतिः। "न म्बः समुपाणित को दि समर्थस्य खो वेदेति" लिङ्गपुराणे। "म्बः कार्य्यमद्य क्रित्तेय पूर्वाञ्चे चावराहिकम्। न दि प्रतीचते सृत्युः क्षतमस्य न वा क्षतम्"॥ पतच परपरप्रमस्ततरतमकालोदितकर्मेतरकर्मे परम्। गोमिलः। "जननाद्द्यराचे खुष्टे म्वतराचे सवसरि वा नामधेयकरणिमिति" खुष्टे गते। गर्गः। "मदी घोष- वद्घरं यवरचायाच्ये पुनः स्वापयेदन्ते दीर्घ विसर्जनीयरितं नाम प्रयत्नात् कृतम्। स्त्रचे तिष्यकराध्यिष्ठीस्यवसुमे चिचा त्राधांत्तरं पोणे चादितिरोद्दिणीयु समकत् पुनां समैरचरैः"॥ दोपिकास्यरसात् स्वातौ मतिमपा स्वणा स्व माद्वा गोमिन लस्मत पूर्वाद्वे तिन नारायण्यनार्दनादि नाम सुर्थात्। सत्त

नासकरणम्। "कुलदेवता नचल्राभिसम्बन्धं पिता नाम क्यादची वा कुसहहः" इति कस्पत्रधतग्रह सिवितयमने नाभिवादनीयं नामधेयं कषायित्वा देवताययं नसदाययं गोतात्रयसध्येक इति गोभिनस्वेगीपनयनकाले च नस्वाभिन सम्बन्धेन नामाभिधानं तत्यतपदचकानुसारात् स्वनच्यपदा-नुमारात् ज्ञेयम्। पायात्यानां तथैव व्यवसारः। यत्र सु न तथाक्षतं तव नामाचरानुसारमचवादिष फलं न्नेयम्। प्रव क्तुलहुद्ध इति दर्भनात् संस्कारान्तरे तथैव व्यवहार:। अनु:। ''स्वीणां सुखोदामक्ररं विसाष्टायं मनोष्ठरम्। माष्ट्रसां दीघं-वर्णान्तमाग्रीर्वादाभिधानवत् ॥ गोभिनः। प्रयुगमान्त् स्तीनामिति। यथा ययोटा वस्टादि। नारायणपदती। "नामकरणं स्थिरलग्ने केन्द्रपञ्चनवमस्थिते सौस्ये। व्याय-पष्टसमधिष्ठितपापे जीवग्रक्षग्राभीम्यदिनेषु" ॥ प्रसादप्राप्त-नाम्त्रायवम्। यामः। "न सायादुसावेऽतीते निर्वर्षापि च सङ्गम्। चनुवन्य सङ्घरभून् पुत्रयित्रेष्टदेवताः"॥

चय निस्तासणम्। विण्यधर्मातरे। "चतुर्यं मासि कर्तव्यं शिथोत्तिष्क्रसणं ग्रहात्"। दीपिकायाम्। "पाद्रा-धोसुखर्वार्जतानुपद्यते हस्रेष्विर्ध्य चतुर्यमासि ग्रद्धि या मासि घटतुमाकत्यास्त्रीत्र्ये। मह्देश्य चतुर्यमासि ग्रद्धि या मासि छतीये विधावसीणे ग्रधदे विश्वीरिधनवं निष्कासणं कारयेत्"। पाधीसुष्यानि मानि छ। "पद्मेषधिक्रयमीपव्यविगाष्यपुर्वः पूर्वावर्यं ग्रतिभवा च नवाष्युद्धनि। पतान्यधोसुप्रगणानि ग्रिवानि नित्यं विद्यार्थं भूमिष्यननेषु च भूषितानि"। चतुर्यं-भामीति चर्योद्यज्ञवेदिनोः। यग्रद्धं चित्राः। "चतुर्यं-ग्राधित्यदर्यनिधित"। ग्रीनकोश्यः। "चतुर्यं ग्राधि पुष्पद्धं ग्रह्ते निष्क्रसणं ग्रियोः"। परिकारः। "चतुर्यं ग्राधि पुष्पद्धं ग्रह्ते निष्क्रसणं ग्रियोः"। परिकारः। "चतुर्यं ग्राधि पुष्पद्धं ग्रह्ते निष्क्रसणं ग्रियोः"। परिकारः। "चतुर्यं ग्राधि

सासि निक्तमणिका स्यामुदोत्तयति तत्तत्त्वितिति । सामे

एत्राय पति तु कन्दोगानां गोमिनेन जननास्तरं सतीयम्क
पत्तस्तीयायां चन्द्रग्रेनस्पनिक्कामणिक्षानात् यद्या

गोमिनः। जननाद् यस्तृतीयां ज्योत्स्वस्तृतीयायामिन्यादि।

ज्योत्स्वः ग्रक्तपद्यः। चल्नेव स्त्याचिन्तामणिः। "तकात्

सस्विधामतोऽकंगणिनोध्यं विग्रं दापयेत्"। चर्यं मन्तवः।

"एदि स्यामुद्रांगो तिकोशासे जगत्तते। पनुकम्पय मां

भक्षं ग्रहाणाच्यं दिवाकरः"॥ चन्द्राच्यं मन्त्रयः। "सोगे
दापवमभूत चिनेत्रममुद्रवः। ग्रहाणाच्यं ग्रगादेद शेष्टिका

सहितो गर्माः॥

भयासपाशनम्। "तती।सपाशनं पठे मामि कार्यां ग्याविधि। यटमे वाथ कर्त्या यहेट सहलं कुले"॥ पष्ठ र्ति मुद्यः कर्यः प्रागुन्नन्यायात्। क्रत्यचिन्तामणो। "प्रवस्य प्राथमं कार्यं साधि पष्टेर्ष्टमं सुधैः। स्वीकान्य पश्चमं सामि सप्तमे प्रज्ञमी सुनि: ॥ हादमी समग्री नन्दा स्थितस पश्च-पर्वसुः बलमायुर्वशो ह्नात् शिशूनामसभद्याम्" ॥ भूत-वस्मीम । "यष्ठे मामि नियाकरे श्रमकरे रिक्तेतरे या तिथी साम्यादित्यमितेन्दुजीवदिवसे पद्मे च क्षणोतरे। प्राजिगा-दिति पौष्यवैद्यवयुगेर्रस्तादि यद्कोत्तरेराग्नेयाप्यतिसिव्यभेष नितरामदादि भस्ये ग्रुभम्"॥ युगेरिति प्राजेगादी प्रत्येक सम्बध्यते। तथावापि तिषादिविद्यम् विवर्जयेत्॥ हषः द्वस्थनुमीनकन्यालग्नेऽसभस्यम्। विकीणाष्टकयकान्यः प्रदायद्वस्या फलम्॥ दृष्ट शशधरी लग्नात् पष्ठाष्टस्योऽस-भचणे"॥ मार्कण्डेयः। "देयता पुरतस्तस्य पितुरद्वगतस्य च। पलडुतस्य दातव्यमद्यं पात्रेच काञ्चने॥ मध्याज्य-कनकोपेतं प्राययेत् पायसंततः। क्रतप्रायनसुसाष्ट्रे सातु- घोलन्तु सं न्यसेत्॥ देवायतोऽय विन्यस्य शिलाभाण्डानि सर्वयः। श्रास्त्राणि चैव श्रस्ताणि ततः पर्येनु सचणम्॥ प्रथमं यत् सृशेदातः शिलाभाण्डं स्वयं तथा। जीविकाः तस्य बासस्य तेनेव सु भविष्यति"॥

वय नवानम्। दोपिकायाम्। "वयोदयीं जनादिनञ्च नन्दां जनमर्जतारां विसवासरञ्च। त्यक्का प्रशिन्धेनुकरान्य-सेत्रभुवेषु च आदिधानसिष्टम्। सेवृपा दि यिवान्येषु विभीमयनिवासरे। अन्तप्रायनवत् कुर्व्याचवान्नप्रसभोजनम्॥ स्व्यं चैव विद्याखरी स्वरतियौ पापे त्रिजन्मान्विते नन्दा मन्द-महीजकाव्यदिवसे पीपे मधी कार्त्तिवे। सेवृपा दि शिवेषु विश्वाययते कृषी श्रामिन्यप्टसे आदं भोजनकं नवान्वविदितं पुत्रार्थनायपदम्। न्येष्ठायेषाद्वरी सूर्व्यं स्थानेवानियात्मवे। नवान्नेभीजनं आहं जन्मचन्द्र तिथो न च"॥ ब्रह्मपुराणे। "प्राश्रीयाद्विसयुक्तं नवं विद्यासिमन्त्रितम्"॥

पय जमतिथिः। "जमकेषुका यदि जममारे यस भुवं जमतिथिभविद्य। सर्वास्त संवसरमेव तावत् नैरुष्यसमातः सुद्धानि तस्य। सतान्तकुजयोशिरे यस्य जमतिथिभवित्॥ अन्वयोगसप्राप्ती विद्यस्तस्य पदे पदे। तस्य सर्वविधिस्नानं यहविप्रस्तर्यं नम्॥ सौरारयोदिने सुक्ता देयानृक्षेत् सास्तन्तम्। जनान्यृक्षे यदि स्थातां वारो भीमयनैयरी। साधः सकलासो नाम सनो दु खपदायकः"।

यय चूडाकरणम्। मनुः। "वूडाकमा हिजातीनां सर्वेषामेव धर्मातः। प्रथमेऽच्दे छतीये वा कर्त्तयां स्पतिः चीदनात्"॥ नात्र प्रागुक्तन्यायात् प्रथमाञ्च्य प्राधानां किन्तु छतीयाद्ध्य। तथा च "चूडाकार्ये छतीयाद्धः सर्वे यद्यादिसमातः तत्वादिऽयोचहदय मुख्य इत्यवगम्यते"॥ यद्दः

लिखिती। "हतीयवर्षे चुड़ाकरणं पश्चमे वा" इति। ध्वीतिषे। त्रयुरमान्दे चुडाभौमश्रनेयर। "पर्वन्दुकानश्रद्धो च जन्म-मासेन्द्रभेतरे। रिक्षा दर्शाष्ट्रमी यष्टी प्रतिपद्धर्जिते सितेणा दची-ऽपि सामान्यतो दोपमाइ। "षष्ठाष्टमी पश्चदशी उमे पचे चतुः द्गौ। यव समिहितं पापं तैसे मांसे भगे घुरे॥ भेषसिंह तुला 🕠 किविधिकेतरसम्बन्धः अवगादिचयसाती चिवा पुषाखिनः न्द्रभे। मादित्यरेवतौष्टसाध्येष्ठामूने च चौडकम्। पौष्णाश्वि-पुष्यवसुवामवासुदेवब्रद्वार्कचम्द्रवरूणाटितिचित्रभेषु । सोमवुधवाक्पतिभागवाणां चौरं करीति कुशलं खलु मानवाः नाम्" इति वचनात् रोहिखामपि च्डाकारणम्। धवापि तिष्यादिविद्दस्तं वर्जयेत्। "सूर्व्वं दिचणमार्गगामिनि ४री सुप्ते निरंधे रवी चीणे शीतरूची महीजयमयीवरि निशा-सुन्ध्ययोः। भुत्तेऽभ्यक्षतनी निषिद्यसमयेऽलद्वारयुत्ते शिशौ चीराद्रोगभयं वटन्ति यवना सृत्युं तथान्ये जगुः"॥ राजः मार्त्तगडे। "मानं हरेत् चौरमिहायुषोऽकः गनैयरः पञ्च-नुजस्तयारी। त्राचार्य स्मिन्दु वुधाः क्रमेण द्युर्शेका-द्यस्मपञ्च"॥ जीवादिवारे चौरं प्रशस्तम्। भोजराजः। "उत्तर्शिखिसित्रधाने च चूडाकरणं जगुः ग्रुमं यवगाः। चैत्रे गामि दिवाकरवारे वर्कान सवितरिदिवाकरवारविनिमीकि त्"॥ गर्गः। "जनार्द्धं जनामासे च युगमसासे च वहारे। न कुर्ध्य त् प्रथमं चौरं विशेषाचैवपीपयोः"॥ च्येष्ठपुत्रकन्ययोस् च्यैष्ठद्याद्वास्यन्तरे चुडानिपेधो विवादप्रकरणे छन्न:। नित्य-चौरे तु राजमार्त्रण्डः। "न खानमावगमनोस्क्रमूपिताः नामस्यक्तभुक्तरणकानिनासनानाम्। सस्यानिया-प्रनि-कुजार्कदिनेषु रिक्ते चौर हितं प्रतिपदक्ति न चापि रिध्याम् ॥ प्राचोमुषः सौम्यमुखोऽपि भूला कुर्यानरः चौरमनुकटस्यः।

र्जत्तराक्षितययाग्यरीहिणौरीद्वर्षापद्यमेषु चाग्निसे। अस्युकर्माधकलं विवर्जयेत् प्रतिकार्य्यमाप वृद्धिमाबरः। प्रेतकार्य्य
पतितप्रेतसम्प्रदानकदासी घटदानविषयकम्। षन्यद्या बन्धमापवचनिवरोधः स्वात् "चन्द्रग्रहिर्यदा नास्ति तारायाद्य विभेधतः। अचीरिमेऽपिकर्त्तव्यं चन्द्रचन्द्रजयोदिने । मानं चौरे प्रतिधतः। अचीरिमेऽपिकर्त्तव्यं चन्द्रचन्द्रजयोदिने । मानं चौरे प्रतिधतः। अचीरिमेऽपिकर्त्तव्यं चन्द्रचन्द्रजयोदिने । मानं चौरे प्रतिग्रुदः ग्रुक्षं ग्रुक्तो धनं र्रावः। आयुरद्वारको प्रत्ति स्वे प्रतिग्रुदे ग्रुक्ता योपतिरद्वमानायाम्। "भाष्यया नरपतेदिज्ञकानां
दारकर्ममृतस्त्रवेषु च। वस्यमोच्चमखदौचणेष्यपि चौरिमप्रमखिलेषु चीड्षु॥ देवकार्यं घिद्यभादे रविरम्परिक्यो। च्युरिकर्मा न कुर्वीत जन्ममासे च जन्मभे"॥ व्रद्यगार्यः। "केमवमानर्त्तपुरं पाटिकपुचं पुरीमप्रिक्वाम्। दितिमदितिष्व धारतां
चौरिवधौ सर्वति क्रन्दाणम्"॥ अत्र क्रसो पराष्ट्रपुराणे (
"श्रम्युक्तर्मं कारिवद्या नषक्षेद्रमनन्तरम्"।

चय कर्णवेधः। माण्ड्यहरद्राजमात्तेण्डरूयविश्तामणिषु।
"यद्रापत्यद्वयं तिष्ठेत् सम्भवोऽप्यपस्य च । पट्कभं तं विजानीयात् गर्हितष्ठ द्रयम्य च ॥ हत्यामद्वा द्रयोमध्ये भृद्धियम्याय
वस्तरे । कर्णवेधौ हितस्तस्य नाव न्येष्टविष्णाय पट्कर्णोत्पत्तिभाषद्वा भानोः श्रद्धा समेऽपि च । कर्णो विध्यौ न
दीपः स्थात् पत्यया मरणं भवेत्"॥ राजमात्तंग्छे "न जनमभाषे न च चेवणौपे न युग्मवर्षे न इरौ मसुमे । रथौ च
दुष्टे न च क्षपणुपचे न जन्मभे कर्णविधिः प्रयस्तः" ॥ दौषिकायाम् । "नो जन्मेन्दुभमाम स्थ्यरिकच्याजाद्वस्ताध्यतं गम्तेऽकं लघुयुग्मविष्णुसद्देभे स्वात्मुत्तरादित्वभे । मौस्येन्यायविक्रोणकण्डकातः पाणैस्तिसाभारिगेरीजोऽष्टे श्रुतिवेध इच्यशितभे सम्मे तु काले युभे" ॥ चवापि तिष्णद्वादिविद्यस्यं
वर्जवेत् । गर्गः । "कर्णवेधयते कुर्याद्वस्तार्गस्थिते रभे ।
दिचलामास्यिते भागो नेव कुर्यादिष्ण्यः" ॥

यय विद्यार्भः। विशाधमेत्तिरे। "संप्राप्ते पश्चमे वर्षे अप्रमुप्ते जनार्दने। यष्ठीं प्रतिपद्येव वर्जियाला तयाष्ट्रमीम्॥ रिक्षां पञ्चदशीश्चेव सीरिभीमदिनं तथा। एवं सनिषिते काले विद्यारभास्तु कारयेत्॥ पूजियत्वा अरि सस्मी देवी-छापि सरस्तीम्। स्रविद्या सूवकारांस स्राम्न विद्यां विग्री-यतः"। नमस्ते बहुरूपाय विषाये परमाताने। खाहितानेन हरिं वि:पुजरीत्। "भद्रकासी नमी नित्यं सरस्वती नमी नमः। वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च" साहिति ब्रह्मपराणीयेन च व्रि:पूजयेत्। शिखनविधिमाद नन्दि-पुराणम्। 'ग्रभे नस्रविद्यसे ग्रुसे वारे दिनग्रहे। लेख्येत् पुष्यदेवेशान् रुद्रब्रह्मजनार्दनान् ॥ पूर्वदिखदनी भूत्वा लिपिश्रो लेखकोत्तमः। निरोधो एसाबाह्योस मसोपन्नावधारणे ॥ मत्यपुराणच । "शौर्षोपेतान् समम्यान् समश्रीणगतान् समान्। अवरान् विलिखेद् यस्तु लेखकः स परः स्पृतः ॥ नाधीयीतेसानुहत्ती मनुः। "रुधिरेच सूते गाचात् ग्रस्तेण च परीचते"। रुधिरस्रवं विना प्रस्तेण स्तमाबेऽपि। दौषिकायाम्। "अष्ठचरियमूनाधीमुख्वष्ट्षीपाशशिषु च इरिवोधे ग्रक्रजीवाकवारे। छद्तिवति च जीवे केन्द्रकीणेषु सीम्येरपठनदिनवर्तं पाठयेत् पश्चमाद्भः ॥ सदनपारिजाते। "विद्यारको गुरुः श्रेष्टो सध्यको सृगुभास्करौ। सर्गा श्रानि-भौमाम्यामविद्या व्धसोमयोः"॥ "विद्यारमः सुरगुरु सित्तेन वभौष्टार्धदायौ कर्त्तुयायुचिरमपि करोत्यग्रमान् मध्यमोऽव। नी दारांग्री भवति अङ्ता पद्यता भूमिपुत्रे ऋ।यास्नाविष च सुनयः कौत्तंयन्येव माद्याः॥ रवेर्गुरोर्भृगीर्लक्तं तत् खेऽकें-धोन्द्रहरितः। गुर्वकिन्द्रदुग्दी च विद्यारमः प्रमास्यते'। व्हर्मितः। 'प्राञ्च को गुरुरासोनी वर्षासिसुखं गिश्म।

अध्यापयेच मथमं दिजागीभिः मपूजितम्॥ कूर्मपुराणम्। "खाध्यायस्य वयो भेटा वाचिकोपांशमानसाः"। शिवधर्मे। "संस्कृतैः प्राक्षतेर्वाकोर्यः शिष्यमनुरूपतः । देशभाषाद्यपायेष बोधयेत् स गुरु: स्स्तः"॥ चादि: प्रत्यकरणादि: नन्धि-पुराणम्। "प्रश्रम्तश्रम्दमंधोगे कुर्यादातिविरामणम्"। विरा-मणं तिह्नपाठसमाप्तिम्। "समाप्ते वाचकाभौष्टं कृष्यादिव विचचणः। सुत्रुतं सुव्रतं भूयादस्तु व्याच्यातु निखदा ॥ स्रोकः प्रवर्त्ततां धर्मे राजा चास्तु सदा जयो। धर्मवान् धन-सम्पद्मी गुरुयास्। निरामयः॥ इति मोध्य यथायातं गन्तव्यश्व विभाविते:। शिष्टे: परम्परं शास्त्रं चिनानीय विचल्ले: ॥ कद्यावसुप्रमद्भेन नानाव्यात्याग्यसभवः। युक्तिभिन्न ऋरे-ह्याच्यां चिक्रे-यापि खयं करें।। एवं दिने दिनं व्याच्यां गुरायावियती नरः"॥ विषापुराणम्। "पुर्वेरध्यापिता ये च ते पतिस्त खभोजने"। सृत उवाच। "प्राग्लभ्यदौनस्त नरस्र विद्या ग्रन्तं यथा कापुरुपस्य इस्ते। न यक्षिमुत्पादयते शरीरं चन्यस्य दारा इव दर्शनीयाः" । जिङ्गपुराणम्। "यो गुरुं पूजरीकित्यं तस्य विद्या प्रभीदिति। तत्प्रमादेन यस्मात् स प्राप्नुते सर्वसम्पदः ॥ दुर्वामाः। "सन्धार्या गर्जिते मेघे ग्राम्तिक्यां करोति यः। चलारि तम्य नग्रान्त पाय-विद्यायको बन्नम्" । अधीतधार्यिते टानमावक्यकम् । तया च नुति:। 'योधियायिया विद्यां न प्रयच्छेत् म कार्यदा स्यात् त्रेयमी दारमाञ्चयात्"। रति। तदा-न्य। यथापनेन धारयपा विनिध्यापेषेन य मधनतीता-तोधीतदिनिर्वेशः क्रियते। तथा प विद्युप्रापम्। "मादि-मास्यकाराय ग्रदेवेड प्रताच । क्रमेचा मनमा वाचा महेव सतिमान् भन्नेत्" । एक्यतिस्थ । "यद्यानितिमरोदेतान्

सन्देइपटनान्वितान्। निरामयान् यः कुरुते प्रास्त्राचन-भ्रामाक्या। इह की तिं राजपूजां सभते सहतिच सः। पार्मामिकेऽपि समये स्वान्तिः संजायते यतः ॥ सावासराणि राष्ट्रानि पक्षाक्द्रान्यतः पुरा। उपदेष्टानुमन्ता च स्रोके तुख-पनौ सृतौ"। एयस। एकसध्येनानुपरेष्टापि दीणाचार्यो गुरुः कृतः। चती प्रव्यक्तः सुतरां गुरुखम्। यथा मदा-सारते। "बरखसनुनेपाण कला द्रोण सश्रीसयम्। तिकाना-चार्यवृत्तिच परमामास्थितस्तदा। इचके योगमातस्य परं निययमागतः" ॥ शहिलिखितो । "न घेदमनधीत्यान्यां विया-मधोगोतान्यत वेदाइस्ट्रांतस्यः"॥ चड्डानिच ''शिचाकस्पौ व्याकरण सन्दो स्योतिपमेव च। निरुक्षश्चेत्राष्ट्रानि वेटानां गदितानि पट्" ॥ स्रुतिस्तु भ्रमसंदितस्यमरः। श्रिथम् गुरुषु ऋणिलमाइ सघुद्वारीत:। "एकमध्यसरं यस्तु गुरुः भिषे निवेदयेत्। पृथियां नास्ति तद्र्यं यहस्वा सोऽनृषौ भवेत्"॥ निन्द्पुराणे। "यद्य सुत्वान्यतः प्रास्तं संस्कारं प्राप्य वै दृढम्। भन्यस्य जनसेत् की सिंगुरोः स ब्रह्महा भवेत्। विधारेच तथा मौकात् योऽपि शास्त्रभगुत्तमम्। स याति नरके चीरमचयं भीमदर्शनम्"॥ अतएव ग्रहस्थादी-नामवि पुनरध्ययनमाह भापस्तम्बः "यया विद्यया न विरोधेत पुनराचार्थ्यमुपेत्य साधयेदिति"॥ विष्णुः। "यथ विद्या-सासाद्य तया जीवेत् न च सा तस्य परलोकप्रज्ञासवति ंयय विद्या परेषां यभो इन्तौति"। देवनः। ''इष्टं दस्त-सधीत यदिनग्रसन्कौसनात्। द्वासानुगोस्वास्याद्य सस्त तेजो विभिद्यते॥ तसादाक्षकतं पुर्खं हया न परिकीर्नयेत्र ॥ अनुकौर्त्तनं क्रधनम्। स्राधा प्रयोगा चनुकीचनं धनव्ययेन पद्मतापः॥ भग्नतेनः फल्जनकप्रक्तिहीने द्या रचादि

प्रयोजनं विना। वैषावासते भविष्यपुराणम्। "उपाध्यायस्य यो द्वत्तिं दत्त्वाध्यापयति हिजान्। किन्न दत्तं भवेत्तेन धर्म-कामार्धमिष्क्ता"॥

चयोपनयनम्। उपनयनकाशय। "गर्भाष्टमेऽष्टमे वाञ्दे ब्राह्मणस्योपनायनं राद्मामेकादये सैके विद्यामेके यथा कुलम्। ब्रह्मवचस्यामस्य कार्ये विप्रस्य पद्यमे । सैके हादग्रे। तवाशको प्रायिचनं सला तद्तरे कार्यम्। "ग्टह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः। बाली वेदाय तद्योगं- बालस्यो-पन्यं विद्ः॥ रक्त हावि तथा श्रस्तवते पाठनिषेधनात्। खपनयनं तत्र स्थादिति सन्वादिसम्पतम्<sup>॥</sup> ॥ कत्यिषन्तामणौ । "सभोदये जमासु तारकासु मामेऽधवा लमानि समामेवा। व्रतेन विप्रो न बहुत्रुतोऽपि विद्याविभिषेः प्रधितः पृथिधाम् ॥ भस्तं गते देत्यगुरी गुरोवा मरचेऽपि वा पापयुरेऽप्यनुक्ते। व्रतीयनीती दिवसे प्रणाशं प्रयाति देवैरपि रचितो यः"॥ छट्ये लक्ते व्रतेन उपनयनेन । भुजवनभौमक्तवचित्रामस्योः ''खातीयक्रधनाखिमिवक्रसमे पौणीज्यचिवाइरिकिन्दो तीय-पती भरी दितिसुते भाद्रहये सागर। केन्द्रस्ये भगुजिऽद्विरः श्रशिश्वते चन्द्रे च तारे श्रभे कर्त्य अतकर्ममङ्गनियौ याराः सितायां ज्याकाः ॥ तीयपतिः शतिभपा चदितिस्त छत्तर-फरगुनी सागर पूर्वापाटा दोपिकायाम्। "जीवार्केन्द्रअधी हरिश्यन यहिमस्किर चोत्तरस्ये साध्याये येटवर्णाध्य इह शुभदे चौरिभे नादितौ च। गुक्ताकँज्यर्घममने रविसदनतियिं प्रीयक्षा पष्टाष्टमेन्द्रं नो सौवास्तातिचार् अंगितगुरुद् ने कान-गुडो व्रतं स्यात्ण ॥ रिवमदनित्यं सप्तमी वर्योदगीम्। शलिसिसामगौ। "माचे द्रविषामीनाट्यः फार्गुनं च हट-व्रतः। चैते भवति मेधावी वैगासे कोविदी भवेत् ॥ च्यैष्ठे

गधननीतित्र पाषाढे क्रतुभाजनः। ग्रीवेथन्येषु राविः स्यानिषिद्धं निशिच वतम्"॥ राजमात्तेष्डे। "पुनर्वसो क्तो विप्र: पुन: मंस्कारमहित"। व्हार्गाः। "स्मृतिप्ता-ननधायान् सप्तमों च त्रयोदशी पचयोमधिमासस्य हितो-याम्"॥ परियर्जधेत् चैत्रग्रुक्तदतीया चाषादग्रक्षदग्रमौ मन्दन्तराद्तिन निधिषा वैगाख्याक्षष्टतीया युगादित्वेन निषिहति। पष्ट्यामश्चिरभायो रिक्षासु बहुदीपभाक्। श्रक्षपच एव विहित: प्रागुक्षाखनायनवचनात्। मामगानां कुजवारेऽप्युपनयन श्रीपतिरत्नमामाक्तत्यचिन्तामणिष्टत वास्य-वचनात यथा। "गाखाधिपे वसिनि केन्द्रगतेऽथवासिं वारेऽस्य चोपनयनं कथितं दिजानाम्। नौसस्यितेऽरिग्टइ-ग्रिध पराजिते वा जीवे सगावुपनयनः स्मृतिकमहौनः"॥ यस यासाधिपसा दोपिकायाम्। "ऋग्वेदाधिपतिजीवो यसुर्वेदाधियः सितः। सामवेदाधियो भौमः श्रशिकोऽयर्ववेद-राट्"। वेदाधिपक्यनम्। "झाह्यणे गुक्तवागीयो चितिये भौमभास्तरौ। चन्द्रो वैश्वे बुधः श्रुट्रे पतिर्मन्दे। न्यजे नने'॥ वर्णाधिपक्षयनम्। परालयनचर्णं वच्चे यावायाम्। अवापि विवाहवद्ययोगभङ्गवर्जनम्। विष्णुधर्मोत्तरे। "पोडगान्दो हि विप्रसाराजनस्य हिविश्वति:। विश्वति: स चतुर्धी च वैध्यस्य परिको सिता। सावित्रौ नातिवर्त्तत यत कर्ह्यं निव-चति"॥ त्रव पोडशदर्पस्य उपनयनाङ्गता प्रतीयते । "पतिता यस्य साविवो दशवर्षाणि पश्च च। ब्राह्मणस्य विशेषेण तथा राजन्य वश्ययोः॥ प्राययित्तं भवेदेपा प्रीवाच वदता वर."। इति यमवचने तदगद्गता प्रतीयते अनयोग्भंजनम्मभ्रतिगण-नाभ्यामविरुद्धार्थता तथा च साग्रुधः। व्रतबस्वविवाहे च वलरपरिकल्पनमाहराचार्थाः। प्राधानपूर्वकमेके प्रस्ति- पूर्वं सदान्ये तु। यत्तु दिनातुपकास्य पैठीनसिवचनं दादम-षोडम विम्नतियेदतीता-भवत्वकाला भवन्ति द्रति द्वादम-वर्षाद्यपरि ब्राह्मणादीनां सदाव्याष्ट्रति द्वीसप्राययित्तार्थम्। ष्रोडमोपरि तु ब्रात्यद्वीसादि गुरुपाययित्तार्थसिति दत्युप-नयनम्।

चय समावर्तनम्। "भीमभानु जयीर्वारे न चले च वली-दिते। ताराचन्द्र विश्वहो ,च समावर्त्तनमिष्यतेण द्रति समा-वर्तनम् अयाग्नियष्ठणम्। "विद्वियहं कुलगुरुद्गदिनेयवारे मावादि षर्मु च सरुभुषविक्रिभेषु । कुमास्रभाशकविस्तर-मगुद्रकालं सम्मयगीतगुसिती च विद्राय कुर्यात्" । चिन-यहणयश्वः। यय सम्यासमध्यम्। कौवार्केन्द्रुयही भूव-सद्भगणे घोत्तरस्ये दिनेशे प्रव्रक्तेशे सुवीयां स्थिरभवन-विसम्नस्थितः कंच्यवारे। प्रवच्यास्येषु योगेष्वग्रभगगनगैन वीधिहीने: सवीयों जीवे धर्मेऽस्वरे वा स्थिरभवननरांगी-दये मोचदीचा"। इति सत्रामकरणम्। "ग्रभगदा-क्वारेषु सदुचित्रभूवेषु च। श्रभराशिवसम्बेषु श्रभं श्रान्ति-कपोष्टिकम्"॥ शास्तिकादिग्रहिः। ज्ञामप्रच्यं रक्षमा-सायाम्। "गौतांगौ वुधरागिस्ये ग्रभेपृदयवर्त्तिषु। ज्ञानस्य ग्रहणं कार्थः हित्वा पापपदोदयम्"। राजमार्भएडे। "वस्-पुनर्वसुप्रभुजह मेः करनियाकरयद्वरदेवतेय सद वाक्पतिभिः सप्र चित्रायां गुणगणाजनभिरभी पितम् । गुपाजन-विधि:।

"वामाचरं रसेमियं बाणमं स्टचहारितम्। येपाहो प्रामरागिः स्थात् यभाग्रभकरं कृणाम्॥ दोषेपस्तारहस्ताहं तियुतं वगुभिर्हरेत्। तच्छेषादेन बोहम्या वासुन्नातिविष-चणेः॥ एकाद्वे वस्तमाने तु विमन्नातिसंभेत् भुवम्। बाह्यपः चित्रयो वैध्यः शूद्रव नीवसंद्रकः॥ नवनी नर्नको हाही भवन्यते यथाक्रमम्। धननागकरो विधः चित्रयो युद्धदायकः॥ धनहा च भवेदेश्यः शूद्रः पोडाकरः स्वतः। नीचः भगानः दाता च जवनो धनदायकः। नित्यानन्दकरो नन्ते हाडी च सर्वन्वणः॥

अय रहाहि। "सुनियतां सन्दिस्सिमादी निकाय तोषाविध यतस्ताम्। कुणादिशस्थामयवा नुमाणं खालाः यवा प्रथमादिधितः॥ दूर्वा प्रवासास्तरप्रयाणिः ग्रिचिः श्वि देवविदं समित्य। पृच्छेदिनीतो सधुरखरेण श्रद्धास्य तत्त्व भवने तदीयः॥ ततः प्रश्नादिमो वर्णः सन्धार्यो यक्षतीऽयवा । क्षमात् पुष्पापगादेव फसानां ब्राह्मणादितः ॥ प्रणवी धरणी-धारिणी करौ च तदनसरम्। न भूत्ये नम इत्येष मन्त्रो विक्रिपियात्मकः"॥ विक्रिपिया स्वादा। "सन्विणानिन काठि-नीमभिमन्त्रा विभाजयेत्। नवधा सदनचेत्रं तया पद्याहिले-खर्येत्। वक्षत एषाः प्रपद्या नव चेत् प्रशासराणि सामसे। प्रागादिकोष्टे नवके वर्णास्ते शसामास्थान्ति ॥ प्रश्ने वकारः परतो नगस्यि व्रवोति श्रत्यं मरकपदायि। चौगौगदण्डोर-गहितुमृत्युपद वकार: खरप्रत्यमन्त्री॥ याग्यां चकार: प्रव-गास्यिक्षमाभोविनामं प्रकरीति मस्यम्। रचीदिमि खास्यिः ग्टइस्थितानां सङ्द्रय विकिश्विमिश्वित तः। ए: पाशिदिख्य-स्थिभिभोनेनीति सत्यं प्रवासाहरमेन श्रद्धम् ॥ सीवायुकीणे नररूपमस्यिदारिद्रामिवचयक्षस्थिते। धनपदिशि शकारः प्राइ विप्रास्थिवित्तत्त्वयक्षदय पकारी विक्ति बहुद्धास्थियभौ॥ तदि इ कुर्लावनामं गोधनानाध द्वानं वितर्ति मृह्नायस्यपि गुत्रस्य देवै:। यो मध्यभागे भसित कपालं कालायसं चार क्षिन्द्रचयाय॥ यद्वाद्पास्यात्यधुना म्माण सर्वत् तथ्यं क्षय्यास् शको। इन्द्रको जलेगाने शका साईकरे कटी। वद्भान्त-ककुवेरेषु पुरुषे मध्यवातयोः"॥ इति शक्योदारः।

देवीपुराणम्। "पुरुषाधः स्थितं श्रत्यं न ग्रहे दोपदं भवेत्। प्रासादे दोषदं शत्य भवेत् यावकातान्तकम्॥ ग्टहा-रमोऽतिक एड्रित: स्वाम्यद्गे यदि जायते। शक्यं त्वपनयेत्तव प्रासादे भवनेऽपि वा"॥ वाटीव्यवस्था इस्तोऽप्यत्र कफोन्युप-क्रममध्यमाङ्क्षप्रपर्यनः। मध्यमाङ्कीकुर्परयोर्मध्ये प्रामा-णिकः कर इत्यभियुक्तसारणादिति कत्यतक्रताकरो। भीम-पराक्रमे भोजराज: "सामिष्ठस्तप्रमाणेन धर्मपत्नीकरेण वा। मापयेद्रभमावन्तु स्टइकर्मणि कोविदः ॥ रूपाष्टके ८१ विनि-इतो भदमस्य बन्धः कर्त्तुः खन्दसमिष युग्मग्रदेवनिन्नं १५२। एकौकतं रसनियाकरयुग्ममत्त्रयेषं तती भवति विष्हपदं ग्रहस्य। ग्रहभूमिसमाद्वतिष्य्इपदं वसुन्तीचनरस्गरीगु-णितम्। रिवभूधरिवं गत्योगद्वतं भवनायव्ययस्थिति ऋच-पदम्"॥ रूपाष्टकेकामौत्या विद्यिनतः र्पूरितः। भवनस्य वन्धो दोघ प्रसारमिसित इस्तः खमृचं तत्मंख्यान युग्मयरेक-विम्नं दिपञ्चाश्रदुत्तरशतपूरितम् एकौक्षतं पूर्वाद्वेन मिसितं रमनियाकारयुग्स २१६। भक्तग्रेषं योड्याधिक हिम्स ह्रान विशिष्टं संस्थान पिण्डपदसंत्रं यहस्य भवति तह हभूमिसमा-श्वरापिष्डपदं वसुसोचनरस्गजैः चष्टदिनवाष्ट्रभिययाजमं गुणितं पृथ्तिं यद्याक्रमं रिनिभूधरिनंशद्यीगद्भतं दादमसप्त-चिंगत्मप्तिवंगतिभिद्वतं सहस्य ययाक्रमम् भायव्ययस्यिति चरसपद भवतीत्वर्धः। "रद्रश्यामिते बन्धे भरप्या योगतो यया। पायादयो भवन्येव वस्यट्तिथियुस्तिता." ॥ ५। ६। १५। २। अब यसच्यं दीयते प्रयात्तदेवायातौति। यस तु श्रीयो नास्ति तत दारकादः येवः "येपाद्देन फरी योध्ये

श्रेषाभाषे तु दारकात्। भक्षादेव पतं बोध्यमिति तस्विदां सतम्"॥ इत्युत्राखात्। "व्ययाधिकं न कर्त्तम्यं स्टइमायाः धिकं ग्रभम्। अष्टाविंशप्रेतभागा नरभागास विंगति:। भागा द्वाद्य गत्थवीश्वतारी देवतांशकाः। प्रेतभाग परित्वच्य नरभागे गटहं ग्रभम्"॥ सारसंपद्दे। "न कोणेषु गटहं कुर्वात् नाध्यसेनापि मध्यतः। कोणि च धनष्टानिः सादन्ते रिपुमयं भवेत्॥ सेध्ये चं सर्वनायः स्वात्तसादैतिहवर्जयेत्। पूर्वप्रवी हिविकरी धनदयोत्तरप्रवः॥ दिविषप्रवती सृखः धनदा पश्चिमप्रवः"॥ वास्तुनः प्रागादिनौचल्वफलम्। "प्रागादिस्ये ससिसे सुतदानिः शिखिमयं रिपुमयं । स्त्रीकर्नहः स्त्रोदीस्यं नेसं वित्तात्मेनविष्ठहो च॥ भवनसं वटः पूर्वे जातः सात् सर्वकामिकः। उडस्वरस्तया याग्ये वार्णे विष्यतः ग्रमः ॥ म्रचिमारती धन्दी विपरीती विपर्धये। जम्बीरपुगपनसा-स्त्रककेतकी भिर्जाती सरोजतगरपत्रमधिकाभि: ॥ यत्रारिकेख-कदसीद्सपाटखाभियुंकं तदात्रभपदं श्वियमातनीति। भाभना दाडिमाश्रोकपुद्धागविस्वकेश्वराः ॥ रक्तपुष्पाद्धयं प्राज्ञे: चीरिया च प्रभामयम्। क्यहक्यरिमयं कुर्वेशत् स्टब्र-भेट्य गास्मिलः॥ क्रिकादास्तु पूर्वादी सप्तसप्तेदिताः क्रसात्। यहिष्यं यस्य नचवं तव तस्य ग्रुमं ग्रहम्"॥ स्वन-स्रवेष ग्टहदिङ्निर्णयः। "वास्तु प्रमाणेन तु गावकेष वामैन ग्रेते खलु नित्धकालम् विभिक्त मासै: परिष्ठत्य भूमी तं वास्तुनागं प्रवदन्ति भिष्ठाः॥ भद्रादिके वासवदिक्-शिराः सात् मार्गादकेषु विष् याग्यमुद्दे। प्रसाक्तिराः स्यात् खलु फारगुनादौ क्यैष्ठादिकोवेरशियाः सनागः। सृष्ट्रि खाते भवेगायुः पष्ठे स्थात् पुवभाष्ययोः। जवनेऽर्धसयं विद्यात् सर्वसम्पत्तयोदरे। एकं नागोड्संग्रही हे चेहिक्कपासिमे

वियोलं पूर्वतो होनं कार्यं वा सौस्यवर्जितम्॥ केचिद्चिणभाग् तु वदन्त्वेकं ग्रहं बुधाः। ऐगान्यां देवग्रासा सात् प्रानियाञ्च सद्वासनम् ॥ प्रायुष्करन्तु नैक्ट त्यां वायव्यां कोपमन्दिरम् ॥ भत्यपुराणे। "चैवे व्याधिमधाम्रोति यो ग्टइं कारयेवरः। वैशाखि धनरतामि च्येष्ठे सृत्युस्रयेव च ॥ श्रापादे धनरतानि पगुवर्जमधाप्रयास्। यावणे काञ्चनं पुष्ठान् द्वानिं भाद्रपदि तया॥ पद्यौनाम इपे मामिकार्त्ति धनधान्यभाक्। मार्ग-योपें तथा भन्नं पौपे तस्करती भयम्॥ माधे चानिमयं विद्यात् फारगुने काञ्चनं सुतान्। ग्रक्तपचे भवेत् सीएर्यं क्षणे तस्तरतो भयम्"॥ विशेषयति भोजः। "कर्किकुभा-हिनक्रगतेऽर्के पूर्वधियममुखानि ग्रहाणि। तीलिमेपष्टप-ष्ट्रिकजातद्चियोत्तरमुखानि कुर्यात् ॥ चन्ययायदि करोति दुर्मतिव्योधिमोक्षधनद्वानिमयुते । मौनचापिमयुनाद्वनागते कारयेच रहसेय भाग्वरे॥ न प्रधानरहारणं कुर्यात् पौपे श्रुचार्याप। यदि कुर्याम् मोऽचिरेण सहतीमापदं वजेत्" ॥ संदाभारते। "भिषिहेऽपि द्विकाले सु खानुकूले ग्रमे दिने। ल्यावस्तरहारको मासदापी न विदाते॥ हैदन संपद्यव काष्ट्रीनां म कारयेत्। यवणादी नुधः पट्के म गच्छेद् चिणां दिश्रम् ॥ चिनिवीहा भयं शोकी राजवीहा धनचयः। संबर्ध यणकाष्ठामां क्षत्रे वस्त्रादिपस्कि । चीरिहचोद्ववं दार ग्राईष न निषेश्योत्। क्षताधिवामं विद्योरनिसालनपीडितम् ॥ मजेविभानस तथा विद्यंवियांतपीडितम्। धेषदेशनयीत्पय वद्यभमं प्रमणानजम् ॥ देवादाधिष्ठितं दाव गोपनिस्यविभी-तवान्। क्रष्टिकिनी।मारतर्त्वर्थयेत् ग्टब्क्मेब्रि । यदा-अस्यो च निगुर्टो कोविदार्शियमीतको । अचक मारमसीदेव यसाग्रथ विवर्जयेत् ॥ विद्यारात् दिगुरोप्यायं दारं सुन्यः-

त्तवा ग्रहम् ॥ ग्रहारभासु त्रवणादावधाक राजमार्स् छः । "पादिलोच्यभरोषिणो-सगिप्राश्चिमाधनिष्ठोत्तरापोणोविण्ड-थतानुराधपवनैः शुहैः सुतारान्वितैः। सीस्यानां दिवसेऽय पापरिकत योगी विस्ति तिथी विष्टित्यक्तदिने वदन्ति सुनयी विमादिकार्यं ग्रमम्"। मात्स्ये। "चन्द्रादिल्बन्तं सभा सम गुभनिरीधितम्। सामोध्हायादिकर्तयमन्यव परि वर्जयेत्॥ पश्चिनीरोष्टिणीमूलसुत्तरव्यमेन्दवम्। साती-प्रसानुराधा च ग्रहारको प्रशस्ति॥ वक्षयाधातश्लो च व्यतीपातिऽतिगण्डके। विष्कुभागण्डपस्थिवर्जं योशीषु कारयेत्॥ पादित्यभौमवन्यास्तु सर्वं वाराः ग्रभावद्याः । प्रसादेऽप्ये वमेव खात् कूपवायीषु चैव हि"॥ कल्पतरी देवीपुराणम्। "यस्य देवस्य यः कालः प्रतिष्ठाध्वजरोपणे। गत्वा पूर्वाज्ञान्यासे गुभदस्तस्य पूजित."॥ यस्य देवस्य प्रतिष्ठाध्वजरीपचे यः काल: ग्रुभद्स्तस्य गर्नापूरशिमान्यासे स काल: पूजित इत्यर्थः। मात्स्ये। "चैत्रेऽय फाल्युने वापि च्येष्ठे वा माधवेऽपि वा। माघे वा सर्वदेवाना प्रतिष्ठा शुभदा भवेत्"॥ प्रतिष्ठासमुश्रये व्येष्ठाषाटकयोवीपि दत्युन्नेराषाटे दक्षिणायने-ऽपि दुर्गाप्रतिष्ठामाइ देवीपुराणम्। "महिषासुरहन्द्रास प्रतिष्ठा दिचिणायने"। यत्तु सत्यचिन्तामणी। "ग्रहेषु यो विधि: प्राक्षी विनिवेशप्रवेशयोः। स एव विदुषा कार्योः देवतायतनेष्विषे॥ एतत्तु मासव्यतिरिक्षश्रभश्रन्द्रादिविषयम् यन्यया प्रागुक्तविरोधापत्ते:। न्योतिषे। "उपं विशासा-मदितिञ्च शक्तं भुजद्वमिन्च विद्याय गेहम्। यास्य स्वसम् स्थिरमन्दिरेषु कुर्याच्छुभैर्युक्तनिरीचेतेषु॥ नवमहा भवेयुख यदि केन्द्रविकोणगाः। दोपस्तदा चयं याति तमः सूर्यदिये ययाण्या राजमार्भख्डे। "'पूर्णिमातोऽष्टभी यावत् पूर्वास्वं

वजेयेद् ग्रष्टम्। उत्तरास्यं न कुर्वीत नवस्यादिचतुर्दशीम्॥ षमावास्वाष्टमीमध्ये पश्चिमास्यं विवर्णयेत्। नवमीतस् याम्यास्यं यावच्छ्क्सभतुर्दशौम्"॥ दीपिकायाम्। "मर्गशं गन्धपुष्पाद्येसीकपासानय प्रष्टान्। पूजयेत् चेत्रपासास क्रम्तांच वाद्यतः । ब्रह्माणं वास्तुमुरुषं तहे हस्याच देवताः"॥-तास शिखिप्रभृतयो यथा। "शिखि चैवाय पर्जन्यो जयन्तः कुलियायुधः। स्याः सत्यो सगुरीय णाकामो वायुरेव च॥ पूषा च वितथसेव स्टइचतयमावुभी। गश्चर्वी भृगुराजस-स्गः पिद्यगणस्या॥ दीवारिकोऽय सुग्रीवः पुष्पदन्ती सला-धियः। असुरः श्रीपपापी च रोगो हि मुख्य एव च ॥ भल्लाटः मोमसपौँ च चदितिस दितिस्तया। पापसैनाय सानिज्ञो जयो रुद्रस्तयैव च॥ प्रयमा सविता चैव विवसा विवुधा-धियः। मित्रोऽय राजयस्मा च तथा पृष्वीधरः क्रमात्॥ यापवसस्तया ब्रह्मवासुदेहगतास्विमः। घरको च विदारी च पूतना पापराचरी॥ स्कन्दार्थमा जन्मकास पिलिपिच्च-साधाष्टमः। एतान् मस्यपुराणोक्षान् रहारके प्रपूजयेत् ॥ मदाकापिलपश्चराचे "अलाधारग्रहायश्च ग्रजेदास्तं विग्रेयतः। ब्रह्माद्यदितिपर्धमाः पद्माग्रद्यसमुताः 🖫 सर्वेषां किस वास्तुनां नायकाः परिकोत्तिताः । यसंपूच्य शितान् सर्वान् प्रासादादीए कार्यत् । पनिपक्तिविनाधः खादुभयोर्धर्भ-धर्मणाः"॥ तत्तदेवताभेदेन वस्तिमस्वीभयविग्येपानुकाः "खगेपातासमर्वेषु ये देवा वास्तुसभवाः। स्टब्सन्विस विभं द्वयं तृष्टायान्तु स्वमासयम् ॥ माप्तरी भूतवेतासी ये चान्ये विचाद्विष:। विची: पारिषदा ये च तेऽवि ग्ट्रहांस्वमं विलिम् ॥ विष्ययः चिवपासिभ्यो विश्वं दस्वा मकामतः। समाबादुक्तमार्गस्य कुरापुर्यादिभियंतेत् । माक्रियत्वरं

वासुमुत्तानमसुराक्षतिम्। सारत् पूलासु कुडादिनिवेंगी त्वधराननम्"॥ देवीपुराणे। "सध्यभागे ततः कुर्यात् वास्" देवस्य पूजनम्। श्वियस पूजनं कुर्व्यादासुदेवगणस्य च। गन्धार्ष्यप्रमेवेदाध्पादीः सुरसत्तमः। ततः सपूजयेत्तिसंन् सबेनीकधरां महीम्॥ सुरूपां प्रमदारूपां दिव्याभरण-भूषिताम्। ध्वात्वा तामर्चयेद्देवीं पित्तुष्टां स्निताननाम्॥ ततः प्रणस्य विद्याप्य तन्त्रयत्वेन चिन्तयेत्"॥ तथा। "एवं प्रपृक्षिता देवाः शान्तिपृष्टिपदा नृणाम् । चपूजिता विनिष्निन्ति ग्रहारमोपु कारकम्॥ ग्रहादै: शिख्यक् पत्वात् विश्वकर्माप पूच्यते। शिल्पाचार्याय देवाय नमस्ते विश्वकमीणे। स्वाद्या ब्रह्मपुराणीयमन्वेणेति मतं समण । न्योतिषे। "तश्रस्तायतः मावगर्त्तमतुलं कर्त्विग्रहे दिने खाला गाइलगोमयै: ग्राचितरं क्रतास्वपूर्णं सुरान्। संपृज्यामलपुष्पकेर्जनघटं कत्वास्त्रः शाखायुत द्याद्यं मनेन विप्रवचमा मन्त्रेण वास्तीयार्तः॥ वास्तोप्यते त्वमुत्तिष्ठ संमारिस्यतिकारक। यहाणार्घ्यं मया दर्स रहार्थां करोग्यहम्॥ सम सर्वहितार्थाय विश्यु-कोकाय वे नमः। मर्ते तिधान् मिल्सभिर्ति नियलं वारि-भन्: खैर्यं प्रकुर्याष्ट्रनयति हितं दक्षिणावर्रयोगात्। वाद्यावसं भवति विपदे स्वामिनाशच कुर्यात् भूमिच्छेटाट् वज्ञति सञ्चतां वित्तनागां सभेदा"॥ देवीपुराणे। "तती गर्ने खनेमध्ये इस्तमावं प्रमाणतः। चतुरङ्गनमावं तद्धः खन्यात् सुममितम्। याचायः प्राक्षुको भूला धारीहेवं चतुर्भुक्षम्। चर्चं ददात् स्रचेष्ठ कुभातोचिन सन्ववित्। तिधान् ग्रक्तानि युष्याणि प्रधिपदोमितिसारन्। तदागत्ते परीचेत द्धिभक्ता-स्वितं सिपेत्। ईयाने स्वपातः सादानियां स्वारोप-षम्। दारं नवसभागे तु कार्यं वामात् प्रदक्षिणम्"।

द्वारस्य विशेषमाद्र "द्वतीयतुर्ध्ययोः प्राच्यां यास्ये तुर्ध्यं वं पिसमे। तुर्थेपश्रमयोः पद्म विषतुर्थेषु चोत्तरं । वामात् प्रदिचिणमिति ग्रहाभ्यन्तरे स्थिता ऐशान्यादिक्रमेण कार्यः मित्यर्थः। तव प्रयोगः। क्षतस्रानादिः ग्रमे सम्ने वास्तु-दक्षिणभागे चतुरङ्गलातषस्त्रमावगर्ने बहुतरनतनळणगी-मयोपसिप्तजसपूरिते यासयामि वा गरोग्रादीन् पणवादि नमी-उन्होन खं खनामा पूजरीत्। गणेयाय रम्हाय वक्करी यमाय मैक्ट ताय वरणाय कुवैराय ईशानाय ब्रह्मणे श्रनन्ताय स्थाय सोमाय सङ्खाय बुधाय हहस्पतये श्रकाय शनेयराय राष्ट्रवे केतुभ्यः चेत्रपासेभ्यः क्रारभूतेभ्यः ब्रह्मणे वास्तुपुरुषाय शिखिने पर्कान्याय जयनाय इन्द्राय सूर्याय सत्याय स्थाय पाकाभाय वायवे विषावे पृष्णे वितयाय ग्रह्मतीय यमाय गन्धर्वाय सङ्कराजाय सगाय पित्रस्य दोवारिकाय सुग्रीवाय पुष्पदन्ताय वस्याय पसुराय येवाय पापाय रोगाय प्रहये सुख्याय भन्ना-टाय सीमाय सर्पाय चादित्ये दित्ये चापाय साविते जयाय त्र्य प्रयास मिविने विवस्ति प्रन्द्राय मिवाय राजयस्मणे पृथ्वीधराय प्रापवसाय ब्रह्मणे चरकी विद्यार्थी पूतनारी पाप-राष्ट्रस्य स्वास्य संध्येको जभकाय पिलिपिद्धाय वासुदेवाय। नमस्ते बहुरूपाय विशावे परमात्मने खादा दलानेन पूजयेत्। त्रिये वासुदेवगणाय पृथियो । ८१ । पृथियार्घमम्बस्तु । "हिर्य्यगर्भे वसुधे श्रेपस्थोपरिशायिनि। वसास्यसं तव प्रष्ठे राष्ठाषार्घ धरिषि मे"। ततः प्रणम्य पार्धयेत् "श्रमे च भीभने देवि ! चतुरस्रे महौतले । समदे सभगे देवि ! ग्टहे कार्याप रस्थताम्॥ अध्यक्ते चाचते पूर्णे सुनेखाक्तिरसः सते। तुभ्य छता मया पूजा सम्हिं स्टिष्टणः कुरु । वसुन्धरे वरा-बोहे स्थानं मे दोयतां श्रमे॥ त्वत्मसादानाशादेवि! कार्यः

मे सिध्यतां द्वतम्। प्रानिभ्योऽप्यय सर्पभ्यो ये चान्ये तस्समा-श्यिताः। तेभ्यो वलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्। भूतानि राच्छा वापि घेऽव तिष्ठन्ति केचन ॥ ते स्टक्कन्तु विसं सर्वे वास्तुग्रह्माम्यद्वं पुनः"। इति मन्द्राभ्यां माष्मक्रवितं द्वात्। ततः "प्रणमेहण्डवह्मी मन्त्रेणानेन भक्तितः। भूतानि यानीह वमन्ति तानि वसिं ग्रहौला विधिनोपपादितम्॥ भन्धव वास परिकल्पयन्तु खयन्तु तानीइ नमोऽस्त तेभ्यः"। तत-स्तरिमन् गर्से द्धिदूर्वीपुष्पफलास्त्रपञ्चवसुक्तिम्बपूर्णघटेन एषोऽर्घः वास्तोष्यतये नम इत्यर्धे ददात्। "प्रिष्पाचार्याय देवाय नमस्ते विद्यवर्मणे"। स्वाहेत्युचार्थ्य विद्यवर्मणे नम द्ति पूजरोत्। ततः "वास्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय याज्रि-कात्। इष्टकर्मप्रसिद्धार्थे पुनरागमनाय च"। च्रमध्वमिति विसर्जयेत्। ततस्तद्धां अलपूरितगर्ने प्रणवेन श्रुक्तपुषां चिष्ठा ग्रभाग्रभं पश्चेत् निष्ठल चेत् कर्त्तुः खेर्था जनयति दक्षिणाव-सीत् दितं वामावसीत् विषदं नाशं भूमिच्छेदादिसनाशं नघुनां वा ततस्तव दिधदूर्वादिकं दस्वा मः तिकया गर्ने पूर-येत। ततः सूत्रपाताय र्यानादि प्रदक्षिणासतुरः कौलकान "विश्वन्त ते तले नागा स्रोकपानाय कामगा:। ग्रहे लिसिंय तिष्ठन्तु पायुर्वनकराः सदा" इति मन्त्रेण चतुष्कीणेषु इद्ध रोपयेत्। तत ईग्रानादिकमेण स्वेण तं वेष्टयेत्। तत चाम्नेयां गर्ने गत्रपुष्पादासङ्गतं स्तमां रोपयेत्। तत्र मस्य । "ययाचनीगिरिमें रहिंगवांच ययाचनः । अभग्रद-ग्रहस्तमा तयात्वमचली भव" 🛭

े पर गरहप्रवेगः। "स्थापं ममाप्यं क्रत्यूपकारं गरह-प्रवेगो गजवानि बन्धः। प्रामे प्रयेगो नगरे पुरेवा दिने प्रम स्टानि शनेयरस्य ॥ न्येष्ठादितिभ्यां समुक्तं गरहारमोदिन

तस्य यत्। सत्तर्वे योजयेदेश्मप्रवेशे दैवचित्तकः"॥ विष्तु-धर्मोत्तरे। "गोपुच्छविन्यस्तकारः प्रविश्रेश्च रहत्रं रहते। श्रनु-निप्तः सुखौस्राबीसपत्नीकस्तरीव च ॥ क्रात्वाचनी हिजवरानघ पूर्णंकुर्भं दध्यचतास्रदसपुष्पफलोपशोभम्। दस्वा हिरह्य-वसनानि तदा धिजेभ्यो माङ्गल्यगान्तिनिसयं निसयं विगेश्वणा महाभारते "पारावतमयूराय श्वका वे सारिकास्तया। ग्टइ-खेन सदा पीचा चातानः येय दृष्टता"॥ मत्यपुराणम्। "गोगजाजावियालास तत् पूरीपस्य निर्गमम्। अस्तं गते न कर्त्तेव्यं देवदेवे दिवाकरे"॥ ग्टइसुपक्रम्य गीभिसः। "वर्ज-येत् पूर्वतीऽखत्यमस्य दश्चिषतस्त्रया। न्ययोधमपराद्दशादुत्त-राद्याध्य इम्बरम्॥ अवस्योऽस्निभर्य कुर्यात् चर्चा सूयात् प्रमायुकान्। न्यप्रीधी राजसं पीडा कुष्यामयसुडुम्बरा." ॥ षद्यः पक्षरौ प्रमायुक्तान् प्रकष्टिपित्तानमायुः पित्तमित्वमरः । इति गटहारसम्बन्धी।

"बह्यानुराधवस्तिस्विद्याग्रहस्तिविद्यान्तराग्निपवनादितिरेवतीषु। जमार्च जीवव्यग्रह्मदिनोस्तवादी धार्या नव
वस्त्रमीखरदेवतृष्टी। नववस्त्रपरोधानम् ॥ पृद्याकोदितिविद्यास्त्रध्याग्रसदित्तधुवत्वषृषु सृह्यादन्तस्वर्णविद्यमम्पौन्
दध्यादिश्रुद्धे दरो। पृष्टेक्ये समग्रे ग्रभ धुवस्राचार्यादितीग्रिः ना नो रत्ने विश्वयात् मनाज्ञकम्पौन् यहः दिता
स्वामिने"। दति रह्मधारणम्। पूर्वं कोषुसामान्येन विधाय
पद्यात् स्त्रिया विभेवनिषेधः। "सूरीन्दुप्रवीत्रययान्यपिय्यःस्वामिन्यक्रानिसम्बद्धिनस्यः खद्वादिसम्बद्धारणम्। "मैवेस्वोष्ण-विष्ठभादितिवाज्ञित्वा दस्तोत्तराद्ववद्याद्वपादःस्वोष्ण-विष्ठभादितिवाज्ञित्वा दस्तोत्तराद्ववद्याद्वपादःस्रानि। एतेष्वभीष्ट्रग्रयनास्त्रपाद्ववदि-स्क्रीगकार्याप्रदिन

मुनिभिः ग्रमाहे"। श्रीपतिसंहितायाम्। "हस्तादिति महागुक्तरेषु पौणाधिमू लेन्दुभिष्ठभेषु। वारेन्दुनीवेष- वितेन्दुनानां ग्रयासनादीनि हितप्रदानि"। विसासणी हारीतः। "हरिकरमहदनुराधाविधादपौणादितिहयोत्तरभे भोजनविधिग्रयासनभोगारको हितायीय" इत्यनहारादि-धारणम्।

"पुषा मैत्रकरोत्तरस्ववक्षमद्वाम्मुपितेन्दुभैः भक्तेऽर्के ग्रभवारयोगितियिषु सूरे स्ववीर्धेषु च। पुष्णेन्दी नसरागिरी दग्रमगे ग्रुक्ते ग्रमांगोदये प्रारमः सन्तिन्नानयस्य भ्रमदी सीवेन्दुपुत्रोदये। वाक्षमुस्तिगाखसीम्ब्रभुवस्यत्योष्णपुष्येषु। तक्गुलानतादीनामारोपणं प्रमस्तम् ॥ स्नादिरोपणम्।

षय पुष्करिखारमः। मत्यपुराषे। "प्राप्य पच गुभं ग्रक्तमतीते चोत्तरायणे। भाषादे हे तथा सूसमुत्तरा वयमेव च ॥ भ्येष्ठायवणरोष्टिण्यः पूर्वभाद्रपदे तथा। इस्ताम्बनी रवती च पुष्पो सगिशिरस्तथा॥ अनुराधा तथा खाती प्रति-ष्ठ।दिषु श्रस्यते"॥ चतौते प्राप्ते गत्यर्थस्य प्राप्तर्यवात्। भविष्ये। "प्रतिपञ्च हिताया च खतीया पञ्चमी तया। दशमी वयोदशी चैव पौर्णमासी च की सिता॥ सोमी दृष्टस्पतियव गुक्रसैव तथा व्धः। एते सीस्यग्रशः प्रोक्ताः प्रतिष्ठायाग-क्षमेषि"॥ व्यवसारसमुख्ये। "प्रतिष्ठा सर्वदेवानां केयवस्य विशेषतः। उत्तरायणमापवे शक्षपचे श्रमे दिने॥ कुण्यचे च पञ्चस्यासष्टस्याञ्चेव शस्त्रते। द्वादश्चेकादगौराका शक्ले छण्डे च पश्रमी ॥ यष्टमी च विशेषेण प्रतिष्ठाधा हरे: श्रमा:। भुव समु सद्वर्गे वाच्ये विष्णुदैने सच्दिदितिधनिष्ठे श्रीभने वासरेच। विदयमदनजमीकादमी मीतरमी विद्युधकति-रमोश नाडिनचत्रशैन"॥ देवसाघटमम्। प्रावेशवासय-

करादितिभाषिनोषु पौष्णामरेध्यश्रिभेष् तथीत्ररासु। कर्नुः ग्रमे गशिनि केन्द्रगते च जीवे कार्या हरे ग्रमतिथी विधिवत् प्रतिष्ठा ॥ पुष्याखिमक्षभगदेवतवासविषु पौष्पानिलेशमध-रोडियोमूनइस्ते पोखान्राधहरिमेष् पुनर्वसी च कार्याः भिषेकतक्भूतपतिप्रतिष्ठा"॥ महेशादिप्रतिष्ठा। भ्रव-सदुनचन्नगणे रिव ग्रुभवारेषु सुतियौ दीचा। स्थिरसम्ने ग्रुभे चन्द्रे कोणे शुभे गुरौ धर्मे : दोचाकरणम् । भुजवले । "युगादा-वयने पुर्खे कर्त्या विषुवद्यो। चन्द्रसूर्ययहे वापि दिने पुर्खेऽय पर्वसु ॥ या तिथिर्घस्य देवस्य तस्यां वा तस्य दीच्ये । रद्धागमविभेषेण प्रतिष्ठा सुक्तिदायिनौ"॥ पद्मपुराणे। "प्रतिपद्यनदस्योका पविवारोष्ट्रणे तिथि:। त्रिया देष्या हितीया च तिथीनामुत्तमा स्रुता ॥ व्यतीया त्वथवान्या च चतुर्थी तत्मुतस्य च। पञ्चमी मोमरानस्य षष्टी पीता गुइस्य च ॥ सप्तमो भास्तरस्योक्ता दुर्गायाद्याष्टमी तिथि:। मातृणां नवमौ प्रोक्ता दगमी वासुकेस्तथा॥ एकादगी ऋषीणाञ्च हाइगौ चक्तपाणिनः"॥ चक्रपाणिन इति पण्यवद्वार इत्यमात्। ''वयोदयो लनद्रस्य शिवस्य च चतुर्दयो। सम चापि सुनियेष्ठ पौर्णमासी तिथि: स्रुताण ॥ इति देवप्रतिष्ठा ।

"अभ इरिधटल ने देवराट्यु निया खा विनयन विधिया गर्ने हल सर्पान्य भेषु सुकरण तिथियो गे शक्त जो वाक वारे तरिण घटन नियः चन्द्र तारा विश्व हो । नो का घटन स्थाना तृत्र विष्णु यु ग्मेन् न्द्र भग से चा विषण् थु । चान नं घटन स्थाना तृत्र वा शभ निया नो का चन मा। ''पश्चिक रेण्य सुधा निया नो का चन मा। ''पश्चिक रेण्य सुधा सुधा नियं यू नो का चन मा। ''पश्चिक रेण्य सुधा नियं यू वी सिवध ना चु तमे यु मन्य ने । तारक यो गति यो न्द्र विश्व हो नो गम ने शभ देश स्था रें भ मा या। 'हा रोतः। 'जिया नो गम ने शभ देश स्था दि व्या थि:

समुत्पनः हियाय मर्पाय वा॥ यदा ताराः शुभाः पुंसा नचनसागुभं फलम्। तत्र नात्यस्तिकं ज्ञेयमेवमन्यत पण्डितैः। तदाव चन्द्रमाम्बस्य गोवरे चाग्रभप्रदः। तदा नूनं भवेगात्युः सुधासम्पीतदेश्विः॥ शिखिगुणरमेन्द्रियाः नसम्मिषिषयगुणन्पञ्चमपञ्चाः। विषयेकचन्द्रयुगमार्णमा-निषद्रानिनद्दनाः। भूतग्रतपत्तवसयो हो शिंगच्छततार-कामानम्" । तदनुसारेण फलकधनम्। "पाद्री श्रेपा साती पूर्वा क्येष्ठामु च यश्व रोगजना सात्। धन्वन्तरिः णापि चिकित्सितसा तस्यामवी न स्यः" कौश्चिकः। "ससि-कास यदा व्यापिन्टेणां संप्रतिपादितः। नगरामं भवेत् पौडा विराव' रोडियोप या सगगीर्यं पधरावमाद्रांयां सुचातेऽसभिः। पुनर्वसी तथा पुचे सप्तराह्मं विधीयते॥ नवरावं तथा श्रेपे मासमेक भवास च। ही मासी पूर्वफन्गु-न्यामुत्तरास विषयकम् ॥ इस्ते च सप्तमे मोधियवायामई-मासकम्। मासदयं तथा खात्यां वित्राखे दिनवित्रतिः ॥ मैं से चैव दयादानि खेरायामई सासकम्। सूरी न जायते मीचः पूर्वापादे विषयकम्॥ उत्तरे विश्वतिश्रीया दी मामी त्रवणे तथा। विनिष्ठायामधिमास वाक्षाव्यः दशाव्यम्॥ न च भाद्रपदे मोच उत्तरामु विषयक्षम्। देवत्यां दिनविः श्या चाडीरावं तथाश्विनौ॥ प्राचैविमुचते निर्धं भरणां मात्र संश्रयः। कौशिकेन समादिष्टा नचत्रधाधिसभावाः॥ नचवं प्रतिकर्मधं नचवप्रधानता। चौरहवस्य समिधी शहयाद्धिदेवते॥ तिसमधतान् याखे पृतमेवानिदेवते। प्राजापत्ये जुहुयान् याम्यवीजकरञ्जकम्॥ सीस्ये गव्यं पयो रीदे चर्षिमधुसमन्धितम्। यदितिदैवता यद्य घृताक्तास्तिस-तण्डुलाः॥ पायस सर्पिषा चैव सुइस्रत्यधिदैवते। सास्यो-

पधिस पत्रस्व सपिः सर्पाधिदैवते॥ पितरो देवता यस्य ष्ट्रताक्षास्त्रिनतगड्नाः। अचता नाज्ययुक्ताय भगे सर्पिस्त-योत्तरेश साविवेद्धिहोमी खट्टे चिवोदन हवि:। यवा: खालाञ्च होतव्यासन्द्राग्निभे तु पायसम्॥ मैस्रे सिर्पत्तु जुहु-यात्तदेव चैन्द्रदेवते। यथोपपसमसञ्च जुषुयासैक्टी तथा॥ प्रब्देवते प्रास्तिवीजं वैखदेवे तु रूपकम्। रक्तानां तण्डुला-नाच होतव्य विष्णुदैवते॥ न्यग्रीधोड्खराखत्यसमिधो वसु-इक्ते। वार्णे वारिजातानां पुष्पाणां होम इच्यते॥ भजैक-पादे होतव्यं प्राजापत्येन तत्तसमम्। भहि ब्रघ्ने तु नचबे पिष्टकायं प्रमस्ति ॥ पौषो फलान्यखण्डानि इनेदष्टीसरं शतम्। साविवा इतमेतन् वाद्यणाभिहितं पुरा ॥ त्रात्वा चेव तु होतव्यं सदो ज्वरहरं परम्" ॥ भीमपराक्रमे। "क्रिन-कायां पिष्टककागमुखे दध्यदकच देयम्। रोहिस्यां पिष्टक-गोसुखे गाक्षम्॥ सगिशिरसि पिष्टकसगसुखे मापो देय:। चार्द्रायां पिष्टकगोमुखे रक्षम्। पुनर्षमी पिष्टकवराष्ट्रमुखे पटीलम्। पुष्ये पिष्टककागमुखे पायसम्। पश्चेषायां पिष्ट-क्षवराष्ट्रमुखे प्रतम्। मधायां विष्टकवानरमुखे तिलाः। पूर्वपर्गुन्यां पिष्टकनरसुखे सुद्गतिसपूपिकाः। उत्तरफनगुन्यां विष्टकवनीवर्मुके शाकम्। इसायां विष्टकमहिवसुक्रे पुष्करमूमम्। चिषायां पिष्टकथाञ्चमुखे सगरपुष्पम्। खात्यां विष्टकमाजीरमुखे तिसाः। विग्राखायां विष्टकथावसुखे गुइभक्तम्। पनुराधायां पिष्टकसूगमुद्धे कुशक्षम्। ष्येष्ठायां पिष्टकसूपिकसुचे धन्याकम्। सूने पिष्टकप्रार्कारसुचे तिसम्। पूर्वीपाटायां विष्टककुमीरमुखे वचा। इसरामादायां विष्ट-क्ट्यम् विशाकभक्षम्। यवपायां विष्टकमिषयोम् वे रहम्। ध्विष्ठायां पिष्टकनरसुरी गाक्षभक्षम्। गत्रिभिषाया पिष्टक-

वानरमुखे पिपासी। पूर्वभाद्रपदायां पिष्टकनरमुखे सित-तण्डुनाः। छत्तरभाद्रपदायामध्येवम्। रेवत्यां विष्टकनरमुखे गुडभन्नम्"। प्राप्तनो भरण्योरप्येवम्। एवं नचत्रदोष्टरे स्रते व्यरो नश्वति। एतदिधानन्तु प्रथमं गन्धपुष्पध्पदीपनैविद्यैः सदीपः साख्यताकैः प्रपूज्य कार्यम्। "उरगग्रताभवाद्गिके ष्ठयास्य-विपूर्वास्विप च रविजभीमे चार्कवारेण योगे। यदि भवति चतुर्थी द्वादमौ भूतषष्ठी निगदित द्व जन्तोर्नामकासः प्रविष्टः ॥ चरराशी विलग्नस्थे हिदेहाई च परिसी। रोगस्य प्रमाः प्रश्चे विपर्यासे विपर्ययः॥ ग्रभमदाः सौम्यनिरौत्तितास विन्यन-सप्ताष्ट्रमपञ्चमस्थाः। विपड्दगा येष् निप्राकरः स्थात् गुभं वदेद्रोगनिपौडितानाम्॥ पापचेंषु प्रश्नसम्ने पापसंयुतवौचिते । तथैव चाष्टमस्थाने रोगिणां मरणं भवेत्"॥ सरणस्चकयोग-दयम्। "मन्दः पापसमिती लग्नासवमः श्रुभेरम्तदृष्टः। रोगार्तः परदेशे चाष्टमगो मृत्युकर एवं ॥ परदेशस्यस्य रोगन्नानं मृत्युन्नानच्य । "मूलमघाद्रश्चिषा भरणी विधाखानिन-दैवतेषु नरः। गरुड्प्रियोऽपि दष्टो न प्राचिति दस्दशूकेन ॥ पालाञ्जनालेपनलावणेस् देवविषं समुत्सारयति"॥ दष्टस्य गार्डीमूलं यदि ष्टमयामलं भवति। गार्डी पुनर्नवा। "चर्केलटावल्कलमस्य चूर्यमतिशिशिरसस्तिससंयुक्तम्। पीत-मिडिकानकारीनाग्रहयारिविषाणां विद्वावणम्॥ जोपसन्तिस-मस्णवित्तिकाक लिकामूलणानलेपनेन । भ्रापसरति मस्ड-· सिवियं मार्कतविद्यतमिव घनष्टन्दम्<sup>॥</sup> भोषसिक्तिलं का व्यिक्त काकरीमूलं गुञ्जासूनम्। "लज्जालुकासूलं नीसीसूनमात-'पतण्डुसज्ञलेन । मण्डनिविषमतिविषममिष पौतं निवा-रयति ॥ यः पिवति भुष्यदिवसे ललपिष्टं सितं पुनर्नवा-मूलम्। पार्छनापि न खलु विचरति तसाहि दृश्कि

षर्धम् ॥ श्वातातपीयकर्माविपाके। "महापातकः चिद्धं सप्तजनासु जायते। उपपातकजं पञ्च क्रीणि पापससुद्भवम् ॥ दुप्कर्मजा तृणां रोगा यान्ति चैव क्रमात् श्रमम्। जपै: सुरा-र्धनेहीमैदनिस्तेषां यमी भवेत्॥ पूर्वनक्षकतं पापं नरकस्य परिचये। बाधते व्याधिक्षेण तस्य कच्छादिभिः यमः॥ क्षष्ठञ्च राजयस्मा च प्रमहो ग्रहणौ तथा। सूवक्षस्थाश्मरी-काया बतीसारभगन्दरी॥ दुष्टव्रणं गण्डमाला पचावाती-इसिनाशनम्। इत्येवमादयो रोगा महापापोद्धवाः स्मृताः ॥ जलोदरयक्षतृष्टी हशूनरीगवणानि च। खासाजीर्णस्वरच्छरि-स्रममोद्दगसग्रहाः॥ रक्तार्वदिसर्पाद्या उपपापोद्धवा गदाः। द्रशावतान वाशिव्र वपुः कम्पविचर्चिकाः॥ वस्मीकपुर्यः-रीकाद्या रोगाः पापसमुद्रवाः। अर्थि भाद्या नृषां रोगा श्रतिपापोद्धवा सता:॥ अन्ये च बहवी रोगा जायन्ते रोग-सद्धराः। उच्चन्ते ध्य निदानानि प्राययित्तानि च क्रमात् ॥ महापापे तु सर्वे स्थात्तदर्दन्तूपपातके। दद्यात् पापे तु पर्हार्य कत्या व्याधिवसायसम्॥ नचमुद्यावचं पुष्पं प्रदद्याहेवता-र्घने। द्याष्ट्रित्रसहस्राय मिष्टाचं हिन्नभोजने॥ गोदाने वस्युक्ता गोः सुगोसा च पयस्तिनो॥ गोदानमधिकत्यादिः पुराधि। "परोगयैव कायेत तेशसी च भवेसरः" । सतः। "योपधान्यगदी विद्या देवी च विविधा स्थितिः। तपसैव प्रसिध्यन्ति तपस्तेषां हि साधनम् ॥ चगदीनैदन्यम्। गातातपः। "यथा निदानं दोषोत्यः कर्मनो हेत्रभिषिना। महारमो। स्पये हिताविकामी दीपकर्मनः । सारावस्थाम्। पयागिनो गोलवतो मरायां सद्तिभाजां विजितिन्द्रयापाम् । एवं विधानामिद्मायुरतं चिन्यं सदा हदमुनिप्रवाद." ह ध्यक्षमाइ यात्रवस्यः। "वर्षाधारखेदयोगाद यया दोपस्य

संस्थिति:। विक्रियापि च हुष्टैवमकाले प्राणसंशयः"॥ यथा चाविकसवर्धादिसस्वे प्रचग्हवासारिना दोपनाश्रास्त्याः सत्यायायुपि चाश्रभकमवशात् नीद्गवत्र्ययुष्ठापणसेविला-दिना प्राणनाम इति। यायुर्वेदे। "ययामास्त्रस्त निर्णितोः यया व्याधिचिकिसातः। न श्रमं याति यो व्याधिः स जेयः क्रमाजी वृष्टे:"॥ तिचिकिसायां भारतीयभट्टाचार्यः। "दानै-र्दय।दिभिरपि हिलदेवता गोगुवर्चनाप्रणतिभिष्ठ लपैस्त-पोभि:। इत्युक्तपुर्व्यानच्येश्यचीयमानाः प्राक्त पापना यदि ' रज: प्रथमं प्रयान्ति"॥ जनएव हेमाद्रिष्टनटानखाडे तत्त-द्रोगे तत्तद्दानाभिधानपूर्वकं भगवद्दाक्यम्। "सुक्रणेटानं सर्वेषां रोगाणां श्रमकारणम्। तसात् सर्वप्रवहेन कर्तव्यं कमलोइव" ॥ कमदोषोभयक्षयाधी च। "दानादिभिः कर्मभिरोषधीभिः कर्मचये दोषपरिचये च। मिहरस्ति ये यत्वतां कथश्चित्रक्षमदोषप्रभवा गदासु"॥ ऋतएवीक्षम्। ''प्रायधित्तमस्वातु कर्म कुछान्न किञ्चन। यनिस्तीर्णमधं यसाहिगुणं परिपच्यते"॥ केवलदोपने तु। "स्वरितुर्हे-रनिसादिदीपैरापप्ततैः खेषु परिष्वनितः। भवन्ति ये प्राप्त-स्तां विकासस्ते दोपना भेषनग्रहिसाध्याः"॥ वृहस्यति:। "अज्ञातीषधमन्त्रस्तु यय व्याधेरतन्त्रवित्। रोगिभ्योऽधं समादत्ते सदण्डायीखिझपक्"॥ नन्दिपुराखे। "अध्येकं नी रजं सत्वा जन्तुं याद्यतादयम्। षायुर्वेदप्रभावेण किन्न दत्तं भवेड्डवि"॥ किन्न दत्तं भवेदिति सर्वेदानफल लभते दलर्थः। लिङ्गपुराणम्। "त्रायुखे कर्माण छोणे लोकोऽयं द्यते मया। श्रोपधानि च मन्दाश्चन होमीन पुनर्जपः। वायन्ते सत्युनीपेत जर्या वापि मानवम्"॥ इति वालः वाकाम्। इरिवंगिऽपि। "दैवं पुरुपकारेण न अकामति-

विसितुम् इति। "न रहह्वन्ति न मृख्निन न प्रश्नन्ति गता-युपः। दीपनिर्वाणगन्धस्य सुद्वदाकामरुन्धतोम्"॥ विष्णु-धर्मतिरे। "इरिं गोद्दिजचन्द्रार्कंसराग्नीन प्रतिपूच्य च। च्यवन् मन्त्रिममं पुर्वाविद्यान् भेषजमारमेत्॥ अह्मदचा-श्विरुद्रेन्द्राभूचन्द्राक्षशिनाननाः। ऋषयश्वीषधियामा भूत-सघाय पान्तु ते॥ रसायनमिवर्षीणा देवानामसृतं यथा। खधेवीत्तमनागानां भैषज्यमिद्मस्तृते"॥ खय भच्चणे तु ते द्रत्यच मे इति वदेत्। षविशिषेण भचणेऽपि पठेत्। "द्राङ्गो-दये गुरुव्धेन्द्सितेषु तेषां वारे खेश सुविधी सुतिथी सुयोगी भैष्यपनगविषा विषयितरेषु जनार्चिविष्टिर हितेष्वगद शुमाय"॥ श्रीषधकरणम् "चिवायुगे विधियुगे मिवयुगे सघुपु वार्ण-विया। वस्तिविरेचनवेधाः ग्रमदिनतियिचन्द्रलग्नेषुणा वस्ति-द्यमपुट: विरेचन विरेक । वेधी स्नणादिवेध । "पौप्णा-खिनो द्विणयक्षसमीन्द्रपृथाहस्वादितौन्दुहरिसूल हुताय-मिने । चित्रान्वितेस गुब्धेन्दुरवीन्यवारे मैषन्यपानमचिरा-दपहास्ति रीगान्"॥ उत्तरावयेऽपि बहुलस्गिति वचनात्। रक्षमालायाम्। यूनश्रव्भावस्ययश्रदी सद्ग्रहिषु नित्रा बल वत्सु। श्रायुपय हितकारिणि योगे को निता नियतमीपधसेवा'। द्यनादिषु पादयोगे चणशून्येष् प्रायुष्मानित्यादिनित्ययोगे। भीमपराक्रमे। "भैषच्यपाने गुन् सोमश्रक्षा श्रम विलग्न दिवसी रविद्य। तिद्यावरिको करणे च मस्ते योगे च लग्ने डिमरीर सङ्गे" ॥ तत्रैव "रोहिणी चातुराधा व श्रस्तमीपधभचणे" इति वचनाद्रोसिखामपि। "धादिखेषु चरेषु शक्रदिनसत्पृयोप-चन्द्रेषु च। क्रूराइचातिपातिविधिद्विधिचन्दावगस्ते तथा॥ केन्द्रस्थेष्वग्रभेष्वकामतिथिषु सान गरो मुक्तित.। यस्तं तत्र न श्रीभनाविधिभुजङ्गर्जन्दु सद्दासरा."॥ रोगिस्नामम्। "सेवा

चक्रे सप्तयीयं सप्तपृष्ठे तथीदरे। पादयी: सप्त ऋचाणि साभिजिन्ति न्यसेहुधः॥ सामिभाइ त्यमं गर्थं भत्यभात् स्वाभिमं ततः। निकालं वादप्ष्टस्ये सकसं मस्तकोदरेण॥ सेवा चक्रम्। "ध्रुषलघुमृदुवर्गे वासवे विष्णुदेवे विकुलर्गवज-वारे केन्द्रकीणेषु सस्। दितनुष्ट्रषभपश्चास्थोदये चन्द्रग्रही सुतिधिकरणयोगे दर्शनं भूमिपानाम्"॥ राजदर्शनम्। मत्यपुराणे। "राज्ञस् दक्षिणे पार्श्वं वामे चीपविश्वेसया। पुरस्तात्तु तथा पद्यात् ग्रासमन्तु विगर्धितम्॥ स्वयं तथा न क्विति खगुणाख्यापनं पुनः। खगुणाख्यापने चैध परमेष प्रयोजयेत्। पराधमस्य वक्तव्यं सुखे चैतसि भागव। स्वार्थं सुद्धार्रिवेत्रयां न स्वयन्तु कदाचन"॥ अस्य राजः। "अज्ञा-यमाने चान्यसिन् समुखाय त्वरान्वितः। यहं किं करवा-णौति वाचो राजा विकानता। नातिवक्तान निर्वेकान च मासरिकस्तया॥ चात्मसभावितयेव न भवेच कयस्र। चाराधनामु सर्वामु भृत्यवच विचेष्टिते। कथामु दोषं चिपति वाकामद्भं करोति च। विश्वतस्यणं द्वीतदनुरक्षस्य लचणम्। हृद्वा प्रसन्तो भवति वाकां ग्रह्वाति चादरात्। कुगलादि-परिप्रश्री सप्रापयति चासनम्। इति रक्तस्य कर्त्रस्या सेवा रविकुत्तोद्भवः यदप्यस्पतरं कर्म तद्योकेन दुष्करम् ॥ पुक्-पेणास दायेन किन्तु राज्यं महत्यदम्। कामं क्रोघं मदं मानं लोभं इपं तथैव च। जीतव्यमरिषड्वर्गं मत्वरं पृश्यियो-चिता। न राम्ना मदुना भाव्यं मदुहिं परिभूयते। न भाव्यं दारुणेनापि तीच्णादुहिनते जनः। चदोर्धसूत्रध भवेत् सर्व-क्रमंसु पार्थिवः। दौर्घसूत्रस्य तृपतेः कर्म नष्टं सवैत स्वयम्। रोगे दर्षे च भान्ये च द्रोही पापे च कर्मणि। अभिये चैव कर्त्रये दीर्घ सूत्रः प्रमास्यते । स्रयेः सष्ट महीपातः परीष्ठाः

सञ्च वर्जयेत्। भृत्याः पश्मिवन्ती इ नृपं इर्षणसत्वयम्। पौर्षं दैवसम्पत्धा काली फलति पाधिव। वयमेतमानुषस्य पिण्डितं स्वात् फलावहम्। क्षपेईप्टिसमायोगात् दृश्यन्ते फलिस्यः। तास्त् काले प्रदृश्यन्ते नैवाकान्त्रे कथञ्चन ॥ महाभारते। "लाभेन हपंग्रेद् यस्तु न व्ययेद् यो विमानित:। असंमूदय यो नित्यं स राजवसति वसेत्। बलवान् शूर पालानम्कायेवानुगतः सदा। सत्यवादी सदुर्दास्तः स राजव-सति वसेत्"। नयमाइ इरिवर्धे नारदः। "अनुतो वापि सुहृदा दक्षव्यं जानता हितम्। न्यायस प्राप्तकालस परा-भवमञ्जानता। वक्तव्यं सर्वदा सङ्किरियच्छापि यद्वितम्। भानृखमेतत् सेइस्य सङ्गिरवादृतं पुरा। यस्योत्तापकारं प्रयात श्रारमं कार्यमोद्द्रम्। श्रारमेन्द्रैव तद्विहान् स च बुष्टिमतां नय:। कुमित्रे सीष्ट्रदं नास्ति कुभार्यायां कुती रति:। कुत: पिण्डं कुपुत्रे तुनास्ति मत्यं कुराजनि। कुमी इटिक विद्यास: कुदेशे न पजौद्यते। कुराजान भयं नित्य कुपुचे सर्वदा भयम। भपकारिणि विश्वव्यं यः करोति नराधमः। श्रनाधो दुर्बलो यस्तु न चिरं स तु जीवति। न विख्वसेद विख्वस्ते विख्वस्ते नाति-विम्बसेत्। विम्बासाद्वयसुत्पन्नं सूनान्यपि निक्षन्ति। राज-सेविषु विश्वासं गर्भसद्वरितेषु च। यः करोति नरी सूढी न चिरं स तु जीवति। शब्शेषसृणाच्छेपं श्रीयमग्नेस भूमिय। पुनर्वर्देन्ति सभूय ततः श्रेषं न शेषयेत्। अद्रोष्टं मसय क्षंताः मुनीनामग्रतो हरि:। जघान् नमुचिं पयादयां फेनेन पार्थिव। कुत्वा सुखन्धकं चापि विम्हसेच्छव्या न हि। पुलोमानं जवानादी जामातापि यतकतुः। न चामचे निवस्तव्यं सर्वेर वहिते रिपौ। पातरोत्तं समूलं डिनदौक्लमिन द्वमम्"। विश्वपुराणे। "धलाहानिस्तु साढ्या वैरेणार्यागमं त्यजित।

खवायतः समारत्या सर्वे सिध्यन्यपक्रमाः"॥ ज्योतिपे।
"यन्यकं तदनुमन्दलीचन सध्यलीचनसतः सुलीचनम्। रोचिगौप्रश्रातम चतुर्विधं नुनमच गण्येत् पुनः पुनः। लामोऽस्वेते
निक्षट एव इतस्य चौरेद्रेश्यस्य लिधिरिष्ठ केवरके प्रयक्षात्।
द्रव्यश्रुतिभंचित सध्यमलीचनाचे न पासिन्तसिक्लोचनमे
कदाचित्"। सस्यपुराणे। "कार्त्ववीद्यार्जुनो नाम राजा
वाचुमचस्रभत्। येन मागरपर्यन्ता धनुपा निर्जिता मच्छे।
वस्तस्य कौर्त्तवेद्याम कस्यमुत्याय नित्यत्रः। न तस्य वित्तः
नागः स्याच्यच्च समते पुनः"॥ कल्यं प्रातः।

श्रध परीचा। "नो गुक्तान्ते प्रमिष्क गुक्तमहित्तको जन्मसाम प्रमिन्दी विष्टी साम समाच्ये कुलगनिदिवसे जनाता । स्व चाय। नाडी नचत्र होने गुक्त रिवर जनी नाय ताराविश्व हो प्रातः कार्या परीचा हितन् चरण्डा गोदये गम्तम् । श्रष्टस्य ख्वित्यां प्रायिक्त परीचा । न परीचा विवाह य श्रानिभी मदिने भवेत्। प्रायिक्त सनुराधा ख्विनिष्ठा पुष्या इस्तातयां तथा। ज्येष्ठावाक्षपीणो च नात्वारको ग्रुमोगणः ।
नात्वारका।

प्रय किपिक में। तत क् के चिक्रम्। "प्राद्या की भगवान्देव' कू के रूपी व्यवस्थित:। प्रावास्थ भारतं वर्षं नव भेदं
ययाक मम्। मध्यपागिन यास्यादि कि कि का दिवयत्रये:
क्रिर्वेषयुते स्ते स्त्री प्रीष्ठा के ति ति वासिन:। पूर्वी वर्षः भवे हे धीवेष यो त्रार्वेषयुते स्ते स्त्री प्रावास्य में विषे प्रावेष भारते।
ताग त्रयान्वितं तत्र मीरिं यत्रेन चिक्तयेत्। ना भिष्री प्रचित्रः
प्रावक च पुष्के च मस्थितम्। प्रतिवृष्टिर्ना वृष्टिः प्रस्ति।
स्त्रिकाः खगाः। स्वचकः प्रचक्र समेते सन्धवन्ति च।
एव देश गढ द्रारा स्त्री तना मर्चेता वदेत्" ॥ तद्या च "यत्र यत्र

च मचत्रे दियापार्थिवनाभसाः। हथान्ते सुमश्रीताः स्वां दियां तत्र पौडयेत्। सौरिर्वनाधिको दृष्टः खल्पवीर्यः गुभा-वइ:। एकदा पौडयेद् यव भानुजः कूर्मापञ्चके। तव स्थाने मधाविद्यो जायते नात्र संगयः। दृष्टस्थाने गते चन्द्रे कर्त्तव्यं शान्तिपौष्टिकम्"। वृसोङ्गखदेशानाच्चा "मध्ये सारखता-मत्याः भूरवेनाः समायुराः। पञ्चासभाग्रभाग्रभक्तिन गजाह्याः। सर्नैमिपविन्याद्रिपाण्डाघोषाः स्यामुनाः। कार्ययोध्या प्रयागद्य गया वैदेहकादय:। प्राच्यां मागध्यीणौ च यारेन्द्रोगौडराढ्का:। वर्षमानतमो लिप्त प्राग्च्योतिपोदया-द्रयः। भागनेयामङ्गवङ्गीपवङ्गमेपुरकीयमाः। कल्डिङ्गीद्रान्ध-किष्किन्या-विदर्भशवराद्यः। दत्तिणेऽविक्ति-माहेन्द्रमत्त्रया त्रयमूकवाः । चिवकूटमदारखकाद्यीसंदलकोद्धनाः । का-विरो ताम्मवर्णी च सङ्घा विक्टकादयः। नैक्टेत द्विडानर्ग-महाराष्ट्राय रैवतः। जवनः पत्तवः मिन्धः पारसीकादयो सताः। पश्चिमे हैस्यास्ताद्भित्तंच्छवास्यकादयः। वायव्ये गुज्जरारथ नारजासस्यरादयः । उत्तरे चीननेपासहनकैकेय-मन्दराः। गान्धारिष्ठमवत्कोश्चगन्धमादनमासवाः। कैलाश-सद्काश्मीरक्षेच्छदेशाः खशादयः। ईग्राने खर्णभीमस गङ्गा-हारस टहनः। काश्मीरब्रह्मपुरकिरातादरदादयः॥ इति कूर्भचक्रम्। देवनः। "सिसुमीवीरमीराष्ट्रास्तया प्रत्यन्तः वासिनः। श्रङ्गवङ्गकालिङ्गीद्रान् गत्वा संस्कारमङ्गिते"॥ तौर्य-यात्राव्यतिरवेगेति दृष्टव्यमिति मिताचरा। व्यासः। "उपरा बहुना भूमि: पत्यानस्तस्तराइता:। सर्वे वाणिजिकाशैव भविष्यन्ति कली युगे॥ श्रासानिष्यत्तिरफला तर्गा दृद्धि शीक्षिनः। भविष्ययणनी दर्पः क्रोध्य सफली सृणाम्॥ गुरुवालं वह्रकोक तद्यगालां लचणम्"॥ तद प्रामादिपु

स्वनामफसम्। ज्योतिषे। "भवगेऽष्टाविषः के च षट्चे वेदाष्ट्रवर्गके। एकं ते सप्त पे वर्गे ये इयं ये च वक्रयः॥ इत्यः मष्टस् वर्गेषु याः संख्याः कयिताः क्रमात्। नानिवर्गात् स्वराचैव प्रत्येकं तां प्रकल्पयेत्॥ एकीकत्याष्ट्रभिभ्के येष-मंख्या ध्वजादयः। ध्वजो धम्त्रस सिंष्ठः म्वा द्रवभो राम्भो राजः॥ ध्वाष्ट्रयक्रमती ज्ञेयः फर्लतत्र वसक्रमात्। धार्कः अध्सक्ष्यभागनः सिंहो ध्वनः खरः॥ ययोत्तरबला एते न्नातव्याः खरपारगैः। प्रभो योधे पुरे देशे मिवनारी ग्टहेषु च ॥ बसात् प्रायो भवेशामी न नामी बनवर्जितात्। प्रगर्दः क मार्जारय सिंहष्ट श्रनीसृतः ॥ त भुनद्रः प प्राप्तः स्यात् य वर्गे भः म मेषकः। नामादिवर्णतो प्रेया पष्टो वर्गाः क्रमादमी ॥ यहर्गभच्छी यः प्रीक्षस्तस्मात्तस्य भवेत् चयः। ग्रामवर्गस्य ये भच्चास्यच्यास्त्रष्ट्रामवासिनः॥ एव दुर्गे रखे त्यच्या न कर्त्रच्या गडाधिपाः। अवर्गाद्यष्टकं न्नेयं प्रागाद्यष्ट-दिशां क्रमात्। खवर्गात् पद्मने स्थाने खण्डिभंद्र स लायतं" ह व्यासः। "धनिनः श्रोतियो राजा नदी वैद्यस पञ्चमः। पञ्च यत्र न विद्यन्ते तत्र न दिवसं वसेत्"॥ सत्यपुराणे। "फान्-क्षष्टे तथा देशे मर्ववीज्ञानि रोपरोत्। विपश्चसप्तरावेण यश्च रोइन्ति तान्यपि। ज्येष्ठामध्याकनिष्ठाभूर्वर्जनीयेतरा मता"॥

षय लाइनचमं खरोदये। "लाइनं दिख्का यूपं योक्सदयममन्वितम्। दिण्डिकादिलिखेद्वानि दिनेशाक्तान्त-भादितः॥ दिण्डिका इलयूपानां दिदिस्थाने विकं विकम्। योक्सयाय किकचैव मध्ये पद्माप्रके क्यम्॥ दण्डस्थे च गवां दानियूपस्ये सामिनो भयम्। लच्मीलांद्रलयोक्तादो चेवा-दमादिनचैके"॥ इति लाद्गलचक्रम्।

्यय वीजोशिचक्रम्। "सूर्यभादुरगः स्थाप्यस्तिनाद्येका-

न्तरसमात्। सुचे त्रीण यसे त्रीण भानि द्वादम तूदरे ॥
पुच्छे चतुर्वद्विः पष्म दिनभाच भसं बदेत्। बदने चीवकं
विद्यात् मस्केऽद्वारकस्त्रया॥ छद्दे धान्यहिः स्थात् पुच्छे
धान्यच्यो भवेत्। द्वति रोगभयं राज्ये चक्रे वीजोप्तिमभवे॥
स्र्यभात् स्र्यभुज्यमाननच्चतात्। त्रिनाद्योकान्तरक्रमादिति
यद्यश्चन्यां रिवस्तदा तामारथ्य गण्येत्। तिनाडीयु भिवनोभरणौक्रसिका दस्ता रीहिणौ विहः कार्याः स्वाम्तरस पादाः
पुनर्वस् नाडीमु दस्ता पुष्यो विहः कार्याः स्वं क्रमेणान्या
खिखाः। चीचक भस्मभून्यताम्। दत्तयः। "अतिहष्टिरनाष्टिः ग्रन्तमा सूपिकाः खगाः। प्रत्याचनाच्च राजानः पडेते
देतयः रस्ताः" ॥ दति चीजोप्तिचक्रम्।

यय व्यवक्रम्। "व्यवकं व्याकारं सर्वावयवसंग्रतम्। लिखिला विन्यमेद्वानि व्यवस्थित्वपूर्वक्रम्॥ सुखाचिकणेन्योपंपु यद्वे स्कन्धे दिकं दिकम्॥ चीणि एवे द्वय पुच्छेऽथेर पारे तूदरं विकम्। एलप्रवाद्यवीजोप्तिप्रारक्षादिविन्यंकम्॥ यदद्वेष् स्थितं तस्माद्यये सर्वं ग्रभाग्रभम्। पास्ये द्वानिः सर्वं निल्ले कर्षे भिचाटन तथा॥ यौषं प्रतिम्तथा यद्वे सौस्यं म्कन्धे च मञ्जलम्। एवे कथं ग्रभ पुच्छे भन्नः पारे सुखं द्वि। चन्द्रयोगादिदं मोकं व्यवक्रकः वृषे."॥ दति वपः चक्रम्।

दीविकायाम्। "पूर्वाम्नियास्यक्षिपिविधिवास्यभेषु रिक्ताः द्रमीविगतचन्द्रतिथि विद्याः । दाङ्गामिगोससुदाये विक्र-सार्क्षियरं प्रस्तेन्द्रयोगकरपेष् दस्त्रवादः। दस्त्रवादवदीकः वपनस्य विधिः स्मृतः। चिवायाच द्रमे केन्द्रे स्विर समनु-सादये ॥ भौभपराक्रमे । "वामे क्रच्यं वसीवद् दिख्ये सोदितं स्वसेत्। एत्तराभिसुष्यो भूत्वा कर्षकः क्रियमार्भत् ॥

इले तु योजित यत्र चेत्रे यासं करोति गीः। तत्र स्याहिगुणं गस्यमवश्यं गर्गभाषितम्"॥ सत्यचिन्तामणौ वस्रभद्रः। "सुखदः प्रतिपचैव दितीया कार्यसाधिनी। श्रारीग्यदा खतीयाच चतुर्धी कोटकत् सदा॥ पद्ममी श्रीपदा नूनं पष्ठी च कलइपिया। सप्तमी खानदा भोग्या हमं इन्ति - तथाष्टमी। नवमी ग्रस्थनागाय दशमी भूतिदा सदा। एका-ंदगी तया कुर्याह्यनं धान्यं मनोरयम्। हादगी प्राणसन्देहा 'सर्वसिक्षा चयोदगी। चतुर्दशी पतिं इन्ति पञ्चदश्येष े निप्पता। श्रमावास्थाष्टमी पष्टी रिज्ञा च परिवर्जयेत्। सीरिभीमदिने चैव साखारको धनचयः। प्राजिशविश्वातिषेषु पित्यकरोत्तरेषु च मध्विनी वातपी खेषु सूनादिती न्दुभे तथा। वारे भानुजगुक्रीच जीवे शीतकरे तथा। लग्ने स्त्रोगीमीन-युग्मे कथारभां ग्रमं विद्:। ऐगान्यां पुष्पनैविदोः चेवपानध पृज्येत्। सालङारो इनधरः स्रिक्षिय पूजितं इसम्। दध्या-च्यमधुभि: श्रेष्ठं फालाग्रस्थ प्रनेषितम्। कर्षं प्रावर्त्तयेत् प्राची न्तनेन इसेन च। इस्ताखितियचन्द्रेषु ब्रह्मेन्द्रविष्शु-वारणे। वायव्येन्द्रामिमे चैव रोहिण्यामुत्तरासुच। बारे जीवज्ञग्रको च सीमे दिनकरितया। युग्मे युवति गो मीने गस्तं साहीजवपनम्॥ राजमार्त्तरहे। "प्राजेशयवणीः त्तराहिति मद्या मार्त्तग्डितियाध्विनी पीणानुषामरीचयः प्रतः भिषा स्वातिविधासा तथा। जीवार्केन्द्रसितेन्द्रनन्दनदिने वारे स्थिरस्थोदये यस्थानां वपने भवन्ति सवने शक्ते तिथी रोपणे"। देवनः। "गुरुसोमसूर्यशकाः चेम्यः सम्पत्तनः यभाः। वुधार्किभूमिपुचाय न भवन्ति फलप्रदाः। इस्ति मेपः पशुन् मर्शन् स्वभावेनाय द्वियकः। क्षकंद्रे न भवेत् मीएयं सनाया न परोहति। केशरो स्थानी सात् पार्थिवोपदुन्

धनुः॥ मकरे चैव कुमा च भयमेव विनिर्दिशेत्। गोस्तोः समाधमीनेषु श्रस्यं सम्पदाते सहत्॥ प्रशस्ते चन्द्रतारे च गुनिः गुक्तेन वाससा। सात्वा गर्भेश पुष्वेश पूजियतां विधानतः॥ पृथ्वोच यहमयुक्तां पूजयित्वा प्रजापतिम्। यग्निं प्रदक्षिणीक्तय दीयते भूरिदक्षिणा ॥ कृणी ह्यौ नियोक्तयौ नवनौतेष्ट्रितन वा। मुखपार्खं तयोलियात् फालाग्रं . कनकै: सृशेत् ॥ उत्तरामिमुखो भूता चोरेणार्घो प्रदापयेत् । ततः ग्रुभकरः योमान् कपिकर्म समाचरत्॥ वर्जयेद्भन " म्यद्भाषा चुरभगन्य वर्जयेत्। विकलं किम्नलाङ्गलं कपिलं व्यमं तथा॥ इलप्रवाद्यन कार्यं नीक्सि: क्षधिकर्मकै: [ इतादिभिर्देढे: चेमं कुर्द्रहेने ग्रुभं बदेत् ॥ व्रथभा यदि मुद्दान्ति तस्य विषयदा भवेत्" ॥ कपिरिति श्रीपः "तस्रात सर्वप्रय-बेन निविधं कारयेत् सद।। एका अयकरी रेखा छतीया चार्घदायिका॥ पद्ममो या भवेद्रेखा बहुग्रस्यफरा हिसा। चत कहुं न कर्त्रयं सहादोपस्ततो भवेत्॥ संपूज्यानिं दिजं देवं कुर्याद्वनप्रवर्तनम्। ऐमनिष्टप्रानापं किवरेखां न कार्येत्॥ सर्तया वसवयेन्द्रः पृथ्रामः सचन्द्रमाः। परागरी दलभद्रः सर्वविद्यीपशान्तये॥ इले प्रवाद्यमाने तु कुर्मा उत्पदाते यदि। ग्टिंडिणौ स्त्रियते तस्य ततोऽस्नेय भयं भवेत् । साइसं भिदाते चापि प्रभुस्तव विभग्नति। देशाभद्री यदा कर्तुः सगयो सीवितस्य च ॥ सुतनामी युगाः भद्रे समीने सियाते गुतः"। समीने योक्तवत्वनकाष्ठदये। "योक्षक्तदेत् व्यामद्भः यस्यद्वानिय जायते। दले प्रवाद्धाः भागे त् गोरेक: प्रपतेद् यदि । प्रपतेक्षक्रमावस्तु वन्धनं स प्रवद्यते। स्वरातिसाररोगेष कविभन्ने विनिर्देशेत्। प्रवाद-मुक्तमाद्रस्तु सती गीः प्रपतेत् यदि। यत्मात्तीटेन नदन्ति

ततो त्रस्यं चतुगुं गम्॥ इमवादिविक्तिमच्य बीजस्थोत्रयतः ग्रचि:। इन्द्र चित्ते निधायाय खय सृष्टिवयं वपेत् ॥ कला चान्योग्यप्रोत्साई नर्तको द्वटमानसः। प्राद्धा खः कलसं ग्रह्म इम मन्तमुदौरपेत्॥ लंबे वसुस्रारे सीते बहुपुष्पफलप्रदे। नमस्ते मे शुभं नित्यं क्षपिं मेधां शुभे कुरु॥ रोहन्तु सर्व-ग्रस्यानि काले देव प्रवर्षतु। कर्षकास्त् भवन्यग्रा धान्येन च धनेन च खारा"॥ कलारताकरे ब्रह्मधुराणम्। "चैवे च क्षणपञ्चम्यां कारमोरा च रजखला। नित्यं भवति तसातां क्रांवा ग्रेसमग्री स्वियम्॥ सभ्यद्गवस्त्रनेवेदौः पूज्येश्व दिभ-त्रयम्। पुष्पालद्वारभूपैय गोरसं वर्जयन्ति च ॥ काश्मीरा पृथ्वो। "प्रष्टम्याञ्च ततः साम्य ताभिरेव ग्रहे ग्रहे! सुसाः ताभि: प्रष्ट्रशभिजीवपसीभिरेव स ॥ अनन्तरं हिजै: स्राध्य सर्वोषिधयुतैर्जलै:। गस्वैविजिस्तया रहे: फलै: सिहार्यकैस्तया ॥ स्रापित्वा च तां देवीं गसीमा स्रोधेय पुजयेत्। तसिवेदिसः शिष्टन्तु पाशितचा रहि रहि॥ चतः परं साता गर्भे रहस्रति ऋतुमेदिनी"। तथा "ब्रह्मा विष्णुश्च कद्रश्च काप्रथप: सुरसी-ग्रहे। इन्द्र प्रचेताः पर्जन्यः श्रीयसन्द्राकंवद्भयः॥ वलदेवे इसं भूमिईषमं रामस्याणौ। रसोद्यो सानकी मीता युगं गगनमेव च"॥ सौता लाङ्कलपदतिः। युग युगकाष्ठम्। "पते दाविश्रतिः प्रोक्ता प्रचानां पतयः ग्रभाः। गोमद्रचे सु संपुच्याः क्षयारको सहीत्सवे॥ यध्येः पुष्पेश ध्रपेश माल्ये रते: प्रयक् प्रयक्। इसेन वाइयेड्सां खयं सात: सक्षणतः"॥ तथा। "द्यमा बोजन्तु तत्वैव भोक्तव्यं सान्धवै; सह" ॥ वीज-यपमं प्राजापत्यतीर्थेन यया हारीतः। "किनिष्ठायाः प्रशात् प्राजापत्यभावपनं दीमतर्पणे प्राजापत्येन कुर्छात्" द्ति। राजमात्तेष्डि। "मिलां दश इसे ससीरितां पद्म इसे

घनम्। नित्यस विश्वते भक्तं नित्यमेक इसे ऋणम्"॥ श्रोम-तर्पणे लालदोमसनकादितर्पणे पराग्ररः। 'वैग्राखे वपनं श्रेष्ठं मध्यमं रोहिणी रवी। अतः परिमात्रधमं न जातु श्रावणी ग्रभम्" । स्वोतिषे। "पूर्वभाद्रपदा सूनं रोडिखनर-फल्गुनो। वियाखा गतिभया वाद्य धान्यानां रोपले वरा ॥ सदोसा रक्षनीं नीसीं पुत्रवित्तेवियुज्यते। स्वयं साम्रे पुनस्ते हे पास्रयसेव द्यति॥ भाराभे ग्रहमध्ये वा मोहात् सर्पप-भायपन्। पराभवं रिपुर्याति ससाधनधनसयम्॥ निया भीनी पसागय विचा खेतापराजिता। कोविदास्य सर्वेत सर्वे निर्मान्त मद्भनम्"। निर्मा हरिद्राः कोविदारको रत्तकाश्चनः। "हैमाग्यमा दृश्यवीर्भ खाती मन्वेष रोपयेग्। वसुधिति सुगौतिति पुर्खदिति धवैति चा नमन्ते शुभगे निर्ध ष्ट्रमोऽयं वर्षतामिति। भरिष्टामोकपुचागवकुनाम्बमियद्भवः॥ माइस्याः पूर्वमारामे रोपणीया ग्रहेषु च। प्रश्वत्यमेकं पिणु-सदीकां हो चम्पको बौख्य देगराणि । तालाष्टकं चौफल-मसक्य प्रचान्त्ररीपी नरकं न प्रश्लेत्य । दानरदाकरे देवी-पुराणम्। "ये च पापा दुराधाराः जीतरूक्वेदकारियः। त्राधावीचादिनरके पचाने ग्राची दिनम् । गुतासी जीधा-सानाम् बद्याकीसिंता भूव। तिखन् देगे भयं निखं राजामी म थिरायुपः। म च नन्दत्यय सीक यव श्रीफन-शेदिमः ॥ शोसद्यिक्यः। "किस्तियामहर्केमापिशन्यः शस्योषु बस्यमित्। न व्याधिकीर शिशायां भयं नज भयत् क्षित् । मिश्वः प्रयममाञ्चमानिमगृद्वामगीरय वर्गारे मे योगदामधरपादाः सुग्रमिनः गाद्रमदं मानागमगरपायाम-रायो सध्ये यास्ययपयोधभाद्रमं यवसमुनं यापुर्वेगं यास्यक-प्रसम्भ योभक्तमनामाद्यापयन्ति यसुक्षम्बाद्यस्य पाताः

भोऽभीगान्धीदतीपाण्डरमुण्डीधूली जुड़ारतत्याक्षयरा इता-फड़िड़ा एलावानरा गरुड़ा इमलुकमिडधादिरीगम्। खल्ड-यतच्यमपि विलब्धं माचरतः विलब्धं कारयत तदा बुधान् यतखण्डं कारयामीति। झां श्री श्री जीरामाय नमः"॥ इति शस्येषु बन्धयेत्।

षध सृष्टिप्रहणम्। दौषिकायाम् "यास्याजपादापि-धनानस्तोयग्रम्भचित्रेतरेषु कुलार्केजवारवर्जम्। शस्तेन्द्र-योगकरणेषु तियौ विरित्ते धान्यच्छिदिः स्थिरनरस्वसृगोदयेषु"॥ वलादः। "रैवतौष्टस्तमूलेषु यवणे नागयास्ययोः। पितः देवे तथा सौस्ये धान्यच्छेदं सृगोदये"॥

श्रय घान्यच्छेदनप्रकारः। "सपती साससुती च यवधान्ये सकाण्डके। किन्द्यात्तिलञ्च निष्पत्रमेतत् पाराग्यरं सतम्"॥ पराग्यरः। "न सृष्टिग्रहणं कुर्यात् कदाचिष्ठटपीषयोः। ईग्राने स्वनं कुर्यात् साईसुष्टिहयं ग्रचिः॥ पीणो पृष्ये ग्रमाष्टे वा पूज्यित्वेष्टदेवताम्। ग्रस्थविष्ठप्रगान्त्यथं चेत्रे वा इव्यभीजनम्"॥ वीधायनः। "स्थाष्त्रगज्ञाधान्यानां गवां चेव रकः ग्रमम्। श्रयाग्रसां समृष्टिन्याः खाजाविखरवायषाम्"॥ समृष्टिनी संमार्जनी। क्रत्यचिन्तामणी मिधरोपणम्। "वटस्य सम्पर्णस्य गम्भारी ग्राल्यची तथा। पीष्टुस्वरी तथा धात्री या चान्या चीरधारिणी॥ स्तीनान्ती कर्पकैर्नित्यं मेधिः कार्या पाल्पदा"॥

षथ बीजसच्चाः। "इस्ता चित्रादितिस्वाती रेवत्वां सवणहरें। स्थिरे लग्ने गुरी ग्रुक्ते बीजं धार्यं ज्ञवासरे ॥ साचि वा फालाने वापि सर्ववीजानि संग्रहेत्। शोपयेक्तापयेद्रीद्रे रात्री घोपनिधापयेत् ॥ तत्य पुटिकां बह्वा शोपयेच पुनः सुनः। स्थापयेच प्रयक्तेन यथा भूमिच न सृत्रोत्॥ दीपाः

मिनना च संस्पृष्टं वृष्ट्या चोपइतञ्च यत्। वर्जनीयं तथा बीजं यस् स्थात् कीरसमन्वितम् ॥ यास्याग्निषद्राहि विद्याखपूर्वा-माहेन्द्रपित्रेशतरमेः श्रमाहे। धान्यादिसंस्थापनमेषु श्रस्त मगस्यिरदाङ्गरहोदयेषु॥ सीम्यादितिमघा च्येष्ठात्रात्तरेषु च कारयेत्। सीने लग्ने श्रमे चन्द्रे निर्धनक्रावर्जिते ॥ चेप्तव्यं कोष्ठके धान्यं गर्गो बद्ति सर्वदा। धनदाय सर्वस्रोकिष्टिताय देशि मे धान्धं खाद्या । नम ईहायै ईहादेवी सर्वलीकवि-विदेनो कामक्पिणि धान्यं देशि खादा। लेखियता इमं सन्तं धान्यागारे विनिधिषेत्"॥ पुराणसर्वस्ते। "अन्तं लिखिला पत्रे च मध्ये धान्यस्य धारयेत्। पश्च धान्यराग्रेस्त मूषिकादिनिहत्तये॥ दिच्चपदिद्युखगमनं स्थादिभनवासु नारीषु। व्ययमपि शस्यफनानां न वृधो बुधवासरे क्रुयात्॥ विष्तरे रेक्त्यां धनिष्ठा वार्रणेषु च। एतेषु पट्सु विज्ञेयं धान्यनिष्क्षमणं बुधै:॥ अवणातय विग्राखा भ्वपीणापुनर्व-स्नि पुष्यस् । प्रश्विन्यय च्येष्ठा धनधान्यविवर्शिनी कथिता"॥ धान्धादिखापनम्। "कुमामासेऽपि सर्वेषां मन्दिराणासुप-क्रमम्। सहयंष: प्रशंसक्ति धान्धागारं विषय च ॥ प्रत प्रयोगः। पौर्णमास्वलचैत्रीक्षणपद्मयां प्रश्नो रजससातां दिनवयमेकस्मिन् पर्वताकारे उद्यमदेशे संधवाः स्वियः प्रमूजये-युरष्टम्यां तां स्नापयित्वा ताः पूजयेयुः। ततः ग्रमदिने वीज-वयनदिने वा सर्वेदिधिगन्धवीजरतफलखेतसप्पै: पृथ्वी साप-यित्वा गन्धादिभिः पूजयेत्। नैवेद्ययेषञ्च पराद्वोत्तव्यम्। ग्रय प्रसम्बाष्ट्रिने वीजवपनदिने च क्षतस्रानादिराचान्तो गर्से चेत्रे सत्वा जलेनापूर्य तत प्रजापति स्यादिनवपदान् एव्योच पूजयेत्। "हिरावागमें वसुधे शैपस्वीपरिशायिनि। वसाम्यदं तव एष्ठे ग्टहाणार्घा धरिति मे"॥ इति मन्तेण

चौरेपार्घ द्यात्। ऐग्रान्यां पुष्पनेविद्यैः प्रणवादिनमोऽन्तेन ब्रह्मणे नमः नमस्ते बहुरूपाय विष्ण्वे परमात्मने स्वाहा इलानेन वि:पुष्ठित। बुद्धाय काश्यपाय सरस्वत्ये इन्द्राय तदर्घामसम्। "मकः सुरपतिः श्रेष्टो वलदस्तो महावतः। श्रतयन्नाधिपो देव तुभ्यमिन्द्राय वै नमः"॥ प्रचेतसे पर्जन्याय येषाय चन्द्राय पर्काय वक्षये वसदेवाय स्ताय भूमये व्षभाय रामाय लक्षणाय जानको सीतायै स्वर्गाय गगनाय इति दाविं-शति पूजरोत् चेत्रपालमस्ति हिलच पूजरोत्। त्रसितं प्रद-चिणोक्तत्य ब्राह्मणाय दिच्यां दयात्। ब्रास्वपक्षवीदनद-धीनि मर्ने निचिष्य सिकाभिः पूरयेत् कष्टी हषी नवनीते-र्धतेन वा मुखपार्खयोनिचिपेत्। इसप्रवादकान् गन्धाः दिना भूपियत्वा इसं माच्यादिभिः पूजियत्वा दिधष्टतमधुभिः फामायं प्रस्थिय हेमा फालायं घर्षियवा कर्ययेत् वस्त्रिन्द्-मृथुरामेन्दु पराग्रयसभद्रान् छारेत्। एका तिसः पश्च रेखा इसेन काथाः सम्मण्डस्य साह्नाः कविमाय हवा न योक्तवाः रुमप्रवादकाय समर्थाः कर्त्तच्याः रहानि नवानि हट्रानि कर्त्रस्थानि द्यमयुद्धादिकं न ग्रामटं ह्यमाणां नर्दनेन चतु-गुणं गम्य मृतपुरोपोत्मर्गं तथा। बीजवपने लिएसधिकं मुवर्णनसम्युक्त योजमुधिवयम् इन्द्रध्यायन् स्वयं प्राजापत्वेन तीर्थेन यपेत् उभयवेव प्राड्मुखः चलपूर्णकनमं रष्टहोत्वा "त्व वै वसुन्धर् सीते बहुपुष्पफलप्रदे। नमस्ते मे गुभां नित्यं एपि मेधां श्रमे कुरा। बोदन्तु सर्वश्रम्यानि काले देव: प्रवर्ष-त। कपैकासु भवन्त्रया धान्येन च धनेन च स्वाहिति प्राचेषेत् ।

भय षष्टिसंवसरगणना। "शकेन्द्रकानः प्रधगाकति २२। मः गगाइनन्दामियुगैः ४२८९ समेतः। गराद्रिवसिन्द

१८७५। इत सलब्ध षद्याविशिष्टा प्रभवादयोऽव्हा । वर्ष वर्जन्तु यच्छेप स्र्ये सपूर्य खोमिभ । ६०। इत युत्कमत खालिहते भी मासकाद्य ॥ असार्थ । भाकेन्द्रकाल शकराजाञ्दकाल प्रथक पासिति २२। दाविशत्या पृरित शशाद्वानन्दाध्वियुगैरक्षनवत्यधिकशतदयाधिकचतु सहस्रे सम त्रो द्वा यराद्रिवस्तिन्दुद्वत पश्चसप्तत्याधकाष्ट्राद्रशयतैर्यावत् सत्य प्वर्त् यक्षीति तावता द्वत कर्त्तव्य सलव्य पूर्वयकाष्ट शरितादिना सम्बग्धया युत कार्य पद्याप्त्रीपे पथादेपोऽङ्क पूर्ववत् पद्याद्धतसम्याविष्यष्टे प्रभवादय एकावश्येपे प्रभव द्वाद्यविश्वष्टे विभवादि वर्षवर्जन्तु यच्छेष वर्षातिरिक्त शरा द्रिविस्वन्द्रम्नताविश्रष्ट तत् सूर्येद्दिशिम सपूर्य छो।र्मिभ वध्याद्वते व्युत्क्रमत इत्यनेन परिष्टताविष्यष्टा अद्भा दण्डा पष्टिष्ट्रतलव्यायके खामिहते वियता हतेऽविशिष्टा श्रयका सक्या मासा स्वरिति। प्रभवादि वर्षास्वृपक्रस्य "षाद्या तु वियतिवाच्चो हितौया वैणावी सृता। खतौया बद्रदैवत्या श्रेष्ठा सध्याधमा भवेत्'॥ भविष्यपुराणे भैरव खवाच। "पद्यद्य वाध्यास्यत क्रारा सीस्याय ये प्रिये। सवस्रार्फल मुख्य प्रभवादी वरानने॥ बहुतोयास्तया मेघा बहुमस्या च मादनौ । बहुचोरास्या गावी व्याधिरागविवर्शिता ॥ प्रशान्ता पार्थिवासैव प्रभवे परिकी शिता। १। "सुभिच चीममारीग्य सर्वे व्याधिविवर्जिता। प्रशान्ता मानवास्तव महुशस्या वसुन्धरा । हृष्टासुष्टा जना सर्वे विभवे च वरा न्न"। २। "रीगा बहुविधारौव समुख्या वाजिकुस्तरा । सर्वे एव प्रनद्धिता श्रुक्ते वर्षे वर्षम् । ३ । "समस्य समस्य समस्य धनधान्यसमाकुलम्। नित्योत्सव प्रजावृद्धि प्रमोदे लायते प्रिये"। । "नौरोगास निरावाधा मानवा विगतदिष।

बहुचौरास्त्रधा गाव: प्राजापत्ये वरानने"। ५। "निरातहः लगत् सर्वे धनयौषनगवितम्। चिद्गरसि प्रजाः सर्वा निखोलाहा वराननं"। ६। "स्रीमच होममारोग्यं वर्षा-कालं सुग्रीभनम्। श्रस्यष्टिं विजानीयात् स्रीसुखे स्र-वन्दिते"। ७। "वहुचौरास्तया गावी धान्यच बलवत्तरम्। नायन्ते सर्वश्रस्यानि भावे वर्षे वरानने"। 🖛 । सप्तार्वे कायते सर्वे घततेनरसादिकम्। प्रजानाच भवेद्रिर्ध्न-सवसरे गुमे। ८। "निप्यत्तिः सर्वेशस्थानां मध्या धातरि कौ निता। प्रमुद्धौरगुडादीनां प्रवस्तवं वरानने ॥१०। "सुभिच चेममारोग्यं कार्पासस्य महाईता। नवणं मधुगध्यस र्षेखर दुर्लभ प्रिये"। ११। "सुभित्तं सिममारोग्य प्रशालाः पार्थिवाः प्रिये। तस्करीपहत वित्तं बहुधान्ये वराननि ॥ ्१२। "राष्ट्रभद्रय दुभिचं तस्करैयोपपौडनम्। जानौया-दिग्रइं घोर प्रमाधिनि वरानने । १३। "जायन्ते मर्वश्रस्यानि मेदिनौ निर्पद्रवा। स्वणं सध्यथ्य सम्राधं विक्रमे प्रिये"॥ १४। "कोट्रवाः गालिमुहास त्रक्षमापास्त्रयेव च। सद्वार्षः लायते सर्वे हपे च सुरवन्दिते"। १५। "चनकामुहमाषास यन्यच विदल प्रिये। मदार्घ जायते सर्व चित्रभानौ वराननि"। १६। "सुभिक्षं चेममारोग्यं विश्वच निरुपद्रवम्। व्यवद्वारी भवेत् हृष्टः खर्भानौ देवपूजिते"। १७। "मतिवृध्यि जायेत धान्यस्याय प्रपोडनम्। गस्यं भवति सामान्यं दारुणि सुर-विन्दिते"।१८। "बहुमस्मानि जायन्ते सर्वदेशे सुनीचने। मौराष्ट्रे साटदेमे च पार्थिवे नाव मशय."।१८। "दुर्भिचं जायते घोरं सर्वोपद्रवसंयुतम्। अनाहृष्टिः समास्याता व्यये मवसरे प्रिये"। २०। "उदातो वर्षणे मेघो जल नैवीपजायते। मदार्घं सर्वे जिद्वेष सर्वेमव वरानने"। २१। "कोद्रवाः ग्रासि-

मुद्राय कङ्गुमापास्तयेव च। सुसमं जायते सुखं जगहै सर्व-धारिषि"। २२। "भनम्निपवला लोका धान्यौषधिपपौडनम्। जायते मानुपे कष्टं विरोधिनि न संशयः"। २३। 'सर्वाः प्रजाः प्रपीद्यन्ते व्याधिः योकस जायते। शिरोवचीऽचि-रोगास पापादि विष्ठते लनाः"। २४। "उपद्वतं लगत् सर्वे तस्वरैर्म्भिकै: खगै:। पौड़ितास प्रजाः सर्वाः देशभङ्गा खरे प्रिये"। २५। सुभित्तं दीममारोग्यं श्रस्यं भवति शोभनम्। सहसीरास्त्रया गावो नन्दनं नन्दने प्रिये"। २६। "मल्प-तीयास्त्रया मेघा वर्षन्ति खण्डमण्डले। नग्यन्ति सर्वश्रस्यानि विजये नाव संगयः"। २७। "चिषयास तथा वैग्याः शूद्रास नटनर्नकाः। पौडितास्ते वरारोहि जये सर्वे न संग्रयः"।२८। "सरोगञ्च तथा देवि दाइक्वरसमन्वितम्। श्रीभमूतं जगत् सवं मनाध सुरवन्दिते"। २८। "घोषधान्यचयो देवि सर्व-श्रास्थमद्वार्षता। व्यवद्वाराथ नग्यन्ति दुर्मुखे दुर्मुखाः प्रजाः'॥ २०। "पौद्यन्ते सर्वश्रस्थानि देशे देशे शुचिसिते। हेमलम्बे प्रजा: सर्वा: चीयन्ते नात्र संभय: । ३१। "तस्करै: पार्थिवै-येव श्रीभभूतमिदं लगत्। श्रघीं भवति सामान्यो विसम्बे तु भयं सहत्"। ३३। "विषमस्यं जगत् सर्वं विरोधे भय सप्रवम् । विकारी सर्वतीपायी सम वास्यन्तु नान्यथा" ।३३। 'क्विचर्यात पर्जन्यो देशे संच्छितमण्डलः। दुर्भिसं सर्वरीयर्षे व्यवद्वारो विपर्थयः"। ३४। "दुर्भिचं जायते सर्वाः मिदिनौ दुचिति प्रिये। प्रविप्नवन्ति तीयानि पौडिता सानवा सुवि । ह्या "सुवर्णक्ष्यधान्यानि जगत् मदे सुश्रीभनम्। नाह्मणा विण्वास्ष्याः स्मिचे ग्रमकृत्प्रिये'। ३६। 'स्मिच चेम-सारीग्यं द्यार गोबाह्मणाः प्रिये। सुस्थिताः योभने वर्षे प्रजाः सदी: सुली तते"। ३७। "विषम से जगत् सबे व्याकुलं सस्-

दाष्ट्रतम्। जनानां जायते भद्रे कोधे क्रोधः परस्परम् ।३८। "सर्वत्र जायते चेमं सर्वश्रसमद्वार्घता। विस्वावसी वरारोहे कार्पासस्य सद्दावंता"। ३८। "पार्थिवैर्न्पसैन्यैय समस्तः खण्डमण्डले। प्रयोद्यन्ते जनाः सर्वाः भयभीताः पराभवे'। ४०। "त्यपधान्यानि पौद्यन्ते प्रीष्मे वर्षति वासवाः। प्रवद्गे पौड़िताः सर्वाः प्रजास सुरवन्दिते"। ४१। "जायन्ते सर्व-गयानि सुभिचं निरूपद्रवम्। सौम्यष्ट्षिभवेदाना कानिके च शुमं बदेत्''। ४२। "सुभिचं चैममारोग्य मुख्य निरुष-द्रवम्। सीम्यदृष्टिभवद्राला सीम्ये सीख्यं प्रकीर्त्ततम्' ।४३। "तीयपूर्णी भवेगोधी वर्षते च दिने दिने। निरूपद्रवाध राजानः सर्वसाधारणे प्रिये"। ४४। "वासवी वर्षते देवि! देशे चाखग्डमण्डले। महिच्छते कान्यकुले विरोधिक्षिः नायक्रत्"। ४५। "सभिभूतं जगत् सर्वं हो ग्रीवेह विधे: प्रिये। मार्कतेः फलदाईश्व परिवारिणि शोभने । ४६। "निष्यतिः सर्वशस्यानां सुभिचं भवति प्रिये। प्रमाधिनि जनीदारी जनदो मोदते प्रजाः"। ४०। "निष्यत्तिः सर्वश्रस्यानां सर्व-अस्यमद्वार्धता । छतं तैलसम याति चानन्दे नन्दिनि प्रजाः" । ४८। "कोद्रवाः गालिसुहास पौडाले वरवणिनि। सर्वी-पधीनि धान्यनि राचसे निष्ठ्राः प्रजाः"। ४८। "द्भिन्नं नायते घोर धान्योपधिप्रपौडमम्। अनले च समाख्यातं गाम कार्या विचारण"। ५०। "देशभद्ग: सुदुर्भिद्यं समासात् कथयाम्य हम्। पिङ्गले चार्पद्माचि दुर्भिच नर्भदातटे"। ५१। "गोमहिष्यो विनद्यन्ति ये चान्ये नटमर्तकाः। वासवी वर्षते देवि असादा न हि लायते" ॥ "तिलमर्पपमापादिका-र्पासानां महावेता। गोमहिषः सुवर्णान कांद्यतासादाः गेपतः॥ तत् मर्वं देवि विक्रीय वर्त्तव्यो धान्यमध्यः। तेन

धान्धेम सीकोऽय मिस्तरिचति दुर्दिमम्। पार्थिवामोपका दीना कासयुक्ते प्रयोडिता"। ५२। "तीयपूर्णा स्मता मैघा बहुशस्या च मेदिनो। निष्ठ्या पार्थिवा देवि सिहाये च वरानने । पूर् । 'पत्पतीयधन। यैव कीटका प्रवला स्मृता । विरुद्धा पार्थिवा देवि रोट्रे संवसरि प्रिये"। ५४। "दुर्भिच मध्यम प्रोक्त व्यवद्वारो न वर्त्तते। भवेदै मध्यमा द्वष्टिर्दुर्मतौ ससुपस्थिते"। ५५। "दुभिच सायते सोका सर्वे द्रविष वर्जिता । प्राणिना जायते चर्षो दुन्दुभौ वरवर्णिन"। ५६। "मिइपौगोडिरण्यादितास्रकास्याद्ययेपत । तत् सर्वे देवि विक्रीय कर्तव्यो धान्यसञ्चय ॥ रक्ते सवलारे देवि क्रार्विह र्नराधिय। सानवा क्र्रचेष्टास सम्रामे रुधिर भवेत्"।५०। "दुर्भिच मरण घोर धान्योपधिप्रपौडनम्। पापरोगी भवे हेवि रक्षास्येऽभरषन्दिनि । ५८। "रोगी मरणदुर्भिच विरोधीत्तरसङ्गलम्। क्रोधितु विषम सर्व समाखात धर प्रियेण। प्रशा "मेदिनो लभते देवि सर्वभूत घराचरम्। देशभद्भय दुर्भिस चये ससीयते प्रजा ॥ मौराष्ट्रे मालवे देशे दिचिणे कोइने तथा। दुर्भिच जायते घीर चये संवलारे प्रिये॥ कीमुदी नर्भदाद्याद्य यसुना नर्भदात्रम् । बिन्याया सैन्धवद्यापि विनय्यति न सयय ॥ सिंहल सध्यदेशव कासन्द्रर तथैव च। चये चयन्ति, सर्वाणि नान्यया वर वर्णिनि"। ६०। वराइमहितायाम् "नचत्रेण सहोदयमस्त वा याति येन सुरराजमन्ती। तसस्य कर्त्य वर्षे भासक्रमे गीव। वर्षाणि कार्सिकादीनि चाम्नेयाइहयानुयोगीनि क्रम श्रीस्वभञ्च पञ्चममन्यमुपान्यञ्च विज्ञय नच्चचेष गुरुभुज्यमान नद्धेय। श्रामय सिविका पद्मम फाल्गुन वर्षम् सन्यमा खिनम् उपात्य भाद्रम्। अन्योपान्थौ विभी ज्ञेयौ फाल्य

नय विभो मतः। येषा मासाहिमा चेया कतिकादिव्यव-स्यया। दे दे चित्रादिताराणां पूर्णपर्यन्दुसङ्गते। समासैता-दयो त्रेया स्तिभै: यद्यान्यसप्तमाः" दति सद्वर्षणकाण्डाञ्च । यूर्णपर्वेन्द्रसङ्गते पीर्णमासीयुते हे हे तारे तदेकवाक्यतया पूर्व-वचने पौर्णमासी लाभः। यथा मासानां पौर्णमास्यां कत्ति-कादिएम्बन्धात् कासिकादित तथा वर्षाणामपि गुरोः कति-कादावस्तीद्यसम्भात् कात्तिकादिलं तेन छत्तिका रोहिस्यी-रेकतरसिम् भूषे स्तोदयेऽन्यतरसाभे कार्त्तिकं वर्षम् एवं मार्गभौपीदि। प्रव वर्षद्वयघटकयोन्द्वयोरेकतरसिम्बन्तं गतो गुकरन्यतरियानुदेति तव का गतिरिति चेत् कार्त्तिरी त्तरं मार्गशीर्षं ततः पौषभित्यादिक्रमाप्ततिरिति। फलानि च। ग्रकटानलोपजोविकपौडा व्याधिशोक: दृहिस्तु रहा-पीतककुसुमाना कार्त्तिके वर्षे ॥१॥ "मीम्पेइन्देरनाहरिः मृगात्रात्मार्डनेस श्रस्माशः। धाधिभयं मिनैरपि भूपानां जायते वैरम्"॥२॥ "ग्रमक्तकातः पौषी निष्ट्त-वैराः परसरं भूषाः। दिविगुणो धान्वार्घः पौष्टिककर्म-प्रसिद्धिः"॥३॥ "पिष्टपूजापरिवृद्धिमधि हार्दश्च सर्वभूतानाम्। यारोग्यद्दष्टिधान्यार्धं सम्पदी वित्तताभय् ॥ ४॥ "फास्गुने वर्षे विद्यात् क्षेचित् कचित् चेमहस्यादिशस्त्रानि। दौभीस्य प्रमदानां प्रवस्थीरा नृपायोगा "। ५॥ "चैवे सन्दा हिष्टि: पियमेनं चेममवनिपां सदवः। हिंहिय कोषधान्यस्य भवति पौडा च रूपवताम्"॥६॥ "वैषाणे विगतभया धर्मपराः प्रमुदिताः प्रजाः सनृपाः। यज्ञक्रियाप्रवृत्तिनिष्यतिः सर्व-भयानाम्"॥ ७॥ ''न्येष्ठे ज्ञातिकुन्धर्मेश्रेणो श्रेष्ठा नृपाः स्थर्भनाः। पोडान्ते धान्यानि च ज्ञिला कहुममीनानि"॥ पा "यापादे जायत्ते शसानि क्चित् इं हरम्यत्। सोग-

द्यिमं मध्यं श्रस्यव्यया भवन्ति भूपाः"॥ ८॥ "त्रावणे वर्षे" चेसं ग्रस्थानि पाकसुपयान्ति । चुद्रा ये पार्थिवास्ते पीद्यन्ते री च तद्वताः"॥ १०॥ "भाद्रपरे चल्वीनं निष्पत्तिं याति सर्वश्रस्य स्वा न अवत्यपरं श्रस्यं कचित् सुभित्तं कचित्र दुर्भि-ध्वम्"॥ ११॥ "घाखयुर्नेऽध्यजसं पतित नलं प्रसुदिताः प्रजा: चेमम्। प्राणचयः प्राणस्तां सर्वेषामर्थवाहुत्यम् ॥ ''त्ट्रमैत्राष्ठ्रतिष्यद्रिविखदेवीनिनिग्रतिः। ११।१७।८। १५। ०। १३। १८। सप्तिः श्रीपतच्छाकात् क्रमादपीदिकं वदेत्। वर्षाधान्यं छणञ्चेव शीतं घमं समीरणम्। प्रजाः वृद्धि तत्त्रयम् राजवियद्मेव च"॥ सद्मेवङ्गतिम्बद्धिवम्बः देवोन[वंग्रति:। एकाद्रमसाद्रगनवपश्चद्रशसप्तवयोद्रशोन-विंगतयः। तव सप्तभिष्टं तेशकाब्दे एकावशेपे तहपं रुद्रमंख्या वर्षा मैत्रसंख्ये धान्यमित्यादि। मालान्यायेन रहमैताभ्यां चयविग्रही च्रेगी। एवं हावशेषे सेह्यसंख्या वर्षाद। एवसन्यच। 'जीवाक्षुधमन्दारकाव्यचन्द्रमसः क्रमात्। राजा सन्दी जलाधीयः ग्रस्पपोऽद्रिष्टतात् ग्रकात्<sup>ष्ठ</sup> ॥ त्रवावि मालान्यायेन सप्तद्धतभकाब्दे एकावशेषे जीवो राजा धकी मन्त्री बुधी वर्षा-धिपः ग्रानिः ग्रस्याधिपः हावग्रेषे रच्यादिरवमन्यक्ष । राजफली शौनकः सार्चे । "परिगोधमिति सलिलं सोमे पयो विस्तरं चीणीजिऽपि च वर्षणं कघमपि जे च प्रभूतं पयः। पृथ्वी श्रस्वती गुरी भृगुस्ते शस्यश्च नानाविधं सन्दे प्राणिकवन्धं शहुधवना वर्षाधिपे नियितम्। सनेशी समाशीयो यसिन् वर्षं चृषो भवेत्। अवस्थो वा इषितो वा क्ररोऽपि ग्रभ-मादिशेत्। विषुते शाकवर्षं तु चतुर्भः ग्रेपिते क्रमात्॥ भावती बिद्धि संवत्तं पुष्करं द्रोणमस्बदम्। पावर्ती निर्जली भवः संवर्त्तय वहदकः॥ पुष्करो दुष्करनतो द्रोणः ग्रस्यः

प्रपूरकः। पूर्वापाढ़ां गतो भानुजीसूतैर्याद दृश्यते। तटा वयोदशाहानि मिथुनादिषु वर्षति"॥ भुजवसभौमे। "व्रजति यदि कुनः पतद्वमार्गे घट इव भिम्रतसी नसं ददाति भव भवति दिवाकराग्रतसेत् प्रनयसनानिष ग्रोपयत्यवश्यम्। यावसार्त्रण्डस्नुयरति धनुरयो समायं सीनकन्ये तावद् भिष्तः पौडा भवति च मरणं सुलिपामादिघोरम् उर्वी निस्रूर्थ-ग्रन्दाग्रविगरपटले नर्तयन्ते विग्राचाः ग्रामाः ग्रन्या भवेयुर्नर-पतिरिद्धता भ्रास्तिकद्वालमाला। वकं करोति रविली धरणी-सुतो वा मूलर्र्यसमघरेवतिमैत्रभेषु। छत्रोपभद्रपतनादि च सैनिकानां सर्वत लोकमरणं जनधौतदेशः। यदा च सीरि: सुरराजमन्त्रियां समेख तिष्ठेत् क्वचिद्यमण्डले । तदा-द्भवद्गान्यकको शलेषु विभागकेषां कुरुते वसुन्धराम्। तिष्ठेतां यावदेकर्चे वाक्पत्यवनिजी पदे। तावत् चुद्रोगसंयामात् प्रजानां चयमादिगेत्। पारभ्य श्रुक्तप्रतिपत्तिथि मार्गानु चैत्रकं गर्भोनी हारजसदेशित प्राष्ट्रपरी चणम्। यस्त्रतं गतवति विधी जायते तव गर्भः पद्याद्यास्वतिशतके चाङ्कि तस्य प्रस्तिः"॥ वराष्टः। "पश्चस्यादिषु पश्चषु कुमोऽर्के यदि भवति रोडिगौयोगः। प्रधमतमाधममध्यममतिमण्ड-कासां पातः। प्रतिपदि मधुमासे भानुवारः सितायां यदि भवति तदा स्यान्तिजेला ष्टिरिव्दे। चिवरतजलधारासान्द्र-विन्द्रवाहेर्धरिणतलमग्रेपं व्याप्यते सोमवारे। अवनितनय-वारे वारिहरिन सम्यक् व्धगुरुसितवारे शस्यमस्यत् प्रमोदः। जलनिधिरपि सौरे गुणते काम्बृद्दष्टिः सकलमिदमुदारेणाम्ब -वैदां पृथिव्याम्। श्रापाद्यां पौर्णमास्यां सुरपतिककुभीवा-तिवातः सुष्टिम्। श्रस्यध्वंसं प्रकुर्धादिष्ठ दहनदिशो सन्द-दृष्टिर्यमेन। नैऋत्यां निष्मसास्यात् वर्षवहुजली वायुन्।

वायुक्तोपः कौवियां ग्रस्थपूर्णा भवति समुदिता मेदिनी ग्रम्यु-नापि। रवे: कर्कटसंक्रान्तो देकाणवयभेदतः। चादिमध्या-म्त्रीदेन वर्षायाः कासनिर्णयः। वियद्योजनविस्तीर्णं जनयोश्रनमायतम्। चाद्यस्य भवेगानं सुनिभिः परि-कोत्तिम्। युग्माञगोमीमगते ग्रागाद्वे रविरंदा कर्कटकं प्रयाति। जलं ग्रताट् इरिकामुंकेशि यदिना कन्या स्था-योग्गीतिम्। कुत्तीरकुभावि तुले प्रमाद्वे पङ्भिय युक्तां नवतिं वदिना। समुद्रे दयभागाः खः पड्मागायापि पर्वते। ष्टियां घत्रो भागान् सदा वर्षति वासवः। दयादिभिम्तु भागाउ: पुरियत्वा गतादिकम्। विश्वत्या द्वारसथाद्वाः ससुदादो पको मिता:"। यदा। १००। तदास ५० प ३० ५ २० यदा ५० स २५ प १५ ए १० यदा ८० स ४० प २४ छ १६ यदा ८६ स ४८ प २८ रेखाचयम्। पृ १८। रेखेका एव-माटका चेया:। साहेदिनहयं क्षत्वा पीपे पौपादिना व्धः। गण्येत् कासिकों ष्टिमष्टिं वानिसक्रमात्। मतान्तरध चापे च मीने परिष्टत्तमादी। चौष्ठे मुची कर्करके च सिंही कन्यातुनायां मकरिष कुमो मार्गे स्वयं ग्रध्यति पीषमासः। श्चेनिगांगे प्रयमेऽतिष्ठष्टिः ग्रस्थानि समीख्यपयान्ति सिद्दिम्। षादी दितीये तिसमुद्रमाया भागे खतीये खलु शारदानि। चिवाचातीविभाषास ध्येष्ठे मासि निरम्नता। तास्वेव यावसे मासि यदि वर्षति वर्षति । शुचौ गुक्ते नवस्याचेत् खदेत्यकी -निरम्बकः। परिवेशी मध्यदिने चास्तं याती घनाष्ट्रतः। वयं दिक्सधैकं वा ष्रष्टिमिष्टां समादिशेत्। यञ्जेपायां गर्बी भानु-र्यदि हृष्टिं न सुचति। मधापच्चनमासाचा करोत्वेकार्णकां महोम। चतुर्यां कर्करस्यार्के दृष्टिर्जानपदे यदि। विकलाः सर्वसंक्षेत्राः यापेकाणां भवन्ति च । हष्टे द्युभागे प्रयमे सुद्धिः-

भंवेत् हितीये तिसकीटसर्पाः। दृष्टिम्तु मध्यापरभागहर्थे निश्किद्वष्टिस्तु नियाप्रवृत्ते । स्वातीमैनेन्द्रसदेषु प्राकापत्वी-त्तरासु घ। सञ्चरन् जसदान् इन्ति भीमः मंदर्तकानपि। चित्रां गते भूगो जीवे मोरियुक्ते उम्ब वर्षणम्। गुभायुक्तसिंष-कुजी गीपं याति सप्टाचनः। पापवर्पग्रभायुत्त तुनाग्रक्ते महार्घता। प्राष्ट्रिय शीतकरी स्रुगुप्रवात् सप्तमराधिगतः ग्रुभदृष्ट:। सूर्यमुतास्रवपद्यमगी वा सप्तमगद्य जलागमनाय। श्रीपतिष्यवद्वार्शिर्णये। "माघे मासि च सप्तम्यां पश्चम्यां फाल्युनस्य च। चैत्रस्य हतीयायां वैगाखप्रधमेऽइनि मेघस्य ग्रितं युत्वा जलद्खाच दर्भने। चारभ्य चत्रों सामान् सम्यवर्पति वासवः॥ सप्तम्यां स्वातियोगे यस् भवति नभी दृष्टचन्द्रार्थतारं विज्ञेया प्राहडेपा बहुजसविषुका सर्वश्रधानु-कुला। वर्षप्रश्रे सल्लिनरागिमात्रित्य चन्द्रो सम्नं याती भवति यदि वा बेन्द्रगः ग्रक्तपचे। सीम्येर्टष्टः प्रचुरसुदकं पापर्टष्टो-इल्पममः प्राष्ट्रकाले स्जिति हितदा चन्द्रवत् भागवीऽिष । प्रयात् सद्यो दृष्टिचानम्। "यद्येकराधी वसतः सितेन्द्रजी। पयोऽतिपूर्णां क्षुक्ते वसुन्धराम्। तयोध मध्ये यदि पद्म-बान्धवो न संप्रयं श्रोषसुपैति मेदिनौ । बिनोपघातेन पिपौ-शिकानामग्डीपसंकान्तिरहिव्यवायः। द्रमादिरोष्ठश भुजङ्ग-मानां दृष्टिनिदानानि गवां भ्रतानि। रथायां शिश्वः सेतून् ग्वान् भेकांय कुर्वते पवनय यदा गीतो वात्यायाय विवन त्तेनम्। गर्वा निरीचणं व्योक्ति तदाखेव प्रवर्धति"॥ भीम-पराक्षमे। "तक्षियचेषु गताः सकलासा गगनतल्खिरष्टिः र्निपाताः। यदि गवां निरीचणसूर्द्वं निपतित वारिपतन-मचिरेण। यदि स्थिता गटहपटलेषु कुक्त्रा क्वन्ति वा यदि विततं दिवीगुखाः दिवातसं सुदित पिनाकिदिद्युखा तथा |

स्रमा भवति जलीघसप्रता निदाधवातातप उपाधीतले रटन्ति मण्डकशिवाहिचातका मय्रकण्डयुति सूर्यमण्डले दिनवय वा विषतन्ति भूतले"॥ इहस्पति । "कुषौद कृषिवा विषय प्रकुर्वीता स्वय क्षतम्। आपकाली स्वयक्षवेनमा लियते द्विज ॥ राज्ञे च दल्वा पडभाग देवतानाघ विश्वकम् । विग्रज्ञागञ्च विग्राणा छपि दत्वा न दोषभाक" ॥ तथा "सुषित घातित यव सौमायाच ममन्तत । त्रक्तोऽपि भवेत् माची ग्रामस्तव न सगय "॥ हारीत । "श्रष्टागव धर्महल षडगव जीवितार्धिनाम्। चतुर्गव नृग्रसाना हिगव ब्रह्म धातिनामिति विष्णुधर्मोत्तरे पाठ । "अज्ञ पूर्वे दियाम वा धर्याणा वाहन स्मृतम्। वित्रामेनाध्यभागे च भागे चान्ते यधासुखम्"॥ उपना । "गीभि प्रणाणित धान्य यो नर प्रतियाचते। पितरस्तस्य नाश्रम्ति नाश्रम्ति च दिवीकस् "॥ च्योतिपे। 'धगपूरीरव मूल्य पचादौ लचयेहध । छक्तमूले सम विद्याच्छे पे धान्यमध क्रय ॥ "इस्ताशतिमपा पूर्वादि वयरोहिष्य । उत्तरादिवयक्तिकामृतारेवत्य इग्रेत्याद्य चरात् सुचिता ॥ रवी यनी कुले वारे पीपे इग्री भवेट यदि। तदा धान्यस्य मूलस्यादेकदिविगुण क्रमात्॥ दशैं पीषस्य रावी चेत् च्ये ष्ठामूलाजलानि च। क्रमानाचा विव्हिष्ठ स्यातु धान्याना वसारे तथा॥ सक्रान्ति ऋच तिथिवारयुक्त द्रधाचर रामहृत भवेतु। एके समर्घ समता हितीये शुन्ये मद्दार्घ मुनयो वदन्ति ॥ यमादिशक्राग्निहुताशपूर्वा नेष्टा क्रये विक्रयण प्रशस्ता पौष्णाश्विचित्रागतविष्णुवाता क्रये हिता विक्रयणे निषिद्धा"॥ विष्णुधर्मोत्तरे "चिप्राणि यानि ऋचाणि चराणिच सरूनिच। वाणिच्ये तानि श्यन्ते तिथि रिक्ता विवज्येत्॥ प्रतिपद्दादशीपष्ठीनचवाचि

भुवाणि च। अपीरे वर्जनीयानि दिनं स्प्येश्वतम्य च"। क्रय-विक्रयमञ्चलाणि। "दर्गाष्टमीभूतिविध्यज्ञिगप्वीत्तराकेणव-याम्यचिताः। कृराइविध्यितिपातयोगा नेष्टा गवां विक्रय-चालनादो ॥ चार्ज यमदन्दमिद्वयाच गक्तद्वयं वायुत्रगं महेगः। कार्यो न चेतेषु धनप्रयोगो सदो गणे काद्यस्थं न देयम्"॥ धनप्रयोगनिषेधः।

चयाह्रतम्। चह्नतसागरे चायवणाह्नतवचनं प्रकृतिः विरुष्ठमसुतवसनम्। प्रकृतिविरुष्ठमसुतमापदः प्राक् पवीः धाय देवा: सजन्तीति। तेनापज्ञानाय भूम्यादीमां पूर्व स्वमावप्रचावो देवकर्मको द्भारता एवस युधोदयपर्वणि यहादीनां गणितागणितत्वेन प्रक्षतानामपि यद्त्यातत्वं तहार्त्रं तकारणञ्च गर्गेमिष्टिता यार्षेस्यत्ययोः । "पतिनोभाद्सत्याहा नाम्तिकाद्वाध्यधर्मतः। नरापचारावियतस्यसर्गः प्रवर्तते । सतोऽपचारावियतमपवर्जन्ति देवताः। ताः सृबन्यह् तां-स्ताम्तु दिव्यनाभसभूमिलान्। त एव विविधा सोके छत्पाता देवनिर्मिता:। विचरन्ति यिभागाय क्यै: सम्बोधयन्ति च" ॥ तांच परं न दर्भयेदित्याच विष्णुः। "नीत्पातं दर्भयेदिति"। सव येसामध्वसम्बद्धानरूपणम्। यथा दीपिकायाम्। "प्राम्हितिचतुर्यधामेषु द्युनिमोरङ्गतेषु सर्वेषु पनिसामित्रमक्त-वर्षा मण्डमपतयः श्रभाश्रभाभेष । चर्यसादिचतुष्कचन्द्र-तुरगादिलोषु वायुर्भवेत् देवेण्याजवियाख्यास्ययुगले पिष्राहरी चालनः। विखादिवयधादमेवयुगलेष्विन्द्रो भवेकाएउसः सर्वी-पान्यसगन्यमूलयुगले शानेष्वपामीखरः। पवनद्दनो नेष्टो योगस्तयोरतिद्ष्वरः। सुरपवरूषी ग्रस्ती योगस्तयोरति-गोभनः सदर्णमर्गमयः यकस्तयामिसभाग्रतः। फल-विरिष्टतः सेन्द्रो वायुस्तयानियुतोऽस्वुपः। यन्मग्ङलेऽह्न्तं

जात शान्तिस्तहेवताश्रया तद्या शान्तिद्वयं कार्यं मण्डल हयजाद्भुत" ॥ विषाधमीत्तरे। "ग्रहच वैक्षत दिव्यमान्तरीच निवोधम। उल्कापाती दिया टाइ परिवेशस्त्रयैव च ॥ गन्धवनगरश्चैव हाष्ट्रश्च विक्तता तथा। एवमादोनि लोके ऽिसान् नाभसानि विनिद्धियेत्। चरस्थिरभव भोम भूकमा भिष भूमिजम्। जलाशयाना वैक्तत्य भीम तदाप की तितम्। भौम चालापल ज्ञेयं चिरण परिषचते। नाभम मध्यफलद मध्यकानफलपदम्। दिया तीव्रफल ज्ञेय शीव्रकारि तथैव च। शौताणाताविपद्यामी ऋतूना रिपुज भयम्। पुष्पे फलेच विक्षत राज्ञो सत्यु तया दिश्रत्। प्रकालप्रभवा नार्या कालातीता प्रजास्त्या। विक्रता प्रमवासेव युग्मप्रमवन तया। हीनाङ्गा पधिकाङ्गाय नायन्ते यदि वा घय । पश्रव पिचिणयैव तथैव च सरीसृपा । विनाग तस्य देइस्य कुलस्य च विनिार्द्यीत्। प्रदोपे कुक्टारावी हैमन्ते चापि कोकिसा । त्रकोदियेऽकोभिमुख खाराषो त्रभय दिशेत्। उल्को वमते यव निपतेहा तथा गरहे। जेया गरहपतम् त्युर्धनना यस्तयेव च। गटभ कड्क कपातय उन्क श्योन एवच। चिसय चमाचिल्य भाम पाग्डरएवच। गटहे यस्य पतन्यत गेइ तस्य विषद्यते। पद्मासामात्तया वर्षासृत्यु साद्ग्रहमधिन । पत्ना पुत्रस्य वा सत्युद्रव्यञ्चापि विनम्यति । वाञ्चणाय ग्टह द्वा द्वा तम्स्यमव वा। यह्नीयाद् यदि रोचेत यान्ति श्वेमा प्रयोजयेत् सामास्योनि समादाय श्रमगानाद ग्रम-दायसा । खाण्गानोऽयवा मध्ये पुरस्य पविशन्ति चैत्। विक्रिंक्ति रहादी च सम्यान सा सही भवेत्। घोरण इन्द्यते लीक परचक्षसमागम । सपामय महाघोरो द्भिंच सरकत्तया। चहुतानि प्रस्यन्ते तत्र देयस्य विद्रव । घकाले

पालपुष्पाणि देशविद्वकारणम्"। सस्यपुराणे। "प्रतिष्ठष्टि-रनाष्ट्रहिभेचादिगय मतम्। चन्तौतु दिनादुई वृष्टि-चुँवा भवाय च। निरम्ने वाय रात्री वा खेतं यस्योत्तरेण तु। इन्द्रायुधं ततो दृष्ट्रा उल्कापातं तथैव च। दिग्दाइपरिवेशी च गन्धवंनगरं तथा। परचक्रभयं विदादिगोपद्रवमेषं च । भामो यनकुष्ठ, टः। वांसनिधनस्चने इरिवयः। "वक्षमञ्जान रक्यके चिवायां घोरदर्शनः। चनत्यपर्वणि मही गिरीणां शिखराणि च"॥ अणोत्पाते स एव। "दिचिणां दिशमा-स्याय धूमकेतुः स्थितो भवेत्। वक्षमद्वारकयक्री क्षत्तिकास भग्रद्भः"॥ क्तत्यचित्राभणी। "त्यता गीचविवेकतत्व वसुधा सोकाः भुषापोडिताः विप्रा वेद्हतास्त्रयाप्रचित्रता वहागिनी दु: खिता:। चौगी सन्दफना नृपाय विकना: भगामधीरा महो प्रेताघातदुरन्तपीडिततरा देवेज्यराद्वार्युतो। शास्त्रीद्योगो मासास्त्रिवगादिभिमेरकः। धान्यहिरखलक-फनकुसुमा ये विधिते भयं विद्यात्। अष्ट्रारपांशवर्षे विनाग-मुपयाति तन्नगरम्। उपलं विना जलधरैविकतावा यदा प्राणिनो हुछा। छिद्रं वाष्यतिहृष्टिं ग्रस्थानामौति संनन-नम्"। वुधकीशिकसवादे। "बल्बाः प्रपाते च फलं शरटस्य प्ररोहणे। श्रीपं राजिययोऽवासिभानी चैश्वर्धमेव च। कर्ण-शीर्यवणावाधिनिवशोर्बस्वदर्शनम्। नामिकाणाख मौगन्यं वक्रो मिष्टाचमाजनम्। कण्डे चैव शियोऽवासिम्जयोधिमवी भवेत्। धननाभो बाहुमूले करयोधनवृद्धयः। स्तनभूले च सोभाग्य द्वदि मौख्यविवर्षनम्। एष्ठे नित्यं सद्दीसाभः पार्थ-योषसुदर्भनम्। काट्रहरी वस्तलाभो गुद्धी सृत्युसमागमः। जहें चार्यचयी निर्द्ध गुटे रोगभयं भवेत्। जबीन्तु वाष्ठ-नावासिर्जानुजद्वि र्धसत्त्वयः। वामद्तिण्योः पादोर्श्वमणं

नियतं भवेत्। बल्बाः प्ररोहणे चैव पतने शरटस्य च। व्यत्यासाच फलचेव तहदेवं प्रजायते। बल्पाः प्ररोष्ठणं रात्री शरटस्य प्रपातनम्। निधनार्थाय भवति व्याधिपौडा विप-र्ययौ। पतनानन्तरश्चेवारोप्तणं यदि जायते। पतने फल-सुत्कष्टं रोइणेऽन्यत् फलं भवेत्। यारोइणञ्जोङ्घवक्षे श्रधीयहा च पातनम्। भवेदिष्टपसं तस्य तत्पसं जायते धवम् । स्पृष्टमात्रेण यः सदाः स्त्रेलं जनमाविद्यात्। धश्चगव्य-प्राथमञ्ज कुर्यादकविनोकनम्। बस्बोरूपं सुवर्णस्य रक्षवस्त्रेण वेष्टयेत्। पूजरोद्गन्धपुष्पादीस्तद्ये पूर्णकुमाके। पञ्चगव्यं पञ्चग्तं पञ्चासृतं स पञ्चवम्। पञ्चव्यकषायञ्च निचिप्या-वाष्ट्रयेत्रतः । पुत्रयेद्वस्यपुष्पाद्येलीकपालांस्तथा क्रमात्। मृत्युच्चयेन मन्त्रेण समिद्धिः खदिरैः ग्रुभैः। तिसैर्व्याष्ट्रितिभिः र्शिमप्रोत्तरसहस्रकम्"। बल्वो ग्रहगोधिका। सृत्युष्त्रय-मन्त्रस्य स्वकमन्त्र दति विद्याकरः। गर्भेमहितावाईस्पत्ययोः। "ये तेषु प्रान्तिं कुर्वन्ति न ते यान्ति पराभवम्'। ये तुन प्रतिसर्वन्ति क्रिययाऽश्रहयान्विताः। दाभिक्याद्वा विमो-ष्ठाद्या विनश्यम्येव तेऽचिरात्"। यच निमित्तनिययवती-<u> अधिकार: चन्यया दोष इत्याच सत्यपुराणम्। "भित्रमण्डल-</u> वैनायां ये भवन्यद्भाताः कचित्। तच ग्रान्तिहयं कार्य्यं निमित्ते सति नान्यया। निर्निमत्तकता शान्तिर्निमत्तमुपपादयेत्"। एतञ्च तत्ति द्विपित्रान्ति विषयम्। अन्यया विनामण्डल-सन्देही शान्तिर्भ स्थात्। श्रतएवीतां योगियाञ्चवस्कोनः "यव यव च सकीर्णभाक्षानं सत्त्वति दिजः। तव तव तिलेहेभि गायव्या समुदाञ्चतः। गायव्या प्रयतः गुद्धः सर्वपापै प्रमु-च्यते। शान्तिकामस जुस्यात् गायवोमचतैः गुचिः। सन्तः-कामय मृपतेष्ट्रतेन जुड्यात् ग्राचः। साविवा ग्रान्तिही-

मांय कुर्यात् पर्वमु नित्यगः। प्रणवयाष्ट्रतिभ्याभ न्वाषान्ता-होसकर्मण। प्रतिनोसा प्रयोक्तव्या फट्कारान्ताभिचारिवे"। विद्यासिनेणापि निसित्तमन्देष्ठे सम्हादीन्युकानि यया। "शच्छचान्द्रायणादोनि यसाभ्यदयकारणम्। प्रकाम च रहस्ये च संशयेऽनुक्तकेऽस्प्रदे"। सार्कण्डेयपुराणम्। "दिग्-देशजनसामान्यं नृपमामान्यमासनि। नघवयश्रमामान्यं नरी सुड्के ग्रमाग्रमम्। परम्पराभिरचाभिपंषदोपेषु लायते<sup>ण</sup>। सद्या। "तस्याच्यान्तिपरः प्राची मीकवादरत-स्तया। नोकवादांय ग्रान्तीय प्रषपोडास कारतेत्। भूदी-ष्ठानुयवासांय ग्रम्तवेत्वाभियन्दमम् । सुर्व्यात् होसं तवा दानं । त्राहं कोधविवर्धनम्। चट्रोष्टं मर्वभूतेषु मेर्वी कुर्वाश्च पण्डित:। वर्जयेद्यती वाचमतिवादास्त्रयेव च। यहपूजाञ्च कुर्वति सर्वपौद्धासु भानवः। एवं शास्यन्यग्रेपाणि घोराणि हिज-सत्तम। प्रयतानां मनुष्याणां यहचीत्यान्यनेक्यः"। नीकः वादाय तमेवोक्षा यथा। "पाकायाई यतानाच देखादीनाच भीष्टदात। पृथियां प्रतिनीके च नौकवादा इति स्राताः"। ते च सर्वभूतडाकिन्याधाभिभवशान्यर्थे मौकिकौपधमन्ता-टयः विषद्यीमङ्गलचिष्डिकागीतादयः चैत्यष्ट्रचादी चेत्र-पासदेवतापुता च। तया चापसम्बः। "स्तीभ्योऽवर-वर्णियो धनीशास्तं प्रतीयादित्येक इति"। धर्मश्रेषान् श्रुतिम्सृतिसदाचारेष्वप्रसिद्धानिति नारायणोपाध्यायः। भूदो-इस पात्रं विना भूमी गीस्तर्न निष्पीख दुग्धीस्तर्गः। चैत्यः पुन्यत्वेन खातो हन्नः। तथा च बाषोत्याते हरिवंगः। "भनेकाशाख्यस्वयञ्च निपयात महीतसि। असितः सर्वकन्या-भिदानवानां महासानाम्"॥ उपतीमकचाणीम्। चति-वादय पूज्यमतिकास्य भाषणम्। सस्यपुराणम्। "काकस्यै-.

करवन्त्रावः प्रभाते दुःखदायकः। काकी मैथ्नकासतः खेती वा यदि दृश्यते॥ उनको वसते यत्र निपतेदा तथा गरहे। न्नेयो ग्टहपतेम् त्युर्धननामस्तयेव च<sup>ण</sup>ा वराइसंहितायाम्। "क्रीडानुरक्षी रतिमांसलुब्धी भीती रुजार्चः पतिती विरुष्टः। नासी ग्टहस्यस्य विनायहेतुर्दोषः समुत्पाद्यत बाहुरायाः॥ ग्रहे पचिविकारेषु कुर्य्याचामरतर्पणम्। देवाः कपौता इति वा सप्तथां सप्तभिद्वितै:॥ गावस देया विविधा दिजानां सकाञ्चना बस्तधुगीत्तरीयाः। एवंक्रते पापसुपैति शान्ति स्मैद्विनेपि निवेदितं यत्"॥ दिनैः पिचिभिः श्रिप नाऽनी-रिप । भुजवनभीमे । "एकोष्टिपस्तयोनावः सप्ताखा नर्व दन्तिनः। सिंहप्रसृतिकाश्वेव कथिताः खामिघातकाः" ॥ मत्यपुराणे। "अङ्गे दिचिणभारी तु शस्तं विष्कृरणं भवेत्। श्रप्रास्तं तद्या वामे पृष्ठस्य इदयस्य च॥ सान्छनं पिटकः चैव न्नेयं विष्कृ जितं तथा। विष्ययेष विहितं सर्वं स्तीर्णो फलं तथा।। अनिष्टचिद्धीपगमे दिजानां कार्यं सुवर्णन च तर्पणं स्थात्" सिंहप्रस्तिका गावः। शहः। "दु.स्वप्नानिष्ट-दर्शनादी घृतं शिरखाच ददादिति"। भात्ये। "नमस्ते सर्वलीकेय नमस्ते भृगुनन्दन । कवे सर्वायसिंदार्थं स्ट्हाणार्थं नमोऽस्त ते॥ एवं ग्रुकोदये कुर्वन् यातादिषु च कारयेत्। सर्वान् कामानवाप्रीति विष्णुनोवे महीयते॥ नमस्रेऽड्रिस्सं नाय वाक्पतेऽय यहस्यते। ऋरग्रहेः घोडितानामस्ताय नमो नमः॥ संक्रान्ताविप कीन्तेय यात्रासभ्यद्येषु च। क्वन वहस्रते: पूजां सर्वान् कामान् समश्रते"॥ वैषावास्ति व्यासः। "यदयन्नैः शान्तिकैय किं क्षिश्वन्ति नरा दिजा मद्वाद्यान्तिकरः योमांस्तुलस्या पूजितो हरिः ॥ जलातान् दावपान् पुंसां दुर्निमित्ताननेकग्रः। तुलस्या पूजितो भक्त्या

मद्दार्थान्तिकरो इरि:" ॥ श्रव ब्रह्मपुरागोयो मन्तः। "नमस्ते बहुरूपाय विद्यावे प्रमात्मने खाहिति"। क्षन्दोगपरिभिष्टम्। "धयातो रजखलाभिगमने गोऽख्यभार्थापु गमने यमजजनने विज्ञातीयज्ञनने वा काककद्वरप्रवक्षयोनभासभित्वकपोतानां ग्टइप्रवेगे महिषस्थीपरि विद्यामणे एपामेव क्रियमाणे ग्टइ-हारारोइणे वाङ्गतेषु कलाइष्टेन विधिनाऽग्निमुपसमाधाय प्रायसित्ताच्याहुनीर्जुहोति भद्भताय चम्बे खाहासोमाय विषावे रद्राय वायवे स्र्याय मृत्यवे विष्वेभ्यो देवेभ्यः साहित स्थालीपाक इतान्धदिति" ॥ कपोतं विशेषधित शीनकः। "रत्तपादः कपोताच्यो चरण्योकाः शुकच्छविः। स चेच्छालां विशेष्णाला समीपच वजेदादि ॥ चन्येषु रहसम्ये वा वल्मोक-स्योद्गमादिषु"॥ कलाइष्टेन विधिना ग्रष्ट्योक्षेन प्रायिश्वना-च्याइती: यद्गुतदोषप्रयमनार्था: सप्ताच्याइती:। यद्गुतायामसे खादा द्वादिमन्तैः तव खासीपाकैतिकत्तव्यतायां पायस-चर्मिरतेभ्यो देवेभ्यो जुड्यात्। छन्दोगपरिशिष्टम्। "पद्मात् ष्टतपायर्धन ब्राह्मणान् भोर्भायत्वा गोवर दक्षा प्रान्ति-भवतीति गीवरं गोयेष्ठ दिचणां तां गां कला दोपप्रान्ति-भवतीति"। तयाचीकम्। "गौविशिष्टतमा स्रोके देवेष्विष निगदाते। न ततोऽन्यद्वरं यसात्तसाद्गीर्वरमुच्चते"॥ छन्दोग-परिशिष्टम्। "यस्वेपोमन्यतममापद्यः प्रायश्चित्तं न कुर्यात् तस्य ग्रहपतिभेरणं सर्वस्वनामी वा भवति तस्नात् प्रायसित्तं कर्त्वयं कर्मापवर्गे वामदेव्यगान प्रान्तिः प्रान्तिरिति" प्रपवर्गे समाप्ती। वामदेवागानं गान्तिः काधाः ऋहित्तः प्रकरणः समास्यर्था। वार्हणत्ये। "शमयन्या सप्तादात् कम्पादिकतं निमित्तमाखेव। धतिवर्षणोपवासद्रतदीचानण्यद्वनानि"॥ वराहः। 'ये च न दोपं जनयन्युत्पातांस्तानृतुस्नभावसतान्

परिषयुवकतैः सोमैविद्यादेभिः समामोत्तैः"। तथा च मत्य-पुराणम्। "वज्जामनिमहौकम्पस्थ्यानिर्घातनिस्ननाः। परि-वेशरजोध्मरक्षार्कास्त्रमयोद्याः । द्वमेस्योऽय रसस्रेष्टमधु-पुष्पफलोहमाः। गोपचिमदष्टिषयं शिवाय मधुमाधवे। तारी-रकापातकसुपं कपिसार्केन्द्रमण्डसम्। यनग्निस्वसनं स्पेटं धूमरेणुमिवाकुलम् । रक्तपद्मारुणा सन्धा नभः सुक्धार्णवो-पमम्। सितां चास्त्रभंशीयं दृष्टा प्रौपो श्रभं वदेत्। श्रका-युधपरोविगी विद्युच्छुप्कविरोद्यणम्। कम्पोद्दर्तनवैक्तत्यं रसनं दरणं चिते:। नयुदपानसरमां हष्टर्देश भवनभ्रवा:। पतन-ञ्चाद्रिगोद्दानां वर्षासु न भयावद्दम्'॥ इत्विशे वर्षावर्ण-नायाम्। "क्षचित् कन्दरहासाद्यं शिलीन्याभरणं कचित्" द्ति दर्शनात् वर्षास शिसीन्त्रोहमो न भयावहः। "दिव्यस्ती-भूतगन्धवं विमानाद्भुतदर्शनम्। यष्टनचवताराणां दर्शनञ्च दिवास्वरे॥ गीतवादिवनिर्घोपो वनपवतसानुपु। श्रस्यष्टिः रसोत्पत्तिरैपोपाः भरदि स्मृताः॥ भौतानिसतुपारत्वं नर्दनं मृगपिचयाम्। रचीयचादिसत्वानां दर्शनं वागमानुषी ॥ दिशो धूमान्धकारास शन्भा वनपर्वताः। उसैः स्योदियाः-स्तलं हैमन्ते शोभना मताः॥ हिमपातानिनीत्पातविरूपा-इतदर्गनम्। द्रष्टाञ्चनाभमाकामं तारोल्कापातपिञ्चरम् ॥ विचागभींद्ववाः स्वीष् गीजाश्वस्गपिधणाम्। पत्राहुरस्ता-नाच्च विकाराः शिशिरे गुभाः ॥ च्यतुस्वभावना द्वीते दृष्टाः खर्नी ग्रभावद्यः। ऋतावन्यत्र चोत्पाता दृष्टास्ते स्य-ट्राक्णाः॥ उन्मत्तानाच या गाद्याः शिशूनां चेष्टितच यत्। स्त्रियो यञ्च प्रभापन्ते तत्र नास्ति व्यतिक्रमः॥ पूर्वश्चरित देवेष पद्याद्रच्छति भानुषान्। नादेषिता वाखदति सत्या द्येषा सरस्रती"॥ हदस्पतिः। "न्योतिर्ज्ञानं तयोत्पात-

मविद्वातु ये नृषाम्। यावयन्यर्यक्तीभेन विनेयास्तेऽपि यत्नतः"॥ विनेया दण्डनौयाः।

षय यात्रा। मत्यपुराणे। "ऋषेषु पट्सु ग्रहेषु ग्रहेष्तन-यहेषु च। प्रश्नकाले श्रमे जाते परान् यायावराधिपः"। ऋचेषु षर्स नाड़ौनचनेषु। दुर्घष्ठवतान्तु "श्रयी श्वनर्यतां याति दुर्भगाणां यद्या विभो। विषमे तत्ससुद्गतमसाञ्चास्तकाह्या"॥ षसात् समुद्रमथनात्। भागुरिः। "दिगीगं द्वदये ध्वालाः गन्तव्यात्रामुखः स्थितः। चन्तःसमीरणे देशपवेगे समुपस्थिते। खस्तीति दिचिणं पादमासनादवतारयेत्"। राजमार्नग्रहे। "व्रज्जे-दिगीमं हृद्ये निधाय यथेन्द्रमैन्द्रगमपराच तहत्। सुराक्ष-मास्याम्बरम्बरेन्द्रो विसर्जयेद्विषणादमादौ । स्नातः सिता-स्वरधर: सुमना: सुवैश: संपूजितोऽमरगुरु दिनगोदिगौश:। कला प्रदिचिणियास शिखिनं क्षतायीगे च्छेनरः यञ्जनस्चित-कार्ध्यसिहिः" विपापुराणम् । "माङ्गस्यपुष्परत्नाद्येः पुच्यानन-भिवाद्य च। न निष्क्रमेत् ग्रष्टात् प्राप्तः सदाचारपरो नरः ॥ म्टहाद् स्टहान्तरं गर्ग. सीमः सीमान्तरं श्रगुः। अरहीपाद्वर-दाजो विधिष्ठी नगराद्विः"॥ यात्रानन्तरं वराष्ठः। "संत्यजे-डोजनागारे तथा भ्रयनमन्दिरम्। दूरस्थं जसमध्यस्यं भ्रयानं व्याधिपोडितम्॥ मच्छन्तमपि यानस्यं ब्राह्मणं नाभिवाद-येत्"॥ हदत्यात्रायां राजमार्नगढे "प्राचामद्दानि सुनयः प्रवदन्ति सप्त यास्यामतीव ग्रभदानि दिनानि एच । स्रीखेव प्रियमदिशि चितिनायकाना प्रस्थानकेषु दिवसवयसुत्तरस्थाम्॥ एतचायुत्तमित्वाच्च हीराशास्त्रविदी बुधाः। यात्रां विपच्चसप्ताष्टा पुनर्भद्रेण योजयेत्॥ वाञ्छितार्थफलावासौ यात्रापरिसमा-ध्यते। जमार्चे चाष्टमे चन्द्रे वारे भौमग्रनैसरे॥ प्रस्थितिऽपि न गलव्यमत्यन्तगिहिते दिने। जनाभे जनामासे वा योग-

क्केट्टम विधी॥ पायुचयमवाप्रोति व्याधिच वधवन्धने"॥ विश्वपुराणम्। "वर्षातपादिके छतौ दण्डी रात्राटवीषु च। श्रारीरवाणकामी वै सीपानकः सदा व्रजीत्॥ नोह्यं न तिर्धाग्-दूरं वा निरोचन् पर्यटेत् बुधः। युगमावं मधौप्रष्ठं नरी मच्चेदिनोक्यन्॥ चतुष्पधात्रमस्कुर्यात् चैत्य ष्टच तथैष च। प्रश्ने मनीरमाभूमाङ्गस्यद्यदर्शनश्रवणे॥ यदि वादरेण प्रच्छति दैवद्भं निर्दिशिह्यस्"॥ यात्राप्रश्रविधः। "स्तन-चरणतलीष्ठाष्ट्रष्ठस्तीत्तमाङ्गयवणवदन-नामा गुहारन्याणि भूपः। स्प्रशतिःयदि कराग्रेगेष्डकद्यशकं वा द्यतिगतिश्वभ-शब्दान् धाहरन् शास्ति शत्नन्"॥ प्रश्ने सार्शादिभिर्जयज्ञानम्। व्यासः। "चिरप्रवासयात्रायां गरहे कर्णस्य वेधने।, चूड़ासती प्रतिष्ठायां भानुशुहिविधीयते॥ यारोग्यस्चेण धनं चणिन कार्थस्य मिद्धिं तिथिनाप्र्याच। राष्युद्गमे चाध्वनिसिद्धिमाहुः प्रायः ग्रुभानि चणदाकरेण"। सनसरप्रदीपे। "सिंह धनुषि मौने च स्थिते सप्ततुरङ्गमे। याब्रीहाइग्टहारभाचौर-कर्माणि वर्जधेत्"॥ एप यावापितिषेधी राजेतरपरः। "मार्ग-शीर्षे शुभे मासि याद्याद्याद्यां सहीपतिः। फाल्युनं वाय चेवं वा साम्र प्रति यदाबलम्"॥ इति सनुवचनात्। "यावणे भाद्रमासे युवतिग्टहगते चार्यसाभः प्रदिष्टो मासे पौपे तु याता भवति नर्पतेरर्थसिधिपदावी रित राजमार्त्रेख्य । "शक्ताया स्याच्छमे चन्द्रे कुजार्कसगुराशिगी। तत्पचे शुभदा यावा क्षण्यचे ततोऽन्यया"॥ यावायां पचग्रिडः। "वष्ठाष्टभी द्वादगोषु न गच्छेत् विदिनसृथि। पूर्णिमाप्रतिपद्द्यरिक्षाव-मदिनेषु च॥ तथा यामदितीयायां यावायां मरणं भवेत्। चजातचन्द्रा प्रतिपत्तिथियों सा सर्वधा सिधिकरी न पुंसाम्॥ वाली न चन्द्रा प्रतिपत्तिथियो सा सर्वदा सिंहिकरी नियुक्ता।

प्रतिपत्सु प्रयातानां सिन्धिरेव न संगयः। हितीयायां ग्रुमः पन्यास्त्रतीयायां जयो भवेत्॥ वधवस्थनसंक्षेत्रश्चतुर्थां नात संग्रयः। पञ्चम्यामीषितार्थः स्थात् पष्ट्रगं व्याधियुतो भवेत्॥ सप्तस्यामर्थलाभः स्यादष्टस्यामस्त्रपीड्नम्। नवस्यां सत्त्रसंयी-गान्न गत्त्रयं कदाचन ॥ दयम्यां भूमिलाभः स्यादेकादस्या-भरोगिता। दादम्याच न गन्तयां सर्वामुदा वयोदभी॥ चतु-दृश्यां पखद्ग्यां गमनच निषेधयेत्। संत्यजेहिवसे यात्रां स्यावाकीन्द्वकिणाम् ॥ श्रष्टवर्गरगापाकेवनिष्टफनदस्य च। स्येदिनेऽध्वनि नागयन्त्रे ग्राक्षचयोऽर्यप्तानिय। ज्वनना-स्क्पित्रजः कीजे बुधे सुद्धत्प्राप्तिः। जैवे धनजयनस्यः ग्रीके स्रोवस्त्रगन्धधननाभान्॥ दैन्यवधवन्धरोगान् प्राप्नोति दिनैsकंपुत्रस्य । उपचयग्रहदिने सिहि: क्र्रेडिप साधिन्यां भवति ॥ सीम्येऽप्यनुपचयस्ये न भवति यात्रा ग्रुभा यातुः । ग्रुकादित्य-दिने न वार्णदिशं न से कुने घोत्तरां मन्देन्दोय दिने न गक्षककुभं यास्यां गुरी न झजेत्॥ ग्रूनानीति विनह्य यान्ति मनुजा वे सोएयवित्तागया भ्रष्टागाः पुनगप्रतन्ति यदि ते शक्षेप मुख्या प्रिषि। दिगोशांडे गुभा यावा प्रष्ठाई मरणं भवग्"॥ गर्गोऽधि। "दिगौगवारे गमनं प्रयस्तं विष्ठाय मीम्यं यदि जीवितायया॥ न वारदोषाः प्रभवन्ति रावी विगेपतोऽकाविनिभूगनीनाम्। गुण्यति तिया हचेऽनिष्टे दिवागमनं दितम्। निमिच मगुणैः गस्तं यानं तिथिगुण-यि जितेण । भतियिगुणयि जिते। "भतिथि कथितान् दोप्रान् प्राप्नोत्वतः प्रतिनोभगः॥ गुणभपि तयोर्यधात् सम्यग्जगाद रगुमुनि:। याम्यायनै नियायावा श्रभा स्वाद्त्रारे दिवा॥ भग्डस्यों सगादिसी पूर्वा यायात्तयीत्राम्। दक्षिणां पियमामाशां कवादी ती सिती यदा। अन्यया वधवन्धा-

दिलेशमाश्रीत्यसंशयम्"॥ योगिनी तु । "प्रतिपन्नवमी पूर्वं रामारुद्रास पावके। शरचयोदशौ यास्ये वेदामासास नैऋ ते॥ षष्ठी चतुर्दशी पञ्चात् वायव्यां मुनिपूर्णिमे। दितीया दशमौ यचे ऐशान्यामष्टमौ क्षहः॥ योगिनौ नवदण्डास्त शिया वर्च्या विश्रीपतः। दचमं मुखयोगिन्यां गमनं नैव कार-'येत्। वामे शुभकरो देवो पृष्ठे सर्वार्थसाधनी" ॥ राष्ट्रभ्रमण-चक्रम। "पद्यादकी विधी वक्री सीम्यां की वायवे क्रजी। रची दिशि भगी याम्यां गुरावीशे शनी दिने ॥ राहुर्भमिति यासाईद्खगत्या च वासतः। प्रतीच्यां वक्किकोणे तुत्ततः सौम्यामनो सपे॥ ततो 'प्राच्यामतो वायौ तसाद्याम्यां ततः भिवे। रवावेवमन्यवारेष्ष्यमिय क्रामण हि॥ यूती युद्धे विवादे च यत्रायां समुखस्थितम्। राष्ट्रं विवर्जयेत् यत्नाटु यदौच्छेत् कर्माणः फलम्"॥ राहुमांस्व्यनिपेधः। "प्रश्वि-इस्तगुरुमैत्रदेवतैः पौप्एविप्शुवसुशोतरश्मिभः। यानमिभि-र्रातसुन्दरं बिदुः सर्व एव सुनयस्तु नेतरैः ॥ चिवासेषासाति विशाखा भरणो धिवेशशकत्तिकाः। नातिश्रभदा प्रयाणे येषाणि ग्रुमाशुमानि धिष्ट्यानि॥ दन्ध ग्रन्नुपुर सदन्निभ-मुदेखकों न चेंदुत्तरे रोडिखाच विशाखभे च न गमः पूर्वाह्म-काले ग्रमः। मध्याङ्गेन शिवाधिमूनवस्मिद्भेषश्चिश्रीपेऽश्वि-नोहस्तापुष्यमस्त्मुचिवर्गागमैवान्ये न रावग्रादित.। रावे-मध्यमसनु पूर्वभरणी पित्रेषु शिपे निम्नो इर्घादितितय।हि-तिष्विप अस मध्याङ्गरात्रान्ययोः। पुषाहस्तस्गाच्तेषु शुभद्राः भर्वेऽप्रि काबास्त्रया सार्वेद्वारिकमन्त्रितानि गुरुभ इसाध्विमेवाणि च। पूर्वाद्यांम्नमघानुराधवसुभादोन्यव द्गड़ोर्न्सर वायुग्योनं स सञ्च ऐकामनसप्राचोस्तथान्यावि-दिक्। लग्ने दिग्वद्नीऽतिदण्डगमनं प्राचादि शूलं विना

तेको ग्रष्टाजपदं सरीजनिलयः स्याद्त्तराफरगुनी"। पतिदण्ड-गमन दण्डमुसद्धा गमनम्। "दिशोरष्टमभागव विदिक्षी-णय कथते। मेपादास्त्रिश्चमाज्जेयाः प्रागादि दिस् खाः यहाः। श्रोपेटिये समभिवाञ्चितकार्व्यसिष्टः पृष्ठोदये विक-सता चलचित्रता च । यातव्यदिङ्मुख्यतस्य सुखेन सिहि-वैसंभ्रमो भवति दिक्पतिनोमसम्बाने । केचिदाहुनै यायासु । शुत्यां प्राचान्तु दक्षिणे। अध्विमां पश्चिम पुष्ये नोदीचां इस्तमे न तु। गुरूदस्ताधियमैवाणि सर्वदिस् ग्रमं युणि। भतो दिग्भेददीषोऽत वराष्ट्रादेरसमातः"। नेशानामिनविशा-खवाय्विहिमधायास्यैः परार्दं न सञ्चित्राद्यान्तकां प्रव्रथमअं पिवामिने चाषिने। राष्ट्रक्रायुगस्तमविधितयोत्पातप्रदृष्टं यहैद्दांदौर्मममहिने निधि तिघाष्ट्रचे प्यानिष्टे गमः। ''ऋसे दायोः संयुत्रिन्तः पकोषो लस्मोभ्रशो राष्ट्रणार्केन योगः। केतूस्कानां पौडिते देहनायः संभी भीमे सोपारम्यासाजे च। उपप्रधास्य मरचेषु वर्जरोहमनं नृपः। उपग्रहगतस्त्री-यजमार्चे न वजेत् क्षचित्"। उपयद्याय सर्वतो भद्रचक्रो प्राशुक्ताः। "पूर्विक्रजन्मकर्माद्दं नाङ्गेनचबदोपवान्। याता यम्वयं याति विश्वही यत्नायक्षत्। यात्रायां गोभनास्ताराः समाः कर्मान्यमंयुताः। यात्राभङ्गविधावसत्यद्य भवेत् सीऽका-विकोणे विधो। भौमाज्ञादिषु वा दिलग्य सुते गन्तव्य-दिक्षासतः"। मुते इत्यव ग्रमे इत्यपपाठः। "यावादिगीगाद्-यदि पञ्चमेऽन्यो गर्हे यही यौध्ययुत्रोऽवितिष्ठेत्। यात्रोद्यत-म्तव न याति याता तयोवनीयावयति स्व काष्ठाम्" इत्वनिन विरोधात्। "सर्वे ग्रभफलं नम्येट् यावामङ्गे गतस्य च। व्यप्तनं प्राप्नोति सद्द्वातीपातिविनिगतो। यदा सृत्युम्। वैष्टतिगमने-प्येवं त्राहरार्गे प्राप्ति प्रान्यके । व्यसनान्याह सनुः। "काम-

जेषु प्रसन्नी हि व्यसनेषु महीपति:। विधुक्यतेऽर्धधर्माभ्यां कोधजेष्वात्मनैव तु। सगयाची दिवास्त्रः परोवादिस्त्रयो सद:। तौर्यविकं इथाया च कामजो दग्रको गण:। पैग्रन्धं साइसं द्रोष्ठ ईर्घास्यार्यदूषणम्। वाग्दण्डनच्च पारुष्यं क्रोधनीऽपि गणीऽष्टक."। तीर्थविकं नृत्यगीतवाद्यानि विणीति दय। पेश्रन्थमविद्यातपरदीषाविष्करणम्। साइसं साधोर्बन्धनादिना निग्रहः। द्रोहो निघांसा। ईर्घा धन्य-गुणासि दिणाता। अस्या परगुणेषु दीपाविष्करणम्। अर्थ-दूषणम् अर्घानामपद्यणं देवानामदानद्य। भौमपराक्रमे। "न विष्कुमो न वा गएडो न व्यतीपातवेष्टतौ। चन्द्रतारा वले प्राप्ते दोषागच्छन्यसंमुखाः। गरवणिकविष्टिविवर्जि-त्रानि करणानि यातुरिष्टानि । गरमपि कैथिहिदितं वणिनसु विषिक्तियास्त्रेव। पूर्वाह्रे तूत्तरां गच्छेत् मध्याङ्के पूर्वतौ व्रजेत्। भपराक्षे व्रजेत् यास्यां भर्दरावे च पश्चिमाम्। नष-भ्यद्वारको विष्टिः श्रनैयरदिन तथा। य्यतोपातो न दुर्घेष यस्याको दिचिणे स्थितः। रागो रागो द्वादगेन्दोरवस्याः प्रीक्षाः कैयित् सुरिभिः प्रोपिताद्याः। यावीदाष्टादोषु कार्येषु न्न सन्नातुत्यं तत्पलं चिन्तनीयम्। प्रवासनष्टास्य स्ताल-यास्याद्वासारतिकोस्तिसप्तमभूकाः। स्वराह्मया कम्पितम् र्ष्यते द्विपट्कारंस्या हिमगोरवस्थाः"। चन्द्रस्य द्वादगावस्यागणन-साइ "चात्रादिभुक्षोड्धटाससूहादेदा ४ हतादाण मम्द्र ४५। भुक्ताम् सत्यार्कशिषे शशिमः क्रियादा भवन्यवस्या गतगम्यद्याः। मदादाः शूनभृह्य्द्वा एकावस्या भवेत्ततः। क्षनम्बद्धीनान्यगुषान्यितापि प्रीति न याथा मनमः करोति। खनसुतारूपगुणान्धितापि प्रश्वष्टयोसा यनितेष पुंगः। यौने कार्किन्य सिनिच हुपे लगाजासस्यपापे वामे वा दिग्दानिय-

विनिनां जनानमाष्टमेवा। वर्गे पापानुपचयक्तां विकिणां पृष्ठनाने पापान्त. स्थेन शुभगवल जनानानधीने"। वामे विपरोते। "घटमियनकुनौरायापगी मोनकचाः खलु गुभ-भवनत्वाद्राययः सप्त सीस्याः। भनिधटसृगमिष्ठाजास्त पापाः त्रयत्वान्यनिभिरभिदितास्ते प्रायशः क्रुरभावाः'। अन्यवा क्नामें कामुकमेपतीलिभियनि कार्यं विन्ताने नृणां पञ्चास्ये मकर तथा शनिग्रहे तहत्फलं हिंचिके। मिहे वा यदि गोध-टेषु गमनं सर्वार्थशिह्वप्रदं स्यादागापतिषु प्रयाति सकलं कन्याभपे सक्षये"। तथा। "नेष्ट दिशन्ति सकराणि कुनो-रनम्ते मेपे धटे धनुषि दीघंकरी हि याचा। युग्माङ्गना भाषद्ये भ्वमधंलाभो ज्योतिविदा सकलसिंदसुपैति नद्मीः"। याद्यायां सामान्यनग्नविवेकः "मौने च कुटिनो मार्गा भवति तद्गीऽत्यरागिसग्नेऽपि। नौयानमाप्यसग्ने कार्थं तैयां भवांगि वा"। दिगादि वस्तिनो यया। "ऐन्द्रगं मानुपराग-यस्त पगवो याम्ये मवौर्या चलिवां रूखां दलयुक् तथैव दलिन: पानीयजयोत्तरे। मर्वे मागुपरामयो दिनदनारास्री म बौर्या-यत्रपादा. श्रीयगणाम्त्रयेव बनिनः सन्याद्यये कौर्तिताः। ख-राशिनमाध्मनमयोय स्थावभाष्ठ्युग्रहोदयेया। तद्रा-शिगोधी गमनं विलाने तुन्यं नराणा विषमचणेन। उपचय-करम्य वर्गः क्रास्यापि प्रशस्यते सम्ते। चन्द्रे वाष्ट्रक्षेम तु विषरीतम्य मौम्यम्य। यानं सं जन्मराग्रेरपचयमुद्यारिविन नाभश्व विशिक्षियं वश्ये स्वनमस्नुग्रह्योग्ट्यहैर्निनिर्शम्। स्थान मोस्यव्य समान्यभिमसफसदस्यापि यस प्रवय यास्यां खकाभिक्तिकः ग्रभक्षमदस्त्रीमदीय या कास्त्रीरा खाधिपते-दिंगि रागिः प्रव दति यवनैः सदा कथितम् । तत् प्रवगी विनि इन्याद्विरेण संशीपतिः शब्त् सर्वद्वारः सर्वार्यसाधकः सर्व-

कर्मस् तथेष्टः। सर्वेषां वर्णानामभिक्षित्रां प्रको सुहर्नः स्वात्। षष्टमो दिवसाई लिभिनिसम्बनः घषः। स ब्रह्मणो वराश्रियं सर्वकामपालपदः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोपानि-सन्ति। प्रभित्तित्र वधे प्रस्तं याम्यान्तु गमने तथा। प्रन्ध-दिगामने श्रस्तं सर्विमिश्विदायकम्। वार्ष्यवते घटिका दिनिप्ताः कालास्यद्वीरा पतयः यराप्ताः। दिने निशासा स्ख्वाणहस्या निजाहनायां पत्यः प्रकल्पाः। रेखा पूर्वा-परयोवारः सुर्योदयात् परस्तात् प्राक्। देशान्तरयोजनिम-तविघटीभिः पादहीनाभिः। हादगाहु लिकाच्छहोः समरा-विदिनादेके। छायापादानुमारेण रेखा खदेशयोजनम्। सुमेर्वादिस्त सङ्घान्ता भूमिरेखास्ति तहतः। रोहितकमवन्तो च तथा सिविहित सरः। रेखादेशे वाङ्गातामपास्य स्वदे-ग्रक्षाम्। द्वत्या पद्या योजनानि खदेगान्तजानि है। तत्काली तु नवदीपे दिखाङ्गस्यराष्ट्रनाः । तच्छीधनाङ्गव-त्यव सविशक्तियोजनम्। तत्पादहीनतो द्राइसु-वि'शत्पसाधिका। वारप्रवर्तन तसात् कानहोरा-विरेचनम्। दिन। धिपाद्यानि जमष्ठपष्ठाः स्ट्यास्य जिजे जन्दु-ग्रमोच्यमोमाः" ॥ कर्मान्तरे तु वारमहत्तिर्द्यावधिरव तया च स्यासिंदानः। "स्तकादिपरिकादो दिनमासाम्द-पास्तया। सध्यसप्रद्रभुक्तिय सावनंन प्रकीर्तिता। उद्याः दोदय भागोर्भमिसायनवासराः" । भौमिति विद्यदेवदिन-खाष्ट्रस्था प्रव दिनाधिपस्य स्थादेशीयं दिनं या द्व सावनगपनां नोकयवदारोऽपि तयेति। "तियंगधः स्टर्ड-बदमा सीराः स्यः स्थायोगतः क्रमगः। याज्यितसमदोहं-मुकी हे शेपे चाश्रभे यातुः"। याद्यायां पीराफलम्। "सर्पप्रश च देकाचे रत्रभाष्डान्वितिपिवा। फसपुष्ययुर्वयायाकाभः

गुक्रे चललं भुवम्। सन्दं सन्दगतेर्गतागतविधी ज्ञेया सदा पण्डितरात्री पद्यभिरिद्ध षड्भिर्दिता यावार्षयामात्मिका"। देवज्ञममोहरे। "हपादी चन्द्रमा ज्ञेगो मेपादी लग्नमेव हि। परियोज्य समं मिया विभिर्भागं हरेत्ततः॥ श्रुत्ये मृत्युईये द्वानिरेका है विजयी भवेत्"॥ दत्येका हो। भीम-पराक्रमे। "दिनं तिथिं वारष्ठुतं खनचचाद्वयोजितम्। सप्तिस हरेद्वागं शेपे यावां विनिद्शित्॥ प्रथमे शोभना यावा दितीये लाभकद्भवेत्। हतीये वित्तलाभः साद्यर्थि सिंहिर्त्तमा॥ पश्चमे मार्गविद्यः स्थात् पष्ठे निधनमेव च। उक्तं प्रत्ययमुनिमा शून्ये श्री: सर्वतसुखी॥ श्रातविनिनिन्दी सुखरी गमनं यत्नाधिवर्जयेत्रान्। सप्ताध्य न यायाचि विधोत्मातेष्वनिष्टेषु"॥ वराष्टः। "देष्ठः कोषो योऽधी वाश्च मन्तः शत्रुमगिरियायुः। कर्मपाप्तिमन्त्री यात्रास्त्रगाङ्गावाः यिन्याः॥ विज्ञाभवनं रविसौरिभौमा विप्नन्ति नो कर्माण स्येभोमी। पुणान्ति सीम्याः परिष्ठाय प्रष्टमस्तं सगुम् ह्य-विलानमिन्दुः॥ केन्द्रकोषार्थगो त्रष्टः चीषः पूर्णः ग्रभः ग्रगी । सदैवत्रायमः प्रस्तो न गस्तोऽन्यारिरभुगः॥ पादिलेन्द्र महीजराहरविजैः संप्रस्थिती लग्नगैः सुनुष्णा विषमध्ययाम् उ भवेद्रोगांच नामाविधान्। स्रोधः स्रोभसुतस्त्रयेव स्राजी याबोदयस्थी यदा सायाचा धनभोगपुत्रमुखदा गुर्खे: सरी-र्नथ्यते। कोपस्थाने नराणामपुरगुरुष्ट्रचे धर्मकामाधसाभी वस्तोत्पत्तिष कीवे द्वदि सखमतुलं शव् पचचयथा पड्-यभ सदीघे चितिस्तरहितः कीपहानिश्व भानुसन्दः कुर्यात् प्रयाचे प्रियञ्जनसन्दितं राष्ट्रक्यातसुरम्" ॥ २॥ भूमिपय वितिष्ठतर्विणी भानुना संप्रयुक्ती ग्रक्तयन्द्राक्षजी वा सुरगुर्यवा गौतर्यस्यदावा। श्रावस्थाने स्थिताः

स्यन्रपतिगमने सर्वकामार्थसिंहिं जिला शव नशेषान् परि-चरति रणे गोकुसे पुङ्गवाभः"॥३॥ "बसुखानगतो ददाति विपुलं भोगं गुर्नभागवः यव णां चयमौद्धते नरपतः सौद्धां तथा चन्द्रजः। श्वानं कोषगतां करोति रविजः सेहच्यं चन्द्रमा राष्ट्रभूमिसुतस्तथोणाकिरणः कुर्वन्ति दुःखं मदत्रशाशा 'जीवः पुवार्थसामं सनगति सुगुजः सम्पदं स्थानसामं प्रीति चैवोपपत्तिं कुमुदवनसृष्ट्रत् स्नुरयं प्रदत्ते। स्थियन्द्रोऽय भौमो दिन-करतनयः सिधिकासूनुयुकः। सर्वे ते पश्चमस्थाः खसुत-भयकराः पार्धिवानां भवन्ति'॥५॥ "यष्टस्थाने स्थितासे-दिनकरतनयो भूमिपुवस्तयार्कः श्रीतांश्रदेत्यमन्त्री रजनिकर-सुतः से हिनेयोऽय जीवः। कुर्वन्त्येतेऽर्घलामं यद्पि द्वदि गतं सिध्यते तञ्च कार्य्ये यद्येषा पार्थिवानां प्रयस्त्रमधनौ सर्वकामा-र्थदाबी"॥६॥ "नेष्टाः श्रकदिवाकरार्कतनयां राहुस्तथा भूमिजः चिप्रं यव्वयं नयन्ति पुरुषं खाने खिताः सप्तमे । सौम्यो मित्रसमागमं सुरगुरुः कार्यार्थसि हि नृणाम्। चन्द्रः श्रेष्ठफलं द्दाति नियतं यात्रोहमे भूभुजाम्"॥ ७॥ "स्यो सत्यं विधन्ने दिसर्विषया शोकसुयं प्रदत्ते भौमो रोगस वर्स रजनिकरसुतो भव्यदः क्षेत्रशक्षच। सत्यं जीवोऽष्टमस्यः खलु दनुजगुरः सूर्यपुत्रय कुर्यादग्ने यस्त्राहिषादा वधिमह नियतं श्रस्त्रघातच राष्ट्रः"॥ ८॥ "श्रक्षोऽतिसौख्यं नवमी नुधस्तु जीबीऽपि संरचयति प्रयातम्। चन्द्राकं सीराः सद भूमिजन क्षुवैसि रोगान् सुवस्वराणाम् ॥ ८॥ "कर्मस्याने स्थितो-उर्कः प्रचुरधनकरः पुष्टिदः गौतर्शामनीवः संग्रामकासे भवति विजयदः सोस्यश्रको तथार्थम्। नित्यं यात्रीद्यतानां भवति विजयदः सर्वकार्येषु भौमो राष्ट्रवैक्तत्यमुपं जनयति सर्ज दीर्घषासित्यमार्किः" ॥ १०॥ "सगुसुतव्यजीवैयन्द्रस्य्योः

ग्रहविनोकिते॥ रत्नभाण्डान्वितो सेयौधनुर्मध्यतुनादिमौ। देकाणः कर्कटादास फलपुष्पयुतः स्मृतः॥ नवभागे प तिसांशीर्वादननाशी विलग्नसंप्राप्ते । अच्छात् खररदगसनं प्रभावसद्ता चन्द्रांग्रे॥ कीजेऽन्निभयं वीधे मिस्रपाप्तिर्धनाः गमो जैवे। भोगविष्ठहिय भौके भृत्यविनाभी रविसुतांशे ॥ यत् प्रोतं राष्युद्ये द्वादश्रभागेऽपि तत् फलं वाच्यम्" । यच नवां यक्विसितं तिर्विगां शोद्येऽपि सात्। "पापः सीणी विधरविदिनं यस जन्मचेपौडा होरा जन्माष्ट्रमग्रहपतिर्जन्मभं पत्यनिष्टः। नीचस्यास्तं गत्परिज्ञता ज्ञानक्षेत्राग्रस्तुर्जने नेष्टाः खचररितं विक्रयुक्तश्च केन्द्रम्"॥ यात्रायां लग्नधः यदनिर्णयः। युत्यकेन्द्रविक्रयुक्तकेन्द्रनिशेषेधय। द्वीरालग्नम्। तया च होराराश्यद्देलस्नयोः। विशास्त्राननतीयानि वैणावं भगदेवतम्। पुष्यः पौषां यमः सर्पो जक्षाचीत्यर्कतः क्रमात्"॥ चक्तं गतादित्यमाइ। "दिवसकरेणास्तमयः समागमस मौत-रश्मिमहितानां कुसुतादीनां युद्धं निगदातेऽन्छीन्धयुक्तानाम्। रश्मिनीहितः यामः पुरुषः सुसातारकः। यपसव्यक्ततो यय दक्षिणस्यः पराजितः। उदद्मार्गगतिः सिग्धो विभनो विमस्यभः ॥ इष्ट्रपोऽतिश्क्षय विजयो कथितो यष्टः। विपुन: सिष्धो द्यतिमान् दिचणदिक्स्योऽपि जययुक्त: सर्वे लियन उदक्षंस्था दिविषदिक्स्यो लयौ ग्रकः। यहस्य यौ यम्य इतस्य वश्याः पौडां समृच्छन्ति त एव तस्य । संप्राप्त-यौर्यम्य सये ससदा सयन्ति सर्वत्र मतं सुनीनाम्। ऋरोऽष्य-नुकूलम्यः गम्तोलमेऽग्रभोऽपि नानिष्टः। केन्द्रविकोषेषु गुभाः प्रश्रम्ताम्ते घेव पापा न गुभमदाः खः। पापीऽपि कामं वलवान्तियोध्यः केन्द्रेषु शून्येषु भिवांन याता। स्यानेऽर्कः खस्य स्नोरदयमुपगतः गस्त इन्द्रः स्वकोये भीमः सीर बुधा

देश्य प्रानिसितान्यस्य जीवोऽय ग्रजः। सीम्यः स्वस्थानसंस्थः शनिर्धि तरणे रचकाजना काली। तासः स्थात् कारको वा सुद्धद्पि शुभक्तव्यनज्योगयोर्यः"॥ र यात्रायां । सग्नस्थग्रहाप-बादः। तासानादः। "ननासमये प्रापाद्वादो घ्रापचय-स्थिता: ग्रहा: केचित्। ते सर्गे तालास्या: क्ररा: सौम्याय संविष्याः॥ सालाटिनि दिगधीये दिग्वलिविद्दगे खलाटगे वापि। प्रतिभृगुजे प्रतिशशिजे कालाशुह्री संत्यजेट् यात्राम्॥ याता है लानं पूर्वस्यां तत्क्रमेण च खेचरान्। न्यस्य यात्रा है-दिव्सिखा पुर: खेटान् विलीकयेत्"॥ एतत् साष्टं क्रमेण् यया। "लक्तें व्ययसामयोस्गुस्त कर्मस्यते भूमिजे राष्ट्री धर्मविनाशयो रिवस्ते युनेऽरिमू ल्योविधौ। बसी छे सइजार्थयो: सुरगुरीरवं खलाटोज्ञवे योगे दिक्पतिभि: सत् चयभुजः प्रागादिकाष्ठां गताः। सग्ने सीस्यगुरूपाचां याम्यां खे कुनभास्तरो॥ पश्चिम्पस्ते तथा सीरिं सीम्यां दसी विधुं सितम्। एवं दिखलिनो याने त्यजेद् यताल्लाटगान्।[ लमे व्यया ये दशमेऽ धर्मे यमेऽरि मुलो हिवके विवित्ते। प्रतीपगा येषु सितन्दुपुर्वी प्राचादिकाष्टासु न यातु रिष्टी॥ भीचरी यह जिते प्रतिलोमें भागे वे कलु पिते स्त्रारे वा। प्रस्थितरे नरपति: प्रवसी वा चिप्रमेव वशमिति रिपूणाम् ॥ एदंविधेऽपि शुक्ते यायाद् यदि चन्द्रजोऽनुकृत्सः! प्रतिब्धयातस्य न परिवाणे यहाः शस्ताः"॥ राजमार्चण्डे। "सीम्यां लगगते वधे भिवरिधं वायस्मतावहमे प्राचीं ती स्एकरे कुले च दशमे याम्यां प्रयाती नरः। आग्नेयीं भगुजे च शीतिकरणे बन्ध-खित वायवीं मन्दे सप्तमी पश्चिमदिशं याति द्विपां वायताम्। नाभीचस्तकोसवदिवसाय यियासतां गुभदाः। एदेगस्तपते मुखं ययधरे रोगो महीनन्दने लाभयन्द्रसुते गुरी ध कथितः

विभीमैवेनति यदि नरेन्द्रः चिप्रमेषादमस्यैः। सन्यति रिपुद्धें सोच्छ्या वैरिशङ्को विचरति ग्रहमध्ये सिंहपोती यथैकः"॥११॥ "रविमुतरुधिराका वृहिमोछं नराणां विदेः धित जुमुदेष्ट: खेषु भेदेषु भेदम्। स जयित रिमुद्धे सत्यही-नीऽप्यवर्यं यदि व्धगुरुग्रक्षा हादशस्या भवन्ति"॥१२॥ "तियादिषु निपिदेषु चन्द्रताराविलोसतः। उषां गीधूर्लिः योगं वा खोक्तय गमनं भवेत्॥ प्राचामुपां प्रतीचाञ्च गोधूर्ति वर्जयेवृषः। दिचिषे चाभिनिचेवसुत्तरे च निगां तथा"। व्यासः। "समग्रिहर्यदा नास्ति प्राप्तकार्तीऽति वर्तते। यविशेषेण वर्णानां तदा गोध्निरियते॥ यानतः-समं रजनोविरामं वदन्ख्यायोगमिइ प्रवीणाः। याहः प्रयाते: सकतार्धसिधि संस्वते इस्ततसस्यतेव॥ सन्धात-पार्णितपियमदिग्विभावे छोन्ति स्प्रहिर्नतारकसिवेगे। कदे गवां सुरपुटोहिनतैरजोभिगोंधूनिरेय कथितो भृगुजिन योगः"॥ स्यासिद्दान्ते। "पर्दास्तमयात् सन्या व्यत्नीभूता न तारका यावत्। तेनः परिद्वानिष्या भानीरहोदयं यायत्"॥ एतद्दधनैकवाकातया सन्योपयोः सन्यागोधन्यो-रैक्पम्। भतपवीतां "सन्धासुहर्त्तमान्यातं द्वामहर्दी समा रमता। सामगत्मक्तिपु समारो मोम्यग्रक्तगुरवो वलयुक्ताः॥ गच्छती यदि ततोऽस्य धरियी सागराम्युवसना वश्मिति"॥ धिरत्रीयोगः। ''केन्द्रोपगतेन गुरुणा बीचित व्यायचत्र्यमे मिते। पापैरनवाष्टसप्तमगैर्यस्किंन यदाष्ट्रयाहतः"॥ किवसु-योगः। "ग्रागिनि चतुर्घम्यः समुपेते ब्रुधमिश्विरम्तगते सगुपुत्रे। गमनमवाप्य पतिमनुजानां जयति रिपृन् ममर्गा विनेष" । विनाससरयोग:। "सितन्द्रजी चतुर्यंगी निमा-करप समने। यदा तदा गती सुपः प्रतास्वरीत् विना

रणात्"॥ विनारणयोगः। "एकान्सर्छं स्गुजात् कुजाहा मीम्यो स्थित स्थिसुताद्गुरोवा । प्रध्वस्यतेऽरिने चिराद्गतस्य विमाधिको सत्य द्रवेखरस्य ॥ वार्यप्रधसयोगः। "गुरुष्ट्ये रिपुराधिगतीऽको यदि निधनेन च गौतमयुखः। भवति गतोऽत्र श्रगौष नरेन्द्रो रिपुवनिताननतामरसःनाम्"॥ श्रशि-नरेन्द्रयोगः। "लग्नारिकमं दिवुत्रेषु श्रमे चिते श्रे यूनान्य-स्वनरिक्षित्रप्रभग्रहेषु। यातुर्भय न भवति प्रभवेत् ससुद्रं ाद्यस्मापि किमुतारिसर्मागमेषु"॥ शिलाप्रतर्णयोगः। 'मूर्त्तिवत्तस इजिष् सिख्याः शक्त चन्द्रस्तितस्य श्रम्यः। यस्य गनसमये रणानले तस्य यान्ति यसमा दवारयः"॥ चरि-लभयोगः। "शक्रवाक्पतिनुधैर्धनसंखैः सप्तमे शशिन । गनगति क्षि। निर्मती नृपतिरिति कतार्थी वैनतियवदरीन् वनिरद्धा" ॥ परिवेनतेययोगः। "विषम्वनत्येष्वपनः । याद्वयान्द्रिक्तो यस्य गुरुष केन्द्रे। तस्यारियापाभरणैः प्रयाणि प्रियाः प्रियाणां अनयन्ति सैन्ये" ॥ अरियोपाभरण-ोगः। "वर्गित्तमगते चन्द्रे लग्ने वा चन्द्रवर्छते। चतुरादी-। हेट्टे स्पादा विंगति: रस्ताः"॥ राजयोगः। "मपादि-तदशरामीनां सीयनवां मस्ये सन्दे चन्द्रे च यय सुवापि स्थिते बन्द्रवितेशतुरादिभिग्दैर्विचिते"॥ प्रयम्यः। दादमः तिशमु लग्नस हाद्य एवं स्वीयनवांमास्तव कुभां यर्जीयत्वा एकाद्येव स्थिता एवं चन्द्रस्यापि द्विषक्षिकमात् एकाद्योव म्यामानि स्वारिति द्वायिंगतिः कुभाराने दोपदर्गमात् त्यागः। वया। "न कुभसमे श्रममाद सत्यो न भागभेदान् यदना बद्दितः वृधिकशामयम्ब्रयं भीचग्रहिति चम्ब्र्यचे वृधि-ववसम्म । सर्वगंगमञ्जमणेट हे सम्ने भवति सहीवानः। । सिभि. ग्रमे: सर्विष्णतमयो दोसंसीवी च । सामकातः

मित्तं कुमोजनम्" ॥ भोजनं चीरवर्जनम् उत्तरदिगितरपरम्। पूर्वादिपाधनविधिः। भुजवनभौमः। "सर्विस्तिनीद्न-भवैः पयसाच सुक्ता पूर्वादिवारणरथाखनवैर्गतस्य। सोहं प्रतापमरयो न नृपस्य शक्षा गर्भाइपस्य श्लामा इव दानग-न्धम्। श्रभाश्रभानि सर्वाणि निमित्तानि खुरैकतः। एक-तस्त मनो यातुस्ति द्वाद्यं जयावहम्। रिताः कुमोऽनुकूलस्यः यस्तोऽभोऽधोयियासतः। चौर्यविद्या वणिन्यार्थसुदातानां विश्रीपतः। मेघाः शस्ता घनास्त्रिया गजव् हितशब्दिताः। षनुकोमाति डिच्छस्रा शक्तवापस्तयैव च। प्राशस्ते तथा भ्रेये परिवेशपवपंषे। जनभानि च पुष्पाणि देवदूर्वाद्रेगो-सयम्। रूप्यतास्त्र यवाः श्रस्ताः श्रवारुदितवर्जिताः। श्रनु-लोमी हवो नदन्धन्या गौर्माइयस्तया । गमनप्रतिपेधाय गावः प्रत्युरसिस्थिताः। प्रागुदौचीः ग्रियाः श्रसाः ग्रान्ताः सर्वत पूजिताः। धूमिताभिमुखी इन्ति खरदौपादिगौख-रान्। सुक्तिप्रक्षिध स्थाच फर्ल दिखु तथाविधम्। पद्मार-दोप्तधूमिन्यसाय यान्तास्ततो परा"॥ दन्धादि दिङ्निर्णयः। ''विष्यययागतः पद्यी धुन्वन् ध्वांची भयद्भरः। प्रख्यस्युप-सपसु सस्प्राय भयद्भाः। ध्वांचः पार्श्वदयेगापि प्रस्तापात्रा-नुनोसगः। वामे भवभिवा कुन्धा द्चिणे गोश्रगहिना." # दौषिकायाम्। "नृष्ठयातपवार्णेभश्रख्यक्ष देशानवस्वयन् लयाय। सभयो विषरन् विमा निमित्तं न यभः माभिमुखी भवन् निखनगाम्। इन्हरोगार्दिताख्यसाः कलहामिपका-द्विष । यापगास्तरितामसान् याद्याः ग्रमुनाः कचित्। क्रीयाषूड्वे यकुनचरित निकानं प्राइरिके। तवानिष्टे प्रयम-शक्ती सामयेत् पञ्चवद्याः प्राणायामाकृपतिरश्रमे पीइनैव • दितीये प्रत्यागच्छेत् सभवनमृती यचनिष्टिकृतीय. ॥ मस्य-

पुराणे "दृष्टा निमित्तं प्रयममङ्गल्यविनाशनम्। केशवं पुज-चेहिहान् स्तवेन सधुसूदनम्। हितोये तु ततो दृष्टे प्रतोपे प्रविशेदु स्टहम्। एहीति पुरतः शब्दः शस्यते न तु एष्ठतः। गच्छेति पद्याच्छुभदः पुरस्तात्र विगर्हितः। उत्तानग्रयाः सनपादुकादि निष्ठ्तिदुर्दर्भनसैयनानि। नेष्टानि शब्दास तथैव यातुरागच्छति स्वप्रविश्वस्थिराद्याः। विसर्जयति यश्चेक एकस प्रतिपेधति । सविरोधोऽग्रभागातुर्याह्यो वा बसवसरः। चनुनोमगते प्रदक्षिणसुरभौ देइसुखेऽनिले गतः। तिमिराः लिगमस्तिमालिरप्रसमं इन्ति बलानि विद्याम्। ध्वजात-पत्राब्धमविपातिस्त्री प्रयाणे यदि मानवानाम्। स्रिस्तो वाऽसुरमिति सङ्गं यातोऽयवा तन्त्रवतेः चयाय। पौषादि चतुरो मासान् हर्ष्टि दृष्टा न संझजेत्। यसु संप्रस्थितो यात्रां ब्राह्मणानुपमन्यते। स्वकीयां परकीयां वा स्तिय पुरुषमेव च। ताडियिलातुयो गच्छेत्तदन्तं तस्य जीवितम्। याद्राः काले तु संप्राप्ते सैयुनं यो निसेवते। रोगार्नः चौणकायस म निवर्त्ततयानवा। सालातु मैघ्नं रात्री प्रभातेय: प्रति-ष्ठते। नासी प्रतिनिवर्त्तेत दुःखच प्राप्नयान्नरः। कटुतैल-, गुड्चीरपक्षमां मामनन्तया । भुक्षा यो यात्यमौ मोहाद्याधितः स निवर्तते"। वराहपुराणे। "त्यणोदकाक्योषु वनेषु सत्ताः क्रीडन्तु गावः स द्याः स दलाः। चौरं प्रमुख्न्तु मुखं ख्यन्तु श्रीतातपव्याधिभयैवियुक्ताः। इमं मन्त्रं विग्रहात्मा सपेन्नित्यं ममाहितः। गच्छन् तिष्ठन् ख्वन् जिन्नन् भुज्जन् ऋौड्न् भम्तृष्टजन्। सहाभयेषु सर्वेषु विषमेषु समेषु घ। प्रयाण-माले च तथा योतव्यमभयपदम् । सलामुक्ते "बलिकर्मणि गवायां प्रवेश नववेशमनः। महोत्सवे च माहत्वे तव स्वीपां ष्यिनः ग्रभ,"। ध्वनिष्णध्यनिः। दीपिकायाम्। "सिषा-

सकादर्भपयोऽस्त्रनानि बहैकपम्बामिपपूर्णकुकाः। उच्छोप सङ्गारन्वसमानपुंयानवौषातपवार्यानि"। सङ्गारः कनकाः लुका। "दिधिमध्षृतरोचनाकुमार्घ्याध्वज्ञकनकाम्ब्ज तव पौठमद्वाः । सितद्यक्तसमायुवानिमीनद्विजगणिकाम्जनाय चार्वेगाः । च्विनितिगिविफनाचतेच्यच्यदिरदस्दङ्गाङ्गाः चामरायुधानि। सरकतकुरु विस्वपद्मरागस्फटिकमणिपमु-खास रत्नभेदाः। स्वयमध रचितान्य यत्नतो वा यदि कयि-तानि भवन्ति मङ्गलानि। स जयति सकला ततो धरिवीं ग्रहणमृगालभनमुतेरपास्य निर्गतस्य तु द्वारादोः" गिरसया-भिघातनम्। "छवध्वजादि वस्ताणां पतनस्र तथाग्रभम्। करीशर्गाभणो वाणि भग्नभाग्डावनीकनम्। कार्णामीपध-स्टिधान्यस्वनक्षीवास्थितेलं वसायद्वाद्वारगुष्टाहिचर्मस्रकतः क्षेत्रायः सव्याधिताः। यान्तोत्रात्तजटीन्यनं खणतुपचत्चा-सतकाषयो मुण्डादाक्रविमुक्तकेशपतिताः कापायिणयाश्वामाः। कुटुम्बक्तलद्दा ग्टहक्वननमान्त्रं योपिताम्। विडालसमर् स्तुत स्वनितमस्वरादेग्तया। दुरुक्तमतिकोपिता महिपयीय युडं भवेत्। प्रयाणसमये ऋणामभिमतार्थाविष्टित्तये"॥ यान्यव मङ्गनामङ्गनानि निर्मष्टतां प्रदिष्टानि। स्वप्नेऽपि तानि गुभागुभानि विड्सेपनं पुनर्धन्यम्। एकम्यां यदि चेद्राची ग्रभं या यदि वाग्रभम्"। तया च मसापुराणे पुरुषसा कतम्। "क्षतकत्यो यया कामं पूत्रियता जना-र्टनम्। सप्राल् देवदेवस्य न्यवेदयत् धार्मिकः" इति। द्रा-प्राक्षयमं धन्यं पुनः प्रदापनन्तया। प्रात्त प्रानं तिने ही भी द्राद्मणानाच भीजनम्। सुतिय वागुदैवस्य तथा तस्य घ पूजनम्। चचुसन्दे भुजसन्द तथा दु सप्रदर्गमम् । याषुणः य सत्त्वानमदात्व शसयाय मे। अगत्यक्षी भगवान् पीयतां स

जनार्दनः। सन्तेगानेन चाम्त्रसं प्रार्थयेद्दीपस्चने। चिन्नाः दुष्टेन योकेन व्याधियस्तेन या पुनः। कामग्रकोण चित्तेन खप्रे न फनभाभवित्। चविज्ञातस्वरूपाणां नराणां ज्ञान-हेतवे। खप्ने दृष्टानि वच्चामि पुर्खपापोद्ववानि च"। एव-घेपां स्वकतं न कारकत्म "पादित्यमण्डनं खप्रे चन्द्रं वा यदि पश्चति। व्याधिभ्यो मुखते रोगौ चरोगौ सुखमाध्रमात्। दौषमवं फलं वस्न कत्यारसं रथध्वजम्। यस्त् पश्चति स्वप्नास्ते मभने चोत्तमां यियम्। एपानदी च क्षत्रच सम्बायः प्रति-यधाते। पसिया निर्मलं तीस्एमध्यानं तस्य निर्दिशेत्। देवताय दिजा गाव: वितरो निद्धिन: स्त्रिय:। यहद्गित नरं खंप्रे त्त्रधेव भविषति। पारोष्ठणं गोष्ठयकुष्त्रराणां प्रासादशैक्षायव-नस्यतीनाम्। पारुष्टा भोकां प्रतिग्दश्च वीणां मुझा हदित्वा भुज-सर्यनामः। भचणचार्यमांसस्य मस्त्रस्य पायसस्य च। दर्शनं रुधिरस्थापि स्नानं वा रुधिरेण च। सुरारुधिरमद्यानां पानं चौरस्य ग्रोभनम्। कोवतां भूमिपालानां सुद्धदामपि दर्यनम्। धरमो द्विषयेव अलोका हम्मते यदि। तदा प्रमादि साभः ब्यादगम्यागमने ग्रभम्। सर्वाणि श्रक्तानि सुग्रीभनानि कार्याः मभसास्यिकपालवर्जम्। सर्वाणि क्रणामि विनिन्दितानि गोहस्तिदेवदिजवाजिवर्जम्। सर्णं बन्धनं धर्मा विद्वदाशी रहहादिषु। यक्षणीताम्बरा नारी मक्षणीतानुलेवना। श्रव-गुइति य सम्रे तस्य स्थात् सर्वतः सुखम्। क्रण्यकाम्बरा मारी रलक्षानुसेपमा। चवगूहित यं छत्रे धार्धि मृत्युच निर्दियेत। वराष्ट्रचंखरीष्ट्राणामारीष्ट्री मश्विष्य च। अञ्चणं पश्चिमांसामां सैनम्य क्षत्रारस्य च। मर्सनं ४म्मखेव विवादी गोतमेव च। तन्योगधाविष्टीनामां वाद्यानाम्य वाद्यमम्। दिमालरी चभीमानामुत्यातानाला दर्नम्। सप्रे प्रश्नि

चातानं रहास्वरिवसूषणम्। मिलनाम्बर्धारितमभ्यद्गः सीरनम्नता। छस्रवाचरणं पातो दोनारीश्य निस्तिः ॥ इति स्वप्रपक्षम्।

"सर्वतः चतमग्रीमनं स्मृतं गोच्चतं मरणमेव करोति। केचिदाद्वरफलं बलात् क्षतं वृद्यगैनसितवालक्षतञ्च॥ विसं ब्रह्मण कार्यसिहरतुलायको इताये भयं यास्यमन्निभयं सुरद्विय कलिलांभः समुद्रालये। वायव्यां वरवस्नगन्धसनिलं दिचाडुना चीत्तरे। ऐप्रान्धां सर्गं ध्रुवं निगदितं दिग्लचगं खखने । च्येष्ठीक्ते सुतिऽध्येवमूचः केचित्र कोविदाः" ॥ • विश्वाधभीतिरे। विश्वोदियधिक्षय "नाम संकीर्तनं निर्यं चुतः प्रस्वस्तितादिषु । वियोगं शीघ्रमाप्रीति सर्वाक्षा नाव संगयः"॥ धतएव विष्णुपुराणम्। "रमृते सकलकस्याण-भाभनं यव जायते। पुरुपन्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं इरिम्"॥ युद्धयावायाम्। "यव ऋची स्थिती राष्ट्रवेदनं तिहिंगित्। सुखात् पच्चद्ये ऋचे तस्य पृष्ठं प्रतिष्ठितम्। राष्ट्रभुक्तानि ऋचाणि जीवपचे व्यवेदमाः नयोदगैरभो-ग्यानि सृतपद्धगतानि च॥ सृतपची सुखं तस्य गुदं जीवार्ष-मध्यगम्। जीवपचे चपानाधे स्रतपचे खो स्थिते॥ .तदा रणे गुभा याता विपरीते तु द्वानिदा। चन्द्रादिखी यदा युक्ती जीवपचे व्यवस्थिती॥ तच चेमं जयोसामो यावाकाले न सथयः। सृतपदे यदा काले संस्थिती चन्द्रभास्त्ररी ॥ तदा द्वानिभयो भद्गो सल्यायां व्रापलं मतम्। जीवपचे स्थिते चन्द्रे कार्यः स्वादस्तोपमम्॥ स्तपचे स्तं न्नेयं यतसन्द्र-वनावसम्। युषकासी यदा गीमं याषायोगिन सभाते॥ उत्-पत्यो तु तदा यीवं तलालेन्दुदिवाकरी। इष्टा नाद्यो इता धिष्टीः यष्टिभागाप्तयेषवे॥ अखिन्यादीन्द्रभुप्तेन योगात्तवाच-

चन्द्रमाः। यथा चन्द्रस्तया सूर्यः कर्त्वययेष्टकालिकः। घडी-रावस्य मध्ये तो विभाग्तो धिष्यमण्डले॥ सर्वेषु ग्रमकार्येषु याचाकाले विशेषत:। दण्डेय पच्चभौराशावेवं स्वर्धादशं क्रमात्॥ सम्वद् भुक्तभाग्यस्य त्यागाच्छे पक्रमात् क्रमः" ॥ दृष्टा नाद्यः वानीकानीनदग्रसंख्या सुर्योदयावधि गतरापि-प्रविष्टनच्रवदण्डमंख्यावधि वा सप्तविंगत्या पूरिताः षष्या यो सक्ष: सोऽश्विन्यादिचन्द्रभुक्तष्ट्रत्या नचत्राष्ट्रयुक्त: सप्तविंगा-धिकयेत्रमपद्याय यत् संस्थानं तैन नचतं तत्र चन्द्रः। ग्रीपस्तवोदयावधि कर्मकालीनदग्डमंत्याया गतराविप्रविष्टः नचवरण्डमंस्यायोगात् यो भवति तसंस्यदण्डा भोग्याः। सूर्यः ' यचे स्र्यभुक्तनचवाद्वयुक्तो लब्धाद्व द्ति विशेषः। "प्रवामः सुर्यता सृत्युर्हास्यं जायाच्यरोऽरति:। नष्टता शुच्यता क्रीडा स्तिभुक्तिय मेपतः। एतायेद्वादभावस्या भगाद्वस्य दिने। गुभाग्रभेषु कार्योषु फलं नास्यनुरूपतः"॥ इति तत्-कानीमराष्ट्र तत्कान्तचन्द्रादित्यव्यवस्था च यात्रायां निर्दिष्टया। प्रस्थिते "मरणं सप्तमानां युद्धातां विजयो धुवम्"॥ विदे-ग्रागतभाषान्वेषणायं न गन्तथम्। यद्या विषाुपुराणम्। "ततः प्रसृति वै स्त्राता स्त्रातुरन्वेषणि द्विनः। प्रयाती निद्यति तया तन कार्ये विजानता"॥ ततः समस्रपृधिनीं द्रष्टुं गतानां इर्धिमादीनां तदनुगामिनाञ्च तद्भातृणां सवसामाः दीनाम् यनिवर्त्तनदर्शनात्। मत्यपुराणेऽपि। "तत.प्रसृति न भातुः कनौयान् मार्गमिक्ति। चन्द्रिय दुःखमाप्नीति तेन तत् परिवर्जयेत्॥ तियावरिक्षे गुभदेच चन्द्रे पापेपु केन्द्राष्टमवर्जितेषु। प्रास्ये स्थिरे वा निलमे सुलको ग्टइं विगेदा न मिहत्तभूप:। परविषयपुरामी साधुदेवदिलसं अलगनवनिताय स्टाधिपी नीपर्क्यात्। विष्यातुर्गग्रासाः वार्तभीतां इन्याच्छ भतिधिदिवसर्चे द्वष्टसैन्यो विशेषाः सहाने प्रषेटः शक्तेन्द्रजीवे भ्रवस्ववनिभिद्विष्टामेनेन्द्रपीच्येः सहाने पापनकोदयपतिषु विरम्भारिगेन्द्वारसीस्यः। व्यायारिखेन्याष्ट्रस्याप्टब्ययग्रहर्राहतैः सद्यहैः केन्द्रकीणे वीर्थाक्ये चवियांशे सदिनतिधिश्मेन्दो नृपस्याभिषेकः" ॥

षय क्षत्रचक्रम्। "ग्रादी चक्रं खमालिखा क्षत्रतयं सुगी-भनम्। पश्चिन्यादिनिखेत्तत्र सप्तविद्यतिभानि च॥ प्रश्चि-न्यादां मधादाञ्च सूमादाञ्च क्षमेण तु। उत्तरे पूर्वदचे च एतच्छवत्रयं मतम् ॥ प्रतीचीमध्यरेखायादेशान्यकां स्वया-धिप:। प्राग्नेय्यन्त नराधीयो नैऋ त्यन्तं गजाधिप:॥ प्राया-ध्यचो नराध्यचो गनाध्यचः क्रमेण तु। एषां छवविभागेन जातव्यच ग्रभाग्रभम्॥ यन्येषां भूसतासचं यव क्रेचे व्यव-खितम्। तच्छन तस्य भूपस्य ग्रभाग्रभफनप्रदम्॥ चामरं कलसी वीचा क्षत्रं दग्डः पतद्ग्रहः। पासनं कीलकं रह्यु-र्नवभेटाः प्रकीर्चिताः॥ यस्य क्वे स्थितः सौरिः भङ्गं तस्य विनिर्दिग्रेत्। फलच्च चामरादीनां प्रत्येकच्च वदाम्यहम्॥ चामरे चएइता वायोशनाष्ट्रशिक्त जायते। दुर्भिचच भवेहीरं प्रजापीडा न संशयः। कलसस्ये भवेद्युवं रणे भङ्गी महद्रयम्। चातपातादिकं सर्वे जायते नाम संगयः। वीषासंखेऽकंतनये पहराची विमन्यति। चलचित्ती भवेदाना भयभौता व मेदिनी। यदा ऋधवये सीरिञ्छ वे दण्डे पतद्य है। तदा तस्य भवेद्वद्वश्वयापि न संययः। पासनस्य भवेद्याय चासनस्ये प्रतिसरे। युवराजचयः कीले वस्वनं रक्तुसन्निते। सीम्ययुक्तीऽतिचारस्यः यनिक्ताफली न हि। वक्तगः करः युक्तस सर्वेद्धरं बरोति सः। यनिराहुकुनादित्या यदा जीवेन्द्रसंयुताः। उत्तराधीयराजी वै निवितं क्रवभङ्गदाः।

कृरस्तुष्टयसेव बुधचन्द्रेण संयुतम्। पूर्वेच्छ्वविनाभाय स्चितं पूर्वस्रिमिः। एवं पापचतुष्कस्य यदा भ्रक्तेन्दुसंयुतम्। दिन्धः पाणापतेन्छविनाभी भाषितो बुधः। एवमन्येषु राज्येषु यत्र यस्य च सभवः। एक्तम्यस्तमायीगान्छवभद्रं विनिर्दिगेत्। यथा टुएफलः सीरिस्तथा सीम्यफली गुनः। भीमान्द्रीत्। यथा टुएफलः सीरिस्तथा सीम्यफली गुनः। भीमान्द्री वले सभी। यथा द्रानिकराः क्रूरास्तथा सीम्याः भ्रभद्धराः। क्रूरगुक्तो बुधः कृरयन्धः पूर्णस्तथाग्रभः। सीम्याः क्रूराः यदा क्रवे ट्रष्ट्या वे छचन्त्रीस्ताः। इत्रभद्धी सपेतस्य परचक्तागमन स। न्यमामार्चन्त्रीराष्ट्रः केत्वां यदि संस्थितः। इत्रभद्धी भवित्तम्य विधन्द्रानेन भूवतेः । स्थायां सादसं यातां द्रष्ट्राव्याणाववाष्टनम्। विषयस्य व्यक्तिस्य स्थायां सादसं यातां द्रष्ट्राव्याणाववाष्टनम्। विषयस्य विधन्तिम् विभिन्ने विश्वस्य विधन्तिम् विभिन्ने विभिन्ने विश्वस्य विधन्तिम् विभिन्ने विभन्ने विभन्ने विभन्ने विभन्ने विश्वस्य विधन्तिम् विभन्ने स्थाने स्थाने स्थाने विश्वस्य विभन्ने विश्वस्य विभन्ने स्थाने स्थाने स्थाने विश्वस्य विभन्ने स्थाने स्याने स्थाने स्य

चय सिंदामनचलम्। "चयातः संप्रवद्यामि चल्ने सिंदाः मनत्रयम्। सस्वियितिनचलैरकैल्यु नरासकम् ॥ अध्विनी-मचमूनायां पद्यनाडौ विमेदतः। चित्रन्थायुत्तरे भाने मचम्यायं पूर्वतः स्थितम् ॥ सूनायां दक्षिचे भागे आत्रयां नृपतित्रयम्। इतरेषु च वायोषु नृपनामचिती वदित् ॥ यभाः यभिमदं सवं यच यस्य मनिः स्थितः। नाडिकापचित्रेषेन पक्षेत्रस्थामनं भवेत् ॥ पाधारमामनं पदः सिंद्रं मिद्रासनः नत्या। प्रदेवेषवयाल्ग्नेयं सौस्यैः क्रूरेः यभायमम् ॥ भूदच पाधारमे राजा चित्रविक्तो यमासने। पराधीनगतं राज्यं कदते नात्र संग्रयः ॥ चासनस्येन न्त्रचेषं मीतियुक्तो भनेन्त्रयः । प्रधानपुद्धी देवः प्रजायानिवरी भवेत् ॥ पदः ऋषे यदा राजा चप्रविद्धी नृपायते। पृषेराकस्थितिस्त्रविद्धी स्थाप्तः

यते महौम्॥ सिंहरूपौ भवेदाना सिंहर्चेण्सने स्थितः। संगामस्य पियो नित्यमसाध्यो मन्त्रिमण्डले: ॥ सिद्वासनगते धिष्ट्यो तेजस्वी भीषणाकतिः। चलिश्वतो सहाक्षीधी प्रजा-पौड़ाकरो नृपः॥ तत्कालेन्द्रभते ऋचे क्र्रानिवेधनाडिके। ग्रुभावस्था श्रुप्ते सस्ने संस्थाप्यो नृप भासने ॥ ईट्यो च समा-योगे एपविष्टो य भासने। एक्काय ग्रत्संवातमेषक्कते करोति सः॥ अस्यदगता नाष्ट्रीमुपविष्टो य घासने। बन्धनं भूभिनाग्रय तथा स्हाः प्रजायते ॥ चाधार ऋचगः सौरि-रनाहृष्टिं करीति च। दुर्भिचं रीरषं तत्र प्रजापीडा च जायते॥ चासने च यदा सीरियुंहे भद्गप्रदा भवेत्। अथवा व्याधिपौड़ा च मनोद्:खं प्रजायते॥ पष्ट ऋचे यदा सीरिः पष्टराष्ट्री विनम्यति। प्रियी वाय कुमारी वा सन्तिबन्ध-चगेऽपिवा॥ सिंहे सिंहासने वापि यदा तिष्ठति सूर्येजः। तदा ख्रुनं सन्देशे यदि यक्तसमी तृपः॥ यनिराह्वकमा-हिया यदा चन्द्रेष सप्तुताः। यस्यासनगता एते तस्य राष्ट्री भयद्वराः ॥ क्रूरमुक्तोऽय वक्रस्तु क्रूरनाडौगतोऽपि वा। भासने चन्द्रयोगिन कालक्षी श्रनेयरः। एवं श्रभफलं द्या-देवमन्दी न संप्रयः। करोति विपुर्खं राज्यं यस्यासनगती गुरुः"॥ इति बन्दाधरोयहरिहरभटाचार्यासन्त्रीरघनन्दन-भट्टाचार्य्यविरचित च्योतिस्तस्यं समाप्तम्।

## मलमासतत्वम्।

"प्रणम्य पश्चिदानन्दं परमासानमीखरम्। मुनौन्द्राणां स्मृतेस्ताः विक्ति श्रीरञ्चनन्दनः ॥ मलिस्नुचे दायभामे सस्कारे गुहिनियाये। प्रायसिसे विवाहे च तिथी समाष्ट्रमी-व्रते॥ दुर्गोत्सवे व्यवद्वतावेकाद्यादिनिर्णये। तडागभवनी-सर्गे हपोसर्गवये व्रते॥ प्रतिष्टायां परौचायां च्योतिषे वास्तुयज्ञके। दौचायामाज्ञिके कत्ये चेते चौप्रवोत्तमे॥ सामयाहे यनु.याहे श्रूट्रक्तत्वविचारणे। इत्यष्टावियतिस्वाने तत्वं वच्यामि यत्नतः॥ प्रयम्य भारतीकान्तमञ्चानध्वान्त-भास्तरम्। सता सुदे रस्तेस्तचे तस्त्रं भाषे मलिख्ने ॥ मामग्रयां तथोत्य स्विवाक्यं दर्शादिकस्य च। प्रक्रती विक्रते-र्धेम: पचादिकालनिर्णय ॥ चान्द्रमावननाचत्र मीराणाच निरूपणम्। तथा कर्मविमेपेषु चान्द्रादिमाधनिणय ॥ सिष्ठाः कोरी न यात्रा स्वाह्याष्टी व्यसनानि च। देवस्य लहाणं कर्मसिष्ठ ये देवपौरूपौ॥ कास्य हेतवः कष्टो रिपुरम्ब प्रदा-नकम्। भगस्यसः मुनेर्वाच्यमुत्तरायणश्क्तयोः॥ चूडोष-नयनं सस्याकाभिऽतीतेऽपि सा भवेत्। सीमन्तोत्रयन जाते-ऽप्यपनायौत्तराविध ॥ साने च कार्त्तिकादेस्त सौरचान्द्रवि-कल्पनम्। तदग्रत्रो प्रतिनिधिर्माघसानविधिस्तया॥ स्नान-तर्पययोर्भध्ये प्रात.मस्यालतिस्तथा। पौर्णमास्यसमासेन मुसकानामभक्तपम् । सीरेष माधवस्रामं नाक्षतम् प्रयो-जनम्। चान्द्रमोरोत्रकार्धाणां वाक्षे सामी तथाविधी ॥ चन्वत सुख्यचान्द्रः साददोक्षेषस्य साधकम्। मामग्रद्भय दर्गान्तमकाले साधकात्तरम्॥ तिघेर्नदम दिनत्वस धर्म-

गास्त्रेण बाध्यता। पर्यशास्त्रस्य भीगानां विशुक्तवनिर्णयः॥ विधित्तियात्मकी मासी लग्नमानादिनिर्णयः। नाच्चववत्-रैरायुस्रेताच प्राक्तियौ तया॥ पाएमासिकाब्दिके याचे चैचादेसान्द्रवाचिता । चेतुवद्यायचर्चात्र मेधादिराधिनिर्णयः॥ यक्षिपादकमानच चैवादेरव्दवाचिता। सप्ताच्येष्ठी विचारीऽत्र संवक्तरनिरूपणम्॥ लचणं मलमासस्य तद्युग्मस्यैकश्वायने। विचार: सावना हेन सहवारप्रवर्त्तनम् ॥ चयमासा हिमासर्व संचेपो मलमासने। दोचानाखिधानच दौचा प्रतिप्रस्तिका॥ शूद्रस्थोद्वारयुद्दान्वनिषेधय स्तिया प्रिष प्रतिकेऽपि च पूजादिरयोचे विषाका भिनम्॥ प्रधिमापे विवाहादिनिषे-भ्य निरूपणम्। सपिएङौकरणयाद्यात् सिद्धिः स्यादाब्दि-कस्य च॥ ग्रह्दी:स्यमनसापि द्रवादी पाकनिष्यः। सार्ते शुद्राधिकारय प्रायिति मलिख्वेषे p दत्तनष्टखणदानं गजच्छाया निरूपणम्। शूद्रस्यापि सघायादमविभन्नैः पृथक् क्रिया॥ सघानिसित्तके याद्धे पुत्री पिण्डं विवर्जधेत्। यापिराइक्समायाद्वात् पचयादकतं भवेत्॥ पार्वणासन-दानादी ये चाव लेति भाषणम्। पर्यदासी गयायान्त काल-दोपा प्रतीचणम्॥ नवात्रशाहकात्वय विजन्मादिविवेचनम्। कालाग्रहिविधारीऽत घातुर्मास्य व्रतं तथा॥ ऋतुभेदात्तयी-त्याते द्वीपाभावविनिर्णयः। काम्य सम्पास्य तुष्ययं प्रकर्तव्यं मुसुचुवा॥ महादानस्य गणना तथा तस्य च सत्तपम्। व्रतं यक्षालमासाई विद्यपचस्तविया ॥ अम्बयुक् कप्णपचीय-याद्वस्यक् निरूपणम्। मलमासे त्रभावास्या प्रत्याद्विन चनम्॥ सपिएइनस्यापकार्यो गर्भकत्यादिहितुकः। सन्यास-प्रतिपेध्य कसौ धवविग्रोभवेत्॥ पुनितरेण कर्मव्यमेकोहिष्टं स्ताइति। गपार्वणं यदाचित्तु दर्शादिकसृतस्य च॥ मस- \*

सासान्तर्रिष स्थानानमासस्ताब्दिकम्। निवन्धान् वर्षधार् सीच्य निवध्यन्ते सर्ता सुदे"॥

श्रय मासगक्यम्। तेव सञ्चारीतः। "इन्द्राम्नी यव ह्रयेत मामादिः स पकीर्त्तितः। धानीपीमौ स्मतौ मध्ये समाप्ती पिट्सीमकी"॥ यव शुक्तप्रतिपदि। "तथा इ त्रमावास्यायाममावास्यया यजीत पीर्णमास्यां पीर्णमास्या यजेत" इति श्रुतिविद्यितदर्भयोषमासयागयोः कर्माखरूप-त्रापकत्रतीय समामनन्ति यथा "चानियाष्टाकपानीऽमावा-खायां पौर्णमाध्याचाती भवति छपांग्रयाजमन्तरा यजिति ताभ्यामेवाग्नीपोमीयमेकादगकपासं पौर्णमासे प्रायच्छत् ऐन्द्रं दथ्यमावास्यायाम् ऐन्द्रं पयोऽमावास्यायामिति"। ताभ्याम् त्राम् याष्टाकपासीपांश्रयाजाभ्यां तेनाम याष्टाकपासीपांश्र याजामीपोमीय एकादशकपास्यागास्त्रयः पीर्णमास्याम् त्रामे याष्ट्राकपासेन्द्र-द्धि-प्रयो यागास्त्रयोऽमावास्यायामि-त्यर्थः। यासु श्रुतिषु धमावास्या पौर्णमासोपदानि प्रतिपत्-महिततदुभयपराणि तत्र पूर्वयोयांगारभाः प्रतिपदीयांगः तथा च "हे ह वै पौर्णमास्यौ हे सावास्ये तसात् प्रतिपद्युपवसन् यजेतापरेख्"। इति श्रुतिः श्रव पौर्णमास्यौ पौर्णमास्रौ प्रतिपदी यमावास्थेऽमावास्था प्रतिपदी ग्रातपथवाह्यचेऽपि "पूर्वेद्यर्गिनं ग्रह्माति एत्तरमध्येनतीति"। स्मृतयद्य यथा गोभिनः। "पचान्ता उपवस्तयाः पचाद्योऽभियष्ट्याः"। पारस्करः। "पचादिषु सालीपाकं अपियता द्र्यपौर्णमास-देवताभ्या जुहोतै। ति" तथा कलास्वम्। "दशपीणमासाभ्या मास यजन्ते पचादी यहिंक्सिसर्विधितितः। सम्यार्थः। यावस्त्रीवकयोर्दर्शपीर्णमासयोः प्रक्षतीभूतयोविक्ततीभूती भाम-साधो दर्भपौर्णमासो कोण्डपायिनामयनौयौ पचादौ यष्टश्रो।

यव पचादी यहिवस्तत्सविमाञ्चित। नमामीत्यनेन विज्ञति-गतेन पचादावित्यनेन प्रक्षतीभूतयोशिप दर्शपौर्णमासयोः पचादिकाललमवधारितम्। यथा च्योतिष्टोमे। हाद्य-. यतगोदिचिषा विभागः षोडयिक्जां तदिकतीभूते सवासके द्वादयाद्याध्ये यतेनाद्विनोदोचयन्तीत्यादिदयनेनं निर्णीः यते। तव विभागं मनुरप्यापः। "सर्वधामहिनो मुख्या-स्तदहेनाहिनोऽपरे। एतीयिनसृतीयांशायतुर्यायैकपादिनः"। दिचिया गोगतविभागाय स्रोतकात्यायनोऽपि सय हादशहाद-याद्ये स्यः पर्षर्दितीये स्यस्तस्यतस्यतस्यतीये स्यस्तिसस्तिस् इतरेम्य इत्यच पोडगानामृत्विजां चत्रयत्रः क्षत्वा चत्रारी वर्गा द्रित तैन दर्शपौर्णमासयाजिना पचादियानिना च यव शुक्तपतिपदि इन्द्रामी झरोते समासादिः सध्ये सासमध्ये क्षणाप्रतिपदि अग्नोपोमी इयेते इति क्षत्वा रगृती एवममा-वास्यायामपगञ्ज पिएङपित्ययज्ञेनाचरन्तौति श्रुत्यक्रपिएङ-विद्यप्राष्ट्राग्नीकरणहोमीयसोमाय विद्याते खाहिति मन्त्र-प्रकाश्यी विद्यसीमकी समाप्ती माससमाप्ती श्रमावास्यायां इयेते इति शाला स्मृताविति यव विशेषतो मासादिमधाना-कोर्त्तनात् शुक्तप्रतिपदि दर्शान्त एव मासगब्दस्याभिधेयताया सुने: खरसोऽवगस्यते सावनसीरादौनां गीणतायामपीति। श्रव "पर्वणो यस्तुरीयांश श्राद्याः प्रतिपदस्तयः। यागवासः स विज्ञेयः प्रात्युक्ती मनीपिभिः"॥ इति वीधायनवचनन ऋखे दिनां यागकास्त्रया वोधितौऽपि दर्शपौर्णमास्यंगोऽनि-यततया न मासादिमध्यघटकः किन्तु पूर्वोज्ञ शुत्यादैण्कन्दोग-यरिशिष्टात् गर्भेषधनाच पर्वकालकरणपचेऽपि प्रतिपदि समापनस्थावस्थकतया प्रतिपदेव तद्घटिकेति। तथा घ 

श्वरम्। 'पूर्वाह्म एव कुर्वीत बिरेऽप्यन्ये मनीषिणः'॥ बिर् द्वितीयाविद्वे पचादावेवित्ययोगव्यवच्छेदपरं न लन्ययोग-श्यवच्छे दपरम । तथा कासादर्शकासमाधवीयप्रमृति दाचि-षात्य वैदिकग्रस्येषु गर्गः। "प्रतिपद्यप्रविष्टायां यदि चेष्टिः समाम्यते। युनः प्रयोग क्षत्रेष्टिः क्षत्त्रेत्या योगविस्तर्भः ॥ प्रषौद्याग्निमिति श्रीपः। गोभिसोऽपि। "श्रावर्शने यदा सन्धः पवंपतिपदोर्भवेत्। तदष्यांग द्येत परतथेत् परेऽइनि ॥ पूर्वाद्वापराञ्चद्विधाविभन्नदिनस्याविधित्वेनावर्त्तनमाइ स्कन्दः . पुराणम्। "पावर्त्तनात्तु पूर्वाह्वी द्यपराह्यस्ततः परम्। पाव-- र्भनाद्वासरस्य छायायाः परिवर्त्तनात् ॥ प्राक् पूर्वाह्यः। यत-एवोक्तम्। "पात्रत्यं वन्दयेनित्यं पूर्वाह्वे प्रदादये। चत जहुं न वन्देत प्राव्यन्तु कदाचन"॥ परतोऽपरास्त्रे। विधा-विभन्नदिनाभिषाये तु लोकाचिः। "पूर्वाह्ये मध्यमे वापि यदि पर्व समाध्यते। तदोपवासः पूर्वेद्युस्तदद्वयोग इखते॥ पपराह्वे उथ या राह्ये यदि पर्व समाम्यते । छपोष्य तस्त्रित्रहनि खोभूते याग इष्यतेण । खपोष्यति नाहोराद्याभोजनपरम् । किन्तु क्षतेरान्याधाने देवा यजमानस्य समोपमुपवसन्तीति खप-वासमब्देनान्याधानसुचाते। तैत्तिरीय ब्राह्मणे तथा श्रुते: यथा उपाधिन स्वीयस्यमाणे देवता वसन्ति एव विद्वानिन-सुपस्तृपाति। ष्टद्मगातातपः। "सन्धियदपराञ्चे स्यात् पादः मातः परेऽप्तनि । कुर्वायः प्रतिपद्मागे तुरीयेऽपि न दुर्वात" ॥ नतु चान्द्रवत् सावनादिष्यपि विष्णुधर्मोत्तरे मागपदं सङ्घेतितं यया "चम्द्रमाः सन्यपचान्ते सूर्योण मह युक्यते । सतिकर्पा-द्यारम्य स्विक्रप्रमथापरम्॥ चन्द्राक्योर्नुधैर्मास्यान्द्र दत्य-भिधीयते। रावने च तया मासि विंगत्स्योदयाः स्मृताः॥ पादित्यराधिभोगेन सोरो मासः प्रकीतितः। सर्वर्र्यपरिः

वर्तेस् नाम्य इति चोचते"॥ चन्द्रार्कयोः समिववर्गत् दर्शात्। भवानन्तरं प्रतिपदमारस्य श्रन्थवा सञ्जिष्मार-भ्येति ब्रुयात् चपरं सम्बन्धं यावत् तावत्वासस्यः । एतेन सविकपीदि सविकषीसी मास इति नारायणीयाध्यायमतं निरस्तम्। विंगद्धीरात्रात्मकः स्वनः चादिलेकराज्ञि-भोगावस्थितः सोरः सप्तविंशतिनचत्राविष्ठियो नाचत इति चतुर्विधा सामाः। तथा च ब्रह्मसिषान्ते "चान्द्रः शुक्रादि दर्गान्तः सावनस्तिशता दिनैः। एकराशौ रविद्यवित् कालं मासः सभास्तरः। सर्वर्चपरिवर्त्तेस्तु नाचत्र प्रति घोषाते ॥ मैव चान्द्रसारसावननाचच मासीसेखित कर्मास्त कीह्या द्रत्याकाङ्गायां विष्णुधर्मोत्तरादिवचनस्य तत्पिव्चिषकलेनोप-पत्ती सामग्रब्ह्य तव तव ग्रित्रग्रहकले प्रमाणाभावात्। चनेकश्वकिक्दने गौरवास् वस्थमाणयुक्तिभ्यस चान्द्र एव यक्षिः।

पय कमंतियेपे मार्गियेपादिः। तक पितामकः।
"पाष्ट्रि पिटकाये च मार्ग्यान्द्रमसः रस्तः। विवाहादौ
रस्तः भौरो यन्नादो मान्नो मतः"॥ प्रथमादिपरं यातायहवारपरम्। यत्कमसूर्यमोग्यराप्यक्षेत्रेन यन्न विश्वेषोद्गयनादिविहितं तत्परच प्रयनस्य सौरमास्विदितत्वेन वन्यमाण्वात् तन्न चूडोपनयनादि। दितौयादिपदं स्वस्तिवृद्धिप्रायम्बाद्यप्रयाग्रीचर्यमाधानपुस्तनमौमन्तोवयननामकरणावपायनिष्क्रमण्चूडादिपरम्। तव चूडादाविववेष
सौरसावनयस्यं प्रशाद्यप्रयाग्रीः। तथा च विण्युधर्मोस्तरे। "प्रधायनच्च प्रस्पारकर्म सौरेण मानेन सदाध्यवस्येत्।
सवास्युपास्यान्यय सावनेन सौक्यच यत्याद्यवद्यारकर्मं ॥
सद्यायनम्। प्रध्यामने यात्रेति यावत्। स्वत्यस्पदीपे। "सिष्टे

धनुषि मौने च स्थितं सप्त तुरङ्गमे । यात्रोहाहररहारभाचौर-कमण्डि वर्जरीत्"॥ एतकासत्रय यात्रानियेधी राजितरपरः। राज्ञः कार्य्यानुरोधात् सर्वदा यात्राविधानात्। यथा सनुः। "मार्भगीर्षे ग्रुमे मामि यायाद्याद्यां सदीपति:। फाल्गुनं वापि चैवं वा मास प्रति यथावनम्॥ अत्येष्वपि तु कालेषु यदा पश्चित् भव जयम्। तदा यायाहिरदृष्ट्वीव व्यसने चीत्यिती रिपो:"। व्यमनान्याष्ट स एव। "कामजेषु प्रसन्तो पि व्यसनेषु संशीपति । वियुच्यतेऽर्यधर्माभ्यां क्रीधजेप्वात्मनेव तु॥ सृगयाचो दिवास्त्रप्र परीवादस्त्रियो मदः। तीर्यात्रकां ' ह्याच्या च कामको दशको गण'॥ पेश्रन्य साइस द्रोड रंपीस्यायदूपणम्। वाग्दएइजञ्ज पात्रयं क्रोधनोऽपि गणी-उष्टकः"॥ पद्मो द्यानकोडा। तीर्धावकं नृत्यगीतवाद्यानि वीषि। दग्र पैगुन्यमविद्वातपरदोषाविस्वर्णम्। साइमं माधोर्बस्थनाहिना निग्रष्ठ:। द्रीष्टो क्षिष्ठांमा ईर्घाऽन्यगुणा-महिष्णुता। यस्या परगुणेषु दोषाविस्तरणम् यर्थदूषणम् पर्यानामपदार: देयानामदानाच । पत्रव दौषिकायाम्। "देवहीनं रिषुं लेतं यायाहेवान्वितो नृप:। योष्या देवा-न्वितासात्या दैवहीने तथातानि ॥ व्यसनी विनष्टधर्मा विविधीत्पातपीढितो यय। पुरुषः स दैवद्दीनः कथिती दैवान्वितीऽन्य."॥ पतएव याज्ञवन्वयः। "दैवे पुरुषकारे च कर्ममिश्चियंवस्थिता। तव देवमभिष्यत्तं पीर्व पीर्व-टेहिकम्" । पशिष्यक्षं फलोकाकोभूतम्। सनुरपि। "युक्ते देवेच युच्येत स्वयोप्युर्ध्योतभी:। सास्ता टानेन भेदेन ममस्रेरयवा पृथक्॥ विजेतु प्रयतेनारीन् न युद्देन कटा-चम । धनित्वो विजयो यकाद दृग्यते युद्यमानयोः। परा-जयप संपाम तसाद युद्धं विवर्जयेत् । वयाणामध्यपा-

यानां पूर्विज्ञानां परिचये। तया युद्धेत संयक्ती विजयेत रिपून् यथा" ॥ संयत्तः सम्यक्षयववान्। कष्टरिपुमाइ स एव। "प्राज्ञ' कुलीनं शूरच दचं दातारमेव च। क्षतप्त' ष्ट्रिमन्त्रच कष्टमाहर्रा व्धाः"॥ कालोऽपि फलहेतुरि-त्याच मस्त्रपुराणम्। "देवं पुरुपकारस कालस पुरुपोत्तम। वयमेतनानुष्याणां पिण्डितं स्यात् फनावसम्। सपेव्रिष्टि-समायोगाह्यको पलिसदय:। तास्तु काली प्रद्वयाको नैवा-काले कयञ्चन"॥ महाणि गवामयनादीनि मामसवसार-माध्यानि। लीक्यं व्यवसारकम सृतिहस्यादिकं मासेन यास्यमि मासेन दास्यभौत्यादिकम्। यगस्याध्यदानं सौरेण सिंहराशी विधानात्। यया ब्रह्मवैवर्ते "यम्रासे भास्तरे क्षन्यां श्रीपभूतेस्तिभिदिनैः। शर्घः ददारगस्याय गौडदेग-निवासिन:"॥ नारसिंहै। "शह तीयं विनिचित्रा सितपुष्पा-चतैर्युतम्। सन्वेषानेन वै द्वाद्विषाग्रामुखस्थितः। काशपुष्पप्रतोकाश भग्निमात्तमस्व। मित्रावर्णयोः पुत्र क्षुकायोने नमोऽस्तु ते" ॥ प्रार्थनन्तु । "पातापिर्भस्तितो येन वातापिश्व महासुर:। समुद्र: शोविती येन स मेऽगस्य: प्रसौ-दतु"॥ गन्धादिकस्। घगस्याय नमः इत्यनेन देयं विशे-षानुद्देशे मामान्यतः प्राप्तवात् दिचणात्रामुखस्थित इति गम्बादाविप प्रयोगाङ्गकर्भधर्मत्वात् इति रताकरः। तत्पत्नप्रर्थ-मन्त्रस् । "सोपामुद्रे सहामारी राजपुति पतिवर्ते। स्टहा-याध्यं सया दत्तं मैवाधन्षि वत्तभे"। याञ्चनायनः । छद्ग-याने चपूर्यमाणे पचे कत्याणे नचचे चौडकर्मीपनयनगोदान-विवाधाः। विवाधः सार्वकालिक इत्येके"। विवाधि विषय-भेट्माइ राष्ट्रपरिशिष्टम्। "धर्म्येय्वेव विवाहेषु कालपरी-भूष' नाधर्मीषु"॥ व्यक्तं भुजवले। "सप्तराहिमस्यापि

भारायनमुदिवसानाम्। अर्थाक् दश्रवर्षेभ्यो सुनयः कथयन्ति कार्यकानाम् ॥ ननु "चैत्रक्षश्चितीयायां तिस्चेवाष्टकासु च। मार्गे च फाल्गुने चैव चापाई कार्तिके तथा। यचयी-मांघमासस्य दितीयां परिवर्जयेत्। नाकालहृष्टौ कुर्वीत व्रतः वसग्रमित्रयाम्"। इति सुजबसीतः क्यं सङ्गच्छता उपन यनम्याञ्चलायनेनीत्ररायणश्चकपंत्रयोविधानात् पारस्करेणापि उदमयने पापूर्यमाणे पचे पुर्याच्च इति कर्ममात्रे परिभाः वितम् प्रभासकरणं गर्भाधानादिषु कासवित्रीषनियतेषु उदगयनादोनां यथामभाव नित्यत्वानित्यत्वप्रतिपादनार्थभिति इरिशर्मा। गोभिलेनापि "उदगयने पूर्वपचे पुर्खाइरिन प्रागावर्त्तनादक्कः कालं विद्यात्" इति यामद्वयात्मकपूर्वोद्धमप्य-धिवं परिभाष्य यथा देशश्वीत पुनः क्षतं यथा देशमित्यनेन राष्ट्रे पिण्डपिखयद्मस्यास्यास्येवेविषस्योदगयनादि विव्य-विश्विषः ऋतुकानगर्भसन्दन-पूर्वकासपष्टमासादि विश्विता-धामपुंसवनसोमसोवयनादीमाश्च दक्षिणायनादावनर्थानुप-पत्या यष्टणम्। षयैवं यथा देशश्वेति स्वभवाषां तत्ति इत्रेषः विधानादेव सिहेनांयं दोष:। ययादिष्टकामस्य क्रियायाः मादरार्यमुक्तं तेन तत्तत्तानातिपत्तो कैषाश्विकोषः यद्या बष्ट-कापिएइपिष्टयद्वादीनां।विद्याकराद्भिकक्षत्वेऽपि। "प्रकासी चित् क्षत कमी कासे तस्य युगः क्षिया। कासातीतम् यत् कुर्यादकतं तिहिनिदिंगित्"। यत् कमी यिधान् काले विहितं तस्वामाभावेऽपि नाष्ट्राम्तरामाव इव तस्वमानुष्ठानं निस्य-कर्मस ययामकोत्युपदेगस क्षतिसाध्याप्रमावविशेषत्वात् काममानुपादेयत्वाच तथेति। तदुक्तम् "पङ्गत्वेऽपि च कामम ल न्यामीत्या इ'वत् कृतः। अनुपादेयकपत्यात् काचे कर्माः

विधीयते"॥ वचनात् कालातिपत्तो केषाञ्चित् प्रायश्चित्तं क्रवारनुष्ठानं यथा सन्यावन्दनादीनां तद्यया सांखायन-रदृष्ट्यम्। "चरण्ये समित्पाणिः सम्यामुपास्ते निर्ह्यं वाग्यत **उत्तरापराभिमुखोऽन्वष्टमदिश्रमानचत्रदर्भनात् श्रातकान्तायां** महाव्याष्ट्रतौ: साविव्रो: स्रस्ययनादि जिपला एवं प्रात: प्राड्-मुखस्तिष्ठवामण्डलदर्शनात्" इति । उत्तरापराभिमुखो वाधु-कोणाभिस्खः कोण विद्यणिति चन्वष्टमदियमिति उभयदि-गष्टमभागमिति यावत्। व्यासः। "सम्याकासे व्यतीते तु न च सम्यां समाचरेत्। गायतीं दशधा जष्टा पुनः सम्यां समाचरेत्"॥ जपे सातिः। "कालोत्तानौ करौ प्रातः साय-खाधो मुखी करी। मध्ये तिथंकरी प्रीक्षी जप एव सुदा-हृतः"। पितृद्धितायामप्येवम्। यत्तु कागौखण्डम्। "विधि-नापि छता सन्धा वालातीता द्वया भवेत्। ययभैव हि दृष्टान्ती बस्यास्त्री मैथ्नं यथा"। इति तद्क्षतप्रायिक्तः परम्। इरिइरपदतौ। "यद्यागामिक्रियाम्स्यकालसाय-न्तरालवत्। गौणकालविभिच्छन्ति केचित् प्राक्तनकर्माणि"। यद्वेति पद्यान्तरं प्राप्तानकार्थ्यं मध्यकात्तवत् श्रागामिकिया-मुख्यकास्त्रापि गौणकासलं तेन सायं सन्याया राजिः प्रातः-मुख्याकालय गौणकाल इत्यथः। एयमन्यवापि। पतएव क्षन्दोगपरिधिष्टम्। "सस्वारा चतिपत्येरन् स्वकासाचित् कयञ्चन। इत्वैतदेव कुर्वित ये तूपनयनादधः"। एतदिति महाव्याद्वितिष्ठीमादिपायिश्वत्तम्। यथः पूर्वम्। इष्ट्राज-मार्त्ते एडे। "या नार्यक्षतसीमन्ता प्रस्ते च कदाचन। पद्भे निधाय ते वाल पुन: संस्वारमईति"॥ देवल:। "सप्तध संस्तता नारी सर्वगर्भेषु संस्तता। यं यं गर्भे प्रस्थेत स गर्भ: संस्कृतो भवेत्"॥ मंस्कारक्षमनियसमाद्य नारदः। 'येपान्त

न क्षताः पूर्वे संस्कारविधयः क्षमात्। कर्त्तव्या भावभिस्तेषां पैद्यकादेव तहनात्॥ अविद्यमाने पित्रवें स्वांशादुइत्य वा पुनः। प्रवश्यकार्थाः सस्काराः स्नाटभिः पूर्वसंस्कतैः"॥ क्षमाद् स्नातृणां येपामित्यनेन प्राप्तानां संस्काराणाञ्च पौर्वाः पर्यक्रमात् भाष्टक्रमस्त सीदर्विषयकः। विवाहे तथा दर्भनात्। कर्णवेषस्य संस्कारत्वाभावात्र तथा नियमः। ष्टदानमार्त्तगड्कतचिन्तामखोमीग्डव्यवचने तथा दर्शनात् यथा। "यदापत्यद्वयं तिष्ठेत् समाबोऽप्यपरस्य च। कर्ण-पर्कं विजानीयात् गर्हितं तत्त्रयस्य च ॥ प्रत्याशद्भा ह्योर्भध्ये श्रुंबिर्यस्थाय वसरे। वर्णवेधी हितस्तस्य नाच ज्येष्ठादि-भावना॥ षट्कणीत्पत्तिमाग्रद्धा भानीः ग्रद्धा समेऽपि च! कर्णो विध्यो न दोष: स्थादन्यया मरणभवत्"॥ आद्धभिरिति बहुवचनादन्येषां प्रहणम्। यसएव नारायणपष्टती "अष्टी संस्कारकर्माणि गर्भाधानिमद स्वयम्। पिता कुथात्तदन्ये वा तदभावेऽपि तत्क्रमात्" दत्यवाची वेत्यक्रम्। न च प्रागुक्त-गोभिसस्वे उद्गयनादावसमामकर्णम् एकैकस्यानुगुख्योत-नायं ममुचयोपलक्षो मद्दानभ्यदय इति भट्टनारायणव्याच्या-नात् दिचिषायनक्षणपचयोरप्यपनयनमिति वाच्यं पूर्विक्ता-प्रवस्थानवचनेन चौष्ट्रकर्मापनयनयोविधिषय उद्गयनश्का-पचयोर्विश्वितलात्। भोजराजेनापि। "माघादिमासपट्-केषु गार्क्षिणः गयनावधि । चूड्कर्म प्रकुर्धन्ति सुनयो व्रतमेव च"॥ इति व्रतमुपनयनम्। छत्यचिन्तामणी दिच्चायन-निषेषोऽपि । ''राविभागः समास्थातः खरांग्रोदं चिणाग्रनम् । व्रतबसादिकं तमात् च्डाकमं च वर्जयेत्"॥ तत्वधमुपनः यगदिके विभिष्य मार्गादिक णादितीयादिनिपेष:। उचाते। दिचिषायने येग्रास्रोपनयनविधानात् स्वयापचे प्रायिनाः

मनियतमापद्येत। सावने तु नियतं तेनात्रापि सात्रनगणना-युक्ता योपिदावधारसिंहा चः चहन्येकादमे नाम दलाचापि "श्रामेचव्ययगमे नामधेयम्" इति विष्युस्वात्। स्तकोत्तरः रिनपरमेकादमपरं पूर्वोक्षस्यिषिद्यानोक्षवचनेन स्तमस्य वाषमदिनघटितत्वात् तदुत्तरकानचापि तथात्वं तथाद्रभा-धानपुंमवननामकरणेषु मावनदर्भनात् तत्माष्ट्रचर्यात् सीम-न्तोत्रयनाद्यिय सामवर्णगणनायां तथेति चत्रयडोपनयना-दिषु वर्षगणना मावनेन ग्रुभाग्रभंगणनन्तु मौरेणिति मिस्रम्। एवमेन इति एवमुक्तप्रकारमभाधानादिभिरेनः पाप वौजगर्भः समुद्भवं गुक्तगोणितसम्बन्धं गाव्यधाधिमंक्रान्तिनिमत्तं नागं याति नित्यत्वेऽप्यानुपिक्षिकमितत्। उपनयनीत्तराविधमाद याज्ञवल्काः। "प्रापोष्टगाच हाविमाच्नविभाच वसरात्। व्रह्मचविद्यां वाल घोषनायनिकः परः"॥ चाङ प्रभि-विध्यर्थः। 'मर्थादाभिविधिसन्देहे कार्श्वान्वितत्वेनाभिविधेरेव बलवत्वात् एवमेय भद्दभाष्यसरनाभवदेवभद्दमिताचराकुञ्जकः सहसत्पत्रस्थितिसारप्रशृतयः। शूलपाणिर्धि याजवास्तर-टीकायामेव किन्तु प्रायश्चित्तविके सध्यादार्थकतामाह यस-वचनात्। यथा "पतिता यस्य सावित्रौ दशवर्षाणि पञ्च च ) बाह्यशस्य विशेषेण तया राजन्यवैश्वयोः। प्रायिक्तं भवे-, देषां प्रोवाच घदतां वरः"॥ कुछ्कभद्दप्रायश्चित्तकत्पतक्षृत-मध्येतत्। चल सूमः। "श्रीपनायनिकः कानः परः पोडश्र-वाधिकः। दाविश्रतिः परीऽन्यस्य स्वाचतुर्विश्रतिः परः दति कल्पतम्धतव्यासवचर्गं परोऽन्यः पोडशवाधिक पोडशवर्षे वाप्य भूतः स्थित इति यावत्। तमधीष्टो स्टेनो भूतो भावौति ठक् वर्षया भविष्यतीति उत्तरपद्वसः चभीष्टीऽध्येषणायुक्तीः गुरः सती स्तिग्रहीतो दासः। राजमात्तेग्डे सत्यविन्ताः

मणी च मार्केण्डेयः। "विप्रस्य षोडगाइपद्रिज्ञी हाविंगतेः परम्। वैश्वस्वाष्टविकादस्रात् साविक्षी पतनं भवेत् ॥ चष्टविकाञ्चतुविगतः। विषाधमेतिरे। ''वोडगाष्ट्रा हि विप्रस्व राजन्यस्य हिविंगतिः। विंगतिः सचतुर्धी च वैश्यस्य परिकी तिता। सावियो नातिवर्त्तेत यत सर्वे निवर्त्ते ॥ याभ्यां षोड्यवर्षाद्यपरि यमेन पद्मद्यवर्षीपरि यत् पतन-मभिद्धितं तद्वभेजनामसृतिगणनाभ्यामविष्डम्। तद्या चि क्षत्यिक्तामणो माण्डयः। "वतबस्यविवाहे च वसरपरि-कत्पनमाष्ट्रराचार्थाः। चाधानपूर्वमेके प्रस्तिपूर्वे सदान्ये त्र ॥ एवच व्यासमार्कपडेयादिवाक्येकवाक्यतया न्यायसिष-तया च प्रापोडमादिखादावाङोऽभिविष्यर्थतेव सवापि गर्भा-तिरिक्ते वर्षगणनासावनेनेय। यत्तु दिजानासुपनयनसुपन्नस्य घेठोनसिवचनम्। "दादय योडमविमतियदतीता भवरदकाचा भवन्तीति"। तत् द्वादयवर्षाच्यारि प्रत्यवायास्यत्वज्ञापन-परमिति गूलपाख्यायाः चत्र सहाव्याष्ट्रतिहोसः पायिषशं तदुत्तरं द्रात्यप्रायित्तमिति सैधिलास्तु । "विवाहादो छतः सोरो यत्रादी सावनो मतः। येषे कर्माण चान्द्रः सादेष मासविधिः स्रतः" ॥ यीपे सौरादिवियोगोसेखरित रत्याष्टः। - गहावाक्यावस्यां दयः। "चान्द्रेष तिथिकत्यम् ययाविहित-माचरत्"। कार्तिकादिसाने च चान्द्रसौरयोविकन्येनागुष्ठानं यया जलको सुद्धां पिताम इ:। "का सिकस्य तु यत् सामं माचे सासि विशेषतः। राष्ट्रादिनियसामास चान्द्रमानप्रमास्तः यद्मपुराचम् "तुसामकरमेयेषु प्रात:सानं विधीयते। इविष्यं मद्मचर्येख सद्यापातकनामनम् ॥ चन्नोदितानुदितदीसम्बद्ध-कत्येनानुष्ठानसिति ऐसादिः। कार्तिवे सन्त्रम्। वार्ति-के इं करियामि प्रातःसामं अनार्दम। प्रीत्ययं तत्र देवेम

दामोदर मया सह"। मया लक्ष्या। स्कन्दप्राणे। "संप्राप्ते मकरादित्ये पुर्खे पुर्खप्रदेसदा। कर्त्तव्यो नियमः किस्त् व्रतस्यो नरोत्तमैः"। यारध्यकार्त्तिकास्यस्राने सु व्याध्यादिनात्मामर्थ्ये पुत्रादिपतिनिधिना कार्ययतव्यम्। नानु-कल्पविधिना। नित्यसान एव तहिधानात् इति विद्याकरो युक्तच्चेतत्। "जिद्वां त्यजियुनिकाभमगक्कीऽन्येन कारयेत्। थनेन विधिराख्यात भटित्वक् कर्पककिषाम् द्रित सम्<u>य</u>य-वाणिक्ये याज्ञवस्कावचनात् जिद्यो मिनवञ्चकः। तं निर्सामं कत्वा त्यनेयुर्विद्यक्य्ः। गार्ड्। "गङ्गायां येऽवगाहको माधे सासि नराधिष। चतुर्थगसहस्रान्ते न पतन्ति सुराखयात्। दिने दिने सुवर्णानां सहस्रन्तु विशास्पते। तेन दत्तं हि गङ्गायां यो साधि साति मानवः"॥ पद्मपुराणे। "मकरस्थे रवी माघे प्रातःकाले सदा सुने। गोस्पदेऽपि जले स्नान खर्गदं पापिनामपि"॥ खान्दे। "मकरस्ये खी माघे न साखगुदिते रवी। यथं पापै: प्रमुचेत कयं स ब्रिदिवं ब्रजेत्"॥ अनयोः स्र्योदयात् प्रागेय सानं प्रतीयते। तथा च सामान्वतः प्रात.साने विष्णुः "प्रात.साय्यक्षिक्रगग्रस्तां प्राचीसवलोका द्वायात्"। दचोऽपि। "सम्याद्वान निशाली रा सध्याक्ष ता ततः पुनः"। यनु पदापुरायम्। "माचे मासि रटन्याप: बिधिद्भ्युदिते रवो। ब्रह्मम्माप चार्डालं कं यमन्त पुनीमर्हे"॥ इति तद्रटन्यात्यचतुर्दशीविषयम्। यथा यमः। "माघे मास्यसिते पचे रटन्यास्या चतुर्दशी। तस्या-स्टयपेनायां स्नाता नावेचते यसम्"॥ स्नाता स्नानकारी। "यनको स्यदिते काले साधे छप्यचतुर्योग्। खाला मन्त-र्घत यमान् सर्वपापैः प्रमुचति ॥ अनकाभ्युद्ति इति ईपदर्ध तञ् यतो म षद्ययेशयामिलनेन विरोध द्वाहुम्तश्चित्यं

"परवधनांदेयोर्भध्ये सतार्थ्योमकाले तु तत्र सानं महा-फलम्" इति ससुद्रवारभाषाधुतात्। किन्तु उद्यविशाषा-मक्षोद्धयवेलायामित्यर्थः। किञ्चिद्ध्यदिते रवावित्यनेन माघ-प्रातः सानका को त्तरावधित्वमुक्तम्। तथा वराष्टः "तेजः परि-इलिर्पा मानोरहोंदय यावत्"। अतएव "यो माघमास्प्रपि स्यंकराभितासे सानं समाचरति चार्नदीपवाहै। उद्दय सप्तपुर्वान् पिद्धमाद्धवंद्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहभरो नरी-उसी"॥ इत्यव जपिस इत्यभिधाय सूर्यकराभितास इत्युक्तं स्योदियात् प्रागपि तत्वरसभवात् नतु स्थाभितास्त्र दल्याः विधिमाद्य पाद्मे। "माधमाममिमं पुर्यं साम्यहं देव माधव। तीर्घयाय जले नित्यं प्रभीद भगवान् दरि ॥ दु:ख-दारिद्रानामाय चौविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यदा साधे पापप्रणायनम्॥ सकर्स्य रवी साधे गाविन्दा खत-माधव। सानेनानेन मे देव यथोक्षफलदो भय । एतनान्धं ससुद्याच्य द्वायागीनं समाहित:। यासुदेवं हिरं छणां त्रीधरच सार्त्ततः॥ दिवावार जगवाय प्रभावार नमीऽसु ते। परिपर्णे करुपेटं साधसानं सद्यातम् ॥ चान्द्रसान

चन्द्रग्रहाणादी तु तदभावात् स्नानप्रयोगान्तर्गतत्वभिति छन्दोगाङ्गिकाद्यः सध्याङ्गस्नानप्रयोगान्तर्गततर्पणन्तु "तर्प-चन्तु ग्रचिः कुर्व्यात् प्रत्यप्तं स्नातको दिनः। देवेभ्यस ऋषि-भ्यय पिरुभ्यय ययाक्रमम्" दति शातातपीत प्रधानतपंच्य प्रक्रतीभूतं नित्याग्निष्ठोविभव सवाग्निष्ठोमस्य तवाद्वतर्पणे सन्योत्तरत्वं साद्याद्रभम्। विक्तताविष सभावप्राप्तम्। यथा च्यातिष्टोमस्येष्टात्तरकाचलं विक्रतीभूतसोमऽप्यतिदेशप्राप्तम्। किञ्च ग्रहमेधीय यामकासमध्ये चिनिष्ठोत्रकास चामते तत्-पदायंक्रमवाधेना निषीतानुष्ठानं निषीतं तथा सानाननारं सन्याकाल चागते तर्पणमक्तवैव सन्यानुष्ठानं युक्तमिति विद्याकरवाक्षपेयौ व्यवसारोऽपि तथेति सामाधिकार गार्ड "मातरं पितरञ्जापि भातरं सुद्धदं गुरुम्। यसुहिन्य निम-कोत हादयांशं समेत सः"। मार्कण्डेयः। "सितासितेषु यः स्रायात् माघे मासि / युधिष्ठिर। न तेषां पुनराष्ट्रतिः कलकोटिमतेर्प। दमकोटिसहस्राणि पष्टिकोट्यस्वयापराः ॥ माघे मासि प्रयागे तु गङ्गायासुनसङ्गम्, ॥ वैद्यवासृते स्कन्दपुराणम्। "पोष्यान्तु समतीताया यावद्ववति पूर्णिमा। माधमासस देवेग पूजाविष्णोविधीयते"॥ पौर्णमास्यल-साधमुपक्रस्य "पितृषां देवताताख सूचकं नैव दापयेत्। ददवरकमाञ्रीति भुष्त्रीत वाद्यणी यदि । वाद्यणी मूलकं भुष्टा चरेशान्द्रायणं असम्। चन्यया याति भरकं चत्रविट्-गूद्र एव ए । तथा वरं अध्यसभद्य पिवेहा गर्हित्य यत्। वर्जनीयं प्रयक्षेत्र सूलकं सदिरासमम्"॥ वैद्याख-स्थानन्त सीर्च यया भविष्ये "गवामध्मस्मानां ससं दस्वा तु यत् फलम्। तत्फल सभते राजन् भेषे खाला तु लाङ्कवीम्"॥ नास्त्रमासपयोजनं विष्णुधर्मोत्तरे। "नस्वस्त्राख्ययमादि

चैन्दीमसिन कुर्याद्वराणात्मकेन"। नच्छसद्वाणि मासमाध्य-यागविशेषाणि याज्ञिकप्रसिद्धानि इन्होरयनानि सीमायनास्य-सदाणि इति समयप्रकाशः। एव जनानच्ये शनिभौमवार-फल नाचन्नमासेन योग्यत्वात् यथा दौषिकायाम् "जनान्यने यदि खाता वारो भोमधनैयरी। समासः कलमपी नास भनोदु:खप्रदायक." ॥ तसादेभिद्यान्द्रमीग्सावननाचनमा-रिषु कर्माणि विडितानि तत्परिचायकानि चन्द्रमाः कृष्ण-पचान्ते द्रत्यादि विप्युधर्मोत्तराद्युत्तवचनानि न सु ग्रांति-यादकाणोति सिद्यम्। अतस्त्रत्तर्वाम्यमद्भर्ये "मामपच-तिधीनाञ्च निमित्तानाञ्च सर्वेशः। उन्नेवनमकुर्वाणी न तस्य फलभाग्भवेत्"॥ इति ब्रह्माच्डपुराणाक्तेन तस्तिहितमास एव निर्देश्यः। भव चकारहयश्चतेमीमपभातियीनाञ्चीत न निमित्तविशेषण किन्तु स्वातन्वेत्रणैव यथासभावम्भयोत्रहेतः। तथा च हेत निर्णये दर्भयाद्याहा के प्यादि व मामी निर्देश्यः तस्य तिनिधिपुरस्कारेणैव करणात् तिहितरत्र मावलिशिकादी गुक्कादिरेव निर्देखाः तस्य प्रयाणितिथिकर्त्तव्यत्वेन विश्वितिथि-माधारणतया तत्तिधिनियत ब्रह्मपुराणास्प्रमिदिल्युक्तम् । श्राद्धचिन्तामणाविष श्राद्धादिकमीणि विशेषवचनं विना गुक्का-दिरंब निबस्भिरादरणादिख्कम्। गङ्गावाखावस्थामिष वार्षणीस्नाने सधुक्षणावयोदस्मामिति वाकारचना। किञ्च गरि सर्वेकसीणि सुख्यचान्द्रेणैव वाकारचना स्यासदाक्षयुक्-क्षपापसीयशाहेऽपि मुख्यचान्द्रवीन भाद्रपदप्रयोगः सम्भवति तवाख्युक्पद्मयोगी सुनौना ध्यर्थः स्थात् तस्येदमेव प्रयोजन वक्तेन किहेंगा । असं सिसामाही सीरेगाभिसाम असस सामने नाचवे च चैवादिनामानुहेखास्यचान्द्रेणैव निर्देश: चतएव स्रतिसार् म्रद्धापुराषम्। "तिथिक्षये च क्रणादि मने ग्रक्तादि-

सेव च। विवाहादी च सीरादिं सामं क्रत्ये विनिर्देशेत्" ॥
सीर: स्थ्येसक्रमः। मंकस्ये मासादिवदयोक्षेत्वीऽपि "ब्राह्मणानुपामन्त्रयेत् खोऽद्येति वा त्राह्माचरिष्ये" इति श्रह्णतिखितदर्शनात्। श्रद्यक्षणाष्टमों देवीमिति वचनात् श्रद्यचन्द्राकंश्रहणमिति भविष्याच एतेनाचः पदस्य राज्ञिपरत्वाभावात् राज्ञी
चेत स्थां राज्ञी इति वक्षव्यं नाद्येति मतं चिन्त्यं राज्ञिपदीखेते स्थां राज्ञी इति वक्षव्यं नाद्येति मतं चिन्त्यं राज्ञिपदीखेते सानामावात् एवमनेकाइसाध्ये कर्मणि तिथ्युक्षेत्वानन्तरमारभ्येत्युक्षेत्वः। श्रन्था तन्मासपचितिधिविश्वेषादीनां दिनान्तराप्रस्वेनानन्वयः स्थात्।

त्रय दर्गान्तमासम्बद्धे साधकान्तराणि। मक्षप्रधुराणे। "प्रथम खेतकल्पसु हितीयो नीससोहितः"। इत्यादि चतु-दंगकला नुक्षा "कीम्यः पञ्चदमो ब्रह्मन् पीर्णभासी प्रजापतः । योडगो नारसिइस्तु" इत्यादिना जनियात् कस्पानुक्का "पिट-कत्पन्तयान्ते तुया कुहर्बद्वाणः स्नृता। इत्यय ब्रह्मणो मासः सर्ववापप्रणायनः। पादावेव दि माहाता यसिन् यस्य विधौयते। तस्य कल्पस्य तनाम विहितं ब्रह्मणा पुराण्या यव ब्रह्मणोदशन्ति मामपदशङ्कतादन्येपामपि तथैव युक्तम्। ञ्जतिरिप "पूर्वः पन्तो देवानामपरः पन्नः पितृणाम्" इति मामान्तर्गतशक्ककणपचावेव पूर्वोपरत्वेन विद्धाति। सवसार-प्रदीपे। परविशक्ततं ''तच पद्माव्भी सासे श्रक्तकणी क्रमेण हि। चन्द्रहिकारः ग्रुक्तः कृष्णयन्द्रचयात्मकः। यच-त्याद्यास्तु तिययः क्रमात् पञ्चदश स्रुताः । दर्शान्ताः क्रपा-यत्तेताः पूर्णिमान्ताय गुझके"। यत्तिः प्रतिपत्। धमर कोपे ''पचो पूर्वापरी गुक्कक्षो सामस्त ताव्मी"। अव यदि दर्शन्तमावे मामपदम्य मिन म्यात् तदा चान्द्रमाम द्रत्येव विद्ध्यात्। सास्विग्रेयवाचिनसैवादयोऽपि चान्द्रे

भक्ता वस्यस्ते। चान्द्रे यौगिकोऽपि मासयञ्चलया हि मास-यन्द्रसायं द्विद्वासहतुर्गेचवभोगात्मकः क्रिया प्रचयः सूर्य-मण्डलवियोगसंयोग इति चन्द्रवाचिष्ठलन्मास्य इदादन् प्रत्य-यान्तात् सिष्ठः। तथा च गदसिष्ठः। "सूर्वन्यान्तो मापी-माने बोद्यन्तर्४पि निर्दिष्टः। कान्तियपे दन्योमायन्द्र-कानयोस्तया" इति। तिथिसक्पमाष्ठ सूर्यसिद्धान्तः। "भक्ति हिनि:सतः प्राची यद्यात्यहरहः प्रग्री। भागेद्वीटग्र-भिस्तत् स्वात्तिधियान्द्रमसं दिनम्"। द्वाद्यभिर्भागेर्यद्याति-तदेव यान तिथि: विनि:स्त इति गुक्कपचितिष्धिप्रायेष क्रणापचे विप्रक्रष्टात् समिकर्प द्रत्यपि सोध्यम् । भागस्तिगाः-गरागरिकोऽंगः। तथा च इमाद्रिमारसंयद्वयोविणाधमि-त्तरे। "वियागकसाद्या रायेर्भाग इत्यभिषीयते। पादित्या-दिप्रक्षष्टस् भाग दादशकं यदा। चन्द्रमास्थात्तदा राम तिथि-रित्यभिधीयते"। तैनाकांपेचया चन्द्रस्य राशिदाद्यांग्रमी-रोन एकातियिरेयमपरापरापि सा चैकैककनाक्रियालक्षण। तव प्रथमकनाकियारूपा प्रतिपत् एवं हितीयादिः। सा च ष्ट्रहिष्या चेत् शक्ता क्लासरूया चेत् क्लांति न च "पष्टमाग्रे चतुर्याः चौषो भवति चन्द्रमाः। चमावाम्याष्टमाये च ततः किस भवेदनुः " इति क्रन्दोगपश्चिष्टवचनाचतुर्दग्याः ग्रेप-यामे पश्चद्याः कलायाः चयारकात् एवं दर्गास्यामे पादाः कनाया छत्त्रसिर्दिशेष इति याचं तस्य दर्शयादार्थे पारिभा-विकचयोत्पत्तिपस्त् न तु वास्त्यं स्तृतिक्योतिःगाक्रीक्रगण-माविरोधात् छपनीयगोभिसविरोधाच । यया गोभिनः। "सूर्याचन्द्रमसीयः परः सविकर्यः सामावास्य" दति। परः भित्रकर्षं छपर्यमो भाषापत्रमग्रभ्यपातन्यायेन एकांशावच्छे-प्ति एकराग्रवस्थानं स च दगालक्षास्थाभिचारी तया च

विरोधे न्याययुक्तस्य प्रामाख्यमाच भविष्यपुराणम्। "सृत्य-धंन विरोधे हि अधंगास्त्रस्य याधनम्। परस्परविरोधे त न्याययुक्तं प्रमाणवत्"॥ यर्षशास्त्रस्य मन्वादिमणौतराज-नीत्यादिविषयस्य यदाद्य। "धनागमन्तु यद्यकः पिवा पूर्व-तरै सिक्षिः। न तत्त्व्वयमपादानुं क्रमाविषुक्षागतम्"। विवा पूर्वतरे: वितरमादाय पूर्वतरे रित्यर्थः। "भनागमन्तु यो भुड्के बहुन्यव्दगतान्यपि। चौरदगईन तंपाप दण्ड-येत् पृथिबोपतिः" । इत्वनयोधेर्मशास्त्रायंशास्त्रयोविप्रतिः पत्ती धर्मग्रास्तेण दण्डविधायकमर्यशास्त्रं वाध्यते ततस श्रर्थशास्त्रस्य विपुर्तपीयेतरपरत्वेन सद्दीचः। ष्टइस्रातः। "याप्टलो गोधयेद्धितामामचापि संसदि। तत्मुतो असि-मेकैकां पोदादिषु न किञ्चन"। भुक्तिशीधनमाइ कात्यायनः। म्माममी दोधंकालय निम्छिद्रोज्यतरी जिस्तः। प्रत्यि मिन्धानश्च पञ्चाङ्गी भोग द्याते"। विवीर्णे विशेषमाह व्यामः। "प्रिपितामहिन यद्भुक्ष' तत्पुत्रेण विनाच तम्। तौ विना तस्य पित्रा च तस्य भीगस्तिधौरपः"। इति प्रसङ्गा-स्क्रम्। वर्दमानोपाध्यायभृत क्योतिवंचनम्। "एकातियिः कापि तदादि भूतातिथिस्तृतीयेति तिथिपश्रसः। मामः सचान्द्रिस्तिधिनानि यसाञ्चान्द्रीं कलामास्य मदा प्रष्टुत्तः"। एकातिथि: प्रतिपत् तदातिभूता पच्चदशो यदि छतौया भवति तदा प्रतिपदादिपञ्चदश्यलिखां यत्तिधिसमुदाय एको मासः एव दितोयादि प्रतिपदन्तसृतीयादि दितोयान्त इति तस्य चान्द्रते हेतुमार यसामान्द्री कता द्विद्यार्थलेन प्राप्य तिधिमासि तिथिससुदायात्मके प्रवृत्तिस्विरेकैककलाक्रियाः रूपलात् तथा च हिमाद्रिकासमाधवीययोः स्कान्दे प्रभास-खण्डम्। "श्रमा पोड्शभागेन देवि प्रीता सदाकला।

संस्थिता परमा माया देशिनां देशभाविषी। प्रमादिषीर्ष-मास्यन्ताया एव ग्राग्रिनः कनाः। तिथयस्ताः समाख्याताः षोडशैव वरानने"। चन्द्रमण्डलस्य षोडशभागेन परिभिता देहधारिणी आधारशक्तिरूपा अभानामी सहकिला प्रीता चयोदयरिक्तिलाभित्या सक्स्ववत् सर्वानुस्यता तदन्याः पञ्च-रशक्ताः पौर्णमास्यन्ताः प्रतिपदादितिथिविशेष्ट्पा द्रति षोडगैव कलास्तिथय इति मिद्यान्तिशिरीमणौ। "तन्यन्ते कन्तिका यस्मात्तसम्बाद्धायः स्मृताः"। क्विकाः कन्तः। सूर्यमिषान्ते। "नाष्डीपष्टा तुनाचवमहोरावं प्रवचते। तिचि यता भवेकामः सावनोऽकीदयैस्तया॥ ऐन्दबस्तिधि-भिस्तदत् सकान्या सौर उचते"॥ तिविधता नाचवदिन-विंथता मासी नास्वमामः। तथा विंथताऽकदिशैस्त राग्नि-विशेषावस्थानवशेन लग्नस्य यावन्ति पत्तविपलानि रविभोगः म्यात् तदधिकपष्टिदण्डैः मावनमहोरात्रं भवतीति तथा च मिहान्तमन्दर्भे "सापनं दण्डाः परिष्ठः खलमखगुणांगाच्या-स्तरैनभाषेत्" दण्डाः चष्टिखनग्नखगुणांशाच्याः सावनमप्त-स्त्रदेनश्च तेन सावनैनयोः पर्यायता । ऐनमित्यनेन खलग्न-भित्यव स्वपदेन रविभुज्यमानं प्रतीयते। खगुणां यास्तिगांग प्रथमान्त-स्तीयान्तपदैन्त्रनदण्ड-प्रजान्याष्ट दौषिकायाम्। ''रामो गयेदैर्जनधिम्त् मैसे बाजो रमें: पश्चक्रागरेख। बाज: ं कुषेदैर्विषयोऽह्रयुरसेः क्रमीत्क्रसाम्येषतुसादिसानम् "सन्नामां दिनभोगस् सम्बर्ण्डपमानि दिगुणौक्तरानि पनविपन-र्पाणि भौतागिकाणि विज्ञहिनस्नाधिकवगात् किचि-दिधकन्यनानि च ततय दिनं दिन यानि यानि भुष्तानि तानि रबादयभगनय राविधीयपविष्टानि चविशिष्टानि दिवसी-यानि। एवं तकासमस्मापस्विपत्तानि दिमग्रीयभविष्टानि

व्यवशिष्टानि राविसम्बन्धोनि द्वात्वा प्रायत्ससम्बन्धानयुक्तम-ध्यलम्पञ्चमानेदिनराविमानान्यवधार्थे प्रातःकालविमागादि-निणयः। श्रतः सामनसंवसरेण एकदिनाधिकवत्सरो नाधवी भवतीत्वनयोभेदः। नाचत्रमासफलन्तु। प्रायुर्दाये स्मतं प्राज्ञैनीचर्च पश्चिनाडियम्" इति तहिदिति विभाता एवं यत्विश्वियत्यात्मकोऽयं मासग्रव्दः प्रयुक्तः स ''एका हेन तु पर्णासा यदा स्वर्णि वा विभि:। स्वनाः संवत्सरयेव स्थातां पारमासिके तदा"॥ इति कात्यायनेनीऋस्य 'पारमा-भिकाष्ट्के याहे स्थातां पूर्वेद्यरेव ते। सासिकानि सकोये तु दिवसे दाद्यापि च" इति हेमाद्रिमाधवाचार्याधृतपैठीन-स्यक्षवनस्य च विषये गीणमामपरिचायकः। पूर्वितयुक्षाः गुक्तप्रतिपद्दिव मासग्रन्दाभिधेयत्वात् खकोये दिवने स्ताहे एव पूर्वतिधी पास्मासिकाव्हिकविधानात् एका हेन तु पास्मामा द्रत्यवापि तद्यार्थत्वात् पूर्वस्तितिष्टं विद्वायापरस्तितिथ-सादाय मामवर्षगणना प्रसिष्ठा। चत्रपवाधिकरणस्य कर्मत्व-विवचया प्रागुक्ततमधीष्ट दत्यादिस्वेण मासिकान्दिकपद-मिहि: निमित्तसम्यान्तु तदसभावात् न तथा एतेन पूर्वमृत-तिथिमादाय मासवर्पगणनेन सतियेः पूर्वतिथि विश्वाय तत्-पूर्वदिन मैथिसानां यत् पाएमासिकद्दयकरणन्तदेयमिति मिरान्तिचन्तामणी चान्द्रे मापि चन्यया ख्तानिर्दर्शिता यया। "मधन्ते परमीयन्ते सकालाइहिहानितः। मास थते रमृता मामास्तिंगतियसमन्विता."। मासयन्द्रम्य इहिच-याभ्या स्वभातायम्द्रसम्बन्धिकाला मस्यक्त इति साम्राः। तमात् क्ष्यागदयाद्यप्रदारीतोत्रात् मामादिमध्यसमाधिनीर्तनात् प्रयोगीपाधिमहरूत।सामपदस्य दर्गास्य एव सुत्यत्वं सीरादिषु मचयमा गोष्टा या प्रयोगोपप्रभेन इदिम्हिनस्मनित । तदुक्त

भद्टपादै: "सञ्चात्मिका सतौ रूढिर्भवेदीगापदारिणी। कस्प-नौया तु सभते नात्सानं योगवाधतः"॥ न च सौरादिष्विष चन्द्रदिक्रियाया प्रव्यभिचाराञ्चष्ठ हारीतोक्तविद्यपुधर्मीत्तराभि-दितीपाधिचतुष्टयसदक्षताद्यीगद्यात् प्रद्वित्रस्तु मासप्रव्द-स्रोति वार्षं सप्तुहारीतोक्षस्यादिमध्यसमाप्तिकीर्त्तनस्वरसाद्या-धिलं विषाधमीत्तरोक्षस्य तु तयालाभावात् न तयालमिति। वस्तरस् चान्द्र एव मासे चन्द्रक्रियाया दृष्टिचयरूपाया असा-धारणलेन प्रवृत्तिनिमित्तत्वं सौरादौ त सूर्यादिनियाणां तयेति। श्रतः कयं सौरादी सासपद्रप्रयोगावसरः। तथा च धारीरकटोकायां वाचस्यतिमियाः प्रसाधारणत्वेन हि व्यय-देगा भवन्ति। यथा चितिजसपवनवीजादिसामग्रीसमवधा-नजन्माष्यद्भरः मासिवीननन्यत्वेन व्यपदिश्वते मात्यद्भर इति न चित्यादिभिः तेषां कार्यान्तर्रापं साधारखात् तहि दर्गा-न्तवश्चन्द्रक्रियाया यसाधारखेन पीर्णमास्यन्तेऽपि कयं न प्रष्ट्रतिनिमित्तत्विमिति चेट्पाधिलप्रतिपादकवचनाभावात् किन्तु ब्रह्मपुराणादी प्रौष्ठपदूर्द्ध क्षणपचादावख्युगादिप्रयोगा-सधा ल' गौग्यावसौयते इति। एतत् सवे क्रियेव काल प्रति मतानुस।रादुक्ष तद्तिरिक्षकाचवदिमते तु सर्वेत्र तत्ततः क्रियोपसितः काल इति विग्रेपः। तथाच विश्वपुराणे। "कालखरूपं रूपं तिहणा सैवेय वर्तते"। विणुधर्मीतरे। अनादिनिधनः काली क्ट्रः सद्वपंषात्मकः। कलनात् मर्थ-भूताना सकाल: परिकी चिंतः"॥ कलनात् लयकरणात्। तथा च विष्यु:। "ये समर्था जगत्यिकान् सृष्टिसंहारकारिष:। तेऽपि कालेश सीयन्ते कालो हि बलवत्तरः" ॥

चय चैवादिगद्धानां चान्द्रवाचिता। सप्तुधारीतः। "चक्रवत् परिवर्तेत सूर्यः कालवयाद्यतः। चतः सायकारं

श्राद्धं कर्त्तथं मार्साचिक्रतम्॥ मार्साचक्रन्तु कर्त्तव्यं पौष-माघाद्यमेव हि। यतस्त्व विधानेन स मासः परिकौर्त्तितः"॥ चान्द्रग्रहणे हेतुविनगदमाह यतः सूर्यः कालवगाञ्चकवत् गते-र्मन्दलामन्दल।भ्यां गच्छेत् तथा च एकराशिमुपभुद्धानी रिवर्सेपादी मन्दगत्या कामप्येकां तिथि दिस्ध्यति तुलादौ भौधगत्या कामणेकां तिथिन स्ट्रगति इति पूर्वत्र संभयः। उत्तरव कमणो कोप: स्यादतो मासचिद्रितं शुक्कादिमास-ं चिद्भितं कर्राव्यम् यव एकस्यास्तियेदित्वकोपयोगभाषान् षयातः मुक्तादित्वं कुत इति चेत् समुदारौतेनैव प्रत्यानी-त्यादिना निरूपपरमासग्रब्दस्य श्रुकारी सङ्घतमभिधाय चङ्रवदित्यभिधानात् एतेन "पार्वणे त्वष्टका याहे चान्द्रभिष्टं तथाब्दिके" इति पारस्करोग्ने पार्वणादिसाइचर्यात् प्राब्दिक-यादमपि क्षयादिमासेनेति पाद्यात्यमतं निरस्तम्। इतु-विमादाधिकरणन्तु प्रमाणलक्षणे यथा हित्वन्तगदाते द्रति हितुविविगदः भूपंग जुदोति तेन हाय क्रियते दति भूमते। भव हिमास्ट सुती: स्तुती च सचणामसङ्गादसकरणतां जूर्ष-शोमे हित्रिहिष्टः तया च यद् यदसकारणं दर्शादि तेन तेन होतव्यमिति प्राप्तेगहान्तः शूर्णस्य होमकरण्यः वतोयया त्रात्याऽवगम्यते विध्यर्थस्य च न इत्विपेका तसात् शूर्पस्तिः। यस् हितौ हिगय्द युतिरिति तक्र न हि माचाह्यादिना गयासमें कर्म पथ ग्रकं प्रणात्या कये ति चित्रतिः प्रविति। द्वेत्वचनप्यानपेद्यप्रवस्तिमास्यस्येय स्तिता। तया चामिधातुं पदेऽत्यस्मिन् निरपेसरवाश्चितिरिति। नमु शूर्पम्तताविष सचणा स्थात्। न द्वितनापि माधादसं क्रियते बाढं म्तृतिर्धि चनुवादकत्वाद् यया प्राप्तनचर्णां सहत। न विधिरपूर्वार्थक-लात्। ततयाव यकातुपन्ति जनं तत्प्रभादक्तिमिति सन्तश्चम्

धत्रव भद्रवासिकेमापि ये हेतुविक्रगयासे हिप्रव्हादिभिने त धरसार्घ देशव दख्कम्। एवच यदापि "स्ताइनि तु कर्तव्यं प्रतिसासन्तु यसारम्"। इत्यादिवचनोपासेषु सासिकयाहेषु तत्तनासीयतत्तियिविशेषविद्यितकर्भसु च इतुविद्यादिश्यन्त-नीयः दर्बादेखु वचनानुपात्तत्वावाकाङ्गावसर् रति। यतः श्वांवसारं ज्याहमिति प्रदर्शनमात्रं तेन मासिक ग्राह्मनातिधि क्षत्यतत्तन्यासीय तत्तिथिविधीपविद्यितकर्माप्येन्वेषं तत्र शुका-टेरविश्वियात् पुनरनध्यवसायः स्थात् तिवरासार्यमार पौषमाधाः द्यमेष सीति सपौषादिः कोट्टक् तस्य चान्द्रेवा कथं ग्रिकिरिय-त्राह यतस्त्र विधानेन शास्त्रेण तश्च इन्द्रामी इत्याध्यामिवेति-त्राद्वविककत् तस मनोरमं सप्रदारौतोकौ तदुक्तवाक्यान्तरस्य हितुत्वकस्पनाया भन्याय्यत्वात्। किन्तु विधानेन श्रुत्यादिना तथा च श्रुति:। "सा वैशाखस्यामाधास्या या रोहिस्या सम्ब-ध्यते'' द्रति। "प्रवाखिन्यय भरणी बहुलापादतस की चितो मेवः। व्रषमो बहुलायेषं रोहिखईच सगियरसः। सग-शिरसोर्डं चार्द्रो च पुनर्वसीयांशकास्त्रयो मिथुनम्। पादः पुनर्वसीरन्यः पुष्योऽद्यपा च क्षकंटः। सिंहीऽय मघा पूर्व-फल्गुनोपाद उत्तरायाः । तच्छेप हस्ताचित्राहेच कन्यकास्यः । तीलिनि चिवारे सातीपादवर्य विशासाः। प्रसिनि विशा-खायाः पादस्रथानुराधान्विता ज्यैष्ठा । सूलं पूर्वापाढ़ा प्रथम-याध्यत्तरांगको धन्ती। मकरस्तत्परिशेषं अवणापूर्वे धनिष्ठा-हेम्। कुभोऽय धनिष्ठाहें श्रतिभवाषाद्वयं पूर्वायाः। भाद्रः पदायिषस्तथोत्तरारेवतीमौन," इति। राजमार्त्तरहोत्त इपरायि-भीग्यरोहिणीनचवयुक्तामावास्या वैशाखस्येति प्रतिपादयन्तौ श्वतिषान्द्र एव शक्तिं वोधयति सौरवेशाचे तदसम्भवात्। तथा हि "स्वाचन्द्रमसोर्यः परः सन्निक्षमः सामावासा" इति

गीभिलस्वाचन्द्राजयोरेकराश्यवस्थानमभावास्येति द्वषस्यरवा-वेव रोष्टिणोयुक्तामावास्यायाः सम्भवात्। क्रत्यचिन्तामणौ व्यासः। "मौनादिस्यो रविर्येषासारकाप्रधमच्छि। भवेते-उद्दे चान्द्रमासाचैत्राचा हादश स्त्रुसाः"। येषां ग्रुक्तप्रतिपदादि दर्शान्तानाम् आरक्षप्रधमचणे याद्यक्रियाद्यसमये मौनमेषा-दिखो रविभवेत्। ते वर्षे चान्द्रभामासैववैशासादि द्वादशः संज्ञकलात् हादय स्नृताः। न पुनर्मस्रमासेऽपि संज्ञान्तरम्। किन्तु हिथैद्रादिरिति वयीद्यापि हादशसचका इति व्यासे-नौपदेशिकौ श्रकादि मासे चैवादि श्रक्तिरभिदितित। तदुक्तं "श्रतिग्रहं व्याकर्णोपमानकोषाप्तवाकाह्यवहार्तस्य। वाक्यस्य त्रीपाहित्रतेवंदन्ति सामिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः"। त्रतएव "यथ्या तु दिवसैमीसः कथितो वादरायणैः"। इति एक-सचणगासित्वे न गौणमेकत्वमुक्तं ससमामेऽपि वसन्तादेमाम-दयात्मक्षत्वार्थम्। चातुर्मास्यादि व्रतान्तरानिकमसमामः वर्त्तेथलार्थस न तु वास्तवमेकलार्थं श्रुतिस्नृतिविरोधात्। तया च जुति: "हादग्रमामाः सवसरः क्विववेदग्र मासाः संवसरः" इति वयोदयेत्यधिमामे स्नृति:। "यस्त्रिव्ह द्द।दग्रैकथ यथा." इति। यथो मास इति यथा भासाः खमेक. मक्सार द्रति शतपयमुखा यव्यखमिकशस्योभोभवपे-पर्यायतीता। यस् नृषिंदपुराषम्। "पश्चमासान् दरौ सुप्ते देशे तव भयं भवेत्। वद्याहा च भवेद्राजा संप्राम भय-माध्यात्" इति। तिसिन्धयुनाकमसमासपाति तस्याद्याया-दलात् तव इरिशयने सति दोषाभिधायकं तेन तव कक्टि प्रकृतायाद एव इरियायनम्। "तव यदिहितं कर्म उत्तरे सामिकारयेत्" इत्येकमूनत्वात्। यवतु मिद्यनार्के इरि-गयनं तत्र कर्छटादो मनमामपाति पञ्चमासलेऽपि न दोपः।

चान्द्रापाढादिचेव गयनादि विधानात्। तथाच मला-पुराकम्। "ग्रेते विष्णुः सदावादे भाद्रे च परिवर्त्तते। कार्तिके परिबुध्येत ग्रह्मपचे हरेदिने"। सौरपरत्वे कर्कटादि ग्रयनादी सदेत्यनुपपत्तेः । ततश्च व्यासवचनान्गीनस्यरविप्रारव्यश्रक्त-प्रतिपदादिद्यान्तिसँवे। सास इति एवं वैद्याखादिरिप। एतेन मौनस्परविपारस्थादीनां गुरुत्वामौनस्परयादीनां सप्त-त्वात् "नाग्रहौतविशेषणा बुहिविशेष्ये चोपनायते" इति न्यायाच सौर एव श्रक्तिशित निरस्तं वचनस्य नातिमार इति न्यायात्। भातएव प्रमाणवन्यदृष्टानि कल्प्रानि सुबह्नन्यः पोख्कम् अतपवं सौरे कष्णप्रतिपदादि पौर्णमास्यन्ते दाय-यैनादि पदप्रयोगः सगौष्या सम्पया वा वीदतव्य इति चान्द्रवदुभयवौपदेशिकशक्तोरभावात् एव नानार्थतापि न तथा चान्द्र एव चैचादिपदानां शक्षी नचत्रेण युक्त. काल:। सास्मिन् पौर्णमासोति संज्ञायामिति स्वाभ्या पाणिनेः खरसोऽवग-म्यर्त। यतएव अयादिखेन परसूत्रे दशरात्रांदि व्याहत्त्रार्थं मासाईमाससबसराणाम् इय सन्नेति श्रीभधाय पौषमापः पीषाऽदेशासः गोषः संवतार द्रत्युदाह्वतम् एतसमय प्रकाश-कतापि कि चितं तत पुष्ययुक्ता पोर्णमासी पोषी साधिन् मासे इति पौष एव माघादिः श्राभधानञ्च "पुष्ययुक्ता पौर्ण-मारी पोपौमासे तु यव सा नामा सपोवा माघा-द्यार्थैवमेकादमापर"। एवमईमार्थि सबसारे तु विश्रयो वराइसहितादैवज्ञमनोधरक्षत्यांचन्तामणिषु नधवेण महोद-ग्रमस्तं याति येन सुरमन्त्रोतसत्तां वत्तव्यम् वर्षे मामकमे-जैव। वर्षाणि कार्त्तिकादोनि श्रास्त्रेयाइह्यानुयोगौनि क्रम-यक्तिभञ्च पञ्चमभन्यमुपान्यञ्च विज्ञेयम्। नचनेष गुर्-भुज्यभानन चत्रेण पानिय सन्तिका। यञ्चमं मास्युन\_वर्षम्

यम्यमाखिनम् उपान्यं भाद्रम्। "भन्योपान्यौ विभौ त्रेयो फाल्युमस त्रिमी मतः। श्रीवामासाहिभात्रेयाः स्निन कादि व्यवस्थया" इति धचनात्। "हे हे चित्रादि ताराणां पूर्णविन्दुसद्गते। मासायेवादयो प्रेयास्त्रिकै: पष्टान्त-सप्तमाः"। इति सद्द्रपेणकाग्डाद्य। पूर्णपर्वेन्द्रभद्गते पौर्णः सामीसंयुति तदेकवाकातया पूर्ववचने पौर्णमामीसामः यथा मासानां पौर्णमास्यां कत्तिकादिसम्बन्धात् कार्त्तिकादिलं तया वर्षाणां ष्टहस्पतिरस्रोदयसम्भात् कार्त्तिकादिलं तन क्षितिकारी हिस्तोर्कतरसिन् इहस्पतरसी द्येकतरसामे का त्तिकवर्षम् एवं मार्गशीर्षाद् यव वर्षद्यघटकयोर्नचवयोर्द् तरिमानस्तगती गुरुरत्यिभान्देतितन का गतिरिति चैष् कार्त्तिकीत्तरं मार्गभीषं तदुत्तरपौषमित्यादि क्रमाइतिः। एव सहाज्येष्ठां क्येष्ठसवलस्याभिधानम् प्रनया दिया प्रयम्। यथा राजमार्नगङ्कत्यचिन्तामध्योः "ज्येष्ठे संवत्तरं चैव ज्येष्ठ-मासस्य पूर्णिमा। अधेष्ठाभेन सभा युक्ता मद्राध्येष्ठी प्रकी-चिता"। संवत्सरमञ्दीत्व वर्षमावपर्यायः। नतु संवत्सर परिवत्नार ददावक्षरानुवत्नार उदावत्नारपञ्चकान्तर्गतवत्नार्विद्येन पपरः। तदयगमकन्तु "यकाञ्दात् पञ्चभिः श्रीपात् समाधाः दियु वसरा:। सम्परीदानु पूवाय तयौदापूर्वका सताः"। सवसारभलमुक्तं विषाधर्मात्तरे। "सवसारे तथा दानं तिहस्य तु महाफलम्। परिपूर्वे तया दानं यवानाञ्च हिजीन्नमाः। इदा पूर्वे इन बस्ताणी धान्याना छातु पूर्वे के। उदारं वसारे दान रअतस्य महाफलम्। ज्योतिविद्स्यिज्यमध्यात् प्रभवदिष सभावम्। जबुस्तहत् समाद्यादि वर्षाणामपि सभावम्" र्ज्यमधाद्गुर्मधाभागाणनास्। प्रभवादि वर्षेषष्टे:। गङ्गा-वाकावस्थामिक स्पेष्ठे संवस्तरे इत्येव पाउः। किन्तु स्पेष्ठ-

मंवतारपदार्थानभित्रेरेव ततान्यया व्याख्यात ज्येष्ठानचत-युक्ता यदि ज्यैष्ठी पूर्णमा मवत्मरे स्थात् तदा महा-च्येष्ठो भवति सवत्मरस्तु मवतसरपरिवत्मर इत्यादि पञ्चविधवसारेषु वसारविशेष इति। तन च्येष्ठ इत्यस्य मव-त्म विशेषेणस्यानर्थकात्। एतंन तह्या केश्वित् सवत्सर् यदि स्थाचिति परिकल्पा परितामति तहेयम्। तथा चाङ्ग्त-सागरे हाद्यवर्षफलप्रसावि क्रमश्री विष्णुधर्मीत्ररहद्यार्थ-वराइसहितावचनानि चियेष्ठ। मूलोपरी जीवे वयं स्थाच्छक्ष-दैवतम्। पौडाकर धर्मामृता सम्यक् श्रष्टमहोसृताम्॥ कोष्ट मूले च नचत्रे वरेदादि इष्टर्सात.। ऐन्द्र संवत्सर स स्यात् सवभूताशिवपद "॥ शक्रदैवत क्येष्ठं वर्ष क्येष्ठाया शक्र दैवतत्वात्। एवमेन्द्रोऽपि "च्येष्ठे ज्ञातिक्र्लयंणियेष्ठानृपाः सर्वधमाद्राः। "पौद्यन्ते सर्वधान्धानि हित्वा कडू यमीजानि"। श्रमी शिम्बा तस्रभवमुद्रकलायादीनि। "मापाद्य. श्रमी-धान्ये शूकधान्ये यवादय " इत्यसर । श्रेषवचन क्षत्यचिन्ता-भणावपि इत्यञ्च चैत्रादीना वर्षवाचित्वात् तद्याष्ट्रत्ये सङ्खल-वाकोऽप्यमुके मामौलचते। एव पचपद तिथिपदघ श्रक्षगुण-दितौयादिसन्नकाना व्यावसये। अतएव भविष्यपुरिकादौ "माघे मामि सित पचे सप्तमो काटिमास्तरा"। इत्युक्तम् पती साधगुक्तसप्तस्यामित्यादिवाक्यरचना मैथिलानां हैया। विद्याक्षरवाजपेयिनापि विज्ञिताविज्ञितत्वसन्देही क्रमसाव-विरोधिक्षादविदितकरणाद्विदिताकरणेऽपि मद्दान् दीप द्ति करणमेव चार्यामिल्काम्। तदसु प्रक्रतमनुमराम । न च सौरापि पौषमाघादी ताहगी व्यत्मित समावति। पुष्यमञ्चादियोगस्य सौरे पौर्णमास्यामसभवात्तवा च गोमिन । "स्योचन्द्रमसार्य परो विप्रकर्ष. सा धौर्णमासौ" इत्यव

पौर्णमास्यन्तयामे सूर्धाचन्द्रमसोः सप्तमराश्यवस्थानरूपपरम-विप्रकर्णनियमात् सच पुष्यककेटस्ये चन्द्रे धनुःस्ये रवी न भवेत् परष्टकेनामस्थानात् किन्तु मकरस्थे रवी सभावति तप सप्तमेनावस्थानात् ततय मा खुत्यत्तियान्द्र एव पौपेन तु सीरे। तथा चान्द्र एव सासः पीषः एवं माघादिव ज्ञेयम्। चतपव सञ्च हारोतेन प्रथमतः पौपमाघाद्यमेव होत्युक्तं न च चैत्रादौति पौपमाधामिन् सौरेषु सर्वधा योगासकात् चैवादो कदाचित् छौरेऽपि योगासभावात् ति इक्षयोगा-घोगिकथेचादिगञ्होऽस्तु किं मीनखरविपारधेत्यादिना रूढि-कल्पनया मैवम् पत्यापान्यावित्याद्यक्षप्रकारेण रोडिखादी योगस्य द्याभिचारात्। न च तद्यान्ताभावाभावक्रपयोग्यता-षमादपचन्नपि सूपकारः पाचक रतिवत् प्रवापि तथास्विति दौचितात युत्रम् इति वाचं व्यक्षिभेदेन क्षत्रिवाध्ययोग्य-ताभाषात्तव योगकत्यमन्तु उदासादिस्यसमेदन्नापनाय यदुता भष्टपादै: "यवार्थस्य विमंवाद: प्रत्वचिषोपपदाते। स्वर्मस्कार-सावार्था तव स्थात् पाणिनिस्सतिः॥ भय मा वैगाकस्था-मावास्था या रोहिण्यासम्बध्यते" इति सुत्वेशास्त्र एक एव चान्द्रः त्रीतः भौरासु माघादयी द्वादशैय त्रीतास्त्रया च शुनि:। "तपम्तपस्यो ग्रेशिराहतुः सधुद्य साधवद्य वास-न्तिकाष्ट्रतः शक्य श्रीचय पैप्माष्टतः। चयेतद्दगयने देवा-नास्निम्॥ नभाय नभम्यय वार्षिकाहतुः इपय सर्क्षय गारटाष्ट्रमुः सहाय सहस्यय हैमन्तिकाष्ट्रतुः घष्टेतह् चिणायनं देयानां राजि:" इति। चयायनस्य मोरलीन सट्घटकः तप-स्तपयादीनामधि भौरपरतेति। यतो भूयसामनुरोधेन येगामादयः मोरवाचिनोऽवधार्धानं सीनस्यरविधारका त्वाटी सोरागमगार्पदा चान्द्रावगतिरिति सोर एव सुख्य

जीमूतवाहनीतं युक्तमिति तथा च "विरोधी यत वाक्यानां प्रामार्खातव भूयमाम्। तुखप्रमायमचे तुन्याय एव प्रव-र्जकः" इति तम्न "सा वैयाखस्यामावास्या या रोडिस्था सम्बन् धाते" इति शुत्धा चान्द्र एथै। पदेशिकी शक्षिः क्रुप्ता सीरे तु तपस्तपस्यावित्यादिश्वत्या पर्यायद्वारा प्रक्षिः कल्पा सा च क्षमयितिविरोधाद्ववितुं नाईतौति तपस्तपस्यादिरिति सुते-रयनारभाकमासपरिचायकलमेव तथा च विष्णुपुराणं "मासः पचदयेनोक्तो हो सामावर्षनाष्ट्रतः। ऋतुवयञ्चाप्ययनं हे त्रयने वर्षसंत्रिते। तया कर्कटाटिस्थिते भानौ दिसिणायन सुचते। उत्तरायणमध्यक्तं मकरस्ये दिवाकरे दिवाणमयनं गमनं रवे:। एवमुत्तरायणिमिति। श्रतस्तस्याः यक्तियाइकत्वे प्रमाणाभावात् । एतनाकसादिककटाद्यवीणायननिरूपणं श्रीत-स्राभंकमधि धनुरकादी सूर्धासहान्ताभिद्वितोदगयनादि-निरूपणसु रविगत्यनुसारेण दिनमानादिज्ञानार्थमनयोन विशेधः। सीरप्रतीतिसापेचा चान्द्रप्रतीतिरित्यवापि "सीना-टिखो रविर्धेषामारमाप्रथमचणे । प्रवादिवाचनिकेऽर्थे लाघदानवकाशात् एतेन प्रयोगवाह्त्यात् सीर एव वाच्यो न सु चान्द्रः खल्पप्रयोगदर्शनादित्यपि परास्तम् अन्यथाऽच-पादादिशब्दामामिन्द्रियचरणादिमात्रवाचकता स्थास विभी-सकारप्रमादिवाचकात्वं तदुर्ता वार्त्तिकष्ठाद्धिः। "न चात्यत्व-बहुत्वाभ्यां प्रयोगाणां विशिष्यते। वाश्ववाचकभाषोऽयमच-पादाहिमस्वत्। विभौतकेऽप्यचमब्दो यद्यप्यस्पैः प्रयुज्यते। तथापि वाचकस्तस्य जायते शक्षाङ्गवत्"॥ शकटाङ्गं चम-ह्यधार्मदण्डः। युती सीरे वैशाखाद्यदानामकेकस्य वह-प्रयोगाभावाच व्यज्ञं ब्रह्मपुराणम्। "चैत्रे मासि जगत् ब्रह्मा समज्जी प्रथमिश्वि । गुक्कपचे समयन्तु तदा स्यादिये सति ॥

प्रवर्त्तयामास तदा कालस्य गणनामिष। यहानुष्योत्रत्न् सासान् वसराम् वसराधिपान् ॥ द्रत्यनेन मासर्त्वसराणां चान्द्रत्वसुक्षम्। व्रह्मसिद्धान्तेऽपि "चैवसितादेश्दयाद्वानी-वर्षन्तेभासयुगक्याः। स्ट्यादी लद्धायामिह प्रवृत्ता दिनै-वस्ता चैवसितादेश्वेवश्वप्रकृपितपदस्तामारभ्येत्वर्थः। दिनै-दिसिधिभः क्रत्यग्वाकर्ऽभ्येवम्।

श्रय मनसासः। ननु यथा सीरे तिथिहयनाभे कर्माणि संगय:। तथा चाम्द्रेऽपि मलमासे सति दियेतादिना सतः तिथादेहितात् पुनरपि कसीणि संग्रयः स्थात् चनाम्याह लघुद्वारीत:। "द्रन्द्राग्नो यहा द्वयते" दत्यक्का "तमतिकस्यतु रविर्यदा गच्छेत् कथञ्चन । भाखो मिलसूचो सेयो हितौयः प्रक्षतः स्मृतः॥ तस्मिंस्तु प्रक्षते मामि कुर्यात् याद्वं यथा-विधि। तथैवाभ्यद्य कार्यं नित्यमेकं हि मर्वदः ॥ यदा तं टर्गान्तमाममतिष्रस्य तत्पूर्वमामान्यचणहित्राशिखः सन् सुर्योऽतिवाद्य गच्छेत् सासास्तरे राग्यन्तरसयोग गच्छेत्र-धाद्योऽतिकान्तो मामी मिनिस्चचो ग्रेयः मनी सन् स्नोचित गच्छतीति मिनिस्चः अस्य मिन्दं कठगाकाखनायनद्राह्म-णाभ्यामये सम्यो भविष्यति । हितीयस्तु प्रकृतः शुहः कर्माई-त्वात् तदेवीपपाद्यति तस्मिथेति प्रवापि शाद्दीमत्वादिप्रद- , ग्रनमात्रं यस्यमाणयचननातात् स्वीतिये। "यमावास्याद्वयं यह्न रविमक्रान्तिवजितम्। सन्त्रमासः स विद्येयो विष्णु स्विपिति व करें । चमावास्याद्यम् चमावास्यान्यचणद्यं रविमंक्तान्तिभ्यां कियोत्पत्तिक्योत्तरमंथीगक्पाभ्यां यथाक्रमं वर्जित तेन दर्गाः न्यसणदययोरव क्रियीत्पस्युत्तरसंयोगाभ्यां यद्याक्रमं संयोगिः नाधिमामः। संक्रान्तरेकचणे क्रियोस्पत्तिर्परचणे पूर्व-मंयोगनागः उत्तरसयोगोत्पत्तियेति चण्डये हत्तिव्यमिति

मोमांसकसिद्धान्तात्। एतेन चणचतुष्टयवादिनैयायिक-मतानुसारिणा यदव दूषषन्तरयमिति यादविवेकेऽपि "यमावास्याद्यं यव रविसक्रान्तिवर्जितम्" रत्यवामावास्या-पदेन तदन्तो सच्यते। संक्रान्तियञ्चेन क्रियाभिधौयते प्रथमा-वास्थान्यचण प्राक् चण एव सक्रमणे प्रतिपदादेमीसस्य सद्दर्न भवति तथा हि पूर्वदर्शान्तचण प्राक्चणे संक्रमणे दश्रि-न्तचर्षे च राध्यन्तरसंयोगः चपरचरे च प्रतिपदारको प्रतिपदा-देमीसस्य दर्यान्तदयकोडीकतस्य एकराय्यवस्थितेन रविषा सञ्चनं भवति पूर्वदर्शान्तचणे च क्रियोत्पत्ती नेपा प्रक्रिया सम्भ-वतौल्काम्। तमाते तु चन्धामावास्थान्यचपे कियोलसौ ष्मावास्यान्यचणद्वयस्य रविक्रिया वर्जितत्वाभावादेकराशिस्य-रविषा चान्द्रमासलङ्घनेऽपि मलमासाभावापत्तिरिष्टापत्ती तु द्धतीयाष्ट्रे मसमासपातनियमभङ्गप्रसङ्गः । पूर्वमासस्य मसमासलाभावेऽप्यपरस्य मिधुनादिस्यरब्यारब्धलेन हिरा-पाटलादि-प्रसङ्गय स्थादिति ततयामावास्यादयमित्रस्य पृथीं सव्याखायामपि प्रतिपदादेरेव यथा सहुनं भवति तथाभि-हितम् चतो नामाबास्यादिलं तदन्तादिलं वा मासस्य तथाले वर्षे पर्या मामानां सोपः स्वात् एकस्य दर्शस्य तदन्तस्य वा मामद्यघटकले दर्भान्तचणे संमान्ती पूर्वस्य परस्य च रविलिश्वितवाभावे त्रतीयाष्ट्रे मलमासपातिनयमभद्गः स्थात् तदानीं जातस्य सतस्य वा कमीणि मासविधीपानध्यवसायः स्थात् नानावचनसिंद प्रतिपदादित्वच भागस्य व्याष्टन्येत। गुरुचरणासु "हे इ वै पौर्णमास्यो हे चमावास्ये तसात् प्रतिप-अपनसम् अजिलाएरियः" इ.जि. शुन्या ऐन्द्रानेग्रगामाङ्ग तिथिधर्म-योगेनाअहर्यसार्थलचयया अमावास्यापरस्य श्रुक्षप्रतिपद-मावास्यापरत्वं संक्रान्तिपदस्यापि राग्यन्तरसंयोगरूपफल-

परत्वमाडुः। यमावास्यादयमित्यनेन छपसस्यविशेषयः भावेन पूर्वापरास्थाम् समावास्थाभ्यां परिचायितः। श्रुक्षप्रतिः पदादिदर्शान्तकाली बोध्यते इत्यपरे। तेन पूर्वामासास्याया उपसचणते क्रियानन्वियत्वात् तह्यापनामावात्। "मिथ्नस्यो यदा भानुरमावास्याद्यं स्प्रमित्"। इत्यवामावास्यादयमिति वर्मता न सात्। तसाकों दर्गकसैकराणी दर्णद्यातिग रत्यभिधानञ्चासङ्गतं स्यात् पूर्वामावास्याया उपनव्यव्ये पूर्वीः मावास्थान्तचणद्वत्तिराशिष्यः सन् सूर्योऽतिवाद्य गच्छेदिति खोक्तवास्याप्यनुपपनः स्थात्। एवमन्यान्यपि वचनानि व्याख्येयानि। गरश्चपरिशिष्टक्योतिः पराश्ररी। "रिषण लिंद्वतो मासयान्द्रः स्यातो मिनिन्त्वः। तत्र यदि हितं कर्म उत्तरे सासि कारयेत्"। पराभरः। "पचहयेऽपि संकान्ति-र्योद मं स्थात् सितासिते। तदा तमामविहितसुत्तरे मासि कारयेत्"। भाभ सङ्घनससंक्रमण्य रवेस्तदा भवति यदा त्रमास सेस्पूर्वमासान्यचणयोरेकरात्र्यवस्थितस्य तमासानन्त-रमेव राज्यन्यरसंयोगः न त्वेकराणि श्वितस्य मासव्यापनमात्रे तथाले चतुर्यामेकरायौ संकान्तया प्रतिपत् प्रयमचणेऽपर-राशी तत्यरराशी च हितीयायां प्रतिपद्दि वा खे: संयोगिऽपर-स्यापि मलमासता स्थात्। अतएव ज्योतिपे "श्रमावास्यापरि-व्छित्र रविसंक्षान्तिवर्जितम्। मसमासं विज्ञानीयाद्रहितं सर्व-ं वर्मस्। तस्यार्को दर्शकशैकराशी दर्शदयातिमः"। प्रत्रेकराशि स्यार्कस्य दर्शहयातिगत्वसुक्षम् । एतश्च पूर्वीपदर्शितधीर्मासयीः पूर्वस्थैव समावति न परस्य। मलमासकारणन्तु झ्योतिपे। "दिवसस्य इरलकः पष्टिभागग्रती तदा। करोलेकमध-न्छेदं तथैवैकस चन्द्रमाः। एवमदेवतीयानामब्दानामधिः मासकम्। ग्रीपो सनगतः पूर्वं पञ्चाध्दान्तेतु पश्चिमम् ।

मसमासय चान्द्रवासहटकाइदिवसपद्योरिप तथावात् तिधिवाचकत्वं तथा च विशाधमीत्ररम्। "तिथिनैकेन दिवसञ्चान्द्रमाने प्रकीसित:। अहोरावेण चैकेन सावनी दिवसः खत."। अत्र सोमयारी सवनत्रयस्याहोरात्रसाध्य-लात् तक्षव्यक्षिनं सावनमिति माधवाचार्यः । सूर्यभिद्यान्ते "तिधियान्द्रमसं दिनम्" इति। समयप्रकाशे च्योतिष् "तिथि: श्रशाइन्टिनम्" इति एतेन विष्णुधर्मोत्तरवचनमात्र-प्रदर्शिना वाचसातिमियेण चान्द्रमाने तिच्या तत्तिहनगणना सिद्यातु । दिवसपदश्च तिथिवाचकमित्यव्र न किञ्चित् प्रमार्ण ति सूर्याविष्टम चतुर्यामे यक्तं तथैव स्वयवद्वारादिस्कृतं च्चेयं परार्डेऽपि दिवसपदस्याद्यीराव्यवाचित्वापत्तेर्द्वव्यवद्वारा-च्छास्तोषपरिभाषाया वैयर्थापत्था बलवत्वाच । तेन दिवसस्य तिथे: षष्टिमागं दण्डमेकं रविर्हरति छैदयति छत्तरे छैदमिता-भिधानात्। ततस ऋतौ मासदये षष्टिनाड़ी च्छेदाद्र इस्तिधे-महिमानर्षणं करोति। एवं चन्द्रोऽपि। एवमित्युक्षक्रमेण वर्षे दादग्रतिपासक-काशाकर्षाद्देवतीयागामध्दानामन्ते यहें हितीय रोपांते तथा ग्रीमें माधवादिषु पट्केषु पूर्वे माधवादि विकपतितं पञ्चाब्दास्ते तु पविमं त्रावणादि-विकप्तितं सस्तमासचन्द्राकी जनयतः। ग्रीमि माधवादि पदके रति यदुक्तं तदाक्रमाप्त मिथिरः। "माधवादिषु षट्केषु मासि दर्शहयं यदा। हिराषादः सविज्ञेयः श्रीते तु त्रावणेशचातः"। हिरापाटो हिरापाटादिः। श्रावणे सीर-श्वणे। तथा च च्योतिये "मिथुनस्यो यदा भारतसामास्या-हय सुप्रीत्। दिराषादः सविजेयो विष्युः स्विपिति कर्षटे"। चमावास्याहयं तदन्यचणहयं स्प्रीत् संयुद्धात् न तमाध्ये राध्यक्तरसंयोग रत्यर्थः। ननु कर्कटादिभिकेऽधिमासपाते

तत्पूर्वं मियुन एव इरिशयनं तत् कयं माधवादि षट्कमावे ककटे तत्। तत्राष्ठ राजमात्रण्डः। "क न्यासिष्ठकुलौरेषु यदा दर्शहयं भवेत्। पागामिनि तदा वर्षे कुनौरे साधवः स्वपेत्"। साधवादिविकयावणादिषिकाधिमामविवेचनमप्ये-तद्रधम् इदन्त् सार्ववदद्याधिमासपातमीचित्यक्रमादुक्त क्षचितियोगां द्वासबाइल्येन दण्डपद्यधिकन्यूनदर्यनादुत्र-कासन्यूनाधिककासिऽपिमसमामी भवतीति समयपकाश्कत्। वस्तुतस्तु वैपरीत्यं यतो न्यूनदण्डतियेः प्राधिकत्वे तत्र तिथि-च्ययस भटित्युपसभ्यमानलात् स्त्रस्यकासेन तिथ्यसीर्-सम्बन्धात् श्रीघ रविलद्धनप्रतीतै: श्रीघ्रमेव मलमासी भवतीति चिषकदण्डतिथे: प्रायिकले तत्र तिथिचयस्य भटित्यनुप-लभ्यमानलेनाधिकेनैव कालेन तिप्यन्तरसम्बन्धात् विलम्बे-नेव रविसङ्घनप्रतीतिथिरेणैव मनमास्रो भवतीति तथा च विशाधमीत्तरम्। "सौरसंवत्सरस्यान्ते मानेन प्राधाजीन तु। एकादयातिरिचन्ते दिनानि भगुनन्दन ॥ सासहये माष्टमासे तसामासोऽतिरिचते। संचाधिमासकः प्रोतः काम्यकर्मसु गहितः"॥ इदन्तु नियतम्। एकसाद्धिमासामृतीयाव्हे ऽधिमासान्तरमिति। यदापि "यां तिथिं समनुप्रायः तुसां गच्छति भास्तरः। तयैव सर्वसंक्रान्तियावनोयं न गच्छति"॥ इति राजमार्चण्डवचनासुमादिषण्यामे तिशिष्ठहरभावाद्वर्षं दादग्रहिरनुपवना तथापि "मध्ये विषुवतीर्भानुयन्ति तु वर्षयेत्। सै: सभ्याधिको मासः पतस्येव वयोद्य"॥ द्रित रहद्मपरिगिष्टवाक्ये विद्युवतीर्भेषसुसासंक्षान्योर्भध्ये मेवा-दिपण्मास एव तिथिष्टिश्का चहर्गणने। मेषादियस्मास मन्द्रभुत्वा सप्तदिगद्दिस्तुमादो गोध्रभुत्वा दिनद्द्यक्रामः इति तया च। च्योति.यामां "भेपादोनासप्त न्दं पणां सप्ताष्ट-

चन्द्रकम् । तुलादीनामष्टसप्तचन्द्रकत्तु लिखेत् पृथक् ॥ चन्द्र एकः प्रकल्य वामांगतिः। इत्यङ्गविदां समयात् व्युत्क्रमेणाडा बोध्याः। तेन दिनहिडिक्रमसञ्चयाभ्यां नेषादिषर्के एव एकादमादितियहिष्टः। एवष "गरी, व्यक्तिये सार्वे पञ्चपने दिनहरो। दिवसस्याष्टमे भागे पतत्येकोऽधिमासकः"॥ इति राजमार्नाण्डीतः सप्तद्यदिनाधिकाष्टमासाधिकवर्षदयेऽधिः मासः। स सौरे मासि सप्तद्यदिनीत्तरं चान्द्रमासलहना-सभावात् सावनमानेन न्नेयः। तथा च विष्णुधर्मीत्रस्यम-कारङम्। "सौरेणाञ्चसु मानेन यदा भवति भागव। साव-नेन च मानेन दिनपट्कं प्रपूर्धते"॥ सीरसंवत्तर दिन∽ षर्काधिकः सावनः संवत्सरो भवतीति । श्रीरमासारका धिकवर्षदये सप्तद्यदिनानि वर्दन्ते। सावनक्रमेणेति पूर्वाध-विष्णुधर्मोत्तरीक्षसमानविषयतास्वेति। यनु द्धिक नव ग्रतगका च्हे तुना एका न्तिसावा स्थायां भूता तती-ऽतिचारेण दृश्यिकसंक्षान्तिः प्रतिपदि युनर्गि ऋजगत्या षमावास्यायां धनुः संक्षान्ति दिष्टस्त्रायामधिवासीऽन्यु-काभद्देन मिखतः। पुर्वदिशितविषये द्वियवस्यस्युपमंकान्त-मार्गेमीर्पनोवीऽवि। चाम्रक्ष्टे वैगाखमसमासामासामिलु-क्तम्। तत् सत्यं किन्तु तुलादिखादौ हत्यमानीऽपि नायम-धिमासः किन् छत्पातादधिमासममानधर्मायम्। यतप्र तव प्रतिपदि द्यक्षंकालो तकाष्ट्र सुनास्यस्थास्थलेऽपि यों तियिं समनुप्रायोति "यदा वक्रातिचाराभ्यां स्यमिक्रमणं भवेत्। चित्रयाचामस्भारां तदा वहति भेदिनी ह इति स्योति:याद्यात् मधिकसद्यादभादत्यात्। तयानादभेऽपि ग्रहवेलान्यायेन प्रत्यभिज्ञानाह्यति सार्गगीपंपद्यायता । चतिचारपदाच सास्यानमतीत्व चरतीति चमावार्यंव इपिक-

रविसंक्रान्तिः खस्यानमवसीयते। वैद्याखेतु तत्नाधिमास-गातः प्रकतत्वात् वकातिचाराभ्यामिति रवेर्वकातिचारगत्यः सकात् मन्दशीधगतिभ्याभित्यर्थः। एवमाखिनाधिमासपाते तुलादी पुनस्तया पाते पूर्व एवाधिमासः प्रकातवात् नोसरे षौत्यातिक्षत्वात् षन्यत् सर्वं पूर्ववदिति। यदा पुनरमावाः स्यायामेव तुलासंक्रान्तिर्भूता न भूतो माधवादिषट्केऽधिमासः पातस्तदनन्तरमतिचारेण प्रतिपदि दृष्टिकसंक्रान्ती भूतायाः मपरा चिप संक्रान्तयो विषुवपर्यन्तं प्रतिपद्येव भवन्ति तदः पूर्वाधिमासात् साईहितीयवर्षसञ्चितेरिधमासस्यावश्यभवात् । श्रन्यस्य चानुपलभात् तुलादित्य एवाधिमासी निणीयते। चतएव नाग्राज्ञतं वैदिदिद्मिति कालविवेके जीमूतवाहन षाइस जिक्नोऽप्येवं युक्तच्चेतत् तयाहि ज्योतिषे "द्रभानां फारगुनादीनां प्रायो साघस्य च क्षचित्। नपुंसकतं भवति न पोपस्य कदाचन"॥ नप्सकतः मनमासत्वम्। तथा चोक्रम्। "प्रमंक्रान्ती हियो मासः कदाचितियद्वितः। कामान्तरात् समायाति स नपुंसक द्रयते ॥ गाण्डिखोऽपि प्रायमो न ग्रुभ: सोम्यो च्येष्ठयापाट्कस्त्या। सध्यमो चैत्र-वैगाखावधिकोऽन्यः सुभिचक्तत्" ॥ सौस्यो सार्गश्रीपः श्रिकोऽधिमासः । यम् च्योतिःसिश्वान्तव्रद्धसिश्वान्तयोः ''धटकन्यागते सूर्ये द्विविवे वाय धन्यिनि। सकरे वाय कुमे वा नाधिमामं विदुर्वेधाः"॥ इति तदेकवर्षे मामद्वी मरा-मामपाते भ्रेयम्। घटस्तुसा एतद्दियये गीत्म इति माधवाः दियु पट्सु द्रीत नियमीभधानम्। पतएव एकवर्षीया संजान्समासायधिमासमानुचित्तमेदेनीपात्ती तथा च काठ-करदाम्। "चुड़ां भोक्तीवत्यनस् भान्याधेयं भद्रालयम्। राशामिपेकं काम्यचन कुर्याद्धिमासके ॥ चुडां भोजी-

असनस् यम्यधियं महास्यम्। राजाभिपेकं काम्यस् न कुर्योद्वानुलिद्विते ॥ महालयम् कन्यार्के खादम्। एत-दिषय एव "यावच कन्यातुलयीः क्रमादास्ते दिवाकारः। तावच यादकाल: स्याच्छ्न्यं प्रेतपुरं तदाण ॥ इत्यव तु क्रमा-दिखनेन तच्छाइं तुलाके विहितम्। भीमपराक्रमेऽपि। "अधिमासे दिनपाते धनुषि रवौ भागुल हित मासि। चिकिणि सुप्ते सुर्ध्वाको माङ्गस्य विवाहच्य"॥ दिनपाते दिनचये तत् स्रक्षं कीर्मे पाद्मेऽपि। "ही तिष्यन्ताविकवारे यत्र स स्याहि-नचय." ॥ वशिष्ठ:। "एकस्मिन् सावने त्वज्ञि तिथीनां वितय यदा। तदा दिनचयः प्रोक्तस्तव साहस्कि फलम्"॥ साइसिकं फलमिति माङ्गस्येतरवैदिककर्मपरम्। तद्या च मत्यपुराणम्। ''यतमिन्दुचये पुष्यं सहस्रन्तु दिनघये"। कोर्मपाद्म-विशिष्ठ-वचनैकवाकातया स्वन-दिनवहार-प्रवृत्तिः सुर्योदयावधिरेव सूर्यसिंहान्तेऽपि "सूतकादिपरिक्तेदो दिनमासाब्दपास्तथा। मध्यमग्रहभुत्तिय सावनेन प्रकीर्तिता"॥ श्रत्र दिनाधिपस्य रब्धादेशीय दिनं वाग्रूप सावनगणनीक्षं व्यवद्वारोऽपि ताहरीव तिथिविवेकेऽपि भवतु वारयोगे व्यस्त-तिधेपेषणं तस्य दिनद्वयेऽसभावादित्यक्तम् । सावनदिनमाष्ट सूर्यसिशान्तः । "उदयादीदयाद्वानीर्मीमसावनवासराः"। भोमेति पित्रादिदिनधाष्ट्रस्यर्थम्। यत्त् रेखा पूर्वापरयो-रिखादिना ज्योतिपे वारप्रवृत्तिकत्ता तब्बगेति:यास्नोक्तकास-होरादिचापनार्थमिति च्योतिस्तत्वे बहुधा विष्टतम्। "भैवाः स्तमनमर्कस्य नोदयः सर्वदा सतः। खदयास्तमनाध्यं हि टर्शनादर्शनं रवे:॥ येथेव ह्याते भाष्ट्रान् स तेपामुद्यः स्मृत."। इति विष्णुपुराणात् दर्शनयोग्यकासादेव वार्घटक-कर्मस स एव काल इति। यत्त धटकन्यागत इत्यनेन कत्यागते

मलमास्तिपेधः। स तदुत्तरमिषगतमसभासास्तरपाते बोध्यः। चन्यव तु माधवादिषु घट्केषु प्रत्यादिवचनात् समस्वितत्वाच थाधिन एव मलमासः। नतु चैचान्ततुलादिषु तथा च पिताः मइ: "मासि कन्यागते भानुरसंक्रान्तो भवेद यदि। दैवं पेत्रं तदा कमी तुलाक कर्रचयम्"॥ एवच एक सिन्ध स्टेमा स ह्यस्य रविलङ्घने तदेकतरस्य भेषादिगतत्वे स एव मसमासः। धटकन्यागत रखादिवचनात् भाधवादिषु पट्केषु पतितत्वास। चलेव विषये गातातपः। "वयोदगास्य' श्रुतिराइ मार्स चतुर्देश: क्वापि न दृष्टपूर्व:। एकत मासिहतयं यदि स्थाइपें ऽधिकं तत्र परोऽधिमासः"॥ तथा च श्रुतिः। "दादशमासाः संवत्सरः" इति। कासमाधवीये जावालिः। "एकसिनिप वंषं च हो माधावधिमासको। प्रक्षतस्तव पूर्वः स्थादुत्तरस्त मिल्सिचः"॥ प्रक्रतः श्रुषः कर्माहं दति यावत्। वर्षकत्ये "मासद्यस्य सध्ये तु संक्षात्तिन यदा भवेत्। प्रकातस्तव पूर्वः सादुत्तरस्तु मस्तिस्तुषः"॥ एकस्मिनन्दे तस्य मासदयस्य रविसङ्घने तस्य मेपाद्यसृष्टले तु पूर्व एव मसमासः क्रमः सच्चितत्वादन्यया क्रमाभिधानमनर्थकं स्थात् कन्यागते माध-वादिपर्कपतिसत्वाञ्च। तथा च च्योतिः पराश्वरः। "कार्त्तिः कादिषु मासेषु यदि स्थातां मसिक्तुची। सर्वकर्महरः प्रीक्तः पूर्वस्तव मलिस्तु सः"॥ राजमार्ने एउं। "यमायास्याद्वयं यव मासि मासि प्रवस्ति। उत्तरसोत्तमो ज्ञेयः पूर्वस्तव मस्ति-सूचः"॥ न चैवं तमतिक्रस्येत्यादि सप्रहारीतवाक्यमति-यापकमिति वाचा तस्यापवादनिराक्ततत्वेन विश्वविषयीय-लात् तथाद् यां तिथिं समनुप्राप्ये त्यादिवाच्यात्तर्तात्तर्थस्तत्तः द्राग्रर्वसंक्रमणारभाष्ट्लात् वकातिचाराभ्यां फलाभावेन तत्तकासानां तत्रामारकोऽपि यहविसात्यायेन प्रत्यभित्रामाः

उवित तत्तनासपदवाच्यतेति चयमास्याये मीनाटिखो रवि-रित्यादिव्यासीत्रलचणस्य पूर्वीत्रविषये सङ्गतिः। यव तु दर्जी कत्यासक्रात्तिभूता तुलामक्रान्तिस्तु प्रतिपदि एव प्रतिपदि द्यविधनु सक्रान्ती ततय वक्रगत्या दर्श मकरकुमामीन-क्षंत्रान्तयः प्रतिपदिमेपसक्षान्तिस्तव कन्यायां सन्तमासः धनुषि चयो सौने भानुनिह्नतः। तव चयमासस्य मार्गश्रीष-भावतात्त्वसमासानां भानुनिश्विताविधकानां पौषादिलाधे पूर्वराशिखरव्यारध्यत्योग्यतया तत्सष्ट्रति:। तत्रथ योग्यता-व्ययणेन परस्तव मलिक्वच द्रत्यस्य विषये सति भानुसिङ्गती-त्तरधयमास्विधिकेषु पूर्वस्तव मसिस्व द्रायस्य विषये सति भानुलिब्वितावधिकेषु चयमामीत्तरमासिषु तहाचणस्य ना-च्याप्तिः। एवच्चौत्पातिके तदनुरोधान व्यवसारः किन्तु चौत्सर्गिककालानुरोधादेव। तथा च सवत्सरप्रदीये। "डत्-पातेन भवेदास्तुकालस्थातिकामः क्वित्। न तत् स्वाद्याव-द्वाराष्ट्रमित्याद्व भगवान् द्वरिः"॥ न च वर्षद्वयात् परं तुनायाममावास्यायां ष्ट्रसिकादिषु मेषपर्यन्तेषु प्रतिपदि मक्तान्तौ तुनायां कात्तिक एव मनमासः। तद्भरत्र भानु-लिंद्वितोत्तरवत् शक्कवेलान्यायो नास्ति कथिमिति वार्थं चय-मास्युताध्दे तु गत्यन्तराभावात् प्रकृतेनान्यायानुसरण तत्-समावे तदनुमरणस्यान्याय्यवात्। यत् इद वा कि यदन्यस्यां तिथी मक्रान्तेरपधानं खरूपयोग्यता पुनरन्यस्यामिति तदपि चिन्य रटप्रस्थितदण्डे घटस्य फलोपधानं स्वरूपयोग्यता पुन-ररख्यस्यदेखेऽपोति। यद्य तत्र दृढदण्डलेन भ्रमिननन-योग्यतोभयसाधारणी विद्यति प्रकृते तु कौटगौति चेटकग्राज्ञ-मस्वेनेति ब्रूमः। मा च यक्तिः फलवली सेया ध्यमासयुता व्हे त चैचीत्तरावैधाखस्तद्त्तरी व्यष्ट स्त्यादिक्रमानुरोधेन चैत्र-

पुववत्ती फारगुनस्तम्पूर्ववर्ती माघ प्रयादान्रोधेन च एकस दर्भान्तस्य कचिद्धि भास्ते मासिहतयत्वानभ्युपगमेन चयां तिथिं ममनुप्राप्येति तत्र परोऽधिमास इति पूर्वस्तव मिस-स्तुच इति धटकत्यागत इति उत्पातन भवेदास्तु इत्यादि-वचनपर्धानोचनया च ययायय शास्त्रमयापौति। यदि जोसूतवाइनीक्षं यां तिथिं समनुप्राप्ये ति वचनोक्षमावयोग्य-तावच्छेदक स्थात् तदा यिस्रिश्रद्धे कन्यासंक्रान्तिरमावास्थायां तुनासंक्रान्तिसु प्रतिपदि ततोऽमावास्थायान्तु द्वसिकसंक्रान्ति-रमाचास्रायामेव मेपावधिसंक्षान्तयो भूतास्ततः प्रतिपदि हष-संक्रान्तिभूता तवाधिनो भानुसिद्धतः कार्त्तिकः चयः वैयाखो मलमास दति कार्त्तिके तद्योग्यतावच्छे दक्षस्याभाषात् लचणा-सङ्गतिः स्रात्। तथा दि तुलासंक्रान्यविष्टिनियलस्य व्यकादिसंक्षान्तियोग्यतावच्छेदकलेनैव विधानं प्रकर्ते तु तय।स्तौति। त्रणार्णिमणिस्यलेऽपि घड्रिजनयोग्यताया-भेक्यक्रिमत्तरैव व्यभिचाराभाव द्रत्युक्तम्। एवच एकस्मित्रपि पापध्वसे प्रायिस्तस्यानेकधोत्नीर्त्तनमि सङ्गच्छते। न च तव वैजात्येनापि सङ्गमियतुं शकाते ध्वंसे तदभावात्। एतत् भवें 'भीनादिखो रविधेषासारमाप्रधमचणे। भवेनेऽच्हे चान्द्रमासास्रवाद्या सद्या सृताः"॥ इति ध्यासवचनादव-सीयते। तथा चीतं भद्रपादैः। "सिद्यानुगममात्रं हि युत्रां कर्तुं परोचकै:। न सर्वस्रोकसिष्ट्य सत्तरीन निवर्तनम् इति। ननु एकस्य ध्यमासस्य मेपगतर्वित्तंक्रान्तिः यसिन् ग्रागमासे भवति तस्त्रिम्। एवं वैग्राखाद्या हवादिसंक्षान्तियोगेनेति अधागुप्तप्रतिपाद्य उभयसच्चाकान्त-खादुभयमासलं युक्तम् द्रति चेत्र तस्य व्यासवचनादिविरोधा-सचणपरत्वासङ्गतेमसमासाव्यापनाच। न च "वस्रामार्गतः

पापी यज्ञानां फलनाश्रक्षत्। नैऋ तैयत्विधानाचै: समा-कान्तो विनामकः" इत्यादि स्योतिः यास्ते प्रापादादिना-मशुन्यत्वेन विनामकता मलमासस्योक्ता इति न तथायापि-रिति वाच' दिरापाट: सविज्ञेय इत्यादिप्रयोगात् "तव यदिहितं कमा उत्तरि मामि कारयेत्" इत्यभिधानाच । तस्या-षाढादिलाभावे तत्र यदिहितिभत्यनुपपनं स्थात् व्यासोक्ष-चचणाकान्तताचा किञ्च मसमामस्यापादादिनामशून्यत्वेन तस्य 'बच्चमाचे काठकञ्चतावितरान्यजीवतीत्वभिधानं न सङ्ख्यते। इतरीपजीवनं ष्टितदा भवति यदि तस्यापाटा-दिखं स्वादिति ति विनामकलं कुत इति चे दिश्वनामको विनामकस्तस्य मसिस्नुचादिनामकत्वात्। यदा सदिप नामासदेव तत्तमासकर्मानहत्वात् रत्नकोपेतु समाक्रान्ती-ऽधिमासक इत्येव पाठः। घयमासस्य हिमासले तत्र स्तर्य कर्मण्यनध्यवसाय: स्थात् कि पूर्वी मास: किं वोत्तरी मास इति। नच कपालाधिकरणन्यायात् पृवीमास इति वाचा तथाले तदुत्तरे मलमामपाते चयमासस्तस्य सप्तद्ययादा-नुपपत्तेः। वस्तुतस्तु नवैव कपासाधिकरणन्यायस्य विषयो यव क्रिकोपस्थितयीर्थक्योः प्रथमोपस्थितस्य ग्रहणम् अव तु व्यक्तभेदेन क्रसिकोपस्थित्यभावात् कथं तदवसरः। सं च न्यायो दग्रमाध्याये चिन्तितो यया वैपाव्य एककपास इति श्रुतो क्यालधमाकाह्यामा पामियाष्ट्रावपालो भवति पीर्ण-सास्यामिति प्रकृतियागसम्बन्धिकपालधर्मप्रहे यस्य कस्या-ध्येकस्य कपालस्य धर्मानुष्ठानीपकार्यस्है कस्येत्यपेचाया प्रय-मोपस्थितलेन प्रथमकपास्थमानुष्ठानमिति। न च तव "तियहैं प्रथमे पूर्वी दितीयाहै तदुत्तरः। मामाविति नुवेधिन्यौ धय-मास्य मध्यगी"॥ दति वाक्यदावस्था भविष्यतीति वाच्यम्।

द्दं वाक्यं दाचिणात्यसग्रहकस्रवन तु सुनेरितिन तत्रास्या। तद्यात्वे षष्टिदण्डात्मिकायास्तिये: यराहेस्य राविपतितर्वे परमाधीय पूर्वार्षस्य च राविपतितत्वे पूर्वमासीयस्याष्टका-न्यादादेसीयः किन्तु उत्तराधिमासपते चयमासीयतियिपूर्वाहे स्तस्य समदगयाद्वानुपपत्तिः। किश्च वस्यमाणकाठकसुती सीरनायतन इत्यनेन मलमाध्याप्रतिनियतस्थानत्वात्तदन्यस्य पीषादेः प्रतिनियतस्यानत्वं प्रतीयते। तस्य पौषस्य मार्गः शीर्धोत्तरत्वं माघपूर्ववितित्वरूपम् एवमन्यत्रापि। एकस्य दिले तिन्यमभद्ग इति। प्रत्ये तुमासघटकानां विंघसियौनां पूर्विसिन्हें पूर्वास पञ्चद्यतिथिषु पूर्वी मासः दितीयेडि यरासु तासु उत्तरा इत्यर्थमुङ्धा शक्षपचम्रतस्य पूर्वमासे क्षणा-यचस्तस्य परे क्रत्यमित्यादुः। तदितमन्दं धनुषि चये पूर्वोद्दे मार्गगीर्पक्षणपचम्तस्य पौपश्क्षपचमृतस्य च क्तत्यकोषप्रसङ्गात् पूर्ववदुत्तरे मसमासपाते व्ययमासपूर्वाचे सृतस्य सप्तद्यायाष्ठासुपपसीय। केचिस् "यस्मिन्। शिगते भानी विपत्ति यान्ति मानवाः। तैषां तत्रैव कर्त्तेष्या पिण्ड-दानोदकामिया"॥ दति वचन च्यमासस्मतिथिविषयतया व्यास्याय तुलादी चये तव सृतस्य भीरकार्त्तिकादावेव त्राह-माष्ट्रः। तदतीव मन्दं तद्राभी वर्धान्तरे तत्तिव्यप्राप्ती प्रत्याद्धिकयाद्वलोपापत्तेः । यस्मिन्। यमिन् भानाविति स चाद्यसवसरास्तावधिमासविषयम्। चय "चाद्रविद्वे ससुत्-पन्ने मृताद्वाविदिते तथा। एकाद्यां प्रसुवीत सपापरे विशेषत."॥ इत्यस विदेशीभपरत्वमभ्यपेर्वेकादम्याभिव मचापि याष्ट्रभिति चैन्न पिट्तिपद्स्य ज्ञातल्थोभयपर्ले वाकाभेदावत्ते: विदितपदात् प्रयोगप्राचुर्योच ज्ञातस्वैव प्रथमी-प्रसित्वात् तत्परतया श्रीसर्गिकव्यादिति वदन्ति । वस्तिस्

लाभाष्यं विदेनिष्ठायासिट्यतिपेधाहिदितप्रयोगानुप्रपत्तेः न च तिथाई इति वाक्यं चयमासीयजनामरणमासमाच्याव-खाएकं नतु सर्वेषिपयकमिति वाचम् असिवर्षे प्रमाणा-भावात् तस्यापत्वेऽपि मासद्यघटकानां चित्रात्तियौना पूर्वार्षे श्रुक्तपत्ते पौर्णमास्यलपूर्वमासस्य श्रुक्तपत्तीयक्षां दितीयाहें क्षण्यचे ताद्द्रगस्य परमासस्य ग्रुक्षपचौयक्षत्यमिति। चय-मासुखापि मध्ये प्रकृतमासुवन्यासद्यमिति। ततस्य नीसूत-वाइनीक्ष एव प्रकार: याहादी युक्त:। यतएवाव समय-प्रकाशयाद्यविवेकसैधिससग्रहकारैरपि न किञ्चिदिभिद्दितम्। ब्रह्मगुप्तनचणे लेकवर्षे सक्रान्तिशून्ययोमसियोरन्यतरस्य गुड-तया तमामविद्यितकर्भाष्टिताषाः सर्वप्रामाधिकधिषतया तमा-व्याप्तिः यां तिथि समनुप्राप्येति योग्यताविवचया तत्र समा-धानसिति चेत्तर्हि व्यासवाको तथा कत्यनया सर्वमिही किस-नार्धवाक्यादरेणेति दिक्। न च "मेपादिखे सवितरि यो मासः प्रपूर्यते चान्द्र । चैतादिः स तु विन्नेयः पूर्तिहिलेऽधि-मामीऽन्य." इति माधवायार्थपृतच्योति शास्त्रोक्षवायमादः र्गौयम्। तथात्वे घयमामस्य परमामत्वे पूर्वमामस्य सोपः स्यात्। मिधुनादी मलमासे। "मिधुनस्थी यदा भानुरमा-वास्यादयं स्प्रमित्। दिरापादः स विद्रोयः सिति तु त्यावणे-(चातः"। द्रत्यादाक्षितिपादादित्वानुपपत्तिय स्वात्। मत्युत्त-दिन्यं ष्टलाद्यापित्तभवत्तमादाधुनिकन्योतिविदाकां पूर्वितः-यासवचनविरोधादनादेयं प्राधिकत्वाभिपायेण वर्णनीयं वेति। चयमासमध्यमादतुर्चीतिःसिद्यान्त भोमपराक्रमी। "घर्षः क्रान्तमासोऽधिमासः स्कुटः स्थात् दिर्धकान्तमासः चयास्यः कटाचित्। धयः कार्त्तिकादिवयेनान्यदास्यात्तदा वर्षमध्ये-ऽधिमासद्यं स्यात्र । भसंकान्तलेनेवाधिमासस्य दिलं

वस्तुतस्तु एकस्य मलमासलमपरस्य भानुसहितत्वं पूर्वीपदर्शि-तकाठकग्टह्मभौमपराक्रमवचनैरुमेयमिति। तद्यं सद्येपः। यक्षपतिपदादिरमावास्यान्तो रविचिद्धितो माम्रो मसमामः स च माधवादो घोसार्गिकः कदाचित् कार्त्तिकादावपि त्रयञ्चा-निष्टक्षत् माधवादि कात्तिकादि प्रदेकयोरिप तम्रचणयोगे माधवादेरेव तुलादि पर्क एवीभयमासे तक्षचणयोगे पूर्व एव माधवादि पट्क एव पाण्डिनवैगाखयोस्तस्चणयोगे पर एव मलमासः तिद्वसतु भानुनिश्वतः। सलमासे चाषाटादेहिलं भानुनिश्वते तु नैतदिति विस्तरः। यस् "यधिमासि न सकान्तिः सक्रान्तिद्दयमेव वा। सलमासः स विद्योगो मापे विश्वममे भवेत्"। इति काठकराष्ट्री दिसकात्तमासस्य चया-परपर्यायस्य मसमासलाभिधान तदेकमावसकान्तिरहितल-गुणयोगाप्तीणम्। मलमासविद्याद्याद्यनर्दत्वाधम्। तथा च वाईसव्यध्योतिर्यन्ये। "एकत वर्षे द्यधिमासयुग्त यत्ना-र्भिकादिनितये चपाष्यम्। तद्दर्धनौय वितय प्रयक्षाद्विवाद्य-यश्चोत्सवसङ्खेषु। यश्चिन् मासे न सक्तान्तिः सक्तान्तिहयमेव वा। समर्पाष्टस्वतीमासावधिमासय निन्दितः"। पत्र सस्-पीरमक्रान्तवेनाधिमासवत् सर्वकर्मानहंतायां तदपवादेन मङ्ख्येतरकर्मार्डः सन् सम्यक् रापंतीति साधवाचार्यः। श्रंहरः पापस्य पतिरिति तत्त्रधेति ससपाहस्ती भानुलिञ्चत-चयसासयोर्नामो कठथाखाखनायनबाह्यणम् "महमासा वै श्रधस्तात् सन्ते। दक्षामयन्त मासाः स्थाम इति ते द्वादशाह क्रतिसुपायन् वयोदशं वाद्यण कला तिसन् सद्दोदतिष्ठन् तसात् सोऽनायतन इतरानुपजीवतीति तसात् दादशाहरा वयोदयेन ब्राह्मणेन भवितव्यमिति"। चस्यार्थी जयस्वामिना व्याच्यातः। ते चाईमासास्त्रयोदयं सलमास ब्राष्ट्राय क्रत्या

दादशाहं कतुमुपायन् छपाष्ट्रतवन्तस्तिमासनमासे सृष्ट्रा संमाच्य किमित्याकाष्ट्रायाम् अरातौरित्यध्याज्ञियते अरातौः पापानि संमान्य उदतिष्ठन् पापभारमून्या उत्यिता स्रभविन-त्यर्थः। तत्र पापनिमार्जनार्यवादात् सभावत्वासान्तरं कर्म राव न कत्तेवां न तु निरवकाशमिति प्रयवादाहिधिकस्पनायाः प्रतीतिवाधेनैवीचित्यात् पतो नित्यनैभित्तिक्यान्तिकारेर्स-समामेन पर्युदामः सोऽनायतन इति नाम्यस्य सैवादिवत् प्रतिनियतस्थानिमत्यर्थः। दूतरानुपजीवतीति मासान्तरेषु चन्द्रसयहरिभ्यां तस्योपनमनात्। चाखसायनब्राह्मणं "प्राचां दिशि वै देवा सोमं राजानमकोणन् तसात् प्राचां दिशि क्रीयते त्रयोदयात्मासादकीयन् समाध्ययोदयो सामो नानु-दियते पापो हि सीमविक्रयोति"। यस्या यग्नयः यतोऽधिमासः सीमविक्रधी पतोऽसावितरमाधवसानुविद्यते विद्यमानोऽपि क्षमान इत्यादसमिवित्यर्थः सीमविक्रयपि ऋतिगमास्यत्। यत-एव पैठोनसः। "योतसार्शक्षयाः सर्वा दादमेमासि की तिताः। वयोदये च सर्वास्ता नियाला इति की चिता: ॥ तयाचयोदये मासि कुर्यात्तान कथञ्चन। कुर्वत्ररकमाञ्जीति कुर्यादासिना-शनम्ण ॥ सादये प्रकृते वयोदये मसमासे प्रव यगासमासस वयोदशत्वमुक्त तदगत्या य्युत्कमगणनेन प्रक्रतस्यैव चयोदगत्वं माइजिकं तथा च ''कवित्रयीदग्रेशि स्वादार्या मुक्ता तु वत्-सरम्" इति रहद्यपरिग्रिष्टे "ससं पदन्ति कासप्य सामं कास-विद्योऽधिकम्। नेहेतात्र विशेषेच्यामन्यतावग्रकादिधे." १ विज्ञवेच्यां वैयाखाद्यसंदिन विहित्यागम्। पार्यस्मात निरवकामात्। तथा च कालमाधवीये काठकरद्यापरि-शिष्टं "सहामयाष्टकायाहम्पाकग्रीदिकमी यत्। स्पष्टमास-विश्वाच्य विश्वितं वर्षयेकाने"॥ प्यष्टमास्वियेपेति स्व-वैगावादिमाधोसेषेन विश्वितमिलयः।

श्रय दीचाबातः। सा च समसासे न कार्या ययागस्य-संहितायाम्। "यदा ददाति सन्तुष्टः प्रसन्नददनो भनुम्। श्रयमेव तथा चैवमिति कत्तव्यताक्रमः॥ विश्रद्धदेशकालेषु गुडाला नियतो गुरु:। सङ्ख्योपोधकर्त्रसङ्गारोपणं सुने॥ कुर्यानान्दोसुखं त्राह्मादी च खस्तिवाचनम्। खग्टश्चीत्रप्रकारेण तदेतिहिदधीत वै॥ सधुमासे भवेद दुःसं माधवे रक्षमञ्चयः। सर्णमावति च्येष्ठे पाषाढे वसुनामनम्॥ समृद्धिः ग्रावणे नूनं भवेद्वाद्रपदे चयः। प्रजानामाधिने मासि सर्वतः ग्रभमेव हि॥ ज्ञानं स्यात् कार्त्तिके सीस्यं मार्गगीर्पं भवत्यपि। पौषे जानचयो माघे भवेनोधा विव-र्षनम्॥ फारगुनेऽपि विष्टतिः स्थामासमासं विवर्जयेत्। गुरी रवी दिने ग्रुक्ते कर्त्तव्यं बुधसीमयोः॥ अध्विनीभरणीखातीः विशाखाइस्तभेषु च। च्छेष्ठोत्तरं ययेष्वेवं कुर्यानान्ताभिषेच-नम्॥ शक्कपचे च कॅणो या दो चा सर्वसुखावदा। पूर्णिमा पश्मी चैव हितीया सत्तमी तथा। वयोदगी च दगमी प्रशास्ता सर्वकामदा। पञ्चाङ्ग शहदिवसे सोद्ये शश्वितारयोः ॥ गुरुगुक्रीदये गुष्टे सग्ने दादमगोधित। चन्द्रतारानुकूले च श्राम्यते सर्वेकर्मस्॥ स्यायद्वाकालेन समानी नास्ति कयन। तव यद्यत्कतं सर्वमनन्तफलदं भवेत्॥ न मास्तिधिवारा-दिगोधनं स्धापवीष। दहातौष्टं ग्रहीतं यत्तिमान् काली गुरोर्न्यु॥ सिष्धिभवति मन्त्रस्य विनाधासेन सध्यतः"॥ मनु मन्त्रम्। बहुरारोपणमागमप्रमिष्ठम्। ग्रहकालत्वं द्र्ययति। मधुमारेत्यादि। पञ्चाङ्गगुरुदिवरे तिथिवारनच्चवकरणयोगः गुहदिवसे। तथा च महाकपिनपञ्चरात्रम्। "एवं नस्तर-तिष्यादो करणे योगवामर। मन्द्रोपदेगो गुरुणा माधकष्य यमावड." ॥ सोदये ममितारयोरिति शत्मसन्द्राद्यतारयोराः

चुष्यमदिते गुरुशकोदये गुरुशकानस्तमये। एतस् समय-श्रुहान्तरो लक्षणम्। दाद्ययोधिते दाद्यांप्रयोधिते। स्नान-सालायाम्। "रविसक्तमणे चैव सूर्धस्य यहणे तथा"। तथा। "तव सन्ति हिंक कि श्विम विचार्ख कथश्वन"। तस्व-सारे। "यदैवेच्छा तदा दौचा गुरीराज्ञानुरूपतः। न तिथिनं व्रतं होमो न सान न जपः क्रिया ॥ दौचायाः वारणं किथित् स्वेच्छयाप्ते तु सद्गुरी"॥ सिदमन्त्रगुरी। दीपिकायाम्। "भ्वस्ट्रमस्वगणे रविश्वभवासरेषु सत्तिशी सद्गुरी दोचा खिरलाने श्री चन्द्रे केन्द्रे कोणे श्रमे गुरी धर्मे"। ध्रवाणि वी खुत्तराणि रोहिणो च। सटूनि चिवान्राधा सगिर्वा-र्वायः। केन्द्रं लग्नचतुर्धमप्रदशकम्। कीणं नपपञ्चकम्। धर्मी नवमः। वीरतन्तः। "रीहिणी अवणाद्री अधनिष्ठा चोत्तरावयम्। पुष्यः शतसिषाकेऽकी च दोचा नचत्रसिषतेणा यकी इस्तः। रक्षावत्यां "योगाय प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः योभनो पृति:। दृधिप्वः सुक्षमा च साध्यः गुज्ञच धर्पणः ॥ वरीयांस मिवः सिंहो ब्रह्मा दृद्ध पोड्य"॥ तथा "शुभानि करणानि सुरीचायाच विग्रयतः। शकुन्धादीनि विष्टिच विश्वयेष विवर्जयेत्"। शकुन्यादौनि शकुनिनागपतुष्पद किन्तुद्यानि। "क्षणोऽष्टम्यां चतुर्दस्यां पूर्वपद्यदिने तथा"। लचा लचायद्ये। कालोत्तर "भूतिकामैः सितं सदा"।

यय दौचायां प्रतिप्रस्वः। राघवभद्दध्तमारमगर्छ। "गिया-स्तिजमादिवसे सक्षाम्ती विद्युवायने। सत्तीर्घेऽकंविद्युप्रास् तन्तुदामनगर्वणोः॥ सन्त्रदौद्धां प्रकुर्वाणो सास्त्रदोद्ध ग्रीधयित्"॥ तन्तुपर्व परमञ्जरीपयोतदानितियः न्यावपौ पूर्णिमा। दासनगर्व दसनभञ्जनतिथियेवग्रह्मचर्दगौ। कूर्मपुराणे स्मिल्यं प्रति देवीवायम्। "यानि शासापि दृश्यन्ते लोकेऽस्मिन् विविधानि च। श्रुतिस्मृतिविश्दानि निष्ठा तेषां हि तामसी॥ करासमैरवद्यापि यामलं वाम-मात्रितम्। एवंविधानि घान्यानि मोइनार्थानि तानि तु॥ सया स्टानि चान्यानि सोहायैषां भवाणेविणा तसात् सिंद्धः सुतिस्सृतिविष्दे वर्मान न कदाचित् पद न्यस्वयम्। श्रायादिदुष्टमन्त्रप्रतीकारसु। "एषु दोषेषु सर्वत्र मार्या काममधापि वा। चिषा चादी सिधं ददात् तहू पणविमुक्तवे॥ तारसंपुटितो वापि दुष्टमन्द्री विगुद्धति। यस्य तत्र भवेद्वितिः सीऽपि मन्त्रीऽस्य सिव्यति"॥ सुवनेव्वरीपारिजातेऽपि । "मायावीनसमायुक्तः चिप्रं सिद्धिप्रदो भवेत्। पिण्डस्तु कैवलो मन्त्री सायावीजोड्यलीक्षतः ॥ सायावीजात् भवेत् प्राणो वीजञ्चेतन्यवीय्यवत् ॥ नारदीये। "यदच्छ्या स्रुतं । मन्तं सुद्रोनापि इंडेन वा। पत्रे चितं वा गाया घ तसुपेत्य लन्धेष्ठत्॥ प्रविद्य विधिवदौचामभिषेकावसानिकाम्। श्रुत्वा तन्त्रं गुरोर्ज्थः साधयेदीिसतं मनुभ्"॥ अन्यवापि। "देशिकानुग्रहादेव देवता व्यक्तरूपियो। गुर्वनुत्राः क्रियाः सर्वा निष्फनाः स्युर्थतो भुवम्"॥ नारदीये। "कुर्वनाचा-येशुत्रपां मनोवाक्कायकर्मभः। गुह्मवी महीसाही बोहा शिया इति रसतः॥ न तूपदेश्यः पुत्रस्तु व्यत्ययो वस्तु-दस्तथा" ॥ व्यत्ययो परस्परविद्यादायी। प्रयोगसारे। "तवरिष भक्तियुक्षाय पुत्राय वस्तुद्राय च"। अन्यवापि "यद्या देवे तथा मन्ते यथा मन्ते तथा गुरी। यथा गुरी तथा साला-न्येष मित्रक्रमः रमृतः"॥ पिद्वलामते। "नाध्यातौ नार्चितौ मन्त्रः सुसिरोऽपि प्रसोदति। नाजसः सिहिदो स्रोके नारुतः फलदो भवेत्॥ पूजा होमौ जपं ध्यानं तया कर्मचतुष्टयम्। मलहं साधकः कुर्यात् स्वयशेत् सिशिमिच्छति"॥ श्रीम- स्वरोत्तरे। 'चीर्णाचारव्रतो मन्दी ज्ञानवान् सुसमाहित। इद्यानिष्ठी यात खातो गुरु. स्वाद्वौतिको हि स."॥ एतानि राघवभद्दधतानि।

प्रध स्तीमुद्रयो प्रणवयुद्धन्ति । तृसिंहतापनीय ।
"सावित्री प्रणव यद्युर्वस्ती स्तीमुद्रयोनेस्हिन्ति । सावित्री
प्रणव यद्युर्वस्ती यदि स्तीमूद्रो जानीयात् स स्तीऽधीगस्हतीति" ॥ नेस्हन्तीति पर्यन्त परामरसाखेऽपि गोविन्दसहप्रतम् । "साहाप्रणवसयुत्त भूद्रे मन्त दर्दाहज । भूद्रो
निरयमाम्रोति ब्राह्मण् भूद्रतामियात्"॥

भय दोचितस्याग्रीचे लपाद्यधिकार । मन्त्रमुकावत्याम ।
"लपो देवार्चनविधि कार्यो दीचान्तितैनरें.। नास्ति पाप
यतस्तेषा सूतक वा यतात्मनाम्"॥ राघवभद्दधत नारदवचनम्। "भय सूतिकन पूजा वच्याम्यागमचोदिताम् ।
स्नात्वा नित्यानि निर्वर्त्यं भानस्याक्तियया तु वे ॥ वाष्ट्रपूजाक्रमेणैव ध्यानयोगिन पूजयेत्। यदा कामौ न चेत् कामौ
नित्य पूर्ववदाचरेत्"॥ यत्तु मृत्यिचकत्ये। सदा मन्त्रजयमुक्ताः
"यदि स्यादश्राचस्तव सार्वम्ब न तूचरेत्। मनो छि सर्व
जन्तुना सर्वदैव श्रुचि स्मृतम्"॥ द्रति तन्त्रू वोचाराद्यशौच
परम्। रामार्चनचित्रकाष्ट्रतमन्त्रीत्तरुपि। "धर्शाचर्वा श्रुचिवीपि गच्छिस्त्वम् स्वयन्ति। मन्तेकयरपो विद्वान्यनसैव
सदाभ्यवेत्"॥

भयागीचे विषाकी तेनम्। यथा 'चिकासुधस्य नामानि सदा सवत्न की त्येत्। नागीच की त्तेन चास्य स पवित्रकरो यत."॥ सवसारपदीये। ''न देशनियमस्तत्र न का लियम स्त्या। नी च्छिष्टादो निर्वेधाऽस्ति हरेनीमान लुक्षक"॥ तेन "नाग्र(चरेंवर्षियदनामानि की त्येत्"। इति विषा नामातिरिक्षपरम्।

अधाधिमासे विवाहादिनिषेषः। भीमपराक्षमे। "प्रिधि-मासे विवाहं यावां चुडां तथोपनयनादि कुर्धास सावकार्यं भाइ खंग सु विशेषेच्याम् अत्र विवाहादिकी तेनं निरव-काशवेऽपि निपेधार्थम्। पत्थया सावकाश्रमित्यनेनैव सिहेः। सावकाश्रध समावकासानानारं कमी हती निर्धकाश्रयानन्ध-गतिनस्य प्रतिप्रस्वोऽर्थात् स्चितः। तथा च मलमासाधि-कारिकारकारहाम्। "कालिऽनन्यगतिं नित्यां कुर्यामैमि-तिकों क्रियाम्"। द्वष्टसातिः। "नित्यनैमित्तिके कुर्यात् प्रयतः सन् मलिक् चै। तीर्यसानं गलच्छायां प्रेतत्रशसं तयैव च"॥ नित्यमस्रहः पुरस्कारविहितं सानस्व्यापसमहा-यज्ञादि। काम्यमपि तथाविधसङ्गल्पतयत्विश्विद्रव्यदानिश्वन-पूजादि। व्यक्त भविष्ये। "कुर्यात् प्रात्य हिकं कमें। प्रयत्नेन मलिखुषे। नैमित्तिषञ्च कुर्वीत सावकाण न यइवित्"॥ न च नित्यपदं यदकर्णे प्रत्यधायस्तरप्रम्। तथात्वे गज-च्छायाप्रेतयाद्यविष्यदानं ध्यर्थं स्थात्। तथा च काल-साधवीये मत्यपुराणम् "वर्षं वाहरहः चाहं दानस् प्रति-वामरम्। गोभूतिनिद्दरखानां मासेऽपि खानासिस्त्चे ॥ एवर्च "दातव्यं प्रत्यन्न पावे निमित्तेषु विशेषत." इति याञ्च-वल्काोशं सङ्क्ष्यि। काठकग्रद्यपरिश्चिम्। "प्रहत्तं मसः सामात् प्राक्यत् कर्मा न समापितम्। चागते सनमासेऽपि तत् समाप्यमसंगयम्"। अधासिदान्ते। "भारथं वसंगयत् कि चित्तत् कार्यं दि मिलाजुचै"। नैभित्तिक मासदिनसंवस-रादिविग्रेयनियमगुन्यावस्यकत्तेव्यकादाचित्किनित्तीत्पत्रम्। णत्याचारमाधमोचे वीधायनेनास्यागन्तुकालेनोपादानमक-रणे दोपाभिधामञ्च छतं यथा "यस्य निल्वानि सुप्तानि तथै-वागम्यकानि च। विपद्पस्तोऽपि न स्वर्ग गस्ट्रेस पतितो सि

स"॥ तचाभ्यद्यिकादि। "नैमित्तिकमयो वच्ये याह-मभ्यद्यार्थकम्। पुत्रजन्मनि तत् कार्यं जातकर्मसमं नरै:" इति माकग्डेयपुराणात्। चन्यटायेवं नातकर्भसमसित्यनेन नाडीच्हेदात् प्रागपि कर्त्तव्यतोज्ञा। अध्यद्यार्थकम्। अभ्य-द्यप्रयोजनकम्। तथा च शातातपः। "पूर्वाह्व दैविकं साह्र" कार्थमभ्यदयार्थिना"। तेनावात्मश्रद्पयोगी सान्तानामिति। जातकर्माद्यपि सलमासे कार्य्यम्। 'जातकर्मान्यकर्माणि भवयाहं तथैव च। मदाक्षयोदगौयाहं याहान्यपि च षोड्य ॥ चन्द्रसूर्थयही स्नानं याह्रं दानं तथा जपम्। कार्याण मलमारेऽपि नित्यं नैमित्तिक तथा"॥ हेमाद्रि-साधवाचार्यपृतयमवचनात्। मघावयोदयौषाद्यस्य सन्-भागकर्तव्यतायां निरवकायत्वं वीज तद्ब्हीयमामान्तरे तद्-लाभात्। यस् गर्भवचनम्। "नामात्रप्राधनं चौडं विवाहं मीष्डिवस्थनम् निष्क्रमम्। जातकर्मापि काम्य द्वषविसर्जनम्। अस्त गते गुरी मुक्ते बाले हर्षे मलिक्त्वे। उपायनमुपारमां व्यतानां नैव कारयेत्"॥ उपायम प्रतिष्ठा। तस्रामकरणात्र-प्राथननिष्क्रमणजातकर्मणां प्रधानकानाकृतानां वेदितव्यम्। तदाइ सु एय। "नास कर्स च जाते हि ययाकालं ममाचनेत्। त्रतिवातेऽवि कुर्वित प्रशस्ते मासि पुर्खदे"॥ स्मृति:। "याह-जातकनामानि ये च संसारमाश्विताः। मिलख्नेचेऽपि कर्त्रवा काम्या इष्टोख वर्जयेत्"॥ सस्कारमायिताः अवप्रायननिष्का-भणाद्यः। इति माधवाचार्यः। अन्यकर्माणि वद्यनदद्य-मोरकरामिपाइदामास्यिसख्यमादीमि । नवयादं "चतुर्यं पञ्चमे चैव नयमैकादये तथा। यदव दौयते जन्तोस्तवव-चाह्मस्यते"॥ इति यमोक्ष तत्र चतुर्घाटिग्रहणं सर्वदिना-वधीति। योडगयाद्यानि तु। "दादगप्रतिमास्यानि पाद्यं

पाग्मासिके तथा। सपिगङीकरणचैव दखेतत् यादपीड्शम् इति कर्भप्रदोपीकानि। ननु सनसासे क्षते सपिगड़ोकरणे किमिति प्रक्षते मासि प्रतिमांवसिविकं न क्षियते। इति चैन ''पूर्णसवसरे खाद पोष्टश परिकीर्तितम्। तेनैव च सपिग्डलं तेनैवाब्दिकमिथाते"॥ इति हिमाद्रिष्टतवचनात् । सर्वत् क्षते क्षतः शास्त्रार्थं दति न्यायाचा । एवमपक्षव्य सपिग्डीकरणे स्ताहे प्रत्याब्दिकं न कियते। सपिगडीकरगेनैव प्रत्या--ब्दिकसिंहे:। यतएव याज्ञवल्केत्रन। "सृताष्ट्रित कर्त्तव्यं प्रतिमामन्तु वसरम्। प्रतिसंवसर्चेषमाद्यमेकाद्येऽहर्नि ॥ प्रतिसवत्सरं आहं वर्त्तव्यमिति मामान्येनोन्नम्। नत्वेको-हिष्टविग्रेषेणेति साम्बादिभेदेन याष्ट्रस्य नानात्वात्। एतेन सिपिक्डोकरणापकर्षपचे वर्षान्ते सांवसिर्कं कार्यं बाधका-भावादिति श्रोदत्तवाचस्पतिमिश्रोक्षं हैयम्। बालग्रहभूतः त्रष्टनराधिपप्रवस्तरश्रवुदुःसहरोगाभिभवाइ त-दुःस्रप्रग्रह्दैः-ख्य।दिनिमित्तकं श्राम्तिकर्मापि ससमारे कर्त्तव्य विष्णुनापि। "शान्तिसस्ययनैदैवोपघातान् शमयेत् परचक्रोपघातांस्र" द्रखुक्षं मसमामेऽपि कर्त्तव्यम्। ग्रह्षकालपतीचायामसहत्वे-नानन्यगतिकत्वात्। श्रतण्व "श्रातानं सततं गोपायीत" इति युतौ सततमुक्तम्। यददौ.स्यफलपाकमाद मार्कण्डेय-पुराणम्। "द्रव्ये गोष्ठेषु भत्येष् सृष्टत्सु तनयेषु च। भाव्यायाः ख यहे दृष्टे भय पुर्णवतां नृणाम् ॥ स्नातान्ययास्पपुर्णानां मर्ववेदातिपापिनाम्। नैकवापि द्यपापानां नराणां लायते भयम्"॥ तदयमधः। यस्य दौषेनौवनादिननक बनवत्-पुरामस्ति तैन तमारणाद्युन्मुखमपि दुष्कर्मप्रतिष्ट्यते तत्राति-इतं मत् तत्पुवादेस्तत् प्रतिघातक पुर्वः नास्ति प्रत्युत तदनु-गुणमेव पापमस्ति तव त हिला तत्पुवादेः पौड़ामावहतीति।

मह्च नरहापरिभिष्टम्। ''यथा भस्तप्रसाराणां कवसं विनि-वारकम्। एव देवीपघातानां शान्तिर्भवति वारणम्"॥ गान्तिर्धर्महारा ग्रह्दौ:स्यदु.स्वप्नादिस्चितेहिकानिष्टहेतु-दुहि-तनिव्कत्तिः। स्वस्ति धर्माद्वाराभिप्रेतार्थसिद्धिः तस्यायनं प्रापकं यागदानादिमङ्गलङ्गेतुगोरीचनादिद्रव्यधारणम्। भागीर्नि-मित्तभूताभिवादनानि च। यथा कल्पतरौ यमः। "यभि-बाद्येत् यः पूर्वमाधिषं न प्रयच्छति। तद्दुष्क्वतं भवेतस्य तसाद्वोगं प्रपदाते॥ तसात् पूर्वाभिभाषी स्थाचारङालस्यापि धर्मवित्। सुरा पिवेति वज्ञव्यमेव धर्मी न लुप्यते ॥ खस्तीति ब्राह्मणे व्रूयादायुष्मामिति राजनि। वर्षतामिति वैद्येपु बारोग्यमेव च"॥ स्वस्तोति प्रत्यभिवादनेतरपरम्। अन्वंदिविरोधात्। "यत् सुखं विषु सोकेषु व्याधिव्यसन-वर्जितम्। यस्मिन् सर्वे स्थिताः कामाः सा स्वस्तीत्यभिसंत्रिता"। त्राशियः महातत्वात् सा यागौः। यद्भिराः। "यमणामहति शूट्रे खस्ति क्वर्वित्ति ये दिजाः। शूद्रोऽग्रे नरकं याति नाह्यण-स्टनसरम्"॥ वाद्वाण इत्यनुष्ठती मिताचरायां हारीतः। "विविधसामिषादनेऽहोरावमुपवसेदेव वैश्वस्यापि शूद्रसामि-वार्ने तिराचमुपवसेत्" इति। श्रहोरावाद्यपदामयवणा-न्यन्तरोक्तविप्रदशकनमस्काररूपसञ्जपायित्तन्तु प्रमादादि-विषय स्त्रमक्षतमसङ्गतविषय वा। यथा मनुः। "यदि विप्रः प्रभादेन शूद्रं समभिवादयेत्। घभिवादा द्या विप्रास्ततः पापै: प्रमुखते" ॥ स्मृति: "मातु: पितु: कनौयांस न नमेदय-साधिकः। नमस्कुर्याद् गुरोः पत्नीं स्नाष्टजायां विमातरम्" ॥ म्सृत्यर्थसारे। "स्थियो नमस्या द्वहाय वयसा पत्युरेव ता."। यतः पत्युर्वयसा ता स्त्रियो द्वदाः चतः कमिष्ठा चिप नमस्याः। तवाख्यवन्दने इलायुष्ट्रतम्। "चचु.सन्द भुजसन्दं तथा

दु:स्वप्रदर्भनम्। शवणाञ्च समुत्यानमखत्य ग्रम्यागु मे।। चम्बस्यरूपी भगवान् प्रीयतां में जनार्दन। दृष्टा तु दूरतः पापं सप्टा नच्मोविवदंते॥ प्रदक्तिणे भवेदायुः सदाश्वय नमोऽस्तु ते"॥ आन्तिखस्यनयोः शूद्रस्याध्यधिकारः। तथा च चिषपानकारिकाधां "सात्तं ग्रुष्टः समाचरेत्" दति भविष्यः पुराष्यचनञ्च। ''चतुर्णासपि वर्णानां यानि प्रोन्नानि श्रेयसे। धनीशास्ताणि राजेन्द्र मृणु तानि नृषीत्तम्॥ विश्रीपतथ शूट्राणां पावनानां सनौधिभि:। श्रष्टादशपुराणानि चरितं राधवस्य च ॥ रामस्य कुरु शार्ट्रन धर्माकामार्थसिषये। यथोर्क भारतं घोर पराश्रर्धीय भीमता॥ वेदार्थं सकलं योज्य धमांशास्त्राणि घपभी"॥ तस्य संस्कारमाष्ट्र यमः। "शुद्री-ऽध्येवविधः प्रोन्नो विना सन्त्रेण सस्यतः। न केनचित् सम-स्वत् छन्दमा तं प्रजापतिः"॥ तं शुद्धं अध्यय्याणम्। "विवाहमावं सस्कार श्रूदोऽपि लभते मदा"। सावश्रद्धोऽव न विवाहेतरसंस्वारनिवत्तंकपर: किंग्वन्यव सम्बस्बन्धः निषेधपरः। यसवचनेन गर्भाधानादिमस्कारप्रतिषादनादिति शूनुपाणिमश्वामशोपाध्यायाः। "धार्पक्रमेण सर्वत्र शूद्रावाजः मनेयिनः"। रति महाजनपरिग्रहीतवचनाषु यञ्जेद्धिध-नैवते कमी क्यां:। पुराणान्याह विष्णुपुराणम्। "ब्रष्टादश युराणानि पुराणझाः प्रचचते। बाह्यं पाद्मं वैयावस्त्र शैवं भागवत तथा॥ तथान्यवारदीयच सार्कण्डेयच सप्तमम्। चारनेयमध्यचि भविषं नवमं तथा ॥ दशमं ब्रह्मवेवसं सेत्र-मेकादगन्तया। वाराष्टं दादगञ्जेव स्कान्दञ्जात चयोदग्रम्॥ चतुर्देशं वामनयं कोमं पचदशन्तया। सात्यच गार्डचेव घटा। एट राततः परम् ॥ कोमें "चन्यान्युपपुराकानि मुनिभः षिधान्यपि"। तानि च नर्सिसनन्यादित्यं कालिका- पुराणादीनि यथा "भाद्यं सनतकुमारीत्रं नारसिंहं ततः शिवधर्माखं साचान्नन्दीयभाषितम्। दुर्वासम्रोक्षमायर्थं नारदीयमतः परम्॥ निन्दिकेश्वरयुग्मञ्च तथैवीसनसेरितम्। कापिसं वार्णञ्चाय कालिकाह्यमेव च॥ माहेखरं तथा शास्त्रं देवं सर्वार्थिमिडिदम्। पराश्ररोक्तमपरं सारीचं भास्त-राह्यम्"॥ देवं देवीपुराणं तेन दिज्ञातिविधितविधेपकर्मे-तर्यकल्यानेकर्मण शूद्रशाधिकारः। अतएव भारते शानु-शास्त्रिक पर्वणि "धिव्विसकाग्रभाचारो देवता-दिजपूजक:। शूद्रो धर्मफर्नेरिष्टै: स्वधर्मेरेव युज्यते"॥ श्रतएव शूद्रानुहत्ती मनुः। "धर्मेस्वस्त धर्मद्राः सतां हित्तमनुष्टिताः। मन्दर्वजे न दुष्यन्ति प्रशंमां प्राप्नवन्ति घ"॥ ये पुनः श्रुद्राः खधर्म-धर्मप्राप्तिकामास्त्रैवर्णिकाचारमानि विद्यमाश्चितास्त्रे वस्यभाण नमस्कारितरमन्यरहितं कर्मं कुर्वाणान प्रत्यवायिनः ख्यातिभाजस भवन्ति एवमेव कुलूकभट्टः। तथा "धर्मोपदेशं दर्पेण विप्राणामस्य कुर्वतः। तप्तमासेचरीतीलं वक्ते योवे च पार्थिवः"॥ तथा "शत्तेनापि हि शुद्रेण न कार्यो धनसद्यः। शूद्रेऽपि धनमामादा वाह्यणानेव बाधते"॥ शूद्रस्य पूर्ताधि-कारमाह जातूकणः। "वाणीक्षपतड्रागादिदेवतायतमानि च। सन्वदानमारामाः पूर्त्तमित्वमिधीयते" ॥ भारामः पुष्प-फरोपचयहितुर्भूमागः। "श्रामिष्ठीचं तपः सत्यं वेदानाष्ट्रानु-पालनम्। पातियां वैखदेवय इष्टमिलाभिधीयते॥ यहोप-रारी यहानं पूर्त्तिस्यभिषीयते। इष्टापूर्ते दिजातीनां धर्मः मामान्य एचते। पधिकारी भषेच्छूद्रः पूर्ते धर्मे न वैदिके" ॥ वैदिने वैदाध्ययनसाध्ये। शामिश्रोवादाविति रवाकरः। एवं स्तोणामपि पूर्ताधिकारः। यथा नारीत्वतृष्ट्रतौ ष्टइस्रतिः।

"पिट्यगुषदी हिवान् भन्: स्रसीयमातुलान्। पूजयेत् कव्य-पूर्ताभ्यां व्रहानाषातियीन् स्तियः"॥ एतेन जलागयोक्सर्गे मोरवतरणानुसन्त्रणयोर्घनमानकर्नुकमन्त्रपाठः तवामस्यक-तया स्तीशूद्योरनधिकारेण तहति यागीऽप्यनधिकारः। विगी-षोपदेशविरहादिति हेतनिर्णयोत्तं निरम्तम्। चतएव तयो-र्जसाययोक्षर्गादियशयद्भवेदौ-श्रीमादिसमाचार:। अत श्रीमो वश्ची न साचात् कत्पतस्य द्वाकरधृतापम्तस्यवचनात्। तद्यथा सारनवणाद्यपक्षस्य "तस्तमसुतक्षामी न स्त्री जुद्धयामानुः पेतः" इति चनुपेतः चनुपनीतः किन्तु वाञ्चणदारा करणीयः। "त्रीतसार्त्तियाहितोर्ह्रगुयाद्वितः स्वयम्" द्रित याच्चवस्क्रोन्ने:। "ऋत्विकादे नियुक्तो च समो सम्परि-की तितो। यन्ने खाम्याप्रयात् पुष्यं द्वानिं वादेऽय वा लयम्"॥ द्ति ष्टुष्यत्मृतः। वैदिकेतरमन्द्रपाठे मुद्राहरप्यधिकारः। वेदमन्त्रवनं ज्ञूद्रशिति छन्दोगाञ्चिकाचारचिन्तामणिष्टतरस्तौ वेदेति विग्रेपणात्। "शूद्रोऽप्येवविधः प्रोत्तो विना सन्तेप संस्ताः। न केनचित् समस्जत् कृन्दमा तं प्रजापति." इति यसस्यती कन्दमा विदेश इत्युत्तीय। तं शूद्रम्। पश्चयञ्चलान त्राहेषु वैदिवेतरसन्वोऽपि निपिष्टः। शूद्रमधिक्रत्य। "नम-कारेण मन्तेण पश्चयद्वाय राष्येत् रति याद्ववस्त्रीयेन। "बद्यचन्नविशाभिव सन्ववत् खानस्यते। तूर्योमेव हि शृद्ध्य सनमन्तारकं सतम् इति योगियाश्चरक्रोयेन श्वाह-मधिष्ठत्य "पर्यमेव विधि: प्रीतः गुद्राणां मन्द्रवर्जितः। भम-न्यस्य तु शुद्रस्य विद्यो सन्तेष सम्बद्धि हित वराष्ट्रपुराणीयेन च नमस्कार्षेति तुण्होिमिति सस्वर्जित इत्विभिधानात्। पमिषुकामां अस्वोध्यसिति समाध्यानं सन्यन्नचयमिति माधवाषायः। एवध "त्रावयेषत्री वर्णान् कत्वा झाष्ट्राय-

मगतः। वेदस्याध्ययनं द्वीदं तच कार्यं सदत् सातम्"॥ दति सोचधर्मीतां वेदस्य गूद्रयावणमधेति दिष्यम्। भूदस्य पुरा-षादेरमध्ययमधिधमाष्ट भविष्य। "मध्येतव्यं म चान्येन ब्राह्मणं चिवियां विमा। योतधामिष शूट्रेण नाध्वेतधां कदाचन । तथा 'आञ्चाणं वाचकं विद्यास्न्यवर्णनमाद्रात्। युवान्यवर्णजाद्राञ्जन् वाचकावारकं व्रजित्र ॥ तथा "ग्रयार्थे बुध्यमानसु ममपं क्षत्सगो नृप। ब्राह्मणादिषु वर्षेषु पर्ययन् विधिषवृष ॥ य एवं वाधयेद्राजन् स न्नेयः सान्विको वुर्धः"। तया "सन्यज्य सर्वकर्माणि भक्तिश्रदासमन्दितः। सततं पूजयन् यस्तु वाचकं यहया नृष । नित्यनेमित्तिके कार्ये गुरवे च दहत् मदा। य एवं शृष्याद्वीरः स जेयः मास्विको बुधैः"॥ शुरवेच इत्यव वाचकायेति। काम-घेनुकरणतदः। वाराष्ट्रे भयमेवेत्यस्य भूद्रमात्रनिष्ठत्वे भूद्रस्वे-त्यनेनैव सिंहोरमन्त्रस्थेति विशेषणं यावदमन्त्रस्थापार्ये परि-भाषार्थेश्व तप्तथामन्द्रकर्म्कत्राह्योमदानादिःकर्ममम्बन्धि-मन्त्रेण विष्रो स्टहाते सम्बध्यते । स्तियास्वमन्त्रकता "पमन्त्रा हि स्त्रियो मता" इति शहिरहाकरप्टतवीधायनवधनात्। घनुपनौत्रस याद्यातिरित्ते भन्यपाठनिपेषमाद मनुः। "ना-भिष्यास्य येद् यक्ष स्वधानिनयनाष्ट्रते। जूद्रेष दि समस्ता-वद्यावद्वेद्दे भ कायते" । स्वथा नादं तिवनीयते मध्याद्यते चेन अन्य प्रातिन सन्धात् तेन स्रोगूद्रानुपनीतानां सर्वक्याणि द्रश्रदेवतानुष्ठामादिदृष्टप्रयोजनप्रकामाय याद्वदेन मन्द्रः पठ-नीय:। सन्यवादत्रम्यादृष्टसिद्दिनस्कारेच यदा हुद्दस्यति:। 'गोचं याद्याच्याया सत्यमकोध एव च। मूटकर्म तथा सन्तो नसस्तारीऽस्य दर्शितः" । गृदाधिकारे गोतमः। "पन्-सती। या नमस्तारी सन्दः "इति। यदं ससमाधि प्रायधिनः

मपि निरवकाशनैमिक्तिकत्वेन कर्त्त्रथम्। "विदितस्थाननु-ष्ठानाविन्दितस्य च स्वनात्। प्रायिश्वतं यत् क्रियते तसेमि-तिकमुचर्ते"॥ इति हृहस्यस्काः। अस्य च निरवकाशस्वम् श्रनारखप्रायश्वित्तस्य भुष्त्वानस्य पापहर्षः। तथा चाहिराः। "क्रते नि:संग्रये पापे न भुज्जीतानुपस्थितः। भुज्जानी वर्षयेत् पापमसत्यं पार्पाद भ्रवन्" ॥ अनुपश्चितः परिपदित्यर्थः । अतएव दत्तः। "नैमित्तिकानि काम्यानि निपतन्ति यथा-यथा। तद्यातयैव कार्याणि न कासस् विधीयते"॥ नैमि-त्तिकानि काम्यानोति समानाधिकरणम्। निमित्तात् यह-दो.स्यद्:खप्नादे: कत्त्वालेन प्रतीतानि नैमित्तिकानि निमि-त्तस्चितदोषशास्तिकामनया क्रियमाणानि तान्येव काम्यानि न कालसु विधीयमे इति छद्गयनग्रक्तपचदिनपूर्वभागादि-रूपः कालो नागुरुध्यते। तेन एतदासिविक्तो दिख्यायनादौ निन्दिते मिलिक्तुवादी च प्रान्तिकां कर्त्तव्यमिति। प्रान्तिका-पौष्टिक कस्पतरः। तथा दक्षमष्टिष्ठरण्यस्यादानं स्रोयत्व यवगादारधदानसभादकलाञ्च सत्तमारेऽपि तद्येयम्। तथाच विष्णुपुराणम्। "प्रमादतस्तुतस्रष्टं तावसात्रं नियोजयेत्। भन्यया स्त्रेययुक्षः स्वाह स्त्राद्ते विनागिनि ॥ द्वाष्ट्राणायी-जुष्टं प्राध्यसादसत यदि चौरादिनापष्ट्रियते तदा तावदेव पुननतमुक्य देयमिति दामसागरः। युत्तद्वेतत्तदिखनेन यूर्व-यचनीपात्तदत्तानुकपीत्। तदाद्या 'तसात् सर्वाक्षना पावे देवात् कनकमुत्तमम्। प्रपाद्ये पातयेद्वतं मुवर्णं नाकाणवे"॥ किञ्चान्ययेत्यमेनेवादान प्राप्ते त्वदस इति पुनरपादानं व्यये म्यास् । एतेनानुस्रष्ट्रिमनाधीऽपि तावदुस्रुख्य देयसिति म्तरोऽपि साम्पदायिकासु। सबैद्य एव सद्दीचात् प्रायश्वितः-

भाषरस्ति तेयां वाक्यम् । श्रदा प्रभादनष्टि इस्यतुल्य हिर्ण्या-प्रदानजम्यपापसमपापानुत्पत्तिकाम इदं प्रमादनष्टि इस्यतुत्व-हिरएशित्यादि दिचिणा च असानाते प्रमादनष्टानन्तरम् उत्-सष्टाप्रतिपादितेति विश्वेषः। वृष्टस्यतिः। "निखनैमितिके कुर्यात प्रयतः सम् मलिस्चि । तीर्यस्नानं गजक्रायां प्रेतयादः तयेव च"। तौर्यसानमाष्ट्रतम्। भनाष्ट्रते निपेधस्य वस्यमाण-त्वात्। गलक्शयापदं तहिहितकभूपरम्। गलक्शया वरा-ष्ट्रीका। "संहिनेयो यदा भानं यसते पर्वसन्धिष्। गलच्छाया तु सा मोता तब चाह प्रकलायेत्"॥ सब च राहुवें हस्ती-भूला चन्द्रमसं यसतौति युतिर्मूलम्। स्थ्यग्रहे चन्द्रयासस्या-वश्यक इति सूलसू सिनोविरोध इति सैथिला:। तथा च विण्-धर्मेतिरे। राष्ट्रं प्रति भगवद्दाकाम्। "पर्वकाले तु संप्राप्ते चन्द्राको छाद्यियसि। भूमिच्छायागतरान्द्रं चन्द्रगोऽसं कदाचन ॥ मंच्छाद्धिष्यसि यदा तदा भावभवाष्ट्रासि। स्नाने लणे तया होमे दाने याहे सुरार्चने। पुखः स कासी भविता नित्यमिषासुरेखर' ॥ नित्यं मलमासादिप्रतिविदकानेऽपि। वन्तुतस्त स्य्यप्रहेऽपि साचात् श्वतरिन्त । तया च समय-पकारी करवाद्याणम्। "इस्ती वै भूत्वा खर्मानुरंश्वीसरादित्वं त्रममा पिद्धातीति। प्रमावास्यां गते सोमे छाया या पादाखी भवेत्। यजच्छायातु माप्रोक्षात्रय यादं प्रज-स्वते"॥ इति वचनात् धमावास्यायादं मनमामः विकार्यं रित सैधिनोजं देयम् एतद्पण्य यद्यमाचलात्। एव मधापुराणोत्रमञच्छायायोगी न यद्यते कत्यामसमासे वयो-दग्यां चित्रायामय र्वेश्वस्थानेन तद्मभात्रात् म च ''योगो मधावयोद्द्यां कुद्धारक्दायधितः। भवेक्यवायां मस्ये त गगिनार्के करे स्थिते" । करे हसायां तत्स्ये सूर्ये । मधामंस्ये

चन्द्र चेति मचालयोदया कुझ्रच्छायम् जितो योगो मवति। इस्तावस्थानस्य स्थास्य कन्यादशमाशोत्तरिकस्थिदधिकमपाद वयोदमाम यावत्। न चानेम कुन्नरच्छाययोग सङ्घतिती न तु गनच्छायेति वाचा कुल्लरच्छायस्य गनच्छायादिका मजा जाता प्रवेतीतचप्रत्ययेन गजच्छायाया प्रिय मङ्गितित्वात् धुस्र वानकाद्वय दतिवत्। व्यन्त कत्विचिन्तामणी। क्षणापचे वयोदया मधास्विन्दु कर रिव। यदा तदा गजच्छाया आहे पुरुवेरवाधते"॥ न च मघावयोदम्यामित्यनेनेव भिन्ने मंघाया सस्वितेत्यधिक्षमिति वाच्यम्। मघावयोद्यामित्व तावनात्रीसेसियरकादग्रिशि मधायोग कालालरेशिय योग खात् अतो मदाया वर्त्तमानलाध मदाया सस्ये ग्राथिनीत्युस ति एतदस्त कि मघावयोद्यामिखव मघापदीपादानिमिति याद तेनापि वार्त्तवा तैस्तैद्रेयी सुमिर्द्वते । वयो दश्या प्रयत्नन वर्षासु च भवासु च ॥ दात ब्रह्मपुराणीय वचनान्तर्ख विधिवाकाप्राप्त याद्यानिमत्तीभूतमधावयोदया मेव फलातिगयाय कुद्धारच्छायास्ययोगो भवतीति न निमि त्तान्तरम् इत्यतदर्धमव हि अतएवोक्तवचन याहे पुर्धेरवाध्यते ध्लाक न तु यादाय निमित्तालारीमात तया चाधिकरणमा लाया कान्यो गुण त्रयमाणी नित्यमर्थ विद्यातामिनिविद्यते द्रित न्यायाद् यथा गोदोध्युणौ नित्य चमसमाधनकमपा मण्यन विक्रत्याभिनिविश्वत दखुक्त नतु गोदोहेन मण्य नान्तरम्। तेन यहा कत्यादशमाशापराह्ये मधावयोदशौ लाभस्तदा तत्परदिने तल्लाभेऽपि न कुष्तरच्छाययोग पूर्वादन एव मवावयोदगोत्राद्वविधानात्। तथा च गृह्यपरिशिष्टम्। "ययाम्त सविता याति वितरस्तासुपासते। तिथिन्तेम्यो उपराह्यो हि स्वयन्द्रस स्वयम्बा"॥ एतेन कपानाधिकरण

चायादुभयदिने मध्याञ्चलाभे पूर्वदिन एवैकोहिष्टयाहिमिति मैथिलमतमपास्तम्। धन्यथा श्रापराह्मिक्षिष्टसत्येऽपि तद्यायात् पूर्वदिन एव साभे ययास्तमिति वचनमनर्थकं स्यात्। न चैतद्वचनमेव तथायमू चिमिति वाचाम्। चपराह्यो होति स्रोक्षहित्रमिवगदेन पिष्टक्षत्ये तत्रायानयकायात् तस्रादाप-राश्चितरयाहेऽपि "शक्तपचे तिथियश्चि। यसामध्यदितेः रिवः। क्षणापचे तिथियोद्या यस्यामस्तिमतो र्वावः"॥ इति विष्युधर्मोत्तरवचनादेव व्यवस्था। तथा च कानमाधवीचे व्यामः। "द्वितौयादिकयुरमानां पूज्यता नियमादिष् । एकी-हिटादि हदादी द्वामहद्यादिदेशना"॥ एकोहिटादि व्ह्यादौ एकोहिष्टादि निमित्तौभूतिर्धिवश्रिषस्य वृद्धादौ। द्वासहदो चन्द्रस्य ताभ्या गुल्लक्षण्यचौ सस्पेते। पादिशस्दा-दापराहिकविव्हालेऽम्तगामिन्येय पूर्वीक ययास्तमिति यप-नात्। एवश यादे निमित्तान्तरत्वेनानद्वीकाराहीसीय-मैथिलाभ्यां कुञ्जरच्छाययोगः फलातिययार्थं रत्युक्तम्। तत्रय मधावयोदगो याह एता परदिने कुधरच्छाययोगे याह कसम्बाधित याच्यातिभियोशं हैयम्। एवच सद्यपुराणे तेस्तेद्वी: सुम् चितिरित्वभिधानात् गुणवित्रिपे फनविशेष: म्यात् इति न्यायाध यक्तिश्विमधुनाभित्रमिति वधमाधाः "पोष्ठपद्मामतीतायां सघायुक्तां सर्यादशीम्। प्राप्य याद् हि वाहां द्यं स्थुना पायमंन च"॥ इति गह्यस्नाटो पाय-माभिधामं दानातिगयार्थम्। यतण्य श्राप्तामपेन दितर. स्प्रधम्ययमप्रकासु सधासुष। समाह्यात् सदोद्युर्भो विद्यम् साधारेषु च" । द्रायक्षायसारम्हम्। सनुनारिः "यक्तिचिक्षपुना मियं प्रदेषात्त्र वयोदगोम्। तद्यस्य भेव स्वाद्यांमु प सघास प"। इत्य यहिर चिदिलुकम्।

यिकिश्विदिति यप्रतिषिद्धमिति कुत्रुक्तमदः। यात्रवस्योग-नापि। "यहदाति गयास्यस सर्वमानन्यमश्रुते। तथा वर्षाः वयोद्ग्यां सघामु च विशेषतः"॥ इति तथा वर्षावयोद्ग्यां मघात्रयोद्यां विशेषती मघानच्ययुतायां तस्यां यत्किष-द्येयते तत् सर्वमानन्यमश्रुते इति मिताचरा। देवलेनापि "ततोऽनं वहुसंस्कारं नेकथाञ्चनवन्नरः। च्यपेयसमृश्रध यदावद्पपादयेत्"॥ इति समुख्य छन्नो न व्रोहि यववहि-कलः। गुणप्रधानयोः समुच्यस्यैव युक्तत्वात्। भतोऽत्र शूद्राणामप्यधिकार:। पविभन्नानामपि पृथक् मधावयी-द्यां याद्यमावय्यकम्। यथा क्रत्यचिन्तामणी। "विभन्ना यविभन्ना वा कुर्यः याद्यमदेविकम्। सघासुच तथान्यव नाधिकार: पृष्यग्विना" ॥ चदैविकं प्रत्याब्दिकेकोहिएम्। यन्यव कृषापचादौ नाधिकारो न नित्याधिकार:। "सपि-पड़ीकरणान्तानि यानि यादानि पोड़्य। पृथड्नैव सुताः कुर्युः प्रथग्द्रव्या भपि याचित्र द्रायतापिना समुचिता प्रथक् द्रव्यस्य पुसः। सपिण्डोकरणान्तानौति विशेषणात् तद्त्रर-याहानां फलातिगयार्थलेन प्रयम्तं प्रतीयते। ७वच याहाय विधिवाको प्रौष्टपदा्ह्य सघात्रयोदग्रीशुल्या अर्थवादात् केषल वयोदगौयाडं निरस्तम् चर्यवादेन क्षुप्तविधिसभावे तदनु-गुणैव स्तृतिः क्रियत इति मघावयोदगौद्याद्यो तु पुववता पिण्डा न देयाः। "भौजङ्गों तिथिमासाधा यावचन्द्राक्षेसङ्ग-मम्। तवापि महतौ पूजा कर्त्तेच्या पित्रदैवते। ऋघे पिग्डमदानन्तु च्योष्ठपुत्री विवर्जयेत्" इति देवीपुराणात्। भोजदी पद्यमी चन्द्राकंसद्गमोऽमावास्या पिखदैवते मघा-याम्। एवद्यापिएइकेन मघात्रयोदग्रीयाद्वेन सपिएइकस्था-प्यभ्वयुक् क्रणापचन्यादस्य सिहिलीघवात् अपिग्डकेऽपि

पिगडाङ्गानामपि निवृत्तिः। प्रधाननिवृत्तायङ्गानिवृत्तेर्युत्त-लात्। अतएव हेमाष्ट्रिनव्यवह्मानप्टतप्रातातपवचनम् "पिएडनिर्वापरिहतं यत् याद्व विधीयते। स्वधावाचनलो-घोऽव विकिरस्त न लुप्यते । पश्चय दश्चिणा स्वस्ति सौमनस्य तथास्विति"। इति भविष्यपुराणेऽपौद्दवचनम् श्रच्येति यच्योदकदानम्। यथा छन्दोगपरिशिष्टम्। "यचय्यो-दबदानन्तु भर्ष्यदानवदिष्यते। पर्हेरवनित्यं तत् कुर्यान्त चतुर्घा कटाचन" इति न चतुर्घिति तस्रौ ते इत्यन्तस्य निषेध: पर्हे । वेद्ये वकारेण गोत्रसम्बन्धनामां घरामता प्रतीयते। चचयविधानात् खधानिपेधः। तेन "ये चात्र लामनुयाय त्वमनु तस्मै ते ख्रधा" इत्यचयोदकदाननिषेधः । नगु गोभि-सेन ये चाललेति मन्त्रस्य तत्तत्स्थाने विशिष्योपदेशात् कय-मचयोदकदाने तत् प्रसक्ति रिति चेत् सत्यं "वह्ननामेकधर्माः पामेकस्यापि यदुचाते। सर्वेषामेव तत् कुर्यादेकरूपा हि ते स्रुताः"। इति वीधायनेनीताकाङ्या प्रसन्नेः प्रागुक्तपरि-शिष्टवचनेनापि जाधिते। ततस क्नोगानामचयोदकदार्न-तरव याह्रे कुशासमादि दाने सर्ववैवाविशेषार ये चावलेति पाठ: विशिष्योपदेशस्तु प्रदर्शक इति चतएवानिर्ह्वसङ्गीप सवेव वाक्ये याहि विवेक्षाता चालोस्पर्गवाक्ये ये चाहत्वेति वाक्यं निखितम्। न चैवं सिषण्डकेनापिण्डकसिद्धिरिति भियोत युक्तमिति वास्यम्। यनयोरेकतरकरणे पिएइदानतद-भावान्यतराष्ट्रलोपस्यावस्थकलेनीभयवासाष्ट्रकरणानियत्तेः । लाघवेनापिएडकस्यैवीचित्यात्। "सघाया पिएडटानेन के छ-पुर्वो विनश्यति" इति निन्दाश्चनेषः। यथ पिग्इनिपेधस्य त्रादाङ्गत्वे विं मानमिति चेत्। "प्रविच्छिने कयं भावे यत मधानस्य पद्यते। चविज्ञातपालं कर्मा तस्य प्रकारणाङ्गता"॥

दति न्यायस्य भाष यदभाषेऽप्यविशेषात्। सतएव योडिश-यष्टणामावे कलयंत्रयाच यादिच्छकयष्टणप्रसन्त्रयभावाचिषे-धोऽय न क्रत्वयेः स्यादिति दायभागः। इतिनिर्णयेऽपि मान्निः कौरमेन पितुः चयाचे पिवादिविकस्य याचे क्रते तव माता-सहादीमां आहाय न पुनः पार्वणाग्यः। वाजिनवसम्बा-नुष्ठानाप्रयोजकल।दिति स्रोत्तेनाष्टकादो पाट्पोरुषिकलेऽपि "कप्ममन्वतं स्वा तयाच शाहपोडगम्। प्रत्याध्दिकध शिपेषु पिषड़ा: स्यु: पांडितिस्थिति."॥ इत्यंत स्वयाहे सेपुर-विक्रमावाभिधानपरेण विरोधाच। मातामष्टाटीनां आहे खर्ता (नुष्ठानाप्रयोजकत्वच । "पितरी यत्र पुरुवस्ते तत्र सातामहाभ्वम्"। इत्वनेन पित्यादाधीनप्रकृतेः। एतेन सघात्रयोदयां सपिण्डकापिण्डकोभयत्राष्ट्रं युथक् कार्यमिति निरस्तम्। न च पिएइदानस्य चाहाद्गत्वेन प्राधान्यात् त्राह्यहितिरिति वाच्यम्। "बरैवं भोजयेत् त्राह्यं पिण्डमेकच निवंपेत्" ॥ इति मनुवचने "पामचाडं यदा कुर्धादिधितः शाहदः सुतः। न चानौ करणं कुर्यात् पिष्डांस्तेनैव निर्धः पेत्"॥ द्रित मत्यप्राणे "याधं सपिण्डकं क्षत्वा कुनसाइस-साताना। विष्णुनीकं समुद्रत्य नयेहिष्णुपटं नरः"॥ गयाप्रकरणौयवायुपुराणे च पिण्डातिरिक्षस्यैव आहत्वकीर्न-माटिति। न च "सह पिण्डक्षियायान्तु क्षतायामस्य धर्मतः। चमयेवाव्यता कार्य्यं विण्डनिवेषणं सुतैः"॥ इति समुवचने षस्रोक्षर्गस्येति कर्त्वयतोपदेशात् पिषहटामस्य प्रधानत्वमिति वाचं ग्रागुक्तमन्त्राह्यस्वविश्वेति पिगड्यहम्स रिप्सुपरस्वास । तया च "तत: प्रसृति पितर: पिण्डमंत्रान्तु लेभिरे" इति सत्यपुराणं तसात् विष्डनिविषणं विषे दानमित्यर्घकम्। न चैवमष्टकादिः पित्तः चयतिथित्वे तत्र पार्वेषे कृते निर्मेन निकोहिष्टावरणमिति वाच्यम्। "यदोकदिवसे स्वातामकोन् हिष्टन्तु पावणम्। एकोहिष्टं निष्ठच्येव पावणं विनिवर्त्तयेत्" इति। नव्यवर्द्धमानप्टतवचनेन पागिकोहिष्ट्विधानात्। नत्वेवं ष्टिष्ठयात्रे क्षते तिहिने तदनन्तरमेकोहिष्टं पार्वणं वा भवेदिति चैव याभ्युद्धिके नान्दीमुखविद्यपणविधिष्टस्य पितुर्देवतात्वम् पान्यव केवलस्येति देवताभेदात् पार्वणानन्तरन्तु मार्कण्डेय-पुराणेन नित्ययात्रे विकल्पविधानाच नित्ययाद्यात् पार्वण-सिहिः। यथा मार्कस्डेयपुराणम्। "नित्यक्तियां पितृणान्तु केचिदिच्छन्ति सत्तमाः। न पितृणां तथैवान्ये श्रेप पूर्वन् पदाचरेत्"॥

चय पर्युदासविचारः। ननु भौनद्गीन्तियमासाय इत्यवोपजीव्य वाधिभया "रावी याद्यं न कुर्वीत राचरौ कौत्तिता हि सा। सन्ध्यशीरुभयोधैय सूर्यो चैवाचिगेदिने"। इतिवत् पिग्ड्दानं विवर्जयदिति पर्युदास इति चैन्न एत-स्थातिदेशसभ्यत्वेन पर्युदासासभावात्तया हि पिण्डदानं विव-जेयेरित्यस्य विष्डेतरं स्वारित्यर्थत्वेऽनुवादकतापित्तस्तिरित-रस्य प्रक्रांतविद्यक्तांतिरित न्यायसभ्यत्वात् किन्तु तदितरदानैः ऽपि कथं वा सन दीयते न स प्रापकविध्यभावादपापिविध्य-माबेऽपि प्रक्रतिविद्यक्ति न्यायात् प्राप्तेः। एव मघातिरिक्ष पिराइं दद्यादिति पर्युद्रास्टरिप। न चैवं रावादौतरामा-स्यायां ऋषं कुर्यादित्यव रावादाविपन कर्यं आहमसीत्र-रिति याचा न्यायविध्योरभाषात्। भतएव राजमार्त्तपडे निषेधातिक्रमादनिष्टफलसुक्तम्। यथा "सक्रान्यामुपवासेन पार्येन युधिष्ठिर। सदायां विगडदानेन स्पेष्ठपुती विनश्यति"॥ सस्याकासमाह वराहः। "सदीस्तमयात् सस्या व्यक्तीभूता न तारका यावत्। तेजः परिष्ठानेरूपःभानोरहेदियं यादत्"॥

योगियाज्ञवरुकाः "ज्ञासष्ट्वी तु सततं दिनरास्त्रीर्यथाक्रमम्। सभ्या मुहर्तमास्याता द्वासे ष्ट्रहो समास्यता"॥ तसाइ-चर्यादिचरोदितकासिऽपि मुहर्त्तमार्च "राषौ याद्व न कुर्वोत राहोरन्यव दर्भनात्। स्व्यदिवसुहर्ने च सन्धवीरभयोः स्तथा"॥ इति मदनपारिजाते माघवाचार्यभृतशातातप-वचमाच । एतेनाचिरोदित इत्यव देशिनाना मुहर्त्तदयवर्णनं हियम्। यसादितिदेशस्त्रे न पर्युदासः। यतिदेशस्त्रतः स्वन्तरते। "प्रक्षतात् कर्माणो यधात्तत् समानेषु कमस्र। धर्मोऽतिदिग्धते येन सोऽतिदेश इति स्रुत."॥ न च यजतिपु ये यनामन कुर्यात्रानुवानेष्टित्यव क्रियान्तराभावादेनवाका-तया उपजीव्यवाधिभवा च पर्यदासीऽस्तु प्रहाते तु श्रमावा-स्याया पिद्यभ्यो दयाद्रावी श्राहं न कुर्वीत द्ति क्रियायाः मृयमभिधानात् तयोः सार्धकत्वाय गत्यन्तराभावात् रागाति-देगयदुपजीव्यवाधोऽस्तु द्रति वाच्यं न्यायनचे यथा करोती-खब एक दबादो च प्रक्रतिप्रखययोरिकार्यबेऽपि सकोदेनान्य-तरवैययं तद्दवापि चन्यया नानाविधिकस्पने गोरवात्। अतएव चौरमधेवजयोः साम्योरेव पार्वणं न तु कियाभेदेऽपि निरपेरीण विधिद्यकरानम्। औरसरोवजी प्रती विधिना पार्वणेन च। पतान्द्रसितरं कुर्युरेकोहिष्ट सुता दश" रति। "यव यव प्रदातव्यं मपिण्डोकरणात् परम्। पार्वणेन विधा-नंन देयसरिनमता सदा"॥ इति सावालमत्यपुराणवचना-भ्यामिति। किञ्च घदम्धद्दनन्यायेन यावद्रप्राप्तं तावद्विधी-यमे रित "सववाद्यातमस्वसे सूयमाणे पदान्तरे। विधि-गमध्यमेकान्ते. छाडातीरनुवादता" इति। भट्टनचे च माग्र प्रातजुद्दीतोत्यनेन एवमस्याद्यदः सिदेर्यया साय प्रातदिवन-मम्य द्धा मुद्दोती खादी दधादे: करणलगात्रं विध्यम्।

"तहदीरसचेवन कर्नुकपत्याब्दिकपार्वणविधिमन्द्यानिमत्-कर्नुकर्त्वं विधीयते। एवमव तत्ति धिप्राप्तश्राद्वकरणमन्त्र रात्रोतरत्वमावविधेयसिति। अन्यथा प्रसच्चपचे "पूर्वाह्रो माद्यं यादमपराह्वे तु पैदमम्। एकोदिष्टन्तु मध्याक्रो प्रातष्ट्र हिनिमित्तकम्"॥ इति ब्रह्मपुराणोक्तवचनेन श्रमावा-स्रादि विधीनामेकवाकातया याद्यमावस्य दिवामाचकर्तव्य-त्वाभावेनैको हिष्टस्य सधाक्रमावकर्त्रस्य यवोभयदिने-मध्याद्वाप्राप्तिस्तव तस्य सीपे प्रत्यब्द्मिति वीपाभद्ग-प्रसङ्घः। अपि वैदं 'यस्यैतानि न दौयन्ते प्रेतशाहानि बोडग्र। पिग्राचत्वं भुवं तस्य दत्तेः यादयतेरपि"। इति यमवचनेन षोडमयाचासम्पत्या पिवादीनां प्रेतलापरीहारा-बाष्ठानमर्थः स्थात्। पर्य्दासपचे खमावास्यादिविधीनां रावोतरलेऽपराह्वादि विग्रेपविधीनां प्रामस्यपरत्वम्। तवा-प्येकवाक्यत्वे रात्रगदौतरत्र विशेषणवैयर्थम्। ततस्य प्रशस्त-काल विना रात्रादीतरकालेऽपि याद्यविधानाम याद्योपः। श्रमएवापक्षे एकाई दादशाध विति वचनमिष सङ्गच्छते। चन्यया सधाक्रकालमात्रपरत्वे तत्र द्वादमयादानुपपत्ते: । सन्ततस्त । वेदान्तकस्पतरावधिकरणमास्तायास्त्र पर्युदासाः धिकरणए विषयवाक्यमेव किल श्यते। "शावयेति धतुर-सरम् यस्तु वोषडिति चतुरचरं यजेति द्वाचरं ये यजामहे द्रि पञ्चाचरं द्वाचरो वषट्कारः एथ वे सप्तद्य प्रजापति-यंत्री यन्नीत्वायत्त इति तती नानुयानेषु ये ,यक्षामदं करी-तीति"। अवसमद्याचरी मन्त्रगणः प्रजापतित्वेम स्यूयते प्रजापतिरपि सहदारैकादमिन्द्रियगब्दसर्ग्यक्षिमगन्धतकाल-पश्चालकसगदगकलिङ्गगरीरसमप्टिष्यत्वात् यश्चे यश्चीत्वा-यसीरनुगत इति । दि यसियः यशमनारभ्याधीरेन यार्यम

सर्वयक्षेषु सन्वगणी विनियुक्त इति। यत्रतिषु ये यत्रामदः करणत्यमुहिटं तद्पदिग्य चामातं मानुयाने चिति। पत सगयः किं विधायकप्रतिपेषकयोरपैयप्यायम् विधिप्रतिषेष-मिवपातादिकस्पः। कि वा पर्यादामी त्याजाति रिक्रयाने बु ये यजामदः कार्य रति। मन्देवं विषयमोन्दर्यात् प्राप्तप जाम्होरोष निषेधन कयं न विकल्प रति चेत् तास्का निकरोय -माधनत्वं प्रत्यचवोधितं प्रतिवेधेन तु कामासरौयानिष्ट-चेतुलं जाप्यत इति विषयभेदेन तुन्यायेपिनिपाताभाषाञ्च विकस्प रिति ति से कणं वाध्यवाधकतिति चेत् यदिदानी प्रष्ट-त्तस्य सुखं दृग्यते सतुन्यमेव चेदुःसं कामानार भवेत्रसि व्ययोऽयं प्रतिपेधः स्यात् प्रवृत्तेदुं खकरत्ववत् निवृत्तेरिय सुख-विगमहेतुलात्। ततय दृष्टात् सुखात् चिषकं दु.षमाय-त्यामिति विद्यांस विभ्यतमास्त्रिकपुरुषं शक्तीति रागतः प्रह-क्तिवारियसु वसीयान् मास्त्रपतिषेधः। यया स्रोके भुअङ्गा-याङ्गिने देयेति प्रतिपेधस्य प्रतिपेधां प्रति समयस्वात् रूति म तया विकल्पमहर्तीति गाम्होयो सु विधिनिवेधो तुस्ववस्तया योडांगयदणायदणबद्धिकल्पाते तत्र दि विधिदर्गमात् प्रधान-स्योपकारभूगस्वं कस्पाते निपेधदर्शनाच वैगुस्येऽपि फलसि-रिरवगम्यते। यथार जैमिनिः। पर्यमस्वदिति चैत्र सुख्य-हेतुत्वादुभयं शब्दलचणम्। चलकार्यः प्रयात् विषयसीन्द-यात् प्राप्तस्य मांसभीजनस्य यया सर्वदा निषेधः तथा प्रास्त-पाससापि स अवस्थिति चेस प्रतिवेध्यस्य प्राप्तेः प्रतिवेध्यस्य च तन्यप्रमाण्यत्वात्तदेव दर्श्वते उभयमिति। उभयं प्रष्टतिम् पेधरूप शब्दलचणं शब्दस्य प्रमाणकमित्यर्थः। यथातिरावे पोडिशिन ग्रह्माति नातिरासे पोडिशिनं ग्रह्मातीति घोडिशी ससोमकपावविशेषः। येतु सुवते याद्दक्कि स्रष्टणगाप्तिनि-

पेथोऽयं न विधितः प्राप्तस्येति तत्र वैधग्रष्टणस्यावैधग्रष्टणनि-षेधस्य च सुगपद्पसंद्वारासमानात् विकल्याभावप्रमुक्तेः क्रत्वर्ध-तया याद्यक्तियदणप्रसम्बन्धावादिषेधोऽयं न कत्वर्यः स्यात् तसादुक्षनयाद्विकत्प इति दायभागः। न च यागेषु ये यजा-महकरणं यावद्यजित सामान्यद्वारा पनुधानं यनिति विशेष-सुपसर्पति ताबद्नुयाजगतेन निषेधेन तन्निषद्यमिति श्रीघ्र-प्रवत्तेः सामान्यप्रास्त्रादियेपनिषेधोऽयं वसवानिति वाचां यतो भवत्येवं विधिषु यथा ब्राह्मणेभ्यो दिधि दीयतां तक्रं कौण्डिन्धायिति तक्रविधिनं दिधिविधिमपेचते प्रवित्तं द्रष्ट तु प्राप्तिपूर्वकत्वात् प्रतिपेधस्य ये यजामस्करणस्यान्यतोऽप्रा-मेम्तिविषेषेन निषेध्यपाप्ती तिहिधिरपेश्चर्योयः। न च सापे-चत्या निषेधादिधिरेव वसीयानित्यतुत्यश्रिष्टतया न विकत्यः किन्तु निपेधस्यैव वाध इति युक्तं तथा सति निपेधयास्तं प्रम-त्रगौतं स्थात्। न च तद्युक्तं तुल्यं हि साम्प्रदायिकमिति न च नान्तरीचेऽनिखेतवा इति वदनुवादकतास्विति वाचां तव श्वन्तरीचेऽनिचयनस्य शास्ततो रागतसामामेस्तया न चात्र ये यजासहभावास्तया यागेषु ये यजासहविधानादशु-याजानाच्च तद्वावाच पर्युदासः। नानुधाजेष्वित्ययं यदि पर्युदासः स्थात्तदा सुवन्तेन सइ मञो योगात् समासः स्थात् कात्यायनेन समासनियतस्य सृतत्वात् तसाहि हितमतिषिद-तया विकल्प इति प्राप्तम् एवं पासे उचाते युक्तं दि पोडिशि-यप्रणायप्रविकस्य इति न हि तवान्या गतिरस्ति विधि-प्रतिवेधयोक्भयोरिप विशेषनिष्ठत्वेन पर्युदासासम्भवात्तेना-ष्ट्रोषदुष्टीऽपि विकस्प श्रात्रियते पत्तेऽपि प्रमाणीभावाना-भूत् प्रमत्तगौततिति इष्ट तु पर्युदासेनायुवत्ती समावन्यां विकल्पात्रयणं तद्युक्तं ''यत एव विकल्पोऽय प्रतिपेधे प्रस-

च्यते। श्रतस्तत्परिद्वाराय पर्य्दासान्यको वरम् ॥ विकः खोशी दीपा एकादगौतत्वे रनुसस्येयाः। एवं प्रितदा नजः सम्बसीरन्याजिन सङ तथा चानुयाजेतरेषु ये यजामश्वः कार्यः इति। ततयानुयाजेतरेषु इत्युक्ते के ते इति न ज्ञायते अशी पर्यवसितं वाकाम्। ततस येऽनुयानादन्ये ते यागा इति पर्यवसातुं पूर्ववाकामपेचते न पृथक् पर्यावस्यतौति। एवस पूर्ववाच्ये ये यजामहं प्रति योपिलेन वीधितानां यागानामनु-याजलं विशेषणमज्ञातमनेन जाप्यते इति विधिशेषित्वेन प्रतिपेधाभावाच विकल्प इति। न चाभियुक्ततरपाणिनि-विरोधे कात्यायमध्य नित्यसमासवादिन: सह।दित्वं सभावति स हि विभाषाधिकारे समासमनुशास्ति। तथा च पूर्वमौमाः सायां राष्ट्रान्ताय जैमिनिः। "यपि तु वाक्यग्रेषः' स्थाद-न्याय्यताद्विकस्पस्य विधीनामेकदेश: स्थादिति । एतदेव स्वमर्यद्वारा उत्तरमीमांसायां पठित भगवान् ग्रहराचार्यः षपि तु वाक्ययेपत्वादितरपर्युदासः स्थादिति। प्रतिपेधे विकलाः स्वादिति। तसादनुयानवर्जिते ये यजामणविधान-मिति सिरुम्। एवच्च पूर्वीपदर्शित पर्युदासविषयवाकायी-रन्वायत्त इति करोतीति क्रियाभेटमनाक्रीचानुयाजवाक्ये क्रियान्तराभावाटच पर्युदासता नान्यविति यदुत्रां तहेयभिति। ततस यजातिषु ये यजामदं कुर्याम्बानुयाजेष्वित यद्विति व तत् युत्धोस्तात्पर्यार्थमादायेति। पतएवोक्तम्। "प्राधान्यन्तु विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता पर्यादासः स विद्योगो यत्रोत्तरपदेन नञ्। अप्राधान्य विधेयंत्र प्रतिषेधे प्रधानता। प्रसुक्यप्रति-पेथीऽसी क्रियया मह यव नज्"। यदापि पर्यादस्तरावादिषु आहादिकरणे विधेरीटामीन्यास फलं न वा प्रत्यवाय द्ति सिंदात्तस्यापि तदिषये यत्र दोषप्रायस्तियोः ज्ञतिस्त्रक

तत्तच्छास्तानुरीधात् ६योरपि कत्यनम्। यया सगीतादिः विवाहसप्तमचन्द्रादि 'छपरागदर्गनादी । ततस तथाविध-विषये सर्जः पर्ध्दासप्रसच्यप्रतिषेधोभयपरत्वाद्वाक्यभेदकत्व-नमपि प्रामाणिकम् । चतएव ऋतुकालाभिगमनं कुर्यात् पर्वणि वर्जेग्रेदिति इष्ठस्रतिना ऋत्विभगमननियमे पर्वण: पर्ख्दासे छतेऽपि "चतुदरशष्टमी चैव श्रमावास्या च पूर्णिमा। पर्वाखितानि राजेन्द्र रविमंक्तान्तिरेव च। स्कीतेसमांस-सभोगी पर्वखेतिषु यो नरः। विरामू प्रभोजनं नाम प्रयाति नरकं सृतः" इति विषाुपुराणे निन्दया । "वैदौदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे। स्रातकव्रतसोपे च प्रायस्ति-सभोजनम्"॥ इति सनुक्षेत च यद्याक्रमं रागप्राप्तममननिषेधः प्रायिश्वत्तच्च सङ्गच्छते। अन्यया तदुभयं न स्थात्। अतएव सीजराजः। "पीपे चैते कृषापचे नवासं भावरेह्यः। सर्वे-कानात्सरे रोगौ पितृषां नोपतिष्ठते"॥ इति रोगौति निन्दा-श्वषणात् प्रसन्धता नीपतिष्ठत इति श्वषणात् पर्युदासर्विति । यस् स्थोतिषे। "कमा कुर्यात् फलावामेत्र चन्द्रादिशोभने बुधः। सुख्यकाचि त्विद सर्वे नार्तः कालमधेचते। चन्द्रे च शहुं सवण्य तारे तिथावभद्रे मिततण्ड्वाय । धान्यस् ददात् करणर्जवारे योगे तिसान् हैममण्डि सने"।। इति देवलवसनात् प्रायसिक्तानन्तरं कार्मोपदिष्टम्। श्रतएव "न सक्तगुणसम्पत् सभ्यतेऽत्पैरहोभिवेष्टतगुणगुत्तं योजयेनादः-लेषु। प्रभवति हिन दोषो भूरिभावे गुणानां मलिललय च्वाकोः संप्रदोप्तेन्धनस्य ॥ इत्यनेन "कष्टाभीष्टे तुस्यमंखी फले चेत् स्थाता नामः फलघोस्तव वाचः। वर्चि। प्रियो-रितिरिक्षस्तयी: स्यात् सर्वस्थाने कार्यनेव प्रदिष्टा<sup>ण</sup> इति वाद-रायणवचनेन च प्रवर्तते न तम पर्युदास इति। अती विदि-

तितरवारादौ विवादादिः प्रवस्ति चन्धत्सुधौभिभोध्यम्। स्यु-कौशिकाम्निपुराणच्योतिःपराभराः । "अनादिदेवतां दृष्टा ग्रच: खुर्नष्टमार्गवे । मलमाध्यमाद्वतं तौर्यसानमपि त्यजेत्र ॥ पूर्वाहेस्यार्थवादलेन विध्याकाह्यासाम्भराहेस्य-त्यनेदित्यन्वयेति उपस्थितंत्वात्। द्वितीयापिना समादि-देवताद्रभैनस्य समुचितत्वाच । ततसानाष्ट्रतिमत्विप हिती-यान्तविनं त्यनेदित्यन्यपरत्वास तोर्यसानमानेऽन्वितं किन्तः नादिदेवतादर्भनेऽपि। ततस मलमासे देवदर्भनस्यानाष्ट्रतः लेन वर्जनं युक्तम्। धतएव तथाप्तये मलमास द्रवेत्यति-देशमाहु:। अन्यया वर्जयेदित्यनेनैव सिहेर्मनमास द्रवेत्य-नर्घकं स्थात्। यथा इष्डमनुपैठीनसिम्धगदः। "बाले या यदि वा द्वहे ग्रको चास्त्रस्पागते। सलभास द्रवैतानि वर्ज-येहें बदर्भनम्"॥ किञ्चाहत्तदेवदर्भनस्यापि निषेधे तावत्-कासमनादिदेवतानामपुष्यता प्रसच्येत। श्वतएव ज्योति:-पराश्ररः। "धनादिदेवताचासु कालदोषी न विदाते। नित्या-स्वधासयोगेन तथैवैकादशौव्रते"॥ भनादितस्य पुराणभार-तारिप्रसिष्ठश्रीपुरुषोत्तमश्रीविष्ठेखरप्रभृतित्वमिति। तेनाना-वृत्तमनादिदेवतादर्शनं तीयसानस्य श्रकास्य मसमासे च त्यज्ञत्। तीर्घचिन्तामणी गयायां प्रतिप्रसवमाद्य वायु-प्राणम्। "गयायां सर्वकालेषु पिण्डे द्दाहिचचणः। ऋधि-मासे जमादिने पस्ते च गुन्युक्रयोः। न त्यक्तव्यं गयायार्ड सिंह खे च हह स्पती"॥ नन् जना दिने याहिन पेघामावात् कयं गयायां प्रतिप्रसव इति चेत्। "वयोदशीं अनादिनञ्च नन्दां जमार्चतारां सितवासर्घ। त्यक्ता हरी ज्येन्दुकरान्य-मैनध्वे उच याहविधानिम् एम् ॥ इति दौपिकायां जना-दिने नवात्रादियादिगिषेधात्। इदि: यवणा। इच्यः मुष्यः इन्दुर्मृगिशिराः करो इस्ता भन्त्यो रेवती मैत्रोऽनुराधा ध्रुवगण उत्तरावयरोडिणः कर्माङ्ग श्राष्ट्रस्य तु प्रधानानुरोधेन कर्त्तव्य-तया तव न निषेधः। भतएव पुंसवनादिषु नन्दादिविधानं सङ्गच्छते।

ष्यय नवाञ्चम्। "सूर्यो चैव वियाखरी स्वरतियौ पापे विजनान्विते। नन्दा सन्दमहीजकाव्यदिवसे पौषे मधौ कात्तिके। भेष्याहिशिवेषु विष्णुशयने सार्धे गिश्विस्टमे। याद्धं भोजनमं नवास्रविहितं पुत्रार्धनाग्रप्रदम्" ॥ सूर्यो चैव विगाखरी मार्गभौषेस्य विभित्तदग्डाधिकप्रथमदिनत्रयावस्थिते सूर्यं सार्तियो वयोदश्याम्। पापे पश्चमताराचये। उपः यूर्वावयसघाभरणः। श्रीहरस्या। शिव श्राद्री। भोनराजः। "ब्रह्मविण्वृष्टस्पती-श्रश्यक्षो मार्चण्डपीणादिती मैबे चिव-विद्याखवायुधनमें मूलाध्विवज्ञी तथा। असी वार्ण ऋचके गुभदिन याह नवं ग्रस्ते नन्दाभागंवभूभिनेषु न भवेत् ग्राहं नवासोइवम्"॥ ब्रह्मादयस रोहिणीयवणपुषसग्गिरोहस्ता-रेवतीपुनवं खनुराधा चित्राविशाखाखातौ-धनिष्ठा-सूनाखितौ-सिसिकाच्ये द्वाग्रतिभवाः। अव सूनाक्वविकाच्ये द्वाविधानात् वस्त्रमाणाग्नयादिनिपेधस्तु नवीदकत्र्याद्वपरः। उत्तरादि-तितयमिप इह याह्य घुवलेन प्रागुश्चदीपिकाकारवचर्नन याद्विधानात् वद्यमाण्देवलवचनाच । "पश्चेषा कृतिका च्योष्टा मूलाजपदकेषु च। सगुभीमदिने रिप्तातियौ नाद्यात्र-बौदनम्"॥ अलपदं पूर्वभाद्रपदा एतहचनन्तु याहानधि-कारिभद्यक्षमात्रपरम्। धन्यया "प्रदक्षिणमनुत्रन्य भुञ्जीत पिल्सेवितम्। ब्रह्मचारी भवेत्तान्तु रक्षनी ब्राह्मणै. सह द्रति याज्ञवरकारोत्तस्य श्राहदिनमानकत्त्वीदीयाद्वस्य श्राहाः विग्रष्टमितपित्रक्षभचणस्य नियमितस्य क्येष्ठामूलयोः सर्वदा

वाधापचा मुख्यकले कचिद्धि नवावयारं न सात् धन्यत तु प्रतिपाद्यगुणभूतत्वात्। प्रतिपत्तेर्गुणभूतस्य च प्रधाना-प्रयोजकत्वात् जपवासाद्यनुरोधेन विशिष्टाभाषस्य कचित्तत्वाश्र सर्वेदा वाधः। तिस्यमे किं मानमिति चेदापस्तस्वयनम्। तदाया याद्रग्रेषमधिकत्य "सर्वस्मात् ग्रामावरार्द्वमग्रीयात्" र्त्यत भूरिद्रव्यक्तत्सवाचिसवैग्रव्दयुतेः श्रन्यया तद्दार्थे स्यात्। व्यक्षमाइ नव्यवर्षमानप्रतिश्वरहस्यम्। "याह क्रवा तु यः श्रेपं नाचमञ्चाति मन्द्धोः। लोभाक्षोष्टाद्वयादापि तस्य तिनपालं भवेत्"॥ झझपुराणे वराष्टः। "हिंचिके गुक्तपंचे तु नवास गराते वुषे:। यपरे क्रियमाणं हि धनुयेव कर्त भवेत्। धनुषि यत् छत न्याहं स्मानेत्रासु राविष्। पितरः स्तम ग्रह्मिन्त नवान्नामिषकाङ्मिषः"॥ ऋपरे क्षण्पचे। मुगो नेता प्रापियता यासां राबौणामिति ध्युत्पच्या । नचवा-चेत्रित्यनेना दिधानात्तत्यदं सिद्दम्। ततय स्माश्रिरः पूर्वार्डन हिंचिक भैषभारी रात्रारका। इतारिश्रह्य हार्वाश्रष्टपद्वातयी सृग्-नेवा इति। च्योतिपे। "नवानं नैव नन्दायां न च सप्ते जना-दंने। न क्षण्यचे धनुषि तुक्षायां नैव कारयेत्"॥ इति न च सुप्ते जनादेन इत्याखिनश्किपचेत्रयरम्। आखिना-धिकारे। "शक्तपचे नवं धाम्य पक्षं जात्वा स्योभनम्। गच्छेत् चेत्री विधानेन गीतवादापुर:सर:"॥ इति ब्रह्म-पुराणे याद्वविधानात्। भोजराजः। "वीपे चैत्रे क्षण्यपेचे नवात्रं नाचरेद्धः। भवेळात्रान्तरे रोगी पितृषां नीप-तिष्ठतं"॥ यत धनुषोत्धेकवाकात्वात् धनुषौति धनुःस्थार्क-पर माइचर्याचैवोऽपि सीर:। एवश्च तुलायामिलापि तुला-केंपरम्। यद्यपि "वौहिएकि कर्त्रव्यं यवपाके च पार्थिव। न तावादी महाराज विना आहं कथ खन"॥ इति विष्णु-

धर्मोत्तरवचने यादं प्रति ब्रीहियवपानयोनिमित्तत्वं प्रतीयते। तथापि "नवीदके नवाने च ग्रहमच्छादने तथा। पितरः स्रियन्यसम्बास् मधास् च ॥ तसाह्यात् सदोद्युक्रो विदत्स ब्राह्मणेषु च"॥ इति ग्रातातपृत्वचने पूर्वज्ञवसुषु वचनेषु च नवावस्य श्रुतेनवाव सत्वेनैदोभयसाधारणं निमित्तत्वं लाघवात्। प्रभिलापवाक्ये नवाद्यागमननिमित्तमिति नियोक्यं न तु यवावागमादि अवस शुक्रधान्यतण्ड्लविकारः विशेष इति प्रायसित्तविकः। शूकधान्यविकेश्वमरः। "माषाद्यः ग्रमीधान्ये गूकधान्ये यवाद्य."॥ इति ग्रमी सिम्बा ब्रीडिपाके यवपाके चेत्यभयोपादान शाहहयार्थम्। नन्वेवं वीष्टिययपाक्षकास्वययासे चेत्यस्य। "वश्वके शुक्त-पचे च नवासं शस्यते वृषेः" इति वचनाद्य सम्यपरः काल इति चेत्र नवीदके नवासे चेखादौ सदेति अवणात्रिखले न व्यक्तियवपाक्तयोरपि विशावचनेन नित्यव्याभिधानात् तयो-रेकवाकातया। यथा "प्रमावास्थातिस्रोऽन्वष्टकामाघोप्रीष्ठ-पद्युष्ट क्षण्यवयोदमी वीहियवपाकी चेति। एतांसु वाह-कालान् वे निखानाष्ट प्रजापति:। याष्ट्रमतेष्वकुर्वाणी नरकं प्रतिपद्यते"॥ वृद्धिके शक्कपद्ये च इति तु धनुरादिपर्युदस्ते-तरगौषकासमध्ये द्विकस्य प्राथस्यमात्रार्थम्। न तु यादा-सरार्धमिति "ग्ररहसन्तयोः कैचित्रवयञ्च प्रचचते। धान्य-पाकवशादन्ये खामाको विमनः स्मतः"॥ इत्यनेन शरद-सन्तविद्वितनवग्रस्थेष्टः। "ग्रामाकैन्नी हिभिसैव यवैरन्योत्य-कालतः। प्राग्यष्ट्रं युज्यते (वद्यां नत्वव्ययणात्ययः"। इति कालात्तरदर्शनात्। याहेऽपि तयेति। एवमेव याहिचलाः मणिल्लातस्वार्णयो। पाप्रयणं नवग्रस्येष्टिः। नवीदके वर्षीपक्षके भाद्रीस्थरवाविति यावत्। "प्राष्ट्रकाले समायाते

रोद्र ऋचगते रवो । नाडीवेधममायोगे जलयोगं वदाम्यहम्"॥ दति रुद्रशामभात्। रोद्रमाद्री। चतएव नवीनवहेमान-धनम्। "भाद्रीदितो विधानास्त रविचारेण वर्षति"। तस्यास प्रथमपारेऽम्बुवाची। यथा राजमार्नगढे। स्मिश्रिरिम निष्टमे गैद्रपाटेऽम्बुधाची। "ऋतुमति खलु पृथ्वी वर्जयेषी. ण्यदानि। यदि वपति क्षवाणः चेत्रमामाद्यवीजंन भवति फलयोगः अस्य चाग्डालपाकः ॥ च्योतिपे "तिमान् वारे महसांग्रयंकाले मियुनं व्रजीत्। चम्ब्याची भवेषित्यं पुन-म्तत् कानवारयोः"॥ एतच्च प्राधिकं सत्यसूत्रे। "धरण्या स्रव्यमत्याच भूमिकम्पे तथैव च। भन्तरागमने चैव विद्यां नैव पठित्ररः"॥ भारतराममने गुरुशिषयोर्मध्ये पर्यादि-गमने। पश्नाइ प्रायस्तितिविकपैठीनसिः। "ग्राम्या-रखायतरंग। गोयाविरजोऽप्रतरोगरंभो मनुष्ययेति सप्त-यास्याः प्रथयः। सहिषवानर ऋचसरीस्पर्रुष्यतस्यासिति सप्तारखाः पथवः"। इति तेन सनुष्यान्तरागमनेऽपि दोष-व्यवद्वार: पनुष्रापि न दोष:। "नामिनब्राह्मणयोरन्तरे व्यपेयात् न गुरुशिष्ययोरनुन्नया तु व्यपेत्र इति मदनपारि-जातपृतविश्ववचनात्। तथा "बार्ट्राधाः प्रथमे पादे चोर पिवति यो नरः। षापि रोपान्वितस्तस्य तत्त्वाः किहारि-चितिणा नवामघादे भक्षणस्य न निमित्तत्वम्। किन्तु नवात्रागमनस्येव। "नधत्रयहपौडासु द्षस्यावनोकने। प्रकायाद्यानि सुर्वीत नवप्रास्थागमे तथा"॥ प्रति विप्णु-पुराणात्। गोभिनभद्दभाष्ये श्रुति: "ग्रहमधी ब्रीहियवास्यां शरदमन्तयोर्यजेत श्रामाकैर्वनी वर्षा स्वापत्कत्येऽन्येन पुरातः नैर्वा दिता याहिन्तामणी च हारोतः। "रहमधी भारदसत्तयोवीं इयवाभ्यां यजेत वनौ वर्षासु भ्यामकैरापलाल्ये-

उन्धे: पुरातनैविष इति एतच्छाद्वासंस्त्रतधान्यजातेन याद्वा-न्तरं निषिद्यम्। तथा च याद्याधिकारे वराष्ट्रपुराणम्। "श्रक्त-ताययणचैव धान्यजातं दिजोत्तम। राजामापाननं च्हेब मस्रां य विवर्जयेत् ॥ भतः संस्कृतधान्यालामे प्रेतन्या व दुम्धादिनापि वार्धे प्रक्रती तथा दर्भनात्। यथा ब्रह्म-पुराणम्। "पयोसूनफरोः शाकः क्षणपत्ते च सर्वदा। परा-घोन प्रवाषो च निर्धनो वापि मानवः। मनसा भावग्रहेन याहे द्यात्तिलोदकम्"॥ अय नवानयाहाधिकारिणामेव तथा नियम: तदनधिकारिषान्तु विधवावदक्षताग्रयणैनापि प्रेतयाद्यमिति। एवं भोजनेऽपि। तथा च "दल्वेव ब्राह्मणे-भ्यथ हुत्वा वा वैख्रदेविकम्। घन्यो नवासमग्रीयादिति वौधायनोऽव्रवौत्"॥ इति रेणुकाचार्यमध्यवर्षमानध्त-वचनम्। अन्यो नवासयाहकरणासमर्थः। देवीपुराणम्। "नवं क्षवरपूपाणि पायसं सधुपिपौ। हथासांस न चात्रो-यात् पित्रदेवविवर्जितम् ॥ नवं नवात्रम्। प्रदः। "द्याः क्षवरसंयावपायसा पूपसब्कुलीः। भुक्ता विराव कुर्वीत वत-मितत् समाद्वितः" ॥ तेन देविपत्रतिधिवजं कामतः सङ्घदमीपां भक्षणे विरावं कथरादिसाइचर्येण नवासेऽपि तथा। विष्णु-पुराणम्। "प्राम्त्रोयाद्धिसंयुक्षां नवं विप्राक्षिमन्त्रितम्"। प्रागुत्तदीपिकावाको जनादिनजनार्जतारानिषेधात्। "तन्दायां भागविद्नि त्रयोद्यां विजनानि। पत्र यादं न कुर्वति पुत्रदार्धनच्यात्"॥ द्रत्यच विक्रमानीत्यस्य लगातिथिजमा॰ ताराजकाराशिक्ष द्रखर्धः। इसायुधीऽप्येवम्। प्रागुक्त-वयोदयों समादिनश्च नन्दामित्यव दिनपदं तिथिपरं तिथि-ष्ठन्यपाठात् चिनकानि विजमानचव्यमिति याख्यानं गुर-चरपानामपि मामाणिकम्। राजमार्चण्डात् यया ताराः

प्रकर्ण। "सर्वमङ्गलकायाणि विषु जन्मसु कारयेत्। विवादयाद्यमिषद्ययात्राचीराणि वर्जयेत्ण ॥ दीपिकायां मेत्रे याद्वविधानाद्दार्णगणे यन्मैत्रमिति पठितं तदनुराधा इति व्याख्यातस्य वाचस्पतिमित्रेण तद्यम्। सतएव न्याह-विवेककता। "दारुणचीरगं रौद्रमैन्द्रं नैऋतमेष च"। ऐन्ट्रं च्येष्ठेति निखितम्। एवच ''नचचेऽपि न कुर्वति यसिन् सातो भवेत्ररः। न प्रौष्ठपदयोः कार्यः न चाम्नेये च भारत। दार्षेषु च सर्वेषु प्रत्ययौ च विवर्जयेष्'। द्ति यादाधिकारे महाभारतवचनं तहाद्रशंतमासम्। विषु जनामु एव पूर्वं निविद्यतात् प्रौष्ठपदा पूर्वभाद्रपदा दितारक खात् दिवचनम् दति श्राद्यविक क्रत्। तत्य यत् वाचयातिमियोणाभिष्ठितं प्रीष्ठपदी पूर्वभाद्रपदोत्तर-भाद्रपदौ दल्ववापि हियम्। एतत्तारायाः पुंसि प्रयोगोऽप्य-साधः स्वियां श्रेषाः। इति वस्यमाणलात् "समधिनिष्ठाः स्यु: प्रौष्ठपदाभादपदास्त्रिय:" इत्यमश्कोषाञ्च। पूर्वभाद्र-पदाया एव श्राहमधिष्ठत्य विष्णुधर्मीत्ररेष उपलेन निधे-धाञ्च। यथा "नचनाणि तथैवान दार्योपाणि वर्जधेत्। मचोत्तरभाद्रपदाया अपि छत्तरावितय रोद्रगेष्ठिणौयास्य सर्प-विद्यमेषु चास्निमे। इसश्चकर्म सकलं विधर्नयेत् पेतकार्यः-सपि वृद्धिमान्नरः" दति वचनान्निपेध दति वाचा तैरेव धत-देवलवचनविरोधात् यथा "उत्तरात्रवणतिषो सगमोषः पनापति:। इसः अतिभवस्तातीचित्रापित्रामधाव्यभम्। नचवाणि प्रयस्तानि सदैवैतानि पेष्टके। चपराणि च ऋचाणि उचन्ते कारणे: कचित्'। उत्तरासिस इति कल्पत्रः। अपराणि धनिद्यादीनि कार्णेर्भघाऽमावास्या-योगादिभिः। पूर्वेलिधितदीधिकावचने भुवलेन छत्तरा

विधानाच। ततय देवलादिवचनविरोधात् प्रेतकार्यमिति न प्रेतयाद्वपरं किन्तु पतितप्रेतसम्प्रदानकदासीघटोदकदान-परम्।

यय समयाग्रहिः । च्योति:परागरः । "बान्याधयं प्रतिष्ठाञ्च यज्ञदानव्रतानि च। देवव्रतष्ट्रपोस्पर्गचुडाकरण-मेखलाः॥ माङ्गत्यमभिषेकञ्च मलमाभे विवर्जयेत्। वाले षा यदि वा वृद्धे युक्रे चास्त्रसुपागते॥ सलमास द्वैतानि वर्जयेहे बदर्भनम्। पच दृहस्तु पूर्वेष दशाहं पशिमेन तु॥ प्रत्यग्वानो द्याहन्तु पूर्वेण च दिनवयम्"॥ पूर्वेणेति प्रातः प्रातः पूर्वदिशि दक्षा रविकिरणाच्छन्नतया न दृश्यते चेद्यह-स्तटा प्रागस्तमितः तवास्तमितात् प्राक् पर्च वृदः । पश्मि-नेति। एवं सायं सायम् घपरदिशि दृष्टा रविकिरणाच्छ्य-तया न दृध्यते चेदुग्रहस्तदा प्रत्यगस्त्रमितस्तवास्त्रमितात् प्राक् दगार्थं हुदः। "दाविग्रहिवसायास्ते जीवस्य भागेषस्य -च। द्वासप्तिमंदास्ते तुपादास्ते द्वादगक्षमात्"॥ द्रति न्योतिविद्वसवानानन्तरमपरदिशि दृश्यते चेत्रदा दगाएं प्रत्यग्यानः पूर्वदिशि चेत्तदा दिनवयं प्राग्वास इति भग्नासः रेपाछ। "पर्छ हडी महास्ते तु यानपाय दशाहिकः। पादास्ते तु द्याद्यानि हही वासी दिनस्यम् ॥ पत्र सस-सामादिकोत्तंनं पुर्ह्यतरकानीपमध्यम्। "बह्नामेकधर्मा-पामिकेयापि यदुचाते। सर्वपाभेत्र तत् कुछादेकरूपा दि ते स्नृताः" । प्रति वीधायनवचनात्। पतपव प्रतिप्रमधे कानदोपो न विदान इति सामान्यत सहम्। तथा च गोभिय-पारस्तराम्यां कर्मायः द्वासपरिभाषायाम् उदगयने पूर्वपरी पुर्णः-उएनि प्रामावसनाटकः जार्म विद्यादिति सदगयने चाप्य-माचवसे पुराष्टि दति व्याभ्याम् पञ्ची वासस्य पुरातस्क्रम्।

चय "विहितिक्षयया साध्योधमः पुंनी गुणो मतः। प्रतिपिद्धिमधामाध्यः सगुगोऽधर्म खचाते"॥ इति तान्तिकै॰ रिमिश्विम्। "चिरध्वस्तं फलायानं न कर्मातिययं विना? पत्यनेन काम्यस्यसिऽपूर्वे यक्तिकस्पनावभ्यकस्वेगान्यवापि। "खानी खास्तण्डुना एते सर्वे विकित्तिभागिनः। समकानाग्नि-संयोगभागित्वात् प्रतिपयवत् इति स्वानीपुनाकन्यायेन वैदिक सिड्तावच्छेदेनापूर्वं यक्तिकस्पनात् । प्रतिपर्य हम्स-सर्वनादिना स्कुटितत्वेन ज्ञातम्। कार्य्वनियोगापूर्वग्रध्देशचार्य-माणी घात्वर्षपाध्य खर्गादिफलपाधनात्मगुणी धर्म रति प्रभावरेरभिहितम्। तत्क्यमङ्गः पुर्णलमिति चेत् तकानः नयोग्ये भाक्षोऽयं पुर्यशब्दः। तद्या च भष्टयानिकम्। "द्रध्यः कियागुषादीनां धर्मातं सापिययते। तेयामेन्द्रियकत्येऽपि म ताद्र्योण धर्मता। येय: साधनता द्वीषां नित्यं वैदात् प्रतीयते। ताद्येण च धर्मतः तस्मासेन्द्रियगोचरः" इति। ताद्रप्येष खरूपत्वेन। तद्य पुर्णत्वं यया रिक्षादिदीष-रहितलं गोभनचन्द्रादिलञ्च तथा मलिम्बुचादिदापरश्वितल-मपि। तथा च रताकरादिधतं न्यायरतवाकाम्। पुर्खे शुह्रे तञ्च मलिस्तुचगुरुशकाल्यष्ट्रहास्तमयसिंहमकरान्यतर-गुर्वाखिति पूर्वराध्यनागतातिचारिगुरुकवसारपूर्वराशिसङ्कानिः य्यमाणातिचारिगुरुकपचत्रयविक्रगुरुकाष्टाविंग्रतिवासरकम्पा-यङ्गतोत्तरसप्ताष्ठसिंषादित्यगुर्वादित्यपौपादिमास-चतुष्टयान्य-तमेकदिवितदिधिकान्यतमदिनष्ट्याका लिकाष्ट्रश्चुत्तर एक-विसप्ताचान्यतमदिननिधिश्वसमयान्यसमयत्वमिति। एषु प्रमाणं वच्यामः। यत्न नव्यवर्षमानः। पकदित्वितद्धिकान्यतमः दिनदृत्या कालिकहृष्ठा त्ररेकविसप्ताद रूखव उत्तरदिनत्वस्य पूर्वदिननिरूपालात् उत्तरत्वपूर्वत्ययोविर्दतया नानात्वात्।

घतोऽधिमदिनादिलपापिरिति नीविभियेणाभिहितम्। न चैकमेकदिनं वृद्यवच्छेदामवच्छेदाभ्यां भिन्नमिति वाचा विशेषोभूतदिनस्यैकलेन प्रत्यभिन्नानविरोधेन छपाधिमाल-भेदात् भन्यया भगाविक्त्रवृष्ट्वात्म् लाविक्त्रवृष्ट्वाभोदेनेना-न्याभाषस्याय्य इत्तित्वप्रसङ्गादित्याद्य। तम्र इष्टिदिनीत्त-रदिनस्य निपेधविषयत्वे वृष्टिदिनस्य कर्माईता स्थात्। तस्रात् विशेषाया वृष्टेरवोत्तरत्वम्। न तु तदवच्छेदकदिनस्यापीति। तैनैकिसिन् दिने हृद्या तिहनमावत्यागः दितीयहिनादौ तु श्रन्तिमदिनमारभ्य व्याहसप्ताहयोस्यागः। तथा च व्यासः। "नो सन्धा गजिते प्राहुन्नेतोपनयनं बुधाः। न च बुष्टावद्या-काले हृद्या वा सप्तवामरान्"॥ भारतवासरासरानित्यव उपस्थितत्वादृष्टिकालमादाय समाद्दगणना भासमवासरानिति अधिकसत्या च्यवक्रेदार्थम् एतेन विध्यनुवादभिया अधिक-सखा निरस्ता। अत्र वृष्यु त्तरमैव सप्ताइत्यागः एतद्दचनन्तु खतौयादिदिवसीयाकालहृष्ट्यभिप्रायेष । "सतो दिनैनैकदिनं त्याच्यं दितीयेन दिनवयम्। छतीयेन च सप्ताइं त्यजेदकाल-वर्षणे ॥ इति न्यायरक्षपरिग्टहौतवाकोऽपि दिनेन दिन-व्यक्तिवर्षणेन एवं दितीयेनेत्यादी ज्ञेयम्। चतएव न्यायरते-ऽपि दृष्ट्युत्तरत्वमुक्षं न तु दृष्टियुत्तदिनीत्तरत्वमिति। एका-दिदिनष्टितित्वविशेषणं दिनास्यत्व बहुत्वज्ञापनार्थमिति चौप-तिद्यवद्वारिनिर्णये। "भाकालिकी ष्टिमवेष्य गन्ता पदं न राच्छेच्छ्भमासनीच्छन्। चीरं व्रतचापि श्रमाभिलापी कदापि नैव मनसापि क्षयात्"॥ धवनो सन्या गर्जित द्रति चाकासिकी दृष्टिभवेचा द्रवादियवणात्। "भतेऽद्रि पूर्वसभ्यायां वारिदो यदि गर्जति । व्रतन्तव तु नैव स्थादिति धर्मो व्यवस्थितः ॥ इति वचने पूर्वपदमपि कारणताभाष्टकः

लेन परमञ्याद्यावर्शकम्। श्रन्यथा संक्रान्तिवद्वाविनिमित्तः खेन प्रसम्यायां गर्जितेऽपि व्रतवैगुखं स्यात एतेन पूर्विदिने सायंसस्यागर्जनेऽपि परदिने वतनिषेध इति सैधिनसर्तं विन्यमिति। सप्तस्ययोनुपपत्तेः। गौतायां "सयैवैते धुर्वे . निष्टता निमित्तमावं भव सव्यमाचिन्" इतिवत् खरूपास्यानः परं वा पूर्वपदं कामरूपीयनिषयेऽप्येवम्। योगीखरः। "चतुर्मासे निहत्ते तु चक्रपायो समुखिते। अकारहार्ष्ट लानीयात् यावसस्पते इरिः"॥ स्रव यावहिस्समहोसाव द्रित जीसूतवाद्यनः पठित सहीत्सवः फाल्गुनी पूर्णिमा दति व्याखाति च। क्षत्यचिन्तामणिभोजराजव्यवद्वारममुख्य-श्रीधरसमुचयेषु। "वौषादिचतुरी मासान् जेवा दृष्टिरका-खजा। व्रतयन्नादिकं तव पर्जयेत् सप्तवासरान्॥ मार्गाः न्मासात् प्रसृतिसुनयो व्यासवाष्ट्रीकिंगर्गासैवं यावत् प्रवर्षणः विधी निति कालं वद्ना। नाडीजडः स्राज्यनिविक्ति इप्टेरकाकी सासावेती न ग्रमफलदी पौषमाघी न श्रेषाः" भागोदिखवधी पद्ममी नाभिवधी व्यासवाल्मी किमगी दुखब व्यासवाख्यीकिशिया इति जीसूतवाहनः पठिता एतानि राजमार्भएइक्टाचिन्तामणी च। एवं पचवये व्यवस्थित येन सर्वपरियष्टः स्थात् तस्यैव यष्टणिमिति न्यायेनादाः पत्तः ययान् तद्त्तरन्तु पत्तद्यमापदत्यन्तापद्विषयमेवमन्यवापि। षतएव राजमार्तरहो। "उक्तानि प्रतिपिद्यानि पुनःसमावि-तानि च। सापेचनिरपेचाणि श्वतिवाक्यानि की विदैः" इति येपचर्णे मौमांस्यानी इ कोविदेशित हात्यचिनामणौ पाठ:। यदा "सप्टस्य तु विधेनीन्यैर्यमंद्वार द्यते"। इति न्यायेन दोषातिययार्थ एव सामान्यनिपेधे विश्रेपनिषेधः नतापि विशेष अको हहस्पतिना "हृष्टिः करोति दीपं ताव-

क्राकामसभावा राजः। यावत्र भवति याने नरपञ्चरणा-द्विता वसुधा"। कार्यपः "ऋचैकमन्दिरगती यदि , जीव-भान् शक्तोऽस्तगः सुरवरैकगुरुषः सिंहे। नारभ्यते व्रतविवाह ग्टइप्रतिष्ठा चौरादिकर्म गमनागमनच्च धीरै:"। ऋजैक-सन्दिरगताविति विशिष्टं न पृथक्। तथा च। "एकराशि-गती खातामिकर्चविषये यदि । गुर्वादिखी तदा खज्या यज्ञोद्दारादिकाः क्रियाः"। चातुर्मास्यव्रते तु प्रतिप्रसवमाह महाभारते। "चातुर्मास्यवतारक्षमस्तरीऽपि गुरी सगौ। खण्डे वापि तिथी कुर्छात् एवमेव समापनम्"। वराष्ट्रपुराणे। "पाषादृशक्कद्वाद्यां पीर्णमास्यामयापि वा। चातुर्मास्य-वतारमां कुर्छात् कर्कटमंक्षमे। धभावेऽपि तुलार्केऽपि मन्तेण नियमं व्रती। कार्त्तिके शुक्कद्वादम्यां विधिवत्तत् समापयेत्"। महाभारते। "चतुर्दापि दि यचीणे चातुर्मास्यवतं नरः। कात्तिके शक्तपचे तु दादश्यां तत् समापयेत्"। अव दादश्यां यसमापनमुक्तं तत् द्वादय्यारभपच एव। क्वकंटसंक्रमण-तुलासंक्रमारभयोस्तु वृधिकार्के इरेक्याने सति तदिपयध धन्यथा तुलाने समापने काकर्वटमंत्रमणारको थापाड्यारको च चातुर्मास्यानुपपत्तेः। तुलाकंममारको तुलाकं याप्तानुप-पक्षेय । अत्रव पौर्णमास्यारकापचे तत्रैव समापनमुक्तम् । तया च सत्तापुराणम्। "धाषाद्रादि चतुर्मासं प्रातःसायौ भवेद्धरः। विग्नेभ्यो भोजनं दत्वा व्यक्तियां गोप्रदो भवेत्"। तत्र मन्दानाइ सनत्तुमारः। "इदं व्रतं मया देव ग्टहौतं पुरतस्तवः निर्विद्यां सिहिमाश्रीतु प्रसन्ने त्वयि कैभवः रहोतिऽस्मिन् यते देव यद्यपूर्णे लइं स्त्रिये। तको भवत संपूर्णे त्वत्पमादाक्यनादंन"। समाप्ती तु "इदं व्रतं मया देव क्तं प्रौत्यै तव प्रभी। न्यूनं संपूर्णतां यातु विव्पसादाव्यना-

र्दन"। तुलाकमानेऽप्येवं कर्तव्यं वर्षकत्ये नारदीयम्। "अव-तेन चिपेद् यस्तु मासं दामीदरिषयम्। तिर्याक्योगिम ' वाझीति सर्वेषमेवहिष्कतः । व्रतीपवासनियमैः कातिकी यस्य गच्छति । देवो वैमानिकी भूत्वास याति परमां गतिम्"। गोविन्दमानसोहासे नारदीयम्। "न मत्स्यं खाद्येकांसं न कौम्यं नान्यदेव डि। चाएडाली ज्ञायते राजन् कार्तिके मांसभचणात्। यमांसायौ भवेद्यस् गां स ददाच दिच-णाम्"। तथा "नित्यसाने इविद्यान्नि:सेहे पृत्रमत्तवः"। नित्यसाने पात:साने प्रतमकावो दिस्या देया। तथा "यामि-पस्य परित्यारी सवल्या कधिला तथा। एकान्तरे लाजा देधा मलाहारेच यालयः। याकाहारे घृतं द्वात् पात्रं राजत-मेव हि। सर्वेपामप्यभावे तु यद्योक्षकरणं विना। विप्रवाक्या-त्तया सम्बु वतस्योद्यापसचापम् । प्रथा विप्रवची यस्तु रहह्नाति मनुजः श्रमे। अदस्वा दिचिणां वाणि स याति गरक भुवम्"। विप्रवाक्यमिच्छिद्रावधार्णं तद्वि दिचिणारूपं किश्चिद्धस्या याद्यम्। तथा "निष्पावानु।जमाषांय सुप्ते देवे जनाईनै। यो भवयति राजेन्द्र चाण्डासादिधको हिसः। कातिकेत विशेषेण राजमायांस वर्जयेत्। निषावास्निशाहुँ स याव-टाइत नारकी। कद्भानि परीलानि युत्ताकसहितानि ध। न त्यजेत् कार्निके मासि यावदाञ्चत नारकी। एतानि भचयेद् यस्तु सुरो देवे समार्दने। गतजन्मा सिंतं शुखं दहते नाव संगवः"। निष्पावः खेतिशिचिदिति धर्पक्षत्व निष्पायः शिश्निमहभी दिचिषापर्धे प्रसिद्ध इति कत्पत्र । पटोसानि फलानि नपुमकनिरंगात्। यन्यच "पटोलिस्तिकः पर्ः" प्रतामाकोषे पुंमि निदिष्टः। केचित्त कडम्बानि प्रति पर्याना । काष्ट्रमाणि कवस्त्रीहोन पविद्यानीति व्याप्यानि च। यद्यपि

"स वटम्रकोड्स्वरनीपद्धिसमात्त्वक्रानि वा मच्येत्" इति इरितेन सामान्यतः कद्खं निषिद्धं तथाप्यवाधिकदोषाय पुनर्निपिडं मातुलङ्गं वोजपूरकमिति कत्पतरः। सदा-भारते। न भोगादौत्रृपानुपक्रस्य "एतरन्यैस राजेन्द्रै: पूरा मांसं न मचितम्। शारदं की मुदं मासं तत्रस्ते स्वर्गमा प्रयुः। कौमुदन्तु विग्रेपेण ग्रह्मपचं नराधिए। वर्जयेत् सर्वमांसानि धर्मो द्वाच विधीयते"। कीस्दं कार्त्तिकम्। ब्रह्मपुराणे कार्त्तिकमधिकत्य "एकादश्यादिषु तथा तासु पश्चसु राविषु। दिने दिने च स्नातथा भौतलासु मदोषु च! विजितध्या तथा हिंसा मांसभचणमेव च"। सांसभचणनिषेषे का तिकमास-तच्छ्क्षपचतत् पश्चदिनानि शक्ताशक्षमेदात् पापतारतस्यात् वा निषिद्वानि। ब्रह्माण्डपुराणे। "तुलायां तिलतैलैन सायसस्या समागमे। आकाशदीपं यो ददात् सासमेवां निरन्तरम्। सन्यौकाय न्यौपतये सन्योमान् भुवि जायते। दामोदराय नमसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपन्ते पयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे। इति मन्तेष यो द्यात् पदीपं सर्पिरादिना। आकाशे मख्ये वापि स चाचयकल लभेत्। विष्णुवैश्मनि यो दद्यात् कार्त्तिक मासि दीपकम्। अग्निष्टोसस्य फलं प्राप्नीति सानवः"॥ विद्यापतिक्षत-वर्षक्तिये करप्रस्तायाच्च गार्ग्यः। "जीवादित्ये वासे शक्री अर्द्धं द्रमाद्वानाष्ट्रस्थं प्रतिष्ठां खातश्च कुर्यात् । माहस्यं `विवाहादि। खातं पुष्करिखादि। राजमार्नखे हारीत:। "यावां चुडां विवाहे श्रुतिविवर्गिषि प्राममद्मप्रवेगं प्रासादी-द्यानद्यान सुरनरभवनारभविद्याप्रदानम् । मोञ्जीवन्धं प्रतिष्ठां मणियरकनकाधारणं सुर्वते ये। सत्यस्तेपाञ्च सिंहे गुरुदिनकर्यारेकराभिष्योय"। सिंहे गुरुदिनकरयो: सिंहस्यं

गुरी रवी थ एकराशिखयोगुंगपत्तयोरेन तेषाच सिंह इत्यत तेयां इरोध्य इति पाठात्तरम्। इरोध्ये सिंई। वहस्पती। सीमग्रेखराख्यनिवस्ते। "वापीकूपतडागयागमनचौरप्रतिष्ठा-व्रतं विद्यामिन्द्रकार्यवेधन महादानं वनं सेवनम्। तीर्धेः सानविवाष्ठदेवमवनशानादिदेवेचणं दूरेवैव किनीविषुः परिः हरेदस्तं गति भागवि"। दौषिकायाम्। "गुर्वादिखे गुरी सिंह नष्टे ग्रमें मलिम्बुचे। यास्यायने हरी सुप्ते सर्वमर्गाण वर्जयेत्"॥ सर्वेकमीणीति वचनान्तरीक्षप्रातिस्विकनिष्यः कर्मपरं खाद्यात् चन्यया चतिमसद्वापसेः। सददाजः मार्त्तग्रः । "यात्रा विवादः व्रतबस्यवैक्रमप्रासाद-च्डाकरणं हितैपी। नष्टे समी नीपदिशेत्रराणां देवप्रतिष्ठामपि क<sup>र्गी</sup>-विधम्। दिलादां शुभवामीणि कुर्यादस्तमिते सिते। विवार्ष मेखलावमां यात्राच्च परिवर्जचेत्"॥ अत्र यात्राचेति चकारः पूर्ववचनोपात्तसुन्यन्तरोक्षप्रातिस्विकनिषिष्ठकर्माणि ससुर्विः नीति। "वाले शुक्ते सहै शुक्ते नष्टे शुक्ते नीचे नष्टे बाले लीवे कोवे सिंहे मिहादियो कीवादियो। तया मिलम्बे मामि सुराचार्येऽतिचारगे। वाषीसूपतङ्गगदिक्षयाः प्रागु-दितास्यजित्"॥ एवध कालागुरी विदारमा न कुर्यात् तिहिधानश्च विष्णुधभौतिरे। "संग्राप्ते पश्चमे वर्षे धमस्यो लमार्टने। पष्टी प्रतिपद्खेव वर्जीयता तयाष्ट्रमीम् ॥ रिक्तां पश्चदणीर्धेव सीरिमीयादिनत्तया। एवं सुनियिते काली विदारमान्तु कारयेत्। पूजियत्वा दृशिं लद्भीं देवोद्याप सरमतीम्। खिवदास्यकारांय खाख दिदा विशेषतः"॥ हरम्यति:। प्राद्यको गुरुराभीनी यरुणाभिमुखं ग्रिग्रम्। चथापवेत प्रयम हिलाशीभिः प्रपृक्तितम् ॥ चयाधीतस्य दानमावायकम्। तया च मुतिः। "योऽधीत्यार्थियो विद्यां

न प्रयुक्ति म कार्यप्ता स्थात् स्रेयमो द्वारमाहण्यात्" इति तदानस वधायनेन धायाय प्रतिनिद्यापेलेन स । सभा-वत्यतो धीमद्भिनिधन्यः क्रियतेऽपि च इति॥ एवमेव सर्ना। णवं शिष्यस्यापि गुरुषु दानत्वमाष्ट सञ्चष्टारीतः। "एकमध्य-चरं यस्त गुरः गिर्णे निवेदयेत्। पृथिद्यां नास्ति तद्यां यहत्ता मोऽन्यो अवेत्"॥ मिद्रपुराणे। "यय युलान्यतः गासं मंस्कारं प्राप्य वै ग्रुभम्। यन्यस्य जनयेत् कीतिं गुर्गः म बद्धारा भवेत्॥ विकार्याच्या भौद्यात् योऽपि गास्त-मनुत्तमम्। म याति नरकं घोरमधयं भौमदर्शनम्॥ राजमान्तरहे देवनः। "धाले ष्टहे तथैवास्ते कुरते देखः मन्त्रिण। उदाहितायां कन्यायां दम्पत्योरेकनामनम् ॥ यमाक दति ग्रीयः। राज्ञमार्तण्डे। "मिष्ठे गुरौ परिणीता पतिमात्मातमात्मजान् इन्ति। क्रमयस्तियु पिवादियु विशष्ठ-गर्गाद्यः प्राष्टुः"॥ पिवादिपु सिंहघट कमधापूर्वेफ नगुन्य तर-फरगुनौप्रथमपादेषु। प्रतिप्रसबमाद्य शातातपः। "माघ्यां यदि सघा नास्ति सिंहे गुरुरकारणम्"। तत्रैव हैमाद्रिष्टत-माग्डयवचनम्। "युतिवेधजातकामग्रागनच्डादिकः सर्वः। रविभवनस्थे जीवे कार्यो धर्को विवाहस्तु"। मार्घा मधा-योगे तु ऋक्षेक्रमन्द्रगतावित्यादिना सर्वकर्म निपेधात्। चयैवं विवाहोऽपि य्यते। तथा च रालमार्तग्डे दचः। "गुरी हरिखेन विवाहमाहुई रितगर्गममुखा मुनीन्द्राः। यदा न माघी मघसंयुता स्थात् तदा च कन्योद्दहन वदन्ति"॥ रत्यच मार्घां मघायोगाभावेऽपि श्वतिवैधादिमघाखेऽपि गुरी भवति विवाहस्य गुरोर्भघापरित्यागादेव तथा च माण्डव्यः। "मधा ऋसं परित्यस्य यदा सिंहे गुवर्भवेत्। तनान्दे कान्यका चोढ़ा सुभगा सुप्रिया भवेत्"॥ वाक्यायनः। "याह्रो-

दादपतिष्ठादिग्टरच्डवतादिकम्। यत्नतो वर्जयेसेव जीवे वकातिचारगे। को सिंभद्रः प्रतिष्ठाया भयं चौरास्त्रयाध्वनि। चुडोदारी भवेःमृत्युर्वते सामिभय स्ट्री। चतिचारे विषयः स्यात् वको पत्तचतुष्टयम्। न कुर्यात्तव यावादिगुरीवंकाति-चारयो "। गर्गः। "गुरोवंक्षातिचारे च वर्जयेत्तदनन्तरम्। यज्ञवतिवाष्टादावष्टावित्रातिवासरान्"। भागउद्यः। "यदा वक्षातिचाराच्या राशिंगच्छिति वाक्पतिः। दिनानि सप्तः विद्यानि खक्का कर्मा समाचरेत्"॥ चवापि पूर्वे. पूर्वे: पचः चेयान् राशि राश्वन्तरम् चन्यया धर्यं स्थात्। चतएव न्यायरक्षेनापि पूर्वराशिगसिखमाणातिचारगुरुके इत्युक्तम्। हिष्ट्राजमार्त्तएडे। "वक्रातिचारीपगताः कुञाद्या यदान्य-राशी 'परिवर्जनीयाः । यद्याक्रमस्थाः स्वग्टहस्थिता वा न वर्जनीया यवना घदम्ति"॥ व्यवद्वारसमुश्चे क्रत्यचिन्तामणी प सारीतः। "कलातिचारं यदि पूर्वराशिं नायाति मन्द्रो विवुधाधिपानाम्। यान विवाच व्रतवस्वरीच सबै तदा इन्ति मतं सुनीनाम्॥ चतिचार गते कीवे हपे हिस्यक कुभयो:। यत्रीदारादिक कुर्यात्तव काली न लुप्यते"॥ कत्यकस्प-लतायां वाचसातिभित्रीः "पूर्वरागि यदात्यका भपूर्णे वसार गुरा। लुप्तकालः स विश्वेयः परगेष्ठ गतो यदा ॥ भौने मेपे ष्टपे चैव तथा मिथुनकन्ययोः। चतिचाराच दीप, स्थान्नियतं काससीपन."॥ हैतनिर्णये। "कन्याष्ट्रियकमेपेषु सन्मधे च भपे हपे। चतिचारेषु कर्तव्य विवाहादि वुषै: मदा इति पसूनकमिल्कम्। वराष्ट्रमष्टितायाम्। अतिचार गते लोबस्यवेष कुरते स्थितिम्। तदा महातिचारः स्थात् सुप्त-मवसार्कियः। अतिचारेण यो राशिर्लीहितो देवमन्तिणा। तदाची वयारो लुप्तो घोऽनहें, भवकमास ॥ तल वर्षे कमीणो तुप्तवात् वसारी तुप्त इति तदाइ यो नई इति। भुजवसं भीमादिनिषयेष्। "शुभं भवनमासाद्य यदातिक्रमते गुरुः। अत्र संवर्ष्टिता कन्या सुखं भर्तुः प्रमोदते"। दीपिकायाम्। "विकोणजाया धनसाभरायी वक्राप्तिचारेण गुरुः प्रयाति। यदा तदा प्राष्ट्र ग्रुभे विलग्ने हिताय पाणियहणं विशिष्टः"॥ विकोणं नवपश्चकम् । जायास्प्रममं धनं दितीयं लाभ एकार्श्रग्रहम्। रतकोषे। "पन्नो द्रशाहानि तथा विपची मासविभागः खत् पट्च मासाः। एपीऽति-चारः कथितो ग्रष्ठाणां भौमादिकानां परतस्तु चारः" ॥ प्रतिष्ठाकाण्डकत्पतरी देवीपुराणम्। "यदा जीवे स्थिते सिद्दे तथैव सकरस्थिते। देवारामतडागादिपुरोद्यानग्टदाणि च॥ विवादादिमहाभाग भयदानि विनिर्दिगेत्॥ यदा हाद्यानी जीवे श्रष्टमेवाय भास्तरे। प्रतिष्ठा कारिता विण्यो-मंद्राभयकरी मता"। क्रत्यचिन्तामणी देवोपुराणम्। "सिंह-सस्य गुरां गुक्त सर्वारकोषु वर्जयेत्। आरक्षश्च न मिर्नेत महाभयकारं भवेत्॥ कूपारामतडागेषु पुरोद्यानग्रहेषु च। सिंइस्यं सकारस्यञ्च गुरां यत्नेन वर्जयेत्॥ कारकी व्रजते नाग्रं सन्तानः चीयतेऽचिरात्"। गुणिसर्वस्त्र। मकरगुरी प्रवर्त्तकं नरसिंहपुराणम्। "विवाषो नैव कर्त्तव्यः सिंहमस्ये गुरी यदा। मकरस्ये च तलार्यं कत्याणं सर्वतो वृधै."। तथा देवीपुराणम्। "सकरस्यो यदा जीवी वर्जयेत् पश्चमाः ग्रवम्। ग्रेपेव्यपि च भागेषु विवाद्यः ग्रोभनो मतः"। एत-ष्ठाक्य व्यवद्वारपरिग्टचीतमिति क्रत्यचित्रामिणः। एतेनैतद-नाकर भवति किन्तु सैथिलानामनाचारः इति खरमीवः गभ्यते। अतएव रहाविस्यादियं नीचस्य गुरावेव दोय उताः। गुरोनीच्छलमपि विभागमकररागः पञ्चमांगं यावदिति

च्योतिसास्त्रे ज्ञेयम्। रत्नावत्याम्। "नौचस्यः सिंहमो वा यदा भवति गुरु: सुर्यग्रमी च लीन:। संयुक्तो वा यदि स्थात् दगगतपृणिना चोणक्षीऽय बालः। यात्रा गेहं विवाही व्रतममरग्रहं यञ्चचडादि सर्वं वापो चोद्यानकृपं न भवति श्वभदं यद् यदिष्टञ्च लोवे"। स्वीपतिरत्नमानायां क्षत्यचिन्ता-मणी च वात्ताः। "प्राखाधिपे विलिनि केन्द्रगतेऽययासिन् वारेऽस्य चोपनयनं कथितं दिजानाम्। नीचस्थितेऽरिग्टइ-गेऽय पराजिते वा जीवे भृगी व्रतविधिः स्मृतिकर्माहोनः"। ष्यस्य शाखाधिपस्य तेन सामगानां कुजवारेऽस्युपनयनं साम-धिधाधियो भोम प्रशासलात्। कामक्षीय निवन्धे स्मृति-मागर देशोपुराणम्। "सकरस्यो यदा जीवस्तदा विंशहिनं चजित्। त्यक्षातु पष्टिदियमं कुर्यात् कर्माणि मानवः"। रायमुक्तरक्योति:कालकीमुद्याम्। यत्त् "सकरस्यं गुर्न यतात् मिष्ठवत् परिवर्जयेत्। देवारामतडारीषु पुरोद्यान-ग्रहिपु च"। इत्यादि देवसयचनं तदिषि सिंहदत् परिवर्जयी-दिखनेन यथा मिष्ठस्थस्य गुरोस्यन्यता तथा सक्षवस्यस्यापीति गस्यते। मिंहस्यगुरोर्भघायुक्तमाध्यां मत्याभय त्याज्यता चलो सकरस्यस्यापि गुरोस्तस्यामेष त्याच्यता दत्यवगस्यते। चतएव देवीपुराणम्। "यथा जीवस्थिते सिंहे तथैव सकरस्थित"। इत्यव यथा तथोपादानं तद्धि देशविशेष एथ दूपणम्। तथा कि "गण्डवया छत्तरे तीरे गिरिराजस्य दक्षिण । सिंहस्यं अकरस्यश्च गुर्क यसेन वजेयेत्"। चनएयान्यदेशाभिप्रायेण। भोमपराक्षम । ''वाषीकूषतडागादि निषदं मिहरी गुरी। मकरस्ये तु तत्कार्यः न दोषः कानजोषजः। कार्यः गकररी लोबे विवाधादा दिनं गुधेः। नतु भिंदगते हो वे कुर्व्या हिप्रः क्षयत्तन"। यस पूर्वितानरसिंहपुराचवचने सक्षरसमाने विवाह उता:। श्रतएत तसारभूतं व्यवहारमानं विवचितं श्रीपतिनात्मवृह्यति प्रतिश्राय समयाश्रद्धौ मकरस्यष्ट्रस्यति-दोपमनिभिधाय केवसम्पनयने नीचस्यवृहस्यनिधिहः। एतेन हैतनिर्णये औदतिसंहितायां व्यवहारीपहंहितमेव वचनं न च व्यवद्वारविरुद्धमिति। एतेन मकरस्यगुर्वादी विवादादि-विधायकं वचनं तदाचारविरहादनादरणीयम्। इति वाच-स्प्रतिमित्रीतं हियम्। प्रतिष्ठाच्यतिरिक्तमकरस्यगुरुकमीनि-पेधकयौपितिग्रयविर्द्धात्। प्रथः तिविपेधकस्निवचनानि प्रामाणिकान्तरधृतखादुपादेयानीति चेत् तर्हि प्रतिप्रसव-वचनान्यपि तथा। एवञ्चातिचारविवाष्टादिनिपेधकवचनानि यीपतिमा सिखितानि न तु तद्पवादकामीति। तेन तान्य-प्रामाणिकानीति यदुक्तं तद्पि इयम्। प्रकृते पृष्टिक्यम्। स्तीम्यात्। भुजवनभीम। "जीवीऽकेंण युतः करीति मरणं वानाश्वकी भागुरि:। नचनैकागतो वदन्ति यवनाः पादः स्थितो देवनः। प्रायो गर्गपरागरादिसुनयो नेष्क्रित चास्तं गते तसादस्तमिते सुरेन्द्रसिघी नेष्टं विवादादिकम्"॥ चौपतिरत्नमानायाम्। "प्रागुप्ततः शिशुरइस्तितयं सितः स्यात् प्रयाद्याद्वभितपद्यदिनानि दृदः। प्राक्षदमेव कथितोः रविविधिष्ठगरीं जीवस्य पचमपि हहिगिश्चिवण्यं."। हहिगिश-लागलेति याचित पाठः । सितः ग्रमः इर प्रयादिगि। राजमार्त्तरहै। "भवेत् सस्यागतः पदात् चम्तमेषान् दिन-वयम्। दिनानि यश्च पूर्वेश तत्शते घम्मे वर्जयेत्। यासे युद्धे च मञ्जाभी चतुःपचित्रवासरान्। सीवे च भागवे चैय विवासादिय वर्तयेत्। वाले एडी च सम्यामां नटी च धग्-मन्दने। दुर्भगा चासती यन्या गत्युयुक्ता फल फमात्। बारी घटभंगा नारी एहं भटपन्ना भवेत्। सटेच स्था-

माम्रोति सर्वमेयं गुराविष्ण ॥ हारे पञ्च दिनत्वकी त्नमध्याः यिषयम्। स्योतिःपरागरेष। सुगौः पादास्तेऽपि दभाष-विधानात् एवं गुराविष । रक्षमालायां पचिविधानात् तयो-र्भते न सन्यायाः पृयङ्निर्देशोऽपि ष्टब्खेनव तद्प्रइणात्। दीपिकायाम्। "गुर्वादित्ये गुरी सिंहे नष्टे शक्ते मलिस्इचि। याग्यायने हरी सप्ते सर्वकर्माणि वर्जयेत्"॥ तत्रैव "नी शकास्तेऽष्टमेऽकें गुरुसिश्तरको लक्तमासेऽष्टमेन्दी विष्टी मासे मलाय्ये कुलगगिदिवसे जमातारामु चाघ। नाडौनस्य-होने गुरुरविरजनीनाथताराविश्वही प्रातः कार्था परीचा हितनुचरप्रहांशोदये शस्तन्तरने"॥ न्योतिषे। "सिष्ठस्ये मकरस्ये च जीये चास्त्रमिते तथा। सिंहस्ये तुरवी नेव परीचा श्रास्ति बुधैः"॥ गर्गः। "दाइ दिशाखैव घराप्रकम्पे वज्र-प्रपाति इच विदारणे वा। धुमे तथा पाश्रकरप्रपाति न कार्ये-न्याष्ट्रस्थितारिकार्यम्। उल्लापाते च निर्घाते तथैवाकान-वर्षे। किंद्रे स्थें विनिर्दिष्टे न कुर्याकाइनक्रियाम्। धूमकेती समुत्यक्षे यहणे चन्द्रस्थियोः॥ यहाणां सद्गरे चैव न कुर्धामाङ्गल क्रियाम्। हिस्यां वा विस्यां वा दक्षा गगन-मण्डले। राती शक्तधनुरीव मङ्गलानि विवज्येत्। दिग्दाहे दिनमेकच ग्रहे सप्तदिनानि च। भूमिकमे च सभाते टिनानि च। बज्रपाते दिनमेकं वर्जयेत् सर्वकर्मास्"॥ कार्यपः। "हइच्छिखा च सूक्षापा रक्षनोनशिखोक्तना। पीर्षी च प्रमाणेन जल्का नानाविधा स्मृता ॥ यदान्तरीचे बनवान् मारती मरताहतः। यतत्यधः स निर्धातो जायते बाधुमकावः"॥ सगन्द इति शेषः। भोजराजः। "प्रहे रवीन्दी रविनमकस्ये केतृहमोल्कापतनादिदीये। सते दयाः

इानि वदन्ति तज्जास्ययोदयाद्यानि वदन्ति केचित्"॥ केतवय शिखावन्तो ज्योतीं विस्थाख्यातरूपाचि। यहणकाली भूकम्पोल्कापातवज्ञपातादिदोषसमाद्वारे वयोदशाहम् शशु-षम्। किश्चिद्रनतसमाधारेऽपि दशाहम्। ग्रहणाद्येकैक-दोपे वाइमिति वाचसातिमिथाः। अत्र स्मृतिसागर्भृत-सारमंग्रहे। राज्यादिकमदासिंही यन्नदानतपःसु छ। होम-स्वाध्याययोयेव वर्जयेद्यरात्रकम्॥ लच्छोमे म्हादाने वर्जयेत् सोमने मखे। तप:साध्याययोश्वैव विरास्भे वयोद्य । इति व्यवस्था चन्यव। "उल्कापाते सुवः कम्पे चकालवर्षगर्जिते। वज्जकेतूहमोत्पाते ग्रइणे चन्द्रसूर्ययोः॥ प्रयाणमु स्वजित् चव: मप्तराचमत: परम्। ब्राह्मण: चित्रयो वैश्यस्यजेत् कर्म विरावनम्॥ शूद्रस्यक्षा चैकरावं सर्वकर्म समाचरेत्"॥ पराधरः। "प्रयाणे सप्तराचं स्थात् विरावं व्रतबन्धने। एक-रावं परिवाच्य कुर्यात् पाणिग्रहं ग्रहे ॥ सगुः। "कर्षे राजनि मप्ताहो बाह्मणानां व्यवहरूया। शुद्रसाईदिनं प्रोर्ताः सर्वकार्योषु वै सृगुः"॥ शूद्रस्थापहिषयम्। कम्प इत्युप-लचणम्। यञ्चणादावध्येवमेवान्यवैकव पठितत्वात्। भोज-देवव्यवद्वारसमुद्धये। "सर्वे कार्य्यं न कुर्वोत गुरी सिंहेऽस्तरी-ऽपि च । व्रतदोचे न कुर्वोत तमोयुक्ते व्रहस्पती ॥ तमी-युक्ते राष्ट्रयुक्ते। व्रतदीचे दति नित्येतरकर्मीयलचणभ्।तथा च रमृतिसागरसारे ज्योतिषम्। "एकराशौ स्थितौ स्थातां यदि राष्ट्रष्टस्यती। विवादव्रतयद्मादि सर्वन्तव विवर्जयेत्यः सलमासाद्यपक्तस्य भविष्य। "ऋघमेदेऽप्येकराग्री सम्पर्को यदि वानयोः। गुरोः राष्ट्रोरिप तथा त्यजिद्धिः च संभयः ॥ चव गुरोर्लक्तितलं हेतु:। तदाया "यव यव स्थितो जीव-स्तमोर्यागेन खब्बते। उपहासाय किंन स्यादससहो मनी-

पिणाम्"॥ इति। "पनिष्टे विविधीत्पाते सिंडिकास्तु-दर्गने। सप्तरावं न कुर्धीत याची हा हा दिसह सम् ॥ इति दौषिकायामनिष्टमित्यभिधानात्। सनिष्टजनकोत्पात एव सर्वकर्मानधिकारः। पूर्वसिखितभोजराजवचर्नऽपि। "केतूर द्रमोल्कापातनादिदोषे" इति दोषञ्चनक एव तथोपरागे मण्ड-लतः गुभेऽवि यावानिषेधाय सिंहिकेति प्रयगुपादानम्। स्रव 'विवाहादाविष सप्तराविषिधात् पराशरोक्तस्वस्वकासनिषेध थापहिषय:। तन।निष्टननके भूमिकस्पादी न दोष:। यतएव पट्कालिकायाम्। वराहिण उत्पातप्रकरणे प्रायः पदमिश-दितम्। तया च यः प्रक्तिविषयासः प्रायः संचेवतः स उत्पातः चितियोमदियनातो यथोत्तरं गुरुतरो भवति प्राय इति ऋलादिप्रयुक्तविपयासव्याष्ट्रस्ययं यदाइ "ये चन दोषं जनयन्यसातासान् ऋतुस्यभावसतान्। ऋषिपुर्वेः सतिः श्चाकैर्विदादेतैः ससामोतौः। तथा च मत्यपुराणम् "वद्धा-श्रानिमहोकस्पे सस्या निर्घातनिस्त्रनाः। परिवेशरजी धूम-रक्ताकास्त्रमयोदयाः॥ इमेग्योऽय रगम्नेष्टमधुपुष्पणनोद्रमाः। गोपिचिमदष्टिय ियवाय सधुमाधवे॥ तारोस्कापातकलुदं कपिलार्केन्दुमण्डलम्। भनमिन्दलनं स्कीटं धूमरेण्निरा-कुलम्। रक्तपद्मार्षणासस्या नभः सुन्धार्णवीपसम्॥ मरिता-खाख्यसंगोपं द्वा योग्मे ग्रुसं वदेत्। शक्रायुषपरीवेशौ विद्युच्छ्यक्तविरोहणम्॥ कामोद्वर्तनवैष्ठत्यं रसनं द्रारणं चिते:। नदादपानसस्मां हृष्ट्यासरणप्रवाः॥ पतनञ्चाद्रि-नीं विभाग ने भयाषच्या दिव्यस्तीभूतगत्वविभागाः इतदर्गनम् ॥ यसनचवताराणां दर्शनन्तु दिवास्वरे । शीतः वादिनानर्थोषो वनपर्वतसानुषु। श्रस्यष्टहीरसोत्पत्तिरपापाः गरि सताः । भौतानित्तत्वारत्वं नदंनं सुगपित्तणाम्।

रची यचादि सत्वानां दर्शनं वागमानुषी। दिगौ धुमाध-काराय भ्रालमा वनपर्वताः उचैः सूर्योदयास्तवं हमन्ते श्रीमना मताः। इिमपाता निस्तीत्पात विरूषाद्वतदर्शनम्। दृष्ट्राञ्चनाभमाकाशं तारीत्कापातिपञ्चरम्। चिवागर्भोद्भवा स्वीषु गोजाध्व सगपिचणाम्। पत्नाद्धरस्तानाच विकाराः शिशिरेशुभाः। ऋतुस्त्रभावना होते दृष्टा सत्ती श्रभावहाः। च्टतावन्यव चीत्पाता दृष्टास्ते सगदार्षाः। उयातानास्त या गाया शिश्रुनाञ्चेष्टितञ्च यत्। स्तियो यच प्रभापन्ते तस्य नास्ति व्यतिक्रमः। पूर्वश्वरति देवेषु पयाद्गच्छति सानु-षान्। नादेशिता वाग्वदति सत्याद्योपा सरखती"। यतएव सनुनापि। "निर्घाते भूसिचलने च्योतिपाश्चीपसर्पणे। एतानाकासिकान् विद्यादनध्यायानृताविषि"। श्रवानध्यय-नार्यं स्तावपीत्यं ज्ञम्। छत्पाते दोवभङ्गमाष्ठ योपतिव्यव-ष्ठारनिवसे। "यद्य दिवसचयमध्ये सृदुजलपतनं यदा स्थात् तदीत्पातदोपं शमयेदिखाइराचार्था."॥ वाईसत्ये "शम-यन्यासप्ताद्वात् कम्पादिकत निमित्तमार्खेव! अतिवर्पणीप-वासवतदीचाजणस्वनानि"। विष्युधमीत्तरे। "शेतेऽच चतुरी मासान् यावद्भवति कात्तिकः। विशिष्टान पवर्तनी तदा यन्नादिकाः क्रियाः। नाभिपेची नृपयैत्रे नाधिमासे कदाचन। मिसुसे चतथा छाणी विशिधात् प्रावृपि हिज"। भिषयोत्तरे। "सप्ते मिय जगदाये केशव गर्डधने। निष्ट-र्त्तले क्रिया. सर्वाद्यातुर्वर्ग्यस्य भारत। विवादव्यवन्यादि चुडा संस्कारदो चणम् । यज्ञ ग्रहम वैगादि दाना चैनमित्र । नम्। पुर्यानियानिकामाँचि वज्ञयेद्धियायने । सर्वा-स्तत्तद्वाक्यगणिताः पूर्वप्रातिस्विकीसाः। एवं पुर्यानीति। षात्यया विभीषवचनवैयर्पाहिति वदन्ति । भोजराज, ।

''वाषो-तडाग-गटन्न-गोपुर-देवसद्म-प्रासादवारिमठकूपविवाहर्ये त्यान्। कृतुं यथागमविधानविधिविधाता प्रोक्षस्तयेव वयः यामि समासतीऽ इस् । सप्ते हरी प्रकटशेषफणोषधाने सद्यौ-कराजपरिमार्जितपादपद्मे। मीने रवी भनुषि चास्तिमिते तथेच्ये वासुक्रियाविधिरसौ सुनिभिनिधिदः"। इच्यो गुरुः। नारदः। "वापीकूपतडागादि प्रतिष्ठायद्यक्तमे च। म कुर्याः नासमासे च महादानवतानि च"। दानपदं सामान्यदानः परमिति वद्ति। तद्या च रस्तिः। "यस्ते सन्धागते वाले भगो माधि मलिख्नेचे। देवतादर्शनं दानं महादानं विवर्जियेत्"। सप्तुष्टारीतः। "स्गावस्ते गुरी सिंहे सुर्वाः दिखे मिलिक्षे । त्यनेत् दानं महादानं वतं देवविसी-कानम्"। एतद्दचनद्वयं काल्बिवेकेऽपि। चव दानमहरू दानयो रूपादानात्। किन्त्रियान् विशेषः। मरीचवच-नोक्षरोगादी दानमेव प्रतिप्रसूतं न तु महादानमिति। नारा-यणोपाध्यायस्त । सुमुच्या त्यनभिम हितफनदानम् । मन मासेऽपि कत्तव्यमेव महादानन्वनभिमहितफलमपि नेत्याहु:। श्लाचिन्तामणौ। दानमित्वव यानमिति पठन्ति। यात्रामित्यर्थः । प्रागुक्तच्योतिः पराग्रदवचने मनमासनिषि-धगणे दानपरं महादानपरिमिति ग्रूलपाणिः। षवाकालि-कमनध्याय इति स च्योतिः स्यादमध्याय इति वच्नयोः सन्यागर्जनप्रकरणीययोविरोध. शक्ताश्वतभेदेन परिहरणीय दति केचित् उल्कासहचरितलेन महागर्जनविषयम् आका निकसिति। यथा मनुः। "विदात्म्दनितन्नजेषु महोल्काः नाच सम्रवेण इति वस्वर्थः। एतद्यनं तिथितस्वे विवृतम्। कालाकाचिषय इति इलायुधः। गर्नोदि समाद्वारविषय-माकानिकमिलपरे। याकानिक निमित्तमारमा परदिने तत्कासपर्यन्तं सच्योतिः सौरनचवान्यतरच्योतिया सङ्घ वर्त्तन्ते दिनमाव्रं राविमावश्चेत्यर्थः।

भध रोगे दानादि। शातातपीयकर्मविपाके। "महा-पातकां चिद्धं सप्तजनामु जायते। एपपापोद्धव पञ्च वीणि पापसमुद्भवम्। दुष्कर्भजा नृणां रोगा यान्ति चैव क्रमा-च्छमम्। जपैः सुराधनैहीमैद्निसीपां शमी भवेत्। पूर्व-जनाक्षतं पापं नरकस्य परिचये। वाधते व्याधिक्षेण तस्य क्षच्छादिभिः शमः। कुष्ठश्व राजयस्मा च प्रमेघो घष्टणौ तथा। मूवकच्छात्रमरीकाशा प्रतिसारभगन्दरी। द्ष्टवणं गण्डमाला पचाघातोऽधिनायनम्। इत्येवमादयो रोगा महापापोइवाः रसताः। जनदिरयक्षत् भ्रोष्ठ मूलरोगव्रणानि च। खासा-जोर्णज्वरक्टिश्नममोद्दगलपदाः। स्नार्षद्विसर्पाद्या उप-पातोद्भवा गदाः। दण्डावतामकस्विववपुःकस्पविचिकाः। वस्मीकपुर्वरीकाचा रोगाः पापससुद्धवाः"। तथा "पर्य भाद्या नृषां रीगा श्वतिपापाद्ववन्ति हि। भन्ये च वहुधा रोगा जायन्ते रोगसद्वराः। उचन्ते हि निदान।मि प्राय-थितानि च क्रमात्। महापापेषु सर्वं स्थात् तदर्वतापपातके। द्यात् पापेषु पष्ठांशं कल्पं यथाधिवसावसम्। सम्भूचा-वचं पुष्पं पददादेवतार्चने। ददात् दिजमहस्राय मिष्टाद विजमोजने। गीदानं च सवसा गीः सुगीना च पर्यास्वनी"। गोदानसिंधक्तत्यादि पुराणम्। "परोगरीव सायेत तेजसी च भवेदरः"। मनुः। "बोपधान्यगदो विद्याहेदो च विद्यिधा स्थिति:। तपसेव प्रसिद्धास्ति तपस्तिपान्तु साधनम्"। यगदौ मैक्डयम्। ग्रातातपः। यया निटानं दीपाताः कर्मजा हित्तिविना। सहारमो। स्पर्के हिताविनामी दीपकर्मणः"। सारावलाम्। "पपामिनो मीलवतो नरापः सद्तिमात्रो

विजितेन्द्रियाणाम्। एवं विधानामिदमायुरस चिन्यं सदा व्रद्वसुनिप्रवाद."। व्यक्तमाह याज्ञवल्काः। "वच्योधारस्रेष्ठ-योगाद् यया दौपस्य मस्थिति.। विक्रियापि च दृष्टैवमकाले प्राणसमय."। यथात्वविक्तसवस्योदि सन्त्वे प्रचण्डवातादिना दीपनागस्यया सत्यवाय्वि प्रग्रमकर्मवगासोकादुर्गवर्मयुदा-षयाशिवादिना प्राणमाश्र दति। भाष्वेदे। "यया श्रास्त्रश्च निर्णीतो यथा व्याधि चिकिस्मितः। न ग्रमं याति यो व्याधिः स चियः कर्मजी व्धैः"। तत् चिकिसायां भीषटाचायः "दानैदेयादिभिरिष हिजदेवतागोगुर्वर्चनप्रणतिभिद्य जपैन्त-पीभि । इत्युक्त पुष्यनिचयैष्पचौयमानाः प्राक्रपापना यदि न्ज प्रथम प्रयान्ति"। धतएव हिमाद्रिक्षतद्रानखण्डे तत्त-द्रोगे तत्तद्दानाभिधानपूर्वक भगवद्याव्यम्। "स्वर्णदानं सर्वेषा रोगाणा नाशकारणम्। तसात् सर्वेष्रयदेन कर्त्तव्य कमलोद्धव"। कर्मदोषीभयजन्यवाधी च। "दानादिभि. कर्मभरोपधोभि कर्मचये दोषपरिचये च। सिध्यन्ति ये यद्यवता कथाञ्चत् ते कर्मदीपप्रभवा गदास्तु"। चतएवोक्तम्। "प्रायिसत्तमक्षतात् कर्मकुर्यान किञ्चन। श्रानिस्तीर्णमघ यस्रात् हिगुण परिपचाते"। केथनदोपजे तु। "खहेतुदुष्टे रिनलादिदापैरुपञ्जतैः खेषु परिस्वनिद्धि । भवन्ति ये प्राण-स्ता विकारास्रे दोषजा भेषजगुडिसाध्या."।

श्रय समुज्ञ क्यम्। मन्। "द्र चामुव वा काम्य प्रवृत्त कर्म कीर्त्तते। निष्काम ज्ञानपूर्वन्तु निव्ततमुपदिश्वते। प्रवृत्त कर्म ससेय्य देवानामिति सार्ष्टिताम्। निवृत्त स्यामान् नन्तु भूतान्वत्येति पञ्च वे"। कामनापूर्वक कर्म शरीर प्रवृत्ति-श्रित्वात् प्रवृत्त तदेव कर्म कामनार्ष्टितम्। पुनर्वद्याज्ञाना भ्यासपूर्वक ससार्शिव्हत्तिहेतुत्वात् निवृत्तसुच्यते। सार्ष्टिता

समानगतिताम्। ऋषेर्गत्यर्थात् पश्चभूतान्यत्येति श्रतिक्रामित मोचं प्राप्नोतीत्वर्धः। विष्णुपुराणम्। "विधिष्टफलदा काम्या निण्यासाणां विस्तिदा"। भगवहोतापि। 'युक्तः कर्म-फलं त्यक्वा प्रान्तिमाम्रोति नैष्ठिकौम्। भयुक्तः कामकारेण फले महो निवधाते"। युक्ष ईखराय कर्माणि न मलाय द्रत्येव समाहित:। फलं त्यह्या कर्माण कुर्वित्रति श्रेपः। गानि मोचाखां नैष्ठिकी निष्ठायां भवाम्। सलग्रहिद्यान-प्राप्तिसर्वेकक्षंस्यासज्ञाननिष्ठाक्षमेषिति वाक्यमिति प्रेपः। भयुत्तस्तद्दद्दिर्मुखः कामकारेण कामप्रेरिततया कामतः प्रवृत्तियावत्। फले सक्तः सम फलाय इदं कर्म करो-मौत्येयं फले सक्तो नियतं बन्धं प्राप्नोति तथा चार्जुनं प्रति भगवद्वाकाम्। ''मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्याता चेतसा। निरासी निर्ममो भूला युध्यस विगतजारः"। सत्रस्य निचिय . समर्घाद्रति यावत्। अध्यातम चेतसा विवेक बुद्धाः असंकर्ताः र्श्यस्य भृत्यवत् करोमौत्यनया बुह्या निरामीस्यत्तकामः सङ्ख्यः। अतएव निर्ममी ममतारहितः। विगतच्चरः विगतसन्तापः। व्यक्तमाइ स एव। ''यत् करोपि यदशासि यत् जुहोपि ददासि यत्। यत् तपस्यसि कौन्तेय तत् कुह्व सद्पेयम्"। विष्णुपुराणे। "कर्माग्यसङ्ख्यततत् फलानि सन्यस्य विणी परमात्मरूपे। भवाप्य तां कर्ममहौमनन्ते तिसिह्मयं ते त्वमनाः प्रयान्ति"। तां कर्ममहीं भारतवर्ष-रूपाम्। एकादशस्त्रस्थे। 'विदोक्तमेव कुर्वाणो नि:सद्गी-उपितुमीखरे। नैष्कम्यां समते सिडिं रोचनार्था फलयुतिः"। वेदोक्तमेव कुर्वाणो न तु निदिद्यम्। ननु कर्मणि क्रियमाणे तिसिक्षासिक्तिस्तत् फलक्ष स्थात् न तु नैस्कस्येरूपा फलसिंहि:। यतएवाइ नि:सङ्घ इति यनिभिनिवेशितवान् ईखरेऽपित

न फलोइ ग्रोन। यय फलस्य शुतत्वात् कर्मणि क्षते फलं भवलोव इत्यत याह रोचनार्धा इति। कर्मणि रचुत्पाद-नार्यो चतपव पत्रेव "फलशुतिरियं नृणां नाश्रयो शेवनं परम्। येथो विवसया प्रोक्षायया भेषस्यरो चनम्। उत्-पस्येव हि कामेषु प्राणेषु खजनेषु च। चामक्रमनमी मर्त्या थातानोऽनर्यद्वेतुषु। नतानविद्धः खार्यं भ्राम्यतो हजिनाः ध्वनि। कयं युद्धात् पुनस्तेषु तांस्तमो विश्वतो व्षः। एवं व्यवस्थितं के चिद्विद्वाय कु वुद्धयः। फल श्रुतिं कु सुमितां न वेदन्ना वदन्ति हि"॥ इयं फलशुतिने श्रेयः परमपुर्वायं-परा न भवति किन्तु विदिभ्खानां मोचविवचया प्रवास्तर-कर्मफर्नै: कर्मसु क्यत्यादनमात्रम्। यथा सैषच्ये श्रीषधे रचित्रादनम्। यथा "पिव निस्तं प्रदास्यामि जलु ते खण्ड-सिंडकान्। पिनेष मुक्तः पिवति तिक्तमप्यतिवासकाः"॥ ष्यव तिक्षानियानिया न खलु खण्डादिसाभ एव प्रयो- . जनम्। किन्दारोग्यम्। तथा वेदोऽप्यवान्तरफर्नैः प्रनोभयन् मोचायैव कर्माणि विधने। मनुकर्मकाण्डे मोचस्य नामापि न य्यते कुत एवं व्याख्यायते। यथा युतस्येवाघटनादित्या इ छत्त्वि दाभ्याम् उत्पच्या स्वभावत एव कामेषु पञ्चादिष् प्राचेष् आयुरिन्दियवस्रवोर्यादिषु स्वजनेषु पुष्ठदारादिष्। परिपाकतो दु:खहितुप चतस्तान् खार्घ परमसुखमविद्यः श्रजानती यतो न तान् प्रद्वीभूतान् बुधो वेदो यद्वोधयति तरेव श्रेय इति विश्वसितानित्यर्थः तानेवं भूतान् द्वजिना-स्विन पाप वर्कान देवादियोगी स्थास्यतः। पुनस्तमी भूत-वचादियोगी विशतः पश्रकाम इति चाय्रिन्द्रियादिकाम इति च पुत्रादिकाम इति च क्यं पुनस्तेषु ख्यं वधी वेदो युच्चात्। तथामत्यनाप्तः स्यादिति भावः। कयं ति विभे

मोमांसका: कर्मफलपरतां वदन्ति तवाह एवमिति खव-स्थितम्। वेदस्याभिप्रायमिविज्ञाय कुसुमिताम् अवान्तरफल-रोचनतया रमणीयां परमफल श्रुतिं वदन्ति कुतस्ते कुबुषयः। तदाप्त हि यस्रात् वेदजा व्यासादयः तथा न वदन्तीति ज्ञत-एव निष्कामकर्मणासाज्ञानसित्युक्तम्। यद्या "षयमेव क्रिया-योगो ज्ञानयोगस्य साधकः। कर्मयोगं विना ज्ञानं कस्य-चित्रेव दृश्यतेण ॥ सीऽपि दुरितचयदारा न सार्चात्। तया च "जानसुत्पद्यते पुंसां च्यात् पापस्य कर्मणः। श्रुतिस्तमेव षेदार्यवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति ब्रह्मचर्येण तपमा दानेन श्रद्धया यद्भेनानग्रनेन चेति" तमालसाचात्वारम । श्रतएष यज्ञादीनां ज्ञानश्रीयताश्वावधार्यं निष्कामेषु कर्मसु प्रवर्तते। पण्डितनापि सूर्षः काम्ये कर्मणि न प्रवर्त्तियतथः। इत्याइ पष्टस्क स्वे। "खय निःश्रेयम विद्वान् न वस्यसाय कर्म हि। न राति रोगिणेऽपय्य वाष्क्तेऽपि भिषक्तमः"॥ राति ददाति। समयप्रदीपे शीदतः। "दासीं दासमलद्वारमम् पड्स-मस्त्रतम्। पुरुषोत्तमस्य तुष्ट्यर्थं प्रदेय सार्वनालिकम्। यद्-यदिष्टतमं नोके यद्याप्यस्ति ग्रहि ग्रुचि। तत्ति दियं तुष्ययं देवदेवस्य चक्रिण."॥ इट दानं झाह्यणसम्प्रदानकमेव विष्युपौतिस्हिश्य एवं सर्वत्र दाने विष्युपौतेः सामान्यतः श्रवणात्। विष्णुप्रीती देवताधिकरणन्यायविरोध इति चैव स्वर्गवद्धिकारिविशेषणलेन तसस्वप्रमाधनादित्या इ। वाह्मप-सम्प्रदानकले किं प्रमाणिमिति चेत् वासनपुराणे तत्तन्यास-भेदेन तत्तद्दानमभिधाय "विष्णोः प्रीत्यर्थमेतानि देयानि ब्राह्मणेष्वय। देघानि विप्रमुख्येभ्यो मधुस्दनतृष्ट्ये" ॥ इति चाभिधाय दासी दासमिति वचनह्याभिधानात्। तथा विष्णुधमोत्तर्शियुराणे च। "यह यह भवेत् प्रीतिविषयेभ्यो

भाषो यदा भवेत्॥ सप्तमः पित्रपन्नः स्थादन्यत्रैव तु पञ्चमः"॥ अव सप्तमस्य पित्यपचलात्। "यध्या तु दिवसैर्मासः कथितो वादरायणै." इत्यनेन विंशता तिथिभिः पचलात् सप्तमस्य पश्चमत्वाञ्च। तदब्दे तत्र मृतस्य। "सपिपङ्गेकरणादृर्दे यव यव प्रदीयते। तव तव चयं कुर्यात् वर्जीयवा सता-इनि॥ धमावास्त्रां च्रयो यस्य प्रेतपचेऽया युनः। सपि-रडीकरणाटूई तस्योक्तः पार्वणी विधिः"। इति ग्रह्वोक्तेन प्रत्याब्दिकं पार्वणविधिना कर्त्तव्यम्। नतु सन्तमासभाद्र-सप्पपच्चमृतस्य वर्षान्तरेऽऋयुक्षम्पपचेऽपि पार्थगं तस्य प्रेतपद्मसृतत्वाभाषात् किन्वेकोहिष्टम् भव पार्वणो विधिः पार्वपेतिकत्तेव्यताकैकोहिष्टविधिरिति नव्यवद्वमानप्रस्तयः तन पूर्ववचनोन्नात्रेपुन्धिकस्य स्ताहि पर्यादस्तस्य पार्वणो विधिरित्यनेन प्रतिप्रसवात्। "त्रपुद्धा ये सृताः केचित्" द्रत्यव पार्वेणनिषेधानुपपच्या कर्षूममन्वितमित्यव घट्पुरुप-निपेधेन च वैपुरुधिकत्वताभाचा। तसाचे पुरुधिकं युक्तः मिति। एवसमावास्यादिमरणनिमित्तेन मात्रूरिप प्रत्याः व्दिकं पार्वणविधिनेव: "अप्रवा ये गृताः केचित् स्वियो वा पुरुषाद्य ये। तैपामपि च देय स्थात् एको इप्टंन पार्वणम्"। द्रापस्त स्ववचने अपुता इति विश्रेषणोपदानात् सपुताणां पार्वणाभ्यनुज्ञानात्। एतच मात्रप्रभृतिवयदैवतं कार्यम्। मात्रे पितामद्यै प्रितामद्यै पूर्ववद्वाह्मणान् भोजयिला इत्य-न्वष्टकायां तथा दर्शनात्। ष्रवादसानदिननिमित्तत्वेन पावंग्-विधानात् छन्दोगैरपि मात्रादितिकाणां यादं कार्ध्यम्। योपिद्धाः पृथग्दचादवसानदिनाहते"। इति क्न्होगपरिग्रिष्टेन विश्रीपतः प्रतिप्रसवात् एवं सपिग्डीकरणेऽपि। एतस माता-चित्रोर्व। तथा हैमाद्रिष्टतकात्यायमवचमम्। "सपिएडोक्तर, णादूर्षं विवोदेव हि पार्वणम्। पिढ्य स्नाढ्मादृणामेको-हिष्टं भदेव तुण्॥ माढपदं सपद्रोमाढपरम्। विढ्यादि-समित्याहारात् यत्न माढपदस्य राजदन्तादित्वात् पर्रान-पातः। यत्नानुत्ताग्रहणामिलापस्तः। यदोत्यदि पितु-रमावस्याद्यगितिमत्तक-पार्वणविधिक-सांवस्निरक-याहार्थम्। यमुकात्रस्य पितुरमुकदेवग्रमं णोऽमुकगोत्रस्य पितामहस्यामु-कदेवग्रमं णोऽमुकगोत्रस्य प्रितामहस्यामुकदेवग्रमं णः पार्वण-विधिकसांवस्नारक्षयाद्वे कर्त्त्रस्य पुरुरवोमाद्वसोविष्वेषां देवानां पार्वणविधिकयाद्वं दर्भमयत्राद्वाणयोरहं करित्ये। एवमन्यद्वास्यूद्धम्। एवध्व सप्तमस्य पिद्यपचत्वादस्वयुक्तथ्य-पद्योग्याह सनमासे न कार्यम्।

श्रयः खयुक्षणपत्रयाद्वम् । वद्यपुराणम् । "भश्रय्यक्-क्षण्यचेतु यादं कुर्थाद्दिनं दिने। विभागद्दीन पच वा विभागत्वर्द्धमेव वाणा दिनपदं तिधिपर तत्तत्वर्मानिभित्तः पौर्णमास्यन्तचैव्रादिद्वादश्रमाससम्बन्धिलात् तिथियान्द्रमसं दिनमित्यादिप्रागुत्तत्वाच। अर्धमेविति अर्धे कुर्यादेव इति नियमश्रुतेरईस्यावश्यकत्वम्। तच्च विभागस्यैव चर्छत्वे सम्भवति न तु पद्धः तथाले विभागकरणे चर्दमेवेति नियमानुपपत्ते:। चयाणां पूरणो भागस्त्रिभागस्त्रिभागस्रीनः पूर्विचिभागस्रीनः . विभागः परस्विभागः। तथा च विद्युधर्मोत्तरे। "उत्तरा-दयनात् याह्रे येष्ठ स्थाद्धिणायनम्। चातुर्मासञ्च तद्वापि प्रसुप्ते केशवे हितम्। प्रौष्ठपद्याः परः पचस्त्रवापि च विश्रो-थतः। पश्चस्यूर्श्वश्च तवापि दशस्युर्श्वमतोऽप्यति। सघायुक्ता न तवापि शस्ता राजस्वयोदशी"। एवच प्रतिपदादिपचदशक घष्ठादिर्यक एकाद्यादिपञ्चक त्रयोद्यादिचिनतिथिस्ह--पकल्पचतुष्टयविधानात्। प्रागुक्षनागरखण्डे यसक्षच्छ। हविधानं

सहासुने। तन्तमच्युतस्हिन्न्य विष्रेश्यः प्रतिपादयेत्"॥ विण्रुः धर्मोत्तरव्यतीयकाण्डे तु विण्रु सम्मदानकमेव दानम्। "विण्रोः ग्रह्मदानेन वाष्णं स्रोक्तमाम्रयात्'॥ इत्यादिना "स्रोर-पह्मवस्युक्तान् कनमान् सुविभूषितान्। दस्या वै देवदेवाय वाक्तिमधक्तं भवेत्"॥ इत्यन्तेन तत्तत्क्षलं तत्तद्दानमभि-धायोक्तम्। "चकामः सास्त्रिको स्रोको यत्तिखिदिनिवे-द्येत्। तेनेव स्थानमाम्रोति यत्र गत्वा न ग्रोषते ॥ धर्मः वाणिजिका सूदाः फलकामा नराधमाः। धर्मयन्ति कगन्नायं ते कामानामुवन्त्यय। पत्तवत्तु फलं तेषां तद्ववत्यस्यमधमाम् ॥ पद्भा प्रतोक्कते देवः सकामन निवेदितम्। सूद्रो प्रतीक्कते दत्तमकामिन दिजोक्तमैः"॥ इति वामनपुराणवचनं सार्थः कालिकमित्यनंन सक्तमासादाविष विष्युप्रीत्यधे देवम्।

श्रय महादानललाम्। मत्यपुराणे। "प्रयातः संप्रवस्वामि महादानस्य लल्णम्"। इत्यमिषाय। "यादान्तु
सर्वदानानां तुलापुरुषसंश्वितम्। हिरण्यगर्भदानस्य लक्षाण्डं
तदनन्तरम्। कल्पपादपदानस्य गोसस्यस्य पश्चमम्। हिरण्यकामधेनुय हिरण्याश्वस्तयैव च। पश्चलाङ्गलकस्वेव धरादानं
तयैव स। हिरण्याश्वरयस्यस्त हिमस्रस्तिरयस्यया। दादयं
विवाचकस्य ततः कल्पनतात्मकम्। सप्तमागरदानस्य रत्नधेनुस्तयैव च। महाभृतघटस्तदत् पोड्यः परिकोक्तिः"॥
स्वत्र सामान्यलचणं स्वलपाङकदान महादानम्। विनायकादिपश्चायद्देवताद्दोमाङ्गल दा। तया च मत्यपुराणम्।
विनायकादियद्दलोकपालवस्यष्टकादित्यम्बद्दणानाम्। ब्रह्माप्रतेयानवनस्ततोनां स्वमन्ततो होमचतुष्टयं स्थान्। जप्यानि
स्तानि तथैव चैपामनुक्षमेणापि यथा स्वस्पम्" इत्यादिना
स्वलपदोनाङ्गयोस विधः प्रत्येकं पीड्यतुलापुरुपप्रधाना-

न्युहिश्योत्तो न तु महादानलेन छहिश्येति। प्रतो नेतरेतराः त्रयत्नम्। न तु कुण्डमण्डपेतिकत्तेव्यतायोगित्वं जिकनीयः स्वाप्मचलमठदानेऽपि गतत्वात्। एवध्व "कनकाखितलाः नागादासीर्घमद्वीग्छद्यः। यन्या च कपिता धेनुर्मदादाः नानि वै दश्यः। इति कूर्मपुराणीतां महादानपदं गौणम्। प्रन्यया महाश्रतिकस्पनापत्तेः। कनकादि साधारणानुगते-करुपाभावाध्व। न वैपरीत्यम्।

भय मलमासकर्थवतम्। चातुमस्यिवतमापादादाक्षे-खेन विहित' यत् तदयारसं मलमासे कार्यम्। पापाढ़ादि मतिदिनकर्त्वयत्वेन निरवकाशात्। "पद्यातु दिवसैर्मासः कथितो वादरायणैः" इति ज्योतिः शास्त्रे पितामहैन एक-मासत्वाभिधानाचा। यच "संबक्षरन्तुयः पूर्णमेकभक्तेन तिष्ठति"। इत्यादी माघायनुहिष्ठित संवत्सरव्रतमारव्य' तिमालमासिऽपि कर्त्वयम्। "क्षचित्तयोदग्रमासाः संवत्सरः" रिति युते:। यच प्रतिमासविधितं न माघादा हो छोन तना-लमासेऽपि कर्त्व्यम्। तथा च रमाल्तीयावते शिवर-हिस्यम् । "मासे मलिख्नुचेऽय्येवं यजेहेवीं सग्रहराम्। यापन प्रतिष्ठा। व्रतारमोऽपि निषिष्ठ:। पूर्वनिक्ता-काख्यपवचनात्। जैष्ठादिमासविग्रेपविधितं साविवीद्यता-दिकन्तु सावकाशवानासमासे न कार्यम्। प्रकृत एव नैष्ठादी कत्तेव्यसिति।

भय पित्यचस्तिक्या। इमाद्रिकालमाधवीयसंपयी-नीगरखण्डम्। "बायाच्याः पद्यमे पद्ये कन्यासंस्ये दिवाकरे। यो वै श्राह्यं नरः कुर्यादेकसिमपि वासरे॥ तस्य संवक्षरं यावत् त्याः स्युः पितरो भुवम्। नभी वाय नभस्यो वा सल्ल- तत् कन्यास्यरविनिमित्तकम्। ''यनेन विधिना यार्षं विशब्दः स्येष्ठ निर्वपेत्। कन्याकुभष्टपस्येऽके क्षण्यपचे च सर्वदा"॥ द्रित सत्स्यपुराणीयैकवाक्यत्वात्। तत्रैव पाषाद्रीयपञ्चम-पंचसक्ये पतीव प्रायस्यं तद्या चादिपुराणम्। "पचा-न्तरेऽपि कन्यास्ये रवी यादं प्रशस्यते। कन्यां गते पश्चमे तु विश्रेपेणैय कारयेत्"॥ न तु पञ्चमपचेऽपि सक्तदिधानम्। तथाले ऋर्षमेषिति नियमभङ्गपसङ्घः। अत विभागादिकस्पः श्रम्यपेच्या। भन्यया समावति लघ्पाये गुरूपायलेनानु-ष्ठानलच्चणमप्रामाण्यं स्थात् पचादिविधेः। नच तत एव फलभूमाः एका देया तिस्रो देयाः पड्देया इतिवत् कल्पा इति वाचां नित्यत्वादिति श्राह्यचिन्तामणि:। तन्न नित्यत्वेऽपि सन्यावन्दने सूर्योपस्थानसुपक्षस्य कात्यायनः। ''तदसयुक्त-पाणिकी एकपार्द्वपारिष। कुर्यात् कताष्ट्रस्विकीप उद्ध-वाष्ट्रयापि वा"॥ भन्न च गुर्लघुप्रयत्नसाध्यानां कथं विकल्प इत्याद्य स एव। "यव स्थात् क्षच्छभूयस्व चेयसोऽपि मनी पिणः। भूयस्वं ब्रवते तत्र क्षच्छात् त्रयो श्वापायते' ॥ नित्येऽप्यायास-साहुत्यादुपात्तदुरितचयाणामानुषष्ट्रिक-फला-नाम्च भूयस्वसमावादिति भावः। तद्दवापि तारतस्येन फसभूमः: कष्पनीयत्वम्। न सु श्रक्षयेचया। तयात्वे "प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पे न दर्शते। न साम्परायिकं तस्य दुर्मतिर्विदाते फलम्"॥ इत्यनेन शक्तस्य श्रोनकत्पकर्णे फलानुदयः स्थात्। यस् "याद्रवेषु विपन्नानां जनाग्निभुगु-पातिनाम्। चतुरंग्यां भवेत् पूजा जमावास्यान्तु कामिकी"॥ इति कम्यागतापरपचप्रकरणस्यदेवीपुराणवचनेन विद्येषवि-धिमहिन्ता पर्यादन्येषां तत्र पूजानिपेधाचतुर्दशोवर्जनमुक्तम् । सिंचन्यम्। न द्योतहचनादन्येषां त्राहं निषिद्यते। एरि-

चिंखाप्रसङ्गात् किन्तु प्रस्तादिहतानां स्नातादीनां तत याह विधीयते। याद्वविवेऽिष ब्रह्मपुराषे प्रायोऽनशनेलादिना सकलक्षण्यचीयचतुर्द्भ्यां न्याडमभिधाय तदाश्विन "तर्प-षौयायतुर्देग्यां लुप्तपिण्डोदक्रिया." प्रति पुनर्भिधानं तच्छस्त इतभावादिविषयभित्यन्तेनीक्षम्। हैतनिर्णयेऽपि १ पूर्व हि याकाममावास्यान्तु कामिकीत्यपसंघाराच चतुर्देश्यारं श्रस्त्रहतानां नित्यतां विधनो न त्वश्रस्त्रहतानां श्राह्मपि निपेधति। उभयपरत्वे वाक्यभेदापत्तेरित्युक्तम्। "क्षप्ण-पचे दशस्यादी वर्जियवा चतुर्दशीम्। साहे प्रशस्ता-स्तिययो ययैता न तयितरा."। इति मन्तसामान्य छप्प पच-चतुर्दशीनिषेधोऽपि नात्र सम्बध्यते। श्रम्बयुक्काःशपचीय-विश्विपविधी दिने दिने द्रति वीसाया चतुर्दश्याः याष्ट्रविषय-खेन द्वागालिङ्गनात्। अन्यथा वीसां विद्याय दिन इत्येव विद्धात्। तेनैव सशकारणभद्गात्। धन्यया दिन द्याप व्यर्थं स्थात्। प्रकरणभेदाचा तथा च मौमासास्वम्। "प्रकरणान्यत्वे प्रयोजनान्यत्वम्" इति पायात्वनिर्णयागृत-वालमाधवीययोरितयायसूल कार्णाजिनिवचनम्। "नभस्य-स्थापरे परी श्राह्व' कुर्याहिने दिने। नैव नन्दादिवर्ज स्थात्रैव वर्षा चतुर्दभौ"॥ नभस्यस्येति मुख्यचान्द्रेण। चतएव हध-ट्राजमार्नेण्डे मत्खपुराणवचनम्। "कन्यां गते सवितरि दिनानि द्रम पद्म च। पार्वणेन विधानेन यादं तच विधी-यते"॥ द्रति न चैतहस्मोधराद्यनिखितत्वादमूनमिति वाचसातिमियोर्स युक्तम्। भोजदेवलिखनादेवास्य समूल-वात्। न च लच्मोधरेणायैतिमिर्मूलमिति लिखितम्। एतैन त्राद्वाय प्राप्तसामान्यक्षपापचकस्पचतुष्टयविधान न त्यव्ययुक्-क्षप्रपचलेन निमित्तान्तरमिलापि निरस्म। महापुराचे

प्रकरणभेदात् सामान्यकण्यसाख्युक्कण्यपचत्राद्योरकरणे निन्दाद्यग्रवणाद्य। यन्यया एकवीभयमभिधाय एकेव निन्दा विधीयते। एतेनेव "ऊष्ट्रधत्यायद्दः सम्पदाते" दति कात्यायनवचनात् यत् सक्तकारणं तत्यचचतुष्टयावर्षाञ्चिना-पर्पञ्चेतरापरपचिषयम्। सामान्यविशेषन्यायादुत्तम्। तह यम्। प्रन्यया व्राह्मणेभ्यो द्धि दीयतां तक्षं की ग्इन्याय द्रस्यवापि तकावर्डकी रिङ्गाय दिधवित्रिमतान्तरेऽपि का-श्वनादि न देयं स्थात्। अम्बयुक्षण्पचीयाष्टमौ व्रयोदस्यो-यतुर्घष्टका सघावधीदभी याधान्तरनिमित्तत्वेन भवनातेऽपि प्राप्तत्वात्। तदितरदिनेत्वेवाख्युक्कणपत्तकस्पचत्रष्टयविधानं स्यात्। नच दिने दिने इति षीपायेति न तथेति वाच्यम् पवापि "मासि मासि वोगनम्" इति सुते:। वो युपाकं पितृणामिति येप:। तसात् प्रकरणभेदेन निमित्तभेद।देक-वैवाद्मयुक्कप्रपचे विधिष्टयप्रदृतिः। पचचतुष्टयान्यतमः कर्णे तन्त्रादेव सिद्धिः। एतदकरणेऽपि मामान्यमामविधितं भवत्येयेति। चर्नेककस्पात्रयणे तदनिर्वाष्टे सति कत्या-न्तरात्रयणम्। ब्रीहियववदुदितचीमवश्च। इति यदुतां तदपि चिन्यम्। कल्पचतुष्टयविधानेनारभाग्तरसभयातं। यन्य-येकादमी सादमे पिता नाम कुर्यादिति स्तरिकादमेऽछि नामकरणे पारध्ये तव राजादिकतिविघे दाद्या हैऽपि तत-करण स्थात्। तथा द्वादगाहि मधिएउने भारकी पकदिवादि-मासिके क्षतेऽनम्बरं विद्यो तदानी तत्कत्यासमाधनात भवनाते च करपासराकरणे पिवादीनां प्रेतत्वपरीष्टारी न स्मादिति। किन्येषं क्या ययेगारम्य वैकल्पिकेन द्रीडिणा न समाध्यत रित दशसार्थः। तथेकणिन् कस्ये पार्थे तम्र विघ घनमारदिन सन्यायन्दनादिवत् किमिति न कियते। इति

चैत्र। एकतिथ्यकरणे प्रतितिधिकर्त्रथक स्पस्मापना भावात् श्रव कलात्सरीको युक्त:। सन्यावन्दने तु कलात्तराभावात्र तयिति। इत्यचारव्यक्तलेऽप्ययक्ता भन्धेन कार्यः। तथा च याचवस्काः। "जिद्या त्यजेयुनिसाममणक्षीऽन्येन कार्यत्। श्रमेन विधिराख्यात ऋत्विक धिंकक भिंणाम्"॥ विद्याधर-धतम्। "तौर्ये तिथिविशेषे च गङ्गायां पेतपत्तके। निषिद्धे दिने कुर्थात्तर्पणं तिलमित्रितम्"॥ तिथिविशेषे स्रमाः वाम्यायाम् । स्मृतिः "रविशुक्तदिने चैव हाद्य्यां शाहवासरे। सप्तम्यां जन्मदिवसे न कुर्छात्तिसतर्पणम्"॥ सत्यपुराणे। "सप्तस्यां निश्चिसंक्रान्यां रविश्वक्रदिने तथा। याद्वे जना-दिने चैव न कुर्धात्तिसतपंषम्"॥ आहे श्रमावास्याश्राह-भिन्ने। "नीलपण्डविमोश्चेण प्रमावास्यां तिलीदकैः। वर्षासु दौपदानेन पितृणामकृषी भवेत्रा प्रति मात्यात्। प्रति प्रसवमान्य स्मृति:। "ष्रयने विषुवे चैव मंकाल्यां ग्रहणेषु च। उपाकमीणि चौत्सर्गे युगादी स्तवासरे॥ रविमंत्रान्तिः वारोऽपि न दोपस्तिलतर्पणे"॥ स्कन्दपुराणे। "तीर्थमाचे तु कर्त्रयं तर्पणं सतिनीदकैः। अन्यया तर्पयेद्यस्तु विष्ठायाः स क्षमिभवित्॥ विशेषतस्तु नाष्ट्रव्यां सर्वदा तर्पयेत् पितृन्"॥ स्मृति:। निषिधदिनमासाद्य यः कुर्यात्तिसतर्पणम्। इधिरं तद्वविनोयं दाता च नरकं व्रजेत्"॥ एतच सौर्यव्यतिरिक्षकसी "यो नित्यं तर्पयेत्रीयं पितृन् क्षणितिलोदकैः। मदस्यान् सीचयित्वा तु खयं ब्रह्मपुर ब्रजेत्"॥ इति कालायनवचनात्। **डक्षस्कन्दपुराणीयवचनाञ्च। सवसारप्रदीपे। "ण्मावास्यास्त्** कत्याकें तौर्यप्रासी तया रूप। सत्वा याद्वं विधानेन द्यात् योडग्रविष्डवान्"॥ इति वायुपुराणीयस्तव्ययोगस्तिथितस्वे-(नुससीय:। स्यु:। "द्वियादं तया सोसमन्याधेयं सहात्रयं

राजाभिषेकं काम्यस न कुर्धाद्वानुजिहिते । दृदिश्वाहिमिति सावकाश्रद्विश्वाद्वविषयम्। निरवकाशस्य पूर्वे ध्ववस्थापित-खात्।

भयामावस्या। कुयुनिः। "संवत्सरातिरेको वे मासो यः स्यात्तयोदशः। तिसिंखयोदये याहं न कुर्यादिन्दुसंचये ॥ संवधरप्रदीपसमृतिरताकरयोः। "एकराशिस्थिते सूर्ये यदि दर्शहयं भवेत्। दर्शयाहं तदादी स्यान्न परत्र मलिख्वे"॥ यतु "जातकर्मणि यत् याद्वं दर्शयाद्वं तरीव च। सलसाचे-ऽपि तत् कार्यो घासस्य यचनं यया"॥ दति व्यास्वचनं तत् पिण्डपिष्टयञ्चाष्ययाष्ट्रयस्य । समाप्ती पिष्टसीमका-वित्यमिषाय तमतिक्रस्य तु रविदित्यनेन मसमासाभिषायकेन मसमासप्राप्तिपद्धयज्ञैकामूसलात्। न पार्वेगयाद्वपरम्। "यमंक्रान्तेऽपि कर्त्रधामाब्दियं प्रथमं दिने:। तथैव मासियं पूर्वे सपिएडीकरणं तथा"॥ दति खघुचारीतवचने गासिकं पूर्वमित्यभिधानेन सपिणडीकरणात् परं मासिकं क्रपापचीय-पार्वणं निवर्त्तते दरावगते:। प्रथमान्दिकात् पूर्वं मासिक-मिति समयपकामव्यास्यानिऽपि तयैवार्थः। श्रन्थया पूर्व-मासिकवत् परमासिकदर्शयाष्ट्यापि करणे पूर्वपदवैयर्थाः पत्ते.। "सपिण्डोकरणाटूह्" यत् किञ्चित् याहिकं भवेत्। इष्टं वाष्यय वा पूर्तं तन कुर्यामासिस्नुचे" इति वचना-न्तरेष प्रतिपेधासः यय या व्यास्वयनं सानुनिद्धितस्यः मासाभिषायम्। तयोरपि पूर्वनिखितकाठकारहोन मल-सामप्रयोगात्। तयोद्धिकात्तिकत्वाद्यभावात्। "तस्र यद्धिः हित कमें उत्तरे माछि कारयेत्"। इत्यस्याविषयत्वम्। मुण्यमसमाधे भाषादादेशिलात्। तलाभावः। एतेनापरे धिति छत्या कुषुमिवधने "तिसिंस्तयोदगे गारं न

कुर्थादिन्दुभंचये"। इति पठिला व्यासवचनविरोधात् न क्षयात्रीपतिष्ठते इति काश्मीरपाठी क्यायानिति हेमाद्रिणा-भिचितं यत् तहेयम्। समयप्रकाशकतापि। धमावास्या-स्तस्य तु मध्ये मलमासपातेऽपि तच न मासिक्षम् इत्यभिधाय पूर्वीताकुथमिवचनं साधकालेनामिष्टितं यत्तद्पि हैयम्। तदचने ममावास्यासृतस्येति विशेषतोऽभिधानात्। न च "धब्दमम्बुघट द्यात् पत्रशामिषधं दुत्रम्। संवक्षरे विद्य-डेऽपि प्रतिमासञ्च मासिकम्"। इति कुयुमिवधनान्तराभि-स्तिप्रेतमासिकत्विधिनिषेधार्थे तद्वचनमिति वाच्यम्। तत्परत्वे प्रमाणाभावात्। किन्तु मलमासे प्रतमासिकदृद्धिः पिद्यमा-सिकन्तु नास्तीति वचनयोरर्थः। पूर्वलिखितद्वारीतवचनार्धः समः। यस् तिधां स्वयोद्यं आहमिति पठितम् समावा-स्यायां मृता है मलमा से मासिकं न कुर्यादन्यव तु मलमासे प्रेतमासिक इहिरिति। म चामावास्यायां पार्वणनिपेध द्ति वाचा पुरुषभेदेन तस्यानियतसंख्यात्वास्तरोदयत्वान्पपत्ते:। पर्वचाययणन्त्यति समावास्यानिमित्तकस्य प्रतिप्रसवाद्य। र्ति जीमृतवाइनवात्यातं तद्पि चिन्यम्। प्रमावात्या-स्तस्येतिविश्रेषाभावेन तदर्यंकत्पने प्रमाणाभावात्। धमावा-स्यापावंषस्य पुरुषभेदेगानियतसस्यात्ताघ्रयोद्यत्वानुपपत्य-भिधानच न सङ्गच्छते। यहा भवगतेऽपि एकदिव्यादि मासिकानन्तरमापिकस्य वयोदशलानुपपत्ते:। स्रथ तश्च धसारापेच्या पणपूरणन्यायेन वयोदशत्विमिति चेत् "प्रनेभ विधिना याषं कुर्यात् संवसरं सक्तत्। विधतुर्वा ययामका मासे मासे दिने दिने"। इति देवलवचनेन संवसारे प्रतिमासं त्राइविधानात् तदपेचया प्रमादास्या याइस्यापि तद्राया-श्रयोद्यालमिति। इन्दुमध्य इत्यमिधानादपि तिविभित्तक

प्रयस्त्रशाहमेवावगस्ति। न प्रेतत्रशाहमिति पर्वषाययणन्तयेति। भव साग्निमालकर्त्तव्याययणमाहचर्यात् पर्वपटं
दर्भयागपरम्। पिण्डविलयज्ञपरञ्च। न पार्वणव्याद्यपरम्।
तस्य कृष्णपर्चानिमित्रकल्वेन पर्वनिमित्रल्वाभाषात्। पूर्विज्ञतत्रशाहप्रतिपेधकनानावचनिवरोधाञ्च। भत्रप्व मुन्यन्तरेर्नानादेशीयसम्बद्धस्यमावास्यास्त्रस्येव विशेषो नाभिदितः। श्रांहविवेकक्षद्धिरिय सन्त्रमासे पार्वणाभाषो बहुम्बसेक्तः।

श्रयाधिमासे प्रत्याब्दिकादिविचार:। लघुहारीत:। "प्रत्यब्दं दादभी मामि कार्या प्रेतिक्रया गुधैः। क्विचयी-दगेऽपि स्यादाद्यं सुक्षातु वत्मरम्"। प्रत्याद्दिकौ या प्रत-क्रिया सा दादमे भासि कार्या दल्लामाः। चव प्रेतपर्द प्रमौतमावपरम्। कचित्रानमासे पतिते चयोदग्रेऽपि मासे कार्याः। पादां सावसरिकं साद्य एव मलमारेऽपि कार्यं नर्केषादयमासाभ्यन्तरे समसास्डिपि तथाले दादये सासि स्तिष्यनाभात्। सपिण्डनानुपवत्तेः। अतएव हैतनिर्णये एतिह्यये विष्णुधर्मीत्तरेण त्रयोदशे माभिकयाह्रमुक्तम्। यया "सवसरस्य मध्ये तु यदि स्थादिधमासकः। तदा त्रयोदशे मासि कार्या प्रेतस्य वार्षिकी"। सत्यव्रतेनापि। "सवसा-रस्य मध्ये तु यदि स्याद्धिमासकः। तदा व्रयोदगं श्राह कार्यं तदधिकं भवेत्"। सप्तुष्टारीतः। "प्रमंक्रास्तेऽपि कर्त्यमाब्दिकं प्रथमं हिजे:। तथैव मासिकं पूर्वं सिपएडौ-करणन्तया"। प्रकान्ते रवी सनमासे इत्यर्थः। श्राब्दिकं प्रथमं तच न्यूनाध्दिकं सिपरडीकरणस्य पृथद्निर्देशात्। ततय "गर्भे वार्डु पिक्तत्ये च स्तानां विण्डकमांस्। सविण्डौ-करणे चैव माधिमास प्रचचते"। इति यत् पुन:सिपछो-

करणमभिन्तिं तनानमास्ऽपि गर्भाधानपुंसवनादिनिक्तित्त-सपिण्डोकरणापकर्पार्थम्।

अध सपिएइनापकपंविचारः। अव केचित्। "यद्-इवी द्विद्वापदोत" इति गोभिससूत्रेण। "प्रेतसंस्वारकर्माणि यानि यादानि घोड्य। यथा कालन्तु कार्य्याण नान्यथा मुचाते ततः"। इति लघुद्वारीतवचनादन्ययानुपपद्यमान-हद्वार्धमेवापकपो बोध्यते! गर्भाधानादि सस्कारा भन्नप्राथ-नान्ता निरवकाशाः। "नैमित्तिकानि काम्यानि निपतन्ति यथा यथा। तथा तथैव कार्याणि न कालस्त विधीयते"। द्रस्मिन तुल्यन्यायात्तमध्ये करणेऽप्यन्यथोपपद्मा द्रति। न चैव चुडाकरणादोनामपि तुल्यन्यायतयानुष्ठाने यदहर्वेति निविषय स्यादिति वाच्यम्। यधिमासके यात्रां विकाइं चडा तथोपनयनादि कुर्याद सावकाशं साङ्ख्य न तु विशे-पेच्याम् इत्यादो निरवका शत्वेन सस्कारमावस्य कर्तव्यतायां चुडाकरणादीनां सङ्ग्राहिकतया निषेधावगमात्। "ऋचै-कमन्दिरमतौ यदि जीवभान गुक्रोऽस्तमः सुरवरैकगुरुष सिष्टे। नारभाते व्रतिवाषग्रहप्रतिष्ठा चौरादिकर्मगमना-गमनश्च धीरै:"। इत्यादी सर्वत्र कालाशीचे च्डाकरणादीनां विशेषती निषेधावगमास । असपाशनान्तस काष्यनुहेखात् नानारमृतीनां सून्तभूततत्तत्त्वद्वद्वानायुतीनां कह्यनायाञ्च गौरवात्। कालाग्रीचे चुडादिन कार्य्यामिति। नैमित्ति-कानि काम्यानीत्यस्यापवादकवृष्टादी निर्धेषः। तथा च सद्दागुरो प्रेतोभूते किं सपिएडनसपकपंषीयम्।. किं वा चडादेः खकासवाधेन कालात्तरे तत्वरणीयम् रत्याकाद्वायां यद्द्वेति वचनं स्विपयमेव कुतो निविपयता। न चास्त-सिप्डनस्य हिड्याद्याभावात् तत्र पूर्वेपाच , "वाद्यणदिहते

्चादिपदस्य प्रकाराधितात् निरक्रमणादाविष कर्तस्यता नामः कर्माणः पृथगुपादानवेयय्यापत्तेः । इति वाचस्यतिमित्रोक्तं निरस्तम् एवं "पनात्रमी न तिष्ठेतु चणमात्रमिष दिजः"। भव "धार्यमण विना तिष्ठन् प्रायिक्तीयते लक्षी । जपे क्षीमे तथा दाने स्वाध्याये वा रतः सदा । नामी फनमवाप्रीति सुर्वाणोऽप्यात्रमाधृतः"॥ इति दचवचनादिष काल्मविवाः 'हार्यमपक्षणी युक्तः । कन्याया कन्माम एव यद्या कर्यस्त् स्थितिरुक्ता पेठीनिमना । यथा "धनाम चैव कन्यायाः स्थातक्ष्यतमाचरेत्"। मविष्ये । "चत्वारिधहस्मराणां साष्टाः नास्च परे यदि । स्थिया वियुच्यते कस्तित् म तु ग्ण्डात्रमी मतः ॥ क्षष्टचत्वारिधद्यद्यं वयो यावद्य पूर्यते । पृत्रभाव्याः वियुक्तस्य नाम्ति यक्षेऽधिकारिता"॥

यय सन्नासनिपेधविचारः। तवात्रमानाष्ट पराज्ञारभाष्टे ब्रह्मपुराणम्। "चलार पात्रमायेव ब्राह्मणस्य प्रकीर्त्ताः। गार्डस्यं ब्रह्मचर्यञ्च वानप्रसं वयो मताः॥ चित्रयस्यापि कथिता त्रात्रमास्त्रय एव छि। ब्रह्मचर्यञ्च गार्डस्यमात्रम विवाः। गार्डस्यमुचितन्त्रे कं गुद्रस्य चणमाचरित्"॥ चणमुत्तवरूपम्। यसु "प्रवच्यावसिता यत त्रयोवणी विज्ञातयः। निर्वासं कारयेविषं दासत्वं चत्रवेश्वयोः"॥ इति कात्यायनिनीतः तद्युगभेदादविष्टम्। प्रवच्यावसिताः प्रवच्याचिताः। प्रवच्यावसिताः प्रवच्याच्याः। पत्रप्य "द्यश्वमेषं गवालकां सन्नासं पलपेदकम्। 'देवरेण सत्रोत्पत्तिं सन्ती पञ्च विवर्जयेत्"। इति काली सन्नासनिपेधकं चित्रयवैश्वविषयमिति। एवच्च "प्रात्मन्यग्नीन् समाधाय ब्राह्मणः प्रवचित् रप्रवात् रप्रवचित् रप्रवात् विवर्णनियः चित्रवेष्ट्यात् प्रवचित् समुवचनस्य "ब्राह्मणः चित्रयी वाय पेश्वोऽपि प्रवचिद् रप्रवात्"। इति विश्वरूप-विवर्णने व सुगभेदादिवरोधे सम्भवित गूलपापियांच्चवन्त्राः

टी कायां शेषवचनानाकराभिधानं हियम्। तत्क्रतप्रायश्चित्तः, विषेक्षप्रतपूर्वीत्रकात्यायनवचनिवरोधः स्थात्। मिताचरान्यान्तः। ब्राह्मणाः प्रव्रजन्तीति श्रुतेः श्रयज्ञकान एवाधिकारी न दिजातिमात्रस्य। पन्धे तु चेवणिकानां प्रक्षतत्वात्। व्रयाणां वर्णानां वेदानधीत्य चत्वार श्रायमा दति स्वकार-वचनात् दिजातिमात्रस्याहत्तिरिति लिखितम्।

यशपुत्रस्य स्ताहे न पार्वणम्। प्रचेताः। "प्रेतमासस्य यः पचस्तियौ प्रतिवस्तरम्। यावत् स्वरति पौत्रोऽपि एक-सृद्दिस्य दापयेत्"॥ प्रेतमासस्य स्तमासस्य एकसृद्दिस्येति स्वयात् स्वमावास्त्रास्तस्यापि पौचादिना पार्वणं न कर्तस्यम्। तथा चापस्तस्यः। "प्रपुता ये स्ताः केचित् स्तियो वा पुक्ष्यास्य ये। तिपार्माप च द्रेयं स्थात् एकोहिष्टं न पार्वणम्"॥ स्तर्य जावालेन प्रत्यास्दिकम् भौरसचेत्रज्ञास्यामेव पार्वणं कर्त्तव्यमेव। यथा "श्रीरसचेत्रज्ञी पुत्री विधिना पार्वणेन च। प्रत्यव्यमितरे कुर्युरेकोहिष्टं सता द्रया ॥

यथाधिमासे स्तस्याधिमासे प्रत्याद्धिकं कर्त्यम्। "मलिस्तुचेऽिय सप्राप्ते ब्राह्मणो स्वियते यदि । जनाभिषेयो मासीऽसी कयं कुर्यासदा व्यक्तम् ॥ यस्मिन् यिगते भानौ विपत्तिः
स्वात् द्विजनानः । तस्ति वेव प्रकुर्वीत पिण्डदानोदकित्तियाः"
इति व्यासवचनामालमासस्तस्य सीरेणेव प्रत्याव्दिकं सदा
कर्त्तव्यामवचनामालमासस्तस्य सीरेणेव प्रत्याव्दिकं सदा
कर्त्तव्यामवचनामालमासस्तस्य सीरेणेव प्रत्याव्दिकं सदा
कर्त्तव्यामवचनामालमासस्तस्य सीरेणेव प्रत्याव्दिकं सदा
कर्त्तव्यामिति समयप्रकायस्त्र । तम् पूर्वीक्तयुक्त्या तुलादिपद्के
यदि सन्तमासस्तदा स्तस्याव्दान्तरे कदाचिमृताद्वामासी
व्याद्वीपापस्तयः । किन्तु व्यासवचनं तन्त्रासस्य प्रतमेत्वसासत्वे तचैव व्याद्वं नीत्तर इति विधायकम्। "मलमासस्तानान्तु व्याद्वं यत् प्रतिवत्सरम्। मलमासेऽपि कर्त्तव्यं
नान्येयान्तु कदाचन"। इति कालमाधवीयप्टतपैठीनसि-

ताते पतिते सङ्गवर्जिते। व्यत्क्षमाच सते देयं येभ्य एव ददात्यसी"। इति परिगणितनिमित्तव्यतिरेकेण चकरणात् हिचियादस्य का गतिरिति वाच्यम्। "न तत् पूर्वं यतः प्रोत्तः सपिएडनविधिः सचित्। दृष्टियादस्य सोपः स्यादुभयोरपि पचयोः"। इति वल्लोप एव न चाङ्गवाधात् संस्काराणां धैगुख-मिति वार्च तत्तरेवाङ्मवोधकविधीनां तरितरपरत्वादिति। भन्यया गर्भाधानादि निमित्तत्वेनाप्यपक्षपं मदाविप्रवापत्तेः। द्रत्याचुसाचिन्यम्। "सपिण्डोकरणादूष्वं प्रेतः पार्वणभुग्भ-वित्। इडीष्टापूर्रयोग्यस्तु ग्टइस्यय ततो भवेत्"। इति मत्यपुराणयचनानाष्ठागुरी प्रेतीभूते इहिक्स न युज्यते इति वचनाच मसागुरुप्रेतीभाषमावे दृष्टिकर्मानधिकारात् निरव-काशद्वस्त्रर्थ मेनापकर्षी युक्तः। न च नैभित्तिकानीत्यादि दचवचनात् प्रतिप्रसव इति वाच्यम्। तस्य कानागुद्धः प्रति-प्रसवरूपत्वात्। न च सद्दागुरूप्रतीभावस्य कालागुद्धित्वम्। "प्रभीती पितरो यस्य देहन्तस्याग्रुचिभवत्। नापि देवं नवा-पैत्रंग्र यावत् पूर्णी न वसरः"। इति तक्षिखितदेवीपुराणवच्-नेन देष्टाशुह्यभिधानात्। यमएव बलिवेखरेवास्नाधाना-रको प्रतिप्रसवसाह छन्दोगपरिधिष्टम्। विलिक्स प्रक्रम्य "एतद्ग्रहपती प्रेते कुर्घादिकाद्ग्री इनि। प्रागिवैकाद्ग्रात् याद्वात् सद्योजागरणादिकम्"। एतद्वलिकमी तद्युगनद्व-वाहित्वात् वैखदेवस्यापि यहणम्। एकाद्याहात् एकादः गाहिक्रयमाणात्। सागरणादिकम् चम्चाधानाक्षम्। सस्-सस्तु कालागोचन्तु तदेव यत् सर्वान् पुरुषान् मिति समानम्। यया मलमासादि चन्यया दशाहाशीचस्यापि कालाशीचले तवापि नैमित्तिकानीतिषचनात् पुंसवनादि स्थात्। यदय्य-भिहितं न तत् पूर्वमिलानेन कैवल वैश्वदेवान्याधानसहित- वैखदेवो महागुर्गनिपाते हिहियाहं विना करणीयी। तथा गर्भाघानाद्यद्रप्राधनान्ताः कर्त्तव्या इति तद्पिन समीची-नम्। यथा यावद्वचनं हि वाचनिकम् इति न्यायात्तत तयास्। अत तु तयाविधवचनामावात् कयं दृहियाहं विना भन्नप्रामानान्तकर्मासिष्टः। भतएव निर्णयास्ति भन्न-प्राथनाद्ययः सणिएडीकरणापकर्ष इत्यभिहितम्। एतेन यद्युत्तं गर्भाधानादिनिमित्तेनाप्यपक्षये महाविष्णवापत्तेरिति तद्पि पिन्यम्। यतो यत्र गर्भाधाने दृष्टियाहमपि तत्र सुतरामपकर्षव्यवद्वारः। यवतु छन्दोगानां नास्ति हिद्दि-यार्ड तवापि द्विष्याद्वाभावे नेवन व्यवद्भियते इति किन्त तवाद्यपक्षे युष्यते। गर्भाधानस्य इहिरूपवादिति। ननु निष्क्रमणान्नप्रायनयोः कयं द्वष्टित्राष्ट्रमिति चेत् निष्क्रमणस्य गोभिचेनोक्ततात्। सर्वाखिवान्वादार्थवस्तीत्यनेन तत्र हरिः आइसिहै:। अन्नप्राथने च भौनकः। "अथ पुर्येऽक्ति षष्ठे तु मासेऽत्रप्राधनं भवेत्। क्षत्वाभ्युद्यिकं त्राद्यं दिधिमध्याच्य-संयुत्रम्"॥ सत्यपुराणे। "श्रद्धप्रामे च सौमन्ते प्रवीत्पत्ति-निभित्तके। पुंसवने निषेके च नवविश्मप्रविधने ॥ देवहच-जलादीनां प्रतिष्ठायां विशेषतः। तौर्ययाता हषोसर्गे हिस-त्रावं प्रकल्पयेत्"॥ शनमार्चण्डे क्षत्यचिन्तामणौ च। "सती-त्यतीतयात्राह्मसप्राथनिकेतया। चूडाकार्ये इते चैव नान्त्रि पुंसवने तथा॥ पाणिपहे प्रतिष्ठायां प्रवेगे नववेप्रानः। एतहृष्टिकरं नाम ग्रहस्यस्य विधीयते<sup>ष्ट</sup>॥ एतेन <sup>क</sup>नाम कर्माणि वासानां चुडाकर्मादिके तथा"। इति विष्णुपुराष-वचने चंडाक्रमादिक द्रत्यादिपदात् उपनयनपरिषदः। तेन चुडाकरणात् प्राक् निस्क्रमणासप्रायनयोराभ्यदयिकं न कार्यम्। नासकर्षे तु विश्रेषीपदेशादेव कर्तथाताः। क

वचनेकम्बलात्। एवस् "जातकमीण यत् श्राह नवशाह तथेव च। प्रतिसंवसारं श्राह मलमासेऽपि तत् रस्तम्। प्रतिसंवसारं श्राह मलमासेऽपि तत् रस्तम्। प्रतिसंवसारं श्राहमगौचात् प्रतितस्य यत्। मलमासेऽपि तत्वाधिः सिति भागुरिमाधितम्"॥ इति वास्यतिमिश्रध्तमेतिह्वयं बोध्यम्। जनाभिधेयमिति जनमभिधेयं यस्य तत्तया इति। तदिनामकत्ववद्याख्येयम्। "विषद्धं गुरुवाक्यस्य यदत्र भाषितं मया। तत् जन्तथ्य वुधैरेव स्नृतितस्व वुभुसया"॥

द्रति वन्यघटीययोहरिहरभद्दाचार्यात्सनयोरद्वनन्दन-भद्दाचार्यविरचिते स्मृतितच्वे मलमासतस्व सम्पूर्णम् ।

## संस्कारतंत्वम्।

----

प्रण्ययं सचिदानन्दं भुक्तिसुक्तिपदायकम्। संस्कारतस्वं तत्प्रीत्यै विक्ति यौर्धनन्दनः। यथ संस्काराः। तत्र धारीतः। "गर्भाधानवदुपेती ब्रह्मगर्भ सन्दधाति पुंसवनात् पुंसीकरोति फलस्थापनात् मातापित्रजं पामानमपोइति रेतो रक्षगभीप-घातः पञ्चगुणो जातकर्मणा प्रथममपोइति, नामकर्णेन् दितीय प्राथमिन खतीयं च्डाकरणेन चतुयं स्नापनेन पञ्चमम् एतेरष्टाभि: संस्कारैगभीपघातात् पुती भवतीति"। गर्भोधानवत् गर्भाधानविधिना विषाुर्योनिं कल्पयत्वित्यादिना। उपेत स्त्रिय-सुपगतः । ब्रह्मगभे संद्धातीति ब्रह्म येदः तद्ग्रहणयोग्यं गभे सन्दर्घाति संजनयति पुंसीकरीति खव्यक्तसिङ्गं गभे पुमांसं पुत्रं विन्दस्वेति मन्विश्वित्। प्रसस्यापनात् फलस्यापना-क्षक्षीमन्तोवयनात्। मातापिष्टजं मातापिष्टदारा जातं गर्भे खस्यात्रयमंस्कारदारैतेऽपत्यमंस्काराः । उपघातः पापसंहः पश्चगुणः पश्चप्रकारः। अपपातकः। जातिभ्रयकरसङ्गी-करणापाव-करण-मसिनीकरणरूपपापपञ्चकसंक्रान्त इति। सामञ्चात्र समावर्तनरूपमिति कस्पत्रः। पत्र दृष्टान्तमा-हाद्विराः। "चित्रं कर्म यथानेकर्ष्ट्रेरुम्हीस्यते भनैः। ब्राह्म-खमिप तद्दत् सात् संस्कारैविधिपूर्वकैः"। संस्काराणां नित्य-त्वात् प्रतिनिधिमप्याच सृतिः । "पष्टी संस्कारकर्माण गर्भाषानिमव खयम्। पिता कुर्यात्तदन्या वा तदभावेऽपि तत्क्षमात्"।

चय चित्रिखापनम्। चवान्निसाध्यसंस्कारे छन्दोगानां

तदिधिमाद गोभिनः। "यनुगुप्ता चप बाह्नता प्रागुदक् इवनं देग समं वा परिसमूहा उपलिपा मध्यतः प्राची रेखामुश्लिष्य उदीचीख संहतां प्रधात् मध्ये प्राचीस्तिम उक्षिखाभ्युचयेत् लचणाष्ट्रदेषा सर्वचेति"। अनुगुप्ता आच्छादिताः। पतिता-दिभिरहृष्टा दति यावत्। पाङ्नीचादिफलमा इ ग्रष्ट्यासंग्रहे गोभिलपुत्र:। "प्राङ्नौच' ब्रह्मवर्चस्यमुदङ्नोचं ययोत्तमम्। पित्रं इचिषती नीचं प्रतिष्ठालक्षकं समम्"। यशोत्तम-मित्यत्र भान्ता श्रायदन्ता इत्युक्तेरदन्तीऽपि यशशब्दः गया-शिर इतिवत्। परिसमृद्य सर्वतः क्षुश्रैः पांच्वादिकमपसार्थ ष्ठत्तरस्यान्दिशि साईइस्तोपरि विपेत्। परिसमूद्वा वितस्तिः वये उत्तरत उत्तरं करोतोति इरिशमीवचनात्। तत उप-लिपनं तस्र कारणमाह राष्ट्रासंयदः। "इन्द्रेण वद्याभिहतः पुरा हत्तो महासुर:। मेंद्सा तस्य सिक्तित्रा तदर्धसुपलेपयेत्" द्रित मध्यतः खण्डिसाध्यत्तरे द्षिणांग्रेन तु मध्याग्रे उदमा-तैकविंशसङ्जरेखानुरोधात्। पन्धया "कुरै: संमार्जयेद्रमिं गुहामादी गुचिस्तः। हस्तमात्रां चतुरसा गीमधेनोपले-परीत्" द्रति भारद्वाजीयहस्तपमाणस्यण्डिले तदनुपपत्ते:। प्राची प्रागाताम् उदीचीश्च संहतां पयादिति। प्रागातायाः पश्चिमे भागे संलग्नामुदगग्रां मध्ये उदगातायाः प्राचीं प्राग-यासिसो रेखा डिझिखास्यचयेदिति। रेखास्य डिस्टितस्ति-यनस्वात्। उलारप्रचेपदेशमाइ ग्रह्मासग्रहः। "उलारं रिद्यारेखाभ्येऽरिविद्यावि निघापयित्। द्वारमेतत् पदार्थानां मागुदौचा दिशि स्मतम्" इति। परिसमू इनादि धरिपे-कान्तं कमं नचणसंचकम्। तस्य सचणसाहत् प्रक्रिया समेन यस यमानिमणयनं तत तत वीध्या। रेखाप्रमाण-

साइ छन्दोगपरिशिष्टे कात्वायनः। "द्चिणे प्रागतायास् प्रमाणं द्वादयाङ्गलम्। तन्त्रललमायोदौचौ तस्या एवं नदी-त्तरम्। उदगतायाः संलग्नाः ग्रेषाः प्रादेगमाविकाः। सप्तः सप्ताङ्गलांस्यका कुग्रेनैव। समुक्षिखेत्"। नरीत्तरं नदाधिकं द्वादमाङ्गमेकविंग्रत्यङ्गामित्यर्थः। येवा अक्षरेखयोरविंग-ष्टास्तिसः कुगेनिति सर्ववाभिसम्बध्यते। एवकारेण गाछा-न्तरोक्तस्प्रायाद्यातः। रेखाणां देवतावर्णायाद्य स्मृतिः। "प्रामाता पार्थिको स्रेया ह्यामियौ चाप्युदमाता। प्रान्नापत्या तथा चेन्द्री सोमी च प्राक्तताः स्मताः। पार्थिवी पौतवर्णा खादारनेयौ लोहिता भवेत्। प्राजापत्या भवेत् कप्णा नीला चैन्द्री प्रक्षीित्ता। खेतवर्णेन सीमी स्वात् रेखाणां वर्णसच-यम्"। श्रामिखापनपर्यन्तं सव्यहस्तप्रादेशस्य विधानमाह राष्ट्रामंग्रहः। "सव्यं भूमौ प्रतिष्ठास्य प्रोब्निखेद्विणेन तु। तावसोद्यापयेत् पाणिं यावद्गिनं निधापयेत्"। मानकर्ताः रमाइ क्रन्दोगपरिशिष्टे कात्यायनः। "मानिक्रियायामुका-यामनुते मानकत्रि। मानकद् यजमानः स्यादिदुपामप निश्यः"। प्रहुष्ठाङ्ग्लिमानमाद्य स एव। "यहुष्ठाङ्ग्लि-मानन्तु यत्न यत्नोपदिश्यते। तत्न तत्न वहत् पर्वयस्थिभिर्मिः तुयात् सदा"। यजमानासिवधी होमे तु साधारणाङ्गलि-मानं यया कपिलपचरावम्। "षष्टभिस्तैभेवेत् च्येष्ठं मध्यमं सप्तामियंवै:। कान्यस घड्भिरुद्दिष्टमङ्गलं सुनिसत्तमै."। तैः प्रक्रम्यमानयवैः। कन्यमं कनिष्ठम्। मानन्तु पार्मिन। "षड्यवाः पार्श्वसिमाताः" इति कात्यायनवचनात्। श्रीन-स्थापनमन्त्रमाष्ट्र गोभितः। योग् भूभूवः स्वरित्यभिमुख-मिनि प्रणयन्तीति। परिनमिभिमुखं होविभिमुखम्। प्रण-यन्ति रेखोपरि स्थापयन्ति। प्रार्थनौत्वातसंस्थापयन्तीति

इरिश्रमाधृतवचनात्। तत्पकारमाइ ग्टह्यासंघ है। "ग्रमं पात्रलु कांद्यं स्यात् तेनानिं प्रणयेद्यधः। तस्याभावे शरा-वेष नवेनाभिमुख खतम्। सर्वतः पाषिपादान्तः सर्वतोऽसि यिरी सुखः। विखरूपी सहानिनः प्रणीतः सर्वकर्मास्"। एवद्याग्ति प्रणयनानम्तरं सर्वत इत्यस्य पाठी युच्यते प्रणीत द्ति मन्त्रनिद्वात् यन्यया खापनानन्तरमेतद्भिधानं व्यर्थं स्यात्। ताम्नपात्रमध्याष्ठ देवीपुराणम्। "ताम्नपाने गरावे वा चानियत्वा चुताशनम्। चिन्निपणयनं कुर्यात् यजमान-मुखाव इम्" इति। धविरिष। "पात्रान्तरेण पिहिते ताम्चपाचादिके शुभे। चिनिप्रणयनं कुर्यात् शरावे ताद-श्रिपि वा"॥ यस् "श्रावि भिन्नपाते वा कपासे वीस्मुकैsिप वा। नामिप्रपयनं कुथ्यात् व्याधिष्ठानिभयावष्ठम्"॥ इति स्मृतिसागरभूतवचनं तत् सुख्यकांस्यादिमये महावे निपेधकमिति राघवभद्ः। क्रन्दोगपरिशिष्टम्। "नातस्य लच्चं कला तं प्रणीय समिध्य च। आधाय समिधर्षेव वाद्यापसुपवेशयेत्"॥ जातस्यारस्यादात्यवाकोः इति सानि-कापरं प्रागुक्तरेखादि। तमनि क्रम्यादमनि प्रिः चोमि दूरं यमराच्यं गच्छतुरिप्रवाह इति मन्वेष तस्यामे: क्रव्याद्शां मन्त्रनिद्वात् दिचिणस्यां दिथि चिष्ठा प्रणीय धक्तप्रकारेण स्थापियला यद्यानस्थापनामन्तरं कमीकाले ह्यादि गहुया संस्तामिरस्यवानीयते तदा पुनभू-मस्तारः कर्त्रयः। समृद्य उपलिप्य उत्तिख्य उद्घराभ्यु-चयेत् एप संस्कारोऽनुगतोऽग्नौ भूय इति ग्टह्यान्तरात्। समिध्य ज्वार्जायत्वा समिधं तत्र तूर्णीं दत्वा वच्यमाणक्रमेष न। इप्रमुपवेशयेत्। समिल्लाण तत्रैव।, "नाषुष्ठादिषिका म्यूना समित्स्य्सतया कचित्। न निमुक्तत्वचा चैवन स

कोटो न पाटिता॥ प्रादेशाकाधिकानीना न तथा स्वादिः प्राखिका। न सपता न निर्वादेश कोमेषु च विजानता"॥ विद्याखिका विविधयाखायुता। एवं समित्पचेपपूर्वकं स्वयं कोता वा कता क्षतावैचणादिकमंकरणाय ब्राह्मणमुपविश्वयेत्। तदुत्तं रटद्यासंग्रहे। "द्युते च व्यवकारे च प्रवते यक्तकर्माण। यानि प्रयत्युदासीनाः कत्ती तानि न प्रश्वति॥ एकः कमं-नियुत्तः स्वात् दितीयस्तन्त्वधारकः। स्वतीय प्रथकं ब्रूयात्ततः कमें समाचरत्"॥ प्रवतं प्रक्षयवते। एतदचनक्तियेचे पूर्ववचनिः नीटासीना इति विश्वय छत्तः। कमेनियुत्त श्वाचार्यः, स च ब्रह्माञ्चके क्षेमकर्मण ब्रह्मा। स्वयं क्षोमाकरणे क्षीतापि स्वयं प्रधानकर्मोकरणे प्रतिनिधिर्या। तन्त्रधारकः पुरतकः धारकः। प्रश्वका सदस्यः।

श्य वरणविधि:। तेषासाचायादीनां होससध्ये कर्मण होसारकात् पूर्वमानत्यये यजमानेन स्वय वरण कार्यम्। "दानवाचनात्वारभाणवरणवतप्रमाणेषु यजमान प्रतोयात्" हति हरिश्मष्टतकात्वायनस्वात् तच वद्यावरणं प्रयमतः। च्योतिष्टोमे वद्योहाव्हवेवस्वय् त्यादिक्रमदर्शनेमान्यवाका-हया दृष्टकस्पनाया न्याय्यत्वात् सुगतिमोपानप्रमत्योऽप्येवम्। वरणन्तु गन्धादिदानहारा प्रीतमुत्पाद्य कर्मणाय प्रेरणम्। तत्र च "मर्वत्र प्राद्मुखो दाता यहोता च छद्युष्टा" हति वचभात् यजमानस्य प्राद्मुखत्वम् शाचार्यादीमामुद्दम् प्रत्व प्रतोयते वरणविधिमाह कात्यायनः। भामनमाधार्याद्व साधु-भवानाम्बामचीयस्थामो भवन्तम् इति। सामनमाधार्यानीय मंग्यात्याह साधुमदानास्तामितः। भाष्यह माम् इति पति-वचनम् सर्वयियामो भवन्तमिति गुनहत्वेऽस्वीति प्रतिवचन्न सामर्यादिति हरिश्रमाँ।

भय ब्रह्मस्थापनम्। तद्य द्वीत्वकर्म्क्रमेष। प्रिनम्प-समाधाय दिचिषतो ब्रह्मासनमास्त्रीकी इति कालायननेककर्न्-कत्याभिषानात्। प्रद्वोपवेशनप्रकारमाष्ट्र गोभिनः। "प्रये-णामि परिक्रम्य दक्षिणतीशमीः प्रागमःन् कुमानास्तीर्थ तेषां पुरस्तात् प्रत्यद्मा स्विष्टन् सञ्चास्य पाणेरङ्ग छेनी पर्कान-ष्ठया चाङ्चा ब्रह्मासना सृगम भिसरह्य दक्षिणापरमष्टमदेशं निरम्यति। निरम्तः परावसः" इति। ऋप उपसुख्याध ब्रह्मासनसुपविद्यात यावसी: सदने सीदामीति यस्यभिसुखी धाग्यतः पाञ्चलिरास्ते श्राकर्मणः पर्धवमानात् "भाषित यज्ञ-संसिंहि नाय जियां वाचं बदेत् यद्यय जियां वाचं वटेनदा षैणावौम् वं यजुर्वा जपेत ऋषि वा नमो विषावि इत्येवं ब्र्यात् यदावा उभयं चिकीपेंडीचं ब्रह्मत्वच्चवेतेन कत्येन क्रत्रमुत्तरा-मुद्रं सोदक्षकाडलं दर्भवटुं या ब्रह्मासने निधाय तेनैव प्रत्या-ह्त्यान्यया चेष्टेदिति"। अस्यायः। अग्रेष पूर्वदिया पदः चिणेनाम्नि गत्वा प्रमेदेशिणस्यां दिशि ग्रागमान् दशीना-स्तीयां चर्चेष्टेदिति वच्चमाणेन सम्बन्धः। नतु निरस्यती-त्यर्नन । भव ब्रह्मेतिकर्नृनिर्देशात् न च ब्रह्मेत्यासनेन सम्बन्धः उपवेशनात् पूर्वं तल्सम्बन्धाभावात् यतो दर्भास्तरणान्त याज-मानिकम्। तत्र ब्रह्मासनस्थाने चाम्तरचात् पूर्वे वारिधारा-भाष रह्यासंग्रहः। "उदस्थारामविच्छित्रामस्मिमारस्य दिचि-णम्। दयात् ब्रह्मासनस्थाने भवेकसंस् निख्यः"॥ भव तु धारासहितसुदक्षावं ग्रहौला ध्रम्भे क्सरतः प्रभृतिद्चि-णदेगो गलाऽरिविमावान्तरिते देशे पूर्वीभमुखं वारिधारा-दानमिति विशेषो भवदेवभद्दोशः नद्या तु तेषां पुरस्तात् भाम्तृतक्षणानां पूर्वेदियामे तिष्ठन् यसुपविष्टः सञ्चास वामस्य चषकनिष्ठया भगमिकया पासनात् यजमानासृतात् द्वणं

कुयपवं रहीला दिचिणापरं दिचिणपश्चिमदेशम् अन्वष्टमम् **उभयदिगष्टमभागं नैऋ तिमिति यावत् निरस्तः परावस्रित्यनेन** प्रचिपतीति भप छपसुग्ध दिचिणपाणिना जलं सुष्टा श्रयान-न्तरमासने ब्रह्मासनत्वेन काल्पते छपविश्रति श्रावसोः सदने सीदामौति मन्त्रेण एवमेव भद्रनारायणव्याख्यानात् तेषां पुर-स्तादित्यादि यावसोः सदने सोदेत्यन्तं यजमानकर्नुकं सीदा-भौति प्रतिवचनं ब्रह्मकर्मृकमिति भवदेवभद्दकत्यन कत्यनमेव सीदेति स्वानुपात्ताच । भाषेत यद्मसंसिद्धम् द्रति द्वीवा-म्यया क्रियमाणे कर्मणि तिसिहार्थम् एतदेवं कुर एतत् क्रला एतत् कुर द्रलादि भाषेत चनाष्ययित्रयाम् चसस्ततां वदेयदि तदा वैषावी ऋक् इदं विषारिति यज्विषाविराडमभीत्यादि नमो विरावे इति प्रकारवितयान्यतमप्रकार प्रायिक्तिमिति। यदावित्यशक्ती उत्तरासङ्गमुत्तरीयं दर्भवट्' कुश्रमयम्। ह्मणः। स चापरिमितकुशदलेभेवतीति भट्टभाष्यत् एकपन्नौ क्षतान् कुगानित्यपि भवदेवभद्दस्यावाद्य। दलैयंबद्भियते तवापरि-मितस्खालमाइ क्न्दोगपरिशिष्टम्। "यज्ञवास्तुनि मुख्याञ्च स्तम्बे दर्भवटी तथा। दर्भस्या न विहिता विष्टरास्तरणे-व्यपि" इति। एतक्छन्दोगपरम्। अन्यपां प्रान्तिदौषिका-याम्। "सप्तिभिनेवभिवापि साईहितयविष्टितम्। मोद्वार-णैव मन्तेण दिनः कुर्यात् कुप्रदिजम्"॥ क्रमीपदेशिन्यान्त नवभिरित्यव पञ्चभिरिति पाठः। एतदेकवाष्यतया "हिरा-व्याय मध्ये वै अईव्यान्तदेशतः। यन्यः प्रदक्षिणावर्तः म ब्रह्मग्रन्थिसत्तकम्" इति कासिकापुराणोक्तव्यास्येयम्। रक्षा-करे रह्यामग्रहपरिग्रिष्टम्। "जङ्किशी भवेद् ब्रह्मा लम्ब-किंगस्तु विष्टरः। दक्षिणावसैकी प्रद्वा वामावसैस्तु विष्टरः"॥ एतिनैवेह्यवकारः खयं कर्मकपचे भावमोः सदन मोदा-

मीत्यस मम्बस्य जह प्रतिपेधीऽर्थः । स्वयखेदुभयं कुथादिति कन्दोग-परिधिष्टात् । कताक्ततिविद्यण्यत् स्वयं तत्कुगोपवेगनस्य कर्त्तव्यतात् कुग्रमयद्वाद्यणादिप्रति- विधिना तदुपपत्तेः तनेव पूर्ववर्त्तं नित भट्टभाष्यम् । अधिति विधिष्टमानन्तर्थे द्योतयित तत्त द्व्यानुपर्योगक्रमेणाग्नेक्तरतः स्टग्यान् पूर्वक्रमेणामाद्य वीद्य प्रोद्य स्वति । प्रधानन्तर- मन्यस्त्यमाण कमं पिष्टेत् कुर्यात् यज्ञमानः । परस्मेपदं कन्दोवत्स्वर्ताण भवन्तौत्युक्तेः ।

षय द्रव्यासादनम्। तत्र कात्यायनः। "प्राश्चसुदगन्नेकदगग्रं समीपतः। तत्त्रयासादयेद्वयं यद्यया विनियुच्यतं"॥
इति भद्दभाष्ये भृतश्च। "द्रव्याणामुपक्तप्तानां द्रोमीयानां
ययाक्तमम्। मादयन् श्रीद्यां कुर्याटिहरभ्यद्यण तथा"॥
कन्दागपरिग्रिष्टम्। "बाच्चक्यां च कर्त्तव्या तैजसद्दप्राथ्या। माद्रियो वापि कर्त्तव्या नित्यं सर्विम्ममंद्र"॥
प्राथ्य यदि प्रकृतकर्माण चक्दोमस्तटा प्रसिद्धेव समये चक्
प्राय्येत्। गोमिलीन अद्वाक्यापनानन्तर तद्विधानात्।

श्रव चर्रविधानम्। तत्र गोभिनः। "पयोदू खलसुपने प्रवास्य सूर्येख पयादग्नेः प्रागयान् कुयानास्तीर्ये छपमादयति श्रव इविनिव इदिति। ब्रोडीन् यवान् वा कांस्थेन चर्रस्थास्या वा चमुण्मेलायुष्ट निवेपामीति देवतानामोद्देशः मक्तवाद्या दिस्तृणीम् ध्रव पयादव इन्तुमुपक्रमते दक्षिणी-चराभ्यां पाणिभ्या वि. जलोक्ततांस्तण्डुलांस्त्रिदेवताभ्यः प्रचान्त्रियां पाणिभ्या वि. जलोक्ततांस्तण्डुलांस्त्रिदेवताभ्यः प्रचान्त्रियं दिसंतुपेश्यः सक्तत् पित्रभ्य इति पविचान्ति इतिस्तर्भः श्रिष्टाम्य प्रविचान्ति क्षित्रस्य स्वानीपाकं स्थापयेत् प्रदक्षिणः सदायुवन् स्रतमिष्ठार्थे छद्गुद्दास्य प्रत्यभिष्ठारयेदिति'॥ सस्यार्थः छप्तमिष्ठार्थे छद्गुद्दास्य प्रत्यभिष्ठारयेदिति'॥ सस्यार्थः छप्तमिष्ठार्थे छद्गुद्दास्य प्रत्यभिष्ठारयेदिति'॥

द्यारणं यथा स्थात्तथा अमुध्मैत्वायुष्टं निर्वपामीत्यनेन उट्र-खनोपरि नोह्यादोन् कांस्यादिना सक्तनिवैपेत्। अवासुरमा इत्यव चतुर्थन्तनामोञ्चारणम्। अतएव कात्यायनः। अमा-विति नाम रहहाति। नारायणीयेऽपि "सद:पदं हि यदूपं यत मन्ते हि दृश्यते। साध्याभिधान तदूषं तत स्थाने नियो-लयेत"। अतोऽद:पद एव नामोद्धी न तु विरूपाचजपादा-विद्मित्वादी। एवच्यानचे त्वायुष्ट निर्वपामीति सामगा-नाम्। यजुः प्रयोगी गोभिने निर्वापमात्रश्रतेः यजुर्वेदिक-समस्वक्यइणप्रीचणे सामगीन न कार्ये। यजुः परिभापा-माइ जीमिनि:। "शेपे यजुःगब्द, इति शेपे मन्त्रभिन्ने मन्त्र-लाते। ततश्य यनान्तजातं प्रश्लिष्टपित गामपादभेदरिसत तद् यजुरिति बहुदैवत्ये च बहुदैवतानामिः प्रत्येक निर्वापः। प्रमानविधो मन्त्रेणैव होमोऽपि पृथक् निर्वापपरिमाणन्तु होम-संख्या श्रीपिक्षित्यनुमारिकत्याच क्रन्दोगपिरिशिष्टम्। "देवता-माञ्चया ग्रह्मानिवीपांस प्रथक् प्रथक्। तूणों दिरेव ग्रह्मी-यादीमञ्जापि मुद्यक् मुद्यक्। यावता होमनिहंसिमेवेदा यव कीर्त्तिता। श्रेपञ्चेव भवेत् किञ्चित्तावन्तं निर्वेपेश्वरम् । यदापि देवतासंख्ययेति वचन चतः सममनौयो य इत्युपक्रम्य पठित तथाध्याकाङ्घाया लाघवेन चक्सामान्यपरमिति। चक्-विधो त् विद्याकरवालपेयौ। यव प्रयोजनाभावनिश्चयस्तर्वेव तद्वादागादि लोपः। यवानुष्ठानवैलायामेव पुरुषदे।पेण प्रयोजनाभावी जायते तदा पाक् तिवययात् गाम्तपापितः चदार्थी नियमापूर्वमावार्थमनुष्ठेय इति। चतएव यदा त्वान-स्यादिना बीद्यादिखाने तण्डुला ग्रहीताः तदापि भवधातादि समाचरित याज्ञिकाः पठित्ति च। "घाते न्यूने तथा किन्ने मानायो मान्त्रिके तथा। यद्रो मन्त्राः प्रयोक्तव्या मन्त्रा यद्वार्थ-

साधकाः"। मान्त्रिके मन्त्रमाध्ये घषघातादी। न्यूने तत् कारी सम्बपाठाभावेऽपि यज्ञकारी सन्ताः पाद्याः। पर्सिमु सन्वार्यज्ञानस्य नास्युपयोगः। इत्यमवेदानी प्रयोगानुष्ठानमा इ चरसालोयपरिमाणमाह छन्दोगपरिग्रिष्टम्। "तिर्थ्यगुर्ह्स-मिमावा हट्। नातिष्टक्षमुखी। मर्गयोड्यरी वापि चर्याली मगस्यते"। गर्भप्रस्तार दौर्घाभ्यां प्रादेगप्रमाणा चत्रसासी भोड्-अरो तास्त्रमयो एषा पायसचराविष न निषिद्यः "प्रयानुष्ट्रतसारस तास्त्रपाचे न द्यति" इति स्मृतिसागरभृतवचनाञ्च। श्रतएव सारदातिसके। "ततय संस्कृते वक्की गोचौरेण चर्" पचेत्। सन्देष चालिते पावे नवे तास्त्रमयादिके"। दिचणीत्तरा-भ्यामिति दिचिण उत्तरत उपरि ययोः पाखोसाभ्यां मुपलं ग्रहीत्वा हति ग्रेष:। वि.फनौक्ततान् विधा वितुषीक्ततान् कण्डलपच्छटनाभ्यामिति श्रेषः। पषिवान्ति हितान् पविद्यम् ष्रनाहितं व्यवहितं येषां तान्। तेन चरुषान्यामुत्तराषं पवित्रं निः सिप्य तण्ड्लान् निस्पित्। कुशनश्रतिमविति कुशलेन पाकनिपुणेन ऋतं यथा न दाधं नातिक च मन्द-पक्षं तथा स्थासीपाकं यथा स्थास्तथा अपयेत्। अतएक क्टोगपरिशिष्टम्। "ख्याखीतचरः खिन्नो ह्यदम्बीऽकठिनः ग्रभः। न चातिशिधितः पाको न च वीतरसो भवेत्"। बीतरसो गासितमण्डः। प्रदिचणसुदायुविविति प्रदिचिणा-वनं यया स्थानया मेच्लेन जहुमीपनिषयन्। युमियले दलस्य क्पमेतत्। ऋतमिलाभिषार्थिति स्कृटितम्। चर्-माज्ययवणाप्ताव्य उद्यक्ते त्त्रास्थाम् उत्तार्थ्य प्रत्यभिघारयेत् पुनर्हतेन तया सेचयेत्। हषोत्सर्गे तु श्रीभघारणदयात् पूर्वे ज्वलदङ्गारेण विद्योतनहरामा इक्टोगपरिशिष्टम्। "पधि-

पुनरवाभिषारयेत्"। सेचणादोनाइ छन्दोगपरिशिष्टम्।
"इभाजातीयभिभाईप्रमाणं सेचणं भवेत्। इनं वार्चञ्च पृष्ठाप्रमावदानिक्षयाच्यमम्"। इध्माईप्रमाणं प्रारेशदयिमध्मस्य
प्रमाणं परिकल्पितिमिति। तदईं एवैव दवीं विशेषस्त महास्वे। 'दवींदाङ्गलप्रमणं तुरीसेण तु सेचणम्। सुपकोद्वले वार्चे खायते सुदृढे तथा। इच्छाप्रमाणे भवतः सूपं
वैणवसेव च"। प्रव तिर्थ्यगूर्वे लादि वेणवसेव चित्रन्तेन चर्वङ्गसभिधाय भूमिचपपरिसमूहनदस्तविन्द्यासं कुर्थादित्युक्तम्।

षय भूमिजपादिविधान तदाइ चतुर्घे प्रथमका एडकायां गोभिन:। "पयादमेर्भूमौ स्वची पाणी प्रतिस्थाय" इति। भूमेभेत्रामह इति वखन्त राष्ट्री धनमिति दिवेति इदमिति मन्त्र वस्त्रन्ते वसु इति रात्रौ दिवा क्रियमाची कर्माचि धनमित्यन्तं जपेत्। विन्दते धनमिति। श्रव विन्यासे विशेषमाह क्रन्दोगधरिशिष्टं "दिचिणं वामती वाद्यमासाभि-सुखमेव थ ! करं करेण कुर्वीत करणे त्यञ्च कर्मणः । कुला-न्यभिमुखी इसी खखानखी सुरंहती। प्रदक्षिणं तथा-सीनः क्यांत् परिसमूहनम्"। करेपेति पष्टार्थे वतीयाः दक्षिण एस्तमधीमुखं तथाविधवास एस्त्राय पृष्ठीपरि भावे न विपर्यस्तमाताभिमुखं भूमिजपे कुर्यादिव्यर्थः। पान्य-भिमुखी नात्मासिम्खी खखानखी न तु सूमिनपवहासी सुर्ध-इती विस्तृतलग्नी तथा चाग्ने: परिममूहनं विचिप्तावयवानांम् एकोकरणरूपं सुकरं स्थात्। एवमेव भट्टनारायणोपाध्यायौ। एतेन च दिचिषहस्तेन कुगान् ग्टहीत्वेति भवदेवभङ्किखनं निधामाणम्। इसं स्रोसमहते इति व्यचिन परिसमूहेदिति स्रवंश मापेयम् एतदनुसारादेव बद्धास्यापनानन्तरं भूमिनप-घरिससूद्दलदिति भवदेवभट्टवीरेखरोतां युत्तम्। भट्टभाष्ये

तु भूमिलपं वृत्रचेन परिसमूहनं कुथात् पथाद्ब्रह्योपवेशन-मिति। सरलापरिशिष्टप्रकाशयोस्तु भूमिलपानन्तर चर्त्र-पणमिस्तुलम्।

म्यास्तरणम्। "मानिस्यसमाधाय सुनै: समस्तं परिसृण्यात् पुरस्ताइ जियतः उत्तरतः पञ्चादिति सर्वतस्तिवतः
पञ्चाद्वतं वा वस्त्रमयुग्ममसंहतं प्राग्येर्मृनान्य च्छादयन्"
इति भ्रस्तायः उपसमाधाय ज्वालियता समस्तं मर्वतः पुरस्तादिस्यनेन क्रमेण मर्वतः सर्वास् दिस्तु विवतं पञ्चावतं वा
बहुत बहुत्वस्यकम् भ्रथुगमं युग्मिभियम् भ्रसंदत्तससंस्वन पृथक्
प्रयक् विवतं पञ्चावतं विस्मेन भ्रथुगमे सिन्ने भ्रयुग्मिमिस्यकावतस्वाप्तास्यर्थम्। तथा च ग्रञ्चान्तरम्। "स्क्रान्तिव प्रतिदिशं
पदिच्यमग्नि परिस्तृणातीति" एवमेव भवनारायणचरणाः।
तव सकदावतमग्रक्तविषयम्। "पूर्वास्तृतावतानां मृत्वानि
प्रयादावताये म्हादयन् परिस्तृण्यात्"। 'एवश्च "प्रतिदिशं
दर्भवयेणावतानि क्रत्वा तेषां मृत्वानि तथेवाच्छायः तेषां
मृत्वानि तथेवाच्छादयेत् ततो दश्वदिसु स्वस्तिवान् दद्यात्"
इति भवदेवमदः।

चय विमितिकाष्टिकाः। गोभिलः। चयेशान् कलयेत् खादिरान् पालाप्तान् विति । तत्र छन्दोगपरिमिष्टम्। 
"प्रादेगद्दयिभपस्य प्रमाण पिक्कोिर्त्ततम्। एवंविधाः सर्रेवेधसिमधः सर्वकर्मस्॥ सिमधोऽष्टाद्ग्रेधस्य प्रवदन्ति 
सनौपिषः। दर्भे च पौर्णमाने च क्तियाखन्यासु विभितः"॥ 
इति। विगतिकाष्टिकारूपमृभिधामद्वाद्वीमादिषु निपेधस्तचेष "मङ्काममिमिनन्त्र गोष्यन्याप्येषु कर्मस्। येथाच्वेतदुपर्युक्त तेषु तत् सहस्रेषु च॥ अच्चमङ्कादिविपदिजनद्वीमांदिक्षेष्रीष्। द्वीमाइतिषु सर्वासु नैतेष्विधी विधीयतं"॥

यक्ष होता: सीमन्तोत्रयनचूडाकरणादी विश्विता: तेषु श्रन्थ-सीमन्तोत्रयनादे: प्रधानलात्। तथा दिविधा होमा याज्ञिक-प्रसिद्धाः चिप्रहोमास्तल्वहोमाय। तव चिप्रहोमाः चिप्रं ह्रयन्त इति खुत्पच्या सायं प्रातर्होमादयः तन्त्रहोमाय परि-समूद्दनविद्धराखादाङ्गविस्तारयुक्तः। श्रव्र ये समिद्धवि-स्त्रास्तन्त्रहोमाः यस सुख्यप्रस्वाधं शोष्यन्तौ होमस्तेषु येपाञ्च वैष्यदेव सायं प्रातर्हीमादीनामितिद्धाच्यं द्रव्यम् उपरि प्रयात् श्रय द्रधानुकल्पयेत इत्यनिन स्त्रेणोक्तं तेषु वा तस्तर्ह्योषु चिप्र-होमेषु द्रभस्य निवृत्तिभविदिति। श्रवभङ्गादिविपदि विवाहो-स्रोभिकोक्तयानकालीनाचभङ्गादिविपन्निमित्तहोमी जल-होमादिकमस्तित। "जीकित वैदित चेव हुतोच्छिष्टे जले चिप्तौ। वैखदेवय कर्त्तव्यः पञ्चस्त्राणनुत्तये"॥ द्रव्याद्यक्त-जलचित्रादिहोमेषु सोमरसाहृतिषु।

स्रधान्यसंस्कारः। गोभिनः। "विहःसु खानीपाकासासाय इद्यामग्नावाधायान्यं संस्कुर्ते। श्रास्तीर्णकुरिषु चर्
निधाय समिधसग्नावाधाय ज्यसनार्थत्वादमन्त्रक्षम्"॥ तथा
च कात्यायनः। "इश्रोऽप्येधार्थमेवाग्ने ईविराष्ट्रतिषु रन्त."।
श्राच्यमाद रुष्णास्यहे। "यग्निना चैव सन्वण पविवण
च चत्तुषा। चतुर्भिरेव यत् पूतं तदाज्यमिति च स्सृतम्॥
पृत वा यदि वा तैन पयो वा दिधवावक्षम्। श्राच्यखाने
नियुत्तायामान्यश्रच्यो विधीयते"॥ एतदचनं यञ्चपान्तीयमाप। संस्कारविधिमाद गोभिनः। "ततः एव विहेषः
पादेशमाव कुर्ते भोषधिमन्तर्थायाच्छिनित न नदीन पविचेस्पी वैण्वश्री" दति। तत भास्तृतात् प्रादेशमाचे विस्ततः
तर्जन्यषुष्ठप्रमाणे। द्विचनं दल्यपेच "न त्वनन्तर्गभिणं साथ
कौश्रं द्विचनिव च। प्रदिश्रमावं विज्ञेषं पवितं यच द्वार

चित्"। इति कात्यायनोक्षिद्वपविवस्य हिलं तथाल् प्रादेशमाले इति खर्षे स्थात् सतएव कात्वायनोक्तेनैवाच्य-स्योत्पवनार्थं यत्तदप्येतावदेव तु इत्यत एकत्वेन निर्दिष्टम्। चनन्तर्राभिषम् अन्तर्गभस्यामावीऽनन्तर्गभे तर्युक्तम् अन्तर्गभे-श्चिमित्ययः। "यनन्तस्तस्यो यो तु कुशौ प्रादेशसिमाती। ष्मनखच्छेदिनौ साग्रो ती पविवासिधायकी"॥ इति ग्रीनकः वचनैकवाकात्। चत्र दलेऽपि क्रमपदप्रयोगः। भ्रोपिध-मन्तर्धाय ब्रीह्यादिनान्तरा क्षत्वा। गोभिसः। "ब्रयैने भिद्धिरनुमाष्टि विष्णोर्भनमा पूर्तस्य" इति। एने पविष्री। सखेन सूलप्रादेशे रहिता दिचिणेनानुस्व्यात् विणोरिति मन्त्रेण। गौभिनः। "संपूर्योत्पुनात्यदगग्राभ्यां पविद्रा-भ्याम् अङ्ग्रहाभ्याचोपकनिष्ठाभ्यामसिसंग्रह्य प्राक्यस्तिकत्-पुनाति देवसा लासवितोत्पुनालि च्छिद्रेण पवित्रेण वसीः स्यम्य रिमिभः खाद्या दित सक्तत् जुद्यात् दिस्त्रणोमिति। सेपूरपष्टतमान्यं "पविवमन्तराष्ठत्वा स्थास्थामान्यं ममावपेत्" द्रत्येषं वश्यमाणविधिना संपृयिति भद्दभाष्यम्। सपूय मिन्न-कार्यपनोयेति सरला उत्पनात्यूई श्रीधयेत्। तत्पकार-माइ उदगदाभ्यामिति। अङ्गुष्ठाभ्यामित्वादी द्विवचनं पाणि-धयार्थम्। एवमनेन प्रकारेणाभिसंयुच्य प्रकृते पवित्रे प्राक्यः प्रागातं विरुत्पुनाति चग्नी वारवयं घृतं निचिपति। तत्-प्रकारमाष्ट मन्नेण सक्तत् हिस्तूणीम्। गीमिनः। "सयैने यद्भि-रभ्युच्य मग्नावप्युत्सजेदिति"। भविरेवार्धे मथानन्तरभवा-सुचन एने पविवे सब्येन ग्रष्टीत्वा दिचिणेनाभ्युच्य। गोभिनः। "चयैतदाष्यमधियत्व षदगुद्दासयेदेवमाष्यसंस्वारोऽपि भव-मोति"। पालां तर्षतपातम् यथियिता यमने र्परिक्त खदक् उत्तरतः टहासयेद्वतार्येत् यत्रैवास्यसंस्कारसावे वायं

कस इति चत्र गर्भेपात्रमंस्कारवत् मकत् संस्तात्रम्याते यानि निःचियन्ते तेयां मंस्कारान्तरी नासीत्याम गर्थान्सप्टः। "यथा सीमन्तिनी नारी पूर्वगर्भेष संस्कार। एवमान्यस्य संस्कारः सस्कारिविध सोदितः" ॥ साम्यस्यमन् गर्धापरिविष्टम्। "सीमन्तीत्रयनं प्रथमे गर्भे सीमन्तोद्यमन् संस्कारी गार्भेपात्रसंस्कारः"। इति श्रुतिरिति। गर्भेपात्रयोन्संस्कारी गार्भेपात्रस्य तदाधारस्य स्त्रिया इति कस्ततः। इति गर्भेपात्रस्य संस्कारी सोमन्तेन सुस्तियाः। यं यं गर्भे प्रस्ते संस्कारी संस्कारी संस्कारी स्वत् प्रवादित्रि स्वत्याच्याः साम्यस्य स्त्रामीपात्रः। इति। स्त्र प्रवादित्री स्वत्याच्यास्यास्त्रीपात्रः। इति। सत्र प्रवादरित्री स्वत्याच्यास्यास्यास्यास्यास्यास्य स्वयदेशः तेन तो प्रवादरित्री स्वत्याच्यास्य स्वयत्री स्वयत्यास्य स्वयदेशः तेन तो प्रवादयोः स्वाय्यो तत्र प्रवासित्र स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्यास्य स्वयत्यास्य स्वयत्यास्य स्वयत्यास्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयास्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयास्य स्वयत्य स्वय

मार्जनं कुगै: कार्यम् । पृतादिलेपवतास्योन धारिणा प्रचालन पूर्वकमरनी प्रतापनं कार्यम् । लेपरहितानान्तु प्रतापनं दर्भैः समार्जनमभ्युचणम्। पुनः प्रतापनमुत्तरती निधानञ्च कुर्यात् तथा च कात्यायनः। "स्रुवं प्रतप्य दर्भैः संग्रन्थाभ्युच्य पुनः प्रतम्य निद्ध्यात्" इति श्रान्धादिसंस्कारं वारस्रयं कुर्यादिति भवदेवभद्ः। द्विश्रमीणाप्येतत् प्रकरणे सक्तिविति वचनादित्युक्तम्। द्वीमकाले पञ्चाप्नुनांस्यक्ता शहमुद्रया धार्यः स्त्वः "पञ्चाङ्गलान् विहिस्यक्का धारयेच्छङ्घ-सुद्रया" इति वचनात्। पाण्याहृतौ तु गोभिनः। "उत्ताने-नैव एस्तेन धाङ्गष्टाप्रेण पीडितम्। संइताङ्गानिपाणिस्तु वाग्यती जुडुयाद्यविः"॥ तत्र परिमाणे कात्यायनः। "पाण्या-चुतिर्दादग्रपर्वपृश्काकंग्रादिना चेत् स्वमात्रपृश्का। दैवेन तौर्येन च ह्यते इवि: खगारिण खर्झिप तच पावके"॥ श्रमती तु स्मृति:। ''भाद्रीमलकमानेन कुर्याधीमहिन-र्घसीन्। प्राणाञ्चितियसिश्वेय सुद्र गात्रविग्रीधिनीम्"॥ का॰ त्यायनः। "यो निर्धिष चुद्दोत्यको व्यद्गशिष च सानव.। सन्दास्निरासयावी च दरिद्रय स जायते॥ तस्मात् सिसहे होतय नासमिष्ठे कदाचन। सारोग्यमिस्प्रतामायु स्थिय-मात्यन्तिकीं तथा ॥ लुझयय हुतो चैव पाणिसूर्यस्कादार्वासः। न कुर्यादिनिधमन न कुर्याक्षाजनादिना ॥ सुरीनैव धमेदिनि मुखाहेरपोऽध्यनायते"॥ नामि मुखेनित च यत् सौिककी योत्रयन्ति तत्। हि यसात् मुखात् मुखपितमन्त्रात् एप मस्ति। ततय लीकिक इति तदितराग्निपरम् एतेन नीकिक इति योतामिमियपसीति मैधिनोक्त हैयम्। धुप्यय द्वते चैयेत्वनेमोपक्रमवचनन संस्क्रियमाणसंस्कृतान्यो-रेव पाणिच्पिदिनिपेधमुखेन मुखधमनस्य विदितत्वात् तद्-

व्यतिशिखेव लीकिकशब्देनाभिष्ठारणविधेरीचिखात ग्राष्ट्रि तत्वस्यानुपस्थितेय एवमेव गुरुचरगाः। यस् श्रानिस्तु नाम-धेयादौ होमे सर्वत सौकिके" इति क्रन्दोगपरिशिष्टवचने नाम-करणाद्यर्थमम्बेर्लीकिवल्यमुक्तं तत्र। खेडमावन्यश्रोमः स्या-दिति तस्यैव वचनान्तरेण साग्नेः पितुः स्रोयाग्नी तत्तरणः निषेधात् सौकिकाग्यास्य मादाय तत्कर्त्यताविधायकं न तु तद्कः संस्कारान्तरमधि लौकिकत्वप्रतिपाटकमिति। गोभिनः। "बानिमुपसमाधाय परिसमृद्य दक्षिणजान्वतो टिचिणेनानिनं श्रदितेऽनुमन्यस्वेति उदकाञ्चलिं सिन्नेत् शनुमते शनुमन्यस्वेति चिषमिति पर्युचेत् सक्तचिर्वा पर्युचणान्तान् व्यतिहरवित-पर्युच्चणहीमीयमिति चरिनमुपसमाधाय काष्ठादिना प्रज्यात्य परिसमुद्य विचिप्तावयवान् एकीकत्य दिचणजान्वको मूमि-गतद्चिणनानुः द्चिणेनास्मिम् यमेर्द्चिणे यदितेऽनुमन्य-खेति मन्तेण उदकाञ्जलिं प्रागातं सिद्धेत् पनुमत प्रसादिना। षाने: पशादुदगलं सिद्धेत् सर्वत्यनुमन्यस्वेति पादिनारग्ने-क्तरतः प्रागासं सिञ्चेत्। टेवमवितः प्रसुवयद्मसित्याटिना प्रदक्षिगोऽस्नियंया स्यासया सदकाञ्चनिना सिघेत वेष्टयेत् विविति फलभूमाये तव सन्वस्तिधोद्यायः मुख्याहत्तो गुणा-वृत्तेर्युक्तत्वात पर्याचाम्तानिति वदुवचनं वित्वपचे दण्डवदु-दक्षधारादिष्वादिरप्यन्तो भवतौात चतियुवन् चन्तर्षयं मियौ-कुर्वन् होमोय होतव्य पर्युत्तन् तक्तनेन समयन् इति। बेष्टनप्रकार उताः।

चय विक्यास्त्रयः । चतुर्यययास्त्रीयययस्याण्डिकार्यः गोभितः । "वैक्यासः प्रकाहोमानामिति" । विद्यास-प्रद्यो विद्यतेऽत इति वैद्यादः भोम्भूभृषः स्रोमित्यादिको

मन्तः। होमानां वद्यमाणपाशुक्तनित्यनैमित्तिकानां पुर-सात् जयः। यस्य निप्रहोमे पर्युदासमाह क्रन्दोगपरि-गिष्टम्। "न कुर्यात् चिष्रहोमेषु हिन: परिसमूहनम्। ं विरूपासञ्च न अपेत् प्रपदञ्च विवर्जयेत्र ॥ सिप्रहोमेषु प्रवह्मकेषु सायं प्राप्तः श्रीष्यन्तौ श्रीमादिषु ब्राह्मण दमं स्तीम-मर्हते इत्यादि मन्त्रंकरणकपरिसमुहनं न कुर्यात्। विद्ध-पाचप्रदरौ च त्यजेत्। प्रपद्विधानमपाष्ट गोभिनः। "काम्येषु च प्रपदः तपस तेजसेत्यादिकः। च एवार्थं तत्र विरूपाचनपात् पूर्वे तत् पाठमा इस एव। तपय तेन श्रेत्यादि जिपिला प्राणानायस्य तसाना वैरूपाचमाहत्तो च्छुमेत्। तपस तेजयेत्यादि जिपत्वा वायुधारणपूर्वकं यं किञ्चदर्धं साधियतु-कामम्तनाम्तरायन् विरूपाचमन्तं नष्ठा वायुं रेचयेत्। अय यदि काम्यकर्मायं कुशास्त्रिका तदा प्रपद्भपानन्तरम् इति भवदेवभट्टः। नित्यनैभिक्तिकयोनीस्य पाठः। ततः सर्वकर्मा-माधारणं विरूपालकपान्तं कम्म।

चय पक्ततं कमी। तल वज्ञनीमानि स्ह्यासंग्रही "सीकिके पावको हाग्निः प्रयमः परिकल्पितः। चिग्नित् मान्तो नाम मानि हाग्निः प्रयमः परिकल्पितः। चिग्नित् मान्तो नाम मानि विधायते॥ पुंमवने चन्द्रमाय गुड्डाकमीणि भोभनः। मीमन्ते मङ्गनी नाम प्रगल्मी जातकनीणि॥ नाग्नि स्वात् पाशियो हाग्निः पाश्रने च गुचिस्त्या। मत्यनामा च चूडायां व्रतादेशे ममुद्रवः। गोदाने स्व्यनामा च केशान्ते हाग्नि-रच्यते॥ वैद्यानरी विपर्गे तु विवाहे योजकः स्टतः। गोदाने गोदानार्यमंकारे। "चतुर्यान्तु शिखी नाम प्रतिरानस्त्याः परे"। चपर प्रतिश्वासदे। "प्राययिके विध्येव पाकयन्ने तु माहमः। महाहोमे तु विद्वः स्वात् कोटिहोमे हुतागनः॥ प्रशिद्धां सहो नाम शान्तिके वरदस्या। योटिके वसद्येव

क्रोधोऽग्विद्याभिचारके कोष्ठे तु जठरो नाम क्रव्यादो सृत-भचणे। ऋह्य चैव होतव्यं यो यत्र विहितोऽनलः"। प्रायसित्ते प्रायसितासकमहाव्याद्वितिहोमादी। पाकयन्त्रे पाकाङ्गकहोमे हपोलाग्यहप्रतिष्ठाहोमादौ । पौष्टिके दुर्गो-सावाङ्ग होमादौ ततयामुककर्मणि चम्ने त्यममुकनामामि इति नाम क्रला "पिङ्गभूशमयुकेयाचः पीनाङ्गजठरोऽरूणः। कागस्यः साचसूत्रोगिः सप्ताचिः यक्तिधारकः"। द्रत्यादित्यपुराणीयः ध्यानं सत्वा धमुकागने यहागच्छेत्यावाद्यामुकागनये नम द्रात पूजयेत्। "संपूजयेत्ततो विद्धां दयार्थेवाहुतीः क्रमात्" इति सार्कग्डेयपुराणात्। चत्रहोमे विश्रयमाष्ठ गोभिनः। "पर्यु-ख्यस्यालीपाने बाज्यमानीयमेचरोनीपघातं होतुमेनीएकमते" े इति चरितेऽनुमन्यस्वेत्येवं पर्युक्ता। स्थालीपाके चरौ। भाज्यं प्रचिष्य मैच्यानोपधातम् उपह्यावदाय । होतुमेबोपक्रमते चारभते। उपघातमिति हिंसार्थाचैककर्मकादिव्यनेन छत्रो-यन्तोपपदेन न मासिङ्गम् एवकारकरणमुपघातद्दीमे श्रमिघा-रणचतादाङ्गप्रतिपेधार्यम्। इतिमेबीपक्रमते नान्यतः। उप-भातदोमनसणमा सरहासंग्रहे। "पाणिना मेचलेनाय सुवेणैव सु यहितः। ह्रयते चानुपस्तीर्था उपघातः स उचाते। यदा-पघात' जुडुयाचरावाच्य' समापरीत्। मेचणेन तु छोतव्य' नाष्यभागी निखिष्टिकत्'। बहुदैवत्यचरहोमे तु उपघात-होम एव। "चरौ तु वहुदैवत्ये होमम्तस्योपघातवत्" इति परिशिष्टप्रकाशवचनात् ततः प्रक्ततद्दीमात् परापरयोख्यणीं म् मित्प्रचेपमा इन्देगपरिगिष्टम्। "समिधादिषु होमेषु मन्बदैवतवजिता। पुरस्ताभोपरिष्टाभ इन्धनार्थं समिद्रवेत्"। स्राति:। 'भन्तेणोद्वारपूर्वन खाद्यान्तेन विषचण:। खाद्या-वसाने जुहुयाद्यायन् वै मन्बदेवताम्"। खाद्यान्यसन्ब

खाडान्तरं नाम्तीति मरना। भट्टभारये मन्द्रतन्त्रप्रकाम थ। "नमोऽत्तेन नमो ददात् खाद्वात्ते हिठमव च। पूजा-यासासुती चापि सर्ववायं विधिः सृतः"। हितः स्वादा द्रत्यागमविदः। गोभिनः। "पाच्याद्वतिप्वात्रयमेव संस्क-त्योपधारं जुद्यात्राध्यभागी न स्विष्टिक्तत्। चाध्याद्वतिव-नारेंगे पुरस्ताचीपरिष्टाच महाव्याह्नतिहोम: यया पाणिपहणे तया चुडाकर्मख्ययमे गोटाने द्रित चाच्यमेव ययोह्यन विधिमा सम्कृत्य उपघातं सुधेगोप इत्य क्षुयात् पाच्यमावक-श्रीमेषु भाष्यभागिकिष्टिक्षतामितिदेगपामानां निषेधः एवः मान्यमावकहोमेषु एतिहोमादिषु धनादेशि यव पुंमवनग्रहाः कर्म मोमकोष्रयमच्डाकरण।दिप् पराद्यने सदग्रेषु दर्भ-शिलादिनाऽगिषणं प्राप्तं विशिष्टणोमी नोपदिष्टः तप मधानकर्मणोऽंगाभिमधैषादैः पुरसाश्चोपरिष्टाश सहाम्याद्य-तिभिः भूभुषः चरिति तिस्भिष्टीमः कार्यः यया पाणिपष्ण दित यथा पाणिष्रदेषे महाव्याष्ट्रितः एथक् ससम्ताभिष्यत्थिः मिति गोमिनगुथेण यया पाणियच्ये चतस्यस्त्या मुद्राटिय संस्थारहर्षेषु पृथं प्रयास्त्रस्यतस्यः सराध्याद्वस्याद्वस्यः प्रति। चर्षामानस्त्रम् गोभिन्नेन महाव्याष्ट्रतिभिराज्येन ल्ह्यादिति ग्वागोरसीम प्यामाश्रामाश्वतिसामः कर्मधी म त पूर्वमिति। मीभिन: "यद्यवा उपस्तीर्णाभियादितं सुरू. घटाज्यभागायेव प्रथमं जुस्यात्। चतुर्रहोतमाञ्चं गृशीता यचावमेना भगुणामनये सादा दस्युमारतः मोगायति दक्षिः रतः पाष्यां कृष्यादिति घषेग स्विग्दाण प्रथमं स्राप्त मद्वस्थोनं सर्वर्षकोत्या यमन्तरसाक्यं दोवतं मद्शियानिसं यदि मधाविधं क्रोगुभिक्द्रसदात्र्यभागायेव प्रयसं खकुयात्। गुषा द्वीराम् यभेभ ग्रद्तिं सुद्धा सुद्दीति गुष्टा नाराम्

स्विण स्वि चतुर्दा रहौतमान्यम्। सृगूणां सृगुगोवाणा-मिति सरला। पञ्चार्पेयाणामिति रटह्यान्तरात् भागवप्रवरा-णासिति भद्दभाष्यम्। स्युगोताणां भागवप्रवराणामितिः भवदेवभट्टः। तेषां पञ्चवारं तथा गटहीला चम्बये साहित्य-नेनाम मेध्यदेशादुत्तरे प्राद्मुखधारया जुडुयात् उत्तरमागेयं दिसणे मौस्यं मध्ये त्या हुतयः इति सांख्यायनस्त्रात् तथैव टिचिणभागे। सीमाय खाहेति ज्हुयात्। ततः प्रकतदेवता चरहोमानन्तरं स्विष्टिक दोममाइ गोभिनः। "घष स्विष्टि-सत उपस्तीर्यारभ्योत्तरपूर्वार्द्धात् ससदेव भूपिष्ठं दिर्शान-घाररीत् यद्यवापञ्चावनी सात् हिरूपस्तीर्यावदाय हिरवघा-रवेत् न प्रत्यनम्यवदानस्थान यात्यामतायै अग्नवे सिष्टि-क्तते खाहेत्युत्तरपूर्वार्डे जुहुयात् महाव्याहृतिभिराज्येनाभि-ज्ह्यात्। प्राक् सिष्टिक्षत श्रावायीगणेष्वेकं परिसमूहनम् रधो वर्ष्ट्: पर्याचणमाष्यभागी सर्वेभ्य: समवदाय सक्तदेव मौद्यष्टिकतं जुद्दोति इलेतमो चणमनुद्दिति। स्विष्टिकदर्धं स्चिप्तस्वं दस्वा चरोहत्तरपूर्वोद्धारीयानकोणरूपानोध-णेन बहुतरमेकवारं ग्रहीत्वा सृचि स्थापयित्वा वारहयं छतेन सेचयेत् पञ्चावदानपचे छतस्वदयेनोपस्तरणं सक्तदविनिचेपः पुनर्विनाभिसेचनदयमिति। अत्र मेच्यचतस्थानं वृतिन प्रावयेत पुनर्यागार्थमेव तत् ततस्य यागायोग्यतारूपयातयाम-तायामपि न दोप इत्यर्थः। ततोऽग्नये खिष्टिक्षते खाईत्यनेन र्श्रानकीणे जुष्ट्यात्। ततो भूभूवः खरिति तिस्भिमेषा-व्याद्धतिभिर्धीमः। यस्य चर्डोमे पद्माद्देशाव प्राक्षरण-मिति। या उपात द्यावाप: प्रधानहोग्न: स तु व्विष्टिक्नहो-मात्र प्राक्त न तु पथादिल्यधः। एवच मुख्यहोमे लक्षते यदि चर्रमेष्टी दृष्टी वा तदाान्यः पाचः मुख्ये कते यदि नागद्ष्टी

स्थातां तदाच्येनैव स्तिष्ठिक्षद्वीम इति सरता। गणेषु एकि दानेकयागिषु एकमेष न प्रत्येकं 'परिसमूहनादि उपस्थाणता-दुदूखसमुपलाद्यपि एवं सिष्टिक्षद्वीमोऽपि सक्षदुपनद्यणमेतत् महाव्याष्ट्रत्यापीति सरला। अनुहरेत् घरनौ चिपेत् एवस्का-प्रकारेण यथाययं समापयेत्।

षयोदीचाम्। षव गोभिलः। "समिधमाधायानुपर्युच्य तयैवोदकाच्चलीन् सिच्चेत् षत्रमंखा" इति मन्ते विशेषः।

त्रय प्रायिसम्। होमानन्तरं कमीवैगुखममाधानार्थं प्रायित्तं गोभिसानुक्तमपि तत्परिज्ञिष्टोक्तं सुर्व्यात् तदाधा "यय व्याह्यतिभिद्धीमः प्रायिचात्राक्षको भवेत्। चतस्रस्तव विद्येया: स्वीपाणियप्रणे यथा॥ अयवा द्वातमिखेषा प्राजा-पत्यापि वाचुति:। द्वीतव्या विविकत्योऽयं प्राथिकिविधिः स्मृत."॥ यत्र प्रायशित्रकृषो महाब्याष्ट्रतिष्ठोमो विधीयते तव चतस आहतयो होतव्याः। यया विवाहे तथा च गोभिन:। "महाध्याद्वतिभि: पृथक् समस्ताभियतुर्घोभिति"। भरार्थः । भूरावाभियमाभिस्तिसभिस्तिस भाइतीः भुभुवः सः साहिति समस्ताभियतुर्धो जुहुयात् श्रविवा। श्रयवा चन्नातं यदनाश्चात्रमिति मन्त्रेणाद्वतिष्टीतथ्या प्रजापतये खाइति वा प्रायिचिविधिविकस्पत्रयवान् मुनिभिः स्मृतः दल्यनेन पत्तान्तरं निरस्तम्। ततय भवदेवभद्दीक्षप्रायिश्वाः समाव्यायनशोमो निष्यमाणः भट्टनारायणैगीभिसभाष्ये तदममाणीक्षतत्वात्। ततस प्रायसिक्तहोमायं सङ्ख्या यस्ने लं विधुनामासीति नाम कत्वावाद्य संपूष्य समिधं प्रविध्य "पाज्यद्रव्यमनादेशे जुषोतिष् विषोयते" पति छन्दोगपरि-शिष्टात्। पाष्यद्रथकहोमत्वेन पुर्वापरं महाखाद्वतिहोमः। तया च गोभिनः। "पाषपाइतिष्वनादेगे पुरस्ताद्यीपरिः

ष्टाच महाव्याहृतिहोम इति"। एवच तिस्थिममहाव्याहृति-भिर्द्धं व्यक्तसमस्तिः प्रायिषत्तक्यायतस्य पाष्ट्रतोर्द्धं वा तिस्थिमहिष्याहृतिभिर्द्धं समित्प्रदेपेण प्रायिषत्तं समा-परीत्।

चय यज्ञवास्तुकरणम्। गोभितः। "समिधमाधाया-नुपर्याच्य यज्ञवास्तु करोति तत एव वर्षिपः कुश्रमुष्टिमा-दायाच्ये इविधि वाविरवदध्यादयाणि सध्यानि सूनानि चक्षं रिश्वाच्यन्तु वय इति। चयैनमद्भिष्युच्याग्नावपवर्जयेत्। यः पश्नामिलादि इत्येतद् यज्ञवास्तु इत्याचचत इति समिधादानानुपर्याचणयोः सिषयोः पुनर्वचनं क्रमार्यम्। यञ्जवास्तु इति वद्यमाणस्य कर्माणी नामधेयम्। क्षयं करी-नोत्यत चाइ तत इति। ततस्तवादेव वर्षिप चास्त्रतकुगात् कुयमुष्टिमाटायाज्येऽबद्ध्यात् मक्तयेत् न चेदाष्यमवशिष्टं इविधि चराबादधास् प्रयादिप्रदेशम् यक्षसिति सन्येष स्थानभेदामान्याद्वति:। प्रयानन्तरमेवामुखन एवं कुगमुष्टि-महि: प्रकीताहिरभ्युच्यास्नावपवर्जयेत् दाइयेत् यः पशुनाः मिति मन्तेण तत एवयर्डिय इत्यारभ्य यसुप्त तद्यप्रवास्तिति ह्याः कययन्ति। एतत् प्रयोजनन्तु प्रतिप्रधिकर्मात्वेऽपि तद्रव्यमायि एतत् कर्माप्राप्ताविष यत्री यसिन् वमतीति व्यात्मित्रतिपाद्यार्थभिद्यार्थं कुगान्तरमुष्टिमादाय तत्कर्त्रवः सिति एवमेव भद्दभाष्यम्।

चय पूर्णां हितः। तत्र पूर्णां हत्यां गडो नामिति प्रागृतः वचनात् गडनामानमानमानाद्या मंपूष्य दद्यादृत्याय पूर्णां वे नीपविग्य कदावनेति भविष्याग्निपुराषाम्यामुत्याय पूर्णां हितं कृष्यात्।

यय वन्दनादिकमे। तत विश्वाद्याः। पियाम्यामाददेवस

सुचामेण सुवैणवा। यन्दनं कारवैत्तेन शिरः कर्छांशकेषु ंच॥ कस्यपश्चेति मन्त्रेण ययानुक्तमयोगतः। ततः शान्ति मकुर्थीत चक्धारणयाचनम्॥ दक्षिणा च प्रदातव्या ग्रहाणाच विसर्जनम्"॥ थान्ति: सामगानां वामदेव्यगानम्। तथा च गोभिनः। "धपस्ते कर्माणि वामदेळागानं प्रान्यर्थमिति"। षपदत्ते समाप्ते। गानाशकी विधा पाठमाइ क्रन्दोगपरि-शिष्टम्। "पर्याचणञ्च सर्वत्र कर्त्तव्यमदितेऽन्विति। भन्ते च वामदेव्यस्य गार्नामत्ययवा विधा"॥ गान कुर्याष्ट्रचस्ति-धिति वापाठः। श्रवधारणमच्छिद्रावधारणम्। "ब्राच्छिद्रामिति यदांकां यदन्ति चितिदेवता:। प्रणम्य शिरसा ग्राष्ट्रमाग्न-ष्टीमफर्नैः समम्"॥ इति शातातपपराशरवचनात्। सव-धारणं तम दिविणादानानन्तरं कर्त्तव्यं न तु पाठक्रमादरः। "हथा विपवची यस्त् ग्रह्माति समुजः ग्रुमे। चदस्वा दिस्तां ेवापि स याति नरकं भुवम्"॥ इति नारदौयात्। यतएव भवदेवभद्देनापि वामदेवागानानत्तरं दक्षिणाभिद्वितान त्व-क्छिद्रावधारणास् परम्। होमदिचिणा च ख्यं होत्पचे ब्रह्मणे देया। बाह्मणे दिचणा देया यव या परिकौ सिंता। कमान्ति त्यमानायां पूर्णपावादिका भवेत्"॥ इति छन्दोग-परिभिष्टात्। गोभिलेनापि दर्शाद्यागमभिधाय पूर्णपाद दिचिणा तं ब्रह्मणे द्यादिखुक्तम्। वान्तवेऽपि पुंस्कं कान्दसम् एतदनुसारात् कर्मान्त इति ब्रह्मसाध्यद्वीमान्तपरं न तु परिशिष्टप्रकाशोक्षनस्माद्यभाविष्यभावकर्मान्सपरम् चरुः प्रधानकर्माद् चिणां कर्मोपरेष्ट्रे याचार्याय स्यात्। यजमाने-तरहोत्यचे त ब्रह्महोत्यमेदेन दक्षिणा विशेषानुपादाने होस-दिसिणैव बहासीसमां यदीतव्या। खयमेव होसमसकर्णे षाचार्य द्यात् "विद्धादीत्रमन्यश्चेद्दांचणाद्वेद्दरी भवेत्।

स्वयञ्चेदुभयं सुर्ध्यादन्यसौ प्रतिपादयेत्"॥ इति छन्दोग-परिशिष्टात्। पूर्णपावलचणन्तु ग्रह्यासग्रहयत्रपार्वपरि-शिष्टप्रकाथयोः। "त्रष्टमुष्टिभवेत् कुधिः कुध्वयोष्टी तु पुष्यसम्। पुष्कसानि च चलारि पूर्णपात्रं विधीयते ॥ ष्मन पद्पञ्चागद्धिकागतह्यसृष्टिमितं पूर्णपावम्। षासकावे तु कन्दोगपरिमिष्टम्। "यावता बहुमोत्तुथ स्थिः पूर्णेन जायते। नावराहेंत्र ततः कुर्यात् पूर्णपाविमिति स्थितिः"॥ भवराद्वीय न्यूनम् । ततः प्रागुत्तनारदीयाच्छिद्रावधारणं क्षयात्। ततः साङ्गतार्थे तहिणोरिति मन्तेण विणुं सारेत् "प्रमादात् कुर्वतां कमी प्रचिताध्वरेषु यत्। चारणदिव तिह्यणोः संपूर्णे स्यादिति श्रुतिः॥ तिह्यणोरिति मन्वेण स्रायादस्, पुनः पुनः। गायवी वैष्यवी द्येषा विष्योः संसार-णाय वैणा इति याज्ञवस्कात्। तती "गच्छध्वममराः मवं रष्टहीत्वार्चा खमारायम्। सन्तुष्टा वरमसाकं दखेदानीं सुपूजिता."॥ इति विष्णुधर्मीक्षरीयेण विसर्जयेत्। पत्र मामान्यनिर्देशात् वशिष्ठवचने ग्रह्माणामित्युपलचणम्। ततः "प्रीयतां पुण्डरीकाचः सर्वयन्ने खरी हरः। तिखां सुष्टे जग-त्तृष्टं पौषिते पौषितं सगत्"॥ इति मस्यपुराषौयं पठेत् दति सर्वद्वीमसाधारणिति कर्त्रथता।

भय विवादः। तत्र पूर्वे यदि वाग्दानं क्रियते यदा
भयोत्यादि भ्रमुकगोत्रस्यारोगिणीन्यद्वस्यापतितस्याक्षीवन्याविवादामुकगोत्रामुकीं देवीं क्रन्यां दातुं तवाद्वं प्रतिकाने दित
पिता सूयात्। भणिन् कालेऽग्निवापिणे स्नातः साते
द्वारोगिणि "सम्बद्धीयितिरक्षीये विता क्रन्यां पदास्यति"
द्वारोगिणि "सम्बद्धीयविक्षाने स्वाद्यादिभिरेवं प्रतिका क्रमन्या
तस्यविवाने तु पूर्वेक्षिं वायाम्। पितुरमाचे क्रयंन्तरस्यापि

ध्योतिषे। "गुरीभुगौरस्तवान्ये वार्डके सिंहरी गुरी। विकि-नीवेश्यविगेशिक गुर्वादियो द्यादिके॥ पूर्वरामावनायाताः तिचारिगुर्वसरे। प्रायागिमन्त्रनौवस्य चातिचारे विपचके॥ कमाचद्रुतसप्ताष्ट्रे भोषस्येच्ये समिख्ये। भागुप्तिक्षिभासि घर्चे राष्ट्रयुति गुरो ॥ पोषादिकचतुर्माने चरणाद्वितयर्पणे। एके-नाष्ट्रा चैकदिन हितीयेन दिनवये॥ एतीयेन सु ममाई सङ्ग स्यानि जिजीविष्:। विद्यारभाषणंविधी छडीयनयनीद्रहान् । तीर्यस्नानमनाष्ट्रतं तथानादिसुरेसणम्। परीचारामयत्राप पुरयरणदोषणे। ग्रतारभाप्रतिष्ठे च ग्रहारभाप्रयेगने। प्रतिष्ठा-रभाषे देवकूपादेवेर्जयस्ति च"। पाखनायनः। "छदगयने पापूर र्यमाचे पचे मत्याचे नचने चुडीपनयनगोदानविवादाः"। विवादः सार्वेकालिक द्रत्येके। चापूर्यमाचे एके गुक्तपचि। दगवर्षास्यन्तर एवोदगयनाद्यविद्यामाष्ट्र भुजवनभीमः। "यह-गुहिमन्दगुधिं सामायनर्नुदिवसानाम्। पर्वाक् दगवर्षेथी सुनयः कथयन्ति कन्यकानाम्। एतत् परन्तु विश्वेषमञ्जिरो वयनं यथा। कालात्यये प कन्यायाः कासदीयो न विदाते । मसमासादिकालानां विवादायो प्रयक्षतः। पुंसः प्रति सदा दोपःत् सर्पदेव दि वर्ष्यता। देवत्युत्तररोष्टिणीस्मातारा-मूलानुराधामधाइस्तखातिषु तौलिषष्ठमियुनैप्यासु पाणि-यहः। सप्ताष्टान्यवहः ग्रमेर्ड्यतावेकादग्रहितिगे क्रे-स्यायषडप्रगैर्न तु सगी षष्ठे कुजे चाप्टमें ॥ पारस्करः। "क्रमार्थाः पाणिं स्टक्षीयाम् विषु विषुत्तरादिषु"। साती सगीगरिस रोहिन्दां विति। तिषु विप्ततरादिषु नवस्त्रियर्थः। एतहचनाचिवयवणधनिष्ठयश्चिमीनस्याणि सभ्यन्ते। "याद्ये मधाचतुभागि नैक्टलस्याद्य एव धा। रेवत्यली घतुर्भाग विवादः प्राणनाथकः ॥ सप्तयसानविधमाह दौषिका ।

"क्षतिकादिचतुःसप्तरेखारायौ। परिश्रमन् ग्रहश्चेदेकरेखास्त्री विधः सप्तमसाकानः। वैस्यस्य चतुर्धे अभे अवणादौ सिप्तिका-चतुष्टयेच श्रामिजित् तत्स्ये खचरे विज्ञेया रोहिणीविदा"॥ श्रमिलिति खचरेऽधिकदोषार्थमाइ रोहिणीति नैतहर्भना-द्युतिवेधो निविद्यः। "चन्द्रातिरिक्तखचरेर्यद्यव वेधसभावः। चिताभूमि तदा नारी भर्वा सप्द विशेद्भुवम्" प्रति माण्डव्य-विरोधात्। दोपिकायां "कर्णवेधे विवाह च व्रते पुंसवनी तथा। प्राथमि चादाचुडायां विद्यम्च विवर्जयेत्"॥ तद्वर्ष द्ययोगभङ्गमास् । "तिष्यङ्गवेदैकदयोनविंगभैकादयासाः रशाविश्वस्थाः । इष्टोड्ना स्येयुतोड्ना च योगादम्येदश-योगभद्गः"॥ राजमात्तंग्डः। "दम्पत्यो हिनवाष्टराथिरहिते दारानुकृती रवी चन्द्रे चार्ककुजाकिंगुकवियुति सध्येऽय वा पापयो:। त्यत्वा च व्यतिपातवैष्ठतिदिनं विष्टिश्व रिक्तां तिथिं क्राहायनचैवयोषराष्ठते लग्नार्थके मानुपे। पापात् सप्तमगः शशौ यदि भवेत् पापेन युक्तोऽय वा। यसेनापि विवर्जये-न्मुनिमते दोषो द्वार्यं कथते। यावार्या विपदी रहे सुत्रधः सीरे स रोगोद्ववो वैधव्यं विवहे व्रते च मरणं शूलस् पुस्तर्भाणि"॥ श्रयं याभिववेधः। श्रस्यापवादमाइ। "सून-विकोणनिलमन्दिरगीऽय तदीचिती वा । यामिचवैधवि-हितानपष्टाय दोषान् दीषाकरः सुख्यमनेकविधं विधत्ते"॥ व्यास.। "रिक्तास विधवा कन्या दर्शीपि स्याहिवाहिता। श्रनेयरदिनं चैव यदि रिक्तातिशिभेवेत्। तिश्मन् विवाहिता कन्या पतिसन्तानवर्षिनी ॥ स्वरोदये। "विनाडीयेधनश्चव-मधिन्याद्रोयुगोत्तरा-इस्तेन्द्र-मूनवारुत्य. पूर्वभाद्रपदास्त्या याम्यसौम्यौ गुरुर्योनिचित्रामित्रजलाद्वयम्। धनिष्ठा चीत्तरा भाद्रा मध्यनाड़ो व्यवस्थिता। दक्तिका रोहियो सर्पो मघा

खातीविगाखके छत्तरा अवणा पीणा पृष्ठनाडी ध्यवस्थिता। प्राडनाचा विध्यते भक्ती मध्यनाचीभय तथा। प्रष्ठनाडीव्यधे कत्या सियते नाव मगय.। प्रनष्टं लगभ यस्य तस्य नाम-र्ज्ती बदेत्। दयोर्जन्मभयोर्वेधे न कर्त्रेय कदाचन। एक-राख्यादियोगे तु नाडोदोपो न विद्यते"॥ तदाया। "एकरामौ च दम्पत्यो. ग्रभं स्थात् समसमने। चतुर्ये दगमं भेव खती-येकादशे तथा"॥ अन्यज्ञयोतिमतत्वे तुससेयम्। अव प। "स्वित्यस्य पिता दद्यात् स्तमस्कारकमास्। पिण्डानोहरू-नाशेषा तद्भावेऽपि तत्कमात्" ॥ इति सन्दोगपरिशिष्टात्। ''वान्यापुत्रविवाहिषु प्रविशे नवविश्सन । नामकर्मणि वानाना चूडाकार्मादिके तया। सीमन्तीमयने चैव प्रवादिमुखदर्गने। नान्दोसुख पिद्धगण पूजयेत् प्रयतो स्टही" इति विष्णु पुराषाद्य। कन्यापुत्रविवाहे पिता नान्दोमुख अर्व्यात् वितुः देशान्तरस्यत्वादिये चन्येनापि प्रतिनिधिना नान्दोसुस्रयाह क्षत्रथम्। तदभावे पितुर्नाये पातित्यादिना याद्यानिध वारित्वे वा तत्क्रमात् तस्य सस्कार्यस्य क्रमात् तेन खय तद्यो वा तत्पिष्टभ्यस्तमातामहेभ्यस याद सुर्योत्। एतत् प्रपश्चित त्यादतत्वीद्वाद्वतत्वयो । विष्णु । "व्रतयज्ञविवाहिषु याही होमेऽर्चन जभे। यार्घो स्तक न स्यादनार्घो तु सूतकम्। धारभो वरण यज्ञे सङ्खलो व्रतनापयी । भान्दी-याद विवाहादी याहे पाकपरिष्क्रिया ॥ व्रतममावास्यादि चादिपदात् सायपातर्हीमपरियद् । "प्रव्रत्त मनमासाद् प्राक्ष यत् कमा न समापितम्। चागते मलमासेऽपितत् ममाप्य न सभय" इति काठकरुश्चपरिशिष्टश्। धारब्ध विवाहादिक मलमधिऽपि कार्यम् जनार्य न कार्यम्। "श्रिधमासके विवास यात्रा चूडा तथीपनयनादि। न कुथ्याम

भावकाशमङ्गस्यं न तु विशेषेच्यामिति" भोमपराक्रमात्। श्रव विवाहादिकी तेर्न निरवकाशमिष निषेधार्थम् श्रन्यया मावकाश्रमित्वनेनेव सिद्देवैयर्थात् मावकाशश्व समावत् का-नान्तरमतो निरवकाश्यस्याध्यनचगतिकस्य प्रतिप्रसंबोऽर्घात् सुचितः। जातकार्यादौ प्रतिप्रयमग्रह रसृतिः। याद्ये जातक-नामानि ये च संस्कारमाथिताः। मस्निचिरिप कर्त्तथाः काम्या द्रष्टौर्विवर्जयेत्" दति सस्कारा चन्नप्रामननिष्क्रमणा-टय दति माधवाचार्थः। यत्तु "नामान्नप्रायन चौड विवाहं मी चित्रस्थनम्। निष्क्रमं जातकर्माण कास्य द्वपविसर्जनमः चास्तं गते गुरो शुक्ते वाले हडे मिलिक्स्चे। छपायनसुपारमां व्रतानां नैव कारयेत्" इति गार्यध्वनं नामकरणादौनां वजनमुक्तं तद्मामकरणाचप्राधनजातकर्माणामेकादशदादश-प्रधानकालास्तानां यद्वागामिकियामुख्येत्यादिवचनात्। य-लरालकत्त्वानां न सावकार्यं मङ्गस्यमित्यक्रविषयकाणां वैदितथं तदाह सएव। 'नामकमी च जातश्व ययाकाल समाचरेत्। अतिपातेऽपि कुर्वीत प्रगस्ते मासि पुर्खदे'॥ तथा गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोद्रयनानि कार्याणि ''गम वार्ष्पि क्षत्ये च नाधिमासं विदुर्वधाः" इति मृत्वचनात्। सत्यसूत्ते। "भूकम्पादेन दोषोऽव द्वांबयाबे सति"। एतदनन्तरं चौरं वर्त्तव्यम्। 'भाज्ञया नरपते ईिजनानां टारकमास्तम्तनेषु च। बस्मीचमय दीचणेखपि चौर-मिष्टमिवलेषु चोड्षु" इति श्रीपतिरत्नमालातः। तदः नन्तरं क्रतीहर्नमानं जामार्तार ग्रहपाद्गनमागते तस्य गन्धपुष्पादिवरणम्। दानवाचनात्रारभाणवरणप्रमाणेषु राज-मानं प्रतीयात्" इति इश्मिम्यमिष्टतवचने वर्णप्रदान-परिणयनश्चिपरिकामीशियकक्षाणि गुभदे तिथौ विज्ञाने

न भविता किनाल्पपुण्यानामिति दोपिकायाच वरणस्ते। एतदनन्तरं वरकन्ययोः पुण्यमानाद्यावित मामा न्याचरण-कपमुजवन्दिकामाच दृरियये। "माग्रीभिवर्षयिता तु देवार्षः कण्णमत्रवीत्। पनिष्ठस्य वौर्य्याच्या विवादः कियता विभा। जम्बूनमानिकां द्रष्टुं त्रद्वा हि मम जायते"। तामाच द्वापात्यान्तु "बामने गयने दाने भोजने पन्तसंपद्वे। विवादे च विवादे च चुतं ममसु भोभनम्"। मह्य-स्क्षा "विनक्मीण यावायां प्रवेशे नवविश्मनः। मह्यत्मित्व च मङ्खे तव ग्रीणां श्रमध्विनः"। ग्रीणां ध्विनः चनुचनुध्यनिः गोत वा। मह्यगुराणम्। "मङ्ख्यानि च वाद्यानि ब्रह्म-घोषच गौतकम्। ऋद्यये कारयेद्विद्यानमङ्गलविनाशनम्"।

षधार्षणम्। तत दानात् पूर्वमर्षणमाद्य मतः। "आच्छाय चार्चियता च श्रुतमौनवते स्वयम्। श्राह्मय दानं कन्याया नाह्मो धर्मः प्रकीर्त्तित."। श्राच्छाय रक्षवामीभ्या कन्यां शक्षवासीभ्या वर परिधाय तत्त वरणदत्त्रवस्त्राभ्यामेव निष्णय-मिति न पुनदीयते। श्रर्चीयत्वा कन्यामकद्वारादिना वरस् गोमिनात्रपृतारादिना। तथा च चतुर्यप्रपाठके द्यमका-ण्डिकाया गोमिनः। उत्तरतो गां वध्वाऽवितिष्ठेत् श्रर्दणा पुत्रवासमा दति श्रर्दणीयदेशस्योत्तरस्यां दिशि गांस्त्रीगधीम्। पुत्रवासमा दति श्रर्दणीयदेशस्योत्तरस्यां दिशि गांस्त्रीगधीम्। पुत्रवासमिति मातादद्राणामिति मन्यन्तिद्वात् बध्वा उपस्थानं स्रयात्। तस्या एव गोरन्यस्या श्रत्रवणात् श्रद्धणा पुत्रवासमा दति मन्वेणार्द्धणीयानामुप्रविश्वने मन्त्रमाद्य स एव। ददमद्य-मिमा पद्या विराजमनाद्यायाधितिष्ठामि दति प्रतिष्ठमानो जपेद् यत्रवेषमर्थन्तः स्युः। ददमद्यमिति प्रतिष्ठमान कर्द्वस्ति-४न् जपेत्। जामाता यत्र देशे। एव जामात्रादिकं श्रद्धयन्तः

पूत्रयक्तः सम्प्रदावादिकाः स्यः। तेन प्रदमप्रमिति सन्त तिहन् परिला जामाता चामने अपविश्वति । परंपप्रकार-मार म एव। "विष्टरपाद्याच्याचमनोग्रमध्यकान् एकेक-ग्रस्थिनिवेदयेरविति"। विष्टरम् माहेदितयवासावर्ष-विताषीस्पापा पर्मस्यापदर्शीः । तथा च ग्रज्ञामंपदः । "करेरेगो भवेद ब्रह्मा मध्यकेमम् विष्टरः । द्विषायर्गको यद्या वामावसंसु विष्टाः"। इति हन्दोगपरिणिष्टम्। "दर्भ-भएगा न विस्ति। विष्टरास्तरपैर्धाप"। एवस् "पश्चागद्धि-भंषेद्र यद्या तद्येन तु विष्टरः"। इति यदि समूनं तदा शारयस्त्रीयम्। एतेन विष्टरे पचिम्यतिसंत्या भवदेव-अर्गुक्ता सिरस्ता। एवं विष्टरप्रकृषे प्रसाध्यामधि यहके तदिवि निश्यतम्। "यवोषदिग्यते कर्णा कर्नाद्वः न चोचते। दश्चिषदाय विद्योग: कर्मणां पारगः करः" इति कन्दोगपरि-शिष्टात्। पाद्य पाद्यालनायमुदकम्। तथा चामरः। "वाद्य पादाय वारिणि। पद्यं द्धास्तसुमनोयुक्तं सम्मा मास्त सुमनोयुक्तमुद्धं द्धिमित्रित्रम्। पर्घं द्धिमधुः भ्याच सध्वकी विधोवते"। इति सहसायपृत्रवस्नात्। प्राचममौयमाचममार्यमुदकम्। दक्षिमधुमाषेण मधुपकिः भिधामं प्रतामधवपरम्। तत्सभावे गोभिलः। मध्यकं द्धिमधुष्ट्रत पिडित कांग्यसं कांग्येनेति। पूर्ववचने पायाः मुवदेगात् काम्यवासं विनापि मधुपकी दीयते। तान् पश्च विष्टरादीन् द्रश्यविग्रेवान् एकेकगः प्रत्येक विक्तिःप्रतिपादन-कालेऽइणकत्तारो नियदयेरन् द्वापयेयुः। विष्टरादौनि निवे-दभीयानि। विश्वाप्रतिग्रहातामिति महात् सर्वेत वाक्य-ग्रेपं कुर्यात्। पाद्या इति प्रवस्थन्यात् स्तीवहुवचनमिति सरकातनः। वीधणविषीतमान्ये च यप इति शुत्या पहणे

तया कल्पनानुपपसे:। "पादार्थम्दकं पाद्यं केवलं तीयमेइ तत्। तत्तेजसेन पात्रेण शहीनापि निषेद्येत्" दति कालिः कापुराणात् "यादां पादाय वारिणि" दत्वक्षेय । यतएव भद्दः भार्ये पादां पादां पादामित्यृक्ष विवाहानन्तरमहणमुक्का गतेषित्येक द्ति वद्यमाणसूत्रेण गोभिनोऽध्यागमनमाव एव वराईणमुक्तवान्। तबैक इत्यनेन वद्दवादिसमातवात् तत् काले वराईणं व्यवद्भियते तत्प्रकारमा ह। या भौषधीरत्य दञ्च दिष्टरमास्त्रीयाप्यपविष्यति या भौषधीरित्यनया ऋषा। उदच सुदगर्य विष्टरमास्त्रीय्य उपविश्वति । पाद्यारन्यमध-षासीर्धे उपरिवादी तृशों कुर्धादिति सरना। भद्रभाषी। ततः पारोपवैगने भवदेवमन्त्रमिखनं प्रमाणशून्यम्। ततः पाद्यजनप्रेचगमार म एव। यतो देवीविखपः प्रेचेत। यतो देवीरिति मन्त्रेगापः पादप्रचालनमुद्ध प्रेचेस। गामिलः। "मय पारसनिने" इति सद्य पार् प्रचानयेत्। "दिचिण पाटमवनेनिजि" इति दक्षिणं प्रचालरीत्। तत कनाम्बलि-निचेप कुर्यात् एव दक्षिणेऽपि। गोभिकः। पुवमन्यमपर-मस्यमित्यभौ शेषेण पूर्वमस्यमपरमस्यमुभाविति सन्त्रेण पूर्व-प्रचाननार्वायष्टननाञ्जनिष्ठतेन उभयपादप्रचालन कुर्यात्। गोभिनः। "अवस्य राष्ट्रिस" इति इत्यस्य प्रतिस्कीयात् कांस्यपाचेण दध्यचातादियुतां जलक्षमस्येम् सबस्य राष्टि-रमोति मन्तेणाञ्चनौ ग्रहौला ग्रिरिस द्यात् तद्या च भट्ट-भाषे शुन्धाणिधृतवचनात्। "कास्येन वाईणोयस्य निनये-टघ्यमञ्जली"। गोभिनः। यशोऽमोत्याचमनौयमाचामत्। यगोऽसोति मन्त्रमुचार्य।चमनोयं जनमाचामेत्। तञ्च सक्तः नान्तेष बाह्यतीर्धेन भत्तिया हिस्तूणी भत्तयेत् तत इन्द्रि-याख्यस्त्रीत्। गोभिनः। 'यशसी यशोऽसीति सध्पर्नेः

ग्टह्वीयात्"। यथमो यथोऽसीति मन्त्रेण ग्टह्वीयात्। तथा "यश्रमो भच्चोऽसि महसो भच्चोऽसि श्रीभच्चोऽसि श्रियं मधि धेडोति" वि:पिवेत्। तूणीं चतुर्यमिति मन्तं प्रतिपानं पठित्वा वारवर्यं पिवेत् चतुर्धममन्त्रकं पिवेत्। इहानी पानद्यवद्वाराभावात् जिन्नति। तत त्राचस्य गोर्मोच्यं कार्-येत्। तया च गोभिलः। घाचान्तोदकाय गौरिति नापित-क्तित्रेयात्। सुञ्च गां वर्णपापाहिषन्तं मेऽभिधेहि इति तं जद्यसुष्य चीभयोक्त्सूज गामस् त्यानि पिवतूदकं व्रयात्। माता रुद्राणामनुमन्त्रयदिति"। द्याचान्तोदकाय सताच-मनाय प्रक्षतत्वाहराय। सप्तस्यर्थे चतुर्थी तेन वरे ग्राचान्ते नापितः प्रक्षताया गीः समीपेऽवस्थितो गीरिति ब्र्यात्। एवं नापितेनोत्ते तं यावयति वरो सुच गामित्यादि । यत मेऽभिधे-ष्टोति शब्दप्रचेपात् मेऽभिधेष्टीति इत्येवप्रयोगः न तु निरा-काञ्चोकरणाय मोचये बन्ध्रिति। अमुष्य इत्यनेन कम्यादातु-नोम निर्देश दति भष्टभाष्यम्। ततस्य भवदेवभष्टेन यदभिषेहीति अविति पट न निखितम् अमुणेत्यन् हेन निखितं कन्यादाना-नन्तरभ्रगौरित्यादि गवामन्त्रणपर्यन्त निवितं तष्टेय भट्ट-भाष्यादिविशेषात् प्रमाणाभावाचा षर्णादिलेन कन्या-दानात् पूर्वमेव गोमोचनस्य युक्तत्वात्। मनुवचने अर्हयित्वे-त्यनेन श्रहेणानन्तरभेव कन्यादानविरोधाचा

श्रय विवाहपरिपारो। तत्र गोभिनः। "पुण्ने नचने दारान् क्षवित"। पुण्ने टोपरिहते नचेने च्योतिःशास्त्रोक्षप्रथस्ते रोष्टिण्यादी मधिण्डादिदोपरिहतां कन्यां स्वौकारेण
दारान् पत्नीं क्षवितित। एवम् "उदगयने चापूर्यमाणे पचे
पुण्येऽद्यनि प्रागावर्त्तनादद्यः कालं विद्यादिति" तस्यैव स्त्राः
स्तरेण पुण्येऽद्यनीत्यनेनैव वारितियनचत्रयोगानां श्रमस्चकः

त्वप्राप्ती विवाहे पुर्ये नचत्रे इति पुनविधानमितरापेचया नचवस्य प्राधान्य योतनार्थम्। अत च विवाहात् पूर्वे प्रातिकर्त्तृकसमन्त्रज्ञवाभिषेकरूपस्य प्रातिकर्माणो भट्ट भाषेण काम्यलाभिधानेन इदानों तथा नाचरणात् तत्प्रमाणं न लिखितम्। कल्पतन्दक्षाकरयोग्टेश्चपरिशिष्टम्। "कन्यां वरयमाणानामेष धर्मो विधीयते। प्रत्यस्या वरयन्ति प्रति रहित्त प्राष्ट्राखाः"॥ वरयन्ति गीवप्रवराभिधानपूर्वकं ददिति प्रतिरहह्ननीति अवणात्। धत्वय "सर्वत्र प्राष्ट्राकी दाता ग्रहीता च उदझ खः। एप एव विधिद्नि विवाहे च व्यतिक्रमः"॥ इति प्रत्यक्षुकः सम्प्रदाता प्रतिग्रहौता प्राक्षुकः। तया च "प्राद्म् खायाभिरूपाय वराय ग्रुचिमदिश्रो। दयात् प्रत्यक्षुः कन्यां चणे नसणमयुते । इति वचनास् । भव-टेवोयमञ्चरविवेके प्रवराभिधानमाद भविष्यपुराणम्। "तुलापुरुपदाने च तघैव हाटकाचने। कन्यादाने तघोसर्गे कौर्नयेत् प्रवरादिकम् ॥ इरिश्वमधृतम् त्राखनायनग्रहा-परिशिष्टम्। "शिवटसप्रवीवी ब्रह्मदत्तपीत्री विपाटसप्रवी यज्ञदत्ता कन्या शिवमिवप्रपोवाय राममिवपौवाय विचार मित्रपुत्राय रुद्रमित्राय तथ्यं सम्प्रदत्तेति"। सम्प्रदत्ता इत्यव हष्टार्थत्वात् पुवचमां भ्राप्रत्ययार्था विविध्वितत्वेन सम्पददे इत्वेव-प्रयोग:। तथा च व्याम:। "नामगोवे समुचार्य प्रदयात् यहयान्वितः। परितृष्टेन भावेन तुभ्यं सम्प्रदरे प्रति"॥ चगामिफले तुथां सम्प्रदेद इति पर्गामिफले तु अहमसौ ददानौति एवमाभाष्य दोयते इति छन्दोगपरिशिष्टदर्शनात् ददानौति वाच्यम् उमयपदिदाधातोः पालवत् कर्तयातानेन पदम् चफनवत् कर्त्तरि परसौपदमिति पाणिनियुतेः । धत्रव आक्षनेपदपरकोपदयोराक्षनेपरको द्रति समार्यः

भङ्गच्छते। ददानौत्यस्य दद इति वर्त्तमानायता। चतएवं सक्षदाइ ददानौति सनुनाप्युक्तं सङ्गच्छते । अनुस्तिग्रहणार्थ-प्रायमार्थको तु सक्तवाभिधानमप्रयोजकमिति। याद्यादौ फलभागिनां गोवाद्यसेखदर्थनात् तदितरवापि तदुलेखाचारः। क्रन्दोगपश्चिष्ठाई पददर्शनाद इं पदप्रयोगीऽपि। एवं त्राहे "यसुकासुकगोत्रीतत्त्यमत्रं खधा नमः" इति ब्रह्मपुराण-दर्भनात्। देय विशेषणत्वेनैतच्छव्दमयोग इति। तन धान्या धर क्षु लयोः पाठकक्षमात् ऋषश्रुद्रोक्षश्राब्दक्षमस्य बल-वस्वात् वरकुलाभिधानानन्तरं कन्याकुलाभिधानसमाधारः। तथा च हेमाद्रिष्टतम् ऋण्यगृद्भवचनम्। "वरगोवं समु-स्राय्ये प्रियाससपूर्वकम्। नाम संकीर्त्तयेदिद्वान् कन्याया-चैव मेवहि"॥ इति धनश्चयक्षतसम्बन्धिविकपरिशिष्टोयम्। "मान्दीसुखे विवाहे च प्रणितामहपूर्वकम्। वाकामुद्यारयेः धिद्वानस्य विष्टपूर्वकम्। एतदेव विरुचार्यं कन्यां द्याद् यथाविधि"॥ नान्दोसमुद्धिरिति कथ्यते इति ब्रह्मपुराणात् नान्दोमुखे पुत्राटिससृहिप्रधानक्षे विवाहे। विग्रेषणन्तु विवाहादेव पुतादिनाभविशेषज्ञापनाय। चस्वर्थ प्रन्यव प्राप्तिपिचादिक्रमव्यवक्षेदाय। नान्दीमुखपदस्य वाह्यपरत्वे प्रनिक्षवचनप्राप्तिष्टपूर्वकाभिलापवाधापस्य। ज्योति:सार-ममुचये। विवाहे तु दिवामार्ग कन्या स्थात् पुत्रवर्जिता। विवाद्यानसद्धा सा नियतं स्वासिधातिनी"॥ श्रतएव सहाभारते। "रावौ दानं न श्रंसन्ति विना चाभयदिचिणाम्। विद्यां कन्यां दिनश्रेष्ठा दीपसर्वं प्रतिययम् ॥ यभयदि चिणाम् यभगदानम्। प्रतिययः प्रवासिनामाययः। विवाहे रात्रौ दानान्तरमधाइ देवलः। "राहुदर्भनसंक्रान्ति विवादात्यय-हिंदियु। सानदानादिकं कुर्युनिधि काम्यविषु च"॥ यहादि-

दोपगान्यधं दानादिकन्तु विवाहात् प्रागिव कर्त्तव्यम्। भग-वत्या रुक्तिण्या विवाहे तथा दर्शनात्। तथा च भारते। विक्षः सामग्यंयुर्मन्वैर्वध्वा रक्षां दिनोत्तमाः। पुरोहितोऽयर्वे-विदे जुद्दाव ग्रहगान्तये॥ हिरस्यकृष्यवासांसि तिलांस गुडमित्रितान्। प्रादाहेन्य विप्रेभो राजा विधिविदां वरः"। ततो जोटकादिदोपे तत्तत् सूचनोयपापस्यकाम द्रति वक्तः व्यम्। चतएव दीपिकायां ये यहारिष्टस्चका इत्यक्तम्। संवर्तः। "तां दल्वाचि पिता कन्यां भूषणाच्छादनामनैः। पूजयन् सर्गमाप्रीति नित्यमुसावद्यत्तिषु ॥ विष्णुपुराणखा "विशिष्टफसदां क्षन्या निष्कामाणां विसुक्षिदा" ॥ निष्का-भाषां सुक्तिप्रतिकूलकामेन रहितानाम्। तेन विषाप्रौतिः कामनया दानेन दोष:। "देयानि विप्रमुख्येभ्यो मधुसूदन-तुष्टये" इति वामनपुराणे सामान्यतोऽभिधानात्। एवं पित्रु-हिमेऽपि दानम्। तथा च विष्णुपुराणीयपित्रगाथा। "रत्न-वस्त्रमहोयानसर्वभोगादिकं वसु। विभवे सति विप्रेम्यो योध्मानुहिख दास्यति"॥ याजवस्काः। "प्राद्धो विवाद आह्रय दीयते यक्त्यलंकता। तकाः पुनात्यभयतः पुंत्रपाः नैकविंगतिम्॥ दल्बुक्का चरतां धर्मं सह या दौयतेऽर्थिने। सकाय: पावयैत्तजा: पड्वंद्यांच महाताना"॥ पुनाति पिवादीन् पापात् नरकाच समुद्यस्ति पुचादीन् निष्पापान् जनयति पात्मानमाप निष्याप करोति। सुष्ट धर्म चरता-मिति नियमं क्षत्वा कत्या दोयते सकायः कः प्रजापतिरंवताः ऽस्रोति प्राजापत्यनामक इत्ययः। "प्राच्छादा चार्चियत्वा च श्वतभीलवते स्वयम्। साह्य दान कन्याया द्वाह्मी धर्म प्रकी-र्तित":। अव यहानपदं तहीयते यसी ग्रहणाय इति खुत्पस्या कत्यसुरो बहुसमिति स्युटासिहमिति यह्यपरं नतु भाव-

साधनं तदात्वे दातुरेव विवाहकर्तृत्वापत्ते:। श्रव प्रत्ययाय-घरणनिमित्तीभूत प्रकल्यययागेन सहैककत्तकलमाह्यानस्य स्तितादिपदाध्याद्वारेण वा व्यक्तम्। इतिवंशीयविशेद्वपा-्याने। "पाणिप्रहणमन्त्राणां विन्नं चन्ने सदुर्मति:।येन भार्याः हता पूर्वे क्षतीद्वाद्वा परस्य वैशा क्षतीद्वाद्या मार्य्या पाणिग्रहात्। पूर्वं क्षतित्यर्थः। एवं "पाणियहिका मन्त्रा नियतं दार्यचचणम्। सेषां निष्ठा त् विज्ञेया विद्विद्धः सप्तमे पदे ॥ इति मनुवचनं विवाद्यगतसस्कारविश्रेपार्थम् सतएव निष्ठेत्यत्तम्। तथा चं रहाकर:। "पाणिग्रहणिका मन्ता विवाहकमीष्ट्रभूताः" इति मनुः। "द्वातिस्यो द्रविणं दत्त्वा कत्यायै चैव शक्तिनः। कान्याप्रदानं खाच्यन्यादासुरी धर्म उच्चने द्रति। कान्या-प्रदानं कियायाः स्वीकरणमिति कुब्रुक्तभट्टः। स्वाच्छन्यात् स्वेच्छ्या। दानाधिकारमाइ याज्ञवल्काः। "पिता पिता-मही भाता सकुत्वो जननौतया। जन्याप्रदः पूर्वनाये प्रक्ष-तिस्यः परः । चप्रयच्छन् समाप्नोति भ्रणहला सता-हतौ। कामन्वभावे दातृणां कन्या कुथात् स्वयंवरं तथेत्य-नेन नारदोक्त मातामहाद्याः स्चिताः। तथा च नारदः। "पिता दद्यात् खयं कन्यां भ्राता वानुमतः पितुः। मातामहो मातुलय सक्का बान्धदस्तथा। मातात्वभावे सर्वेषां प्रस्ती यदि वत्ती। तस्यामप्रकृतिस्थायां कन्यां दयुः सनाभयः"। बान्धवः पितामदः याज्ञवल्योक्षवाकात्। श्रव सकुख-माताम इयोगरिदोता क्रमो न ग्राह्यः पाठकमाच्छाव्हक्रमस्य वसवत्वात्। तस्यामित्वनेन मातुरपस्थितत्वात्। सनामय द्वनेन मातामहमातुलेतरसकुत्य उचते। प्रक्रतियः पातिः त्यादिदीषरिक्तः। देयद्रव्यस्य प्रेष्यपरपर्यन चाइ दारीतः। "तसादिक्षियं द्यादासम्य चेति"। कालिकापुरापम्।

"यस्य यद्दोयते वस्त्रमनद्वारादि किञ्चन। तिपां दैवतसुचार्य हाला प्रीचषपूजने"। समादानार्चनमाष्ट्र सतुः। "योऽर्चितं प्रतिग्रहाति दद्यादि चितमेय वा । तायुभी मच्चतः खर्गं नर-कत्तु विषयीये"। योऽची पूर्वकमेव ददाति यस प्रतिमधी-ताऽची पूर्वकमेव दातुः प्रतिरहहाति तावुभी खर्गे गच्छतः। त्रमचितदानप्रतिप्रष्टणे तु नरकमिति कुष्नुवाभष्टः। ततसा-चितमित्यस्य क्रियाविद्येषणत्वात् पुरुषार्चापि प्रतीयते। यत-एव देग्रजाद्यापी संपूज्य दद्यादिति मैथिलैक्तम्। समादान-यर जनपूर्वकं दानमाधापस्तमः। "मर्वाष्ट्रवधूर्वाण दानानीति"। गोतमः। "अन्तर्जानुकरं छत्वा मक्ष्यन्तु तिसोदकम्। फलांशमभिसन्धाय प्रद्यात् यस्यान्वितः"। कत्याया देवतं प्रतिग्रहपकारमाह विश्वधर्मोत्तरम्। "कत्याः दामस्तया दासी प्राजापत्याः प्रकीर्त्तिताः"। प्राजापत्याः प्रजापतिदेवताकाः तथा "भूमेः प्रतिष्रहं कुर्यात् भूमेः सत्वा प्रदिचिषम्। करे रद्धा तया कन्यां दासीदासी हिजोत्तमाः"। करे ग्रह्म करं ग्रहीला। तदाहादिलपुराणम्। "योद्वार-मुखरन् प्राची द्विणं शक्तमोदनम्। रह्हीयाद्विणे इस्ते तदलो खस्ति कोर्त्तयेत्"। मोद्वारसास्वीकारायंत्वात् ते-नैवाव ग्रहणमुत्तम्। तथा च भौमित्यस्यूपगमे इति शान्दिकाः सस्रोति दार्वीममतलाभाविष्कारार्थम्। तथा धामरः स्वस्वाभौ: स्रेमपुखादाविति" मार्क्छ्यपुराणम्। "दातुरि-ष्टमभिध्यायत् प्रतिग्रह्यादलीलुपः"। विष्णुधर्मोत्तरे। "द्रव्यस्य नाम गृह्वीय। इदानीति तती वहेत्। तीय द्यान्या दाता दाने विधिरयं स्रुत:। प्रतिपद्यौता सावित्रीं सर्वेयैव च की त्रीत्रीत्। ततस्तु मार्ड द्रव्येण तम्य द्रव्यस्य दैवतम्। समा-पचेत्रतः पदात् कामम्तुला प्रतिग्रहम्"। व्यासः। "यदा- युक्तः श्रचिदिन्ति दानं दद्यात् सद्चिषम्। श्रद्धिषक्षु यद्दानं तत्सवें निष्णलं भवेत्। दक्षिणाभिरुपेतं हि कर्मा-सिध्यति सानवे। सुवर्णमेव सर्वासु दक्षिणासु विधीयते"। सुवर्णं काष्ट्रनमात्रं नपुंसकनिदेशात्।

भय पाणिग्रहणम्। तव गोभिनः। "पाणिग्रहणे पुर-स्ताच्छालाया उपलिप्तेऽग्निरुपसमाहितो भवति"। पाणि-यदणे वर्त्ये ग्रहसमीपदेग उपसमाहित: खण्डिले रेखादि विरूपाचनपान्तं कर्म कृत्वा प्रक्षतकर्मार्थं योजकनास्त्रावादः नेन ममाहितोऽस्मिभवति। गोभिनः। "त्रय जन्यानाभिको भ्वाणामपां कलसं पूर्यायवा सहोदक्षमाः प्रावृतो वाग्यती-उग्रेणामिनं परिक्रम्य दिचिणत छद्झु खोऽवतिष्ठते"। चनिन्छाः पनानन्तरं वरस्य महायाना मध्ये एकोऽगाधनलेन घटं पुर-यित्वा गरहौतकुमो वस्नाच्छादितदेष्ठः प्रदक्षिणेनामि वेष्ट-यिलाऽग्निब्रह्मणे।देनिणस्यान्दिशः उदह्मुखोऽवतिष्ठते"। भवपूर्वस्तिष्ठतिरनुपविष्टतां वीधयति गोभिनः। "प्राज्ञने-नान्यः" इति । प्रतीदेन सह कुमाधारिवदागत्य कुमाधारिणः प्रागन्धोऽवतिष्ठते। गोभिन्ः ''श्रमोपनाश्रमियान् साजाय-तुरञ्जनिमातान् सूर्पणोपमादयन्ति पयादग्ने." इति। श्रमी-व्रस्यविभित्रान् चतुरञ्जलिपरिभितान् लाजान् चानीः परात् सूर्यसान् सापयन्ति बहुवचनात् कर्तुरनियमः। "बचतास्त यवाः प्रोक्षा धाना सष्टा भवन्ति ते। स्टास्त ब्रोइयो साजा घटोखरिङ्क उच्चते"। गोभिसः। तया द्यात पुत्रञ्च। द्वरात् मिला पेषणाधारकपा पुत्रः पेपणकरणकृप-प्रस्तरसादुभयं पूर्ववदुपसादयन्तोत्यर्थः।

चय यखाः पाणि यसीयन् भवति समिरस्का मामुता भवति। यस्याः सन्याया जामाता पाणि यहीयन् भवति पाणियहणं करियती खर्यः। यय तदारमदिने चारोद्रमंगाः नन्तरम् प्रविधवाद्वतमङ्गलोदकैः सा स्नाता भयति तथा पाइ॰ तेन वसनेन पतिः परिदध्यात् या चक्तन्ति चित्रेत्यर्था। भाषतः सद्यमाह। "ईपद्योतं भवं शुम्तं घट्गं यत्र धारितम्। षाष्ट्रतं तरिजानीयात् सर्वकर्मस् पाधनम् । ईपत् स्सम्। न धारितं न परिश्विम एवभूतेन ,वस्तेण या पक्षन्तदिति मन्त्रेण परिधत्ह्येति श्रुते: परिद्ध्यादित्यन्तभूतिन धरः। तेन परिधापयेदित्वर्धः। एवच परिधापनानुरोधेन वध्वा छत्यि-तल प्रतीयते। चतएव कटवर्षियोर्भध्ये प्रापणानन्तरं वरः दिचिणे छपवियतीत्वृक्षम्। एतद्धरोयवस्यपरिधापने उत्तरव प्राष्ट्रतिमत्यनेनीत्तरीयसामात् स्तोपरिधाने शक्कमित्यविष-चितम्। "धारसेदय रक्तामि नारौ चेत् पतिसंधुता। विषदा च न रक्षानि कुमारो ग्रक्षवाससी" इति मख्यपुराणात्। परि-धानप्रकारमाइतुः शक्षलिखितौ। "न नामि दर्शयेत् कुल-यध्रागुरफाभ्यां व्यामः परिद्ध्यात् म सानी विष्टती कुर्यात्" द्ति। वासी विन्धासियोपस्त तत्तदेशाचारादवगन्तवः। रद्वाकरोऽप्येवम्। गोभिनः। "परिधत्तधत्तवासमिति प्राष्ट्रतां यजीपवीतिनीम् अध्युदानयन् जपेत् सोमोऽददह्रस्यवधिति"। प्राष्ट्रता यज्ञीपवीतिनी यज्ञीपवीतवत् क्षतीत्तरीयपरि-धानात्। तथोक्त विद्याकरवाजपैयिष्टतवसनेन यथा स्मृतिः । "यथा यन्नोपयौतस्य घोर्य्यते च दिनोत्तर्मैः । तथा सम्बार्धते यदादुत्तराच्छादनं शुभम्"। नतु यज्ञीपवीतिनीमित्वनेन स्त्रीणामिष कर्माङ्गत्वेन यज्ञी-पवीतधारणमिति इरिश्रमीतां गुत्तम् । स्तीणां ग्रजीप-वीतधारणामुपपत्ते. सरलाभद्रमाध्ययोरप्येवम्। ततो वध्-देचिणयवणं स्राभेत्। "ज्ञते निष्ठौियते वान्ते परिधानेऽयः

मीचने। वसीस्य एषु नाचामेत् इचिषं यवषं स्थीत्" इति रमृते:। अभ्युदानयन् पानेर्शिमुखीमानयन् जपेत्। सोमे-इददिति भन्तं पति: पठेत्। गोभिनः। "पयादग्ने: संवैष्टितं कटमेवं जातौयं वान्यं पदा प्रेरयन्तीं वाचयेत्। प्रमे पति-यानः पत्याः कत्पतामिति"॥ अस्तेः पद्याद्वीरयरचितं कटं तकातीयमन्यग्रथितं वा वस्ताच्छादितं पारेन प्रेरयन्तीं वर्ष् प्रमि पतियाम दति वाचयेत् पति:। खयं जपेदजपन्यां प्रास्या द्रित वर्ष्टिपोऽन्तं कटान्तं प्रापयेत्। पूर्वकटान्ते दिचणतः पाणिग्राह्योपविग्रति। प्रमे प्रति मन्त वाखात् सञ्ज्या वाऽजपान्या वध्वां खयमेव पतिः पूर्वमेव मन्त्र प्रमे दति स्थाने प्रास्या द्रत्युहं सत्वा जपति। अन्तय्यदः समीपवचनः। तेन कटवर्हियो: समौपदेगम् श्रन्तरास्ह्यं प्रापयेत्। पत्य-र्दाचिणतः कटस्य पूर्वमारी कन्या उपविश्वति। दक्षिणेन पाणिना दक्षिणमंत्रमन्वारक्षायाः पडाच्या हुती जुहोति त्रम्निः रेतु प्रथम इत्येतत् प्रसृतिभिरिति। चन्वारब्धाया इति कर्त्तीर क्षः। सप्तस्यर्थे पष्टौ। तेन पत्युर्दिचणस्त्रस्यं दिचणहस्तेना-न्वारक्षायां संबग्नायां सत्याम् पामिरत रत्यादि पङ्भिर्मन्यैः पडाच्याइतौर्जुहोति वरः महाखाहृतिभः प्रयक्षमसाभि-सतुर्धी सप्राधाद्वतिभिर्भूभुवः स्वरिति तिस्भिः प्रयोक-माज्याचुतौर्जुचुयात्। चुत्वोपेत्य प्रवतिष्ठत दति दवना-नन्तरम् उपेत्याष्ट्रां लिखा वध्वरावुपतिष्ठतः । घंशस्पर्यनात् कचायाः होमानुकून घेष्टावत्वात् ममानकर्नुकलेन ज्ञा। ब्रनुपृष्ठं पति: परिक्रस्य दिचिणत उद्द्युखोऽवतिष्ठते बध्व-ञ्चलिं ग्रहीला। घनुष्ठ 'प्रष्ठ' सप्तीक्षत्य परिक्रम्य गला तेन कचायाः पदादक्तेना तस्याद्विणंगत्वा वध्वज्ञलिंद्विणः इस्तेन राष्ट्री ह्वा उदद्यु खोऽवतिष्ठे त्। एपोऽञ्च लिः प्रष्टणपर्यासं

स्यास्यति एतेन कन्यायाः प्राद्माखनायाति। ततयाञ्जस्या नमनान्तर पाणियदणपर्यान्तं कचानमनं पतिने त्यजित्। तया च सहसायधत राष्ट्रान्तरम्। "हुलाज्यसय जायायाः भन्वारभ्याञ्जलिमाति:। न विभुश्चेदनापस् यावत् पाणिप्रश्री खपः" इति। "पूर्वा माता लाजानादाय भाता वा यधु-माझामरीत्। पार्मानं दिचियेन प्रपदेन पाणिप्रसी कपित इसमञ्मानमारोहा इति"। पूर्वदेशस्याया वध्वा एव माता त्रथैव स्नाता चत्यो वा द्वाह्मणः प्रागासादितान् सालान् सूर्प-स्थान् ग्रहोत्वा वधू द्रशत्पुष दिचणपद्योप स्नामयेत्। तद्क्षामणकाले इममञ्मानमारीष्टा इति। वरो जपेत्। सक्षम् सम्द्रद्वीत साजाञ्जलि भाता वध्यञ्जनावावपति तं सोपम्तोर्णाभिघारितमन्त्री सुद्दोत्यविष्ट्रन्दत्यञ्जनिम् इयं नार्य्यमते इति एकवारम् भविचेपेण सम्यग्रहीतं लाजाञ्जलि वध्वश्वली उपस्रीणीभिघारितमिति मिश्रये उपस्ररणाय वरी पृतसूवं वध्वज्जनी ददातीति। तती वध्वा माताभाताऽची टटाति वर:" इति। चतुरावर्शपन्ने भगुगोलो भागवप्रवर-श्चेत्तदा पञ्चावत्तीय उपम्तरणे ष्ट्रतसुवदयमिति विशेषः। एवस्पक्तीर्णाभचारितं लाजाञ्चलिभेदमकुर्वती वरेण इय-मिति सन्तांलक्षादि यं नार्थ्युपव्रते इति परिते वधूः सुसमिन्ने-उनौ जुडुयात्। भर्थमण नुदेव पूषणिमत्यूत्तरयोः। उत्तरयो-स्तथाविधयोन्नी अही सयोः। अध्यमणं नुदेव पूपणं नुदेव-मिलो तौ मन्त्रीं यदासच्य नियोक्तव्यो हुते पतिर्यष्टेतं परिक्रास्य मदिचिणमस्ति परिणयति सन्तवान् वा ब्राह्मण. कन्यना पित्रभ्य द्ति"। दुते लालाञ्चला सन्तवान् वाह्यणः पतिर्यथाः पूर्वम् इत गतं तथैव परिक्रम्य वध्वाः पश्चिमन प्रसाहत्य

प्रदिचिणं यथा स्थात्तया यातीति। सन्विनिद्वाय कन्यना पित्रभ्य इति मन्द पठन् सधूमिन परिणयति परिसर्वतो-भावेन नयेत् प्रदक्षिण कारयेदिल्यर्थः। यत्तु सरकायां पत्तु-रमली अधौतवेदोऽन्यो वा परिणयती लुक्तं तनाम्बलिङ विरोन धाद्यवद्यापिरियद्दीतलाच्च हियम्। भवानिपद्चिणे ला-जादीनां प्रदिचिणमाच भद्रभाष्यधृता स्मृति.। "साजानाज्यं सुव कुर्भं प्राजनाश्मानभेव च। प्रदिचणानि कुर्याता दम्पतीनविनाग्निकम्"॥ परिणीता तथैवावतिष्ठते यथाः क्रामिति तथा जपति तथावपति तथा जुहोति एव विपरि-णौता वध्सयेवानुपृष्टगमनेन भर्वा ग्रहीताञ्चनिका प्राद्या छो चवतिष्ठते। तथैव यथापूर्वं तेनैव प्रकारणाक्रामति चश्मान दिचिणप्रपदेन तथा जपति पाणियहे इसमश्मानिमिति तथा-वपति वध्वञ्जली महद्रयशीतमानानामञ्जलित्या जुद्दीति उपस्तोर्णाभिघारितम् चविच्छिन्दसम्झिलम् एवमनेन प्रका-रेण विक्रत्व प्रथमन मह वित्वम्। उत्तरयोश्त्यनेन ह्योरेक मन्वोपदेशात् । सूर्पेण शिषमम्नावाधाय प्रागुदीचीमत्तृत्-कामन्येकमिष इति दक्षिणेन प्रक्रम्य मध्येनानुकामनौ ताद्याः क्रममाणा पतिर्मा सब्येन टचिणमाक्रमेति युयात्। एव ममपदाक्रमणे पाणिपाइम्त्रयेवावतिष्ठते इति । सूर्पम्यानराई प्रतस्व दखा तद्परि माजयेप निधाय तद्परि प्रतस्वदय-मिति चतुरावर्त्तपचे। पद्मावर्त्तपचे तु सुबद्योपरि नाज-शिषदानमिति श्रीपः। तत्य। चग्नये खिष्टिकते चाहेति सूर्वण जुड्यात् एतदनकार मरलीक वामदेश्यमान न युक्तं ग्रसाचानुपदेशात्। माञ्जलेपानसर प्रागुदोचोदिगमाभिः म्योन दक्षिणपादपुर'मरेण गच्छ मायामपुर मरेणेख्या एक-निय इत्यादिमसिमम्बेययाद्यम मत्तमु स्यानेषु वध्देषिण

पादेन गला तहे शे वामपादेन न गच्छेत्। एवं पर्मु स्थानेषु मयेकासाता। एतदनन्तरं सखा सप्तपदौर्यनेन प्रार्थनं भवदेवभद्दोक्तं गुणविषानापि निष्ठितो यन्त्री व्याख्यातय र्भे चकान् प्रति मन्त्रयते सुमङ्ग्लीरियं वधरिति विवाहं द्रष्ट्-मागतान् सुमङ्गलौरिति मन्त्रेण जामाता प्रार्थयेत्। अपरे-णामिमौदकोऽनुमंद्रच्य पाणियाचं सूईदेयेऽवसिञ्चति तथेतरां समञ्जन्त इत्येतयर्चा। चौदको ग्टहीतोदककुमः पूर्वस्यापितः मोरले: प्रादिलिएयेन पश्चादागत्य समञ्जयमञ्जराया ऋचा मन्त्रनिष्ठाहरेण जणमानया मन्त्रान्ते कर्मादिसविपात दति न्यायात् मन्यान्तरमभिषिञ्चेत् तथा तेनैव प्रकारेण भेदीपा-टानेन इतरां वरेतरां वधूं प्रथमिधिक्षेत् इतरयासमस्याभिधानं स्यात्। तथाच रष्टद्यसूत्रम्। भेरे मन्द्रावृत्तिरम्सिपातत्वात् एव-भेव भद्दभाष्यम्: एतेन करणमन्त्रतात् कुमाधारिणाऽयं पाछाः न मिच्यमानस्य नाविति तु युवयोरित्यर्थे क्वान्दसी व्यतयः इति सरलीतं सन्वसिद्धाहर एवाभिषिश्वतीति वीरेखरीतश्व नीपार्देयं व्यवहारविरोधात्। त्रविमक्ताधाः सध्येन पाणिनास्त्रनिमुपीर्-यहाद चिणेन पाणिना दक्षिणं पाणि माङ्ग ष्ठमुत्तानं गरही ला एता. पट्पाणियचणीया जपति गटभामित द्ति। कन्याव-मेचनस्य प्राक् प्राप्तत्वेनावसिकाया इति पुनक्पादानम् अव-सेचनस्थानस्थाया एव हस्तयहणार्थम्। उपरद्रगृष्टा उपमा-मौर्यो तेन मणिवस्यसमीचे ग्रहणमर्थादामेन उत्तरत: साङ्गुष्ठ-टिक्षिणस्य दिविणेन ग्रहणाभिधानात्। उद्ग्रह्याञ्चिनिसका-गाइचिगपाणि विच्छिदा वध्वा उत्तानं साष्ट्र हं दिचणं पाणि दिविषेन पाणिना ग्रहोता ग्रमामि से इत्यादि पडुचः पति-र्जपति। साज्ञष्ठमित्यनेन तर्जन्यादोनां यष्टणम् उत्तानमित्य-नेन कर्य एहप्रहणं पतीयते। समाप्तास्द्रहन्ति प्रागुदीचां

दिशि ब्रह्मिणकुलमभिरूपम्। समस्तासु पाणिप्रहणियासु सतीषु ऐगान्यां दिश्यवस्थितं विद्यातपःसंयुक्तं ब्राह्मणकुलं वध्मुखाप्य नयेयुः तदभावे खानान्तरिखतं तदभावे वैदाव-स्थितम्। तया च रष्ट्यान्तरम्। श्रयोत्तरविवाद्यः प्रागुदौ-ध्यामन्यश्र वा ब्राह्मणकुलं सन्तवदीति वैद्यां वैति। सद्द-भाष्येऽध्येवम्। इदानीन्तु गोभिसीज्ञ ब्राह्मणग्रहगमनाभाषात् भवदेवेन तथा न लिखितं किन्तु वेदिखनाद्यगममीपस्यापि श्रास्त्रार्यत्वात् सुकारताच तत्वर्तः युज्यते तत्राग्निकपसमाः हितो भवति। सच्चणं क्षत्वा तव व्राध्यणगर्हे चम्चन्तरः स्थापितो भवति तत्वेव वद्यमाणं कर्मा कुर्यात्। इदानीन्तु तथाविधानाचरणात् वैद्यामेव पूर्वस्थापितार्गः पथात् कर्मा कर्त्तेष्यं न त्वात्यात्तरस्वापनम्। तथा च भद्दभाष्ये। वैद्या-मेव चेत्तत्वेष स्यात्। ततय गणेष्वेकं परिसमू इन मिति वचनात् प्रधानमेव तत् क्षुर्यादिखुक्तम्। भपरेणानिमान-ष्ट्रं लोहितं चर्मा प्राग्यीवमुत्तरलोमास्तीर्णं भवति। पर्गः पयादिशि रक्तं प्राग्योवं पूर्वशिरम्बम् उपरि सोमष्टपवर्म छप्रविश्वनार्थमास्तृतं भवति मोहितामाविऽत्यवर्णमपि चर्गापः प्राधान्यात् तस्य गुणत्वादिति भद्दभाष्यम्। इदामौन्तु "यद्रा-धमीयतुष्पादः स्थाधमः पादविषदः। कामिनस्तममाच्छना लायको यव मानवाः। चहदारस्टहीताय प्रचीयसेह-बाश्यवाः। विप्राः शूद्रममाचाराः सन्ति सर्वे कश्रीयुरी"। दति सस्यपुराणील किम्युगस्यभावित सम्यग्धर्माचरणरहिते-नापि चर्मोपवेगनायशाभावे।पि वर्णायः प्राधान्यादास्य-श्रीमादिकं क्रियते। गीमिनः। "तिमिन्नेनां वाग्यतामुप-विश्वयक्ति मा चारवस्तु पवसानचवदगँनात्"। प्रोक्ते नचवे यहाच्यापृतीशुंदीति खेषास्थियतत् प्रमृतिमः। पाषृते

गहुतेस्तु सम्पातं सूर्डि वध्वा पवनयेत्। प्राहृतेराहुतै-हु तायाः स्वाम् संसग्नः पततीति"। सम्पातीत्र प्रतिविद्धः तं प्रतिवारं वध्या शिरांस निद्धात्। दुखोसाय दपनि-व्याय भूवं दर्शयति। भ्रवमि भ्रवाष्टं पतिक्कती भ्यासम् भमुष्यासाविति पतिनाम रहहीयादात्मनय। प्रश्वतहोसा-नन्तरं परिव्वताहिं हिर्धे नीता भुवमसीति मन्तं पाठयन्। धुवं नद्यवित्रीपं दर्शयति पतिः। त्रमुष्यासाविति पत्र पष्ठान्तप्रथमान्तलेन पल्यामनामी चारयेत् प्रक्यती घ वडा-इमस्रोति। एवश्व सप्तर्यिनकटवर्त्तनीं सुत्रां तारां रेश-हमसौति मात्रमन्तेण पश्चेत्। न तु प्रागुक्तवदूहितेन। षयेनामनुमन्त्रयते भुवाद्यौरित्येतयश्ची। षर्मन्यतौ दर्भना-नन्तरं भुवाद्यीरिति पक्षों वोधरोत् पतिः। चनुमन्त्रिता गुर्भः गावेणाभिवादयेत् सोऽस्यावाभिवसर्गः। गुरुं पतिं "पतिरिकी गुरः स्त्रोणाम् इति वचनात्। गोत्रेण पतिगोत्रेण "स्वगी-ब्राटुभ्यस्यते नारौ विवासात् सप्तमे पदे। पतिगोचे ण कर्राव्या तस्याः पिण्डोदकक्तिया दित वचनात्। एतेन पिद्धगोत्रेण अर्त्तुर्भिवादनं सरला भवदेवभट्टाभ्यामुक्तं हैयम्। श्रभिवा-टयेत् मन्कप्रकारेणाभिवादनं कुर्यात्। अभिवादने प्रत्य-भिवादनस्यावश्यकत्वात् तत्त्रं प्रत्यभिवादनमपि क्रियते। तथा च मनुः। "श्रभिदादात् घर विप्रो च्यायां समिशाद-यन्। असी नामा इससीति स्व नाम परिकौर्त्यत्। भो.यन्दं कौर्र्सयदन्ते खरा नामोऽभिवादने। नामां खरूपभावी हि भोभावी ऋषिभि: स्रातः। ऋष्युषान् भव सौस्येति वाच्यो विषोऽभिद्यादने। पकारयास्य नाम्होऽन्ते वाचाः पूर्वाचरः मृतः"। पभिवादात् परं भी मभिवादये दस्युचारणानन्तरः मम्कोऽहमसोत्यव सकीयं नाम परिस्वतोभावेन देवसम्।

र्भुत्रीमं कीर्र्यया प्रवासिवादये दति विशेषसाभी गोतम-वचनात् यथा स्व नाम प्रयोज्याह स्वयमभिवादय इति। धवायमित्यभिधानात् मनुवचनेऽयमित्यर्थेऽसौत्यव्ययं तेना-इमस्रीत्यव्ययं पुरीवर्तीत्यर्थः। एवश्वाभिवादात् परमित्यने-नाभिषाद्य इत्यनन्तरप्राप्तस्य नामकीर्त्तनस्य मन्कस्य विरो-धाद्गीतमोक्ताभिवादय द्रत्यन्तपाठी न प्राष्ट्यः। "वेदार्थीप-निवस्तवात् प्राधान्यं हि मनोः स्नृतम्। मन्वर्धविपरीता या सा स्रोतिन प्रशस्ति" इति ष्टइस्रातिवचनात् ततस कुल्क-भट्टशूनपाख्यपध्यायप्रभृतिभिः स्वनामादावभिवादय द्ति सिखितं युक्तम् । सरलाभवदेवभद्दपस्तिभिरन्ते सिखितं हियम् । प्रभिवाइने क्रियमाणे खीयनाक्षोऽस्थीत्यस्यान्ते समोपिऽभिवादा सम्बोधनाय भाःशब्दं स्रोत्येद् यतः। सबोध्यनान्तां स्वरूपभावः प्रदत्तिनिमित्तम् पालामावनिष्ठी यो धर्माः स एव भौभावः भोः ग्रम्स्य प्रहत्तिनिमत्तधर्मो सुनिभिषतः तेन संवोध्यनामस्यानीयं भारिति। ततयाभि-याद्येत्वाममुक्रमाधिमसि भा इत्यादिकं प्रयोज्यम् भायुपा-निर्साभवादन कते प्रस्यभिवादयिखा समिवादायुष्मान् भव सीस्येति वाष्यः चस्य संवीध्यमानस्य नामः समादियुक्तस्यान्ते यः स्वरः स पूर्वाधरः न विध्छितो वर्षांगमः स एव प्रतो वाधः विमान्नको तिनोद्यार्थः। "एकमान्नो भवेद्धी दिमानी दोर्घ लचते। विमावसु प्रतो चेथी याचनचार्डमावकम्" रखने:। तेमायुष्मान् भव सोम्यामुकदेवमम्मन् एवमेव सुज्ञकमहः। एवद्याभिगदनेऽस्रोत्यस्य प्रत्यभिगदने च सोम्प्रेत्यस्य नाध्य यदनभिधानं भवदेवभद्दमस्यं सच युक्तम्। अनुविरोधात्। चभिवादने यः पाद्यष्ठचित्यास्विग्रियो सनुना विहितः म रूड वध्वस्यानाचरपावाभिहितः। सोप्रधावाभिष्याः म

एवाभिवाद एवास्या वध्वः वाग्विसरोः वाक्षमसरणे तस्मात् पूर्व मौनम् पदानीं मौनत्याग इति ताव्मी ततः प्रमृति विरावः मचारत्वणाणिनौ बद्धवारिणौ भूमौ एइ शयोगाताम्। विवाद्यात् प्रमृति दम्पती दिनवयं चारमवणवर्जितं सुद्धानी मैयनमञ्जवाणो सहैव शयीयातां भूमाविति खटादे. प्रतिपेधार्थे न तु प्रस्तरक्षस्य लादीनामपौति। यथाईणमिलाइः। यस्त्रियः वसरे वाचा पित्रा विष्टरादिदाने नाईगं कर्त्रथं सागतेष्वित्येके विवाद्यार्यमागतमात्रे खेवार्रणमित्येके इदानीं बदुवादिसमातः भेव ध्यविद्ययते। इविष्याचं प्रथमं पश्चिपितं मुखीत। तव खगुरगृहे यदत्रं प्रथमं भुद्धीत तमाषकीद्रवादिरिहतं वध्य-माणानपार्यनिति सन्तेणाभिमन्तितं खो भूते वा समग्रनीयं खालीपाकं कुर्वीत । यदि विवाहे यद्मादिना संदानिया भूता तत्परदिने सस्यगयनार्थे क्रियते इति समयनीयं स्थालीपार्क कुर्वीत। तस्य देवतागिनः प्रजापतिर्विखेदेवा यनुमतिरिति। तस्य सममनीयस्यान्याचा देवता:। सममासकर्णं पृथङ्निर्वी-पद्योभाधें मेद्यगेन चायं द्योम: बहुदैवतत्वात् देवदत्तविश्रेपस्यैय भोजनौयत्वात् होमदेवतानां प्राधान्यात् वि:प्रचालनम् डहुन्य खासीपाकं व्युद्धेकदेश पाणिनाभिम्पेदन्तपाश्रेम मनुनिति। ष्टरुख पावान्तरे कला स्थानीयाक प्रेषं खुल्लान्यपावे निधाय एकदेशं न सर्वमिष भागङ्खितमिति सञ्चषायिन सनुनैति मन्त्रवरीण प्रवासावित्यव सम्बोधनविभक्त्या भार्या नाम पयोज्यमिति भद्दनारायणैक् ज्ञम्। तत्य यद्सावित्येव भव-देवभद्देनानू हेन मन्त्रेगोक्षं गुग्र-विष्णुनाऽसावित्य हमिति व्यास्थातं तदयुक्तं भद्टभाष्यविरोधात् त्वेति युष्मत्पदप्रयोगात् सम्बोधनार्थं बधूनामप्रयोगस्य युक्तत्वाच् । किन्तिदानीं सम-यनीयचर्षोमाखरणाञ्चदेवमहेन न समयनीयचर्षोमाहिर्छ जिखितं मयापि प्रयोगेन जिखनीयमिति। भुक्तेच्छिटं यध्वे प्रदाय यथाधें गौदंचिणा इति प्रतिः प्रिकिपितमन्नं द्वयं किश्विड्वा उच्छिष्टम् सितं वध्वे जायाये प्रदाय दक्ता ह्ययंमन्यदिष भुक्ताचन्य यथाधें वामदेव्यगानानां क्रताः। गौदंचिणा अद्याधे देथाः यद्ययत्तेः कुलाचाराद्दा तिहन एव ध्रतिहोमादिचतुर्धो होमान्तं कम्म क्रियते तदार्शममन्तितं कदलादिकं खमान्नाय बधूमान्नापयेत् ततो वामदेव्यगानानां कुर्यात्।

त्रय यानारोष्ठणादि। तत्र गोभितः। "यानमारोष्ठन्यां शालालिमिलोतास्च अपेत्" प्रक्षतत्वात् पाणिपाइको जपेत् एतामित्यधाचिमिति चेन यया प्राप्तविखादियानिऽम्येतामेव-भातामेव लपेत्। नासमविताधैपदस्य स्रोपमूहनं वा कुर्धाः दिति। अध्वनि चतुप्ययान् प्रतिमन्त्रयेत् नदोय विषमांपि च महाहद्यान् श्मग्रानञ्च माविदन् परिपर्यिनः" इति मार्गे गच्छं यतुष्पयानु हिम्य भाषित विषमा खुद्यनी चलेन चीर-यात्रादिभयाद्या विषमाणि यसभद्रे नहुदिमोसे यानविष-यांसे ययागतं पूर्वं तत् लाक्तात्माय याने वा चन्यास चौर-व्याघोषद्रवक्षतापत्स यमेवास्नि नयन्ति तमिखनैनादिना संधुष्य भूरादिभिराज्येन जुलाऽन्यद्घादिक योजियला यसति-विद्वतियिय इत्युचा भाग्येनाभ्युचयेत् वामदेखं गीलारोहेत्। पाणिपाइकी यामदेयां गोला यानं वधुमारीपयेदिति। यसमद्वादिनिमित्तद्दीमस ददानी तयासारामावात् भवदेव-सहेन शिक्षितं सयापि प्रयोगिन सेव्यं प्राप्तेषु वासदेष्यं वरः वध्याः पतिः स्टए प्रयमपात्रो वामदेखं गौत्वा प्रयेगवेत्। रहिद्वतां प्रतिषुषगीशसम्बद्धा माह्यस्थी वरोहिष्यानहरे चर्माप स्यवेग्यलोद्दगावः प्रजायध्यमिति। गीसमाचारः सम्पदा

युक्ता यानाद्वताया व्यवसादो द्वाय द्ति सन्तेष भवी जध्यमानेन गायवा वा स्थापयन्ति तम्याः कुमारसुपस्र भादध्यः। ,तस्या दध्याः कुमारम् घक्षतभोडं बालकम् उपस्ये कोड़े उपवेगरोयुः। द्राष्ट्राख्यस्यस्ये ग्रकलोटान् चस्रसौ श्रावपेयुः फलानि वा कुमाराय शालुकानि कदस्यादिफलानि वा द्राष्ट्राप्योऽस्त्रनी दयः। शके करंगे सुरन्तीति शक्तीराः कन्दकाः। उद्याप्य कुमारं ध्वा मान्या हुती मुँहीति। घटा-विष्ठ धृतिभ्वा पावय्यकाः। क्यञ्चिर्यसगमनाभावेऽपि अगुररटइनिवासेऽपि भवग्यं होतथा इति। अब इह धृति स्वाद्या द्रति द्रत्याद्रिपयोगः। नतु स्वाद्ययोगे चतुर्घी धृति-होगेन प्रयुक्त्यात्। गोनामसु तथाष्टसु चतुर्ध्यामर्घ्यं द्रत्येतद्रो-नामसु दि स्यते द्ति कन्दोगपरिशिष्टात्। प्रतिद्वीमे स्वाष्टक-होमें समाप्तास समिषमाधाय यथा वयसं गुरून् गीवेणाभि-वादा यथाधे समाप्तास धृत्याच्या द्वित समिधमाधाय समिधं प्रश्चिष्य यथावयमं वयोऽधिकक्षमेण गुरून् दृष्ठान् गावेण स्वगो-वेषाभिवादा पादवत्दनं सत्वा यधमप्येवं सत्वा यथार्थं प्राय-खित्त हो मादिक मुदी ख कर्म समाव छेत् एवसु भयक कुंका भि-वादनं भद्रभाष्योक्तत्वात् यदि त्वश्रकेः कुलाचाराहा तद्दिन एव चतुर्धी होमः क्रियते तदा तत् समाप्ताविवोदीचं कर्मतन्तिण कर्त्तव्यम्। गोभिनः। "घषातयतुर्धीकमविवाद्यतिष्यनन्तरं चतुर्थां तियौ वस्थमाणं कमें वित्तियत" इति वाकार्यः। घतः यब्दो इतिर्धे यत एतदकर्णे यास्याः पापौ सस्मौरित्यादि-्दोषः गरौराद्रापेति तत एतदवश्यं कर्त्तव्यम् अग्निमुपसमा-धाय प्रायसित्ताहुती जुहोति प्रानः प्रायसित द्रति चतुसतुः षिनिसुषसमाधाय विवाहामिनिस्थिनेन सशुद्ध प्रायियत्त-निष्टेर्मन्दैराच्याप्रतोर्नुहोति अम्बे: प्रायस्ति प्रति मन्तिष

चतुसत्रिति वीपा बोध्या वच्यमाणपरिशिष्टस्वरसात् प्रथमा-इतिर्यथा पिठतेन मन्त्रेणैव भवति यन्यासु तिस्विमिपद्-स्थाने वायुचन्द्रसूर्याः क्रमशः कार्याः एतावानेव विश्रेषः श्रेषं पूर्वेवत् एव चतस्रवयाद्वतिषु पापौरिति स्थात् कुतः प्रथम-स्वैव मन्त्रसासापदेशात् तस्य चानेः स्थाने वायुचन्द्रस्या ष्टितावता विश्वेषोक्तत्वात् समस्य पश्चमीं बहुवद्ग्रह्य तथैव समस्य बहुवदिग्नवायुचन्द्रस्या इत्यादि पद्ममोमाहुती ज्ञुधादिति भवापि वीसा वोध्या जहाति कयनादवापि पापौ लक्षीस्त्वादिवदेव द्रष्टव्यं दितीयपञ्चके पतिद्यीति विशेषः श्रेषं पूर्ववत् खतीये चाडुतिपञ्चके चपुत्रेशति विशेषः। चतुर्येऽपस्योति विगेषः। एतत् साष्ट्यति सन्दोगपरिगिष्टे कात्यायनः। "मन्त्रामायिऽग्नय इत्येतत् पञ्चकं लाघवार्थिभः पठाते तत् प्रयोगे स्थानान्त्राणामेव विंगतिः। सनिस्याने वायुचन्द्रस्यान् बहुवदाद्यं च। समस्य पश्चमौसूषे चतुयत्-रिति त्रुते:। प्रथमे पश्चमे पापौ लक्षौरिति पदं भवेत्। चपि पञ्चमु मन्त्रेषु इति मन्त्रविदो विद्ः। द्वितौये च पतिशो वियकम्"। गोभिलः। चाइतराष्ट्रतेस्य सम्पातमुद्यावेऽवनयेत्। जलपाचे चिवेदित्यर्थः। तेन एनां मकेशनखासभ्यन्य क्रामियत्वा म्रावयन्ति तेनाष्यमियजलेन एनां वधुं स्वचयित्वा सकेशनद्या-मिति सर्वेद्रोमाद्यङ्गार्यं कामयित्वार्शनस्थानाहे गालर गम-यित्वा भ्राययन्ति स्नापयन्ति बहुवचनादनियमः कर्ताः कर्ताः विरावात् सभव इत्येके"। प्रक्ताचिरावादृष्टुं मभव: स्योगो मैयुनं कर्त्तव्यमित्येके चाचाय्या मन्यत्ते।

यय गर्भाधानम्। गोभिसः। "यदा ऋतुमतो सर्वत स्वरत्नमोणिता तदा सभवकासः"। "ऋतुः प्रजाजनगोग्य-

काल: तदिमित्तेन नैमित्तियां गमनं वार्थ्यम् पक्षवेत: प्रति-वाषाक्षियमः "ऋतुमतीन्तु यो भार्थां मुक्किषो नोपसर्पति। भवाष्रीति म सन्दामा भ्रणहत्वागृतावृती" दति स्रुति:। ध्योतिषे। "च्येष्ठामू सामघा सेपारेवती क्षत्तिका विनो। उत्तरा-वितयं त्यक्षा पर्ववजं व्रजिद्दतो" ॥ विषाुपुराणम्। चतुः र्ध्यष्टमी चैव पमावास्याय पूर्णिमा। पर्यास्थितामि राजिन्द्र रविसंक्रान्तिरेव च"॥ याञ्चवस्काः। "पोडगर्नानगास्तीर्षा तासु युग्मासु संविग्रेत्"। अव पोडग्राहोरावासककालस्य सावनत्वात् पुंसवननामकरणयोरपि सावनगणनायायुक्तत्वाच सस्कारमाने सावनगणनया व्ययदार्य तथा च याज्ञवरूताः। गर्भाधानसृतौ पुंसः सवनं स्वन्दनात् पुरा। पष्टेऽप्टमे वा शीमन्तः प्रस्वे जातकर्म च। चएन्येकादशे नाम चतुर्ये मासि निष्क्रमः। पष्ठेऽसप्रागनं मासि चडा कार्या यथा-कुलम्। एवमेन: यसं याति चीजगर्भसमुद्रधम्"॥ चतुर्धे सान्दते तत दति वचमात् सान्दनात् पूर्वमासत्रयं पुंसवन-काल:। अव चतुर्धमासस्य मौरत्वे चान्द्रत्वे वा निपेककाम-स्यापि तथाले तटाद्यन्तदिननिषेके सति यधिकन्यूनकालयो-गैर्भस्यन्दनगनियतमापद्येत सावने तु नियतं तैनाव सावन-गणना युक्ता योपिद्यवद्वारिषदाच । सहन्येकादमे नाम द्रखवापि चर्योचयपगमे नामधेयमिति वियास्तात्। स्त-कोत्तरदिनपरमेकादशदिनपदम्। "स्तकादिपरिच्छेदो दिनमासाध्द्यास्त्या। सध्यमग्रहभुक्तिय सावनेन प्रकीर्तिता" इति स्थिमिद्दान्तवचनेन स्तकस्य सावनदिनघटितलात् सद्त्रादिनस्थापि तथात्वम् यती दिनसासवर्षगणना साधने-निति। ग्रभाग्रभविवेचनन्तु सीरेण क्योतिःत्रास्तात्। ज्ञतएव पितामहः। "विवाहादी सृतः सीरी यज्ञादी सावनी सतः"।

धव हितीयादिग्रब्दात सस्कारपरिग्रहः। "गर्भाधाने मदा याद्या वारा भौभरवीष्यकाः"। गोभिसः। "द्चिणेन पाणिना षपस्यमभिस्त्रयेत्। विषायोनि कल्पयत्वेतयाची गर्भे धेष्ठि सिनौ च शमाप्यश्रीसमावतः। द्वासितदेशस्य सञ्चेन पाणिना भौचदर्मनात् तद्वारणाय दिस्योनेति। उपसं योनि स्प्रीत् विष्णुरिति मन्वेष प्रथमं तती गर्भ धेहि सिनौवासीत्यादि-भन्नेण च। मन्नान्ते कर्मादिएन्निपात इति न्यायाम् पाठाः नन्तरं सप्रा: नतु भवदेवभट्टोतं स्प्रान् जपति। ऋची समाध्येव संयोगं कुरुत: न मध्ये वामदेव्यजप:। देवस:। "सक्तम सस्तता नारौ सर्वगर्भेषु सस्तता"। तेन गर्भाधान-पुंसवनसी सन्तोवयनानि सक्षदेव कर्त्तथानि। छन्दोगपरि-शिष्टम्। ''विवाद्यदिकमीगणी य छक्षी गर्माधाने शशुम यस्य चान्ते। विवाद्वादिविकमैवात कुर्यात् याहं नाटो कर्मणः कर्मणः स्थात् । विवाद्यादि गर्माधानान्तकम्मेसु एकम्ब याहं न तु प्रतिकर्मादी एकेनेव याहेन सतीन सर्वाणि यहह-वस्तौति । अस्तग्रब्दोऽवावयवार्यः दग्रान्तःपट इतिवत् समीपार्थे उपसच्च स्थात्। ततस विग्रेयकोपसचक्सन्देई विश्रीयणलेन परणं कार्यान्वितलात्। यतु "निपेककासे सीमे च सौमन्तोक्यन तथा। क्रेयं प्रवने चैव याहं कर्माङ्गमेव च ॥ इत्यनेम भविष्यपुगाणेम याद्ये कर्माङ्गलेम विद्वितं तष्कन्दोगेतरपरम्। पतएव भवदेवभद्देनापि भ सिखितम्। अय याद्योत्तरगमनेऽधि न दोषः इह्मविष-पुराषात्। ''नित्ये मान्दोसुययाहे हाते दामादावर्जनम् द्रति वचनाम्तराशः।

चय पुंसवनम्। गोभिनः। "हतोयस्य गर्भमामस्यादिम-देवी पुंसवनस्य कारः"। गर्भे सति हतीयमासस्य चादिमदेवी दगमदिनाभ्यन्तरे स्वोति:प्रास्तीक्षकाने पुंस्वनं कार्यम्। पातःसभिरस्काभुता पचादग्नेषदगग्रेषु केशेषु प्राच्युपविश्वति षाप्रता साता पयात् पिधमदिशि पाद्माखी उपवियति पखर्दाश्चणतः द्धिणतः पाणिपाष्टकस्यापविद्यतीसम्बद र्थानात्। पद्यादित्यभिधानात् प्रानिस्यापनं सभ्यते। तत्-मार्थकावाय "चाच्यं द्रव्यमनादेशे जुहीतिपु विधीयते। मन्त्रस्य देवताया: प्रजापतिरिति स्थिति:" इति छन्दोगपरिशिष्टील-द्रव्यादि सभ्यते। सुद्रोतिषु दवनषु। मन्त्रस्थानादेग्रे प्रजा-पति: प्राजापयो मन्त्र:। समन्त्र: ध्याष्ट्रत्यात्मक:। ततस् विरूपाचनपान्तां कुगण्डिकां समाध्य समिलविपादिमहा-व्याद्वीतिभिद्योगं क्षत्वा प्रजापतिदेवताकसमस्त्रमदाव्याद्वतिः धोसं कुर्य्यात्। ततः प्रकृतं कमा। तत्र गाभिनः। "पश्चात् पित्रवस्थाय दिसियेन पाणिता देशियसंग्रसम्बवस्थानाहितं माभिदेशमंभिस्त्रोत् प्रमांसी भितावर्षावित्येतयद्वा उपा-विष्टाया वध्वाः पश्चिमदेशं गखानुपविष्टः पतिर्दे चिणइस्तेन भूणीं तस्या दिचिणस्कस्यमवस्य वस्त्राद्यव्यविदतं माभि पुर्मासाविति मन्त्रेण स्पृत्रोत् पय ययार्थम् पनन्तरं वामदेख-गानंग्लं समाप्येत् यदि खगतेर्देशाचारात् कुनाचारासा एकस्मिन् दिने दितोय पुंसवनमपि क्रियते तदा गणेष्वेकां परिसमूहनम्"। इभी वर्हिः पर्याचयमान्यभागः सर्वेभ्यः समयदाय सक्षदेव सौविधिकतं जुडीतौति गोभिसस्वा-न्तरात्। अभयकर्मान्ते वासदेव्यगानाद्यदौचं कमी कर्तव्यम् अतएव सरलायां दिनद्ये भट्टभाष्यभवदेवयोरेकदिने सभयः करण लिखितम्। अधापरम् अघ प्रथमपुंसवनसमाप्ति-कामानन्तरं तदानीमपरमन्यत् पुंमवनं कार्यं प्रागुदीचां दिशि न्ययोधगुङ्गामुभयतः फलामस्त्रानामस्त्रिमपरिग्रष्टो

त्रि:सप्तिधवैर्मासैर्वा परिक्रीय उद्यापयेत्। यदासि सौमी सोमाय लावक्र परिक्रीणामि यदासि वार्गणी वार्गणाय लावक्र परिक्रोणामि यद्यसि वसुभ्यः वसुभ्यस्वापरिक्रोणामि यद्यसि क्ट्रेभ्यो क्ट्रेभ्यस्वापरिक्रोणामि यद्यसि प्रादिखेभ्य प्रादिखेभ्य-स्वापरिक्रीणामि यद्यसि मरुद्रा मरुद्रास्वापरिक्रीणामि यद्यसि विश्वेभ्यो देवेभ्यस्वापरिक्रीणामि योपधयः सुमनसो भूखा षयां वौर्यां समाधत्त इय कमी करीषतीत्यत्याय त्रणैः परि-धायाष्ट्रत्य वैद्यामी निद्धात्। वटतरीः पूर्वस्यां दिशि श्रुष्टाः सुकुलितप्रवः। ''सतागः पक्षवो गूढः ग्रङ्गीत पश्विने स्थिते। पतिव्रता व्रतवतो व्रह्मबस्यस्थाश्चतः" इत्युक्ते । भश्चती वेदहीनः तां फलयुगनयुतामस्तानां सिमिभिरव्याप्तां विराष्ट्रसीः सप्तिभयवैमासिका विराष्ट्रतेः क्रीत्वा रह्हीयात् । अयय वृज्ञसामिनो न वृज्ञात् तेन वृज्ञसामिने यवा माषा वा देया: यदामौत्यादि सप्तिमन्त्रै:। प्रतिमन्त्रच गुडकवयं ददाःत्। श्रोपधय द्ति मत्वेषोत्याय च हणैवेष्टियद्या श्रानीयाकाशस्यां निद्धात्। द्यदं प्रचास्य ब्रह्मचारीवनवती वा ब्रह्मचस्: कुमारी वा चप्रताहरकी विनष्टि द्यद भिनां पेषणार्थकेन सपुतां कुमारी चन्दा अतवती पतिव्रता चपत्या दरनी तियाक्पुद्यकेण पेषणमकुवतो किन्तू च्छितपुद्रकेण पुनः पुनः मेषण कुर्वती प्रात. सिशारस्काम्ता उदगमेषु कुर्येषु पाक्-शिराः सविश्वति शेते शेष सुगमम्। पद्मात् पतिरवस्थाय द्चिण्य प्राणेरङ्ग हेनोपकनिष्ठयाऽङ्ग्या । सभिसग्रद्य दक्तिगनासिकाग्रेण तथा नयेत्। प्रमामग्नः पुमानिन्द्र दूर्यतयस्थाः पराद्वस्थाः परिमदिशि सपकनिष्ठयानामिकया तेनाड्डानामिकाभ्याम्। पिष्टां गुडां वस्त्रवहां ग्टडीखाः निष्पौद्य द्विषतामारम् विवेत् पुमाननिरिति मन्तेषा

षय यथार्थम् चनन्तरं दिखणायुदीचं कमं कुर्ये।त्। प्रंमवनः कर्माणनकर्तुरसिवधानिऽन्येनापि कर्त्व्यम्। "पष्टो संस्कारः कर्माणनकर्तुरसिवधानिऽन्येनापि कर्त्व्यम्। "पता कुर्यात्तदन्यो वा तयाभावेऽपि तत्कमात्"॥ इति स्मृतेः। भुजवले। "सुप्तवश्च करं कृत्वा स्थिरे तद्वासने तथा। मृजवले। "सुप्तवश्च करं कृत्वा स्थिरे तद्वासने तथा। मृज्योदितेन होमश्च यान्तिश्चेव च कार्यत्॥ कर्णास्त्रेण संयय्य जीवं जातीश्च विद्वमम्। गुवाकं रक्षतं हम द्यात् स्तनत्यान्तरे॥ ततः प्रमृति नदीतीरं देवखातीदकं त्यजेत्। सन्यादनं तरीमूं तथा देवग्रहं त्यकेत्"॥

च्रय मौमस्रोत्रयनम्। यदि पुंसवनं न क्षतं तदा तिधाः सेव दिने प्रायशिक्षास्वसधाचा हितिहोसं सखा पुंसवनं क्रवा सीमन्तंत्रयमं कार्यम्। तया च भारदः। "येपान्तु म क्रमाः पूर्वे संस्कारविषयः क्रमात्। कर्त्रच्या आद्धभिस्तेषां पैत्यकादिव तश्वनात्॥ भविद्यमाने पित्रार्थे खांगादुदुत्य वा पुनः। प्रवासकार्याः संस्कारा स्वाद्यभिः पूर्वसंस्करेः"॥ क्रमात् आतृषां मंस्काराणाच पौर्वापौर्यक्रमात् आसक्तमनु मीदर्विषय:। विवासितया दर्शनात्। छन्दोगपरिभिष्टम्। "देवतानां विषयामि जुहोतिषु कयं भवेत्। सर्वे प्रायसितं शला क्रमेण जुरुयात् पुनः । संस्कारा चितपत्येरन् म्बकामास क्यसन। इत्वेतदेव कुर्वीत ये तूपनयनाद्धः" 🖫 एतदिखनेन सर्वे प्रायिश्वसम्बद्धारं तद्य प्रागेव विष्टतम्। उभयकरणे तस्त्रेणैव सातृकापूजादि। "गणशः क्रियमाचे तु माख्यः पूजनं महात्। महादेव भवेत् याद्यादो न प्रवाा-दिष्" । इति कन्दोगपरिभिष्टात्। गोभिसः। प्रथ सोमल-करणं प्रयमे गर्भे चतुर्धे सासि पर्छ दिसे दा। यथ मुम्बना-नमारं सोमनाः केमरचनाविमेषः। वामध्येवास चतुर्याद्

मासानां तुख्यवद्विकत्यः किन्तु पूर्वपूर्वकातः प्रशस्तः समर्थस्य चेवायोगादिति न्यायात्। ततो नवमासादौ प्रायश्चित्तं **छलैव कर्त्त्रयम्। प्रथमगर्भ इत्यपादानात्। यदि वयश्चिद**-क्षत पतिसान् सरकारे गर्भनाशे पुनगंभीत्यत्ती श्रयं कास-नियमो न किन्तु गर्भसन्दने सीमन्तीत्रयनं यावन बालप्रसवः इति ग्रह्मनिधितोत्तकानी ग्राष्ट्रा: वश्द्रानमार्त्तगर्डे। "यानार्थकतमौभन्ता प्रसूते च कष्टचन। यद्दे निधाय तं वालं पुन: संस्कारमर्छति। पष्टे मासेऽष्टमेऽङ्को ज्यकुजदिन-क्षतां नन्दे सभद्र तियो मैले सूसे सगान्ने करपिष्टपवने पौष्ण-विश्वविद्यामे । प्रचार्खादिखरौद्रे युवतिहरिभपे ब्रुश्विकी वाधि लग्ने चन्द्रे ताराभुकूने ग्रममपि नियतं स्याच भीमन्त-कमी। सगाजरहिते लग्ने नवां ये पुंपहस्य च। केचिइदन्ति मौमन्त तथा रिक्तेतरे तिथी"। गोभिनः। "प्रातः स्थिर-स्काभुतोदगयोषु दर्भेषु प्राचुपविग्रति उक्तार्थमेतत्। पसात् पतिरवस्थाय गुगमन्तमोडुम्बरं श्रनाट्ययुमावधाति भयमूर्जा-वतो व्रच इति"। चाने: पयात् पति: श्विता युगानि फमानि यस्मिन् यानाट्यये नौलस्तवके सयुगमान् मतुबन्तम्। तथा च भट्टनारायणध्त छन्दोगपरिशिष्टम्। "शताटु नौसमित्यता" ययुक्तवक उचाते। कपुणिकाभितः कैमा सृद्धि पयात् अपुध्यिकः"॥ इति एतद्दचनं नाराययोपाध्यायेन धृतम्। छड्खाभवमौड्खाम्। ययसूर्जावतो हच इति सन्त्रेष भार्याया, वाग्छे बधाति। यथ मीमलमूहं नयति भूरिति द्धर्भाषञ्चलोभिरेव प्रथमं भुव दति दितौयं खरिति दतौयम्। ययानन्तरं यत्र मिन्दूरं स्तो दराति तं सीमनां ननाटोहुँ नयति भूरिति सन्दोग दर्भपिद्यानी भिक्तिस्भिः एकपारकर-चाद् यावन्यस्यनानि तावतीभिरेव तिस्रभिरित्ययः। मथमाः

दिपदानितु व्याद्वतीनां पिञ्जलीनाञ्च प्रथिनियोगार्थम्। पिद्धाचीपविवम्। तथा च छन्दोगपरिशिष्टम्। "अनन्तः र्शभण साम्रं कौमं हिदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पविवं यत कुत्रचित्। एतदेव हि पिञ्जल्या लचणं समुदाञ्चतम्"॥ भोभिनः। "प्रयाचीरतरेण येनादितेरित्वेतयर्वा"। वीर स्तरन्धनेन युद्धमिति वीरतरः शरः। तथा च छन्दोगपरि-शिष्टम्। "खाविच्छलाका यलली तथा वीरतरः यरः। तिसतराडुससम्पाकः क्रपरः सोऽभिधोयते॥ ततः गरेण येनाः दितेरिति मन्त्रेण सौमन्तमूर्द्धं नयति इति पूर्वस्रादनुवर्तते। ष्यय पूर्णेन सूत चात्रेण वाकाहमित्येतयर्घा। चात्रं टक्ष्ः। नेन सूत्रपूर्णेन वाकाइमिति मन्त्रेष सोमन्तमूड् नयतीति थिपः विः खेतया अलल्या यास्तेवाकेसुमतय इति स्थानवितये शक्तेन शे जाजन्तु काएकेन याम्ते इति सन्तेण सीमन्तमूह्वे नयतीति श्रेपः। क्षपरस्थासीपाक उत्तरपृतस्त्रसवैचयेत। क्रपर उक्त: खाकीपाकयर: स उपस्टितपृतस्त वध्वा: प्रदर्श-येत् स्थासोपाकपद चरुसास्यां सपरम्य यपनार्थं मनुषार्थ-वात् हिप्रचाननम्। ततययः कथिनाधानमे अपिवा ंखापयेत्। किम्पयसीत्यक्षा प्रजामिति वाचयेत् किंपथ्य कौति पतिरक्षा प्रजामित्यादिमन्तं गर्भिणी वावयेत्। तम-विचितकपरम्। वीरसूर्जवसूर्जीवपत्नीति बाह्माखो सङ्ख्यादि-भिर्वाग्भिरपामीरन्। वीरान् विकास्तान् पुतान् स्त इति वीरमुख भवेति वाया शेष:। प्रतिषदं म्यात् जीवतो दोर्घा-युप. पुत्रान् स्त दति जीवस्: जीवतः पत्नी जीवपत्नी पवि धवैत्यर्यः। एव प्रकाराभिर्वामिरनुनरीयुः। ततस सप्टाः माइतिभिद्धेता मोड्म्बरफलस्तवक कएठे वध्वा प्रजासिति षाचयेदिखन्तं तन्वं सत्वा व्याष्ट्रतिभिष्टीमादितन्तं समापः धैत्। तता ब्राह्मस्य उपाधीरन्।

ध्य गोष्यन्तौद्दोमः। स्थानन्तरं गोष्यन्तौ यूनापनाम् ध्रामन्त्रप्रवां जाला द्दामः गोष्यन्तौद्दोसः कर्त्रथ दति ध्रेपः। सुप्रमन्ने प्रतिष्ठतं वस्तौ परिस्तौर्याग्निमावाद्धाः हतीर्जुद्दोति या तिरयौत्येतयर्चा। विपिषत् पुष्टममवत् द्दित वस्तियोनिद्दारं वस्तौ स्थिते गर्भे प्रतौत्युपसर्गः। परिस्त्योगितिकाति समिष्ठे पुनर्वचनं परिसत्यानार्थं परिस्तरणमान्नमेव न सु ब्रह्मोपवेशनाद्यपौति। तत्य विप्रदेशमः परिस्तरणाच्यमस्कारावेकत्राधिको भ्रष्यत्वात् कालस्य। या तिरयौत्यास्यां जुद्दोति। प्रमानज चन्यियते पदी प्रामित्योतस्यान् सर्वनान्त्र देवद्शयमां नाम खाद्दा द्रत्येवम्। प्रमानत्योतस्यान् सर्वनान्त्र देवद्शयमां नाम खाद्दा द्रत्येवम्।

चय जातकमा। गोभिनः। "यदाखे कुमारं जात-माचचौरन् पय भूयात् काइत नाभिक्षन्तनेन स्तनप्रतिधानेन चेति"। भूसे पित्रे पुषं लातं कययेयुः गिष्यादयः। नाभि-क्तसनेन स्तनप्रतिधानेन काइत इति पिता यूयात्। नाभि-च्छेदनमक्तवा स्तनपानप्रतिपेधेन च बासकं प्रतिपासयत। ततः पिता परिश्तिवस्तमश्चितः स्थायात्। "नाते पुचे पितः स्रान सचेनन्तु विधोगते"। दति संवर्षात्। ततः पुवजण-निधित्तं हिडियादं तन्त्रेण कुर्यात्। "नैमित्तिकभयो वच्ये यादमभ्यद्यार्यकम्। प्रवत्रकानि तत्कार्ये जातकर्मसमे मरे: । इति सार्कछयपुराणात्। "सीमन्तीययने धेर पुत्रादिमुखदर्शन। मान्दीमुखं विक्रगचं पूत्रयेत् प्रयती रही ॥ इति विश्वपुरायवनगराः माजयादयस्यामधी चक्रीक्षर्गमाच कर्मश्रम्। मिताचरायां पितामदः। "चमोचे त् मनुत्यमे युवमभा यदा अग्रेम्। कर्मुसाकाशिको यदिः वगुष्ट, पुनरेव मः" । तात्का विको पुत्रकवानि शिक्ता । टामद्रेष पराष्ट्रपूराचे "यावकालं गुनै लाते न नाड़ी दियने

पुनः। चन्द्रस्र्योपरागेण तमाहः समयं समम् ॥ कत्य विलामणी देवसः। "आते पुवे पिता शुला सचेलं स्नानः माचरेत्। त्राष्ट्राणेग्यो ययार्थात्र दत्ता वालं विलोकयेत् ॥ गर्गः। "शुला बालस्य वै सम्मा सला विदादिताः क्रियाः। श्रिक्तिनालं पायोतं दत्वा क्कां फलान्वितम्"॥ पुनः सानमाहाद्पुराणम्। "स्तके तु मुखं दृद्वा जातस्य जनकः स्तत:। क्षत्वा सचेल सानना गुडो भवति तत्वणात्"। गोभिनः। "ब्रोडियवी पेषयेसयैवाहता यथायुद्धां ब्रोडिः श्रात् पक्षधान्य तदभावे हैमन्तिक धान्यं यवालावे गोधुमाः"। तयाच छन्दोगपरिभिष्टम्। "ययोक्त वस्त्वमस्पत्ता प्राह्म तदनुकारि यत्। यवानामिव गोधुमा द्योष्टिणामपि जान्यः"। उभयालाभे प्रत्येकम्। "यद्या लाभोपपद्मं वा रीम्येषु तु विग्री-पतः"॥ इति याद्मवस्कावचर्न पात्रे तहर्शनास्। त्रताप्य-शक्या तथा कल्परते वटशुद्रा पेषणे या परिपाटी तयावापि पेपयेत्। दत्तिणस्य पाणेरङ्गुष्टेनोपकानष्ठया चाङ्ग्वाऽभि-संग्रह्म कुमारस्य किहा निर्माष्टि इयमान्नेति। पिष्टो दोहि-यवो दिल्पद्यतानामिकाष्ट्राभ्या ग्रहोत्या कुमारस्य रसनायहं निद्धाति इयमाद्येति मन्तेण तथैव मेधाजननं सर्पिः प्रागये-व्यातक्षेण चादाय कुमारमुद्धे जुद्दीति मेधान्ते मिन्नावरूणा-मिलोतयर्था मदसस्पतिमिति च। तथैय द्विणदस्तानामि-काङ्घाया ध्रीन जातक्षेण काञ्चनन पृत रहहोला मधाजननं धतम्। गिगोरास्ये संद्धाति प्रस्वेकसृग्यां जुडोतोत्वनिक मन्यम्य म्वापान्तत्वं प्राययेदित्यनेन स्वाधिकरणत्वं कृत्तत्-नाभिमिति यूयात् स्तनस प्रतिधन्ति सक्तिनिपेधविधिश्यं माभिगच्दो माभिनिकटमाडीपरः स्त्रनपदं तत्त्वौरपरम् भत कि मममास्थानमादगराचात् लातकर्मण उपरि चसंस्थाः।

दयमदिनं व्याप्य मभिविधावां जातकर्म कत्वा न सानाहेता सद्यो जाते एनो नास्तीति वचनादिति सरला।

चय नामकरणम्। तव गोभिसः। "जननाद्याराचे व्यष्टे शतरावे वा संवक्षरे वा नामधेयदारणम्"। व्यष्टे गरी। तथा च जुति:। "एकादशे दादमे वाद्यनि धिता नाम कुर्खात्" एकादम इति मुख्यकत्यः। समर्थस सेपायोगात् इति न्यायात् । अतएव भद्दभाषो श्रुतिः । "गञ्जः समुपासीत कीऽसमर्थस्य खो वेदेति"। एतच प्रशस्ततरतमपरपरकाल-कर्मेतरपरम्। यय यस्तत् करियन् भवति प्रयादकेरदगः ग्रेषु दर्भेषु प्रागुपविष्यति । चधिति लगा गरहाभ्यत्तरै पन्यथा चन्द्रशंगात् प्राक्तक्षिगंसमं स्थात्। य इत्यनेन पित्र-भावेऽन्योऽप्यधिकारौ। यथ माता ग्रचिना वस्रेण सुमार-माध्छाद्य द्धिणत उद्ध कर्मकर्त्रे प्रयच्छति उदक्शिरसमनु-ष्टु पविक्रायोत्तरत छपविधति छद्गयेषु क्रायेषु भाच्छाय प्राङीषदर्धं तेन मुखवर्षं छाद्यिता दिचिषतः पखुदंचिषतः ष्थित्वा उदच सुत्तानम् प्रनुष्टं कर्त्ः प्रिसदेगं प्रिकम्य गत्वा। भय जुड़ोति प्राजापतये तियये मद्यवाय देवतायै र्ति। तिथये नचनाय कुमारस्थेति ग्रेपः। देवतायै तिथि-नचत्रयोरित्यर्थः। तया च वहुचग्रह्मम्। "तामध्ये लुहु-याद् यस्मिन् जातः स्थात् इति"॥, तिययः प्रतिपदाद्याः तहे वताः प्रदाद्धकृषिण्यमसीमसुमारमुगिवसुपिशाचधम-बद्रवायुमकाययचित्ररः। पौर्णमास्यां विखेदेवाः। एषा छोम विशेषमाइ क्न्दोगपरिभिष्टम्। "मामध्ये मुनिवस्पिभाचा-बहुवसदाः। यदाय विस्तो देश यष्ट्या सिपिट्रेशसाः ॥ तेन मुन्यादयी धहुवचनान्ता होतव्या इति ग्रेपाः एकवचनान्ता द्वीतव्याः। नचतास्यभित्रत्यादौनि। देवताः च्योतिपे पण्डिः

यमेलादि। प्रवाभिनितो भिन्नलात् मष्टविंगतिरोमे त नाभिनिती यष्टणम् उत्तरापाटालेन अधणालेन च तदिभि-धानात्। तेन विरिधिप्रदणम्। नस्त्रहोमे क्रन्दोगपरि शिष्टम्। "पाग्नेया प्रश्च सर्पा हे विशाखा है तथैव च। पाषादा हे धनिष्ठा हे पित्रत्या हे तथैव च। हन्दान्येतानि बहुवद्याणां ज़ुहुगात् सद्।" ॥ दन्दद्यं दिवच्छेषमवशिष्टाः न्यधैकवत्। क्रिका दे विगाखा दे आपादा दे धिनष्ठा दे एतानि दिकानि दिकानि योम्छित्तिकाध्यः खाष्टा रोष्टिणीभ्यः ं स्वापा प्रवादि बहुवचनयुक्तानि जुहुयात् ग्रेपं दन्ददयं भाद्र-पदश्यं फरगुनौद्यच दिवचनयुक्तं जुद्यात् श्रेषास्येकवचन-युक्तानि तद्देवता द्वीमेडपि विश्रोयः। "देवता यपि इयन्ते बद्दवत् सर्पवस्रपः। देवाय पितरसेव दिवस्त्रभ्नास्विनी ं तया"॥ देवा विखेदेवाः। गोभिनः। "तस्य च मुख्यान् प्रापान् स्यान् कोऽसि कतमोऽसि इत्येतनास्यं जपति पाइ-सत्यं मासं प्रविधासावित्यन्ते च मन्त्रस्य घोषवदाद्यन्तरन्तस्यं दौर्घाभिनिष्ठानालकतं नाम दध्यात्"। कुमारस्य मुखभवान् वायन् प्राणनिर्गमोपायभूतान् किद्रविभेषसप्तमुखमाचिषो नाधिके कर्णाविति चाभिमुख्येन स्थान् काउसौति मन्त्र जपेत् पाइसत्यं मासंपविश्वासावित्यत्रासाविति सन्त्रान्ते वासाविति च पददयसाने सम्बोधनान्तं नामी चारेयत्। कीटग्रं कव-गोदि पश्चकत्रतीयादिवर्णान्यतमवर्णाद्यन्तरस्यं यरसवादान्य-तमवर्षमध्यं दीर्घं दिमावम्। पाकारादि यमिनिष्टानी विसर्गः। एतदुभयान्यतरं यस्यान्ते चयदिसंबुध्विप्रयमान्त-प्रयोगः। चन्यविभक्षेरसम्भवात् सतं सदन्तं यथा विविध्यसी " विकास दलादि। तथा च गर्गः। "यादी घोषवद चरान् यरलवान् मध्ये पुनः स्थापयेत् अन्ते दौर्धविमर्जनीयम्हित

नाम प्रयक्षात कतम्। ऋचे तिथकराधिसौस्यवसुभे चिता-नुराधोत्तरे पौष्णे चादितिरोचिणीषु ग्रभंक्षत् पुंसां समेर-चरेः"। गोभिसः। "एतदतिहतम्। एतवाम तिहत-रहितम् एतच खग्दश्चीत्रत्वात् मगस्तपरं कुलदेवानचत्राभि-सम्बद्धं पिता नाम कुर्यात् तदस्या वा कुलदृद्धः" दति कल्प-तरशह लिखितवचना सामान्तरकरणव्यवहार:। प्रत नचत-सम्बन्धेन नामकरणं यतपदचनानुरोधात् स्वनचवपादानु-सारेण तच्च देवगमी। युपपदान्तत्वेन कर्त्तव्यम्। तद्या च विष्णुपुराणम्। "ततस नाम क्षवीत पितेव दयमेऽइनि। देवपूर्वं नराख्यं हि यमी वमीदि संयुतम् इति। नरमाषष्ट द्रति नराख्यं नरनाम देवात् पूर्वे तच विभिष्टं शर्मायुतम्। "यमा देवस विप्रस्य थमा वाताच भूभुनः। भूतिगुप्तस्य वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत्"। इति यमवचने समुचयोप-स्य: "शर्मान्तं ब्राह्मणस्य स्यात्" इति शातातपीयेन शर्माः न्तताच। गोभिसः। "पयुग्दान्तं स्त्रीपाम्"। पयुक् चयुग्माचरं दान्तं यथा यमोदा इलादि। "दंवं गुरुं गुरु-स्थानं चेत्रं चेत्राधिदवताम्। सिद्धं सिद्धाधिकाराय श्रीपूर्वं समुदौरयेत्"। इति राधवभद्दधतप्रयोगमारदर्यनात्। खर्ग-गामिलादिना प्रिदः पधिकारो येपा नराणामिल्यनेन जीवतां त्रीशक्दादिलं नाम्बोन सतानां तथेति शिष्टाचारः। गौभिसः। "माले चेव प्रधमं नामधेयमाख्याय यथार्थम् उदौषं वामर-ख्यानाम्तं कुर्यात् गौर्दाचणा सा च प्रधानस्य नामकर्मण. ।

चय निष्क्रमण्यम्। गोभिनः। "ननगद्यस्नृतोयो-च्योत्सस्य यतोयाया प्रातः समिरस्क कुमारमाप्राच्यास-मितं सूर्यो वोते सोहितं चचलिकतः (पतांक्तिष्ठतः । कुमा-रस्य जननसारभ्य योज्योत्सा दृष्टियुक्तः पचस्तस्य दृतीया- तिथो प्रातः समिरस्तं कुमारं सापयिता प्रातनं मधाद्वादी श्रसामिते सूर्ये विगते रक्षिमावस्ये काले सन्योपरमे श्रञ्जनिः क्षतः वहुद्रोहावाहितास्मिगणपाठात् क्षताञ्चलिरपतिष्ठते चन्द्राभिमुख छाड्डेस्तिष्ठत्। भय माता ग्रिचना घस्त्रेण कुमारमाच्छाच दिचिणे उद्धं पित्रे प्रयच्छति उदक्षिरमम् उद्घम्तानमिति भद्दभाषम्। उत्तरां गच्छन्तमिति सरला। अनुपृष्ठं परिक्रम्योत्तरतः अवतिष्ठते पत्यः पृष्ठस्य पद्यादुपक्रम्य सा उत्तरस्यां तिष्ठेत् परिमाभिमुखी घर्य जपति यने सुमीमें ऋदयिमिति यथायं न प्रमीयते पुत्रोजनित्रा अधीति उद्धं साबे प्रदाय यथार्थे मातर्ख्युद्गातायां पिता यत्त इत्यादि पुर्वोत्तनिव्रा पधौरान्तमन्त्रदय अष्टा उत्तानमुत्तरां गच्छन्त-मुदक्षिरमं कुमारं मावे दस्वा वामदेव्यगानान्तं कुर्यात्। सत्यत्तिनामण्डिः। "सस्वविधानतोऽर्कगमिनोरघ्यं दापयेत्" मर्कार्घस्त कृन्दोरीतरपरः। चन्द्रार्घस्तु चौरोदार्णवसभूतं-त्यादि। तत्र ष्टियादमाच गोभिनः। "सर्वाख्यान्याचार्यः-वन्ति"। एतद्ग्रद्योत्ते कमीषि सर्वाखेवान्वाद्वाधिवन्ति। चन्दार्धार्थं नान्दोमुखयाद्वं दिचिणा च तदुभययुक्तानि । तथा च ग्रह्मान्सरम्। "यच्छक्षं कमंणामादो या चान्ते दिचणा भवेत्। मामावास्यं दितौयं यदन्वादार्यः विदुर्वेधाः"। माहः-पूजानन्तरमाष्ट्रियमाणलात् ऋाषस्य प्रधानकर्मानन्तरमाष्ट्रिय-माणलाहिषणायाः पिण्डपित्यज्ञानन्तरमाज्ञियमाणलाद-मावास्य।याहस्यान्वाहार्य्यत्वम्। नच हहत् पत्नचुद्रपग्रस्र-न्यपंपरितयस्थाः "स्यंन्देः कमणेयितः तथाः यादं न विदाते"। इति क्न्होगपरिशिष्टाचान्द्रक्रमेलेन याद्वपर्या-दासः कत्यतर्पमृतिभिक्तो युक्त दति वाच्यम्। पूर्वाद्यांन-वसोकानात्। सतएव द्वच दरित प्रखर्वा दिती-

घया ऋचा षादित्ये पश्विष्यमान यचतमण्डुनान् जुडुयात् पवस्वस्ययनकाम: एतोयया चन्द्रमगीति तिस्तर्र्ञुनान् चुद्रपगुस्रस्ययनकामः इति स्वाभ्याम्। परिवियति सूर्यो इस्यकादि यहहाइनस्वस्ययनार्थं चन्द्रे च परिविधति धन-मेषादि खुद्रपश्रसस्ययनायं होमनामंद्रयमुत्तं तयोः श्रादं नास्तोति परिशिष्टप्रकाशः। याहविवेके।प्रयोवम्। गोभिसः। "अय ये अतल हुँ च्योत्सः पत्तः प्रयमाहिष्टा एव तेषु पितो-पतिष्ठते चपासञ्जलों पूर्याययाभिमुखयन्त्रमसं यददयन्त्रमः सीति स ऋजु जुहुयात्"। द्विस्तृष्णीम् उत्सूज्य यथार्थ वियद्धि घत कहुं ज्ये।त्सा स्तत् कर्मा सवसरम्। ष्टनौय-गुझपचाटूद्वे गुझपचेषु प्रथमोहिष्टे व्रतीयायां सियो वसर-चर्यान्तं चन्द्राभिमुखः पिता सक्तचन्द्राय। ख्रानिम्। योम्यदद-यन्द्रमधौति मन्वेष दयात्। प्रथमोदित एवेति भट्टभाये याठः। तकातं प्रथमोदितं चन्द्रमसि प्रतिपदि दितोयायां वेति व्याखातचा । तती वामदेव्यगानमां च्छद्रविधारण कुर्यात्।

त्रयास्ववायानम्। यद्यपि गोभिनस्धे पद्मवायानमंस्तारे नाभिद्दितः तथापि "पद्मस्य प्रायन कार्यः' मासि पष्ठाष्टमं वृद्धेः । स्तीणान्तु पश्चमे सासि मध्ने प्रजागे मृनिः"। इति स्वत्यचिन्तामण्डितवश्चनेन सर्वगान्त्रिक्तने गाकाद्दितः । "यस्रास्तातं स्वणाखाया परीत्रमविरोधि स । विद्वत्रिस्तदनुः स्वसास्त्रस्ति स्वणाखाया परीत्रमविरोधि स । विद्वत्रिस्तदनुः स्वसास्त्रस्ति स्वर्णे इति कन्द्रागपरिधिष्टादन्यगास्त्रीतः प्रकारण कन्द्रोगिन कर्मस्यः । पूर्वापरिधिष्टादन्यगास्त्रीतः स्वस्त्रद्वानुसर्गण कार्यः । इति सद्द्रनारायण्यस्त्रत्यः सुजदन-सोमे । "पष्ठे सामि निगाकर्ष स्वभक्तरे रिक्तेनरे वा निष्ठो सोस्यादिस्यस्तिन्दुन्नीयद्विष्ठ पत्रे सहस्रोतरे। प्रात्नेग्रादितिः पौणावैणावयुगेहं सादि पट्कोत्तरेराग्नेयाणितिपित्रभेषु नितं\* राभवादिभच्य ग्रमम्"। धुरौरिति प्राजियादौ प्रत्येक सम्बं ध्यते। स्वाधिन्ताभणे। "दादमौ सप्तभी नन्दा विकास पञ्चपर्वस् । बनमाय्येगो सन्याच्छिश्नामन्भन्तणम्"। भुजः यसभोते। "व्यदन्दधनुमीनकन्यानन्त्रत्त्रभचणम्। विकौः गाष्ट्युगान्तेषु यद्दा यद्यस्या फलम्। दुष्टः यग्रधरी जमात् पष्ठाष्टस्योऽनभस्य । सत्यपुराणं "चन्नपार्थे च मौमन्ते पुत्रोत्पात्तनिभित्तके। पुंसवन निपेके च प्रवेगी मववेश्मनः । देवहस्तजसादौनां प्रतिष्ठासु विश्रेषतः। तीर्ययावाद्यपासर्गे दृहियादं प्रकीतितम् । सार्कण्डेयः। "देवतापुरतस्तस्य पितुरङ्गतस्य । असङ्गतस्य दातस्यमञ्ज पाने च का चुने ॥ सधा ध्यकनको पैतं प्राज्ञनं यंसते ततः। क्तप्राधनमुसाङ्गे मातुर्वासन्तु तं स्वज्ञेत् । देवाचतोऽय विन्यस्य शिस्पभारङाद्सिवैद्यः । शस्त्राणि चैव शास्त्राणि ततः पश्येत् लचगम्॥ प्रथम यत् सृशेद्दानः प्रिल्पभार्डं ख्यं तथा। जीविका तस्य वानस्य तॅनेव तु भविष्यति ॥

भय चूडाकरणम्। गोभिनः। भयातस्तृतीये वर्षे चूडाकरणम्। जननानन्तरं वर्त्तमानस्तीये वर्षे चूडाकरणमुदगयनादीनां ममुभ्ये वोद्यम्। कपुण्यिका कपुष्टलाख्यः
कैमचूडा तामां वन्त्रमाणविधिना मंस्कारकरणम्। चूडाकरणं कमेणो नामधेयम्। भयं कालो मुख्यः ग्रष्ट्योक्तत्वात्।
भवासामध्येत्न्योऽपि कानः। यथा मनुः। "चूडाकमी
दिजातीनां मर्वेषामव धनीतः। प्रथमेऽच्द स्तौये वा कर्त्त्या
यतिदर्शनात्" इति। भइनिखितो। "स्तौये वर्षे चूडाकरणं पश्चमे विति"। स्योतिषे। "भयुगमाध्ये तथा मासि चूडा
करणं पश्चमे विति"। स्योतिषे। "भयुगमाध्ये तथा मासि चूडा
मोमभनोतरे। भक्तेन्दुकालग्रहा च जनासासन्दुभादते। रिक्ता

दर्शाष्ट्रमीपष्ठोप्रतिपद्धिते सिते"॥ सिते श्रुक्षपद्ये। इद्यः। "षष्ठाष्टमोपञ्चदगो एमे पचे चतुर्दगी। ग्रन सन्निहितं पाप तैले मांसे भगे चुरे॥ अवणादिवयसातीचिवापुषाधि-चन्द्रभे। पादित्यरेवतोष्डस्तक्येष्ठामूले च चौडकम् ॥ तुला-मेपसिं इक किंद्व शिक्षेतर सम्बन्धे। अवापि तिष्यद्वादि विद्वर्षे विवर्जयेत्। "स्यां दिखणमार्गगामिनि हरौ सुप्ते निरमे रवी चीणे ग्रीतर्ग्वो सप्तीजयमयोवरि निगामस्ययोः। सुङ्कोऽभ्यक्ततनौ नियुष्वसमयेऽलङ्कारयुक्ते शिशौ चौराद्रोगमयं वदन्ति जवना सृत्यं तयान्ये जगुः"॥ भोजराजः। "उत्तर-वसिन स्वितरि चूडाकरणं जगुः श्रमं स्वनाः। चैत्रे मासि दिवाकरवारे शिखिमनिधाने धणा रविवारेतरव गर्गः। "अक्षर्सं अक्षमासेच युगमे माभिच वसरे। न कुर्यात् प्रथमं चौरं विशेषाचैवपौषयोः"॥ च्योतिषे। "सत्तिकास्यं रविं त्यक्का स्पैष्ठे स्थेष्ठस्य कारयेत्। उसवानि च कार्याणि दिग्दिनानि च वर्जयेत्"॥ गोभिसः। "पुरस्ताष्कासाया उपलिमेशिनक्पसमापिती भवतीति"। व्यक्तार्थमेतत्। गोभिनः। "तत्वेव तान्युपक्तमानि भवन्ति"। पत्र छपन्तिसे देशे उपस्तान यम्बिममोपे यामादितानि । तान्याद्र। एकविमातिहर्भाषद्वात्यः उपग्रीदककंममोड्म्बरः तुरः। भाः दर्शी वा सुरपरिणमीपित इति दक्षिणत. पिद्मम्यः पविवासि तानि सप्तमप्तकता स्थानवये साधानि। उण्होदकं कंम॰ समिन् उणादककमः। सहस्वरम्यायमोहुम्बरम्तास्त्रसयः सुरः तदभाषे चादशे दिर्पणम्। दिस्तितो स्निशिषः। चामा-टमख पूर्विधान् पूर्विधान्।. गोभिनः। ."प्रानद्दीःगोग्रयः स्वारम्यानीयाको स्थापाक दल्लान्यतः"। पान्डू सं स्वकातः वृद्यापको होमानुपयुक्तवात् मस्काररहितः। एतदुभय माक्-

संख्यमुत्तरतः क्षृप्तं भवतीति वी चियवै स्तिल्यापिरिति एथक् पावाणि पूरियत्वा पुरस्तादुपनिदध्यः । इन्द्रदयवनात् वी हि॰ यवैर्मियः पावद्यं पूरियत्वा पुरस्तादकः पुरतः स्थापयेत् । एवं तिस्तमापेरिति करणात् एषाससाभेऽन्येनापि पूरणिसिति भट्टभाष्यम् । इत्यादिवद्ववचनान्ता गणस्य सस्चका इति भव वो वं बद्धवचनादिनयतकक्तृंकमामादनम् । गोभिनः । "स्वपरो नापिताय मर्वथीनानि चेति"। निष्ठते कमोणि कपरो वोद्यादिपादाणि च नापिताय देयानि प्रतिपत्ति-भवासादनप्रमद्वादकोत्ता । भव साता श्रविना वस्तेण स्वासादनप्रमद्वादकोत्ता । भव साता श्रविना वस्तेण स्वासारमान्द्राद्याप्यादकोत्ता । भव साता श्रविना वस्तेण

श्रयाच्यसंस्कारानन्तरम्। प्राची प्राष्ट्री । श्रय यस्तत् वारियान् भवति पद्मात् प्राद्माखोऽवतिष्ठते। श्रय शब्दः किञ्चित् कमी मारयति तच कमी यथा पाणिग्रहणे तथा चूडाकमागौति वचनात् चूडाकर्मणः पुरस्ताक्षोपरिष्टाचतस्रो महाध्याद्वतयो भवन्तीति भट्टनारायणः। पाणिग्रहणे तु महाव्याष्ट्रतिभि: पृष्ठक् समस्ताभिषतुर्थीमिति गौभिन-टगनात् यास्तमस्तमद्वाद्वाहितिहोम उत्तः। तेन यस्द्रां करोति म व्यम्तममस्त्रमहाव्याद्वितिहोमानन्तर ग्रहोत-कुमारायाः पयात् प्राद्मात्व सङ्घेशितष्ठति। भय जपति षायमगात् सुरेणिति मविनारं मनमा घ्यायन् नापितं प्रेच्य-साषः। यथ छद्विस्थानानस्यमेषायमगात् इति अन्तं मधितारं ध्यायन्। पितरचावलोकयन् लगति। उप्णेन वाय खटकेनेधीति वायुं सनमा धारान् उपग्रेदकं सप्रेक्षमाणः। षायुं ध्यायन् छयोदिकपूर्णं कंमपात्रश्चायकोक्यम् छयोन याय रति मन्तं सपेत्। गोभिनः। 'दिसिणेन पाणिना प्रप भादाय दिविषां कपुष्णिकाम् छन्दयित भाष छन्दन्तु जीवसे

इति"। कंसपावाहि चिणेन पाणिना अप प्राद्य कुमारस्य दिचिणकपुणिका सुन्दयति सदियति। कं थिरः भौता-तपादिरचणेन पुष्णाति इति कपुण्णिका शिरस सभयपार्श्वस्थ-केशजिटिका उचते। उज्ञञ्च। "कपुणिकाऽभितः केशा सृद्धि" पद्मात् कपुच्छसमिति। गोभिसः। "विणोदेष्टोऽसीति षीड्म्बरं त्तर प्रेत्रेत घाद्र्यं वा"॥ षीडुम्बर ताम्नं तदलाभ दर्ण पर्योत्त विष्णोदेष्ट्रोऽसीति मन्त्रेण। स्रोषधे वायस्वैन-मिति सप्तदर्भिषञ्चनौर्दाचणाया कपुरिणकायामभिषिरीऽपा निद्धाति। त्रासादितदर्भाषञ्चलोमधात् सप्तपिञ्चलीग्रँदीत्वा दिचिणायां कपुणिकायाम् घोषधे वायसेनमिति मन्वेष खापयति। घभिशिरोऽगः शिरसोऽभिमुखाया जहु मूनाधी-ध्या द्रखर्ष.। गोभिसः। "ता वामेनाभिग्रद्धा द्विणपाणिना श्रोडुक्बरं चुर रहहीला दर्शवा निद्धाति संनग्नं धारयति । येन पूपा वहस्पतिरिति प्राश्चं प्रोहत्व चप्रिच्छन्दन् सक्तत् -यजुषा दिस्तू रागेम्"॥ येन पूपेतानेन मन्त्रेष वारवयं प्राञ्च ग्रागास खुर कपुष्णिकारेशे प्रोइति प्रेरयति। अपष्टिस्टन् केशच्छेटकुर्वन् एकवारं सन्तेण वारद्वयं तूण्णोम् भप्रच्छिन्द-विति चुरपचे। गोभिनः। "प्रयायसेन प्रच्छियानदुष्टे गोमये , निद्धाति"। अनन्तर सीष्ठ सुरण कपुणिका केशान् दर्भ-विञ्जलीसंहितान् कित्वा ताभिः सह द्वपगीमये निद्ध्यात्। गोभिनः। "पतयैवाष्ट्रता कपुच्छनम्"। पनयेवारता परी-पाद्या कपुच्छल संस्कृष्यांत् भवटस्योपरि उसत्रागरीऽवयवः कपुक्कनम्। गोभिनः। "एतयोत्तरा कपुष्टिकाम्"। एतया यक्तियया वालां कपृथ्यिकां क्रियात् । गोभिनः । ''उन्दन् प्रभृतिष्वेवाभिनिवर्शयेत्। क्रोदनादिकमा पुन: कुर्यात्"॥ सन्दोक्तदेने। सभाभ्या पाणिभ्या सूर्यान परिषद्धा अपेत्

चायुपं जमदमोरिति सूर्वानं कुमारस्य। एतयेवाइता सियाः स्त्यो सन्वेण तु द्वीमः। याद्यता प्रक्रियया तू ग्रीमनन्तरीकाः सर्वे सस्वारा सन्तवज्ञे भवति। "समन्त्रिका तु आर्थ्यं स्त्रीणामाहदश्यतः" इति मनुष्यनात्। त्र्णोभिताः क्रियाः स्तीयां विवाहस्त समन्तवां." इति याज्ञवस्कावचनाचा होमस्त मन्त्रेण मु शब्दयार्थे तेन द्वाह्यपाहस्य मन्त्रवदेव भव-तीसर्थः। गोभिनः। "उद्गानेशस्य कुणनी कार्यित यया गोव्रकुलकत्वम् उदक् उत्तरतः उत्स्य गला कुमारं कुशहीकारयन्ति नापितहस्तेन मुख्यन्ति यथा गोव्रकुना-चारस्तथा। राजमार्चग्छः । "प्राचीसुखः सौम्यमुखोऽपि भूता कुर्यात्ररः चीरमनुत्तरस्य."। इसगर्गः। "केप्रवमा-नर्सपुर पाटलिपुत पुरोमहिच्छवाम्।'दितिमदितिच सारता चौरविधी भवति कलाणम्"। "गोभिनः। यानडुई गोभये केयान् कला भारको गला निखनन्ति"। हपगोमये सर्वान् क्षेत्रान् चवस्थात्यारस्यं नीत्वा निखनन्ति वसुवधनादनियतः कर्नुकत्व स्तम्बे हैंके निद्धाति। इ इति निपातः। एके प्राचार्याः ब्रोचियवादिस्तस्वे निद्धाति तान् वैद्यान् प्रचिषः न्तीलये। ययाये गौदेचिया। ययायमुदीच यस्तममस् मद्राष्ट्राष्ट्रितिरोमादि वामदेश्यगानान्तं क्रमी समाध्येत् दिल्णां देया प्रधानकर्माणामित्यर्थः।

चयोपनयनम्। चत्र गोमिलः। "गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणः सुपनयत्। गर्भेकाटमेषु चित्रय गर्भद्दादमेषु वैभ्यम्। चाः पोडमादमाद्याच्यानतीतः कालो भवति चाद्दाविद्यात् चित्रः यम्य चाचतुर्वित्राद्देशस्य चत छार्षु पतितसाविद्योका भवन्ति। नेमानुपनयेयुनीभ्यापयेयुने एभिर्विवाद्ययेयु । गर्भवर्षम्हमं येषा वर्षाचा तानि वर्षाच गर्भाष्टमानि तेषु गर्भाष्टमेषु वर्षेः

भानं अध्यापन्यस्। चथापनायमाचायसभीपं नीयत येन कर्माणा तद्धनधनमिति कर्माणी नामधेयं तेन कर्माणा योजयेत्। "रुद्धोक्तकमाणा येत समोपं नीयते गुरीः। वालो षेदाय तद्योगात् बालस्योपनयं विदु." इति स्रते:। बापी-डिगादित्यभिविधावाद्। तथा च विष्णुधर्मीत्तरम्। "पोड-भाष्टो हि विप्रसा राजमासा हिविंगति:। विंगति: सचतुर्थी च वैख्य परिकीर्तिता। साविधी नातिवर्तत रात कही निवर्तते ॥ अत्र पोडग्रवर्षाणासुपमयमाङ्गता ग्रतीयते। "पतिना यस्य साविती दशवर्षाणि पश्च स। ब्राह्मणस्य विशेषिण तथा राजन्यवेष्ययोः ॥ प्रायस्ति भवेदेषां प्रोवाच षद्तां वरः" इति यमवचनेन तदनद्गता प्रतीयते। अनयी-र्गर्भजनागणनाभामविद्वता। तथा च माण्डयः। 'वत-यसविवाहे च वसरपरिगणनमाहराचार्याः। पाधानपूर्वमेके प्रस्ति पूर्वे सदान्ये तुर्। यतु हिनामामिखुपक्रस्य पैठौनसि-वयनम्।. "दादमधोडमविमितियदतीता। पवरदक्तासा भवन्तीति"। तहादगवर्षादापरि बाह्यपादीनां सहाव्याह्रति-भोमक्षमायिसायें षोड्यवर्षीपरि गुरुपायिससिति। सथा च बाइ लिखितो। "दात्यवान्द्रायचचरेत् गीपदानच कुर्यात् चान्द्रायणामतो भेन्वस्कं तन्म्सं वा साईदाविमतिः कार्यापयाः गोसूखं कार्यापय एकः मिलिया सर्हे वयी-विमितिकार्यापचा देयाः"। पिष्टमायरिकस्य निःस्प्य देशोपभवादिमा पतितमाविद्यौकस्य वा विषये तु सनुविष्यु । "रोपां दिलामां सावियो मानुष्ठेत यदाविधि। तांबारविद्या कोन सक्तान् ग्रयाविध्यपनापरीत्। सक्ते प्राकापत्रम्। सक्यागको धेनुवयं तम्मून्धं नवकार्यापणा वा देया: चहरा-प्राथिक्तान् प्रसाद नैतानिसादि। तत वद्ववदनं तस्तर्भ-

संस्थितं प्रायित्वदर्मनार्थम् । तथा च स्मृत्यत्वरम् । "व्रात्था-चार्यस्य भुक्षासं कच्छ्पादेन गुध्यति। यशोपनयते व्रात्यान् थिभि: सम्प्रै: स ग्रध्यति"॥ भुजवसभीमसत्यधिन्तामखोः। "खातौ प्रक्रधना खिमिनकरमे पौष्णेज्य चित्रा इरिष्वेन्दो तीय-पती भग दितिसते भाद्रध्ये सागरे। केन्द्रस्ये भगुजिऽद्विरः ग्राग्राभी चन्द्रेच तारे ग्राभे। कर्त्तेच्यं व्रतक्यों सङ्गलियी वारा: सितार्केकाकाः"॥ श्रदितिस्त उत्तरफल्गुनौ सागरः पृथीपाढा। दोपिकायाम्। "जीवार्केन्टूड्गुही हरिशयन-विद्यास्कर चीत्रस्थे साध्याये वेदवर्णाधिप दूष गुभदे चौरभे नादितो च। प्रकंग्रक्तार्केच्य वेन ने र्विमदनिविध प्रीक्ता पष्ठाष्टमेन्द्रं नी जीवास्तातिचार मितगुर्गादन काल-गुही व्रतं स्थात्"। रविमदनतिथिं सप्तमीवयीदभी पष्ठाष्टमेन्दुं समापेधया। प्रोक्ता त्यका क्षत्यचितामणी। "माघे द्रविण-शीलाट्यः फान्गुने च द्दव्रतः। चैत्रे भवति मेधावी वैगाखि कोजिदो भवेत्॥ च्येष्ठे गष्टननीतित्र त्रावादे कतुभाजनः। ग्रीपेखन्येषु राज्ञिः स्थानिधिष्ठ निशिष च व्रतम्" राजमार्तग्डे। ''पुनर्दसी छतो विमः पुनः सस्वारमर्हति"। आञ्चलायनः। "सद्गयने आपूर्यमाणे पत्ते कत्याणे नत्त्र चुडोपनयन-गी-दानविवासः। विवासः सार्वकानिक इत्येक्षं । श्रापूर्यमाणे पत्ते ग्रह्मपत्ते । वहगर्गः । "मृतिस्नाननध्यायान् सप्तमीश्व वयोदगीम्। पचयोमधिमामस्य दितीयां पश्विजयेत्"। न्त्रीपतिव्यवद्वारमसुचये। "कान्तिकस्याज्ञिनस्यापि फारगुना-पाटयोरिप । सम्मपसे हितीयायामनध्यायं विदुर्देशः." ॥ भुजवसः। "वैत्रक्षण्डितोग्राया तिस्वेवाष्टकासु स मार्गे च फान्गुने चैव पाषाटे कार्तिके तथा। यश्चग्रीमधिमामस्य दितीयां परिवर्जयेत् । नाकामतृष्टी सुर्वति व्रतदस्यग्रभ-

क्रियाम्" उपनयने उत्तरायणग्रक्षपचयीर्विधानात् कासि-कादौ क्रण्यच च हितीयाया निपेधः पुनःसंस्कारमहती-त्युत्तपायश्वित्तरूपीपनयनपरः। वैद्योपनयनपर्थ। तथा च गर्गः। "विप्रस्य चिवयस्यापि मौद्धौ स्याइचिणायने। दिचिणे य विशां कार्ये मानध्याये न सक्रमे। चनध्यायेऽपि कुर्वीत यस्य नैमित्तिकं भवेत्"। श्रिपना दक्षिणायनक्षणपचयोः समुचयः। नैमिसिकं प्रायस्वित्तरूपम्। चेत्रश्रक्तवतीया श्राषाद्यसारमी मन्तरादिलेन निषिषा वैयाखग्रस-खतीया युगादित्वेन निषिद्याः "षष्ठामश्चिष्मार्यो रिक्षासु महुदोषभाक्ष्ण । सामगानां कुजवारेऽप्युपनयनं शाखाधिपखात्। तथा च "शाखाधिपे बलिनि केन्द्रगतेऽथ चासिन् वारेऽस्य चौपनयनं कथित दिजानाम्। नौचस्थिते-ऽशिष्ट हरोऽच पराकिते वा कीचे सगाम्यनयनः स्मृतिकर्म-शीन:" अस्य भाषाधिपसा। सत्यचिक्तामणी। "जक्मोदये जनासुतारकासु सासिऽय वा जन्मिन जन्मभे वा। व्रतेन विप्रो न बहुशुतोऽपि विद्याविश्रेषैः प्रथितः पृथियाम्। श्रस्तं गते हैत्यगुरी गुरी वा ऋचेऽिय वा पापयुतेऽप्यनुति। व्रतीपनीती दिवसैः प्रणाशं प्रयाति देवैरपि राचितो यः"। छद्ये सम्ने व्रतेन उपनयनेन। गोभिसः। "यद इर्पेयन् माणवको भवति प्रागी-घेनं तरहभी जयन्ति कुशनीका रयन्या प्राथयन्य लंकु वैन्या इ-त्रेनवाससा समाच्छादयन्ति"। यद्धर्यस्मिन्दनि उपेप्यन् उपमयनं कारियध्यम् माणवक उद्यतो भवति। माणवकीऽन-धोतवदः। "धनृची साणवको ज्ञेय एन.क्षणस्गः स्मृतः। क्रगोरस्यः प्रोतः समरः यस उचते"। प्राक्पातः। तश "चतस्त्री घटिका प्रातरक्षीदय चचते" इति ब्रह्मयेवर्त्ती-सम्। अन्न घटिका दण्डः। "नियामां रजनीं माइस्वद्धाः-

दालचतुष्टयम्। नाडीनां तद्भे सन्धे दिवसादान्तसंत्रिते । प्रति तन्वेवोत्ते:। भोजयन्ति चौरादिकमिति शेष: तथा प ब्रह्मचारिकारके कर्णतर्भृतयह लिखितौ। "पयो यवाग्वा-मिच्चाद्वाराः क्रमयो दिजातीनाम्"। क्षयलीकारयन्ति मुण्डयन्ति प्राप्नावयन्ति स्रपयन्ति श्राइतेना सुद्तिन वाससा यन्यमाणेनाच्छादयन्ति परिधापयन्ति। अमैकवचनादध-रोयमेतत्। उत्तरीयन्तु उपरिष्टादिजनं वस्त्रते। सौमं शानवा द्वाद्वाणस्य कार्पासं चित्रयस्य शात्रिकं वैश्यस्य"। चुमा चतमी तस्या इदं शीमं तमरादि। मानं मनतन्तुभवं तद्भय ब्राह्मणस्य। गोभिसः। "ऐषेयरीरवाजानि ऋजि-नानि"। एन: क्रण्यस्य: क्र्यंदिस्य: भज: छाग: यथाक्रसं दिजानाभेतान्यजिनानि। गोभिनः। "मुम्नकामतास्यो-रसना."। मुम्बः शरः तास्नः श्रनस्तद्भवा रसमा मेखना तास्नी। तथा च मनुः। "मौस्नोबिष्टत्समा स्रच्या कार्याः विप्रस्य मेखला। चित्रयस्य च भीवेडिया वैश्वस्य ग्रमतान्तवी। सुष्त्रासाभेतु कर्त्तव्या कुत्रारमान्तक वस्वजै:। विष्टतात्रान्य-नेकेन विभि: पश्चभिरेष वा"। गोभिसः। "पार्णवेखा-म्बत्यदपद्राः"। पार्षः पासामः। सनुः। "ब्राह्मणो वैस्व-पानामी चिवयो बाटखादिरी। वैषवीहुम्बरी वैस्को दण्डा-नर्दन्ति धर्मातः"। रहेचे पार्णमात्रस्य द्वाद्यणे विधानात् प्रतिग्रहोषितं दण्डमिति मनुषचनान्तरे एकवचनत्रुतेरचैष-दण्डधारणं न तु सन्द निर्देशाहण्डदयधारणम्। मनुः "केगा-न्तिकी याद्यण्यदण्डः कार्यः प्रमाणतः। समाटमिनतो राजाः म्यामु नामान्तिको विग्नः। ऋजवस्ते तु मुर्वे स्युरव्रणाः भोम्यदर्भनाः। अनुद्देगकरा नृषां सत्वची नाम्बिद्धिताः"। पक्षाभे या सर्वाण सर्ववाम्। स्वस्य स्वयानासे सर्वाण

चौमादीनि सर्वेषां ब्राह्मणादीनाम्। गीमिलः। "पुरस्ता-काताया उपसिर्धानिक्यसमाहितो भवति। स्पष्टार्थमेतत्। गोभिलः। "प्राने व्रतपते इति छुत्वा पद्यादकेरदगरोषु दर्भेषु प्रामास्योऽवितिष्ठते। व्याष्ट्रितिभराष्ट्रिति चतुष्ट्ये धृते ग्रम् वितयतेण इति पञ्चाइती हुत्या आचार्यः पयादुरयेषु अग्रीषु पाद्मुख अर्द्धिस्तिष्ठेत्। धव इताचार्यः इत्येककर्मृकतादेव एव हुलातिष्ठेत्। होमकरणलानानाणां होमकतुराचार्यस्य भन्तपाठो न माणवक्षस्य। यत्र च ब्रह्मचारिणामुद्यारणं तत्र वद्याचर्यमागामिति वाचयतौति वचनाद्यने व्रतपते वतं षिषियामौति मन्त्रसिङ्घेषु ऋतिक्षानौयतानाणवकस्य मन्तरम्याद्पार्यना ब्रह्मचर्या नाचार्यस्य। तथा च। "यां वै काञ्चन ऋखिज चाश्रिषमायासते सा यजमानस्वैव" इति मरला। तम्र ऋ विक् यजमानपद्यीराचार्यमाणवक्षपरवे प्रमाणाभावात्। यतएव भद्दभाष्यम्। होमेन सहाचार्यः-सम्बन्धः कुतो इत्वाचार्योऽवितष्ठर्ते इति ज्ञा प्रख्ययोगात् मन्त्रन्तु माण्यको जपेत् कुतो मन्द्रस्तिङ्गात्। व्रतस्यरिया-भौत्याद्यसमुद्रवप्रयोगोऽस्ययानुपपद्यते। गोभिनः। "यन्तः रेणान्याचार्य्यामायवकोऽञ्जलिलतोऽभिमुख प्राचार्यः छदग-येषु दर्भेष ग्रन्याचार्ययोगेध्ये भाचार्याभिसुखः समवतिष्ठते इति योज्यम्। तस्य दिचिणतोऽवस्थाय मन्त्रवान् याद्मायो॰ उपामञ्जलिं पूर्यति उपरिष्टादाचार्यस्य तस्य भाषवकस्य दिचिषयां दिग्यवियति ब्राह्मणे। धीतवेदः सनिना चानं माणवकस्य पुरियला उपरिष्टात् परादाचार्यस्याञ्चलिम। गोभितः। "प्रेच्यमाणा अपत्यागन्या समगमादौति"। का प्रेह्मसाणः कोअपति। माणवनं प्रेह्ममाण चाचार्यं भागत्वा समग्मादीति मन्त्र सपति। सिसिधवरतादयमिति मन्त-

सिद्वात्। गोभितः। 'भाषाय्यो ब्रह्मवय्यमागाभिति वाचयति"। चाचार्य्योमाणवकं पाठयतीत्यर्थः। कीनामा-भौति नामधेयं पृच्छति तस्याचार्योऽभिषादनौयम्। नामधेयं कल्पियिता देवताययं मचत्राययं गोत्राययं या इत्येके। यभिवादनोयम् यभिवादननिभिष्तं नाम कल्पियला तदानी-मिवाचार्यः कोनामाभीति एक्छेत्। तच देवतात्रयं क्षणाः दिनचवात्रयं भतपरचक्रोक्षजनाक्षीननचवपादात् क्रियम्। गोवात्रयं शाण्डित्यादि। गोमितः। "उत्स्वापामञ्जलि-राचार्यो दिचिषेन पाणिना दिचिषं साङ्गष्ठं गुह्वाति। देवस्य ते मवितुः प्रभवेऽध्विनोर्वाहुम्यां पुर्णो इस्ताम्यांऽस्तं स्टक्का-स्यसी" इति जलाञ्चलिं त्यका गुर्द् चिणेन ब्रह्मचारिद चिण-पाणिमङ्गेन सद रह्साति देवस्य हेति सन्वेण। श्रमाविति सम्बोधनविभक्त्या माणवकस्य नाम गरह्योयात् रदानीं गरहीत-माणवक इस्तम्याचार्थस्या स्निस्ते इस्तमग्रही दिति मन्तपाठे प्रमाणं गोभिले नाम्ति चन्छव वोध्यम्। गोभिलः। "बयेनं प्रदक्षिणमावर्त्तेयति स्थ्यस्याष्ट्रतमखावतं वासाविति। तदे-यस्यमेवेनं प्रत्यदा्षं सन्तं प्रादिच्छित प्राद्धाः करोति चुर्यस्येति मन्त्रेण। चत्राप्यसावित्यत्र सम्बोधनान्तनामयसः। टिं चिणेन पाणिना टिंचिणसंशसवस्युश्य चनन्ति ईतं नाभिदेश-मभिरप्रगेत् प्रापानां चन्यिरसोति प्रदक्षिणावर्ते माणवके प्राद्याविस्थिते चाचार्योऽस्य दिचणमंगं स्पृष्टा चयविहितां माभि प्राणामामिति मन्वेण स्प्रेमेत्। स्रवाप्यसुमिति पदस्थाने दितौयान्तं नाम प्रयोज्यम्। गोभिनः। "उत्स्प्य गाभिदेगमभुव''। इति जपेदिति वाक्यग्रेपः। उत्सूष्य करं मर्पतेग्रियर्थलात् सर्द्वं करसुत्स्य कर्षं भीला नाभिदेगं समीपायां दितीया नामिदेशसमीप एव छटरे करमवस्थाप्या-

भेष इति जपेत्। क्षतो मन्द्रसिङ्गत् अभुवग्रव्देन जठरोऽसिन रचते। तसावाभेरतसम्य करं नाभिदेशसभीप एव उदरं जिठरामिखानमालस्या भुव इति अपेत्। इति भट्टमाणद्रग-नात् वायुदेवता इति भवदेवगुणविष्णूक्तं निरस्तम् अदवविभः तिथुत्पस्या धभुव इति समाख्या। श्रवाध्यमुमिति पदस्याने दितोयान्तं नाम प्रयोज्यम् उत्स्यः हृदयदेशं स्थान् इति। जिठगदुत्स्य ऊर्द्वं नौखा करं इदयमानभ्य क्षशन् इति जिपेत्। क्षयनशब्देन इदय एव युक्षोयत उचाते ऋती इदय-देशमानस्य नपतीति तदिधष्ठाद्वत्वात् पुरुषस्य। तथा च श्रुति:। "स एवेष त्रास्वादयतौति"। त्रवाप्यसुमिति पदधाने हिती-यान्तं नाम प्रयोख्यम्। दक्षिणेन पाणिमा दक्षिणमंश्रमा-सभ्य प्रजापतये ला परिददास्यमाविति। श्रश्र माणवकस्येति येषः। आन्ध्य स्पृष्टा प्रजापयेलेति जपेत्। भसाविति स्थाने सम्बोधनान्तनामग्रहणम्। गोमिनः। "मध्येन मर्था देवाय त्वा सविवे परिददास्यसाविति वामेन पाणिना ब्रह्म-चारिणः सव्यम्मा स्ष्टद्वा देवायत्वेति जपेत्। श्रवासाविति स्थानं सस्बोधनान्त नाम प्रयोज्यम्। गीभिनः! "सर्थेनं संप्रेषयति ब्रह्मश्रार्थमाविति"। समिधमाधिष्ठ श्रापोयानं कमो कुर मा दिवास्व भोरित्यपि सर्वव श्रोम्वार्टमिति च ब्र्यात्। "यदुदाति चम्त्रशिते मगिषमाद्धाति तद्दिमा-दिश्वते यच्च मायं प्रातः समिधमाधे हिण द्ति युतावृत्तं तसाम्राव तदंशीमधाते पुरस्ताशीपरिष्टाश्चाद्धिः परिदर्शांत इति तद्दिमादिश्वते मायं प्रातभीजनयोरिष पुरस्ताशोपिर-ष्टाच पृथद्मन्ताभ्यामापीयानं हे यद्मचारितिति। मन्तो त् शास्त्रात्यादयो। चमृतोपस्तरणममि साहिति पुरस्तात् चमृतापिधानमधि खाहिति उपरिष्टात् द्रित यदादिधित कर्म

तत्तत् कृतं मा दिवासाणीः दिवा स्वप्नमाकाषीतिसर्वः। माणवकः सर्वेश्वेव प्रेष्येषु वाद्मोमिति वा प्रतिवचनं द्यात्। तथा च छत्दीगपरि शष्टम्। "बद्धचारिसमादिष्टे गुरुषा वितक्षीणि। वादमोमिति वा ब्रुगात् तत्त्रयेवानुपालयन्"। गोभिनः। "उद्गानेदत्ससा प्रागाचार्य उपविश्वति उदमः गेषु दर्भेषु" सप्टार्थमेतत्। प्रसद्माणवको दचिषनान्वको र्शिमुखमाचायेमुदगग्रेषु दर्भेषु प्रत्यक्षु को माणवकी दश्चिष-जातु यज्ञं तं भूमी यस्य स याचार्याभिमुखं यदा स्वातवा उपविमति इति पूर्वेणान्ययः। उत्तरत एवानोः मधेन वि:पदिचिण सुच्छमेखना परिष्ठरन् वाचयति। प्रयं दुवतं परिवाधमाना ऋतस्य गोप्चोति च। प्रध तथैवीपविष्ट भाषवकम् इयं दुरुत्तं परिवाधमाना इति ऋतस्य गोप्वीति च मन्द्रहर्य कटिदेशस्य मोञ्जमेखनां वारवय परिधापयन् वाचयति। भनपरिधानस्यावत्ताविष सत्यां सक्षदेव मन्त्रं पाठः। एकद्रव्ये कमाष्ट्रतौ सक्तदेव मन्द्रवाचनं क्रिकित वचनात्। सुञ्जालाभे कुरीनेति प्रागुत्त रहज्ञानुज्ञमणि। यश्रीवधौतमसिष्येव समये पश्चिषयेत्। मेखनानन्तरं कार्योससुसरीयं स्थात् विप्रस्थोदेष्ठत विवृद्धित मन्तः। पवित्रं थासे प्रयच्छतीति जानूकर्णात्। यद्योपवीतिन कुर्व्वादिति मांख्ययनाचा "मेखनामजिनं दण्डमुपधीतं कमण्डसुम्। चमु माम्य विनष्टानि निग्रह्मौतान्यानि मन्त्रवस्णा सति मनुवसनेन नोपदौताजिनयोर्पि धार्षे समन्त्रतावधारणा-दिग्द से तदनुषदेगात् गाखान्तराषुपाददात्। यश्चीपवीत-समि यञ्जय लोपधीतेनोपनयासि इति सहसायम्। यसिवन-वावप्रदे चित्रमुत्तरीयभित्यापन्तस्यः। चित्रनम् कृष्णुमार-यमं प्रागुत्तत्वात्। प्रजिनयस्यम्बस्य प्रोम् सिवस यस्

र्वरणं बनीयसोजी यशस्ति स्वविरं सम्बमनाइतस्य वसनं अविष्णुपवीतं वाद्यजिन द्वेयमिति तैत्रिशयशाखाप्रितो द्रष्ट्य इति भद्दभाष्यम्। एवच दर्जाजिनोपवौतानि मेखला-र्षिव धारयेत् इति याज्ञवस्कावचनं द्रव्यधारणविधायकम्। एतदनत्तरमाचमनं कुर्यात्। यज्ञोपवीतिना पाचान्तोदकेन क्षत्यिमिति गोभिलस्वात् याचामेदिखनुष्टतौ "ग्रिखां वहा विसत्वा हे निर्णिते वाससी ग्रमे। तूणीमावा समादाय नो गच्छन्न विलोकयन्"॥ इति देवलवचनाच्च। इरिग्रामा-रिप्येवम्। गोभितः। अयोपमौद्रत्यधीहिभीः सावितीं मे भवानतुत्रवीत्विति"। जनस्यं तथैवीपदिष्टी माणवक छप-मोदति सतास्त्रनिषुट बाचार्यं गतचत्तुर्यसमो भवति। अधोदि मीरिलादि मन्त्रेण अधोदि पध्यापय सावित्री सविद्धदेवताकां गायबीम्। भोरित्याचार्य्य सञ्जीधनम्। भद्रभाष्यद्रधिवम्। तसा सन्बाह्य पच्छ. अर्डेस्य: ऋक्य: इति। तस्मै माणवकाय चन्दा इ चनुब्र्यात् पूर्वे तावत् पच्छः पादमः ततोऽईचेंगः तत ऋक्यः। ऋक्य इत्यव सर्वामिति पाठ: सरमायाम्। सञ्चाचाञ्चतीय विक्रताः बोङ्गारान्ताः विक्रता. पृथक्कता: चोक्कारान्ता इत्यव भूरोमित भट्ट-भाष्यम्। भूरिति भवदेवभद्रः। छभयमतयाही वीरेखरस्तु श्रोम्भूरोमिति शन्ता श्रवसानभूताः। वार्श्वमस्मै दण्ड प्रयच्छन् वाचयति सुथव सुथुवस माकुर्विति वार्से पलाप्रादि-भव दण्ड माणवकाय ददत् सुख्येति पाउयति । भय भैद्य-चरति। षय शब्दसूष्णोमादित्योपस्थानमग्निपदिचणञ्च श्रम्ति। पितिग्रहोभित दण्डमुपस्यापय मस्करम्। पद्चिष परीत्याग्निं चरेहेंच्यं यथाविधि"॥ इति अनुवसमात्। भिन्नासमू इं भैचा तश्राति पावहति रत्ययः। मात्रभवाषे

ये चान्ये सुद्वदो यावत्यो वा समिदिताः स्यः। याचते दत्यधारार्यम्। सुद्ददि सिम्बद्दये स्वसादो तथा च मनुः "मातरं वा खसारं या मातुर्वा भगिनीं निजाम्। भिर्धात भिचां प्रयमां याचेनं नावमान्येत्"॥ सन्दिश्वितास्तह् ग्रस्थाः न तु मित्ररह गला। भवति भिचां देहोति ब्राह्मणभिचा-प्रयोगः। तथा च सनुः। "भवत् पूर्वे चरेत् भैक्षमुपयौती दिनोत्तमः। भवमध्यन्तु राजन्यो वैग्यस्तु भवदुत्तरम् ॥ पादि-सधावमानेषु सवच्छन्दोपनचिता। ब्राह्मणचित्रविगां भैचाचर्या ययाक्रमम्"॥ इति याज्ञयस्क्यवचनाञ्च। प्राचार्याय भेष्य प्रश्विद्यमा वेटयमि समर्पयति सोरिति। पाचार्याय निवेदा प्रति रहस्रोयादिति रहस्रात्सरवचनात्। सेच्य सीरिति निषेदनमन्तः। भेष्यस्य सस्कारार्यत्वात् प्राधायायि निवेद्य म्यय तदेव भुद्धोत। तयाच मनुः "ममाञ्चलाय तक्रेष्णं यावदसममायया । निवेदा गुरवेत्रियोयात् पाचार्यः प्रायाः मा श्रीष."। पाषायारा साणवकाय सेषा प्रदाय कर्मसेषं ममाप्रयेत् इति तश मापित्रमा चह्हीमादिवस्थमास्त्रभः चन्द्रात् तिष्ठत्वचः श्रीयं वाग्यतः। साचयकीऽचः श्रेयं भयत-वागास्ते। चस्त्रिमितं ममिषताद्वधाति चग्नये ममिषत्रप्राय-शिति। प्रम्त गर्ने गुर्व्य मिश्च प्रादेशसाद्धमन्ये समिध-सरापंक्तित्वनेनाटधाति रवमेवातः वधानासुतिः। ततयाप्याः

मोवनामनी पोचाभिवादावार्यमभिवादयेत्। उभयव सायं प्रातः। यभिवाद्यस्निमित्यन्वयः। विरावसवारसवणायौ भवति । सप्टार्थम् । तस्यान्ते साविवचरः । तस्य छपनयनरूप-वतस्य न तु सन्निधानाचिरावस्य प्रयक्तिप्रस्थ प्रधानेन सह सम्बन्धदर्भनात्। अन्यया तस्यान्त द्रत्यवचनीय स्वात्। षस्यान्त दति वर्त्तं युक्तम्। सद्दभार्ष्येऽप्योवम्। तत्यतुर्घे-उष्टानि साविवचर्रिति भवदेवभट्टोतां चतुर्घेऽक्ति साविवचरः कार्य इति मरलोक्षच हैयम्। सवितास्य देवता इति साविवः द्यं दक्षिणा स्वनयनकर्मणः न तु माविवधरोः प्रधानस्य उपमयनकर्माणो दक्षिणान्तरानिभधानात्। यतएव उपमय-मान्तरमाचार्याय वरो दचिणा इति ग्रह्मान्तरमिति सरला। वरीगी:। तथा चोक्षम्। "गोविशिष्टतमा सोके बेदेचपि निगम्यते। न ततीऽन्यद्वरी यसात्त्रसमाहीर्वर उचाते"॥ इदामीमुपमयमासिरिज्ञवसाचरणादन्यद्वादि न सिप्तिसम्। अवदेवभट्टेनापि न निष्तितम्। गीभिनः। "मर्वेषापाप तदगकं तेनारात् मत्यसुपागामिति" विशिषः। सर्वत मर्वेषां व्रतामामले पर्यं मन्त्रे विग्रेपः। यच चरिपामि तवाचार्यः मिति। यव तक्क केयमित्यव तदमकमिति। यस तेन देशः समिधामि तव तेमारात् समिधमिति यव उपैमीति तथ स्यागासिति। कर्यक्रमस्यः स्यन्यनस्यासे साविषः चर्चीमः। ततः सिष्टिक्रदोमः। प्राक्षिष्टिहदावाप एति स्वात्। तत्रीहाने यतपति यतमचापं तत्री प्रवर्गीम तद्यार्थं तिनारात् समिधमदमनृतात् मत्यमुपागां साईस्वेवमुद्धाः श्रोमः क्रमसमामी दिचिया गौदानमिति सहसायम्। एतेन यदा-चारियां सपमार्थं न शोगो ययनामावात्। सारानामामा

घोमदेवत इत्यादोनां घोमदर्गनिमित सरलोक्तं हैयम्। अमे व्रतपते इति इत्या पयादुदगग्रेषु गर्भेषु प्रागाचार्योऽवितष्ठते इति प्रागुक्तस्वे अमे व्रतपते इत्यादिमन्त्रस्तु चरिष्यामौत्यादि-पदस्थाने अचार्पमित्यादिपदोद्यमावोक्तेन घोमादेः प्राप्तेः। तक्षतेऽप्यचार्पमित्यस्य ब्रह्मचारिपाठवत् पूर्ववापि चरिष्या-मौति मन्त्रसिद्धसार्थकत्वाय ब्रह्मचारिपाठी युक्तः। एवचाम्ने व्रतपते व्रतमचार्पमित्यादिघोमः समावर्त्तनमध्ये भवदेवभद्दोक्तो न युक्तः। व्रतचरिष्यामीत्यारक्षवत् व्रतमचार्षमित्यस्यापि व्रतसमापक्षत्वे तस्यैवान्तताया एव युक्तत्वात्।

चय समावर्शनम्। च्योतिपेः "भौमभानुजयोवरि मचते च त्रतोदिते। ताराचन्द्रविश्वडी च समावर्तनमिष्यते"। गोभितः। "यद्याप्तवनम्"। यद व्रतानन्तरमाप्तवनं स्थानं भवति। त्राचार्थ्यग्टहाटुत्तरस्यां पूर्वस्यां वा स्नानार्धमाष्ट्रतं सानं कुर्यात्। चय पागग्रेषु दर्भेषु उदगाचार्यं उपविद्यति तवाहते उदक् उदद्यायः प्राक् ब्रह्मचार्य्दगग्रेषु दर्भेषु। प्राक् प्राद्या खपविश्वतीत्यन्वयः। सर्वीपिधिविर्फाण्डाभि-रद्विगैत्यवतीभिः गौतीणाभिराचार्व्याऽभिषिचेत्। सर्वीपधयय "द्रीष्ट्रयः भालयो सुद्रा गोधूमाः सर्पपास्तिनाः। यवायोषधयः सप्त विषदोष्ठान्त धारिताः"॥ इति छन्दोगपरिग्रिष्टोन्नास्ताभिः महया चापो विकाण्डा विपक्षा उच्चौकतास्ताः सर्वोपधि-विपाण्डामाधिगेश्वतीभियन्दनादिगत्वद्रययुक्षाभिः गीतोः प्याभिः श्रीतोदकमित्रिताभिरिति भट्टभाष्यम्। स्वयभिव तु मन्द्रवर्षी भवति। इव गब्द एवार्ये। स्वयभव ब्रह्मचारी पालानमभिषिद्येत् पाचार्यकर्त्तकाभिषेकस्तु परमतो यतौ सन्तर्या भवन्ति। सन्तवर्षीऽभिषेकसन्त्रतिष्ठं तच तेनाद-

भामिधिचामि इति तेन मामिभिधिचितमिति च। तहिधि-माष्ठ येऽस्वरन्तरम्यः प्रविष्टा द्रत्यपामञ्जलिमवसिञ्चति। येऽप्खरन्तरनय इति मन्वेण कासामपामञ्जलिं बद्वाचारी चर्वासच्चित्र। क्षाभूमी कुतः अवसिच्चित वचनात्। तमान्तः श्वाभितान् स्त्रामौति यदपामिति मन्त्रस्याभितान् स्त्रामौति मलानिष्ट्रद्वयाच सर्वाधारलेन प्राप्तायां भूमौ त्यज्ञित। यद्पां - घोरं यदपा क्रारं यदपामशान्तिमिति च। अपामञ्जलिमव-सिखतीति वर्त्तते चकारात्। यो रोचनस्तिम रहसामौत्या-त्मानसभिषिचिति। प्रक्षतानामपामञ्जलिना यो रोचन इति मन्त्रेष ब्रह्मचारी श्रात्मानमभिषश्चित। श्रीम् यश्चमे तेजसे द्ति च । यात्मानमभिषिञ्चतीति वर्त्तते । तूर्णी चतुर्यम् । बाक्षानमभिष्यवोति वर्तते। चभिषेकः शिरसिकर्मथः तिष्ठेत उदान् सामग्रीष्टिभिशियोतत् प्रभृतिमन्तेष । पाचार्य-समीपाद्याय उदाजिलेतत् प्रमृतिमन्तेण मा हिंसीशिलम्त-मस्त्रेषादित्यमुतिष्ठेत उपायान्वेष चेत्यातानेपदम्। मेखना-सवम् खते छदुत्तमं वक्षमिति चवमुञ्जते चधस्तादवतारयति न्नवग्रव्हो । ब्राह्मणान् भोजयिता स्वयं भुक्का क्रियम्य रोमनखानि वापयतौ शिक्षावर्जम्। भोजिविला ख्यं भुक्षा मापितेन सुख्यीत। यत्र शिखायर्जिमिति वच-नात प्राक्त समिषां वपनिमिति दर्शयति। सक्तव। समिषां वपनं कार्यमास्रामात् ब्रह्मचारिषामिति। स्रात्वासङ्खा-इते वामसी परिधाय स्त्रजमावधीत औरसि मयि रमस्वेति। चलहुत्य कुग्डलादिनामानं योजयिता पाइते। "ईपहोतं नव ग्राप्तं सद्यं यव धारितम्। प्राइतं तदिनानीयात् सर्वक्रमसु पावनम् ॥ इति विधिष्ठोत्तस्य चरे पेयत् स्टाम्।

न धारितं न परिधानादिक्षतम्। सर्जं यधितपृष्यं प्रविभौत शिरशीत ग्रेय:। योरसीति सन्तेष नैवीखे नियतं सामि त्युपानदी। अवभीतेत्यनुवर्तते। उपानदी चर्मपाद्के यीग्यत्वात् पाटयोः गन्धवेरिमोति मन्त्रेण वैणवं दश्कःं ग्टह्माति वैषव वंशप्रभव गन्धवीरिमोति सन्तेष । आचार्यं सपरिषत्-कमभ्येत्वाचार्यपरिषदमौद्यतो यचमित चत्तुषः प्रियो वीभूयाः समिति। सपरिपक्ते शिषादिसभासहितम् अभ्येत्याभिः सुख्येन गत्वाचार्यं परिपद्धचते यचिमिति मन्तेष । उपी-पविद्य सुर्यान् पाणान् सस्प्रान् भोष्ठापिधानानकु बौति छपाचार्यसमीपे मुख्यान् प्राणान् सुखप्रभवान् वायून् संस्थान् चातकः। योष्ठापिधानमिति सन्त्रं जपेत्। यत्नैनमाचार्य्याः S हैं येत् प्रवावसरे एव सःतक विवाही सावराहण विधिनाऽर्च-येत्। तदशक्षी गन्धप्रयास्याम्। गोष्ठक्ष रथस्यकस्य पचमौक्वरवाक्रूराभिम्येत्। यनस्पतिविष्टद्वोदि भूया दति। यचरो चन्ने। क्वरंरधिकस्थानं वाक्त्र रधरंखेल्ययः। वनः सातीति सन्वेषाभिस्येष्। सम्मेत्। सास्या ते जयतु जिलानौलातिष्ठति। रथमारुध पास्या ते जयतु जैला-नौति वनस्रते इत्यादि मन्त्रस्य चतुर्यपादेनातिष्ठांत छपविग्रति प्राग्वा उद्याभिप्रयाय प्रदक्षिणमाष्ट्रत्या उपयाति। तेन रघेन मासायो वा प्रयाय प्रकर्षेण गत्वा उपयाति साचार्यसमीप-मागच्छति। उपयातायाध्यैमिति को इनौयाः। उपयाता-याचार्यंसभीपसागतायाध्ये देयभिति कोइनोया पाचार्या पाइ:। यथाभावेऽवि अन्ववाठाचारः चक्करणे तराष्ट्रमादाः ववचातादिवत्। यस्य कर्माणः समावसेनसंस्रावि। णानुमतः साला ममावर्त्ती ययाविधि। एदहेत दिनी भाष्यां सवर्षां सत्तवान्यान्य इति सन्त्रोः। स्पष्टं गोनकवादि-कायाम्। "क्वीत इयमवेत समावक्त रज्ञकम्"।

चय नवरर हप्रवेशकर्म। च्योतिषे। "च्येष्ठापुनर्वसु युतं ग्रहारमोदितच यत्। तत् सर्वं योजयेहेशमपवेग्रे दैवचि-म्तकः"। ग्रहारकी सस्यपुराणम्। "चन्द्रादित्यवलं लब्धा लानं शुभनिरौचितम्। स्तम्बोच्छायादिकर्त्तव्यमन्यत्र परि-वर्जयेत्। अधिनौरोष्टिणौसूनमुत्तरात्रयसैन्दवम्। खाती-इस्तान्राधा च ग्टहारको प्रयस्ति। वज्रव्याधातश्लो च ध्यतौपातातिमग्डयोः। विष्कुत्भगग्ड परिघवर्तं योगेष कारयेत्। पादित्यभौमवर्जन्तु सर्वे वाराः ग्रभावद्याः"। राजमात्तेण्डः। "मादित्येज्यभरोहिणौस्गित्रारिस्त्राधनिष्ठो-त्तरा। वौर्णं विष्णुगतानुराधपवनेः ग्रुष्टैः सुतारान्वितैः। सीम्यानां दिवसेऽय पापरहिते योगे विशिक्ते तियौ। विष्टि-स्यक्षदिने वदन्ति सुनयो विश्मादिकार्यं ग्रभम्"। ज्योतिये। न्द्रप्रं विद्याखामदितिच यकं भुजक्षमन्त्रिच विद्याय गेहम। ग्राम्यख्तानिक्षरमन्दिरेषु कुर्याच्छूभैर्युक्तनिरीचितेषु। कत्वा-यतो दिनवरानय पूर्णेकुमां दध्यचताम्नफलपुप्पदन्तोपश्रोभम्। द्वा हिर्ण्यवसर्गान तथा हिजेभ्यो मङ्गल्यगान्तिनलयं निलय विशेष्य"। विष्णुधर्मोत्तरे। "गोपुच्छविन्यस्तकरः प्रविशेच रटह रटहो। चनुसिप्तः सुखौ सम्बो सपद्भोकस्तथेव च"। गीभिनः। "मध्येऽग्निमुपसमाधाय क्रप्णेन गवा यजीताजीन वा खेतिन मपायमानां पायसेन वा। गब्ये स्टइस्य उपसमाधाय कुर्याण्डकोक्तविधिनानिं स्थापयिता। पायसेन वा केवलेन रसमाध्य मांसं पायसमिति संय्याष्ट्राहौतं रहिता जुहुयात्। वास्तोसते इति प्रयमा वामदेव्यद्याः सदाबाह्नतयः प्रजापतये रत्युसरीया रसं ष्टतं सांसं संय्य भिय्यविता विवनपायसं वा चष्टग्रहौत' विवनमेचपेनाष्ट्रवा-रान् ग्रहौला वाम्तोरपते प्रतिजानौति सन्तेण प्रथमाइति:!

वामदेखर्द्धसिससामिसिसः महाव्याद्वतिभि-सिसस्याभि-स्तिम, महाव्याष्ट्रतिभिस्तिमः प्रजापत्रकः इत्येका प्रथमीतः रीया इति प्राप्तिनिदाधम्। तत्र शब्दोऽप्यत देवताषीमः मन्त्रेभ्यो द्वेयाः। यावत्यस्तास्तावतीवृद्ध्यं निर्वापः ताच भाषास्य वास्तीस्यतिः। वामदेव्यर्षामिनः मशब्बक्रतीनाम्निः वायुस्याध्याद्वतीनास सर्वेदामाय्येव प्रजापतिः। "बन्नि-वीयुक्तयास्यो ष्ट्रस्पतिरपांपतिः। इन्द्रस विक्षेदेवास देवताः सभुदाष्ट्रताः" इति संवर्षवचनात्। एतेन सदाव्याद्वतीनां प्रिध्यादि वाचकत्वात्। प्रविष्याचादिवता इति भूस्वभिन-स्वास्तरा इति च सरकादर्भनात् भवदेवभद्देनापि यत् भूस्वा-युष्टमित्यादि लिखितं तरियम्। तस्येव स्थानाकारे मरा-घाष्ट्रतिषोमिनिषने चम्सादीमां देवताल्यमिति शिखनात् प्रशापतिस्त्रा एष । सूत्रे केवन पायसपत्रे च भोम् वास्ती-सत्ये वायुष्टं निर्वपामीति द्रीज्ञादिकमादाय एवमिन्द्राय इति विभि:। अग्नये वायवे सूर्याय प्रजापतये इत्यष्टी निर्वापाः। ततः। सिष्ठपरी पृतस्त्री दस्ता मेच्योनाष्टी प्रधानशोमाः। श्रेषं खानीपाकाव्याच्या वसीन् हरेत्। , पदिचय प्रतिदिशसवान्तरदेशेषानुपूर्वेण व्यतिहरन्। हुलेति क्रमप्रामेरप्यानन्तर्यार्थम्। तेन प्रधानाइतौडु त्वा स्त्रिष्टक्षड्-त्वैव वन्नौन् हरेत् हुतशिषेणेव तदमावे पायसेन पतिदिश सर्वास दिच क्रमेणाव्यवधान सुवैन्। यदि सुख्यचतुरिंदु दखा विदिन्न दीयते तदा व्यवधानता स्यात्। इन्द्रायिति पुरस्तात् वायवे दलवाम्तादेशे यमायेति दचिषतः विद्यस्य प्रसमान्तरदेशे वर्षाधिति पदात् सहाराजायेत्ववान्तरदेशे सीमायेत्वुत्तरतः महेन्द्रायेत्ववान्तरदेवे वासुक्षये इत्वधसात् कड़ें नमो बद्दाणे इति दिविवनीन् इरेदिति पूर्वस्त्रेषान्वयः।

चन्यत् सगमम्। नमस्तारेष वलीन् दद्यात् स च मस्तान्ते प्रयोज्यः विद्यस्य स्त्यत्र यणां कुर्य्यात् "असुष्टमे नम इत्येवं विद्यानं विधीयते। विद्यानप्रदानार्थं नमस्तारः क्षतो यतः। स्वधाकारः वितृणान्तु सन्तकारो नृणां यतः। स्वधाकारेष् विनयेत् विद्यानतः सदां । इति क्रन्दोगपरिधिष्टात्। चधस्तान्तीचप्रदेशे। दिवि चाकाशे। "विक्षेभ्यसैव देवेभ्यो विस्ताकाश उत्चिपत्"। असस्तु चिनस्यापनादि प्रधान- द्यानात् कत्वा वलीन् सरेत्। ततः स्विष्टिक्षदादि वामदेश्यन् गानान्तं क्षत्वा दिच्यां द्यात् इति।

ब्रथ ग्रहयद्भ:। दोपिकायाम्। "ग्रमग्रहाकवारेषु सुटु-श्चिमभ्वेषु च। ग्रभराशिविक्तनपु श्रभं शान्तिकपौष्टिकम् । सद्गणः चिवानुराधा सगशारी रेवत्यः। चिप्रगणे सध्गणः। पुष्याधिष्ठस्ताभुवगणी रोष्टिणुत्तरावयम्। "गोषरे वा विसाने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः। पूजयेत्तान् प्रयत्नेन पूजिताः स्यः ग्रभावष्ठाः"। गोचरे स्वराध्यपेषया यदा कदापि। विस्तर्ने लक्षनाने स्चका नतु रिष्टकारकाः। तेन दुष्टग्रहस्चनीयदोपो-पश्चमनं फलम्। मव्यपुराणे। "उत्सवानन्दमन्तानयश्चीहाहादि सङ्खी। मातरः प्रथमं पूच्याः पितरस्तदनस्तरम्। ततो माता-भद्दानाञ्च विश्वदेवास्तयेव च"। नान्दीमुखे वारादिदोधो नास्ति। "नान्दीमुखे पित्रयाचे मक्तान्यां घडण्डये। युगाद्यांटि निमित्तेषु न वारतिधिदूपणम्" रति सत्यव्यवस्थात्। भव शूद्रयायधिकारः। स्मानं शूद्रः समाधरदिति वसनात् प्रयासितेन प्रतिनिधिनापारमः कर्त्यः। "यौतं कर्म खय कुर्यादचोऽपि सार्नमाचरत्। भगको योतमधनाः क्ष्यादाचारमन्ततः"। इति यातातणीयात्। यन्तत एप-क्रमात् परतः। यात्रवस्याः। "योकामः यान्तिकामो वा

ग्रहयञ्चं प्रमाचरेत्। हृद्यायुः पृष्टिकामी वा तथैवाभिचरः त्रिषा सूर्यः सीमी महीपुत्रः सोमपुत्री हहस्पतिः। शुत्राः श्रनेयरो राष्टुः केतुचेति ग्रष्टाः स्नृताः। तास्त्रकात् स्फाटिकाः द्रज्ञचन्दमात् खर्णकादुभौ। रजतादयसः सोसात् कांस्यात् कार्याप्रदाः क्रमात्। खेर्वर्णेवी पटे सेख्या गत्येर्मण्डलकेषु वा। यद्यावर्णे प्रदेयानि वामांसि कुसुमानि च। गन्धाच वस्रयसैव धूर्वो देय: सगुगगुतु:। कर्तव्या भन्दवन्तस चरवः प्रतिदेवतम्। पाष्ठप्टेन इसं देवा याग्निर्मू द्वीदिः काकृत्। **उद्द**ध्यस्ति च ऋवी ययासंख्यं प्रक्रीतिताः। वृहस्रतेऽति॰ यदर्थस्ययेषाचात् परिश्वतः। शको देवौ तथा काण्डात् केतुं क्षविति क्रमात्। चर्कः पसागः खदिरस्वपामागीऽय एकेकस्याष्ट्रगतमष्टाविंगतिरव वा। दीतव्या दिधमिपियां दक्षा चीरेण वा युताः। गुडीदनं पायमच डविषां चीर-पष्टिकम्। दध्योदनं हिवसूणं मांमं चित्रान्नमेव च। ददादु चहक्रमाचेद हिजेम्यो भोजन वुष:। श्रांकतो वा यथानामं धत्कत्य विधिपूर्वेकम्। धेनुः शहस्तयानड्वान् ईमवासो धयम्तया। क्षणा गौरायमं छाग एता वैद्चिणा क्रमात्। यस यस सदा दुस्य: स तं यंद्रेन पूत्रयेत्। ब्रह्मवैपां वरो दत्तः पूजिताः पूजियथय। ,यद्वाधीना नरेन्द्राणामुच्छायः पतमानि च। भावाभाषी च जगतम्तसात् पूज्यतमा यहा."। भामिधमीदारा ऐदिकानिष्टनिष्ट्यात्तः। भाम्यर्थयामी मिलि-म्ब्यदिष्यिष कार्यः। "नैमित्तिकानि कार्यानि निपतिति ययायया। तयातयेव कार्याणि न कालम्तु विधोयतेण इति दच व च नात्। ने मिसिकानि काम्यानीति समानाधिकरण्-मिदम्। भरदो.स्यचाधिदु.स्वप्रादिनिमित्व।सैमितिकानि

तच्छान्तिपानकात्वात् काम्यानि । भोप्रवृह्यययागस्त न कार्यः पुष्टार्यत्वेन केवनकाम्यत्वात्। \* अतएव मत्यपुराणम्। वैशम्पायनमासीनमधुच्छच्छीनकः पुनः। सर्वकामाप्तये नित्यं क्यं प्रान्तिकपीष्णिकम्"॥ वैत्रस्पायन उवाच । "योकाम: भान्तिकामी वा तथा च।भिचरन् पुनः। येन ब्रह्मन् विधानन तसे निगटतः मृणु"॥ इत्युपक्रम्य यद्यागाभिधानात्। वृष्टिकामसीमस्ववग्रस्नागायते ग्रान्सिकः। केयल्बस्ययंत्वे पौधिकः। त्रयमपि सङ्खात् परमगौचेऽपि कार्यः। "व्रत-यज्ञविवाहिषु या हे होमें रचने जिपे। भारको सूनकां न स्यात भनारक्षेत् सूतकम् दति विश्ववर्ने वतग्रद्ध सहस्वाहु-कक्यापरत्वात्। "विवाहादी च सस्कारे हृहित्राहे सुत् मति। सङ्खे यष्ट्यात्ती च नागीचं मन्यते नुधाः" इति निर्णयास्त्रभृतवचनास् । प्रत्न मान्दीयादं विवादादावित्यनेन याह्याग्यार्यकलात् महियाहे कते इति यवणास विवाही-पनयनादावद्योत्सर्गात् परमशौच एव दोपाभावः। न हृहि-श्राह्याकाणाटपौति। भवानिनामान्याह रह्यामंब्रहे। "पूर्वाचुत्वां सुडो मास गान्तिके वरदस्तथा। पीष्टिके वसद-दीव क्रोधान्तियाभिचारके"॥ यष्टाणाष्ट्र मूर्य द्रत्यादि यदापि सर्वजनसिद्धतात् यद्यापां बहवः शब्दा वासकाः सन्ति शब्दीः पश्चित्यायेशियोपहितः भन्दो वा देवता सभययापि अभ्दा• नियमादविनिगममा स्यात्। तथापि सूर्यमोममङ्गन्यध-तुष्ठमातिग्राक्षमानैयरराष्ट्रकेतृपदेः पूजनं भवजनमिहत्वात्। सभी नुभव्दस्यती। खेर्निस्यामाद्यभावे यथ पद्म यो वर्षो रक्षांदस्तैवेषेवेषेमाह सत्यपुराषम्। "मग्रारेदक्रमा-दिलामद्वारकसमित्यमम्। मोमग्रको तथा ग्रेतो वृषश्चीको च पिद्वसी। मन्दराइ तया छ प्रोध्न वेतुग्ध विदु. 🔭

पिद्वासी पीतो। धूम चन्द्र नानावर्ण "मोमपुत्रो गुरुषेव तदुभी पौतको साता दिता चित्रास केतव दति वशिष्ठ-सिंहतस्क्रन्दपुराणगोभिलेकवाक्यत्वात्। तथा चामरसिंहः। "धुमधूमली छाणानी हितं"। गर्भेय रक्तचन्दनादिभिः। क्रतिषु सर्डनकी, वर्त्तनादिप्रहरूपेषु पूच्या इति श्रेषः। तथा व शान्तिदौषिकायाम्। "वर्त्तुनी भास्तरः कार्यो हार्डेचन्द्रो निगाकरः। भङ्गारकिन्त्रकोणस्तु बुधयापाञ्चतिन्तया। पद्मा-स्तिगुरः काध्ययतुष्काणस्तु भागवः । सर्वाक्तिः शनिः कार्या राइम्तु सकराक्षांतः'। खन्नाकृतिस्तया केतुः कार्यो मर्गाइनपूजने"॥ मग्डलकरणासामर्थी वेदिकामा ह मत्य-युराणम्। "गभेग्योत्तरपूर्वेग्यां वितांस्त्रद्वयविम्तृताम्। विप्र-द्रययुना वेदी वितस्युच्छ।यसयुताम्। सस्यापनाय देवानां चतुरस्नामुदक्ष्मवाम्। प्रानिप्रणयन क्षत्वा तस्यामावाष्ट्रयेत् सुरान्"। गर्भष्य मण्डपगर्भस्य। सत्साप्तुराण "सध्ये तु भास्कर् विद्यात् सो हितं दक्षिणेन च। छत्तरस्या गुर्कावद्याहुध पूर्वीत्त-रण तु। पूर्वेण भागवं विद्यात् मीमं दक्षिणपृवकः। प्रियमिन यनि विद्याद्राष्ट्रं दक्षिणपद्मिम । पश्चिमीत्तरतः केतु खापयेत् यक्षतण्ड्ले."॥ भनेव पावादयेद्याद्वभिरिति दयनादावादन व्याष्ट्रतिभि: ग्रक्षतण्डुनै: कार्य्यम्। स्कन्दपुराषे। "ज्याभू-र्गोदर्भतेषां वर्णसानमुद्धानि च। योऽचात्वा कुरते भान्तिं ग्रहास्ते नावमानिताः॥ . उत्पन्नी इर्षः कलिङ्गेषु यमुन।याध चन्द्रमाः । चद्रारकस्त्ववन्यान्तु सगधार्यो हिमागुनः ॥ सैन्धवेषु गुरुर्जातः ग्रुको सोजकटे तथा। श्रनैयरस्तु सीराष्ट्रे रार्ह्वराटिकापुरे ॥ चन्तर्वेद्यां तथा केतुरित्येता यहभूमयः। चादित्यः काग्यपो गोव चावेययम्द्रमा भवेत्॥ भरदात्री भवेद्रोमम्त्रधावेयध मामजः। गुरुः पुच्चोऽद्विरो गोत्रः श्रुक्षो वे भागिषस्तथा। शनिः काग्यय एवाय राष्ट्रः पेठीनसिम्तया॥ केतवो जिमिनेयास सदा नाक दिनं रताः" ॥ सत्यपुराणम्। "पादित्याभिमुद्धाः सर्वे माधिपप्रत्यधिदेवताः। स्थापनौया मुनियष्ठ नामारा न पराद्युका."॥ यादियान्यान्यस्य च

स्यापितप्रदस्यान्तरालेऽन्यो पद्यो न स्थापनीयः नाम्योदित्यः पराक्ष्याः कार्याः। पधिदेवतपूत्रा प्रयुत्तश्रीमादी कार्याः। कात्यायन'। "तहोत्रजातौरचात्वा होमं यः कुरते नरः। ्न तस्य फलमाप्रोति न च तुष्यन्ति देवताः॥ न इत न च सस्तारी न च यत्तफलं समेत्"॥ वशिष्ठगाभिलकात्वायनाः। "ब्राष्ट्राणी भागवाचार्यी चिन्यावर्कनीहिती। वैग्या मोमः बधी चैव गोषान् शुद्रान् विनिर्दिशेत्ण ॥ वसयस्य मत्स्य-पुराणे। "गुडौदन रवेर्दधात् सामाय प्रतपायसम्। सयावकां कुजे ददात् चौरावं सीमस्नवे ॥ दधोदमञ्जीवाय ग्रकाय तु ष्ठतौदनम्। श्रनेयराय क्षषरमाज मामख राष्ट्रवे। चित्रौ-दनभ केतुभ्यः सर्वभन्धै, समर्चयेत् ॥ सर्वभन्धेस्त तत्तद्रव्याः साभे ययानाभीपपने:। मन्त्रवन्त । चीम् स्यायतायुष्ट निर्वपासीति मन्वयुक्ताः। यजुपा यष्टणनिर्वापप्राचणमन्व-युक्राः। ऋखेदिनान्तु निर्वापप्रोक्षणसन्वयुक्ताः । चत्रद्रव्य-माइ गोभिनः। "षष इविनिवंदति ब्रोहोन् यवान् वेति" तदमाभे गालिगोधुमाविषि याद्यो। "ययोक्तवस्त्वसम्पत्तौ याद्य तदनुकारि यत्। यवासुद्रा च गोधुमा बोडीणामिव शालय." इति छन्दागपरिशिष्टात्। समित्रमाणले मत्म्यपुराणे। "प्रादेश-मावाः संगिखाः सवस्काः सपलाभिनौः। समिधः कल्पयेत प्राज्ञः सर्वकर्मसु मर्वदः"॥ तत्तत्वामिदनामे पैठीनमि.। "काएड-वल्कनपुष्पारीष्ठरमग्रमादीना साहस्येन प्रतिनिधि कुर्यात् सर्वास्तिमे यवः प्रतिनिधिभवतीति काण्डं नालं प्ररोष्टाऽहरः। यव इति कल्पतर पाठः। अवयव इति नारायणीपाध्यायाः। ' बाक्षष्टेनेत्यादय' क्रमेब स्यादिसन्द्राः। एकेकस्येति स्वयद्धाः-नुसारेण। चर्मसूष्टेनाच्यभाग खत्वा चरूणा प्रत्येकमेकैकाः इतिमक्तिकिमेणाकिदिमन्तेष्ठ्रिता पद्मात सस्मान्तेरव ययोक्षस्या इतिया। इति शूनपाणिमहामहापाध्याया । दुर्वा द्वीम दूर्वावयं याद्यम्। सरदातित्वके द्वीमद्रव्यपरिमाण दूर्वीवयसमुहिष्टमिति दर्शनात्। चूर्णपक्क तिस्तराष्ट्रसचूर्य म्वप्रकृप भनेषराय कथरमिति सस्यपुराचात्। सासमाज षात मामच राइवे" इति सस्यपुरापात्। चित्रात्र "अजा-

भौरेप संस्थित यदाच तिमतण्डलाः। भजाभयेख रक्षास्त्रिता समिता ॥ इति दीपिकोक्तम्। यथा माभ-मिलानेन तसह्यासामे भषात्मर देयम्। सर्वभक्षीः समर्थये-दिति सद्यपुराणात्। सत्क्रत्य पाद्यादिना पूजांयत्वा धेन्ताः दिटाचिया देया। तटभावे तु मत्यपुरायम् ! सथवा दयात् गुनर्या रेन तुष्यति"। तथा च सत्यपुराचम्। विजयान, सपद्रीक ऋखिजस्तान् समाहित.। दिष्णिका प्रयक्त पूज्येक्षत्विसाय ॥ इत्युपक्रमात् गुक्क येन तुषा-तीत्यपमदारात्। तत्रेव समदीमे। "दातत्र्या अनमार्शन पूर्ववहित्या प्रथम्। त्वराक्षीधविष्ठीनेन प्रत्विग्भ्य यामा चैतमा"॥ इत्युक्तवात् ऋविग्धा एव दक्षिणा। "स्यास किपिसा धेन् ददा।ऋङ्ग नयैन्दवे"॥ इत्यादिष् नाष्ट्रमें चतुर्थो। तम स्यापागप्रतिष्ठार्थ कपिना धनुम ऋशिको दबास्। गुडोदनादिमीअनमपि तस्वेव उपस्थितत्वास्। एतः दिचिषा भीजितवाद्वाषानासिति शूनपाणिव्यास्थानाश्चा "समन्तेष प्रदातच्या सर्वा. सर्वेत्र दिवणः" दति सत्त्वपुरा-यात्। धेन्व।दिदाने कपिन्ने सर्वदेवानाभित्यादि तसमानाः पाळाः। तं च प्रयोगे वद्यते। ऋत्तिग्रथ इत्ययुनादिश्रामः विषयम्। यम्पडोमिऽशक्षामेकोऽचि प्रवक् । अतएव गुरुवी येन तुष्यतीत्वृक्ष यसेति धन्नन पूर्विकादितिरिक्षीषचारेष पत-णव दौषिकायाम । "एकैकस्य। एंशतम द्याविशतिरव वा । होत्रया मधुमर्पिया दक्षा चौरेण वा युतम् ॥ पूजियच त्वभीष्टवरदानेन चतोतुःमः यहो यद्भतः पूजनीयः। यदा मत्यपुराणे। "सुख, सन्योपचारेण दुख, प्रश्वादापेषया। यवतः पूजनीयास्ते पूजितावेत् श्रमावद्याः" ॥ तथा "यसु पाडाकरो निस्मान्यविभास वा ग्रहा। अत्यक्षन स्पूजा श्रेषानयचं येनरः । तमात् पौडामरो नित्य य एव भवति गड। तमेव पूलयेइ त्या दो वा जीन् वा यद्या विधि ॥ एवा-मप्यचेयेड्रत्या बाद्यण वेदपारमम्। दश्चिषांभप्रकेत न वक्षनस्पांवस्तवान्" ॥ द्ति वन्दाघटीय-दर्शस्यम्। स्वाकास-न्दीरहनन्दनमहावार्यावर्षित क्रकारतस्वं समाप्तम्।